॥ भट्टारकश्रीराजेंद्रसूरिभिरचितः ॥

॥ कल्पसूत्रस्य बालावबोधः प्रारभ्यते ॥

आ पुस्तक श्रीमारवाडदेशमां आवेला गामश्री सीयाणां तथा गामश्री वागराना रहेवासी श्रावक जाइउंना संघ तरफथी, श्रावक रतनाजी वाघाजी गाम श्रीआहोरना रेवासीयें श्रीमुंबापुरी मध्यें श्रावक जीमसिंह माणकनी पासेथी यथा योग्य शुद्ध करावीने तथा केटलि एक बाबदो वधारीने तेमनीज मारफत निर्णयसागरनामक मुद्रायंत्रमां मुद्रित कराव्युं छे.

आ पुस्तकने छापवा संबंधि सर्व प्रकारनो हक्क सरकारना कायदा प्रमाणे छपावनारे पोताने स्वाधीन राख्यो छे माटे छपावनारनी रजा लीधा विना कोइयें छापवुं नही.

संवत् १९४४, सनें १८८८, शालिवाहन शक १८०९.

मिति फाल्गुन शुक्ल अष्टमी चंद्रवार.

आ पुस्तक खरीदवा माटे प्रथमथी नाम नोधावनार साहेबोने विनंति करीयें छैयें के आ ग्रंथनी जेटली प्रतो छपावेली छे लगभग तेटलीज प्रतोना आगलथी ग्राहको थइ गयेला छे माटे बाकी थोडीज प्रतो शिलकमां रहेली छे, तेथी जे साहेबोए प्रथमथी खरीद करेली छे ते साहेबोये जेम बनें तेम मुंबइमां कामाटीपुरानी तेरमी गलीने नाके शा. लखमाजी नावाजीनी दुकाने अथवा विठ्ठलवाडीमां शेठ. मेगाजी मोतीजीनी पहेडीयें रोकडा नाणा मोकलीने तरत मगावी लेवी. अमे घणामा घणा छ महीना पर्यंत नाम नोधावनारनी वाट जोइशुं नहींका पछी आपवाने बंधाता नथी.

आ पुस्तक जें साहेबोनें लेवानी इच्छा होय ते साहेबोए नीचे लखेला जुदा जुदा गामोना अमारा आडतीया पासेथी रोकडा रुपैया मोकली मगावी लेवा, देसावरथी मगावना

र सज्जनोयें टपाल खरच सुधां नाणा मोकलवा, नहींकां वेल्युपेय्येबल करी टपालनी मार फत मगाववा तसदी लेवी.

१ गामश्री मुंबइमां कामाटीपुरानी तेरमी गलीने नाके शा. लखमाजी नावाजीनी डुकानेथी. तथा विठ्ठलवाडीमां शेठ. मेगाजी मोतीजीनी पहेडी उपरथी मगावी लेवा.

२ गामश्री अमदावादमां पांजरापोलनी अंदर शेठ. पुनमचंद ताराचंदनी डुकानेथी मलशे.

३ गामश्री सुरतमां नानपरा मध्यें शेठ. चेनाजी वांताजीनी डुकानेथी मलशे.

४ श्रीआबुना पाहाडनी नीचे गामश्री खराडीमां, नार शीतारामजी जवानमल्लजीनी डुकानेथी वेचाती मलशे.

५ गामश्री शिवगंजमां शेठ. मेगाजी मोतीजी श्री जाणावालानी डुकानेथी.

६ गामश्री आहोरमां शेठ. गोडीदासजी त्रीकमजीनी डुकानेथी मलशे.

७ गामश्री जालोरमां मुंता. धनराजजी लालचंदजी फाफां वालानी डुकानेथी मलशे.

८ गामश्री अलीराजपुरमां शा. जेगाजी जवेरचंदनी डुकानेथी मलशे.

९ गामश्री पुनामध्यें वेतालपेठमां शेठ जीवाजी आणंदाजीने त्यांथी मलशे.

१० गामश्री सीयाणामां शा. केशरीमल्ल कस्तूरजीनी डुकानेथी मलशे.

११ गामश्री भिन्नमालमां शा. जुहारमल्ल शिरदारमल्लजीने त्यांथी मलशे.

१२ गामश्री थरादमां पारेख आंबा मोतीजीनी डुकानेथी मलशे.

॥ प्रस्तावना. आ असार संसारने विषे प्राणिमात्रनुं जीवितव्य जे छे ते वायरे करी चंचल थयेला जलतरंगना जेवुं चंचल छे, वली विचित्र प्रकारनी संपत्तिउ जे छे ते पण सर्व विपत्तिर्उयें करी युक्त छे, तथा रूप रसादिक जे इंद्रीयोना विषयो छे ते सर्व संध्याना वादलाना रंगनी पेरे तरत विनाशने पामी जाय तेवा छे; तथा मित्र, स्त्री, स्वजनादिकोना समागमथी थयेलुं जे सुख ते पण सर्व स्वप्नोपम अथवा इंद्रजालसमान छे, वली जे अत्यंत आनंदने उत्पन्न करनारा एवा सुंदर पदार्थो हमणा जोवामां आव्या होय, तेज पदार्थो कालपरिपाक थइ रह्याथी फरी अल्पकाल पछी शोभाहीन थयेला दीठामां आवे छे, एवी रीते प्रत्यक्षपणे आ संसारनी व्यवस्थाने सर्व कोइ जाणे छे, देखे छे, तथापि प्राणीना मननी टेव एवी कोइ विलक्षण छे के, हुं अजर अने अमर छुं, कोइ कालें म्हारो नाश थवानो नथी. तेमज आ, म्हारां घर छे; आ, म्हारी लक्ष्मी छे; आ, म्हारां क्षेत्र, वाडी, बाग, बगीचा प्रमुख संपत्तिउ छे; आ, अमुक म्होटा म्होटा म्हारा स्वजन छे; आ, म्हारा मित्र छे; आ, म्हारी स्त्री छे; आ, म्हारो पुत्र छे; आ, म्हारुं ऐश्वर्य छे; आ, म्हारी सत्ता छे; इत्यादि सर्व कांई म्हारुंज छे; एवो जे तेना मननो संकल्प छे ते घणु करीने कोइ रीते दूर थइ शकतो नथी.

कारण के आशारूपी मोहनीयें मनुष्यनुं मन एटलुं तो वश करी लीधेलुं छे के मरतां सुधी पण तेनी तृष्णा मंद थती नथी, परंतु दिवसेदिवसे वधती जाय छे. अहंममताजिमानपणाने लीधे तेनो कुराग्रह, दंभ, लोभ, आदिक जे छे ते पूर्वकृत कर्मोदयनी प्रबलताने योगें एक लवमात्र पण कमी थता नथी, ए म्होटी खेदनी वात छे.

कुटुंबादिकना संयोग संबंधि जे क्षणिक सुख छे ते यद्यपि पूर्वे अनंतिवार जीव पामी आव्यो छे, तथापि जेवारे फरी पामे छे तेवारें आ, सुख मने हमणां नवांज आवी मळ्यां होयनी ! एवुं समजीने तेमां तल्लीन थइ जाय छे, पण आ सुख अल्पकाल रहीने नष्ट थइ जशे, अथवा पुण्य घणुं प्रबल हशे तो म्हारा आयुष्य पूर्ण थया सुधी रहेशे, परंतु पछी तो अवश्य ए सुखथी म्हारे वियोग थवानो छे एवो शुज विचार निरंतर जेना अंतःकरणमां थतो होय ते क्षणिक सुखोमां लुब्ध न थाय, एवा कोइ विरलाज दीठामां आवे छे.

ज्ञानदृष्टियें विचारतां जे विषयसुख छे तेपण उपचारथी मानी लीधेला छे, परंतु पारमार्थिक रीतें जोतां तो ते दुःखरूपज छे, संसार वधारवाना हेतु छे; नरक तिर्यंचादि गतिउमां ज्रमण करावनारा छे, आत्मधर्मने आछादन करनारा छे, एवा कल्पित सुखोनी इछा करनारा जीवोने संसाररूप समुद्रमां अनेक प्रकारना दुःसह दुःख सहन करतां रुबकीउं खातां अनंता कालचक्र व्यतीत थइ गया तो पण तृप्ति पाम्या नहीं. ए सर्व प्रबल मोहनीयनुं माहात्म्य जाणवुं. ए मोहनीय कर्म जे छे ते ज्ञानावरणादिक आठे कर्मोमां प्रधान छे माटे एनी उत्तर प्रकृति अठावीश जेद मांहेली अनंतानुबंधि क्रोध, मान, माया अने लोज ए चार प्रकृति जे छे तेनो जेवारें क्षय थाय तेवारें जीवने क्षायक सम्यक्त्वनी प्राप्ति थाय अथवा ए चार प्रकृतिनुं जेवारें क्षायोपशम थाय तेवारें क्षायोपशमिक सम्यक्त्वनी प्राप्ति थाय, अथवा ए चार प्रकृतिनो जेवारें उपशम थाय तेवारे जीवने उपशम सम्यक्त्वनी प्राप्ति थाय एवी रीतें ए त्रण प्रकारना सम्यक्त्व मांहेलुं कोइ पण सम्यक्त्व प्राप्त थाय तेवारें ते जीव निरागी श्रीतीर्थंकर देवनो प्रकाशेलो जे शुद्धधर्म तेने पाम्यो एम

कहेवाय. ते पाम्याथी तेने स्वयमेव सद्विचारो उत्पन्न थाय छे, ते आवीरीतें केः—

आ, म्हारो देह छे ते क्षणभंगुर छे, विनाश शील छे, एनो विनाश करवा माटे घणा रोगादिक शत्रुओ तत्पर थइ रहेला छे, माटे एने वधारे टकी रहेवानो भरोसो न राखतां जे कांइ माराथी आज शुभकृत्य थतुं होय ते काल उपर न राखुं, परंतु आजज करुं; च्यार दिवस आगल किंवा पाछल पण अवश्य मने ए मुकी जशे तो एना योगेकरी हुं जेटलो परोपकार करी शकुं तेटलो तो एमांथी लाभ लंइ लेउं.! छेवटतो ए कांइ म्हारुं थवानुं नथी, माटे म्हारे एमांथी जे सार काहाडी लेवानुं छे ते नहीं काढी लेतां तेने शावास्ते व्यर्थ गमावुं? एवुं तत्व ग्रहण करी मनरूप मंदिरने विषे विवेक रूप दीपकने प्रकाश करतो सद्वर्त्तन, उदारवृत्ति, सद्गुरुनो समागम, सत्संगति, सदयता, सद्धर्मनिष्ठा, परोपकारबुद्धि, इत्यादि उत्तम प्रकारना विचार तेना मनमां प्रवेश करे तेना योगे तप, जप, पडिक्कमण, पोसह, व्रत, नियम, पूजा, प्रभावना, तीर्थयात्रा, साधर्मी वात्सल्यादि अनेक शुभकृत्यो सेवन करी छेवट धनधान्यादिक नवविध बाह्य परिग्रह तथा क्रोधादिक चौद प्रकारनो अभ्यंतर परिग्रह छे तेनो त्याग करी पंचमहाव्रत आदरी, चारित्र ग्रहण करी कृतकृत्य थाउं. ए म्हारुं मुख्य कर्तव्य छे. एवा विचार तेना मनमां निवास करी रहेला होय छे, ते प्राणी शुभ इछानुरूप पोतानुं वर्त्तन राखी, अंतकाल पर्यंत यथाशक्ति सत्कर्मो करी, सर्व मुखे मंगल बोलावी, आ, सृष्टिमां पोतानी कीर्त्तिने अमर करनारो थाय छे. पछी ते धनवान हो किंवा निर्धन हो!

एवा पूर्वोक्त नियमपूर्वक आ हुंडाअवसर्पिणी रूप पंचम कालने विषे चालनारां मनुष्य रूप रत्नोनी संख्या घणीज स्वल्प जाणवी.

यद्यपि पूर्वोक्त उदारवृत्ति, सदयता, परोपकारबुद्धि इत्यादि शुजकृत्यो तो अन्यदर्शनीउमां पण अनेक जीवो करे छे खरा, परंतु सम्यक् ज्ञान न होवाथी ते मात्र तेमने सांसारिक सुखनुं कारण रूप थाय छे, पण आत्मधर्मनी उंलखाण विना परंपरायें मोक्ष प्राप्तिना हेतु रूप थता नथी, केम के? तेमना धर्म प्ररूपकपण सर्व राग द्वेषनी वृत्तिवाला छे; तेथी ते सत्य कहेवाय नहीं, सत्यधर्म तो जेने राग द्वेषनो अजाव थइ गयेलो छे, एवा श्रीतीर्थंकरदेवनो प्ररूपेलो छे तेज जाणवो. ए वात अनुजवसिद्ध छे, ते विषे आशंकाउ तथा समाधान करवाने आ न्हानी सरखी प्रस्तावनामां स्थल आपवुं व्याजबी कहेवाय नही.

ते सत्यधर्म पामवानी अजिलाषा करनारा विवेकी जनोयें प्रथम तो गुरुआदिकना मुखथकी अनेक प्रकारनां शास्त्र श्रवण करवामां हरहमेश तत्पर रहेवुं जोइये. शास्त्रो सांजलवा, तथा जे शास्त्र पोताने वांचवा जणवां योग्य होय ते पोते पण वांचवां तथा जणवां. कदापि सांसारिक धंधा रोजगारनां प्रपंचथी जो वधारे अवकाश न मली शकतो होय तो नित्य बे घडी, चार घडी पर्यंत जेटलो अवकाश मली शके, तेटलो वखत शास्त्र श्रवण करवुं, त्यारपछी ते श्रवण करेला श्रुतनुं मनन करवुं, त्यारपछी तेनुं निदिध्यासन करवुं. ए शास्त्र श्रवण, मनन, निदिध्यासन जे छे तेज पूर्वोक्त सम्यक् दर्शननी प्राप्ति करावववानां शुज हेतु छे; माटे ते संपादन करवा सारुं ज्ञानप्रद अने जीवितने सफल करनारां शास्त्रो सांजलवानो उद्यम करवो.

तेमां कोइ अल्पपुण्यवानने कदापि आजीविकादिकना जयथी सांसारिक प्रपंचना योगें अवकाश न मली शकवाथी जो प्रतिदिवस शास्त्र जणवुं वांचवुं, अने श्रवण करवुं न बनी शके तो अष्टमी आदिक चार पर्वोने विषे सांजलवानो अन्यास राखवो जोइये. तेम पण न

बने तो बे पाक्षिक दिवसोमां श्रवण करवुं. कदापि तेम पण न बने अने कोइरीतें नवनवा प्रकारना विचित्रोपदेश आपनारा अनेक स्तुतिपात्र ग्रंथोनुं श्रवण न थइ शके. तेवारें पोताना पूर्वकृत अशुभकर्मोना उदयने धिःकारी पश्चात्ताप करीने पण परमेश्वरे बतावेला श्रीपर्युषण पर्वना दिवसोमां आ कल्पसूत्रतो अवश्य सांभलवुं. एम सांभलवाथी तथा पूर्वोक्त पश्चात्ताप करवाथी पण अनेक प्रकारना पूर्व संचित ज्ञानावरणीय कर्मनो बंध त्रूटे छे, ते जेम जेम बंध त्रूटतो जाय तेम तेम क्रमे क्रमें क्षयोपशमनी तारतम्यता थती जाय, तेना योगे शास्त्र श्रवणादि साधन पण सुलभ थतां जाय, तेथी कालांतरे ज्ञानी थवानो अवश्य संभव थाय, ए अनुक्रम अनुमानथी निर्विवाद सिद्ध छे. आ कालमां प्रथमतो धर्म शास्त्रना संभलावनारा सत्यप्ररूपक निर्ग्रंथी साधुउनी जोगवाइ पण कोइ स्थले कोइ कोइ अवसरेज मले छे, तेम छतां जो संभलावनार मली आवे तो सांभलनारा मलवा मुश्केल छे!!

वली हालना समयमां घणे स्थले तो यतीउनो निवास दीठामां आवे छे, ते यतिउ पण जेटला श्रावकोने रहेवाना स्थानको छे ते सर्व स्थानकोमां मली आवे तेम नथी; परंतु तेटला गामो मांहेला पण जे महोटां महोटां शहेरो ज्यां घणा श्रावकोनी वस्ति होय तेवा गामोमां मली आवे छे. एटले लगभग जेटला श्रावकोने रहेवाना गामो अने शेहेरो आदिक छे ते मांहेला आशरे शोमां भागना गामोमां यतियोनो निवास दीठामां आवे छे; हवे ते यतीयो जे छे तेमां पण व्याकरणन्यायादि शास्त्रोमां निपुण थयेला एवातो भाग्येज सेकडे मात्र बे यतियो निकलवा कठण थइ पडे; बाकीना अठाणुं रहे ते मांहेला अर्द्धो भागना यतियोतो श्रावकने पडिक्कमणुं करवानी क्रिया सुधां पण समजी शके तेवा नं होय, अने

अहीं पडिक्कमणादि क्रिया करावववानी तथा टबा प्रमुखना ग्रंथो व्याख्यानमां वांचवा प्रमुखनी कलामां निपुण निकले तेटला यतियो श्रावकादिकोने धर्मोपदेश करे. ते पण थोडाज गामोमां समजवुं. परंतु जे गामोमां यतिउनी पण योगवाइ न मले तेवा गामडांउमां नित्य व्याख्यान सांजलवुं तो दूर रह्युं परंतु मात्र आखा वर्षमां महामांगल्यकारी महोटुं पर्युषण पर्व आवे छे, तेमां पांच दिवस पर्यंत श्रीकल्पसूत्र अवश्य सांजलवुं जोइये. त्यां संविज्ञ गीतार्थ महामुनिराजो के जेने सूत्र वांचवानो अधिकार छे, तेवा पुरुषोना मुखथी कल्पसूत्र श्रवण करवुं, ते तो रह्युं, परंतु साधारण यतियोना मुखथी सांजलवानुं पण बनी शके नही एवीरीते श्रीमालवादि देशोना गामोमां घणे स्थले अमारा दीठामां तथा सांजलवामां पण आव्युं छे.

जे जे गामोमां वांचनारा यतियो अथवा गीतार्थ ज्ञानियोनो संयोग मले छे, ते ते गामोमां सांजलनारा श्रावकों पण बधा सरखा न होय केटलाएकने सिद्धांत श्रवण करवानी अभिलाषा होय छे. ते तो अवश्य सांजलवा जाय, वली केटलाएक महोटा दिवसो छे माटे हमणा अवश्य सांजलवुं एम विचारी जाय, केटलाएक आपणा गाममां आपणे चार जण महोटा छैये ते सांजलवा नही जइशुं तो बीजा पण कोइ सांजलवा जशे नही एवा हेतुथी जाय, तथा केटला एक दाक्षिण्यता देखाडवा महान् प्रतिष्ठित बनवासारु जाय, केटलाएक देखादेखीथी जाय, केटलाएक समजण नही, परंतु मात्र धर्मना दिवस छे, एवा हेतुथी पण सांजलवा जाय. इत्यादिक सांजलवा जवाना अनेक हेतु छतां पण सांजलनारानी संख्या मात्र दशमो हिसो निकली शके, अने बाकीना नवमा हिसा जेटला प्राणीतो एवा अज्ञ होय के सांजलवामां कांइ समजेज नही. तेमने तो बधा दिवसो उद्यम करवामां अने सां

सारिक सुखनी मोज मजाह्मांज आनंद मानी घरमां बेशी रहेवानुं गमे एवा घणा निकली आवे छे. वर्त्तमान कालनुं माहात्म्यज एवुं छे के, धर्म श्रवण प्राणीमांत्रने दोहिलुं थाय !

तथापि जे गामोमां संविज्ञ गीतार्थनी योगवाइ तो मलेज क्यांथी ? परंतु श्रीपर्वना दिवसोमां कल्पसूत्र वांची शके एवो कोइ यति पण मले नही, अने ते गाममां थोडा घणा पण पंजोसणना दिवसोमां कल्पसूत्र श्रवण करनारा तो जरुर निकली आवे, कदापि कोइ गाममां तेवी संख्या न निकली आवे तोपणं धर्माध्यक्ष धर्माधिकारी पुरुषोनुं साधारण धर्म छे के, तेवा गामोमां पण ते प्रकारनी प्रेरणा करीने अवश्यधर्मनी प्रवृत्ति करावvी जोइयेंज. हवे तेवा प्रवृत्ति करावनारा धर्मानिरुची जीवो पण आजना समयमां विरला दीठामां आवे छे, तेथी घणा स्थलोमां तो पर्युषण जेवा महोटा दिवसोमां पण कल्पसूत्र बिलकुल वंचातुंज नथी, अने जे जे गामोमां तेवा सांभलनार ज्ञानरुची जीवो होय छे, तो तेमने ज्यारे कोइ संभलावनारो मलतो नथी, त्यारे ते श्रवण रुचिकर पुरुषो कोइ यतिने तेडीने कल्पसूत्र श्रवण करवानो ठराव करे छे, परंतु यतियो पण एवा होय छे के, जे गाममां पर्युषणना दिवसोमां रहे ते गाममांथी पांच पचाश रूपैया पेदा करवानी इछा राखे एवा होय छे, तेथी ते श्रवण करनारा जे निकली आवे ते वली बीजा पोताना मित्र, हेतु किंवा सगा संबंधि अथवा साधर्मि भाइ उनें तेमज तेवा कोइ अन्यजनोथी मिलाप करीने पांच दश जणने एकठा करी महाजनना शेठीआने समजावी तेमनी मारफत श्रावकोनी पासेथी टीप करावी यतिने आपवा सारु पैसा एकठा करे छे, ते एकठा थया पछी यतीने बहार गामथी बोलाववामां आवे छे, जे आवी पर्युषणना आठ दिवस ते गाममां रहे छे, अने तेमां कल्पसूत्र वांचवाना दिवसोमां

कल्पसूत्र पण पोतानी पासे जेवी प्रत होय तेवी प्रत उपरथी सर्व सजाने यथामति वांची संजलावे त्यारें सांजलनारा सांजली शके.

तिहां कोइ कोइ पोथीमां तो संक्षेपथीज वात लखेली होय छे, अने कोइमां अतिसंक्षेपथी कोइमां मध्यमथी, कोइमां तेथी विशेष तेमज कोइमां उत्कृष्ट रीतें सविस्तर वात पण लखेली होय छे, हवे तेज गाममां एक वर्षे एक यती आवे, अने बीजा वर्षे बीजो यती आवे, तो ते बीजी पोथी लइ आवी वांचे, तेमां वली कोइ कथानाग उंगो अधिको लखेलो होय, ते सांजलीने अथवा तेज यती होयने बीजे वर्षे बीजी पोथी लइ आवीने वांचे तो पण सांजलनारा बधाए प्रवीणतो होय नही,के जेथी ते समजी जाय जे कल्पसूत्रनो मूलपाठतो १२१६ श्लोकनो छे, तेनो अर्थतो मात्र अर्थ करनाराउनी वाक्यरचनामां फेर पडे ते नले, बाकी नावार्थ बधो सरखो होय छेः परंतु पाछलथी केटलाएक आचार्योंये जे कथानाग वधार्यो छे, ते कोइये थोडो तो कोइ आचार्यें घणो नाग वधार्यो छे; एवी वातना समजनारा थोडा होय, परंतु गया वर्षे तो आ अमुक कथा सांजली हती तेमां आटली वात न हती, अने आ वर्षे आटली वात केम वधारे आवी? किंवा उंगी आवी,अथवा गया वर्षे आ अमुक कथा वांचवामां आवी हती, अने आ वर्षे ते कथांज केमं न वंचाणी? एवी आशंकाउ करनारा घणा होय. माटे तेमना मनमां तेवी अशंकाउ मुंजवण करी नाखे छे तेथी तेमने महोटुं विचार थइ पडे छे. माटे तेवा गामडीयामां जो एकज प्रकारनुं लखेलुं पुस्तक वर्षोवर्ष वंचातुं होय तो तेमने कोई संशय उत्पन्न न थाय तेमने माटे. तथा कोइ वृद्ध श्रावक जरावस्थाने लीधे अथवा कोइ रोगादिना प्रसंगथी चालीने उपासरा सुधी पण कल्पसूत्र सांजलवा माटे जइ शकतो न

होय तो ते पोताने घेरज बेठा थकां पण कल्पसूत्र वांची शके तेवाने माटे, अथवा कोइ काने बहेरो होय तेथी बीजानो करेलो उपदेश श्रवण न करी शके परंतु पोतें वांची जाणतो होय तो तेने पण अंतराय न पडे तेमाटे, तथा घणा न्हाना न्हाना गामोमां मात्र पांच दश घेर श्रावकोना होय छे तो तिहां कोइ यतिपण वांची संजलावनारो जाग्येज मले ! तेवा गामोना रहेवासीयोने पण कल्पसूत्र सांजलवानो अंतराय न पडे तेवाउने माटे, तथा घणा स्थले श्राविकाउ परिचि एटले पडदा आडा राखीने बेसे छे ते बाहिर सांजलवाने अर्थें जो उपासरादिकमां जाय तो ते आडो पडदो बांधीने अन्यस्थानके क्यां जइ बेशी शके ? माटे पोथी होय तो तेपण घरमां वांची शके तेवी श्रावीकाउने अर्थें. तथा तरतनी दीक्षित केटलिएक साधवीउ पण एवी होय छे, के तेमने जो सुगम बालावबोध करेलो होय तोज वांचवाने अनुकूल थाय. नहीं तो ते वांची शकवाने अशक्य थाय छे तेमने माटे. इत्यादि बीजा पण श्रोताउने विघ्न करनारा अनेक कारणो छे. ते सर्व अडचण मटाडवाने माटे घणा मुनिराजोने, तथा संविज्ञ पक्षीउने, तथा श्रीपूज्य भट्टारक अचार्यादिकोने, तेमज घणा यतीयोने, घणा देसोना श्रावको आज केटला एक वर्ष थया हरहमेस कहेतां आवे छे के, सहेलाइथी वंचाय एवी रीते जो कल्पसूत्रनो बालावबोध करीने छपावी प्रसिद्ध कर्यो होय तो तेथी श्रोता जनोनी उपर महोटो उपकार थाय, अने पूर्वोक्त हरकतो मटी जाय. तेम छतां कोइ पण आचार्यादिकें तेम कर्युं नहीं. छेवट संवत् १९३६ नी शालमां श्रीविजयराजेंद्रसूरि मालवादेश मांहेला श्री जांबुवा नगरने विषे मास कल्प रह्या हता,. ज्यां मालवा, मारवाड तथा गुजरात अने पारकर मली चार देशना श्रावको तरफथी चार माणसोए

आवीने महाराज साहेबने कल्पसूत्रनो सुगम बालावबोध बनाववानी विनंति करी ते सांजली महाराजें कह्युं के आगल ए कल्पसूत्रनी आठ ढालो पंमित श्रीज्ञानविमलसूरियें जाषा रूपे रचेली ठे, एवुं सांजलीये ठैयें माटे हवे विशेष सुगम करवानी जरूर नथी, तोपण श्रीसंघनी तरफथी विनंति करवा आवनारा माणसोयें कह्युं, के ते ग्रंथमां थविरावली तथा साधुसमाचारी नथी माटे एक व्याख्यान ओबुं ठे, अने वली वात पण संक्षेपथी कहेली ठे. तेथी ते ग्रंथ अधूरो कहेवाय. कह्युं ठे के, "अधुरुं ग्यानसो ग्यान नहीं, अधूरो जण्योसो जण्यो नही, ॥ अधूरी रसोइसो रसोइमां नही, अधूरो वृक्ष सो फले नही ॥ अधूरो फल पाको सो बराबर स्वाद नही, तिणसुं संपूर्ण चाहीजे" ते आप महान्पुरुष ठो, परमोपकारी ठो माटे श्रीसंघनी उपर कृपादृष्टि पूर्वक अमोये करेली अरजी कबुल राखो.

एवुं सांजली महाराजे श्रावकोनी हस्तक चार पांच जंमाराउमांथी घणी जीर्ण पुरातन लखेली चूर्णि, निर्युक्ति, टीकादिक पंचांगीनी, बे चार शुद्ध प्रतो एकठी करावीने कल्पसूत्रनो बालावबोध करवा मांड्यो; ते तयार थया पठी केटलाएक श्रावकोयें तो ते प्रत उपरथी उतारा करवा मांम्या ते सुमारे पांच पचाश उतारा पण थया वली पण उतारा करी प्रतो लखाववानी इह्वा घणा जनोना मनमां हती. • पण लहिया तरत वखत उपर मली शके नही. तेमज प्रत लखी तयार करवाने पण वरसोना वर्ष निकली जाय, एक प्रत पचाश शाठ रुपैया खरच करवाथी बनी शके, ते काम बधाने अनुकूल पडे नहीं. मात्र तवगरं शेठ साहुकारोथी बनी शके, परंतु गरिब वांचनाराथी एटला पैशा खरचाय नहीं तथा वली ते प्रत लखावीने पठी शोधन करी आपनार पण कोइ मली शके नही. इत्यादिक अनेक प्रकारना विघ्नो

लखावनाराउने माथे पडवाथी सर्व सज्जनोना मनोरथ पूर्ण थइ शक्या नही.

त्यार पछी संवत् १९४२ नी शालमां महामुनि श्रीकीर्त्तिचंद्जी महाराज तथा महामुनि केशरविजयजी ए बे मुनिराजो ते साक्षात् जाणे चोथा आरामांहेला साधुउना नमुनानी मूर्त्तिउज होयनी? एवा शुद्ध चारित्रिया, पंचमहाव्रतना यथार्थ पालनारा साधुउयें श्रीसीयाणानगरमां आवी चोमासुं कर्युं. अकस्मात् बनाव एवो बन्यो के गामश्री भागराना रहेवासी श्रावकोने ते गामना सिरदार साथें कोइ प्रकारनो वांधो पड्यो तेने लीधें तेमने पण पोताना घर मूकीने गामश्री सीयाणा नगरमां आवी रहेवुं पड्युं. एम ते गाममां बे गामोना श्रावकोनो जमाव थयो, अने साधु मुनिराजोनी जोगवाइ पण मली आव्याथी त्यां घणा श्रावक श्राविकाउयें सम्यक्त्वादि अनेक प्रकारना व्रतपच्चरकाण कर्या. तेमां वली ते वखतमां विशेष आश्चर्य उत्पन्न करनारी आ वात बनी के, ते गामना रेहवासी क्षत्री, चोधरी, घांची, कुंभारादि अनेक प्रकारना अन्यदर्शनीउ तेमां वली यवन लोको अने ते गामना ठाकोर सहित पण साथे मली सम्यक्त्वादि व्रत धारण करवा मंड्या गया. एवी रीतें अनेक जीवो त्यां समकेत पाम्या. छेवट जेनाथी कांइ विशेष व्रत लेवुं न बनी शक्युं, तो तेणे मात्र महारे आ जन्मपर्यंत सूड न बालवानो, कोइयें पंजोसणना आठ दिवस पर्यंत धान न कापवानो, केटला एकें रात्रिभोजन त्याग करवानो, कोइयें आठम चौदशें जीवहिंसा न करवानो, तथा गामना ठाकोरना भाइयें तो जावजीव हिंसा नहीं करवानो एवा घणाजनोयें नियम लीधा. तथा ठाकोरे पोते पोताना घरमां जें बकरा तथा पाडा प्रमुख अनेक जातिना जीवो हिंसा करवा माटे राखेला हता, तेमने पण अभयदान आपी छूटा

करी श्रावकोना पंच खातानो जीवरक्षित पांजरापोळ छे तेमां मोकली आप्या. इत्यादि रीते ते चोमासामां घणाज जीवो समकेत प्रमुख अनेक प्रकारना व्रतधारीउं थया, तेथी महोटो उपकार थयो, अने जैनधर्म अत्यंत देदीप्यमान सूर्य सरखो दीसवा लाग्यो.

तेमज बीजा पण सीयाणा गामना परगणाने आसपास चारे बाजुये फरता वीश वीश पच्चीश पच्चीश कोशमां आवेला गामोना रहेवासी श्रावको मांहेला घणा श्रावको पण स्थावर तीर्थ करतां जंगम तीर्थ वांदवामां असंख्यात गुणु लाभ वधारे छे,एवुं समजीने त्यांहां बिराजेला बे साधु मुनिराजोनी साथे सांवत्सरी खमाववाने माटे वंदन करवा निमित्तें आव्या.

एवी रीते घणा गामोना श्रावको एकठा थया, तेवा अवसरे प्रसंगानुसारे मुनिराजोए पण धर्मोपदेशमां ज्ञानदान आपवानी तुलना करनार अन्य कोइ दान नथी एवुं व्याख्यान कर्युं तेवारें सभा मांहेला श्रावको बोल्याके, ए ज्ञानदानतो मुनिमहाराज थी थइ शके छे, परंतु श्रावकोथी कांइ बनी शकतुं नथी. ते सांभली मुनिमहाराज बोल्या के, पुस्तको लखावीने जे जे ज्ञान भणवानी तथा वांचवानी रुचीवाला होय तेमने आपवाथी तथा ज्ञानना उपकरण.आपवाथी, तेमज ज्ञान भणनाराउने अन्नवस्त्रादिकनुं साहाय्य आपवाथी, बीजाने भणाववा आदिकथी श्रावको पण परिपूर्ण ज्ञानदान करी शके छे.

ए वात मुनिउना मुखथी सांभलवा पछी तेज दिवसें रात्रिना वखते श्रावको सर्व एकठा थया. तेमणे एवो ठेराव कर्योके पंजोसण पर्वमां कल्पसूत्र सांभलवाने.तथा बीजा पर्वोमां जे जे पर्व ज्यारे आवे छे तेवारें ते ते पर्वनी कथाउ सांभलवाने घणा.श्रावकोने अंतराय पडे छे, माटे आपणने प्रथम भागमां तो पूज्य भट्टारक श्रीविजयराजेंद्रसूरिये बनावेला कल्पसूत्र

नो बालावबोध ठे ते ठपाववो अने बीजा नागमां दीवालिआदिक सर्व पर्वनी कथाउनो बा लावबोध ठपाववो, तथा त्रीजा नागमां वली कोइ सर्व संघने उपयोगी ग्रंथ हशे ते विचार करीने ठपावीशुं. एवीरीतें गामश्री सीयाणा तथा गामश्री वागराना श्रावक पंचो मलीने कबुलात आपीके जे पूर्वोक्त ग्रंथो ठापवानो खरच लागशे ते अमो आपीशुं. तेनो व्याज लश्शुं नही. अने ठपायला प्रत्येक पुस्तकनी शो शो नकलो ते निर्ग्रंथ साधुउ तथा असमर्थ श्रावको जे वांचवानी रुचीवाला होशे तेमने मफत आपशुं. एवो ठेराव करीने ठपाववा संबंधी कामकाजनी तथा शो शो नकल कोने मफत आपवी तेनी तपास करवा माटे शा. रतनाजी वाघाजी गामश्री आहोरना रेवासी श्रावक ठे ते घणुंज प्रामाणिक, नीतिमान्, विवेकी, माह्यो, दयालु, नरोसादार, विश्वासु अने शास्त्रज्ञ ठे माटे तेने अधिकारी ठेरवीने प्रथम श्रीकल्पसूत्रनो बालावबोध ठापवाना कामने मदत आपवा माटे टीप नरवा मांमी तेमां मदतकरनारा श्रावकोनी संख्या घणीज महोटी थवाथी श्रावक केंसरीमल्ल कस्तुरजी गामश्री सीयाणा वालायें कह्युं के जो बीजा ग्राहक ए पुस्तकोने लेनारा थशे, तो तमोयें मंमावेला पुस्तकोनी संख्यामां फाला प्रमाणे प्रत्येक पुस्तक राखनार धणीने पुस्तकों कमती आपीशुं ते वात सर्व टीपमां नाम दाखल करनाराउये मंजुर राखीने सना विसर्ज्जन थइ. ते दिवसें श्रीसंघे करेला ठेरावने अनुसरीने में आ पुस्तक श्रीमुंबईमां श्रावक नीमसिंह माणकनी मारफत ठपाव्युं ठे.

हवे आ ग्रंथ श्रीपर्युषणाना दिवसोमां वांचवानो ठे माटे हालमां महारा दीठामां आवेली प्रवृत्ति मुजब केटलाएक श्रावक अने साधुउनी जे उलटी आचरणा पंजोसणना दिवसोमां पण सुधरती नथी ते हवे सुधारी लेशे एवी आशा राखीने प्रथम तेमनी आचारणा

कही देखाडुं बुं. जे दिवसोमां प्रत्येक सम्यक्दृष्टी जीवोने अरस्परसमां उत्पन्न थयेलो वै
रविरोध ते,सर्व मन,वचन कायायेंकरी टाळी नाखवो जोइये,जे दिवसोमां प्रतिक्षण धर्मध्यान
मां प्रवृत्ति करवी जोइयें, जे दिवसोमां हर हमेश संवरजावमां रहेवुं जोइयें, जे दिवसोमां उ
त्तम प्रकारना वैराग्य दशाने स्फुरण करनारा, एवा महान्पुरुषोना रचेला शास्त्र श्रवण करवा
जोइयें, जे दिवसोमां राग द्वेष टाळी शत्रु मित्रने समजावे गणवा जोइयें, जे दिवसोमां षट्
काय जीवोनी जयणा राखवी जोइयें. कारणके स्वाजाविक पण श्रावकनो आचार ए बे जे को
इ पण कार्य करवुं ते जयणायुक्त उपशमजावसहित करवुं, तेवारे पंजोसण जेवा सर्वोत्तम प
र्वमां तो वळी उपशम जाव अत्यंत विशेष राखवानी आवश्यकता बे. तेम बतां पंजोसण जे
वा महोटा दिवसोमां पण आपस आपसमां एक कहे के महारो गब महोटो तो बीजो कहे
शे अमारो गब महोटो. एम गबने माटे ज लडाइ करी विरुद्ध वचन बोली क्लेश उत्पन्न
करी नाखे, वळी एक कहेशे के तमे चोथनी संवत्सरी करो बो माटे जैनमतथी विरुद्ध चालो
बो, वळी बीजो कहेशे के तमे पांचमनी संवत्सरी करो बो ते जैनमतथी विरुद्ध करो बो, एक क
हेशे तमे उगमती तिथी ल्योबो, तो बीजो कहेशे तमे आथमती तिथी ल्योबो, तेमज एक
कहेशे के देरासरनो आ अमुक पूजारो राखवो तो बीजो कहेशे अमुकने राखवो, वळी सा
मिवात्सल्य जीव दयानां उत्तम प्रकारनां कार्योने माटे तेमज गोरजीनी पछेडीने माटे, वास
क्षेप नाखवाने माटे पण टीपणीउं फरती करे ते वखत पण एक बीजानी पासेथी कमती जा
स्ती रकम जरावनाने माटे में एटलुं आप्युं तो तमे एटलुं आपो. नहीं तो हुं अमुक रकम नही
आपीश, हुं पण अमुकज रकम आपीश. एवीरीतें एक बीजानी साथे क्लेशकारी वचन बोले

छे. घणुं शुं कहीयें, परंतु आखा वरसनां जे वरवांधा होय ते पंजोसण जेवा महोटा पर्वना दिवसोमां आवी उना करीने कजीयो उत्पन्न करवानुं कारण नीपजावे. वास्तविक रीतें जोतां श्रावकोने तो गछ छेज नही. जो गछ छे तोपण साधु आश्रयी सिद्धांतोमां गछ कह्या छे. परंतु श्रावक आश्रयी कोइ स्थानके सिद्धांतोमां गछ कह्या नथी. माटे गछोने वास्ते लडाइ करीने पंजोसणना दिवसोमां शुनक्रिया करवी पडी मूकी तेने बदले कलहकरण रूप क्रिया तो अवश्य नज करवी जोइयें. तेमज वली जेनी मरजीमां जे आवे ते धणी पोतानी श्रद्धापूर्वक तेटला नाणा टीपणी प्रमुखमां नरी आपे किंवा न पण नरी आपे तो तेथी शुं गेरफायेदो थयो? पोते पोतानी उदारतासहित जेम बने तेम शुनक्रियामां वधारे द्रव्य खरचवुं ते पण पोतानी लघुता दर्शावता छतां खरचवुं, कारण के बनता सुधी जो गुप्त रीते परोपकारमां खरचातुं होय तो वली घणुंज रूडुं समजवुं. समजु श्रावकें तो पोतानुं नाम राखवानी पण अनिलाषा न राखवी; परंतु छेवट कोइ रीतें छूटी शकातुं न होय, तेवारें पोतानुं नाम आपवुं पडे तो नले; नाहिं तो मात्र नामनाने माटे द्रव्य खरचीने अल्प फल प्राप्त करी लेवुं नही.

वली आ कल्पसूत्रने सनासमक्ष वांचनारें केवी रीतें वांचवुं ते संबंधि केटलो एक खोलासो यद्यपि प्रथम आ ग्रंथना प्रारंनमां लखायलो छे खरो, तथापि वली कांइक वांचनारने विशेष नलामण करवानी रजा लइये छैये के, प्रथम तो वांचनार जे होय ते श्रीवीतरागना वचन उपर पूर्ण श्रद्धालु होय, बीजुं देशकालने अनुमाने यथाशक्तियें कोइपण प्रकारनुं व्रत करेलुं होय, त्रीजुं सनासमक्ष जे दिवसथी वांचे ते दिवसथी मांमीने ज्यांसुधी पूर्ण करे त्यां सुधी सचित्त वस्तुनो त्यागी होय, चोथुं वांचे तेटला दिवस ब्रह्मचर्यनो पालनारो होय, एवो

पुरुष पोसह अथवा सामायिक लइने, आगल शुद्ध बाजोट राखी तेनी उपर कवली स्थापी ते उपरे बहु यत्न सहित, विनयपूर्वक पुस्तक राखीने पछी सांजलनाराउनी सजा एकठी थाय तेवारें बीजो एक बाजोट मूकेलो होय तेनी आगल पांच पच्चीश बाइयो गीत गाती थकी आवीने प्रथम कंकुनुं स्वस्तिक गुंहली करी तेनी उपर चोखा शालिनुं स्वस्तिक गुंहली करे ते गुंहली करीने बाइयो तथा माणस सर्व ज्यारे पोतपोताना योग्य स्थानकें बेसी जाय त्यार पछी वांचनार जे होय ते त्रण वार पुस्तकने नमस्कार करे, पछी सजासहित पोते उनो थइने एक नवकारनो पाठ कहीने " पुरिमचरिमाणकप्पो० " ए मंगलाचरणनी गाथा संपूर्ण कहीने पछी नीचे बेसी मुख आगल मुखवस्त्रिका राखीने सजासमक्ष वांचना करे, परंतु उघाडे मुखे वांचे नही ते पण काल वेलाये वांचे ते आवी रीतें के सवारना सात वागाथी ते अगीआर वागा पर्यंत वांचे, अने फरी मध्यान्हे बार उपर एक वाग्याथी मांमीने सांजना चार वागा पर्यंत वांचे एवा प्रकारनो विधि जेटला दिवस वंचाय तेटला दिवस दररोज करवो एम करी बराबर मुदतसर आठ वांचना तो अवश्य पूर्ण करवी अने थविरावली पट्टावली जो तेटला दिवसमां संपूर्ण न वंचाइ शकाय तों ते पंजोसणना बीजा दिवसें वंचायं ,तो पण कांइ हरकत नथी. एवी रीतें वांचतां कदापि एक वांचनारनो वांचतां वांचतां घांटो बेसी जाय, अथवा बीजुं कोइ निमित्त बनी आवे, तो ते स्थाने बीजो जे श्रद्धालु वांचनार आवी बेशे ते पण पूर्वोक्त विधिसहित वांचे. आ सजा समक्ष वांचनारनो विधि कह्यो.·

हवे जे पोतानी मेले मनमां वांचीने धारी राखतो होय, अथवा पोतें वांचीने पोताने ज सांजलवुं होय, तो तेणें पण मुखवस्त्रिका आडी आपी पवित्र थइने अकाल वेला टाली

कवली उपर पोथी राखी वांचवुं. ए शुनफलनी देनारी उत्तम प्रकारनी वांचवानी रीत छे.

आ ग्रंथमां जे जे स्थानके जे जे विषयो उपर कथाउ आवेली छे, त्यां त्यां ते ते कथाउना संबंध मां जे जे बनाव बनेला छे तेना चित्रो पण स्थानके स्थानके दाखल करेला छे. एवा सर्व मली चोरासी चित्रोनो समावेश करेलो छे, तेमां अमारा तरफथी केटला एक चित्रोमां जूलो थये लीउ छे. एक तो श्रीमहावीर जगवानने देवानंदा ब्राह्मणीनी कुक्षीमांथी हरणी गमेषी देवतायें जे वखत संहर्या छे, ते वखत जन्मेला बालकना जेवुं तथा हारादिक आजूषणोये करी युक्त जगवाननुं रूप दर्शावेलुं छे ते ठेकाणे एवी आकृति करवी जोइती न हती, परंतु व्यासी दिवस गर्नमां रहेला बालकनो जेवो आकार थाय छे तेवी आकृति आजूषणोरहित करवानी हती, तथा वली एज गर्न त्रिशला राणीनी कूखमा संक्रमाववाने वखते पण तेवी ज आकृति करवी जोइती हती, बीजुं जे वखत जगवान् श्रीवीरस्वामीने इंद्र महाराज मेरुप र्वतनी उपर पांडुकवनमां जन्मसंबंधि महोत्सव करवाने लइ गयेला छे ते वखत इंद्रना खो लामां बेसाडीने जगवानना पगनो अंगुठो मेरुपर्वतनी उपर राखी जाणे ते अंगुठो मेरुपर्वत ने दाबतो होय ? एवा आकारमां स्नान कराववानुं चित्र करवुं जोइतुं हतुं, तेने बदले इंद्रना खो लामां आडो सुवारी मूकवा जेवी आकृति बनीगयेली छे. ए पण चित्रमां जूल थयेली छे. तथा वली केटलेक ठेकाणे जे वखत जेवा अंतःकरणना विचारमां जीव होय ते वखत तेनी मुखमुद्रा तथा शरीरना अवयवो पण तेवाज करवा जोइयें तेने बदले तेवी मुखाकृति अने शरीरना बीजा अंगोना अवयवो न बनेला जेवा चित्र पण थइ गयेला दीठामां आवे छे. ते संबंधि अमाराथी अजाणपणे जे जे जूलो विवेकी सज्जनोने चित्रोमां दीठामां आवे ते

सर्व जूलोनी क्षमापना चित्र अवलोकन करनारा चतुर जनोनी पासेथी हुं मागुं छुं.

आ कल्पसूत्र.मूल पाठे १२१६ श्लोकनी संख्यानुं श्रीजद्रबाहु सूरिये मागधी जाषामां गद्यरूपें रचेलुं छे. ते प्रथमतो मात्र जाद्रपद शुक्ल पंचमीना दिवसें साधुजनोज वांचता हता. ते संबंधि वात ग्रंथमां आवी गयेली छे, परंतु जेवारें आनंदपुरनगर के जे हमणा वडनगरने नामे उंलखाय छे ते नगरना ध्रुवसेनराजा तथा बीजा पण घणा श्रावक श्राविकादि चतुर्विध श्रीसंघनी समक्ष आ सूत्र वांचवानी चाल प्रवृत्त थई. ते वखतथी श्रीपर्वना दिवसोमां प्रत्येक गामोगामे ज्यां ज्यां श्रावकोनी वस्ति घणी होय त्यां त्यां साधुजनोए एनी वाचना करवा मांमी, परंतु ते वखतमां बधाय साधुउ संस्कृतादि जाषामां निपुण हता तेथी ए उक्त सूत्रनी टीका, चूर्णि आदिक संस्कृत जाषामां करेलीउ हती ते वांचता हता, तथा पछी पण घणा कालपर्यंत वांचनाराउ तेज जाषामां वांचता हता परंतु ते वखते घणुं करीने टबा तथा बालावबोध करवानी जरूर पडती न हती. एवीरीतें एक आ कल्पसूत्र नही परंतु अगणित ग्रंथो जे जैन संप्रदायमां प्रवर्त्तता हता ते बधाय ग्रंथोनी रचना मागधी अथवा संस्कृत जाषामांज थती हती. ज्यारें क्रमे क्रमे संस्कृत जाषाना अन्यासी साधुउनी न्यूनता थवा मांमी तेवारें घणाएक मागधी जाषामां अने संस्कृत जाषामां बनावेला ग्रंथोनी उपर पंमित जनोयें टबा जरवा मांम्या तथा केटलाएक ग्रंथोना बालावबोध करवा मांम्या..एवी चाल घणुं करीने विक्रम संवत् चौदशेंना शतकथी वधारे पडेली दीगमां आवे छे. तेमां पण घणा ग्रंथोनी उपर घणुं करीने गुर्जर जाषामां मात्र अक्षरार्थ रूपे टबा करेला तथा केटलाएक ग्रंथोना कांइक अक्षरार्थथी विस्तार करीने टबा करेला अने केटलाएक ग्रंथोना संस्कृत टीका

उपरथी जाणे गुर्जर भाषामां टीकाओ बनावेली होय, एवी रीतना घणा विस्तारपूर्वक बालावबोध करेला दीठामां आवे छे. तेमज संस्कृत भाषामां थयेली टीकाओथी कोइ कोइ स्थले अथवा सर्व स्थलें न्यूनाधिक बालावबोध थयेला पण दीठामां आवे छे. एवी रूढी जेम गुर्जर भाषामां वधारे पडेली देखाय छे. तेमज हिंडुस्थानी भाषामां अने मारवाड मेवाड वगेरे अन्य देशोनी भाषामां तथा एक, बे, त्रण, देशोनी मिश्र थयेली भाषामां पण केटलाएक ग्रंथोना टबा अने बालावबोध बनेला देखाय छे तेने लीधे संस्कृत भाषाथी अज्ञात रहेला जनोने ग्रंथो वांचवाने अनुकूलता थती गइ; तथापि अद्यापि सुधि जे कांइ पूर्वाचार्योएं संस्कृत अने मागधी भाषाओमां अगणित ग्रंथो रचेला छे तेमांना दशहजारमा भाग जेटला ग्रंथोना टबा तथा बालावबोध थयेला नथी. हजी ९९९९९ मा भाग जेटला ग्रंथो लगभग टबा तथा बालावबोध कर्या विनाना शेष रहि गयेला छे तेनो बालावबोधादिक करवानुं काम आगल पंडित जनोना विचार उपर अने मेहेनत उपर आधार राखे छे. एवीरीतें ए कल्पसूत्रना पण जुदा जुदा अनेक साधुओ टबा तथा बालावबोधादिक रचता गया. तेमां मूलपाठ उपर तो टबा भरेला होय अने बीजी प्रसंगे आवेली वातो तथा कथाओ ते बालबोध रूपे लखेली होय पण जे प्रतमां मूलपाठ लखेलो होय ते प्रतनो विगयादि त्यागी योगवहन करनारा साधुओ सिवाय अन्य कोइथी वांची शकाय नही माटे पूर्वोक्त सर्व कोइने वांचवाना काममां आवे एवा हेतुथी आ ग्रंथमां मूलपाठ काहाडी नाखीने मात्र ते मूलपाठना संक्षेपथी अर्थ लइने तथा टीकाकारना आधारथी केटलो एक कथाभाग प्रमुख लइने श्रीविजयराजेंद्र सूरियें बधो मलीने ५५०० श्लोकनो आसरे बालावबोध रूपे ग्रंथ रच्यो पण तेमां वली घणी कथाओ तो

बलकुल हतीज नही तेमज बीजी पण टबामां लखेली प्रतो साथे मेलवतां केटलिक वातो न्यूनाधिक दीठामां आवी माटे बीजी बे त्रण कल्पसूत्रोना टबानी प्रतोनो आधार लइने तेमां छापनार श्रावक भीमसिंह माणेकें वधारो कर्यो तेथी आ ग्रंथ लगजग अगीआर हजार श्लोक संख्या जेटलो थइ गयो. हजी पण थविरावली पटावली वगैरेमां घणी वात वधारे लखवानी हती पण थोडा दिवसना व्याख्यानमां पूर्ण थइ शके नही तेना जयथी पडती मूकी देवी पडी छे; तथा वली श्रीपार्श्वनाथस्वामीना चरित्रमां तेमज बीजे केटलेक स्थानके अन्य प्रतोमां लखेली वातोथी तदन जुदीज रीतें अने अति संक्षेपमां महाराज साहेबे वातो लखी काहाडी हती ते मांहेली घणा स्थले तो फेरवी नाखेली छे, परंतु केटलाएक स्थानके संशय होवाथी तथा महाराजने कागल लखी जुबाब मगाववाथी घणा दिवस छापवानुं काम बंध राखवुं पडे तेम न बनी शकवाथी एमज रेहेवा दीधी छे. तेमज छापवाने घणी उतावल हती माटे वधारे शोधन पण थयुं नथी, तथापि जेटलुं बनी शक्युं तेटलुं यत्किंचित शोधन पण कर्युं छे. वली मारवाड, गुर्ज्जर तथा हिंदुस्थानी मली त्रण जाषायें मिश्रित आ ग्रंथ महाराज साहेबे बनावेलो हतो, परंतु तेमां घणा वांचनार साहेबोने वांचतां कंटालो उपजे. कदाचित् कोइने यथार्थ अर्थ न बेशे, तेथी ते जाषा सुधारीने श्रावक शा. भीमसिंह माणकें घणु करी एकज गुर्ज्जर जाषामां लखीने छाप्युं छे. तोपण हजी कोइ कोइ स्थले मारवाडादि देशोनी जाषायें मिश्रित थयेली जाषा रहेली हशे तथा कोइ कोइ वातो पण अपूर्ण रहेली हशे. तेमज पुनरुक्ति पण घणा स्थानकें दीठामां आवशे ते सर्व वांचनार सज्जनोयें सुधारी वांचवुं.

आ ग्रंथमां शोधनार श्रावक भीमसिंह माणकनी नजर चूकथी तथा बुद्धिनी मंदताथी तथा

लखावी मोकलेली प्रतमां लेखकना दोषथी जे जे भूलो दीठामां आवी ते सर्वनुं शुद्धिपत्र पण गाम श्रीथरादथी पारेख अंबा मोतीचंदें करी मोकलेलुं छे, ते प्रमाणे अहीं छापी मुक्युं छे; तथापि ते शुद्धिपत्र फरी पाछुं प्रत साथे मेलववाने फुरसद न मलवाथी तपासवामां आव्युं नथी, तेथी तेमां पण बधी पूरेपूरी चुको दाखल थइ गयेली होय एम जणातुं नथी, माटे एवी भूलो संबंधि जे कांइ खामीयो रहेली आ ग्रंथने विषे वांचक जनोने दृष्टिगोचर थाय तो ते साहेबोये अमारा उपर कृपादृष्टी राखीने सुधारी वांचवी. अमे आ ग्रंथमां रही गयेली भूलोसंबंधि थयेलो अमारो अपराध तथा बीजोपण जेकांइ श्रीजिनवचनविरुद्ध आ ग्रंथमां लखाण कर्युं होय ते सर्वनुं मिच्छामिदुक्कडं सर्व श्रीसंघनी साथे करीये छैये.

तथा ए ग्रंथमां जे वक्रजडादि उपर दृष्टांतोनी कथाउ आवेली छे, तेमज बीजा पण घणा स्थले कथाउ आवेली छे, तेमां जुदी जुदी प्रतोनी लखावट उपरथी फेरफार दीठामां आवशे माटे प्रथम कल्पसूत्र सांभलनारा साहेबोये कोइ जगायें कथा विस्तारपूर्वक सांभलेली होय अने ए ग्रंथमां संक्षेपथी लखेली होय, अथवा प्रथम कोइ जगायें संक्षेपथी कथा सांभलेली होय अने आ जगायें विस्तारपूर्वक लखेली होय अथवा ते कथाना संबंधमां पण कोइ वार्त्ता कोइक प्रतमां एक रीतें लखेली होय अने तेज वार्त्ता वली बीजी प्रतमां बीजी रीतें लखेली होय तो, ते सर्व जुदी जुदी प्रतो जुदा जुदा साधुउना हाथथी बनावेली होवाथी तेमज जुदा जुदा माणसोना हाथे लखायाथी परंपराये एवा प्रकारनो फेरफार चाल्योज आवे छे, माटे तेवा तेवा फेरफार जोइने कोइ वांचनारे अथवा सांभलनारे एमां भूल थयेली छे एम समजीने मनमां संशय आणवो नही. निःसंदेह थइने एकाग्रचित्तें सांभलवुं.

वळी अमो सर्व श्रावक जाइउने महोटा उत्साहपूर्वक प्रार्थना करीयें छैयें के, आ कल्प सूत्रनी जो वधारे प्रतो न राखी शकाय तोपण प्रत्येक श्रावके एकेकी प्रत तो पोतानी पासें अवश्य राखवी. केमके? आ पुस्तकमां महा मांगलिकनां करनारा एवा चौद सुपन जे श्रीतीर्थंकर जगवाननी मातानें जे वखते जगवान् कूखमां आवी उपजे छे, ते वखते दीठामां आवे छे, ते चौदे सुपनानां चित्रो घणांज सुशोजित बनावी दाखल करेला छे, तेमज वळी प्रत्येक वर्षमां पंजोसणपर्वना आठ दिवस लगण प्रत्येक श्रावक धंधो रोजगार सर्व मूकी देइने धर्मसंबंधि जे जे शुजक्रियाउ जगवाने कहेली छे ते करवामां तत्पर रहे छे, तो तेमने तेवा महोटा दिवसोमां यद्यपि गुरु पासेथी सांजलवानी जोगवाइ मळती होय तो पण फरी पोताने घेर आवी अवगाही लेवाने माटे प्रत राखवानी अवश्यकता छे, तेमज जेमने गुर्वादिक पासे सांजलवानी जोगवाइ न मळे ते साहेबोने तो जरूर वांचवा माटे राखवीज जोइयें. अमो तो जैन बंधुउने एवी जलामण करीयें छैये, के प्रत्येक श्रावके बधाय पुस्तको लखावी तेनो संग्रह करी राखवो जोइयें. जो कदापि तेटलुं द्रव्य खरचवाने सामर्थ्य नही होय तो मात्र आजना समयमां गपाखानानी कळाथी लखेला पुस्तकोना किमतना 'पचाशमा हिस्सा जेटली किमते सारा शोधेला अने लखेली प्रतो करतां हजार दरजे चडतां एवा पुस्तको मळी आवे छे तेटला तो जरूर पोताना घरमां राखवाज जोइयें, पण आपणने वांचतां तो आवडतुं नथी माटे फोकट पुस्तक राखीने शुं करीयें? नकामा प्रडी रहशे, आपणथी सचवाय पण नही, उलटी ज्ञाननी आशातना थाय, वळी कागळो उपर नकामा पैशा कोण खरचे? कागळोतो काळे शडी जाशे एवा एवा अनंत संसारनें वधारनारा कुविकल्प क

रीने पोते पण ज्ञाननो संग्रह न करवो, अने बीजा वळी पांच पचाशने उपर जख्या मुजब जुठा उपदेश आपीने तेमने पण ज्ञाननो संग्रह करवा न देवो. एवी रीतना उपदेशकर्त्ता श्रावक मंकळमां आज वर्त्तमान काळनेविषे हजारो माणसो दीठामां आवे छे, एवा असमंजस नाश्ठथी हास्य विनोदमां पुस्तकोनो संग्रह न करवा माटे लोकोने उपदेश करवाथी धर्मरूप प्रासादनो पायो त्रोडी नंखाय छे, तेथी तेमने अनंत्काळ पर्यंत नरक निगोदादिना दुःख सहन करवा पडशे, ते जोइ मने तेमनी उपर करुणा आवे छे, जे आ बिचारा मोहरूपी मदिरानुं पान करी मदोन्मत्त थइ मायाजाळमां फसी पडेला मदिरानी छाकमां आवीने पोताने नावे तेम बक्यां करे छे, पण ते धर्मरूप धन साचवी राखवाने माटे मंजूषासमान जे धर्मपुस्तको छे तेनो नाश करवानो मजबुत उपाय बतावे छे, तेथी आगळ एना कटुक विपाक जोगववा पडशे माटे तेम न थाय तो सारुं ए माटे तेमने सावधान करवा सारु कहुं छुं के एवा असत्य अने परभवे महाकळहकारी दुःखोने उत्पन्न करनारा उपदेशो करवामां हवे तमारे सावचेत रहेवुं जोइयें. एवो उपदेश तमारे मात्र वचनथी करवानोज बंध राखवुं एटलुंज नही परंतु तमे तमारा मनमां एवो उपदेश करवानी इच्छा पण कदापि काळे राखशो नही. एथी धर्मरूप वृक्षनुं उन्मूळन थइ जाय छे. कारण के पुस्तको भणवा वांचवाथीज धर्मनुं अथवा अधर्मनुं जाणपणुं थाय छे, तेनी तमे निर्भर्त्सना करो छो तो पछी बीजो एवो कयो पदार्थ छे के जेना आधारे तमाराथी धर्मनुं स्वरूप जाणशुं जशे?

तेमां वळी आटलो विशेष छे जे केटला एक साधारण गरिब अवस्थाने प्राप्त थयेला स्वल्पद्रव्यवान् जे होय छे ते तो पोतानी यथाशक्तिये ज्ञान पुस्तको उपर प्रतिवर्षे पांच रुपैया

खरच करता दीगमां आवे छे, परंतु जे द्रव्यवान् छे तेमने तो जाणे घोर निद्रा आवी गये ली होय एवी स्थितिमां रह्या थकां ज्ञान ते वली शुं? अने पुस्तक ते शुं? एटलुं पण जाणता नथी तो पछी पुस्तको खरीद करी पोते लइ वांचवा, बीजा जे निर्धन जनो होय तेमने वांचवाने माटे मफत आपवा, ज्ञान भंडाराउ करी राखवा, एवी वात तो जाणेज क्यांथी!

माटे जे प्रमाणे नवा नवा श्री जिनमंदिरो करावगामां द्रव्य खरचवुं तेमां महोटो लाभ छे, ते वातो पण सर्व शास्त्रना आधारथी जाणी जाय छे तो तेवा शास्त्रोनो संग्रह करी तेना महोटा महोटा भंडारा करावगा तेमां तो वली देरासरो करावगा करतां पण अनंतगुणो लाभ छे, तेम छतां ते वातमां आशातनादिक दूषण काहाडी देखाडवा अने कोइनुं मन भगाववुं एना सरखुं महोटामां महोटुं पाप वली बीजुं कोइ नथी. जो ज्ञाननो संग्रह करवामां आशातना लागशे एवो बोलतां तमारी जीभ अटकती नथी तो वली देरासर कराववामां पण कोइ अन्यदर्शनी आवी थुंक प्रमुख नाखशे तो तेनी पण आशातना थाशे माटे ते पण न करवा जोइयें एम कहेवामां पण कोइ वखत तमे भर राखशो नही? ते विचारी जोजो. माटे कोइना आगल कुतर्क करी कल्पित वातो बनावीने कहेवाना कामथी दूर रहेजो. परमेश्वरेंतो श्रीजिनचैत्य नवीन करावगा, पोषध शालाउ नवीन कराववी, अने पुस्तकोना नवा नवा भंडारो करावगा ए त्रण पुण्यक्षेत्र यथा,तथा साधु,साध्वी, श्रावक अने श्राविका ए चतुर्विध श्रीसंघनुं वैयावच्च करवुं, ए प्रमाणे ए सातक्षेत्र पुण्यना छे, ते शुभक्षेत्रोमां श्रावके पोतानुं न्यायोपार्जित द्रव्य खरचवुं एवी रीतें आगमोमां कहेलुं छे; तो ए सात क्षेत्रमांहेज ज्ञानना भंडारा करावगा, ज्ञान पुस्तकोनो संग्रह पोते करवो, बीजाने करावगानो उपदेश देवो,

जे करतो होय तेने अनुमोदन आपवुं, जे ज्ञानपुस्तकोनी वृद्धि करतो होय, जे ज्ञान जाणवा मां वांचवामां, जणाववामां पोतानो काळ निर्गमन करतो होय, तथा अन्यजनोने पण एज उपदेश करतो होय ते पुरुष सर्वमांहे शिरोमणी समजवो, तथा ज्ञानने पोते जाणवुं, बीजा जे जाणता होय तेमने पोताथी बनतुं यथाशक्तियें आश्रय आपवुं, जाणनार वाचनारने पुस्तको. ल इ आपवा तेने अन्न वस्त्रादिक आपवानुं सहाय देवुं, इत्यादिक ज्ञानवृद्धि थवामां जे श्रावकें द्र व्य खरचवुं ते पूर्वे कहेला सात पुण्यक्षेत्रो मांहेलुं मुख्य क्षेत्र छे, तो तेवा शुभस्थानकमां कोइ अजाणना कहेवाथी अथवा देश काळने अनुमाने घणा पुरुषोमां मान नही मळे, एवा हेतुथी अथवा लोभदशाथी पोताने द्रव्य खरचवानो संकल्प न थाय ते तो चूको, परंतु पोते सारासार विचारमां निपुण न होय तो पण डाह्यो बनी पूछवा आवनारने, अथवा स्वभावे चार गपा मारनार बेग होय तेमनी पासे वातो करतां जो पुस्तकसंग्रह करवानी वात निकळेतो कहेके भाइ आ काममां आशातना बहु लागे छे, आ तो महापापनुं काम छे, एमांतो प्रा णी रुबी जाय, एथीतो सातमे नरके जवुं पडे, अथवा ए पुस्तकोना संग्रह करनारा, छपा वी प्रसिद्ध करनारा, एने अनुमोदन देनारा, एनी प्रशंसा करनारा ए सर्व नरकना अधि कारी थाय छे, ए महोटी आशातनाउ करे छे, ए अनंत संसार भटकशे, एनो क्यारे पण छूटको थवानो नथी, एवी एवी जे चार वातो पोताने बोलतां आवडती होय, ते बोलीने बीजा प्राणीउने पण पुण्यक्षेत्रमां द्रव्य खरचवाने नाकारो करे, तेथी तेमनुं पण मन उतरी जाय, वळी ते पण बीजा दशजणनी पासे जइ एवी वातो करे, तेथी पुस्तकनी वृद्धि करवा उपर कोइनुं पण चित्त लागे नही. तो एवा असत्योपदेश करवाथी शुं तेने फायदो थाय

छे? एथी तो उलटुं धर्मना नास्तिपणानो संभव थइ जाय. कारण के कोइपण धर्मनी प्रवृत्ति करवी अने ते धर्मने महोटा पाया उपर लाववो, तथा ते धर्मनुं महत्त्व वधारवुं तथा ते धर्मने सर्वदर्शननी वचमां दीपो करीने प्रकाशित करी राखवुं तथा सर्व दर्शन मां मुख्य अने श्रेयस्कारी शिरोमणी करवो, तथा घणा जनो आपणा धर्मने मान्य करे, घणा जनो आपणा धर्ममां आवी भले, घणा जनो आपणा धर्मने अंगीकार करे, घणा जनो आपणा धर्मनी प्रशंसा करे, इत्यादि धर्मनी वृद्धि करवानुं मुख्य कारणतो ते धर्मसंबंधि धर्मपुस्तकोज छे, अने बीजुं ते धर्ममां महोटा विद्वानोनी संख्या महोटी होवी जोइयें ते विद्वानो थवानो मुख्यआधार पण धर्मपुस्तकोज छे,तो तेवा धर्मपुस्तकोनी अवगणना करी,तेने पडतो मूकी,ते नीजे वृद्धि करतो होय ते पुरुषने सर्व पुरुषोमां शिरोमणी गणवो जोइयें. ते तो दूर रह्युं पण उलटुं तेने पतित करवा माटे तेना उपर आशातना लागवाना दूषणोनो आरोप करी तेनी निंदा करवी. ए शुं थोडी सरमनी वात छे? एथी जो पोताना धर्मनुं निर्मूलपणुं न थाय तो वली धर्म गमाववाना बीजा एथी वधारे साधनो कोण छे वारु?

वास्तविक जोतां तो उक्त पुरुषो जे छे तेज पोतें पोताना धर्मने दूषित करी पोताना धर्म रूप प्रासादना थंभभूत एवा जे धर्मपुस्तको तेनो जडा मूलथी नाश करवानो जाणे धंधोज लइ बेठेला छे. एवा प्राणीउनी गणनामां तेमने गणवा माटे कांइ पण हरकत देखाती नथी, ते पुरुषो, खरेखरा स्वधर्मनिंदक, स्वधर्मभ्रष्ट, स्वधर्मनाश करनारा, अविवेकी, अनंतो कालपर्यंत अपारावार संसारमां परिभ्रमण करनारा. स्वधर्मद्वेषी, ज्ञानद्वेषी, ज्ञाननी हेलना करनारा, धर्मध्वंसक, क्रूरपरिणामवाला, श्रद्धारहित, विनयरहित, एवां जाणवां.

केमके जेणे ज्ञानने विनय न कर्यो ते देव गुरुनो विनय पण क्यांथी करे ?

प्रस्तुत ज्ञान ज्ञानीनां निंदक जनोने आटलो पण विवेक नथी के जमणवार करी न्यातो जमाडी, सातमो पापस्थानकजे अहंकार छे तेने धारण करी, जाणे कोइ नाचतो कूदतो होय तेवा गांडा जेवा आकारमां बनी जइ छकाय जीवोनो आरंभ करीने वली तेने पुष्ट-करवा सारु अनुमोदन करे. जे जूओ आ अमुक माणसे-नातवरो कर्यो तेनां करतां मारुं जमण केवुं बनी आव्युं के तेवुं आज दिवस पर्यंत कोईयें करेलुं नथी. एम घरोघर बाईयोनां टोले टोला मलीने वातो करता हता माटे आपणने तो सहुयें वखाण्या, आपणे हवे खरचे वधी गया, आपणे महोटा थइ गया, एवीरीते विकारवंत थइने जाणें हुं धर्मिष्ठ महोटो ज्ञानी थइ गयो, अने हवे आवी कीर्त्ति थइ, तेथी माठी गतिये जावानी बीक मटी गइ. परंतु ते एम समजतो नथी, के बुढायोना मरणादि पाछल जे नातवराकरी जमण करवां, अने खावा खवरावावाथी राजी थवुं, नाराजी थवुं, ए सर्व चाल निखारी ब्राह्मणोना घरथी चालेली छे, पण श्रावकोना घरथी चालेली नथी. एथी मात्र छकायनो आरंभ थाय ने अभिमान वधे ए बे कर्म शिवाय जो दान बुद्धिथी अनुकंपा लावीने गरीब दुःखी भूखे मरतांने जमाडे तो तेथी शाता वेदनीय कर्म बांधी पुण्य उपार्जन करे. नही कां आ भवे मान मल्युं एटलुंज फल समजवुं, अने पुस्तकोनुं दान देवाथी तो लाखो माणसोनां मननां परिणाम सुधरे, जेथी तेमनामांथी दुर्गुणो दूर थइ जाय, सद्गुणनी प्राप्ति थाय, धर्म पामीने धर्म मार्गमां प्रवृत्ति करे, तेथी देवादिकनी शुभगतियोनां सुख भोगवी परंपरायें मोक्ष पामे. वली दान आपनारने पण वधारे अहंकार न आवे अने सरलस्वभावी थको ते पण तरतज धर्म पामी

परंपराये मोक्ष पामे. ए ज्ञानदानसमान बीजुं कोई पण उत्तम दान नथी. सर्वदानोमां श्रेष्ठ दान ते ज्ञाननुंज छे, पारमार्थिकपणे मोक्षनुं साधन छे माटे नावथी अजयदान जे छे ते ज्ञाननुंज दान छे एम समजवुं तो दूर रह्युं परंतु आ संसारमां रह्या थका मात्र साधारण नीति शास्त्रनुं ज्ञानसंपादन करवाथी पण केटला अगणित फायेदाउ थाय छे, ते सर्व कोइ प्रत्यक्ष देखे छे, धर्म, विवेक, नीति. मर्यादा, मह्हापण, चतुराइ, सन्यता, इत्यादि लक्षावधि सक्षुणोनुं साधन ते ज्ञानज छे, आ नव, परनव बेहु नवे सुखदाइ छे, तो तेनुं आराधन करवामां शुं खोटुं छे, आटलुं पण ते समजता नथी!!!

वली केटला एक श्रावक नाइउ तो कोइने विवाहादि कार्योमां जमणवार आदिक करवा पडे छे, तेमने वासणोनो खप पडे माटे पोतानी महोटाइने वास्ते कोइ मागवा आवे तो तेने आपवा जोइयें एवा हेतुथी केटलीएक जातना त्रांबा पितल वगेरे धातुना वासणोनो संग्रह करी राखे छे के जे बीजाने मागवा आपवाथी ते वासणो लइ जइ तेना उपर रसोइ करे तेमां छकायनो आरंन थाय छे, ते सर्व कोइ जाणे छे, वली ते लाडवा प्रमुख जमनारा मनुष्योने पण पारकी रसोइ खावाथी कोइ प्रकारनो गुण प्राप्त थतो नथी, मात्र खाइ पी मदोन्मत्त थइने विषय सेवनमां तत्पर थवा शिवाय बीजो कोइ विशेष फायदो थतो. देखातो नथी अने पुस्तको लइ पोताने तथा बीजाउने वांचवा नणवाने माटे संग्रहरूपे राखेला होय तेनाथी वाचनार अथवा राखनार बेहुने कोइ प्रकारनो आरंन. थतो देखातो नथी तथा विषयसेवनमां मदोन्मत्त थवाने बदले उलटो तेनाथी निवृत्त थवानो उपदेश मले, तेथी ते अकार्य करवाने बीहीतो रहे, एवा एवा अनेक प्रकारना फायदा थाय छे.

एमज केटलाएक विवाहादिकमां वरराजाने पहेरवा माटे कोइ मागवा आवशे तो जरूर आपवा पडशे. एवो संकल्प करीने नवनवा प्रकारना सोना रूपा हीरा मोती आदिकना आभूषणो घडावी राखे छे, तथा वस्त्रोना वागा सिवरावी राखे छे, तेम कोइने जणवा वांचवाने माटे ज्ञानना भंडारा करी राखवामां शुं हरकत आवी नडे छे? पण एवी बुद्धि तो भाग्येज आवे.

वली केटलाएक घरंटी, कोशी, कोदाल, पावडा प्रमुख छकाय जीवोनी हिंसाना अधिकरणनो संग्रह करी राखे छे के कोइ मागवा आवशे तेने आपवा पडशे तो तेने बदले कोइ वाचवा सारु मागवा आवशे तेने आपवुं पडशे ए हेतु माटे ज्ञाननो संग्रह करी राखवामां कांइ हरकत जणाती नथी, हरकत मात्र एटलीज छे के ज्ञानना संग्रहथी सद्गति प्राप्त थवानी परंपरा चालु थाय छे, अने घरंटी आदिकना संग्रहथी छकायनो आरंभ थवाने लीधे दुर्गतिनी परंपरा चालुज रहे एं विना बीजी कसी हरकत जोवामां आवती नथी.

प्रस्तावनामां यद्यपि नियमतो एवोज छे के, जे ग्रंथनी प्रस्तावना होय ते ग्रंथनो सारांश देखाडवो जोइये, तेने पडतो मूकीने बीजी अन्य वातो लखेली छे, तथा प्रस्तावना पण एक न्हाना सरखा ग्रंथ जेटली लखाइ गयेली छे, तेमज उतावलथी लखवाने लीधे पुनरुक्ति पण घणा स्थले थयेली छे तेनुं कारण ए के आवातो जाहेर करवा माटे म्हारा अंतःकरणमां हर हमेस इच्छा रहेती हती, परंतु कोइ योग्य प्रसंग न मलवाथी एमांज लखी मूकीने माहारी इच्छा पूरण करी छे माटे जेमने सामान्य पणे विषय जोवानी अभिलाषा होय तेमने आ ग्रंथनी अनुक्रमणिका वांचवाथी जाणवामां आवी जाशे, अने विशेष खप करनाराये आ ग्रंथने आद्यथी अंत पर्यंत वांची जावुं ए म्हारी प्रार्थना छे. अस्तु ॥

॥ अथ कल्पसूत्रबालावबोधस्य शुद्धीपत्रं प्रारभ्यते ॥

पत्रांक	पृष्ठांक	पंक्त्यं०	अशुद्ध	शुद्ध.	पत्रांक	पृष्ठांक	पंक्त्यं०	अशुद्ध	शुद्ध
२३	२	१	महाक्रशु	महाशुक्र	११९	१	१६	वांढी	वींढी
२७	१	५	मीधो	धींगो.	१३२	२	५	एघाण	एंधांण
२७	२	१७	घमी	धडी.	१३३	२	१६	जोरवंमना	जोहखंमना
३३	२	२	खामी	स्वामी	१३४	१	७	जोरवंम	जोहखंम
४३	१	९	ग्रंथिल	ग्रथिल	१४२	२	६	कीधि	कीधो
५१	१	६	श्रृंगार	शृंगार	१५२	१	१०	मेघलीने	मेघमालीने
५८	१	१	ढांव्याआदिक	ढाटवादिक	१६०	१	१	नारव्यो	नारव्या
५८	१	९	जासूसना	जासूलना	१७०	२	१४	नमि	नूमि
६२	२	१८	कूंपापडो	पापडोकूं	१७१	१	६	कुमी	ऊडी
६३	२	१२	वांढुं	वांढा	१७३	१	१४	अगंयफूलना	अगंधनकुल०
७४	१	२	कूर्मः	कुर्मः	१८६	२	१५	घणोफेरवो	घडोफेरवो
७४	१	२	रीदसी	रीद्दशी	२१८	२	१२	गेवरीनी	घेवरनी
८२	१	३	केवलीएक	केटलीएक		२	१०	गेवरीया	घेवरीया
८६	१	१२	वरफरी	फरफरी	२४८	२	१	तेनेयं	तैरियं
९१	१	६	फूकरा	फूकारा	२४८	२	२	योगोघहनं	योगोद्वहनं
१०४	२	१८	कोलो	कोली	२४८	२	२	युक्ता	मुक्ता

अस्य पुस्तकस्यानुक्रमणिका.

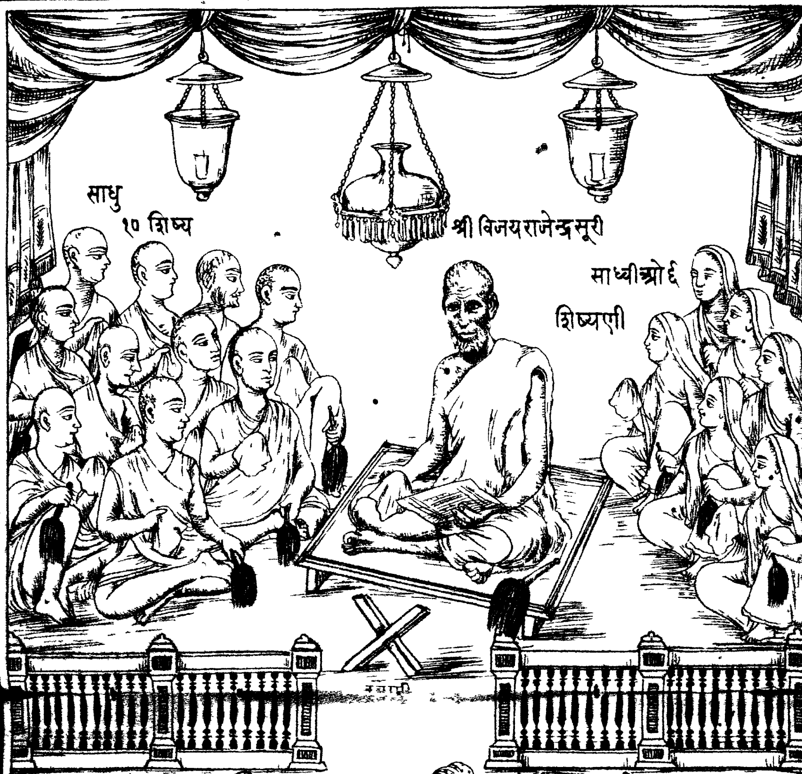
अनुक्रमांक.	विषयोनां नाम.	पृष्ठांक.

अनुक्रमांक.	विषयोनां नाम.	पृष्ठांक.
६५	जगवान एक वर्ष उपरांत वस्त्रसहित रह्या पछी वस्त्ररहित थया तेना कारण आश्चर्यी सोमदेव ब्राह्मणनी कथा, एमां दारिद्र्यनुं स्वरूपवर्णन करेलुं छे.	१०६
६६	जगवाने चंमकोशीया सर्प्पने प्रतिबोध्यो तेनी कथा.	१११
६७	जगवानने नावमां बेगा उपद्रव थयो, ते कंबल अने संबल देवताये निवार्यो, तेनीकथा	११२
६८	पुष्प नामा सामुद्रिक शास्त्रना जाणकारनी कथा.	११३
६ए	जगवाने नालंदी पाडामां बीजुं चोमासुं कर्युं तिहां गोशालो मल्यो तेणे घणा स्थानके अनेक प्रकारना चाला कर्या छे, तेनी कथाउ जगवानने थयेला उपद्रवोनी कथाउ.	११३
७०	वेश्यायन नामा तापस जेणे गोशाला उपर तेजोलेश्या मूकी तेनी कथा.	११७
७१	गोशालो जगवानथी जुदो विचर्यो, तथा संगम देवे करेला महोटा वीश उपसर्ग.	११८
७२	जीरणशेठे जगवानने पारणुं करवा कह्युं छतां पूर्णशेठना घेरथी वोहोर्युं	१२०
७३	चंदन बालायें अडदना बाकुला जगवानने वहोराव्या तेनी कथा.	१२१
७४	जगवानना कानमां गोवालीयें खीला ठोक्यां ते कथा, तथा उपसर्गोनुं प्रमाण.	१२२
७५	जगवान केवा थका विचर्या तथा बारवर्ष ने साडा छमहीनामां करेला तपनुं प्रमाण.	१२३
७६	जगवानने केवलज्ञान उपन्या पछी अगीआर गणधरना संशयछेदक, गणधरवाद, तथा चतुर्विध श्रीसंघ स्थापन.	१२६
७७	गौतमस्वामि अष्टापद पर्वते गया. पन्नरसें त्रण तापसोने दीक्षा दीधी जगवानना चोमासानी संख्या गौतम विलाप, गौतम केवलज्ञान इत्यादि.	१४०

अनुक्रमांक.	विषयोनां नाम.	पृष्ठांक.
७८	भस्मग्रहाधिकार, भगवानना परिवारनी संख्या, तथा भगवाननुं निर्वाण. अहीं सुधी छठुं व्याख्यान संपूर्ण थयुं, अने महावीरचरित्र पण संपूर्ण थयुं.	१४३
७९	श्रीपार्श्वनाथस्वामीना दश भवनो अधिकार.	१४६
८०	श्रीपार्श्वनाथनुं जन्म, तथा विवाह तथा कमठ.तापसनो अधिकार इत्यादि	१४९
८१	पार्श्वनाथ भगवाने दीक्षा लीधी,पछी कंलिकुंम् तीर्थ थयुं तेनी कथा, तथा कूक्कडेसर तीर्थ थयुं तेनी कथा, तथा भगवानने कमठे उपसर्ग कर्या तिहां अहिछत्रा नगरी थइ तेनी कथा, तथा केवलज्ञान उपज्युं तथा परिवारनी संख्या निर्वाण.	१५०
८२	श्रीनेमीश्वर भगवाननां पांच कल्याणिक यादवो अने पांम्रवोनी कथा.	१५३
८३	चोवीश तीर्थंकरनां आंतरां कहीने सातमुं व्याख्यान समाप्त कर्युं छे.	१७४
८४	श्रीरुषभदेव भगवान्‌ना तेर भव तथा सात कुलघर थया, तेनी कथाउ.	१७६
८५	श्रीरुषभदेवनुं जन्म,नामस्थापन,बाल्यावस्थानुं वर्णन,तीर्थंकरोने स्तनपान करवानी अने आहार करवानी रीति,भगवाननो विवाह तथा पुत्र पुत्रीनो परिवार.	१८३
८६	राज्याभिषेक, अयोध्यानी रचना, दीक्षा, युगलीयाने आहारनी कला सीखवी.	१८४
८७	अढारलिपि, स्त्रीनी चोशठ कला, पुरुषनी बहोतेर कला तथा भगवाने चोटलीनी शिखा इंद्रमहाराजना कहेवा उपरथी राखी इत्यादि.....	१८६
८८	नमि विनमिंनी कथा,श्रेयांसे पारणुं कराव्युं तिहां बेहु हाथनो थयेलो विसंवाद.	१८८
८९	भगवानने केवलज्ञान उपनुं, मरुदेवीजी पण केवल पाम्या तेनुं वर्णन.	१९४

अनुक्रमांक.	विषयोनां नाम.	पृष्ठांक.

॥२०॥


साधु
१० शिष्य
श्री विजयराजेन्द्रसूरी
साध्वीओ ६
शिष्यणी


सांभलनारा
सांभलनारानी सभा
स्वस्तिक
काढामेढे

॥ॐश्रीशांतिनाथाय नमः॥अथ कल्प सूत्रस्य बालावबोधःप्रारंजः॥प्रथम ग्रंथकर्त्ता आ ग्रंथनी रचना करवानो हेतु कहे ले. श्रीजिनशासननें विषे सर्व पर्वमांहें शिरोमणि श्रीपर्यूषण पर्व ले. ते पर्वना दिवसोमां नगर नगरने विषे कल्पसूत्र वंचायले पण योग वहन करनारा साधु मुनि राजनेज सूत्र वांचवानो अधिकार श्रीतीर्थंकर जगवाने दीधो ले बीजा कोइथी सूत्रनी व्याख्या थाय नही माटे तेवा मुनिराजोनुं आगमन सर्वस्थलें होतुं नथी तेथी जे. गाममां साधुमहाराज बिराजमान न होय ते गाम निवासी श्रावकोनें कल्पसूत्र श्रवण करवामो अंत राय पडे ले ते अंतराय दूर करवानें वास्ते जेम पूर्वाचार्योयें लोकोपकारनें अर्थे पूर्वे अनेक प्रकरणोनी रचना करेली ले तथा वर्त्तमान कालमां पण करे ले ते प्रकरण पण सूत्रोना अर्थ रूपज ले अने तेनुं पठन पाठन चतुर्विध श्रीसंघ करे ले तेम हुं पण श्रीकल्पसूत्रना बालाव बोधने प्रकरण रूपें बनावुं छुं के जे ग्रंथ साधु, साधवी श्रावक अने श्राविका मली चारे प्रका रना श्रीसंघने वांचवाना उपयोगमां आवे केमके ए ग्रंथ पण सूत्रनो अर्थ रूप होवाथी प्रक रण सदृश समजवो ॥ १ ॥ ॥ हवे श्रीपर्यूषण पर्वने विषे ए ग्रंथ वांचवानो विधि कहेले जेम जे शहेरमां श्रीमुनिमहाराज चोमासुं रह्या होय अने ते गामना श्रावको एकठा थइ साधुजी पासेंथी सूत्रनी पोथी मागी लइ आवीनें एक श्रावकना घरमां राखे तिहां रात्रि जागरण करे पली बीजें दिवसें श्रावक श्राविका एकठां थइने एक कुंआरा लोकरानें अबोट वस्त्र पहेरावी हाथी उपर बेसाडीने अथवा अश्वप्रमुख कोइ उत्तम वाहन उपर बेसाडी ते पोथी एक थालमां राखी ते थाल ते पहेला लोकराना हाथमां आपी सर्वने बदाम, साकर पतासा आदिकनी प्रजावना करी वाजते गाजते महोटा महोत्सव पूर्वक उपाशरे आ

वीनें ते पुस्तक गुरुना हाथमां आपे गुरु वांचना करे तें सर्व श्रीसंघ सांजले अने गुरु आ
गल फलादिक राखे छे ॥ तेम आ पुस्तक पण जे श्रावकादिकनी पासें होय तेनी पासेंथी
मागी लावीने पंचे ठेरावेला बीजा कोइ श्रावकने घेर लइ जइ तिहां रात्रि जागरण करी पछी बीजे
दिवसें सर्व संघ मली पूर्वोक्त रीतें महोटा महोत्सव पूर्वक पौषधशालामां किंवा उपाश्रयमां
अथवा कोइ श्रावकने घेर जिहां सामायिकादिक करवानी कोइ स्वछ निर्मल जगा होय ते
स्थानके अथवा बीजी कोइ जीवादि उपद्रव रहित जगा होय के जिहां सर्वसंघें मली वांच
वानो विचार कर्यो होय तेवी जगाने यथाशक्तियें शोजावी राखी होय तिहां आवीनें ज्ञान
जक्ति पूर्वक घणाज यत्नथी सर्व प्रकारनी अशातना टाली पोथी कोइ विवेकी सुज्ञ श्रावकना
हाथमां आपीने वंचाववी अने बीजा सर्वजनोयें प्रमाद, निद्रा, विकथादिकनो त्याग करी
विनय पूर्वक त्यां बेसीनें एकाग्रचित्तें सांजलवी ॥ २ ॥ ॥ हवे श्रीपर्यूषण पर्व तथा कल्प
सूत्र अने श्रमणसंघ एमनुं महत्व कहे छे ॥ श्लोक॥नैतत्पर्वसमं पर्व,नचकल्पसमं श्रुतं॥ नधा
र्मिकसमःसंघ, स्त्रिरत्नानि जगत्त्रये॥१॥ अर्थः॥आ जगतने विषे दीपालिकादिक अनेक प्रका
रना लौकिक पर्व छे तथा चोमासी, श्रीतीर्थंकरदेवना पांच कल्याणिक, अष्टमी, पक्खिका
अने तीर्थ यात्रादिक अनेक पुण्य पर्व छे ते सर्व लोकोत्तर उत्तम पर्व छे ए सहु पर्वने विषे शिरो
मणि चिंतामणि रत्न सदृश ज्येष्ठ एवुं सांवत्सरिक पर्व छे ए जेम सांवत्सरिक पर्व समान बीजुं कोइ
पर्व नथी तेम कल्प सूत्र समान बीजुं कोइ सूत्र पण नथी तथा चतुर्विध श्रीसंघ मांहे श्रीसाधुमु
निराजना संघ समुदायसमान बीजो संघ पण कोइ नथी एटले सर्व पर्वमांहे सर्वोत्तम पंजोसण प
र्व छे तेने विषे कल्पसूत्र वंचाय ते पण एकादशांगादि सर्व सूत्रमां उत्तम छे तेम कल्पसूत्रना वांचना

र साधुमुनिराज तेपण चारे प्रकारना संघमांहे उत्तम छे एम ए त्रणे साक्षात् रत्न समान जाणवा ॥३॥ हवे व्याख्यान करनार पोतानी लघुता पूर्वक श्रीगुरुमहाराज अने श्रीसंघनी महत्वता देखा डे छे. व्याख्यान करनार कहे छे के हुं मंदमति, मूर्ख, अज्ञानी, महाजड छतां पण श्रीसंघनी समक्ष दक्ष थइने आ कल्पसूत्रनी व्याख्या करवानुं साहस करुं छुं. व्याख्यान करवाने उज माल थयो छुं. ते सर्व श्रीसद्गुरुनो प्रसाद अने चतुर्विध श्रीसंघनुं सांनिध्यपणुं जाणवुं जेम अन्य शासनमां कहेलुं छे के श्रीरामचंद्रनी सेनाना वांदरायें महोटा महोटा पाषाण लइनैं समुद्रमां राख्या ते पथरा पोतें पण तर्या अने लोकोने पण तार्या ते कांइ पाषाणनो तथा स मुद्रनो अने वांदराउनो प्रताप जाणवो नही परंतु ते प्रताप श्रीरामचंद्रजीनो जाणवो केमके पत्थरनो तो एवो स्वभाव छे जे पोतें पण बूडे अने आश्रय लेनारनें पण बूडाडे तेम हुं पण पत्थर सदृश छतां श्रीकल्पसूत्रनी व्याख्या करुं छुं तेमां माहारो कांइ पण गुण जाणवो नही तेमज पौषधशाला अथवा पुस्तकना पानांनो पण कांइ गुण जाणवो नही ए गुण मात्र श्री सद्गुरु अने श्रीसंघनोज जाणवो तथा जेम कोइ भरतभावनी जाणवा वाली गीतकला अने नृत्यकलामां विशारद छपन्नकोडी ताल भरत शास्त्रनी पारग एवी नर्त्तकी होय ते गीतगान क रते मृदंगध्वनि वाजते नृत्य करे अनेक चक्रगोला फेरवे अने हाव भावथी लोकोना मन रंजन करे तेमज कोइ गामडीयानी गामडियात एक घेली स्त्री होय तेपण तालोटाना छंद प डते थके नृत्य करे तथा जेम कोइ महागंभीर समुद्र होय ते पण लहेरो आपे अने कोइक गामनुं न्हानुं तलाव होय ते पण वर्षाऋतुमां पाणीथी पूरण भरायुं थकुं लहेरो आपे तेने पण कोइ निवारे नही तथा जेम शुद्ध दूधमांहे अखंड चोखा नाखीनें खीर रांधीयें ते

पण उजरायछे अने कूशकानी राबडी रांधीयें तेपण उजरायछे तेमां पण कांइ आश्चर्य नथी तेम जे एहज स्थानकें एहज क्षेत्रें अनेक गणधर, संपूर्ण श्रुतधर, महाशास्त्रना वेत्ता, नवरसावतार, महा व्याख्यानना करनारा व्याख्यान करे अने हुं पण व्याख्यान करुं तेमां अरस्परस एटलो फेर जाणवो एटले नरहनेदने जाणनारी नर्त्तकी तथा समुद्र अनेशुद्धखीरने सदृश ते गणधरादिक जाणवा अने गामडियात तथा गामनुं तलाव अने कुशकानी राबडी समान मने जाणवो ते हुं श्रीसद्गुरु अने श्रीसंघना प्रसादथी माननीय थयो छुं जेम कोइ पाषाण जडछतां तथा ज्ञान विवर्जित छतां पण तेनी ज्यारें प्रतिमाजी नीपजावीयें त्यारें ते सर्व जनोनें माननीय पूजनीय थाय तेनी पेरें श्रीगुरु तथा श्रीसंघना प्रसादथी हुं पण माननीय थयोछुं ॥ ४ ॥ ॥ हवे बालावबोध करनार प्रारंजमां श्रीदेवगुरुनें नमस्कार लक्षण मंगलाचरणने अर्थे श्लोक कहेछे, ॥ श्लोक ॥ नत्वा श्रीमन्महावीरं, गौतमादिगणाधिपान् ॥ कुर्वेहं कल्पसूत्रस्य, व्याख्यां बालोपकारिणीम् ॥ १ ॥ ५ ॥ ॥ हवे प्रथम श्रीगुरु महाराजनो आदेश लइनें जे क्षेत्रमां साधु चोमासुं रहे तिहां चोमासामां जाद्रपद मासने विषे पर्यूषण पर्व आवे थकें मांगलिक निमित्तें पांच दिवस पर्यंत श्रीकल्पसूत्र वांचे . ते कल्प एवुं नाम आचारनुं छे ते साधुनो आचार दश प्रकारनो छे,यडुक्तं ॥ आचेलुक्कुदेशिय, सद्यायर रायपिंम किइकम्मे ॥ वय जिठ पडिकमणे, मासं पद्योसवण कप्पे ॥ १ ॥ ॥ अस्यार्थः॥प्रथम अचेलक,बीजो उद्देशिक,त्रीजो सय्यातर,चौथो रायपिंम,पांचमो कृतिकर्म,छठो व्रत,सातमो ज्येष्ठ, आठमो प्रतिक्रमण,नवमो मासकल्प अने दशमो पंजोसण कल्प ए दश प्रकारना कल्प एटले आचार तेना सामान्यथी नाम कह्यां हवे विस्तारार्थ कहेछे ॥ प्रथम जे वस्त्र नही राखवा तेने अचेलक कल्प कहीयें तिहां श्रीऋषजदेव

नगवान तथा श्रीमहावीर स्वामीना साधु तो श्वेतमानोपेत जीर्णप्राय वस्त्रने धारण करे तेमां
हुंटीथी चार आंगुल नीचो अने गुदाथी चार आंगुल उंचो एवो साडा त्रण हाथनो चलोटो
राखे तथा साडाचार हाथनो कल्पडो राखे तथा पोताना आंगुल प्रमाण एक वेंतनें चार आ
गुलनी मुहपत्ति राखे एम अर्द्ध शरीर उघाडुं अने अर्द्ध शरीर ढांक्युं राखे एवीरीतें पहेरेला वस्त्र
ते अण पहिर्यां जेवां समजवां माटे तेने अचैलक कहीयें ते उपर दृष्टांत कहे छे जेम कोइ एक
पुरुषें धोतीया बनावनारनें कह्युं जे महारा धोतीयां ताकीदथी आप केमके हुं नागो फरुं छुं एवुं
वचन व्यवहारथी कह्युं हवे ते पुरुषें जूना वस्त्रनुं पोतीयुं पहेर्युं छे तोपण नागो फरुंछुं एम
कह्युं वली बीजुं दृष्टांत कहे छे जेम कोइएक पुरुष पोतीयुं पहेरीने नदी उतर्यो तेनें कोइ
एकें पुछ्युं के नाइ तुं नदी शीरीतें उतर्यो तेवारे तेणे जवाब आप्यो के हुं नागो थइने नदी
उतर्यो वली त्रीजुं दृष्टांत कहे छे जेम कोइएक मोसी जूना वस्त्र पहेरी वणकरनी पासें जइ
कहेवा लागी के अरे नाइ महारां वस्त्र तैयार थयां होयतो मने आप हुं नागी फरुंछुं एवी
रीतें साधुने पण जीर्णप्राय जूना श्वेतमानोपेत वस्त्र धारण करते छते पण वस्त्र रहित अचै
लकज कहीयें तेम आ चोवीसीमां श्रीऋषन्न देव अने श्रीमहावीरनें जाजेरा एक वर्ष पछी
इंद्रदत्त वस्त्रने अपगमें जावजीव पर्यंत अचैलक पणुं हतुं अने चोवीसें तीर्थंकर आश्रयितो दी
क्षा लेती वखतें इंद्र महाराज तेमना खंधा उपर देवडुष्य वस्त्र मूके ते जिहां सुधी खंधाउपर र
हे तिहां सुधी सचैलक कहीयें अने पडीगया पछी अचैलक कहीयें तथा आ चोवीसीमां बीजा
श्रीअजितनाथ नगवानथी मांमीने श्रीपार्श्वनाथ नगवान पर्यंतना बावीश तीर्थंकर मध्यना क
हेवाय तेने देवडुष्य वस्त्र शेष बे घडी आयुष्य थाकतो रहे तिहां सुधी रहे छे माटे ते वस्त्रसहि

तने सचैलक कहीयें तथा ए बावीश तीर्थंकरना साधु पण ऋजु एटले शुंनमन वाला सरल अने दक्ष एटले पंमित घणा माह्या चतुर होय माटे महोटा मूलनां पांच रंग वालां मानोपेत रहित एवां वस्त्र राखे तेथी एनें सचैलक कहीयें केमके एनें ए अचैलक कल्पनी कांइ मर्यादा नथी माटें एमने ए कल्प अनियत छे अने पहेला तथा छेला तीर्थंकरना साधुने ए कल्प नियत छे एटले निश्चय छे ए प्रथम अचैलक कल्प कह्यो ॥ १ ॥ ॥ हवे बीजो उद्देशिक कल्प कहेछे. जे साधु अथवा साधवीने उद्देशि कर्यो एवो जे अहारादिक तेने उद्देशिक आहारादिक कहीयें तिहां मध्यना बावीश तीर्थंकरना वखतमां जे साधु अथवा साधवीने निमित्तें कोइ ग्रहस्थें जात, पाणी, औषध नैषज्य, वस्त्र, पात्र निपजाव्यां होय ते तेहज साधुनें लेवा न कल्पे पण शेष बीजा साधुनें ते आहारादिक लेवा कल्पे केमके तेने आधाकर्मादिक दोष न लागे अने पहेला तथा छहेला तीर्थंकरना शासनने विषे तो एक साधु अथवा एक साध्वीनें अर्थें जे आधाकर्मिक आहारादिक निपजाव्यां होय ते सर्वथा प्रकारें कोइ पण साधुनें अथवा साध्वीनें लेवा कल्पें नही ए बीजो उद्देशिक कल्प कह्यो ॥ २ ॥ ॥ हवे त्रीजो सय्यातरि पिंमनो कल्प कहेछे जे उपाश्रयनो धणी होय तेने सय्यातरि कहीयें अथवा जे साधुने रहेवानी कतरवानी जगा आपे एटले जेनी आज्ञा लेइने साधु जगामां रह्या होय ते घरनां स्वामीनें सय्या तरि कहीयें तेना घरनो पिंम जे आहारादिक बार वस्तु ते सर्व तीर्थंकरना साधुउने वोहोरवी कल्पे नही ते बार वस्तुना नाम कहेछे १ आहार, २ पाणी, ३ खादिम, ४ स्वादिम, ५ कपडा, ६ पात्रा, ७ कंबल, ८ उंघो, ९ सूई, १० पिप्पलक, ११ नखकतारवानीनेरणी, १२ कानमांथी मेल काहाडवानी चाटुइ, ए बार चीज तथा बीजा पण छरी कातरणी अने सरपला प्रमुख ते कोइ

पण साधुनें लेवां कल्पे नही ए सय्यातर पिंम लेवामां अनेषणीय अशुद्ध दोषनो संनव था
य प्रसंगादि महोटा दोष ऊपजे केमके साधुना रागें करी पारणाने उत्तरवारणानें अर्थे वारं
वार जातां आवतां अशुद्धमान आहारादिकें करीनें ते ग्रहस्थ दहिं दूध प्रमुख स्निग्ध वस्तु
पण आपे तेथी रसगृद्धि थाय अने मिष्टान्नना लोनें तेनुं घर न मूके कदापि वेगलो
बीजे गामें गयो होय तो पण त्यांथी मिष्टान्ननें लोनें फरी आवे वली वस्त्रादिक मा
ग्यां थकां तेगृहस्थ तरतज आपे तेणे करी उपधिनी वृद्धि थाय वली ते सय्यातरनो
पिंम लेतां थकां गाममां फरवाथी बूटे तेथी ते साधुनुं शरीर जाडुं थाय वली ते सय्यातरिनो
पिंम लेवाथी कदाच गृहस्थनें एवो पण नय उपजे के जे उपाश्रय करावे तेने आहारादिक पण
आपवा पडे तेने लीधे कोइ उपाश्रय पण न करावें अने रहेवाने कोई जगा पण आपे नही
तेथी आहार शिष्यादिकनो मलवो डुर्लन थइ पडे इत्यादिक दोषना प्रसंगथी सय्यातरिना घर
नो आहार लेवो सर्व तीर्थंकरें निषेध्यो ढे कदाचित् कोइ कारणे सय्यातरिना पिंम लेवो पडे
तो रात्रिना चार पहोर क्रिया सद्याय करतो जागरण करे पण निद्रा न करें अने प्रनातनुं पडि
क्कमणुं बीजे स्थानकें जइ करे तो उपाश्रयना धणीनो सय्यातर न थाय अने जो रात्रें निद्रा
करे अने प्रनातनो पडिक्कमणुं बीजे स्थानकें करे तो बेहु सय्यातर थाय एटले बेहु स्थानकें
आहारादि लेवा न कल्पे तथा १ तृण, २ माटीनो ढेफुं, ३ नस्म, राख, ४ मात्रानुं गमडुं,
तेने मात्रा कहीयें, ५ बाजोट, ६ पाटी पाटला, ७ सय्या, ८ संथारो, ९ लेप प्रमुख वस्तु,
१० उपधि सहित चेलो एटले वस्त्रादिक सहित चेलो ए दश वस्तु सय्यातरना घरनी लेवी
कल्पे ए त्रीजो सय्यातरिपिंम कल्प कह्यो. ए कल्प सर्व तीर्थंकरोना साधुने निश्चय होय माटे

एने नियत कल्प कहीयें ॥ ३ ॥ ॥ हवे चोथो राजपिंड कल्प कहे छे जे महोटो छत्रपति चक्रवर्त्यादिक राजा होय अने जेने सेनापति, पुरोहित, श्रेष्ठि, प्रधान अने सार्थवाह ए पांच वानां होय ए पांचनी साथे राज्य करे तेने राजा कहीयें तेना घरनो आहारादिक पिंड पहेला तीर्थंकरना साधु साध्वीने अने छेहेला श्रीवीरभगवानना साधु साध्वीनें लेवो कल्पे नही केमके राजद्वारमां घणा लोक मले तिहां घणो वखत लागे तथा कोइक अपमांगलिक कहे तथा तिहां हाथी, घोडा, रथ अने स्त्री प्रमुखनें जोतां थकां राग उपजे वली कोइक चोर कहे कोइक हेरू पण कहे इत्यादिक अनेक दोष उपजे वली लोक निंदा करे जे आ यति थइनें राज्यपिंड लीये छे अन्यदर्शनीयोना शास्त्रमां पण राज्यपिंड निवार्यो छे माटे पहेला अने छेहेला तीर्थंकरना यतियें राज्यपिंड न लेवो अने बावीश तीर्थंकरना साधुतो ऋजु अने पंडित छे माटे राजाना घरनो निर्दोष आहार जाणे तेवारे आहार लीये अने सदोष जाणे तो न लीये माटे तेमने ए कल्पनी मर्यादा नथी ए चोथो राज्यपिंड कल्प कह्यो ॥ ४ ॥ ॥ हवे पांचमो कृतिकर्म कल्प कहेछे जे वांदवुं तेने कृतिकर्म कहियें ते बे प्रकारे छे.एकतो ऊभु थावुं बीजुं द्वादशावर्त्तवांदणें वांदवुं तिहां श्रीजिनशासननें विषे सर्व तीर्थंकरोना साधुउनी एवी मर्यादा छे के जेणे पहेली दीक्षा लीधी होय ते साधुने पाछलथी दीक्षा लेनारो साधुवांदे पण बाप दीकरो अथवा राजा अने प्रधान इत्यादिक न्हानो महोटो जुवे नही परंतु दीक्षा जो दीकरे प्रथम लीधी होय अने पितायें पाछलथी लीधी होय तो पिता पुत्रनें पण वंदन करे एम राजा पोताना प्रधानने पण वंदन करे तथा सर्व साध्वीयो तो पुरुषोत्तम धर्म जाणीने सर्वे साधुनें वांदे परंतु न्हानो महोटो जुवे नही जो सो वर्षनी दीक्षित साध्वी होय अने एक दिव

सनो दीक्षित साधु होय तोपण ते साध्वी साधुने सामी जइनें हे पूज्य ! पधारो एवीरीतें विनयपूर्वक खमासमणा देइने वांदे, केमके धर्ममांहे मुख्य प्रधान पणुं ते पुरुषनेंज कह्युं छे, माटें पुरुष अधिक छे तेथी पुरुषें स्त्रीनें वांदवुं नही, जो साधु .थईनें साध्वीनें वांदे तो घणा दोष प्राप्त थाय केमकें स्त्रीजाति तुच्छ छे माटे अहंकार करे तो तेथी नीच गोत्रने बांधे, वली लोक निंदा करे माटे पुरुषें स्त्रीनें वांदवुं नही ए कल्प सर्व चोवीशे तीर्थंकरोना साधु आश्रयी नियत जाणवो ए पांचमो कृतिकर्म कल्प कह्यो ॥ ५॥ ॥ हवे छठो व्रतकल्प कहेछे तिहां प्राणातिपातादिकं पांच महाव्रत छे एटले प्राणातिपात, मृषा वाद, अदत्तादान, मैथुन अने परिग्रह ए पांचथी विरमवुं ते पांच महाव्रत कहीयें तिहां श्री ऋषभदेव अने श्रीमहावीरना साधु तथा साधवीने तो तादृश जाणपणाना अभावथी पांचे महाव्रत व्यवहारथी छे अने मध्य बावीश जिनना वाराना साधु तो परिग्रह व्रतमांहे परिग्रहित स्त्री जोगनुं पच्चरकाण जाणे छे तथा त्रीजा अदत्तादान व्रतमांहे अपरिग्रहित स्त्रीजोगनुं पच्चरकाण जाणे छे एटले स्त्रीनें परिग्रह रूप गणीने पांचमा परिग्रह व्रत साथेंज लीये छे, केमके जिहां स्त्री तिहां परिग्रह अने जिहां परिग्रह तिहां स्त्री होय छे माटे बावीश तीर्थंकरना साधुनें चोथुं मैथुन विरमण व्रत वर्जीने शेष चार महाव्रत जाणवां अथवा श्रीऋषभदेव अने महावीरना तीर्थें रात्रि भोजन व्रत मूल गुणमांहे गणे छे तेथी रात्रिभोजन विरमण व्रत साथे गणीयें तो साधुने छ व्रत थाय अने बावीशजिनना तीर्थें तो रात्रिभोजन व्रत उत्तर गुण मां गणे छे माटे च्यारज व्रत जाणवां ए छठो व्रत कल्प कह्यो॥६॥ ॥ हवे सातमो ज्येष्ट कल्प कहे छे. ज्येष्ठ एवुं महोटानुं नाम छे तिहां श्रीऋषभदेव अने महावीरना साधुउनें तो महोटी दीक्षा

दीधा पछी लघु वडाइ गणाय छे माटे जेणे महोटी दीक्षा पहेली लीधी होय ते महोटो गणाय अने जेणे न्हानी दीक्षा तो पहेली लीधी होय पण महोटी दीक्षा पछी लीये तो ते आगलानी अपेक्षायें लघु गणाय जेम पिता अने पुत्र तथा राजा अने प्रधान तथा शेठ अने चाकर तथा माता अने दीकरी एम अनुक्रमें दीक्षा लीये पछी उगामणा आवे महोटी दीक्षा लीये तेवारें मुख्य प्रकारें तो पिता, राजा, शेठ अने माता ए चार महोटां छे ते जणवामां जो अधिक थाय तो तेहज महोटां कहेवाय नहींका पुत्र, प्रधान, चाकर अने दीकरी ए चारे न्हानां छे परंतु ते जणवामां अधिक थइ जाय तो गुरु तेमने महोटी दीक्षा आपी महोटां करे अने बावीश तीर्थंकरना साधुने तो ए मर्याद नथी, केमके ते तो बधाये प्रवीण डाह्या होय छे तेथी तरत ज जणी लीये छे माटे ते दीक्षाना दिवसथीज वृद्ध अने लघु गणाय छे तेथी तेमनामां प्रथम जे दीक्षा लीये तेहज महोटो गणाय, जो पिता अने पुत्र तथा राजा अने प्रधान तथा शेठ अने वाणोतर तथा माता अने दीकरी ए सहु साथें दीक्षा लीये तो पिता, राजा, शेठ अने माता ए चार लोक रीतीयें महोटा गणाय तथा पुत्र, प्रधान, वाणोतर अने दीकरी ए चारे लघु गणाय तथा महोटी दीक्षानें योग्य प्रधान अने पुत्र होय तो राजानें तथा पिताने पूछीनें महोटी दीक्षा आपे तेथी अप्रीति न उपजें एरीतें ए अनियत कल्प छे ए सातमो ज्येष्ठ कल्प कह्यो ॥ ७ ॥ ॥ हवे आठमो प्रतिक्रमण कल्प कहे छे. प्रतिक्रमण ते जे आवश्यकनुं करवुं ते जाणवुं. तिहां प्रथम अने चरम जिनना वारामां तो साधुने अतिचार दोष लागे किंवा न लागे तोपण निश्चयथी दैवसिकादिक पांचे प्रकारनां पडिक्कमणांकरे अने बावीश तीर्थंकरना साधुतो जो पाप लाग्युं छे एवुं जाणे तोज दैवसिक अथवा राइ पडिक्क

मणुं सांजे अथवा सवारे करे अने पाप लाग्युं न जाणे तो ते पण न करे बाकी पाक्षिक, चोमासी अने सांवत्सरिक ए त्रण पडिक्कमणां तो बावीश जिननां वारामां नहीज करे एम ए पण अनियत कल्प छे ए आठमो प्रतिक्रमण कल्प कह्यो ॥ ८ ॥ ॥ हवे नवमो मासकल्प कहे छे. पहेला अने छेला तीर्थंकरना साधु एक गाममां एक मास पर्यंत रहे उपरांत रहे नही मात्र चोमासाना चार महीना पर्यंत एक गाममां रहे परंतु अन्य दिवसोमां एक महीनाथी उपरांत रहे तो घणा दोषोनो संभव थाय. एकतो गृहस्थ साथें प्रतिबंध थाय; हलवापणुं पामे, लोकनो उपकार करी शके नही, देश विदेशनुं ज्ञान न थाय, ज्ञाननुं आराधन न थाय माटे एक मास उपरांत रहेवानी साधुने आज्ञा नथी. कदाचित् दुर्भिक्षादिक कारणे रहेवुं पडे अथवा विहार करवाने असमर्थ होय तो पण वस्ति पालटण करें, पाडो पलटावे, घर पलटावे अने छेवट संथारानी भूमि पालटण करीनें भावथी पण मास कल्प करे. जे माटे लोकमां पण केवत छे के॥स्त्री पीयर नर सासरे, संजमियां थिरवास॥ एतां होये अलखामणां, जो मांडे थिरवास ॥ १ ॥इति॥अने मध्य बावीश तीर्थंकरना साधुउ तो विहार करवानें जो सामर्थ्यवान होय तोपण तेऋजु अने पंडित छे माटे तेमने मासकल्पनो कांइ नियम नथी जो दोष नही लागतो होय अने लाभ जाणे तो देसूणा पूर्वकोडी वर्ष पर्यंत पण एकज क्षेत्रमां एकज स्थानकें रही जाय माटे ए अनियत कल्प छे ए नवमो मास कल्प कह्यो ॥ ए ॥ ॥ हवे दशमो पर्यूषणा कल्प कहे छे. जे एक जगाये रहेवुं तेने पर्यूषणा कहे छे ते पंजोसण बे प्रकारनां छे एक तो गृहस्थ जाणे अनें बीजो गृहस्थ न जाणे ज्यांहां पर्यूषण पर्वने पडिक्कमतां थकां साधुलोक पूछे तेवारें रहेवानें विषे वर्त्तमान योग्य कहे पण पर्यूषणा पर्व पडिक्कम्या पछी तो

कार्त्तिकी पुनम पर्यंत रहेवानुं निश्चयथीज कहे. तिहां गृहस्थनी आज्ञा थकी पांच दिवस यावत् रहेवुं एम पांच पांच दिवस रहेतां पचास दिवसें पंजोसण पर्व करे तिहां कल्पसूत्र गृहस्थ आगळ वांचे पछी सीतेर दिवस निश्चयथी रहे एटले जे गृहस्थ जाणे ते तो भादरवा शुदि पांचमथी मांडीनें कार्त्तिक शुदि पूर्णिमा सुधी रहे अने बीजो जे गृहस्थ न जाणे ते तो आषाढ शुदि पूर्णिमाथी मांडीनें भादरवा शुदि पंचमी सुधी जाणवुं, केमके कदापि कोइ गृहस्थ साधुनें पूछे के आप चोमासुं रह्या तेवारें साधु कहेके जेवी खेत्र फरसना अथवा पांचदिन छेयें एवो जवाब आपे तेंथी आगळना दिवस गृहस्थ न जाणे अने पर्यूषण कर्या पछी तो अवश्य तिहांज रहे माटे ते गृहस्थ जाणी शके ते जघन्यथी सीतेर दिवस पंजोसण अने उत्कृष्ट छ महीनानां.पंजोसण जाणवां ए कल्प श्रीऋषभदेव अनें श्रीमहावीरना साधुउंने निश्चयथी जाणवो अने बावीश तीर्थंकरना साधुउंने निश्चय नही ए दशमो पंजोसण कल्प कह्यो ॥ १० ॥ ॥ एरीतें ए दश कल्प कह्या ते दशे कल्प श्रीऋषभदेव तथा श्रीमहावीर स्वामीना साधुउंने निश्चयथी जाणवा अने मध्य बावीश तीर्थंकरना साधुउंने तो ए दशमांथी एक सय्यातर, बीजो चार महाव्रत, त्रीजो ज्येष्ट अने चोथो कृतिकर्म् एटले वांदणा ए चार कल्प निश्चयथी होय छे अने एक अचेलक, बीजो उद्देशिक, त्रीजो॰ प्रतिक्रमण, चोथो राज्यपिंड, पांचमो मासकल्प अने छठो पंजोसण कल्प ए छ कल्पनो निश्चय नही. ए जेवी मर्यादा बावीश तीर्थंकरोना साधुउंनी कही तेवीज मर्यादा श्रीमहाविदेह खेत्रना तीर्थंकरोना साधुउंनी पण जाणवी ॥ २ ॥ ॥ इहां कोइ कहेके साधुतो सर्वे सरखाज छे तो तेना आचारमां भेद केम पड्यो तेने उत्तर कहीयें छेयें जे श्रीऋषभदेवजीनी

वारें माणस ऋजु अने जड होय छे,तेमने धर्म समजाववो घणो कठण थाय छे तथा श्रीमहा वीर जगवाननी वारें माणस वक्र अने जड होय छे,तेमने धर्म पालवो घणो डुर्लज थइ पडे छे अने मध्यना बावीश तीर्थंकरनी वारें माणस बधां ऋजु अने प्राज्ञ होय छे माटे तेमनें धर्म समजाववो पण सुलज होय छे अने पालवुं पण सोहेलुं होय छे एवीरीतें मनुष्योना परिणा ममां जेद होवाथी कल्पमां पण जेद थया छे एम जाणवुं, परंतु परमार्थथी जेद कांइ पण नथी मात्र पुरुषोना परिणामना जेद छे ॥ ३ ॥ ॥ हवे प्रथम तीर्थंकरना साधु जे ऋजु अने जड होय ते दृष्टांतें करी समजावीयें छैयें श्रीऋषजदेवना तीर्थमां कोइएक आचार्यनो शिष्य थंमेल जूमिकायें गयो ते घणो वखत लगाडीनें पाछो आव्यो तेने गुरुयें पुछ्युं अरे शिष्य तने आटलो वखत केम लागो त्यारे ते ऋजु पणाथी बोल्यो के स्वामी नाटकीया लोक रमत करता हता ते जोवाने ऊजो रह्यो हतो तेथी वधारे वखत लागो ते सांजली गुरु बोल्या हे वत्स! आपणे साधु थइने नाटक जोवा ऊजा रहेवुं नही एथी पाप लागे छे माटे आपणने ए अक ल्पनीय छे तेवारे शिष्यें तहत्ति कही एटले जेम तमे कहो छो ते प्रमाण छे आज पछी जोइश नही. फरी कोइक दिवसें तेहज शिष्य बाहिर जूमि गयो हतो तें घणो वखत लगाडीनें पाछो आव्यो जेथी गुरुयें पुछ्युं जे आटलो वखत केम लागो तेवारें ते शिष्य बोल्यो के हे स्वामी रस्तामां नाटकणी नाचती हती ते जोवानें ऊजो रह्यो हतो तेने लीधे असुर थइ तेवारे गुरु बोल्या जे तमने पूर्वे मनाइ करी हती तेम छतां केम जोवाने ऊजा रह्या तेवारें ते शिष्य जड पणाथी एटले मूर्खपणाथी बोल्यो के महाराज तमेतो नाटकीया जोवानें मनाइ करी हती पण नाटकणी जोवानें तो मनाइ करी हती नही तेवारे गुरु बोल्या हे महाजाग्य! नाटकणी

तो वली नाटकीया करतां पण अधिक रागनुं कारण छे माटे तेतो सर्वथा नहीज जोवी ते सांभली शिष्य बोल्यो हे स्वामी ! मने प्रथम एवी समज पडी हती नही हवे हुं क्यारें पण जोइश नही इहां ऋजु पणाथी सत्य बोल्यो अने जडपणाथी जो नाटकीआ वर्ज्यां तो नाटकणी अवश्य वर्जवी जोइयें एटलुं समज्यो नही इति प्रथम दृष्टांत ॥ १ ॥ ॥ हवे वली बीजुं कोकण देशीय दृष्टांत कहे छे. जेम कोइएक कोकणदेशना वाणीयायें वृद्ध पणामां कुटुंब परिवार छोडी धर्म पामी वैराग्य वान थइनें स्थविर पासें दीक्षा लीधी तेनें कोकण साधु कहीनें सर्व बोलावे एक दिवस ते थंडिल थकी आवी इरियापथिका किरिया पडिकम्यो तेने काउसग्ग पारतां घणो वखत लागो तेवारें गुरुयें पुछ्युं नो कोकणिक साधु ! तमोने एटलो वखत काउस्सगमां केम लागो ते सांभली साधु ऋजु पणे बोल्यो के हे स्वामीजी ! में आज जीवदया चिंतवी, गुरुयें पुछ्युं तमे केवा प्रकारनी जीवदया चिंतवी तेवारें साधु बोल्यो जेवारें हुं घेर गृहस्थ अवस्थामां रहेतो हतो तेवारें वर्षाकालें खेत्रमां वृक्षोनें कापी नाखी खूड करीनें जमीननें अग्नियें बाली शुद्ध करी तेमां धान्य वावतो हतो तेणेकरी महारा घरमां घणुंज धान्य नीपजतुं हतुं तेथी महारुं सर्व कुटुंब सुखी.रहेतुं हतुं अने हवे में तो दीक्षा लीधी छे अबे महारा छोकरा आलसु छे ते खेतीमां कांइ समजता नथी माटे जो निरुद्यमी थका निश्चिंत पणे घरमां बेठा हशे अने खूड नही करशे तो धान्य उपजशे नही तेथी ते बापडा भूखें मरशे एवा प्रकारनी में जीवदया चिंतवी एम ऋजुपणाथी साचुं बोल्यो ते सांभली गुरु बोल्या हे जड ! तमे मातुं ध्यान कर्युं छे केमके ए खेतीनो धंधो पाप विना थाय नही ते माटे सावद्यनी अनुमोदना साधुनें करवी युक्त नथी माटे मिछामि डुक्कड देइनें शुद्ध थाउ ते सांभली साधुयें मिछामि डुक्कड

दीधो, ए बीजुं दृष्टांत कह्युं. ॥ २ ॥ ॥ हवे वली त्रीजुं दृष्टांत कहे छे. सोरठ देशनें विषे एक ब्राह्मण रहेतो हतो तेनो पुत्र सासरे जवा लाग्यो तेंवारें पितायें शिखामण आपी के हे बेटा! एकवार हा कहेवी अने एकवार ना कहेवी एवी पितानी शिखामण धारण करीनें सासरे पोहोतो त्यां सासु ससरायें पुछ्युं जे हे नटजी! तमे आव्या तेवारें ब्राह्मण बोल्यो हाजी, फरी सासु ससरें पुछ्युं के घेर कुशल खेम छे? तेवारें ब्राह्मण बोल्यो नाजी, फरी पुछ्युं के. तमारा पिता देवलोक पहोता? तेवारें कह्युं हाजी, फरी पुछ्युं तेमनी पछवाडे कांइ खरच खराजात करी तेवारें कह्युं नाजी, ते सांजली सासु ससरे कह्युं के तमेतो महोटा मूर्ख छो, तेंवारें तेणे कह्युं हाजी, एटली वात थया पछी ते सर्व ब्राह्मण मलीनें मोकाणे गया त्यां जइनें जुए छे तो जमाइनो पिता जीवतो बेठो छे तेने राम राम जुहार जुहारकरीनें सर्व मल्या, पछी जमाइना पितायें पुछ्युं के तमो सर्वेनुं शा कामें अहींआं आववुं थयुं छे? ते सांजली सर्वे बोल्याके तमारे छोकरे तमे परलोक सधाव्या एवी वात अमारी पासें कही तेथी अहींआं आव्या छैयें, तेवारे ते छोकराना पितायें कह्युंके ए छोकरो मूर्ख छे. एवा जीवनें पण रुजु एटले नोला अने जड एटले मूर्ख कहीयें ए त्रीजुं दृष्टांत कह्युं ॥ ३ ॥ ॥ एवा साधु प्रथम तीर्थंकर श्रीरुष नदेवना तीर्थे समजवा ए प्रथम तीर्थंकरना साधुउं आश्रयी त्रण दृष्टांत कह्यां ॥ ॥ हवे चरम एटले छेला तीर्थंकर श्रीमहावीरस्वामीना साधु वक्र अने जड होय तेना ऊपर दृष्टांत कहे छे. जेम कोइएक महावीर स्वामीना तीर्थनो साधु स्थंमिलें गयो ते घणो मोडो आव्यो तेने गुरुयें वखत घणो लागवानुं कारण पुछ्युं तेवारें वक्रपणाथी कहेवा लागोके बाहिर जाय तेनें वख ततो लागेज एमां तमें मने शुं पूछो छो!! पछी जेवारें गुरुयें घणुं पूछ्युं तेवारें कह्युं जे नाट

कीआ नाटक करता हता ते जोवा ऊनो रह्यो हतो तेने गुरुयें कह्युं जे यतियें नाटक जोवुं नही ते तमे जोयुं तेथी पाप लाग्युं माटे मिछामिडुक्कड लीयो एम कही मिछामिडुक्कड दीधुं, फरी कालांतरें एक दिवस नटडीनुं नाटक देखवा ऊनो रह्यो तेथी घणो वखत लागो माटे गुरुयें तेनुं कारण पूछवाथी वक्रपणाना योगथी वांका वांका उत्तर आपवा मांड्या पण साचुं कहे नही तोपण गुरुयें ज्यारे घणुं पूछ्युं त्यारें बोल्यो जे नाटकणी नाच करती हती ते जोवा ऊनो रह्यो हतो, ते सांजली गुरु बोल्या में ना कही हती तो पण तुं नाटक जोवा केम ऊनो रह्यो? तेवारें शिष्य वक्रपणाथी बोल्यो जे तमेतो नाटकीआनुं नाटक जोवाने वार्यो हतो परंतु ते वखत नटडीनुं नाटक जोवाने शा वास्ते वार्यो नही? तो एमां माहारो शो वांक छे एतो तमारोज वांक छे एम वक्रपणाथी उलटो गुरुनें उलंनो दीधो ए वक्रपणा आश्रयि प्रथम दृष्टांत कह्युं ॥ १ ॥ ॥ हवे वली बीजुं लोकोक्त दृष्टांत वक्र जडनुं कहे छे. कोइएक शेठनो छोकरो घणो डुर्विनीत हतो ते पोताना मा बाप साथें वढवाड कर्यां करे तेने मा बाप घणां सम जावे तो पण कोइनुं कह्युं माने नही पछी कुटुंबना माणसोयें तेने शीखामण आपी कह्युं के मा बापनी सामुं तारे बोलवुं नही तेवारें तेणें कह्युं हवे हुं बोलीश नही एम करतां कोइएक दिवसें मा बाप प्रमुख सर्व कुटुंब मली पुत्रने घर सोंपी कांइक कामसर बाहेर गयां तेवारे ते छोकरो पितानी शीखामण याद करतो घरनां कमाड जडीनें खाटला ऊपर जइ सूतो, थोडीक वार पछी ते पितादिक आव्या तेणे छोकरानें घणा साद कर्या तो पण ते छोकरो खाट ऊपर बेठो बेठो सांजले परंतु बोले नही अने कमाड पण ऊघाडे नही एम घणो वखत थयो त्यारे तेनो बाप नींत ऊपरथी चडी घरमां आव्यो अने जूए छे तो पुत्र खाटला ऊपर बेठो बेठो हसे छे

तेने बापे मार आपीने पुछयुं के तनें आटला साद कस्या तोपण केम जवाब आप्यो नही वली क
माड शावास्ते उघाड्यां नही तेवारें पुत्रें कह्युं जे तमेज मने शीखाव्यो हतो के मह्लोटानें सामुं
न बोलवुं तो मह्लारो एमां शो वांक छे ? तेवारें पितायें कह्युं के अरे मूर्खा काम होय त्यारे तो
बोलवुं जोइयें ते सांभली छोकरो बोल्यो के हवे हुं काम हशे तेवारें बोलीश, फरी एक दिवसें
शेठ घणालोकोमां बेठा हता एटलामां घेर शेठाणीयें राबडी बनावीनें छोकरानें कह्युंके तारा
बापनें बोलावी लाव तो राबडी शीरावीमें पछी सुखेथी काम ऊपर जाय, त्यारें ते छोकरो
ज्यांहां तेनो बाप घणा माणसोनी वचमां बेठो छे तिहां जइ मह्लोटे सादें हेला पाडीनें कहेवा
लागोके हे पिताजी ! आज आपणे घेर राबडी थइ छे ते मह्लारी मातायें कह्युं छे के एकवार
शीरावी जाओ पछी सुखेंथी काम काज करो ते सांभली शेठ लज्जा पामीनें त्यांथी उठयो आ
गल जइ पुत्रनें एकांतमां कह्युंके हे कुपुत्र ! आ घणा लोकोमां लाज जाय तेवीरीतें तुं शा वा
स्ते बोल्यो तेवारें पुत्र बोल्यो तमेज मने शीखाव्यो हतो तो हुं शुं करुं ? तेवारें पिता बोल्यो
के आज पछी जो एवुं काम होय तो धीरे धीरे बोलवुं, छोकरायें कह्युंके हवे धीरे धीरे बो
लीश, एटलामां वली एक दिवस ते शेठनें घेर लाय लागी तेवारें शेठाणीयें शेठने तेडवा सारुं
छोकरानें मोकल्यो ते छोकरो तिहां आवीनें जूए छे तो शेठ घणा लोकोनी वचमां बेठो छे ते
वारें पोते दूर ऊभो रहीनें धीरे धीरे बोल्यो घणीवार थया पछी शेठें तेने जोयो तेवारें शेठें
पुछयुं के अरे तुं शावास्ते अहींआं आव्यो छो तेवारें ते छोकरो शेठनी पासें जइनें हलवे हलवे
धीरजथी शेठना कानमां कहेवा लागोके आपणे घेर लाय लागी छे ते सांभली शेठ बोल्यो
के अरे मूर्खा घरतो बली गयुं हशे तुं इहां आवतांज केम बोल्यो नही तेवारें छोकरो

बोल्यो के तमे सीखाव्यो हतो जे धीरे धीरे बोलजे तो एमां महारो वांक कांइ नथी ए त
मारी पोतानीज नूल छे, पितायें कह्युं अरे एटलो महोटो थयो तोपण हजी अकल आवी
नही ज्यारे धूआडा नीकल्या त्यारे तरतज धूल नाखवी हती तो अग्नि शांत थइ जात, एवुं शेखवुं
केहेवुं ते छोकरायें धारी राख्युं. एम करतां शीत ऋतु आवी तेवारें प्रनात समयें एनो पिता
दातण करवा बेठो छे तेना मुखमांथी धूवाडा नीकल्या ते देखी धूलनो धोबो नरीनें छोकरायें
पिताना महोडामां नाख्यो तेवारे पितायें जाण्युं जे ए छोकरो खरेखर मूर्ख छे वली एक दिवस पि
तायें छोकरानें कह्युं के आ घोडो तरस्यो छे तेने पाणी पीवरावजे अने नवरावी आवजे, छो
करायें कह्युं बे काम तो नही करुं पितायें कह्युं नवरावी आवजे पछी ते छोकरो घोडा ऊपर
चडी तलाव पासें जइ घोडानुं महोडुं बांधी नवरावीने पाछो घेर लाव्यो पण घोडो तरस्यो
हतो माटें आकुल व्याकुल थतो देखी शेठें पुत्रनें मूर्ख जाणी घरमांथी काढी मूक्यो अनें कह्युंके
वाटें जातां कोइ मलेतो तेने महोटे सादें जुहार करजे पछी वाटें जतां कोइएक पाराधी पास
मांडी मृगला एकठा करी ऊनो छे तेने छोकरायें महोटें सादें जुहार कर्यो तेनो साद सांन
लीने सर्व मृग नासी गया पाराधीये तेने मार आप्यो अने मूर्ख जाणीनें कह्युंके हे मूंढ़ा मार्गे
जतां छपतो चाल्यो जाजे वली आगल जातां कोइक कोटवाल चोरनी शोध करवा नीकल्यो छे
तेणे छोकरानें छपतो देखी चोर जाणी पकड्यो मार मार्यो पछी मूर्ख जाणी कह्युंके घणा
माणस दीठामां आवे तेवारें एम कहेजे के तमारे एवुं कोइ वखते थाशोमां वली आगल जातां
कोइएक गाममां विवाह छे ते देखी पहेला मूर्खायें कह्युं के तमारे घेर एवुं कार्य कोइ वारे म था
जो ए वचन सांनलीने विवाह वालायें कूट्यो मार आप्यो पछी छोकरायें कोटवालना शीखा

ववा संबंधि वात कहे छते ते लोकोये मूर्ख जाणी शीखामण आपी कह्युंके हे जोला ! जेवा
रें घणा माणस मले तेवारें एवुं कहेवुं के तमारे सदा सर्वदा एमज थाजो तेवात याद राखीने
छोकरो आगल चाल्यो मार्गमां कोइ एक देशनो राजा मरण पाम्यो छे तेनी मैयथने लइ जा
य छे तेने छोकरायें कह्युं के तमारे सदा सर्वदा एवुंज होजो तिहां पण तेणे मार आप्यो मूर्ख
जाणीने मूकी दीधो एम रखडतो रझलतो केटलाएक दिवसें पाछो घेर आव्यो ए श्रीवीरना
साधु उपर वक्रजडनुं बीजुं दृष्टांत कह्युं ॥ ॥ हवे मध्य बावीश तीर्थंकरना साधु ते सर्व रूजु
अने प्राज्ञ छे तेना ऊपर दृष्टांत कहेछे. जेम कोइएक अजितनाथ नगवाननो साधु ते स्थंमि
लथी घणो असुरो आव्यो माटें गुरुयें तेनुं कारण पुछ्युं तेवारें रूजु पणाथी कह्युंके नाटकी
आनुं नाटक जोवा ऊनो रह्यो हतो, गुरु बोल्या जे साधुयें नाटक जोवुं नही तेवारे तेणे
मिछामिछुक्कड देइने कह्युंके हवे कोइवारे जोवा ऊनो रहीश नही वली कोइएक दिवसें बाहेर
गयो तिहां रस्तामां नटवी नाचती हती ते जोइ पंमित पणांथी विचार कर्यो के गुरुयें मुजनें
नाटकीआनुं नाटक जोवा वर्ज्योंछे तो नाटकणीतो वली विशेष रागनुं कारण छे माटे ए
मुजने सर्वथा जोवीज नही एवुं विचारीनें पाछो आव्यो ए रूजु अने प्राज्ञनुं दृष्टांत कह्युं ॥ १ ॥
एम ए दृष्टांत जे कह्यां ते कांइ सर्वे साधुउ आश्रयी समजवां नही, परंतु कोइएक सा
धुनां आश्रयी जाणवां ॥ ॥ हवे आजना समयना माणस वक्र अने जड छे ते प्रमाणे आज
पांचमा आरामां चारित्रीया साधु नथी एम पण न कहेवुं कदापि अनाजोग पणे अतिचार दोष
घणा लागे तेवा पण साधु आजना समयमां छे केमके साधु विना धर्म न होय माटे व्यव
हार नाष्यमां कह्युं छे के श्रीनगवंतनां नांखेला शास्त्रनी जे खरेखरी प्ररूपणा करे तेने साधु

कहीयें ॥ तथा ॥ जो जणई नवि धम्मो, नय सामाईय न चेवय वयाइं ॥ सो समणसंघबुज्झो, कायव्वो समण संघेण ॥ १ ॥ माटे जो पूर्वे साधुनी अपेक्षायें हीन कहो तो जले कहो पण इ षमकालमां साधु नथीज एम न कहीयें जे माटे साधु तो आजे पण छे ॥ ॥ हवे ए दश प्रकारनो कल्प जे साधुनो आचार रूप धर्म छे तें त्रीजा वैद्यना औषध सरखो छे एटले जेम त्रीजो वैद्य उपकारी थयो तेम आ कल्प पण उपकारी जाणवो ते त्रीजा वैद्यनी कथा कही देखाडे छे. कोइएक राजाने एकज पुत्र अत्यंत वल्लज्ज हतो माटे राजायें विचार कर्यो जे आ पुत्रनें रोग आव्या पहेलांज एनुं हुं औषध करावुं तो पछी कोइ वारें एनें रोगज थाय नही एम चिंतवी वैद्यनें बोलावी कह्युं के आ छोकरानुं एवुं औषध करो के जेणेकरी एने कोइ वखत रोग न थाय ते वारें वैद्य बोल्यो के हे राजन्! महारी पासें जे औषध छे ते एवुं छे के जे खाधा थकी रोग होय तो जाय अने जो रोग न होय तो वली नवो रोग प्रगट थाय ते सांजली राजायें कह्युं के सूता सिंहनें जगाडवा सरखुं ताहारुं औषध अमारे करवुं नथी, एम कही तेने शीख आपी, पछी बीजा वैद्यनें पुछ्युं तेवारें ते बोल्यो के हे राजन्! माहारुं औषध खवराव्याथी जो रोग होय तो जाय अने जो रोग न होय तो गुण दोष कांइ नथाय तें सांजली राजा बोल्यो जे राखमां घृत ढोलवा जेवुं ताहारुं औषध अमारा कामनुं नथी एम कही तेने पण विदाय कर्यो, पछी त्रीजा वैद्यनें बोलावी पुछ्युं तेवारें ते बोल्यो हे राजन्! महारुं औषध एवुं छे के जे खवराव्याथी रोग होय तो जतो रहे अने रोग न·होय तो वली अपर रोग आवे नही तथा बल, बुद्धि, रूप अने तेजनी वृद्धि करे ए वात सांजली राजायें प्रसन्न थइनें ते वैद्यनुं औषध छोकरानें अपाव्युं अने वैद्यनें शिरपाव आपी विदाय कर्यो एवीरीतें

ए कल्प सिद्धांत पण त्रीजा वैद्य समान गुणकारी छे केमके एना श्रवणथकी जे पूर्वे कर्म बांध्या होय तद्रूप व्याधि दूर थइ जाय अने नवा कर्मनो बंध पडे नही सर्व आपदा निवारे, सुख संपत्ति करे, चारित्रना गुणनी पुष्टि करे अने वली मोक्षना सुख तरत आपे ए कल्प सूत्रने विषे प्रथम श्रीवीर चरित्र छे ते बीज समान छे, श्रीपार्श्वनाथ चरित्र छे ते अंकुरो छे, श्रीनेमीश्वर भगवाननुं चरित्र छे ते थड छे,श्रीआदिनाथ चरित्र छे ते शाखा छे, थविरावली ते फूल छे, कथा छे ते सुगंध छे, फल ते मोक्ष छे, जे ए सूत्रना सर्व अक्षर सांभले ते जीव आठ भवमां मोक्ष जाय॥ ॥हवे साधु जे गाममां चोमासुं रहे ते गाममां ए कल्पसूत्रनी वाचना करे अने चोमासुं पूरण थया पछी एटले कार्तिकशुदि पूर्णिमा थया पछी पण कदापि वर्षाद वरसवाथी मार्गमां कादव प्रमुख थया होय तो वधारे दिवस पण रहे तथा वली कदाच जे गाममां साधु चोमासुं रह्या होय अने हजी चोमासुं पूरुं न थयुं होय तेनी वचमां ते गाममां १ मरकी आदिक रोगोनो उपद्रव थाय, २ भिक्षा दुर्लभ मलती होय, ३ राजा दुष्ट होय तेणे कोप कर्यो होय, ४ कुंथुआदिक घणा जीवोनी उत्पत्ति थइ होय, ५ सर्प अग्नि आदिकनो भय उत्पन्न थयो होय,रोग अने वर्षाद विरमता न होय,दुर्भिक्ष पडे इत्यादिक कारणे चोमासामां पण विहार करवानी आज्ञा प्रभुयें दीधी छे माटे विहार करवामां दोष नथी. हवे संयम निर्वाह करवानें अर्थे साधुनें ज्यां चोमासुं रहेवुं पडे तिहां प्रथम ते खेत्रमां उत्कृष्टपणे तो तेर गुण जोवा जोइयें तेना नाम कहेछे. १ जे गाममां चिक्कल कादव घणो न होय. २ जे गाममां बेइंद्रियादिक जीव घणा न होय, ३ स्थंडिल जवानी भूमि निरवद्य होय, ४ स्त्री पशु पंडकादिक दोष रहित उपाशरो रहेवानो होय, ५ जे क्षेत्रमां दहिं दूध घणा

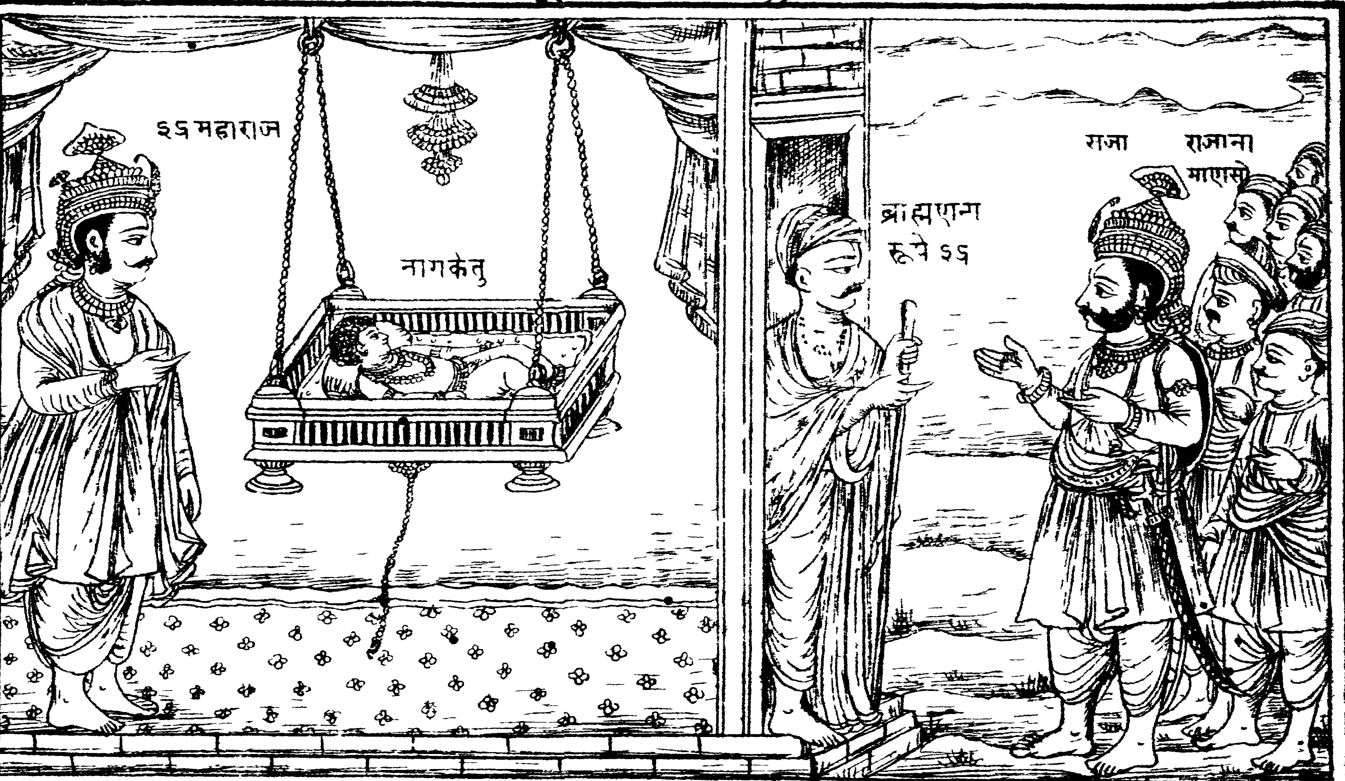
मलतां होय, ६ जे गाममां नद्रक अने श्रद्धावान एवा श्रावकना घणां घर होय, ७ जे गाममां वैद्य घणा निपुण रहेता होय, ८ जिहां औषध घणां सुलन मलतां होय, ए जिहां श्रावकोना घरमां धन धान्य प्रमुखनो घणुं संग्रह होय पण कोइ वातनी चिंता न होय, १० जे गामनो राजा अति नद्रक होय यतिउंनी नक्ति घणी करतो होय, ११ जिहां ब्राह्मण, तापस, जुआ, नरडा प्रमुख पाखंमी लोक जे छे ते साधुनें अपमान करी शकता न होय, १२ जिहां निक्षा सुलन मलती होय, १३ जिहां सद्माय पठन पाठनादिक सुखें थतां होय ए तेर गुणवाला गाममां साधुयें चोमासुं करवुं, कदापि एटला योग न बनें तो पण जघन्यथी चार गुण तो अवश्य जोवा. तेना नाम कहेछे. १ थंमिल नूमि घणीज सारी शुद्ध फासु होय, २ जेमां सद्माय ध्यान सुखें थाय एवी रहेवानें जगा होय, ३ जिहां श्रीजिनमंदिर होय, ४ जिहां गोचरी रूडी रीतें मलती होय ए चार गुण खेत्रना जोइनें चोमासुं करवुं एम ए तेर गुण उत्कृष्टथी अने चार गुण जघन्यथी कह्या तथा पांचथी मांमीनें बार गुण सुधी सर्वे मध्यम गुण जाणवा, एवुं खेत्र जोइनें त्यां साधुयें चोमासुं करवुं कारण के साधुजन पृथ्वी पीठनें विषे नवकल्पि विहार करे तिहां अनेक तीर्थयात्राउ करतां, गामेगामे विचरता मिथ्यात्वें पडता अनेक नव्यजीवोना उद्धार करतां थकां विचरे ते जेवारे चोमासुं आवे तेवारे धरामंमलें सजलधारायें वर्षाद पडे तेथी पगले पगले पाणीनो प्रवाह चाले, कोमलकिसलय फूटे, थानकें थानकें अनेक प्रकारना जंतुउ उत्पन्न थाय ते माटे जीवयत्न करनारा चारित्रियायें वर्षाकालमां विहार न करवो, एकत्र स्थानकें रहेवुं, अनेक प्रकारना घोर अनिग्रह करवा, जेमाटे साधुने तो वीशवशा दया छे परंतु श्रीकृष्णमाहाराज जेवा सवावशानी दयाना पालनारा

श्रावकोयें पण चोमासामां शोल हजार राजाउने सजामां पधारवानी ना कही. अने पोतें पण सजा मांहे नाव्या केमके वर्षाद मांहे घणा कीडी कुंथुआदिक जीव हणाय एवुं जाणी ठाकोर पोढयाछे एवो जवाब श्रीकृष्णे कह्यो त्यांथी देव पोढणी अगीआरस लोकमां प्रसिद्ध थइ एरीतें शुद्ध श्रावक पण वर्षाकालें पाप जाणीनें देशांतरनो व्यापार न करे माटे साधुनें पण चोमासामां एक ठेकाणे रहेवुं ते चोमासानें विषे पंजोसण पर्व आवे थके मांगलिकनें अर्थे कल्पसूत्र अवश्य वांचवुं ॥ ॥ हवे पंजोसण पर्व सर्व पर्वो मांहे उत्कृष्ट छे माटे एनो महिमा कहेछे १ जेम मंत्रमांहे पांच परमेष्ठि मंत्र, २ जेम तीर्थमांहे शत्रुंजय तीर्थ. ३ जेम दानमांहे अजय दान, ४ जेम गुणमांहे विनय गुण, ५ जेम व्रतमांहे ब्रह्मचर्य व्रत, ६ जेम संतोषमांहे नियम, ७ जेम तपस्या मांहे इंद्रिय दमन, ८ जेम दर्शनमांहे जैनदर्शन, ९ जेम क्षीरमांहे गोक्षीर, १० जेम जलमध्ये गंगानीर, ११ जेम पटमांहे हीर. १२ जेम वस्त्रमांहे चीर, १३ जेम अलंकारमांहे चूडामणि, १४ जेम ज्योत्स्नामांहे निशामणि, १५ जेम तुरंगमांहे पंचवल्लकिशोर, १६ जेम नृत्यकलावंतमांहे मोर, १७ जेम गजमांहे ऐरावत, १८ जेम दैत्यमांहे ऐरावण, १९ जेम वनमांहे नंदनवन, २० जेम काष्ठमांहे चंदन, २१ जेम तेजवंतमांहे आदित्य, २२ जेम साहासिक मांहे विक्रमादित्य, २३ जेम न्यायवंतमांहे श्रीराम, २४ जेम रूपवंतमांहे काम, २५ जेम सतीमांहे सीता, २६ जेम शास्त्रमांहे गीता, २७ जेम वाजित्रमांहे जंजा, २८ जेम स्त्रीमाहे रंजा, २९ जेम सुगंधमांहे कस्तूरी, ३० जेम वस्तुमांहे तेज, ३१ जेम पुण्यश्लोकमांहे राजा नल, ३२ जेम फूलमांहे सहस्रदल कमल, ३३ जेम धनुर्धरमांहे अर्जून, ३४ जेम इंद्रियमांहे नयन, ३५ जेम धातुमांहे सुवर्ण, ३६ जेम दातारमांहे कर्ण, ३७ जेम गायमांहे

कामधेनु गाय, ३८ जेम स्नेहमांहे घृत, ३९ जेम जलमांहे अमृत, ४० जेम ज्ञानमांहे केवलज्ञान, ४१ जेम सुखमांहे मोक्षनुं सुख, तेम सर्व पर्वमांहे पंजोसण पर्व महोटुं जाणवुं ए जाद्रवा शुदि पंचमी जेम श्रीजिनशासनने विषे माननीय छे तेमज परशासनने विषे पण ए रुषीपंचमीनो दिवस माननीय छे ते रुषीपंचमीनो संबंध कहे छे ॥ ॥ पुष्पवती नगरीने विषे नीलकंठ नामा ब्राह्मण रहेतो हतो तेनी सोमा नामे जार्या हती तथा इंद्रदेव नामे पुत्र हतो ते जन्मथीदारिद्री हतो केटलेक काले तेना माता पिता मरण पामीनें एनाज घरमां पिता बलदीयो थयो अने माता कुतरी थइ एवामां श्राद्धपक्ष आव्यो तेवारे घरमां द्रव्य नही तेथी विचार करवा लागो जे माता पिताना श्राद्धनो दिवस महारे केवीरीतें साचववो पछी बलदीयो ते लीने घेर खेडवा आप्यो तेनुं जाडुं लइ दुध, चोखा, खांड, घृत अने गोधुम लइ आवीनें खीर रांधी घणा ब्राह्मणोने नोतरुं दीधुं एवामां पूर्वला जवनुं पोतानुं घर देखीनें कुतरीनें जाति स्मरण ज्ञान उपनुं छे तेणे ते दूधमांहे उपरथी सर्पें गरल नाखी ते दीठी तेवारें कुतरीयें विचार्युं जे अज्ञाने करी आ खीरने ब्राह्मणो जमशे तो मरण पामशे तेथी महा अनर्थ थइ प डशे ब्रह्म हत्यानुं पाप लागशे ने महारो पुत्र तथा वहु बे मरण पामशे एम विचारे छे एट लामां वहु आवी तेवारे तेने देखतां ते कुतरीयें दुधमांहे पोतानुं मोहोडुं घाली दुध बोट्युं ते जोइ वहुने रीश चडी तेथी तेने मुसलनां प्रहारे मार मारी केड जांगीने ज्यां गायनी शाला छे त्यां जइ हेठी पाडी दीधी तेथी ते तडफडवा लागी अनें ब्राह्मणे बीजो दुध लावी खीर रांधी सर्व ब्राह्मणोने जमाडी श्राद्धनो दिवस साचव्यो पछी ब्राह्मण थाको थको बाहेर गौशालामां खाटली पाथरी सूतो एवामां संध्या समय थयो तेवारें आखा दिवसनुं जुख्यो,

तरस्यो थाकी गयेलो बलद ते पण पेला घांचीयें लावीने तेनां स्थानकें बांध्यो एटलामां कुल
देवी आवीने बलदीया तथा कुतरीना शरीरमां संक्रमी. तेवारें कुतरी बलदीयाने कहेवा लागी
के आज श्राद्ध तो आपणुं हतुं अने खावानुं ब्राह्मणोने मल्युं एटलुंज नही पण आ पापिष्ठ
वहुयें माहारी केड भांगी नांखी तेथी महादुःख पामुं छुं तेवारें बलदीयो बोल्यो जे आ पापिष्ठ
आपणो छोकरो पण कांइ समजतो नथी मने पण आजें घांचीनें घेर मोकल्यो हतो तेणे
आखो दिवस घाणीमां फेरव्यो. अने चारो पाणी आप्या विना एमज भूखें मरतो
अांही आवी बांधी गयो छे, ए सर्व वात खाटलापर बेठेला ब्राह्मणे सांभली तेथीं तेना म
नमां दिलगिरी पेदा थई अने विचार्युं जे आतो महारा माता पिता देखाय छे एवो निर
धार करी त्यांथी उठीने कुतरीने खीरनुं भोजन कराव्युं अने बलदने सारीरीतें चारो प्रमुख
आप्युं पछी पोतें पोताना माता पितानी सद्गति करवाने अर्थें परदेश जइ अनेक तीर्थ करी
कोइ महोटा रुषीश्वरने पूछवा लागो के महाराज महारो बाप बलदीउ थयो छें अने माता
कुतरी थइ छे तेनी रुडी गति केवीरीतें थाय ते प्रकार कहो तेवारें रुषी बोल्यो जे ए बेहु
जीवें रुषि पंचमीना दिवसें अप्रस्तावे काम क्रीडा करेली छे मैथुन सेवन कर्युंछे तेनुं पाप
लाग्युं तेना योगें ए अवतार पाम्यां छे माटे हवें तुं जेवारें रुषि पंचमी एटले भादरवाशुदि
पंचमीनो दिवस आवे ते दिवसें बलदनुं खेडयुं धान्य खाइश नही चोख्खो चउविहारो उप
वास करजे कदापि खाधा विना रहेवाय नही तो दश मुठी अडदना बाकला खाजे एटले एम
नी सद्गति थशे पछी ते ब्राह्मणे तेमज कीधुं ते दिवसथी लोकोने विषे रुषि पंचमीनुं नाम
प्रसिद्ध थयुं छे ए रुषिपंचमीना पर्व आश्रयी कथा कही॥ ॥हवे श्रीपर्यूषण पर्व आवे तेवारें

महोटो महोत्सव करी जे पुरुष तेलानी तपस्यामां एटले अठ्ठम तप करी श्रीकल्पसूत्रने सांजले ते पुरुष नागकेतुनी पेरें केवलज्ञान पामीने मोक्ष सुखने पामे ते नागकेतुनी कथा कहे छे. चंद्रकांता नगरीने विषे विजयसेन नामे राजा राज्य करतो हतो, ते नगरीमां श्रीकांत नामा शेठ रहेतो हतो तेनी श्रीसखि नामे नार्या हती तेने घणा उपाय करतां देवदेवीउनी मानताउ करतां एक पुत्र आव्यो अनुक्रमे ते पुत्रनुं पालण पोषण करतां केटलोएक काल वीत्यो एटलामां पर्यूषण पर्वना दिवसो आव्या ते समयमां ते बालकनी आसपास बेठेलां माणसो मांहोमांहे वातो करवां लागां के आपणे सांवत्सरीनो तेलो करीशुं एटले अठ्ठम तप करीशुं ए वात सांनलीने पहेला बालकने जातिस्मरण ज्ञान उपन्युं तेना योगें पोतानो पाछलो नव दीठो तेथी बाल्यावस्थामां पण तेणे पोताना मनमां अठ्ठमनुं तप करवुं एवो निश्चय करीने स्तनपान करवुं मूकी दीधुं तेथी तेनुं शरीर कुमलाइ गयुं मरणतुल्य अवस्था दी ठामां आवी एवी पुत्रनी व्यवस्था जोइ तेनां माता पिता घणुंज दुःख धरवा लागा तेणे अनेक प्रकारना औषधोपचार कर्या तो पण ते बालकें स्तनपान कर्युं नही एम करतां नूखनां योगें ते बालकने मूर्छा आवी गइ छोकराने मूवेला जेवो देखीनें तेना बापनुं हैयुं फाटी गयुं तेथी मरण पाम्यो, तेमज माता पण मरण पामी अने बालकने मृतक देखी तेना जातिवा लायें धरतीमां जंडार्यो, पछी आपणा गाममां अपुत्रीयो श्रीकांतशेठ मरण पाम्यो छे एवी खबर पडतां राजायें ते शेठनुं धन लेवा सारुं माणस मोकल्यां, एवा समयमां अठ्ठम तपना प्रनावें करी धरणेंद्रनुं आसन चलायमान थयुं तेवारें अवधिज्ञाने करी सर्व वृत्तांत जाणी त्यां आवी बालकनें अमृत संचारे सज्ज कर्यो अने पोतें ब्राह्मणनुं रूप धारण करी ते शेठना घरना बा


चित्र २
इंद्र महाराज
नागकेतु
ब्राह्मणना
रूपे इंद्र
राजा
राजाना
माणसो

रणा आगल जनो रहीनें राजाना माणसोने धन लेतां अटकाव्यां, राजपुरुषोयें जइ राजानें कह्युं के ब्राह्मण धन लेवा देतो नथी तेंवारें राजा पोतें उतावलो आवीने ब्राह्मणने कहेवा लागो के अमारा राज्यमां जे अपुत्रीयो मरण पामे तेनुं धन राजा लइ जाय एवी परंपरायें रीत छे माटे तमे शा वास्ते अटकाव करो छो त्यारें ब्राह्मण बोल्यो हे राजन्! ए शेठनो पुत्र जीवतो छे. राजायें कह्युं क्यां छे, तेवारें धरणेंद्रे ते बालक जमीनमांथी जीवतो काढीनें राजानें देखाड्यो ते जोइ सर्व लोक विस्मय पाम्या राजायें ब्राह्मणनें पूछ्युं के आप कोण छो अने आ बालक कोण छे तथा ए वात तमे केमं जाणी? ब्राह्मण बोल्यो हुं धरणेंद्र नाग राजा छुं तेलाना प्रभावथी एनो सहाय करवाने आव्यो छुं राजा बोल्यो ए बालकें जनमतांज अठम तप केम कर्युं, धरणेंद्र बोल्या हे राजन्! ए बालक पूर्व भवमां एक वाणीयानो छोकरो हतो त्यां बाल्यावस्थामांज एनी माता मरण पामी तेवारें एनो पिता बीजी स्त्री परण्यो पछी ते उरमान माता जो छोकरानो थोडो वांक होय तोपण अवगणना करे घणु घणु खीजे तथा मारवा कूटवा वगैरे घणुंज दुःख देवा लागी, एम ते छोकरो नित्य प्रत्यें दुःख पामतो थको तेनो एक श्रावक मित्र हतो तेनी पासें जइ तेणे पोताना दुःखनी वात कही तेवारें मित्र बोल्योके हे भाइ! तें पूर्व भवमां धर्म कर्यो नथी तेना योगथी दुःखी थयो छो एवो उपदेश सांभली तेणे यथाशक्ति तप करवानो प्रारंभ कर्यो पछी ते आठमे चौदशें उपवास करतो अने बीजा दिवसोमां नवकारसी पोरसी प्रमुख तप करतो अनुक्रमें पंजोसण पर्व आव्युं तेवारें तेणे अठम तप करवानो निश्चय विचार करीनें रात्रें तृणनी झुंपडीमां जइ सूतो, एटलामां तेनी नजीक लाय लागी तेवारें अवसर जोइनें उरमान मातायें घासनी झुंपडी उपर

अग्नि नाख्यो तेथी झुंपडी बली गइ अने छोकरो पण शुनध्यानें मरण पाम्यो तेणे अष्टम तप ध्यानना प्रनावथी. इहां अपुत्रीया श्रीकांत शेठने घेर जन्म लीधो अने जातिस्मरण ज्ञान पामीनें एणे अठ्ठम तप कर्युं, तेथी नूखनें योगें मूर्छांगत थयो हतो परंतु जीवतो हतो तथापि लोके अजाण पणे तेनें मूवेलो जाणी जमीनमां नंमाख्यो ते में आवी अमृत संचार करी मूर्छा ऊतारी सज्ज कर्यो. हे राजन्! ए महापुरुष छे, एहज नवमां मोक्ष जाशे एने घणाज यत्नथी राखजो, तमोनें पण महोटो ऊपकारनो करवा वालो थाशे एम कही पोताना गलानो हार बालकना गलामां नाखी धरणेंद्र पोतानें स्थानकें गयो, राजायें ते बालकनें हाथी ऊपर चडावी महोटा आमंबर सहित घेर आण्यो पछी कुटुंबना लोकोयें शेठनुं मृतकार्य करी छोकरानुं नाम नागकेतु पाडयुं. ते बालपणाथीज जितेंड्रिय परम श्रावक थयो, अष्टमी, चतुर्दशीनो ऊपवास करे, चोमासें छठ्ठ करे अने पंजोसणनो अठ्ठम करे, जिनपूजा, साधु सेवा नित्य करे, एक दिवसें नगरना विजयसेन राजायें कोइ पुंरुषनी ऊपर चोरीनुं जुठुं कलंक आपी निरपराधी छतां तेने माख्यो ते मरीनें व्यंतर देवता थयो तेणे आवी आखा नगरनो विनाश करवा सारुं नगर प्रमाणे एक सिला आकाशें बिकूर्वी लोकोनें बीवराववा लाग्यो अने राजानें पाटुयें मारी मोहोडे लोही वमतों करी जमीन ऊपर नाख्यो, ते कृत्य जोइनें नागकेतुयें जाण्युं जे हुं जीवतां छतां श्रीसंघनो अने श्रीजिनचैत्यनो विनाश केम जोइ शकुं!! एवुं विचारी मनमां जीवदया आणी नगवानना प्रासाद ऊपर चडीनें शिलानें हाथ आडो आपी पडती शिला हाथें धरी राखी व्यंतरो पण नागकेतुना तपनी शक्ति न सहन करतो थको ते पोतानी विकूर्वेली शिलानें संहरण करीनें नागकेतुनें आवी पगे लागो अने नागकेतुना कहेवा ऊपरथी

राजानें पण शाता करीनें व्यंतर पोतानें थानकें गयो, पछी नागकेतुनी घणी मानता थई राजायें तेने सन्मान आप्युं नागकेतु पण पूर्वनी पेरें घणा तप जप करतो थको विचरे छे एकदा नागकेतुनें जगवंतनी पूजा करतां फूलमांहे रहेला तंबोली नागें मश्यो तेथी शरीरमां झेर व्यापी गयुं पण शुज ध्यान धरवा लागो तेना योगथी केवलज्ञानऊपज्युं तिहां दीक्षा लीधी, शासन देवीयें उंघो, मुहपति प्रमुख साधुनो वेश आप्यो, घणाकाल पर्यंत विहार करी घणा जव्यजीवोनें प्रतिबोध आपी मोक्ष पोहोतो, एवो नागकेतुनो अधिकार सांजलीनें जे जव्य प्राणी छठ अठ्ठम तप करीनें एटले बेला तेलानी तपस्या करीनें श्रीपर्यूषण पर्वमां कल्पसूत्र सांजलशे ते जीव शाश्वत सुखने पामशे इतिश्री नागकेतु कथा समाप्त ॥ ॥ आ कल्पसूत्र पापनुं निवारक छे, मनोवांछित पूरनार छे, निकाचित जे चार घातिकर्म छे तेनुं जीपनार छे माटे जव्यजीवें प्रमाद, निद्रा, विकथा छांमी बेला अथवा तेलानुं तप करीनें कल्पसूत्र सांजलवुं तथा श्रीजीवाजिगम मध्ये कह्युं छे के पंजोसण पर्व आवे त्यारे देवताना इंद्र पण जेला थ इनें श्रीनंदीश्वर द्वीपने विषे जइ अठाइ महोत्सव करे छे तेम इहां रूडा श्रावक, श्राविकायें पण कल्पसूत्रनो अठाइ महोत्सव करवो एवा विधियें करी जो कल्पसूत्र सांजले तो बहु लाजकारी थाय ॥ ॥ ए कल्पसूत्र श्रीमहावीर स्वामीनें छठे पाटें चौद पूर्वधारी श्रीजद्रबाहु स्वामी युगप्रधान थया तेमने चौद पूर्व मांहेला नवमा प्रत्याख्यान प्रवाद नामा पूर्वनी मांहेथी दशाश्रुतस्कंध सूत्र तेनुं आठमुं अध्ययन रूप रच्युं छे ते जेम दधिनो सार घृत छे तेम सर्व शास्त्रनो सार जूत ए सूत्र रच्युं छे इहां चौद पूर्वनुं मान कहे छे तिहां प्रथम उत्पाद पूर्व छे ते अंबाडी सहित एक हाथी ऊनो करीयें तेनो जेटलो ढगलो देखाय तेटली साइनो एक

ढगलो करीये एटली शाहीथी लखीयें तेवारें ए पहेलो पूर्व लखाय, बीजो अग्रायणी पूर्व बे हाथी जेटली शाहीथी लखाय, त्रीजो वीर्यप्रवाद पूर्व चार हाथी जेटली शाहीथी लखाय, चोथो अस्तिप्रवाद पूर्व आठ हाथी जेटली शाहीयें लखाय, पांचमो ज्ञानप्रवाद पूर्व शोळ हाथी जेटली शाहीयें लखाय, छठो सत्यप्रवाद पूर्व बत्रीश हाथी जेटली शाहीयें लखाय, सातमो आत्मप्रवाद पूर्व चोसठ हाथी जेटली शाहीयें लखाय, आठमो कर्मप्रवाद पूर्व एकसोनें अठावीश हाथी जेटली शाहीयें लखाय, नवमो प्रत्याख्यानप्रवाद पूर्व बसो छपन्न हाथी जेटली शाहीयें लखाय, दशमो विद्याप्रवाद पूर्व पांचसेंने बार हाथी जेटली शाहीथी लखाय, अगीआरमो कल्याणप्रवाद पूर्व एक हजारनें चोवीश हाथी जेटली शाहीयें लखाय, बारमो प्राणावायप्रवाद पूर्व बे हजारनें अडतालीश हाथी जेटली शाहीथी लखाय, तेरमो क्रियाविशाल पूर्व चार हजारनें छन्नुं हाथी जेटली शाहीयें लखाय अने चौदमो लोकबिंदुसार पूर्व आठ हजार एकसोनें बाणु हाथीउंनां प्रमाण जेटली शाहीथी लखाय एम चौदें पूर्वनें लखवा मांडीयें तो सरवाळे १६३८३ हाथीउंना ढगला जेटली शाइ जोइयें परंतु अद्यापि पर्यंत कोइयें लख्या नथी अने हवे कोइ लखशे पण नही मात्र प्रमाण आपीने श्रीकेवली भगवाने उपमा बतावी छे ए सूत्रथी मान कह्युं ॥ हवे ए चौदपूर्वनुं अर्थ थकी मान कहे छे. समस्त जेटली नदीउं छे ते सर्वे नदीउंनी वेलुना कणीया जेटला थाय तथा असंख्याता समुद्र छे ते सर्व समुद्रनां पाणीना बिंदुउं जेटला थाय तेथी पण अनंतगुणो एकेका सूत्रना पदनो अर्थ जाणवो एरीतें चौद पूर्वनां नाम कह्यां ॥ ॥

ए कल्पसूत्र प्रथम तो भादरवाशुदि पंचमीना दिवसें रात्रिनुं सांवत्सरिक पडिक्कमणुं कर्या पछी अर्द्धरात्रि कालग्रहण करी श्रीगुरु उभा थका मुखथी सूत्रनो पाठ उच्चार करता अने बीजा

साधुउं सर्व काउस्सग्ग करी सांजलता हता तेमज दिवसना साधवीउंने पण संजलावता हता ए विधि हतो ॥ ॥ तेवार पठी श्रीमहावीर जगवाननां निर्वाणथी नवशेंने ऐंसीमें वर्षे पुस्तकारूढ थयो अने श्रीवीर निर्वाणथी नवशें त्र्याणुमें वर्षे आनंदपुर नगर जेने हमणा वडनगर कहे ठे तेने विषे ध्रुवसेन राजा राज्य करतो हतो तेने अत्यंत वल्लन सेनागज नामे एक पुत्र हतो ते दैवयोगें मरण पाम्यो एटलामां पर्यूषण पर्व पण आव्यां तेवारें राजा घणो शोकाक्रांत थयो हतो तेथी धर्मशालाने विषें पण आवे नही वली जेम राजा चाले तेम प्रजा चाले ए हेतुथी बीजा जे शेठ व्यवहारी प्रमुख लोक हंता ते पण धर्मशालाने विषे आवे नही एवो राजाने शोकातुर थयो जाणी, धर्मनी हाणी थती देखीने गुरु ध्रुवसेन राजानी पासें वंदाववा गया त्यां राजाने कहेवा लाग्या के हे राजन्! तमो शोकाक्रांत थया जाणीनें नगरना लोक पण सर्व शोकाक्रांत थया ठे तेमाटे शरीर धनादिक सर्व अनित्य ठे, आयुष्य चंचल ठे, संसार असार ठे ए प्रकारना संसार स्वरूपनें तमें जाणोज ठो माटे जैनधर्म मांहे घणो शोक करवो अयुक्त कह्यो ठे तेथी तमे शोक निवारीने पंचमीना दिवसें पंजोसण ठे माटे धर्मशाला मांहे पधारो तो श्रीजद्रबाहु स्वामीयें नवमा पूर्व मांहेथी उद्धरेलुं श्रीकल्पनामे सूत्र महामंगलिक प्राचीन कर्मना क्षयनुं करनार ठे ते वांचीयें तेवारें राजानें पांचमने दिवसें पुत्र मरणनो शोक निवर्त्तावयो हतो अने इंद्रमहोत्सव पण हतो तेथी राजायें कह्युं के ठठनो दिवस अथवा चोथनो दिवस ठेरावो तो महाराथी आवी शकाय पण पंचमीने दिवसें महाराथी आवी शकाशे नही तेवारें " अंतरावासेकप्पत्ति " एवो पाठ देखीने कारण विशेषें गुरुयें चोथनी थापना करी चोथनुं कल्पसूत्र वांचवा कबुल कर्युं कालिकाचार्यथी उंहरुं बलमित्र अने जानुमित्र

ए बे जाणेज साथें वडनगरनो ध्रुवसेनराजा सजा सहित धर्मशाला मध्ये आव्यो तेवारें नव वां
चनायें करी प्रजावनायें सहित महोत्सव पूर्वक सर्वलोकनी समक्ष श्रीकल्पसूत्र गुरुयें वांच्युं
ते दिवसथी चोथने दिवसें पंजोसण थवानी परंपरा चाली छे अने केटलाएक गछमां अद्या
पि सुधी पांचमनां पण पंजोसण करे छे तेमज ते दिवसथी महोत्सव पूर्वक प्रजावना सहित
सर्वलोकनी समक्ष कल्पसूत्र वांचवानी प्रवृत्ति चाली ते श्रीगुरु परंपरायें आज पर्यंत चाली
आवे छे अने ते प्रमाणें सर्वस्थले कल्पसूत्र वंचाय छे एना वांचवाना अधिकारी योग वहन
करनारा साधुउं छे अने सांजलवानो अधिकार चतुर्विध श्रीसंघने छे ॥ ॥ एक प्रतमां वली
आम कहेलुं छे के वडनगरमां गुरुजी चोमासुं रह्या हता एवामां पर्यूषण नजीक आवतांमां
ध्रुवसेन राजानो एकज पुत्र हतो ते दाहज्वरें पीडा पामवा लाग्यो तेना योगे राजा चिंतातुर
थयो थको गुरुने वांदवा आवी शक्यो नही अने पर्यूषण पर्वमां धर्मध्यानमां प्रवृत्ति करनारा
घणा जनो दीगमां न आव्या तेथी गुरुयें तेनुं कारण पुछ्युं तेवारे राजाने शोकमां पड्यो
जाणी गुरु पोतें राज सजामां पधास्या त्यां राजाने धर्मोपदेश आपी समजावीने महोटा लाज
नु कारण जाणी मांगलिक निमित्तें कल्पसूत्रनी प्रथम वांचना करी ते सांजलतां राजाना पुत्र
ने शाता थई एम करतां नव वाचनायें तो सर्व दाहज्वर उपशमी गयो तेथी राजायें घणो
हर्षवंत थइने महोटो महोत्सव कस्यो, धर्मनो महिमा वृद्धि पाम्यो, राजायें गुरुने विनंति करी
के श्रीसंघना मांगलिक निमित्तें ए कल्पसूत्र वर्षोवर्ष श्रीसंघनें वांची संजलाववुं ते दिवसथी
कल्पसूत्र चतुर्विध श्रीसंघनी आगल वांची संजलाववानी प्रवृत्ति चाली छे ते रीते हमणा
पण श्रावकोना आग्रहथी कल्पसूत्रनी वाचना साधुमुनिराज करे ने ॥ ॥ हवे ए सूत्रना

वांचवा थकी एना अक्षरना महात्म्यनें योगें साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविकानां कल्याण थाय ए वात निःसंदेह छे तेनी उपर कथा कहे छे. कोइएक डोशीनो पुत्र वनमांहे गायो चारवा जाय एक समये तेने सर्प्पें डश्यो तेथी मूर्छागत थयो ते वात लोकोना मुख थकी सांभलीने डोसी वनमां गइ त्यां पुत्रनें मूर्छित थयो देखी, मोहना वश थकी पुत्रनुं नाम वारंवार स्मरण करवा मांड्युं के रे हंस! रे परमहंस! एवीरीते चार पोहोरसुधी.. पोकार कर्यो, तेथी डोसीना छोकरानें जेर उतर्युं, साजो थयो, प्रभातें माता अने छोकरो बेहु जण गाममां आव्यां, नगरनां लोक सर्व विस्मय थयां, त्यां डोशीनें गारुडीउयें पूछ्युं जे तमोये शो उपाय कर्यो, के जे थकी तमारो पुत्र निर्विष थयो? त्यारे डोशी बोलीजे हुं कांइ मंत्र जाणती नथी. औषध जाणती नथी, पण आखी रात्रि, रे हंस! हंस! अने रे परमहंस! परमहंस!! एवुं रुदन कर्युं तेथी निर्विष थयो. में पोकार कर्यो ते देवतायें सांभल्यो देवना प्रयोगथी छोकरो निर्विष थयो ते सांभली गारुडी बोल्या के ए मंत्र सत्य छे अक्षरना प्रयोगथी मंत्र निपजे छे, तेम आ कल्प सिद्धांत वांचतां थकां, सांभलतां थकां, जन्म जन्मनां पातक जाय छे एवुं महोटुं महात्म्य कल्पसूत्रना अक्षरनुं जाणवुं ए कल्पसूत्रने सांभलवा थकी घणा गुण थाय छे, घणा मांगलिकनी वृद्धि थाय छे ॥ ॥ हवे परिसामस्त्येन उषणा सेवना ते पर्यूषणा कहीयें ते पंजोसण पर्व आव्यां थकां साधुयें एटलां धर्म कार्य करवां ते कहे छे. १ चैत्य परिवाडी करवी एटले सर्व चैत्यने विषे श्रीअरिहंतनी प्रतिमानां दर्शन भक्तिभावे करवां, २ लोच करवो, ३ सांवत्सरि पडिक्कमणु करवुं, ४ सर्व श्रीसंघनी मांहोमांहे खमणां करवां, ५ तेलो करवो एटले अठ्ठमनुं तप करवुं तथा पांच दिवस सुधी श्रीकल्पसूत्र वांचवुं

ए पांच वानां करवां,एम श्रीतीर्थंकर गणधरें कह्युं ठे वली पर्यूषण आव्यां थकां श्रावकें आट
जां धर्म कार्य करवां ते कहे ठे. १ आठ दिवस सूधी अमारि पलाववी, २ यथाशक्ति बेला
तेलानुं एटले ठठ अठमादिकनुं तप जपादिक करवुं, ३ आठ दिवस पर्यंत सुपात्रनें अविछिन्न
दान देवुं, ४ सोपारी नालीयेर प्रमुखनी प्रजावना करवी, ५ श्रीवीतराग देवनी प्रतिमानी
पूजा करवी, चैत्य परिवाडी करवी, ६ सर्व साधुउने वंदन करवुं, ७ श्रीसंघनी जक्ति करवी,
७ सचित्त वस्तुनो परिहार करवो, ए ब्रह्मचर्य पालवुं, १० सर्व प्रकारना आरंज संबंधि कर्मो
नो त्याग करवो, ११ पोतानी शक्ति प्रमाणे सन्मार्गे द्रव्य खरचवुं, १२ श्रुतज्ञाननी जक्ति क
रवी, १३ अजयदान देवुं, १४ कर्मक्षय निमित्त काउस्सग्ग करवा, १५ प्रतिदिवस उजय
टंक पडिक्कमणां करवां, १६ मोटो महोत्सव करवो, १७ जे कल्पसूत्र वांचे तेने जक्त पाना
दिक सहाय आपवो तेनी सुख समाधिनी खबर लेवी अने १७ श्रीसंघे मांहोमांहे खमाववुं,
१ए जावना जाववी, २० कल्पसूत्र सर्व अक्षरे अक्षर सांजलवुं कल्प समान जे जव्य
जीव होय ते कल्पसूत्र सांजले अने ते विधिपूर्वक सांजलनारो पुरुष बारमें देवलोकें जइ
देवतानां सुख जोगवे परंपरायें आठमें जवे मोक्षना सुख पामे एटलां धर्मकार्य करवां ॥ ॥
हवे ईहां व्याख्यान करती वेलायें प्रथम मंगल रूप गाथा कहेवी ते लखीयें ठैयें ॥ पुरिम च
रिमाण कप्पो, मंगलं वद्धमाण जिण तिब्बं ॥ ईह परिगहिया जिणहरा, थेरावली चरित्तंमी
॥ १ ॥ पहेला श्रीरुषजदेव तीर्थंकर अने ठेला श्रीमहावीर स्वामी तीर्थंकर थया तेमां श्रीव
र्द्धमान जिनेश्वरना तीर्थने विषे मंगलिक निमित्तें ए कल्प सूत्र ठे तेमां त्रण अधिकार कह्या
ठे त्यां प्रथमतो जिनावली एटले श्रीमहावीर जगवानथी मांमीने पश्चानुपूर्वीयें श्रीजिने

श्वरोनां चरित्र कहेवाशे, बीजो स्थविरावली एटले स्थविरोनां चरित्र कहेवाशे, त्रीजो चोशठ आलावें करी अठावीश प्रकारनी साधु समाचारि कहेवाशे तेमां प्रथम श्रीजिनेश्वरोनां चरित्रो मांहे छेला श्रीमहावीर स्वामी शासनना अधिकारी छे माटे तेमनुं चरित्र पहेलुं कहेवाशे एरीतें पीठिका करी ॥ ॥ हवे ए कल्पसूत्रनो अर्थ अत्यंत गंभीर छे एकेका अक्षरनो अनंतो अर्थ छे ते सर्व अर्थ कहेवानें हुं समर्थ नथी तथापि जेम पूर्वाचार्योयें कह्युं छे .तेम हुं पण ते महान्पुरुषोना ग्रंथोने अनुसरी गुरुकृपाथी स्वल्प अर्थ करु छुं ॥ ॥ हवे जो पण ए कल्पसूत्र पोतेंज सर्व विघ्नोपशांतिने माटे महामांगलिक रूप छे तो पण शिष्यने मंगलबुद्धि होवाने लीधे जेम लौकिक कार्यना प्रारंभमां पण प्रथम श्रीदेव गुरुनुं स्मरण करीने पछी ते कार्यनो आरंभ करीयें छैयें तेम आ कल्पसूत्र रचवा रूप कार्यनी आद्यमां पण सर्व मंगल मांहे महामांगल्यकारी, चौदपूर्वनो सारभूत एवो पंच परमेष्ठि मंत्रनो उच्चार कराय छे ते लखीयें छैयें ॥ ॥ नमो अरिहंताणं के० ॥ नमस्कार हो विहरमान श्रीअरिहंत प्रत्यें, नमोसिद्धाणं के० ॥ नमस्कारहो जे आठकर्म क्षय करी मोक्ष गया एवा सर्व सिद्ध प्रत्यें, नमो आयरियाणं कें० ॥ नमस्कारहो श्रीआचार्य भगवान प्रत्यें, नमोउवज्झायाणं के० ॥ नमस्कारहो श्रीउपाध्याय प्रत्यें,नमो लोए सव्वसाहूणं के० ॥ नमस्कारहो अढीद्वीप रूप मनुष्य लोकनें विषे रह्या एवा सर्व साधु प्रत्यें, एसो पंच नमुक्कारो के०॥ ए जे अरिहंतादिक पांच नमस्कार छे एटले ए नमस्कार पंचक जे छे ते कहेवो छे तोके सव्वपावप्पणासणो के० ॥ सर्व पापनो प्रकर्षें करी नाश करनार छे, मंगलाणंच सव्वेसिं के० ॥ सर्व मंगलमांहे पढमंहवईमंगलं के०॥ प्रथम एटले मुख्य मंगल छे, एरीतें मंगल कहीनें हवे मूलपाठनो अर्थ लखीयें छैयें, ते

कालनें विषे एटले चोथा आरानां अंतने विषे, ते समय ने विषे एटले ते अवसरनें विषें श्रमणजगवंत श्रीमहावीर स्वामीना पांच स्थान उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्रमां होतां हवां ते कहे छे एक उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां देवलोकथी चवीने देवानंदाजीनी कूखें गर्जमां आवी उपन्या बीजो उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां देवानंदाजीनी कूखथी लईने श्रीत्रिशला देवीनी कूखमां संक्रमाव्या, त्रीजो उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां जनम्या, चोथो उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां गृहस्थ पणुं त्यागीनें साधु पणुं अंगीकार कर्युं, पांचमो उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां अनंत अनुपम जेनें बीजी कोई उपमा लागे नही तथा जेनो क्यांय पण व्याघात न थाय एवुं, आवरण रहित समस्त वस्तु प्रकाशक संपूर्णपूर्णिमाना चंद्र समान एवुं श्रेष्ठ केवलज्ञान तथा केवलदर्शन जगवाननें उत्पन्न थयुं ए पांच स्थान उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां थयां तथा स्वाति नक्षत्रमां जगवंत निर्वाण एटले मोक्ष पद पाम्या ए पांच कल्याणक सामान्य पणे जगवंतना कह्यां हवे विस्तारथी वर्णन करीयें छैयें. ते कालने विषे ते समयने विषे श्रमण जगवान् श्रीमहावीर स्वामी उष्णकालनो चोथो मास आठमुं पखवाडियुं अर्थात् आषाढ शुदि छठनी रात्रे महाविजय पुष्पोत्तर प्रधान पुंमरीक नामे दशमा देवलोकनुं विमान छे ते विमानमां वीश सागरोपमना आउखानो क्षय करीनें, देवजव त्यागीनें, देव संबंधि शरीर छांमीनें; अंतर रहित चवे, चवन करीनें एहज जंबूद्वीपना जरतक्षेत्रमांहेला दक्षिणजरतमां ए अवसर्पिणी कालना इहां अवसर्पिणी कोने कहे छे ते देखाडे छे जे कालमां समय समय वस्तुनी हानि थती होय ते अवसर्पिणी काल कहेवाय अने जे कालमां समय समय वस्तुनि वृद्धि थती होय ते उत्सर्पिणी काल कहेवाय ते प्रत्येक एकेका कालना छ छ आरा होय छे तेनुं स्वरूप

संक्षेपथी लखीयें छैयें तिहां पहेलो सुखमसुखमा नामें आरो चार कोडाकोडी सागरोपमनो, तेमां मनुष्य तिर्यंचनो त्रण्य पल्योपमनो आउखो होय, त्रण कोशनुं देहमान होय, बशेनें छप न्न पांसली होय, कल्पवृक्षना फल तथा माटीनो तूवरनी दाल जेटलो आहार त्रण दिवसें करे, उंगणपचाश दिवस सुधि जोडलो जनम्यो पाले पछी देवलोकें जाय ए अवसर्प्पिणीनो पहेलो आरो अने उत्सर्प्पिणीनो छठो आरो तेनी स्थिति मर्यादा कही ॥ १ ॥ ॥ बीजो सुखमा नामे आरो, त्रण कोडाकोडी सागरोपमनो, तिहां मनुष्य तिर्यंचनुं बे पल्योपमनुं आयु, बे कोशनुं शरीर, बोर प्रमाणे बे दिवसें आहार करे, एकसो अठावीश पांसली होय अने चोशठ दिवस पर्यंत अपत्य पालना करी देवलोकमां जाय ए अवसर्प्पिणीनो बीजो आरो अने उत्सर्प्पिणीनो पांचमो आरो तेनी स्थिति मर्यादा कही ॥ २ ॥ ॥ त्रीजो सुखम दुखमा नामे आरो, बे कोडाकोडी सागरोपमनो, तिहां युगलीया मनुष्य तिर्यंचनुं एक पल्योपमनुं आयु, एक कोशनुं शरीर, एकांतरें आमला प्रमाणे आहार करे, चोशठ पांसली होय अने उंगण्याएंशी दिवस सुधि संतान पालना करी मरण पामी देवलोकें जाय ए अवसर्प्पिणीनो त्रीजो आरो अने उत्सर्प्पिणीनो चोथो आरो तेनी स्थिति मर्यादा कही ॥ ३ ॥ ॥ चोथो दुखम सुखमा नामे आरो बेतालीश हजार वर्षें न्यून एक कोडाकोडी सागरोपमनो तेमां मनुष्यनुं आयुष्य एक पूर्वकोडी वर्षनुं अने पांचसें धनुष प्रमाण शरीर होय, इहां युगलीया न होय माटें जेवखत जेटलुं जोइयें तेवखत तेटलुं जोजन करे, मरण पामीनें चारेगति मांहेली गमे ते गतिमां जाय, कोइक जीव कर्मक्षय करी मोक्ष पण जाय ए अवसर्प्पिणीनो चोथो आरो अने उत्सर्प्पिणीनो त्रीजो आरो तेनी स्थिति मर्यादा कही ॥४॥ ॥ पांचमो दुखमा नामा आरो

एकबीश हजार वर्षनो, तिहां मनुष्यनुं सात हाथ देह मान, एकसो वीशवर्षनुं आयु होय, मरण पामीनें चारगति मांहेली गमे ते गतिमां जाय परंतु ए आरामां सर्व कर्म क्षय करीनें कोइ मोक्षने विषे जाय नही, ए अवसर्प्पिणीनो पांचमो आरो अने उत्सर्प्पिणीनो बीजो आरो तेनी स्थिति मर्यादा कही ॥ ५ ॥ ॥ छठो डुखम डुखमा नामे आरो एकवीश हजार वर्षनो छे, एमां मनुष्यनुं शोलवर्षनुं आयु होय अने एक हाथनुं शरीर होय, बिलमां निवास होय, सर्व मनुष्य क्रूरकर्मी, न्यायमार्ग रहित, डुर्गतिमां जावा वाला जीव जेमां होय एवो अवसर्प्पिणीनो छठो आरो अने उत्सर्प्पिणीनो पहेलो आरो तेनी स्थिति मर्यादा कही ॥ ६ ॥ एरीते ए छ अवसर्प्पिणीना अने छ उत्सर्पिणीना मली छ ड बार आरा थाय तेनो सर्व मली वीश कोडाकोडी सागरोपम प्रमाणकाल थाय ॥ ॥ हवे एमां अवसर्प्पिणीनो सुषम सुषमा नामा पहेलो आरो पण संपूर्ण थयो वली सुखमा नामा बीजो आरो पण संपूर्ण थयो तथा सुषम डुषमा नामा त्रीजो आरो पण व्यतिक्रम थइ गयो अने डुसम सुसमा नामे चोथो आरो पण घणो वीती गयो एटले तेमांथी पण बेतालीश हजारने पच्चोतेर वर्ष अने साडा आठ महिना ऊपर एटला वरसें न्यून एक कोडाकोडी सागरोषम वीती गया तेमां एकवीश तीर्थंकर श्रीइक्ष्वाकु कुलमां थया जेमनुं काश्यप गोत्र हतुं तथा श्रीमुनिसुव्रत स्वामी अने श्रीनेमिनाथ नगवान ए बे तीर्थंकर श्रीहरिवंश कुलमां थया तेमनुं गौतम गोत्र हतुं एरीतें सर्व मली त्रेवीश तीर्थंकर तो थइ चूका अने जेवारें ए अवसर्प्पिणी संबंधी चोथा आराना पंचोत्तेर वर्ष ऊपर साडा आठ महीना शेष काल रह्यो तेवारें प्रथम श्रीनरत महाराजायें श्रीआदिनाथ तीर्थंकरने पूछ्युं हतुं त्यारे श्रीआदिनाथ नगवानें कह्युं हतुं जे चोवीशमा तीर्थंकर श्रीवर्द्धमान परमेश्वर थाशे ते

प्रमाणे श्रमण जगवान् श्रीमहावीर छेल्ला तीर्थंकर ते ब्राह्मण कुंमगाम नगरमां रुषजदत्त नामा ब्राह्मण जेनुं कोडाल गोत्र छे तेनी देवानंदानामे ब्राह्मणी जार्या छे तेनुं जालंधर गोत्र छे तेनी कूखनेविषे मध्यरात्रिना समयमां उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां चंद्रमानो योग होते छते देंव संबंधि आहार तथा देंवनो जव अने देंवनुं शरीर त्यागीनें देवानंदानी कूखमां अवतर्या ॥ ॥ हवे श्रीरुषजदेव जगवाने कह्युं हतुं के चोवीशमा तीर्थंकर श्रीमहावीर स्वामी थशे ते वात कथा जवनी छे ते जाणवानें अर्थें श्रीमहावीर स्वामीना सत्तावीश जव लखीयें छैयें. आ श्रीजंबूद्वीपना पश्चिम महाविदेहने विषे प्रतिष्ठान पत्तनना राजाना गामनी चिंता करवावालो नयसार नामे चाकर कणवाल्यो हतो ते एक दिवसें राजाना हुकुमथी घणां गाडां अने चाकर साथें लइने काष्ठ लेवाने अर्थें वनमां गयो तिहां पोते एक वृक्षनी नीचें जइ बेगे छे अने बीजा चाकर माणस लाकडां कापवानो उद्यम करवा लागा छे एटलामां साथथकी जूला पडेला केटलाएक साधु त्यां आव्या ते तेणे दीग तेवारें हर्षवंत थको तेमनी सन्मुख जइ वांदीनें पोतानें स्थानकें तेडी लावीनें आहार वोहोराव्यो पछी साधुयें तेने धर्मोपदेश आप्यो. ते सांजलीने त्यां समकेत पाम्यो तेवार पछी ते साधु मुंनिराजोनें पाधरो रस्तो देखाड्यो ए नयसारनो पहेलो जव जाणवो ॥१॥ ॥ जिहांथी समकेत पाम्या तिहांथी जवनी गणती थाय समकेत पाम्याथी आगल तो संसारमां जीवें अनंत जव कर्या ते कांइ लेखामां गणाय नही पछी त्यांथी आयुक्षय करी अंतसमये नमस्कार सहित मरण पामीने पहेले देवलोकें देंव पणे उपन्यों ए बीजो जव जाणवो ॥२॥ पछी देवजवमां एक पल्योपमनुं आयुष्य जोगवी तिहांथी चवीत्रीजे जवें श्रीरुषजदेव स्वामीनो पुत्र जरत चक्रवर्त्ती तेनो मरीचि नामे पुत्र थयो

तेणे एक दिवस श्रीरूषजदेव जगवाननी देशना सांजलीने दीक्षा लीधी ते वखत बीजा पण जरत राजाना पांचसे पुत्र अने सातसें पोतरा मली बारशें पुरुषोए दीक्षा लीधी, एक दिवस ज्ष्ण कालें शरीरमां ताप घणो लागो तेथी ते मरीचिनें मनमां नाहावानी ईछा थई तेवारें संय मनो निर्वाह दोहेलो तेथी दीक्षा पालवाने असमर्थ अने घरें पण जवाय नही एवुं विचारी सा धुनो वेष गंमीनें मनःकल्पनायें नवो त्रिदंमीनो वेश धारण कस्यो लोक पूछे तेवारें एवुं कहेजे साधु त्रणदंमथी रहित छे अने हुं त्रणदंम सहित छुं माटे महारे त्रणदंमनुं चिन्ह हो तथा साधु महाराज ड्व्य अने जावथी लोच करे छे हुं लोचकरवाने असमर्थ होवाथी महारे मस्तकें शिखा अने मुंमन एटले कुर मुंम हो तथा साधु सर्व प्राणातिपातादिकथी विरम्या छे महाराथी तेम पली शकतुं नथी माटे महारे स्थूल प्राणातिपातनी विरति हो तथा साधु शीलेकरी सुगंधित छे अने हुं तेम नथी माटे माहारे बावना चंदननुं विलेपन हो तथा साधु मोह रहित छे अने हुं मोहें करी ढांक्यो छुं माटे माहारे एक छत्र ढांकवा सारुं हो तथा साधु पाडुकायें करी रहि त छे हुं तेम नथी माटे महारे पगें पावडी हो तथा साधु कषायथी रहित छे अने हुं कषायें सहित छुं माटे महारे कषाईयां एटले गेरूना रंग्यां वस्त्र हो तथा साधु स्नानें करी रहित छे अने हुं तेम नथी माटे महारे स्वल्प पाणीयें स्नान हो एरीतें जेख लई हाथमां जलक मंमल धारण करी प्रजुना समोसरणनी बाहेर बेसे परंतु एवो विरूप वेश छतां पण जे को ई पूछे तेनी आगल खरे खरी हकीगत कहे अने एनी पासें आवनारनें शुद्ध साधुमार्गनो उ पदेश आपी श्रीरूषजदेव जगवान पासें दीक्षा देवरावे एवो थको जगवान सार्थे विचरे एकदि वस श्रीरूषजदेव स्वामी अयोध्यायें पधास्या तेवारें जरतचक्रवर्त्तियें परमेश्वरनें वंदना करी पू

चित्र ३





ख्युं जे हे नगवंत! आ समोसरणमां कोई तीर्थकरनो जीव छे? तेवारे नगवान बोल्या के समोस रणमां तो नथी परंतु समोसरणनी बाहेर ताहारो मरीचि नामें पुत्र जेणें त्रिदंमीनो वेष धारण कस्यो छे ते चोवीशमो श्रीमहावीर नामा तीर्थंकर थाशे तथा एज मरीचिनो जीव ते आ नरत क्षेत्रमां पोतनपुर नगरें त्रिपृष्ठ नामे पहेलो वासुदेव थाशे तथा श्रीमहाविदेह क्षेत्रमां मूका नग रीयें प्रियमित्र नामा चक्रवर्त्ती थाशे एवी वात सांजलीनें नरत महाराज हर्षवंत थइ श्रीनग वान पासेंथी मरीचिनें वांदवानी आज्ञा लेइ समोसरणमांथी नठीनें समोसरणनी बाहेर ज्यां मरीचि बेठो छे त्यां आव्या अने त्रण प्रदक्षिणा आपी वांदीने कह्युं के हे मरीचिं! हुं तने तथा ताहारा त्रिदंमीना नेखने तथा तुं वासुदेव थाइश ते ताहारा वासुदेव पणांने तथा च क्रवर्त्ती पणांनें नमतों नथी परंतु चोवीशमो श्रीमहावीर नामें तीर्थंकर थाइश माटे तेने वांडुं छुं एम कही नरत महाराज स्वस्थानकें गया पछी ए वात सांजलीने मरीचि घणा आनंदथी बोल्यो के एकतो महारो दादो तीर्थंकर तथा महारो पिता चक्रवर्त्ती अने हुं पोते पण पहेलो वासुदेव थाइश तथा चक्रवर्त्ती पण थाइश वली छेल्लो चोवीशमो तीर्थंकर थाइश माटे मने वासुदेवादिक अधिक पदवीउ मलशे तेथी अहो महारुं उत्तम कुल एम कहीने पोतानी नुजा यें ताली ठोकी महा हर्षवंत थयो थको हाथें तालोटा देतो नाचवा लाग्यो, एवीरीतें पोता ना कुलनो मद कस्यो तेथी नीचगोत्र कर्म बांध्युं जेमाटे १ जातिमद, २ कुलमद, ३ लान मद, ४ ऐश्वर्यमद, ५ बलमद, ६ रूपमद, ७ तपमद, अनें ८ श्रुतमद ए आठ मदने करतो थको जीव हीन जात्यादिकने पामें हवें कोइएक दिवस मरीचिना शरीरमां रोग उपन्यो तेवारें तेनो जिन्नवेष देखीने असंयति पणाने लीधें कोइ पण साधु तेनो वैयावच्च करे

नही ते जोइ मरीचियें मनमां चिंतव्युं के मने रोग मटी जाय अने सारो थाउं तो एक शिष्य करुं के जे मने रोगादिक उपने वैयावच्च करवा काम आवे एम निर्धारी राख्युं पछी केटलाएक दिवसें तेने रोग मट्यो अने शरीरे शाता थइ, एक दिवसें कोइ कपिल नामा राजपुत्र मरीचि पासें आवी धर्मोपदेश सांजली प्रतिबोध पाम्यो पछी मरीचिनें कहेवा लागो के मने दीक्षा आपो ते सांजली मरीचि बोल्यो के श्रीऋषजदेव स्वामी पासेथी दीक्षा ल्यो तेवारे कपिल राजपुत्र श्रीऋषजदेवजीना समोवसरणमां गयो तिहां प्रजुनें समोसरणमां बेठा जोइ फरी मरीचि पासें आवीनें बोल्यो के श्रीऋषजदेवजीतो राज्य लीला जोगवे छे माटे तेमनी पासें तो धर्म कांइ पण नथी पण ताहारा पासें कांइ धर्म छे के नथी? एवुं वचन सांजली मरीचियें तेनें यथार्थ कह्युं तो पण बहुल कर्मी पणा माटे तेणे मान्युं नही तेवारें मरीचियें आदि कषाय, सहित मतिभ्रंशथी, मिथ्यात्वोदयना योगें, शिष्यना लोजथी, स्वधर्म थापवा विचार्युं जे ए म्हारे योग्य छे एम चिंतवीनें बोल्यो के हे कपिल! कांइक जैनधर्म म्हारा पासें पण छे माटे तुं सुखें दीक्षा ले, हुं तुजनें दीक्षा आपीश एवा प्रकारें पोताना अर्थ सारुं कपिलने दीक्षा दीधी ए उत्सूत्र जाषण कर्युं पछी ते कर्मनें आलोयुं पडिक्कम्युं नही तेना योगथी एक कोडाकोडी सागरोपम संसारमां परिभ्रमण करवा संबंधि कर्म उपार्जन कर्युं पछी तें मरीचि अनुक्रमें पोतानुं चोराशी लाख पूर्वनुं आयुष्य जोगवी समाधि मरण करीने ॥ ३ ॥ ॥ चोथे जवें पांचमे ब्रह्म देवलोकें दश सागरोपमनें आउखे देवता पणे उपन्यो ॥ ४ ॥ ॥ त्यांनु आयुष्य पूरण करी चवीनें पांचमे जवें कोल्लागसन्निवेशने विषे एंशी लाख पूर्वनें आउखे कौशिक नामा विप्र थयो त्यां पण छेल्ली तापसी दीक्षा ग्रहण करी आयुष्य पूरुं करी मरण पामीने घ

णाकाल पर्यंत संसार परिभ्रमण करी ॥ ५ ॥ छठे जवें थूणापुरीमां पुष्पमित्र नामा ब्राह्मण थयो तिहां त्रिदंमी तापस थई बहोतेरलाखपूर्व आयु जोगवी ॥ ६ ॥ ॥ सातमे जवें पहेले सौधर्म देवलोकें मध्यम आउखे देवता पणे ऊपन्यो ॥ ७ ॥ ॥ त्यांथी चवीने आठमे जवें चैत्य सन्निवेशें साठ लाख पूर्वनें आउखे अग्निद्योति नामा ब्राह्मण थयो त्यां पण त्रिदंमी तापस थई काल करीने ॥ ८ ॥ नवमे जवें बीजे ईशान देवलोकें मध्यम आउखे देवता थयो ॥ ९ ॥ त्यांथी चवी दशमे जवें मंदिराख्य सन्निवेशें उप्पन्न लाख पूर्वनें आउखे अग्निजूति नामा ब्राह्मण थयो त्यां पण त्रिदंमी पणुं ग्रहण करी मरण पामीनें ॥ १० ॥ अगीआरमे जवें त्रीजे सनत्कुमार नामा देवलोकें मध्यम आउखे देवता पणे ऊपन्यो ॥ ११ ॥ त्यांथी चवी बारमां जवमां श्वेतांबिका नगरीनें विषे चुम्मालीश लाख पूर्वने आउखे जारद्वाज नामा ब्राह्मण थयो अंते त्रिदंमी पणुं ग्रहण करी त्यांथी मरण पामीनें ॥ १२ ॥ तेरमें जवें चोथा माहेंद्र नामा देवलोकने विषे मध्यम आउखे देवता पणे उपन्यो ॥ १३ ॥ त्यांथी चवी घणुं संसार ज्रमण करी वली चौदमां जवें राजगृही नगरीने विषे चोत्रीश लाख पूर्वनें आउखे थावर नामा ब्राह्मण थयो त्यां त्रिदंमी तापस पणुं अंगीकार करी मरण पामीनें ॥ १४ ॥ पन्नरमें जवें पांचमें ब्रह्म देवलोकें मध्यम आउखे देवता पणे उपन्यो ॥ १५ ॥ त्यांथी चवीने वली पण घणुं संसार ज्रमण करी शोलमां जवने विषे राजगृही नगरीनो चित्रनंदी नामेराजा तेनी प्रियंगु नामा राणी तेनो पुत्र विशाखानंदी हतो अने ते राजानो बीजो न्हानोजाईविशाखाजूति नामे युवराजा हतो तेनी धारणी नामे राणीनी कूखने विषे ते मरीचिनो जीव आवी पुत्र पणे उपन्यो, तेनुं विश्वजूति नाम मावित्रे दीधुं, ते अनुक्रमें यौवन वय पाम्यो त्यारे तेना पितायें

परणाव्यो पछी ते प्रतिदिन पोतानी स्त्रीने साथें लई वाडीमां रमवा जाय एक दिवसें चित्रनंदी राजा ना कुवर विशाखानंदीयें, विश्वनूतिने क्रीडा करतो देखीने मनमां विचार कर्योके जुर्ज तो खरा जे हुं तो राजानो पुत्र हुं अने आ तो युवराजानो पुत्र छे तो हुं आ माहारा बापनी वाडीमां कोइ दिवसें पण क्रीडा करतो नथी अने आ युवराजानो पुत्र वाडी रोकीनें बेगो छे ए अयुक्त छे माटें हवे हुं पण माहारी स्त्रीयो सहित इहां आवीनें वाडीमां रमण करुं तोज महारो जमवारो सफल जाणुं नहींकां महारो जन्म व्यर्थ जाणवो एवो निश्चय करी ते कुमारें पोताना पितानें कह्युं के विश्वनूतीनें वाडीमांथी काहाडी मूको तो हुं जइ ते वाडीमां क्रीडा करुं तेवारें पितायें कह्युं के हे पुत्र! हुं कोइ प्रपंच करीनें विश्वनूतीनें काहाडी तने वाडी आपीश ए प्रमाणे पोताना पुत्रनें संतोष पमाडी पछी विश्वनूतीने वाडीमांथी काहाडवा निमित्ते राजायें कपट करी एक पडहो वजडाव्यो के सिंहनामा राजाने पकडवा सारुं राजा चडे छे, आवो ढंढेरो सांनलीनें विश्वनूती आवी राजानें कहेवा लाग्यो जे हे स्वामी! तमे पोतेज ते बिचारा गरीबडा सिंहराजानी उपर शुं प्रयाण करो छो? तेनें तो हुंज बांधी लावीश एम कही लशकर लइने विश्वनूति, सिंहराजा उपर. चडाइ करी गयो, पाछलथी राजायें विश्वनूतीना अंतःपुरनें राजवाडीमांथी काहाडीनें विशाखानंदीनें वाडी सोंपी दीधी, एम करतां केटलाएक दिवसें विश्वनूती पण सिंहराजानें पकडी लावीनें राजाने आवी सोंप्यो तेवारें तेनो लोको घणो यशवाद बोलवा लागा, हवे फरी विश्वनूती पूर्वनी पेठें पोतानी स्त्रीयोनें साथें लइ रमवासारुं राजवाडीयें गयो तिहां दरवाजा उपर विशाखानंदीना सुनट बेठा हता ते बोल्या के इहां विशाखानंदी पोतानी स्त्रीयो साथें रमण करे छे माटे बीजा कोइनें

आववानो हुकुम नथी, राजायें वाडी एनें दीधी छे. ते सांजली विश्वजूतियें जाएयुं जे राजायें महारी सार्थे कपट कीधुंछे माटे धिक्कार पडो आ संसारनें एम विचारी विरक्त थयो पछी मात्र पोतानुं बल देखाडवा सारुं ते वाडीना दरवाजा पासें एक कोंठनुं जाड हतुं तेने एक मूठी मारी तेथी ते वृक्षना बधांये कोंठ जमीन उपर पडीगयां पछी विश्वजूती बोल्यो के जेटलो वखत आ कोंठनें जमीन उपर पाडतां लागो तेटलोज वखत शत्रुउनें मारतां लागे परंतु लोको अपवाद बोले तेनी बीकथी ए काम हुं करतो नथी एवुं कहीनें संजूतिविजय मुनिनी पासे दीक्षा लइ मासक्षपणादि घणुंज तप कर्युं, एक दिवसें ते विश्वजूति मुनि विहार करतो करतो मथुरा नगरीमां आव्यो तिहां मासखमणनुं पारणुं करवा सारुं गोचरीनें अर्थे गलीयें फरतां थकां कोइएक नवी प्रसूता गाय हती तेणे ढींक मारी तेथी साधु जूमिकायें पडी गयो ए अवसरमां एना काकानो दीकरो विशाखानंदी तेपण पोतानें सासरें एज गाममां आवेलो छे तेणे गोखमां बेठां थकां विश्वजूतिने जमीन उपर पडतो जोयो तेवारें हास्य पूर्वक बोल्यो के हे विश्वजूति! जे बल पराक्रमथी तें एक मुष्टीयें करी सर्व कोंठ पाडी नाख्यां हतां ते तारुं बल सर्वे क्यां जतुं रह्युं? एवुं वचन सांजलीनें मुनियें उंची दृष्टी करी तेने जोयो त्यारें मनमां अहंकार आणीनें बोल्यो के अरे हजी पण हास्य करे छे, तो जो हवे हमणां पण महारुं बल केटलुं छे एम कही पहेली गायने सींगडे पकडी आकाशें जमाडीनें जूमि उपर मूकी दीधीनें विशाखानंदीने कहेवा लागो के अरे तुंतो जाणे छे जे एनुं बल जतुं रह्युं हशे पण महारुं बल क्यांयें गयुं नथी वली कहेवा लागो के जो महारी तपस्यानुं फल होय तो हुं परजवमां घणो बलवंत थयो थको तुजनें मारवा वालो थाउं एवो नीयाणो करी कोडी वर्ष पर्यंत चारित्रपाली

अंते अनशन करी त्यांथी मरण पामीनें ॥ १६ ॥ सत्तरमे नवें महाकच्छु नामा सातमा देवलोकने विषे सत्तर सागरोपमना पूरण आउखे देवता पणे उपन्यो ॥ १७ ॥ ॥ तिहांथी चवीनें अढारमे नवें पोतनपुर नगरमां प्रजापति नामे राजा तेनी धारणी नामे राणीनी कूखमां चार सुपने सुचित्त एक पुत्र थयो तेनुं नाम अचल दीधुं तथा वली एज प्रजापति नामा राजानी मृगावतीनामे एक पुत्री थइ ते एक दिवसें विवाहनी चिंताने लीधें ते कुमारीनी मातायें तेने शणगारी सुशोभित वस्त्राभूषण पहेरावीनें राजा पासें मोकली अने विचार्युं जे ए महोटी कन्या यौवन वय पामेली देखीने राजा कोइ कुलवान राजकुमारनें परणावी देशे, परंतु राजा तो ते पोतानी सुरूपवाली पुत्रीने आवेली देखीनें कामेकरी पीडीत थयो अने पोतेज पोतानी दीकरीनें परणवानी इच्छा करतो थको लोको अपवाद न करे एटला माटे सनामां बेठेला लोकोनी आगल कहेवा लाग्यो के हे नाइउ! जे लोकनें विषे सारामां सारी चीज होय ते कोनी कहेवाय ? तेवारें सनाजनो बोल्या के जे उत्तम चीज होय ते तमारी कहेवाय, राजा बोल्यो जे तमारा मुखथी जे वचन निकल्युं ते निश्चयथी सत्य छे माटे आ सर्वोत्कृष्ट जें कन्यारत्न छे ते हुं बीजानें आपीश नही. एनें हुं पोतेंज परणीश एम कही ते पोतानी पुत्रीनें पोतेंज परण्यो अने तेनी साथें संसार संबंधि सुख नोगववा लाग्यो एम करतां एक दिवस ते विश्वनूतिनो जीव देवलोकथी चवीनें मृगावतीनी कूखें आवी उपज्यो तेवारें मृगावतीयें सात स्वपनां दीठां पछी पूरण नव महीने पुत्र जन्म्यो तेवारें राजायें महोटो महोत्सव करीनें ते बालकनु नाम त्रिपृष्ट एवुं दीधुं अनुक्रमें ते बालक महोटो थयो एवा अवसरमां शंखपुर नगरनी पासें तुंगी नामा पर्वत छे ते पर्वतनी गुफामां विशाखानंदीनो जीव सिंह पणे आवी उपन्यो

छे ते वखतमां अश्वग्रीव नामे प्रतिवासुदेव हतो तेनुं शालिनुं खेत्र ते पर्वतनी नजीक हतुं ते शालिना खेत्रनो जे रखवालो रहेतो तेने ते सिंह मारी नाखतो हतो तेवारें ते अश्वग्रीव पोताना सेवक राजाउनी उपर वर्षोवर्ष वारा प्रमाणे हुकुम लखी खेत्रनी चोकी करवा मोकलतो हतो एम करतां एक वर्षे वारा प्रमाणे ते प्रजापतिराजाने चोकी करवानो हुकुम आव्यो ते वारें ते खेत्रनी रखवाल करवा सारुं राजायें पोतें जावा मांड्युं तेने त्रिपृष्ठें वारी राख्यो अने पोते पोतानो अचल नामे नाइ जे गौतमस्वामीना जीव छे अने आ नवमां बलदेव थाशे ते सहित खेत्रनी रखवाल करवा गयो, तिहां बख्तर टोप पहेरी रथमां बेशी अचलनें सारथी करी शस्त्र लइनें जे गुफामां सिंह रहे छे त्यां गयो एटलामां तो रथनो अवाज सांजलीनें सिंह पण गुफाथी बाहेर आव्यो तेनें देखीने त्रिपृष्ठें विचार्युं जे ए सिंहने बेसवा रथ नथी तो म्हारे पण रथमां बेसी लडवुं नही वली एनी पासें शस्त्र तथा कवच नथी तो म्हारे पण शस्त्र तथा कवच नही राखवां पछी शस्त्र तथा कवचनें रथमां मूकी पोते रथथी हेठो उतरी सिंहने कहेवा लाग्यो के अरे ढांढीना खावा वाला उठी उनो थइने म्हारी सामो आवीजा एटलुं कह्युं के तरत ते सिंह पण उठ्यो अने मुख फाडी साह्मो लडवा आव्यो के तरतज त्रिपृष्ठें ते सिंहना होठ पकडी बे कटका करी चीरी नाख्यो, तो पण ते सिंहनो जीव जाय नही, तेवारें त्रिपृष्ठनो सारथी सिंहनें कहेवा लाग्यो के हे सिंह ! जेम तुं मृगराज छो तेम आ ताहारो मारनार पण नरराज छे माटे तनें कोइ साधारण माणसें मार्यो नथी एवी वात सांजली सिंह मरण पामीनें नरकें गयो पछी ते सिंहनुं कलेवर लइ गाममां आवी लोकोनी वचमां कलेवर नाखीनें त्रिपृष्ठ बोलवा

लागो के आ उपद्रव करनार सिंहने हुं मारी आव्यो छुं माटे हवे महारा प्रतापथी अश्वग्रीव प्रतिवासुदेव सुख.समाधिथी चावल खाउ ए वात लोकोना मुखथी सांजलीनें अश्वग्रीवने महा क्रोध उपन्यो तेथी पोतानी सेना लइने लडवा आव्यो ते त्रिपृष्ठ सायें युद्ध करतां कोइ पण रीतें पोहोची शक्यो नही तेवारें चक्र फेरवीने तेना उपर नाख्युं ते चक्र पण त्रिपृष्ठना हाथमां आवी बेठुं पछी तेज चक्र त्रिपृष्ठें अश्वग्रीव उपर चलाव्युं तेणे जइ अश्वग्रीवनुं मस्तक छेदी लावीनें त्रिपृष्ठ आगल हाजर कर्युं ते जोइ देवो आकाश उपर रही जय जय शब्द कही बोल्या के आ जरतखेत्रमां ए त्रिपृष्ठ पहेलो वासुदेव थयो पछी ते त्रिपृष्ठ अनुक्रमें त्रण खंड साधीने वासुदेवनी राजलीलाना सुख जोगवतां थकां एक दिवस नाटक थातुं हतुं तेवामां राजाने निद्रा आववा लागी तेवारें शय्यापालकनें कह्युं के मने निद्रा आवी जाय तेवारें ए नाटक करनाराउने शीख आपी वारी राखजो तो पण तें शय्यापालकें श्रोत्रेंद्रियना रसें करी तेमनें गीत गान करतां वारी राख्या नही एटलामां त्रिपृष्ठ जागृत थइनें बोल्यो के अरे आ नाटकीआनें शा वास्तें रजा आपी नही तेवारें, शय्यापालकें कह्युं के हे प्रज्ञु ! श्रोत्रेंद्रियना रसें करी हुं रजा आपतां चूकी गयो ते.सांजली त्रिपृष्ठनें क्रोध चड्यों पछी सीशुं गरम करी तेनो उनो उनो रस ते शय्यापालकना कानमां रेडाव्यो तेथी ते मरण पामीनें नरकें गयो एरीते ते वासुदेवना जवमां घणा महोटां पापोपार्ज्जन करी चोराशी लाख वर्षनुं आयुष्य जोगवीनें एंशी धनुष प्रमाणना शरीरनो त्याग करी मरण पामीनें ॥ १८ ॥ ॥ उंगणीशमे जवें सातमा नरकने विषे नारकी पणे जइ ऊपन्यो ॥ १९ ॥ ॥ त्यांथी मरण पामीने वीशमे जवें सिंह थयो ॥२०॥ तिहांथी मरण पामीने एकवीशमे जवें चोथा नरकने विषे नारकी पणे


चित्र ४
त्रिपृष्ट वासुदेव
दासी
शय्यापालक
विणा मृदंग
बजावनार

जइ उपन्यो ॥ २१ ॥ त्यांथी मरण पामी घणुं संसार भ्रमण करी बावीशमे भवें रथपुर नगरें प्रियमित्र नामें राजानी विमला नामे राणी तेनी कूखने विषे पुत्र पणे उपन्यो मा वित्रें विमल एवुं नाम दीधुं अनुक्रमे सर्व कलानो पारगामी थयो पितायें तेने राज्य सोप्युं एक दिवस वनमां क्रीडा करवा गयो त्यां पाश मांहेथी हरण छोडाव्यां तिहां दयाना प्रभावे भद्रक परिणामें करी मनुष्यायु बांध्युं, छेवटे दीक्षा लइ उग्र तपश्चर्या करी, चक्रवर्त्तीनी पदवी उपार्जी अंते एक मासनुं अनशन करी त्यांथी चवीनें ॥ २२ ॥ त्रेवीशमे भवें पश्चिम महाविदेहमां मूका नगरीनो धनंजय नामे राजा तेनी धारणी नामें राणीनी कूखे आवी उपन्यो मातायें चौद स्वपनां दीठां पछी पूरण मासे पुत्र जन्म्यो तेवारें मातपितायें महोटा महोत्सव पूर्वक तेनुं प्रियमित्र एवुं नाम दीधुं ते अनुक्रमें छ खंड साधी चक्रवर्त्तीनी पदवी भोगवी अंते श्रीपोटिलाचार्य पासेथी दीक्षा लइ क्रोड वर्ष पर्यंत चारित्र पालि सर्व चोराशी लाख पूर्वनुं आयु पूरण करी त्यांथी मरण पामी ॥ २३ ॥ चोवीशमे भवें शुक्र नामा सातमें देवलोकें सत्तर सागरोपमने आयुखे देवता पणे उपन्यो ॥ २४ ॥ त्यांथी चवी पच्चीशमे भवें एहज भरतखेत्रमां छत्रिका नामे नगरीनो जितशत्रु नामे राजा तेनी भद्रा नामे राणीनी कूखने विषे पचीश लाख वर्षने आयुखे नंदन नामे राजपुत्र थयो त्यां चोवीश लाख वर्ष सुधी गृहस्थावासें रहीने पछी पोटिलाचार्य पासेंथी दीक्षा लइ एक लाख वर्ष पर्यंत दीक्षा पाली जावज्जीव सुधी मास खमणे करी वीशस्थानकनुं तप आराध्युं तेथी तीर्थंकर नामकर्म निकाचित उपार्ज्जी अंते एक मासनुं अनशन करी त्यांथी काल करीनें ॥ २५ ॥ छवीशमे भवें दशमा प्राणात देवलोकने विषे पुष्पोत्तरावतंसक नामना विमानमां वीश सागरोपमनें आ

उखे देवता पणे उपन्या ॥ २६ ॥ पछी त्यांथी चवीने मरीचिना भवमां जे कुलनो मद कर्यो हतो ते नीचगोत्रकर्मना उदयथी सत्तावीशमा भवने विषे ऋषभदत्त ब्राह्मणनी देवानंदा नामे स्त्रीनी कूखे आवी उपन्या छे एरीतें प्रथम तीर्थंकर श्रीऋषभदेव भगवानें भरत चक्रवर्तीनी आगल कह्युं हतुं जे मरीचिनो जीव तीर्थंकर थाशे ते निश्चयथी थयो ॥ २७ ॥ ॥ हवे भगवान् श्रीमहावीर देवानंदानी कूखें अवतर्या ते समयने विषे त्रण ज्ञान सहित गर्भपणे आव्या त्यां हुं देवलोकथी चवीश एवुं जाणे पण चववाना वखतनो जे वर्त्तमान एक समय सूक्ष्म काल छे माटे ते न जाणे अने त्यांथी चव्या पछी हुं देवलोकथी चवीनें देवानंदानी कूखे उपन्यो छुं एवुं जाणे हवे जे रात्रिमां श्रमणभगवान् श्रीमहावीर स्वामी देवानंदा ब्राह्मणीनी कूखे उपन्या ते रात्रिमां देवानंदा ब्राह्मणी सुखशय्यामां कांइक सूती कांइक जागती अर्थात् थोडीक निद्रामां रही थकी, उदार कल्याणकारी, उपद्रव रहित, धनकारी, मंगलकारि शोभा सहित एवां चौद महोटां स्वपनां देखीनें जागी ॥ ते चौद स्वपनानां नाम कहे छे पहेले स्वपने हाथी दीठो, बीजे वृषभ, त्रीजे सिंह, चोथे लक्ष्मी, पांचमें फूलनी माला, छठे चंद्र, सातमें सूर्य, आठमें ध्वजा, नवमें कुंभ कलश, दशमें पद्म सरोवर, अगीआरमें क्षीर समुद्र, बारमें देवविमान, तेरमें रत्नो नो ढगलो राशि, चौदमें निर्धूम अग्नि ए चौद स्वपनां एवा रूपनां कल्याणकारी महामंगलनां करनारां देखीनें जागी थकी हर्ष संतोष पामी, चित्तमां आनंद पामी, महोटा प्रेम सहित मन थयुं, परमहर्ष उपन्यो, हर्षने विषे पसरतुं छे मन जेनुं, उत्कृष्ट सौम्य मन छे जेनुं, जेनां मनमां हर्ष उल्लास थयो छे, मेघनी धारायें करी हणाएं एवुं कंदब पुष्प जेम विकस्वर थाय तेम जेनां रोमे रोम विकस्वर थयां छे एवी थइ थकी पूर्वें दीठेला स्वपनांने याद करे


चित्र ५
देवानंदा
ब्राह्मणी
दासी
ऋषभदत्त ब्राह्मण
देवानंदा
दासी

याद करीनें सूवाना पलंग उपरथी उठे उठीनें पादपीठ थकी पण उतरे उतरीनें नही उता वली, नही धीरी, एवी बे गतिनी वचमां ठहेरती थकी ॥५॥ राजहंसीनी गति सरखी चाल ती थकी जिहां रुषनदत्त ब्राह्मण छे त्यां आवती हवी, आवीनें रुषनदत्त ब्राह्मण प्रत्यें जय विजय शब्द करीनें वधावे वधावीनें नद्रासन एटले बाजोट उपर बेठी, त्यां मार्गमां आववानो खेद मटावाने, परसेवो उपशमावीने, बे हाथ जोडी दश नख एकठा करी मस्तकें अंजली करीनें कहेवा लागी के हे स्वामि! में आज रात्रें शय्यामां कांइक सूतां हस्ति आदिक चौद सुपनां दीठां ॥ ६ ॥ तेनुं शुं फल थशे, कया प्रकारना कल्याणने करनारां थशे तेवारें रुषन दत्त ब्राह्मण देवानंदाना मुखथी एवुं सांनलीनें पोताना ह्दयामां घणो खुशी थयो,जेवां पाणी नी धाराथी कदंब पुष्प खुल्ले तेवी तेनी रोमराजि प्रफुल्लित थई ते सुपनोना अर्थ विचारवा लाग्यो विचारीनें देवानंदा ब्राह्मणीने कहे उदारकारी हे देवाणुप्रिया! तमे जे सुपनां दीठां ते मं गलकारी छे, तमे जे सुपनां दीठां तेनुं फल एवुं छे के हे देवाणुप्रिया! धननो लान थाशे, पुत्रनो लान थाशे, सुखनो लान थाशे, निश्चे तमारे नव महीनाने साडा सात दिवस गया के सुकुमार छे हाथ पग जेना, हीन अंग रहित, संपूर्ण पांचइंद्रिय सहित शरीर जेनुं छे, लक्षण, व्यंजन, अने गुणेकरी सहित तथा मानोन्माने करी सहित संपूर्ण नलुं शरीर जेनुं छे एवो पुत्र थाशे. हवे लक्षण कोने कहीये ते कहे छे, जे पुरुषनो ज्यारे जन्म थाय त्यारें तेना अंगमां पुण्यनी रेखा प्रमुख पडे तेने लक्षण कहीयें ॥ सहजं लक्षणं इति वचनात्॥ तिहां चक्रवर्त्ती तथा तीर्थंकरोने तो एक हजारने आठ लक्षण होयं अने बलदेव तथा वासुदेवनें एकसोने आठ लक्षण होय तथा बीजा सामा न्य नाग्यवंत पुरुषोने बत्रीश लक्षण होय तेनां नाम कहेछे १ छत्र, २ वींजणो, ३ धनुष,

४ रथ, ५ वज्र ६ काचबो, ७ अंकुश, ८ वावडी. ९ स्वस्तिक १० तोरण, ११ तलाव, १२ सिंह, १३ वृक्ष, १४ चक्र, १५ शंख, १६ हाथी, १७ समुद्र, १८ कलश, १९ प्रासाद, २० मत्स्य, २१ यव, २२ यूप यज्ञनुंअंग, २३ थांजलो, २४ कमंडल, २५ पर्वत, २६ चामर २७ काच, २८ बलद, २९ पताका ३० लक्ष्मी, ३१ माला, ३२ मयूर ए बत्रीश लक्षण पूर्वकृत पुण्यनां योगवाला पुरुषना हाथ पगना तलीयानें विषे होय ए आदि देइनें एक हजारने आठ लक्षण पण एवाज उत्तम प्रकारनां जाणी लेवां तथा वली प्रकारांतरें बत्रीश लक्षण कहे छे. जेना नख, पग, हाथ, जीभ, होठ, तालु अने आंख्योना खूणा ए सात वानां रक्त होय सारां होय ते पुरुष भाग्यवान जाणवो ते सप्तांग लक्ष्मी भोगवे तथा जेनी काख, छाती, कोट एटले गलानी हडबटी तथा गलानो मण्यो, नाक, नख अने मुख ए छ वानां उचां होय तो ते पुरुष सर्व प्रकारें उन्नति पामे. तथा दांत, चामडी, केश, आंगुलीना पर्व एटले आंगलीनी रेखा अने नख ए पांच जेनां पातलां होय सूक्ष्म होय तो ते पुरुष घणो धनवान् थाय तथा नेत्र, स्तननां अंतर, नाक, गलानो मण्यो अने भुजाउ ए पांच जेना लांबा होय ते पुरुषनुं आयुष्य महोटुं होय घणुं धन पामे अनें पराक्रमी होय तथा ललाट, पेट अने मुख ए त्रण जेनां महोटां होय तो ते पुरुष राजा थाय तथा वली ग्रीवा, जंघा अने पुरुष चिन्ह, ए त्रण जेनां लघु होय टुंका होय तो ते पुरुष राजा थाय तथा बोलवानो स्वर, मूटी एटले नाभी अने सत्व ए त्रण जेना गंभीर होय ते पुरुष पृथ्वीनो धणी थाय अथवा प्रधान थाय एम जे पुरुषमां जेवां लक्षणहोय ते पुरुषमां तेवो आचार पण होय, जेवुं रूप होय तेवुं धन पण होय, जेवो स्वभाव होय तेवो गुण पण होय ए प्रकारांतरें बत्रीश लक्षण कही देखाड्यां तथा बीजां पण केटलांएक लक्षण कहे छे. पद्म, वज्र अंकुश, छत्र, शंख

अने मत्स्य ए जेना हाथ पगमां देखाय ते पुरुष लक्ष्मीपति थाय तथा जेना चीकणा त्रांबाना वर्ण
जेवा नख होय ते पुरुष सुखी होय तथा जेना चलकता उज्वल अनारवत् स्नेह निविड एवां बत्रीश
दांत पूरेपूरा होय ते राजा थाय अने जेना एकत्रीश दांत होय ते जोगी थाय तथा त्रीश दांत
वालो मध्यम कहेवाय अने त्रीशथी पण उंछा दांत जेना होय ते सामान्य पुरुष गणाय
जे पुरुष अत्यंत वींगणो तथा अत्यंत सीधो तथा अत्यंत जाडो होय तेमज जे अत्यंत दुर्बल,
अत्यंत कालो अथवा अत्यंत गौर वर्ण वालो होय ए छ ने विषे सत्व पणुं होय, जेना मस्त
कने जमणे जागे सवलो जमरो होय तो शुभ जाणवो अने अवलो जमरो होय तो अशुभ जाणवो
॥ ॥ तथा जेना हाथने विषे एक पण रेखा नहोय अथवा घणी रेखाउ होय ते पुरुषनुं
आयुष्य अल्प होय तथा जेनें देवपूजानी आंगुलीनां छहेला वेढाथी अधिक कांइक उंची टचली
आंगुली होय ते पुरुष धनवान् होय तथा तेनी मातानो पक्ष घणो होय तथा जेना मणीबंधथी
बापनी रेखा तथा करतलथी वित्तनी रेखा अने आयुखानी रेखा जेनी संपूर्ण होय ते पुरुषनुं
गोत्र, धन तथा आयुखुं संपूर्ण होय अथवा आयुषनी रेखा जेटली आंगुली अतिक्रमे तेटली
पचवीशी आयुखाना वरसनी जाणवी तथा जेना अंगुठाने मध्यजागें यव होय ते पुरुष विद्या
वंत यशस्वी होय अने अजवाला पक्षमां तेनो जन्म होय तथा जेनां नेत्र रक्त होय तेनुं पासुं
स्त्री मूके नही तथा जेना नेत्र पीलां होय तेने धन मूके नही तथा जेनी भुजा दीर्घ होय
तेने ईश्वर पणुं होय तथा जेनुं दृढ शरीर होय तेने सुख घणुं होय तथा जेना हाथ पगने विषे
कमल, छत्र, अंकुश, शंख, मत्स्य प्रमुख होय ते पुरुष महोटा लक्षणवालो होय तथा जेना
नख राता होय तेने धननुं सुख घणुं होय तथा जेना नख उजला होय ते भिक्षुक होय तथा

जेनां नख लुखा होय ते अनाचारी होय ॥ ॥ वली शरीर मांहे मुख प्रधान छे ते मुखमां वली नासिका छे ते प्रधान छे वली नासिकामां नेत्र छे ते प्रधान छे माटे जेना जेवां नेत्र होय तेनो तेवो शील एटले अचार पण होय तथा जेवी नासिका तेहवुं आर्य पणुं होय, जेवुं रूप होय तेवुं वित्त होय, जेवुं शीयल होय तेवा गुण होय उक्तंच ॥ यथानेत्रं तथा शीलं, यथानासा तथार्जवं ॥ यथारूपं तथा वित्तं, यथाशीलं तथा गुणाः ॥ पाठांतरें ॥ सर्वसत्त्वे प्रतिष्ठितं ॥ १ ॥ इत्यादिक लक्षण जाणी लेवां ए लक्षण कह्यां ॥ ॥ हवे व्यंजननुं स्वरूप कहे छे. जे जन्म्या पछी अंगमां प्रगट थाय तेने व्यंजन कहीयें जेमके मसो, तिल अने लसण इत्यादिक सर्व व्यंजन जाणवां ते पुरुषनें जमणी बाजुयें होय तो सारां जाणवां अने स्त्रीनें डाबी बाजुयें होय तो सारां जाणवां ॥ ॥ हवे गुणनुं स्वरूप कहे छे. जेमां सौभाग्य पणुं, उदार पणुं अने धैर्यपणुं इत्यादिक होय ते सर्व गुण जाणवा ॥ ॥ हवे मानोन्माननुं स्वरूप कहे छे. पुरुष प्रमाणे पाणीथी भरेली कुंडीमां पच्चीश वर्षनां पुरुषनें बेसाडवो पछी ते पुरुषना बेसवा थकी जो एक द्रोण भार पाणी कुंडीमांथी बाहेर नीकले तो ते पुरुष मानोपेत एटले प्रमाण सहित जाणवो अने जो त्राजवामां तोलतां ते पुरुषनो अर्द्ध भार प्रमाण तोल थाय तो ते उन्मानोपेत पुरुष जाणवो ॥ ॥ इहां तोलनी वार्त्ताना प्रसंगमां भारनुं प्रमाण कही देखाडे छे प्रथम छ सरसवे करी एक यव थाय, त्रण यवे एक चिणोठी थाय, त्रण चिणोठीये एक वाल थाय तेवा शोल वाले एक गदीयाणुं थाय तेवा दश गदीयाणे एक पल थाय तेवा दोढसो पलनो एक मण थाय तेवा दशमणनी एक घडी थाय तेवी दश घडीयें एक भार प्रमाण थाय एवा अर्द्धभारे तोलाय ते पुरुष उन्मानोपेत मान रहित जाणवो एरीते पोणा चार मण उन्मानना थाय छे

॥ वळी जे पुरुषनुं पोताने आंगळे नरतां पोतानुं शरीर एकसोनें आठ आंगळनुं होय ते ऊ त्तम पुरुष जाणवो तेमां बार आंगळनुं मुख होय तेने नवे गुणीये तेवारे १०० थाय ते मानो पेत पुरुष जाणवो तथा जेनुं छन्नुं अंगुळनुं शरीर होय ते मध्यम सम पुरुष जाणवो, जेनुं चो राशी आंगुळनुं शरीर होय ते हीन पुरुष जाणवो अने श्रीतीर्थंकरनुं तो एकसो वीश आंगुळ नुं शरीर होय केमके तीर्थंकरने माथे बार आंगुळनी ऊष्णीष राखडीने ठामे होय तेमाटें एवो सर्व अंगे सुंदर, चंद्रमा समान सौम्य आकार वाळो, जेनुं मनोहर प्रीतिकारी दर्शन छे एवा सुरूपवंत देवकुमारसमान पुत्रने तुं जणीश ॥ए॥ ॥ ते पण बाळक बाल्यावस्था रहित थाशे तेवारे ते पोताना विज्ञान नावथीज थाशे ते केवो थाशे ते कहे छे एटलें ते पुत्र युवान अव स्था पामे थके रुग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद ए चार वेद तथा पांचमो इतिहास पुराण शास्त्र, छठो नाम कोश निघंटनाम माळा ए सर्व छ ए शास्त्र ने अंग ऊपांग सहित तेना तात्प र्यनो जाणवा वाळो थाशे, चार वेदनो नणाववा वाळो थशे, जे नूलशे तेने बताववा वाळो नूल देखाडवा वाळो थशे, जूतुं बोलशे तेने वर्जवा वाळो थशे, शुद्धनो धारण करनारो थशे पारगामी थशे, छ अंगनो जाण थाशे, साठ अर्थ छे जिहां एवा साठ तंत्र शास्त्र तथा कपि लशास्त्रनो जाणनार थशे, गणित शास्त्रनो जाणनार थशे, अक्षर शिक्षामां निपुण थशे, क्रिया शास्त्रमां निपुण, व्याकरणनो जाणनार, छंद जोडवामां दक्ष, टीकानो जाण नार, ज्योतिष शास्त्रमां प्रवीण एम बीजा पण ब्राह्मणोनां शास्त्रोमां परिव्राजकोनां शास्त्रोमां अत्यंत निपुण मह्यो एवो ताहारो पुत्र थाशे ॥१०॥ तेमाटें तमे रूडा स्वपनां दीठां, जावत् आरोग्य कारी स्वपनां तमनें आव्यां एवुं वारंवार केहेतो हवो अने पोते पण अनुमोदना

करतो हवो ॥ ११ ॥ हवे देवानंदा ब्राह्मणी रूषनदत्त ब्राह्मणनां मुखथी एवा अर्थ सांन लीनें, तेने मनमां धारी राखीनें, हर्ष संतोषयुक्त हृदय वाली थइ थकी हाथ जोडी, दश नख नेला करी मस्तकें चडावी कहेती हवी ॥ १२ ॥ जे ए वात जेम तमे कही तेमज छे, हे देवाणुप्रिय ! ए सत्यज छे खोटी नथी, हे देवाणुप्रिय ! जे तमे कहो गो ते सर्व संदेह रहित छे एवुं कहीने ते स्वपनां रूडा प्रकारें अंगीकार करीनें रूषनदत्त ब्राह्मणनी साथे मनोहर मनुष्य संबंधि सुख नोगवती थकी विचरे छे ॥ १३ ॥ ते कालनें विषे शक्रेंद्र देवताउनो राजा जेना हाथमां दैत्योने विदारण करनारुं वज्र छे जेणे पूर्वना नवमां श्रावकनी पांचमी प्रतिमा सो वार वहन करी तेणे करी शतक्रतु एवुं बीजुं नाम ते पूर्वना कार्त्तिकशेठना नवनी अपेक्षाथी छे ते कार्त्तिक शेठनी कथा कहीयें छैयें. पृथ्वीनूषण नामे नगरने विषे प्रजापाल नामे राजा हतो ते नगरमां राजानो घणो मानितो अने घणो धनाढ्य जैनधर्मी, परम श्रावक एवो कार्त्तिक नामा शेठ रहेतो हतो तेणे श्रावकनी अगीआर प्रतिमा माहेली पांचमी प्रतिमा सोवार वही तेनुं तेथी शतक्रतु एवुं नाम लोकोमां प्रसिद्ध थयुं एम करतां एक समये गैरिक नामा तापस महिने महिने पारणुं करे छे ते परिव्राजकें नगरनी बाहेर आवी उतारो कर्यो तेने राजा आदिक सर्व लोक वांदवा गया पण एक कार्त्तिकशेठ शुद्ध समकेति छे माटे वांदवा गयो नही तेथी तेना उपर तापस क्रोध करवा लागो एवामां ते तापसने राजायें पोतानें घेर जमवानें नोतरुं दीधुं तेवारें तापसें मनमां विचार्युं जे बीजातो सर्व लोक मने वांदवा आव्या पण एक कार्त्तिक शेठ जैनधर्मी छे ते मने पगे लाग्यो नथी माटे हवें तेने नमावुं एम चिंतवी राजाने कहेवा लाग्यो जे हे राजन् ! कार्त्तिक शेठ पोतानी पीठ उपर खीरनी थाली राखीनें नोजन करावे तो हुं तमारे घेर जमवा आवुं


चित्र ६
राजा
गैरिक तापस
कार्तिक शेठ
राजसभा.

ए वात राजायें कबुल करी तापसने पारणुं करवानुं कहीने पछी राजा कार्तिकशेठ पासें आ
वीनें कहेवा लाग्यो जे म्हारो गुरु गैरिकनामे तापस म्हारे घेर जमवा आवशे तेंनें तमे
पीरसवा आवजो ते सांजली शेठ बोल्यो के हुं सम्यक्त्व धारी छुं माटे म्हारे ए वात योग्य
नथी पण तमारी वस्तिमां रहुंछुं माटे शास्त्रमां "रायाभिओगेणं" ए आगार छे ते आगारें करी
ताहारी आज्ञाथी जमाडीश परंतु म्हारा भक्तिभावें करी जमाडीश नही पछी तापस जमवा
आव्यो तेवारें शेठें खीर पीरसी, पण तामस जम्यो नही अने कहेवा लाग्यो जे शेठ वांसो
मांडे तो पात्र मूकी भोजन करुं पछी राजाना कहेवाथी शेठें आडो थइ वांसो मांड्यो शेठना
हाथनी अंगुलीमां वींटी पेहेरी हती तेमां जिनप्रतिमा हति तेने नमस्कार कर्यो हवे तापस
शेठनी पीठ उपर उनो उनो खीरनुं पात्र मूकी भोजन करतो जाय छे अने आंगुलीयें करी शे
ठनुं नाक पण घसतो जाय छे ने शेठनें चेष्टामां कहेतो जाय छे के जो मुजने पगें लागवा न
आव्यो तो हुं आ ताहारुं नाक कापुं छुं अने हमणा वारंवार तुजने म्हारा आगल नमावुं छुं
एम चेष्टा करतो तापस पारणुं करीने पोताने स्थानकें गयो अने पाछलथी गरम थाल शेठनी
चामडीमां मली गयो ते घणे कष्टें राजायें छोडाव्यो ए कृत जोइ शेठें विचार्युं के जो में
पहेलांज दीक्षा लीधी हत तो आज एवी हेलना थात नही एवुं चिंतवी वैराग्य पामीनें शेठ
एक हजारनें आठ वणिक पुत्रोनी साथें श्रीमुनिसुव्रत स्वामीनी पासेंथी दीक्षा लइ द्वादशांगी
भणी, बार वर्ष चारित्र पाली सौधर्मेंद्र थया अने गैरिक तापस पण अज्ञान तप करी मरण
पामीने इंद्रनुं वाहन ऐरावत नामा हाथी थयो पछी ते देव हाथीनुं रूप करी इंद्रनी पासे
आव्यो जेवारें इंद्र तेना उपर चडवा लाग्यो तेवारें ऐरावते देखीने अवधिज्ञाने करी जाण्युं

के अरे एतो कार्त्तिक शेठ छे एवुं जाणी नासवा मांड्यो पण इंद्र तेने पकडीने उपर चड्यो तेवारें शक्रेंद्रने बीवरावबा सारुं हाथीयें बे रूप कस्यां ते देखी इंद्रे पण बे रूप कस्यां वली हाथीयें चार रूप कस्यां त्यारें इंद्रें पण चार रूप कस्यां पछी इंद्रें अवधिज्ञानें पूर्वनो नव जोइ हाथीनें तर्जना करी चलाव्या अने कह्युं के अरे गैरिक हवे तुं क्यां छूटी जाइश तुं पूर्वनो नव जाणतो नथी? जे महारी पीठ उपर थाल राखी जम्यो हतो? तो हमणा तुं महारुं वाहन थयो छो माटे जे बांध्या कर्म ते जोगव्या विना छूटको नथी एवुं सांजली, अपराध खमावी मूलगुं रूप धारण करीनें हाथी शांत थयो ए इंद्रमहाराजना पूर्वला नव संबंधि कार्त्तिक शेठनी कथा कही॥ ॥ वली ते शक्रेंद्रनी सभावें तो बे आंख्यो छे परंतु पांचशे देव ते इंद्रना काम करवा वाला छे ते पांचसो देवोनी हजार आंख्यो एना काममां आवे माटे सहस्राक्ष एवुं नाम छे तथा महामेघ जेने वशमां छे माटे मघवा एवुं नाम छे तथा पाक नामा दैत्यने शिक्षा दीधी माटे पाकशासन एवुं नाम छे एवो शक्रेंद्र दक्षिणार्द्ध लोकनो ठाकुर, स्वामी, ऐरावत जेनुं वाहन छे, सुरनो इंद्र, बत्रीश लाख विमाननो मालेक, रजरहित स्वछ निर्मल एवा वस्त्रनो धारण करनारो, लंबायमान माला मुकुटमां नवा सुवर्णना कुंमल तेणें करी घसीजता एवा गाल छे जेना, वली महोटी रुद्धि, महोटी कांति, महोटुं बल, महोटो जश, महोटुं माहात्म्य, महोटुं सुख, लांबी पुष्पोनी माला धारण करवाथी देदीप्यमान छे शरीर जेनुं एवो इंद्र ते सौधर्म देवलोकमां, सौधर्मावतंसक विमानमां, सौधर्म नामे सजाने विषे, शक्र नामा सिंहासन उपर बेठो थको, बत्रीश लाख विमानोमां वसनारा देवो, चोराशी लाख सामानिक देवो, तेत्रीश त्रायत्रिंसक गुरु स्थानीया देवो तथा सोम, यम, वरुण अने कुबेर ए चार लोकपाल देवो, आठ अग्रमहीषी ते शोलहजार

देवीना परिवार सहित, त्रण परषदा, सात कटक, सात कटकना स्वामी, प्रत्येके एकेकी दिशा मां चोराशी चोराशी हजार करतां चार दिशामां मली त्रणलाखनें छत्रीश हजार आत्म रक्षा कारी देवो तथा बीजा पण घणा सौधर्म देवलोकना वसवा वाला एवा देव तथा देवीउं तेमनी ऊपर रक्षाकारी पणुं, अग्रेसर पणुं, नायक पणुं, पोषक पणुं, सर्वमां महोटाइपणुं, सर्वने पोतानी आज्ञा मनावतो थको, सेनापति पणुं करतो थको, पोतें पालतो थको तथा महोटा स्वरसहित नाटक, गीत, वाजित्र वीणा, करताल अने बीजा पण घणा वाजित्र जेवा के मृदंग पडह प्रमुख वाजाउंना शब्द तेणे करी सहित दिव्य देव संबंधि जोग जोगवतो थकों विचरे छे ॥ १४ ॥ ॥ एवा समयने विषे आ प्रत्यक्ष जंबूद्वीप नामा द्वीपने विस्तीर्ण एवो महोटो अ विधिज्ञान तेणे करी देखतो थको विचरे छे ते कालनें विषे ते समयने विषे श्रमण जगवंत श्रीम हावीर स्वामीने रुषजदत्तनामा ब्राह्मण कोमालगोत्रनो धणी तेनी देवानंदानामें जार्या जालंधर गोत्रनी तेनी कूखनें विषे गर्ज पणे उपन्या देखीनें मनमां घणो आनंद पाम्यो, रुदयमां घणो हर्ष पसस्यो, मेघ धारायें हणाणुं एवुं कदंब वृक्षनुं फूल तेनी पेरे रोमांच विकस्वर थयां, प्रधान क मलनी पेरे नयन अने वदन प्रफुल्लित थयां, जगवंतनुं अवतरवुं देखीनें तेना दर्शनथी उत्पन्न थयो जे हर्ष तेना वश थकी प्रकर्षें करी चलायमान थया छे प्रधान कडां, कंकण, बेरखा बाजुबंध, मुकुट, कुंमल, हार अने महोटां घरेणां जुमखां प्रमुख जेनां एवो इंद्र ते तत्काल सिंहासनथी उठी उजो थइनें चलकतो मणिरत्ननो बाजोट ते उपरथी उतरीनें जला वैडुर्यरत्न मरकतरत्न, अरिष्टरत्न, अंजनरत्न, तेणेकरीनें निपुण कारीगरे घडेली देदीप्यमान मणिरत्ने ज डेली एवी पावडी (चांखडी) पगथकी उतारी पछी अखंम वस्त्रनो एगसाडी उत्तरासंग क

रीनें बे हाथ जोडीने तीर्थंकर श्री महावीर देवने साहामो सात आठ पगलां जइ पोताना विमानमांहे बेठो थको माबो ढींचण उंचो राखी अने जमणो ढींचण भूमिकाने विषे थापे थापीनें लगारेक नमीनें त्रण वार मस्तक धरतीयें लगाडे लगाडीने वली चोथीवार लगारेक नमीने थोडो उंचो थइने कडां, कंकण, बेरखा, बाजुबंध, झुमणां तेणे करी सहित थंनाय ली एवी भुजाउने संहरीने वालीने दशनख नेला करी, बे हाथ जोडी मस्तकें अंजली करीनें शक्रस्तवनो पाठ कहेतो हवो ॥ १५ ॥ ॥ तेनो अर्थ आ प्रमाणे छेः— नमस्कारहोजो श्री अरिहंत भगवंत प्रत्यें, आदिनां करवा वाला, चतुर्विध श्रीसंघ रूप तीर्थना करवा वाला, श्री संघने तारवा वाला, बीजाना उपदेश विना पोतानी मेले बोध पाम्या, पुरुषोमांहे उत्तम, पुरुषोमां सिंह समान, पुरुषोमां प्रधान पुंडरीक कमल समान, पुरुषोमां गंधहस्ति समान जेम गंधहस्तिनें देखी बीजा हस्ति नाशि जाय तेम श्रीतीर्थंकर भगवानने देखी परवादी रूप हाथी उ नाशि जाय एवा भगवान, लोक मांहे उत्तम, लोकना नाथ, लोकना हितकरनार, लोकमां दीपक समान, लोकनेविषे उद्योत करनार, अभयदानना दातार, ज्ञान चक्षुना देवा वाला, मोक्षमार्गना दातार, कर्मथी बीक पामनारा जीवोने शरणना दातार, संयम रूप जीवित व्यना दातार, बोधबीज जे सम्यकत्व तेना दातार, सर्व मरणना मटाववा वाला, धर्मना दातार, धर्म उपदेश देवा वाला, धर्मना नायक, धर्ममां सारथी समान जेम सारथी रथने शुद्धमार्गमां लइ जायं तेम भगवान धर्ममार्गथी भ्रष्ट थयेला लोकोने धर्म मार्गमां लइ जाय एना उपर मेघकुमारनुं दृष्टांत कहे छे ॥ तत्रआदौ ॥ श्लोकः॥ पुत्रः श्रेणिकधारिण्योः,श्रुत्वा वीरविभोर्गिरः ॥ प्रबुद्धोष्टौ प्रियास्त्यक्त्वा, मेघोदीक्षामुपाददे ॥ १ ॥ व्याख्याः—राजगृही नगरीने विषे श्रेणिकराजानी धारिणी



चित्र ७
इन्द्र महाराज
सिंहासन उपरथी
उतरीने नमस्कार करेछे.
इन्द्र महाराजनी
सभाना देवो.

नामे राणीनी कूखें मेघकुमार, पुत्रपणे उपन्यो, ते अवसर गर्जना प्रजावें करी राणीने एवो दोहोलो उपन्यो के बर्षाकालमां आपणें राजा, तथा राणी, बेहु जण हाथी उपर बेशीने वनमां जइ क्रीडा करीयें? ते अजयकुमारें पूर्व जव संगति देवतानुं आराधन करीने दोहोलो संपूर्ण कस्यो, पछी नव मासें पुत्रजन्म थयो, तेनो जन्ममहोत्सव करी, स्वजन कुटुंबनें जमाडी मेघकुमार नाम पाडयुं, अनुक्रमें यौवन अवस्था पाम्यो, तेवारें पितायें आठ कन्या परणावी, तेमनी सार्थे विषयसुख जोगवत्तो विचरे छे, एहवा समयमां राजगृही नगरीयें श्रीमहावीर समोसस्था, श्रेणिकादिक सर्वलोक वांदवा गया, तेमनी सार्थे मेघकुमार पण गया, त्यां जगवंतनी देशना सांजली प्रतिबोध पामी, आठ कन्या त्यागी, माता पितानी आज्ञा लेइ दीक्षा लीधी. पछी जगवाने पण ग्रहण, आसेवना, साधुनो आचार शीखववा निमित्तें स्थविरोने जलाव्यो. रात्रियें संथारवानी वेलायें अनुक्रमें सर्व साधुने छेडे मेघकुमार ऋषिनो संथारो आव्यो, तिहां साधु, मात्रुं करवाने उठे, तेवारें मेघकुमारने बारंवार पगनी ठोकर लागे, तेथी एक क्षण वार पण निद्रा न आवी, धूलथी जराइ गयो आखी रात जाग्यो अने विचार कस्यो जे किहां महारी सुखशय्या, अने किहां आ जूमिने विषे लोटवुं, अने वली एक रात्रिमां केटलो उपसर्ग थयो, तो ए कदर्थना हुं केटलाक काल सुधी सहन करुं, माटे ए दीक्षा महाराथी तो पले नही, तो हवे प्रजात समयें जगवंतने पूछी हुं महारे घेर जइश ? हजी कांइ बगडयुं नथी एम विचारी प्रजातें उंघो, मुहपत्ती लइ, जगवंत पासें आव्यो, तेवारें जगवंत पण मीठा वचने बोल्या के हे मेघ ऋषि ! आज रात्रिमां तमाराथी साधुना पग न खमाया, निद्रा न आवी, तेथी मनमां मातुं ध्यान ध्यायुं जे हुं प्रजातमां

घेरजाइश एवात सत्य छे? मेघकुमार बोल्यो हा महाराज! सत्य छे प्रभु बोल्या हे मेघकुमार! ए तमने योग्य नथी जे नणी नरक तिर्यंचनां दुःखो तो जीवें अनंतिवार दीठां छे तेनी आगल आ दुःख, कोण लेखामां गणे? एवो कोण मूर्ख छे जे चक्रवर्त्तीनी ऋद्धि मूकीने दासपणुं वांछे? माटे मरवुं सारुं छे पण चारित्र नंग करवो सारो नथी ए चारित्रनुं ज्ञान सहित कष्ट छे, ते आगल घणां फल देनारुं थाशे तथा जोके तें पूर्व नवें पण धर्मनें अर्थे घणां अकाम कष्ट नोगव्यां छे, ते पण महाफलदायक थयां ते ताहारा पूर्व नव सांनल. आ नवथी त्रीजा नवने विषे वैताढ्य पर्वतनी पासें छ दंतोशल सहित श्वेत वर्णे एक हजार हाथणीनो नायक एवो सुमेरुप्रननामें तुं हस्ती हतो, तिहां एकदा दावानल लागो देखी नय पामीने त्यांथी नाठो तृषायें पीड्यो थको एक सरोवरमां कादव घणो हतो अने पाणी स्वल्प हतुं तेमां हस्तीना मार्गने अजाणतो पाणी पीवाने पेठो, त्यां कर्दममांहे खूतो, पाछो नीकली शक्यो नही एटलामां एक पूर्व नवनो वैरी बीजो हाथी त्यां आव्यो तेणे दंतोशलने प्रहारें करीने तुजने हण्यो, तेथी सात दिवस पर्यंत महा वेदना नोगवी, एकशो वीश वर्षनुं आयु पूर्ण करी मरण पामी विंध्याचल पर्वतनी नूमिकायें तुं चार दंतोशलवालो, रातेवर्णें, सातशें हाथणीनो नायक, मेरुप्रन नामें हस्ती थयो, तिहां पण एक समयें दावानल लागो देखी जाति स्मरण ऊपन्युं, तेथी पूर्वनव दीठो, पछी दावानलनो नय टालवासारुं चार गाउ लगें नूमिकानुं मांडलुं बनावी शुद्ध कीधुं; तेमां तृणवेलि मात्र राखतो हतो नही ऊगतां पहेलांज ऊन्मूली नाखतो हतो, एम घणां वर्ष वीत्या पछी, एकदा वली महोटो जंगी दावानल लागो, तेवारें सर्व वनचर जीव, आवी मांडलामां रह्यां, तुं पण तत्काल आवी मांडलामां रह्यो, मांडलामां तिल

जेटलो पण मार्ग रह्यो नही, एवुं संकीर्ण थयुं, एटलामां तें खरज खणवाने पग उंचो ली धो, ते पगने स्थानकें निराली नूमिका देखी एक शशलो ताहारा पग नीचेनी नूमियें आवी बेगो पढी पग नीचो मूकतां नीचें शशलो दीगो एटले तुजने दया आवी तेथी पग अधर रा ख्यो, अढी दिवसें दावानल उपशम्यो, तेवारें शशला प्रमुख सर्व जीव, पोत पोताने स्थानकें गयां, ताहारो पग लोहीयें नराणो तेने नीचो मूकतो थको पर्वतना कूटनी पेरें तुं हेगे पड्यो. त्रण दिवस सुधी क्षुधतृषायें पीडातो सो· वर्षनुं आयु नोगवी दया सहित मरण पामी, हे मेघकुमार ! तुं राजकुलें उपन्यो ढे. अकालें मेघवृष्टिनो दोहोलो तारी माताने थयो माटे तारुं नाम मेघकुमार स्थाप्युं जे वखतें तुजने हाथियोयें माख्यो, ते वखतें तो तिर्यंचनुं करेलुं डुःख हतुं, तो ते डुःख आगल आ साधुना संघट्टथी तुं शुं डुःख धरे ढे ? ते साधु तो जगद्वंद्य ढे, एमना चरणनी रज तो पुण्यवान् जीवने लागे माटे साधुना पग लागवाथी डुःख न आणवुं. एवां नगवानना वचन सांनली जातिस्मरण उपन्युं, तेणें करी पूर्वला नव दीग, पढी प्रजुने पगे लागी चारित्रने विषे स्थिर थइने एवो अनिग्रह लीधो के आज पढी महारे बे नेत्रनो जाबतो राखवो माटे ते टालीने बीजा शरीरनी शुश्रूषा, गमे तेवुं संकट पडे तो पण न क रवी एवो जावज्जीव सुधीनो अनिग्रह करी निरतिचार पणे शुद्ध चारित्र पाली अंते एक मा सनी संलेषणा करी विजयनामा अनुत्तर विमानमां देवपणे उपन्यो, तिहांथी चवी महा विदेहमां उपजी मोक्ष पामशे, इति मेघकुमार कथा ॥ माटे नगवंतने धर्मसारथि सरखा कहियें ॥ ए प्रथम व्याख्यान समाप्त थयुं ॥ १ ॥ ॥ अथ द्वितीय व्याख्यान प्रारंनः ॥ वली नगवानने नमस्कार करे ढे. धर्ममां चार अंत कर्या एवा चक्रवर्त्ति समान नगवान ढे

जेम चक्रवर्त्ति त्रण बाजु समुद्र अने एक बाजु चुल्लहेमवंत पर्वत पर्यंत राज्य करे तेम जगवान दानादि चार प्रकारनो धर्म प्ररूपे माटें धर्म चक्रवर्त्ति कहीयें, संसार समुद्रमां डूबता प्राणीउने द्वीप समान शरणागत वत्सल, क्यांय हणाय नही एवा ज्ञान अने दर्शनना धरवा वाला, जेमने छद्मस्थ पणुं रह्युं नथी, पोते राग द्वेषनें जीत्या, बीजाने जीतावे, पोतें संसार समुद्रथकी तर्या, बीजाने संसार समुद्रथी तारे, पोतें तत्त्वने जाण्या छे, बीजाने तत्त्वनो बोध करे, पोतें कर्म रहित थया, बीजानें कर्मथी मूकावे, सर्वज्ञ, सर्वदर्शि, शिव एटले निरूपद्रव, अचल, रोग रहित, जेनो अंतनही अने क्षय पण नही, बाधा रहित, ज्यांथी फरी पाछुं संसारमां आववुं नथी एवुं जे सिद्धिगति नामक स्थानक तेने पाम्या एवा जिनेश्वरनें महारो नमस्कार होजो, जीत्याछे जय जेमणे एवा जगवंतनें नमस्कार हो, श्रमण जगवंत श्रीमहावीर छेला तीर्थंकर, आदिना करनार पहेला तीर्थंकर श्रीरुषनदेव स्वामीयें देखाड्या यावत् मोक्षमां जावा वाला तेमने हुं वांडुं छुं जगवान तो त्यां गर्नमां छे अने हुं देवलोकमां छुं माटे त्यां रह्यां थकां आपे मने देखवो एवुं कहीने जगवानने नमस्कार करे करीने सिंहासन उपर पूर्वदिशानी साहामुं मुख करीनें बेगे तेवारें शक्रेंद्रनां मनमां एवो विचार उत्पन थयो ॥१६॥

॥ एम सर्वे तीर्थंकरोना एक चवन कल्याणक, बीजुं जन्मकल्याणक त्रीजुं दीक्षा कल्याणक, चोथुं ज्ञानकल्याणक. अने पांचमुं निर्वाणकल्याणक, ए पांच कल्याणकें सदा काले शक्रस्तव कहे एटले शक्रजे इंद्र ते स्तव एटले थुणे माटे तेने शक्रस्तव कहीयें ते इंद्र महाराज शक्रस्तव कहीनें रोमांचित थाय, आनंद पामे, वली ए पांच कल्याणकें चोशठें इंद्र जेला थइने अठाइ महोत्सव प्रमुख करीनें प्रत्येक कल्याणकनो महिमां करे ए मर्यादा छे ॥

ते कहे छे. इंद्र महाराजें विचार्युं जे श्रीअरिहंत भगवंत अथवा चक्रवर्ति अथवा वासुदेव अथवा बलदेव ए त्रेशठ उत्तम पुरुष छें,ते अंतकुल जे क्षुद्रजाति तेने विषे तथा प्रांतकुल ते अधमाचारीना कुलने विषे तथा अल्पपरिवार वाला तुच्छ कुलने विषे तथा निर्धन ते दरिद्रीना कुलनें विषे तथा अदातारते कृपणनां कुलने विषे तथा चारण प्रमुख भीखारीना कुलने विषे तथा ब्राह्मणना कुलने विषे आव्या,आवे अने आवशे निश्चयथी ए वात पूर्वेंथइ नथी,वर्तमान कालें थाती नथी अंने आगामिक कालें थाशे पण नही एटले त्रेशठ शिलाका पुरुष तो निश्चे थकी पूर्वोक्त अंत.कुलादि कने विषे आव्या पण नथी, आवता पण नथी अने आवशे पण नही ॥ १७ ॥ ॥ ए पूर्वोक्त अरिहंतादिक त्रेशठ शिलाका पुरुष तो, निश्चयथकी श्रीऋषभदेवजीयें आरक्षक पणे जेने राख्या तेने उग्रकुल कहीयें ते कुलने विषे तथा जेनें गुरुस्थानीया पणे राख्या तेने भोगकुल कहीयें तेने विषे तथा जेनें मित्रस्थानें राख्या तेने राजन्य कुल कहीयें तेने विषे तथा प्रजा लोकपणे थाप्या तेने क्षत्रियकुल कहीयें तेने विषे तथा इक्ष्वाकु कुलने विषे तथा हरिवर्ष क्षेत्रना युगलीयानो जे परिवार तेने हरिवंश कुल कहीयें एवा बीजा पण तथा प्रकारनां विशुद्ध जातिनां उत्तम कुलने विषे आव्या छे, आवें छे अने आवशे, ए मर्यादा छे ॥ १८ ॥ ॥ तथापि ए श्रीमहावीर स्वामी ब्राह्मणना कुलमां आवी ऊपन्या ए लोकने विषे अछेराभूत वात थइ एटले अनंती उत्सर्प्पिणी अने अवसर्प्पिणी जेवारें व्यतिक्रमे तेवारें कोइक कालें एवा अछेरा थाय छे तेम आ अवसर्प्पिणीमां पण एवा दश अछेरा एटले आश्चर्यकारी वातो थयेली छे एम इंद्र महाराज विचारे छे ॥ ग्रंथाग्रंथ ॥ १०० ॥ ॥ हवे अवसर्प्पिणीनें विषे जे दश अछेरां थयां ते वखाणे छे. त्यां प्रथम कोइ तीर्थंकरने केवलज्ञान ऊपन्या पछी उपसर्ग

थाय नहीं अने श्रीमहावीर देवने केवल ज्ञान उपन्या पछी गोशालायें उपसर्ग कर्यो, ते कहे छे. एकदा जगवंत श्रीमहावीर स्वामी विहार करतां सावत्थी नगरीयें समोसर्या, तेवारें गोशालो पण, हुं तीर्थंकर छुं. एम लोकोमां कहेतो थको सावत्थीयें आव्यो, ते समयें गौतमस्वामी गोचरीयें गया, तिहां लोकोना मुखथकी एवुं सांजल्युं जे आज नगरीमां एक महावीरस्वामी अने बीजो गोशालो, ए बे तीर्थंकर आव्या छे. पछी संशयवंत थइनें श्रीगौतम स्वामीयें जगवंत पासें आवीने गोशालानी उत्पत्ति पूछी, तेवारें प्रजुयें कह्युं के शरवण ग्रामनो रेवासी मंखली जरडानीजाति शनिश्चरनो दान लेनारो तेनी सुजद्दा स्त्रीनो ए पुत्र छे, ब्राह्मणनी गायनी शालामां जन्म्यो तेथी मातापितायें गोशालो नाम पाडयुं छे. ए जिक्षामागतो हतो ते आवीने महारो शिष्य थयो, छद्मस्थावस्थायें महारी सार्थें छद्मस्थ पणे छ वरस रह्यो हतो, महारी पासेंथी जणीने कांइएक बहुश्रुत थयो छे, तेजोलेश्या पण शीख्यो छे बीजुंवली दिशाचरो पासेंथी निमित्तविद्या शीखीनें ए मिथ्या जिननाम धरावे छे,परंतु ए तीर्थंकर नथी,एवी वात प्रजु पासेथी सांजलीने श्रीगौतमें बीजा घणा लोको पासें वात करी, जे गोशालो मंखली पुत्र छे, ते वात, गोशालाने कानें गइ, तेवारें गोशालो क्रोधायमान थयो. एवा समयें जगवंतनो आनंदनामा शिष्य गोचरीयें गयो तेने गोशाले बोलावीने कह्युं के हे आनंद ! तने एक दृष्टांत कहुं ते सांजल, कोइएक चार वाणीया व्यापार करवाने अर्थें विविध प्रकारनां करियाणानां गाडां जरी परदेशें चाल्या मार्गमां कोइएक महोटी अटवीमां पेठा, तिहां तृषालागी तेथी उजाडमा पाणीनी गवेषणा करतां पाणीतो क्यांय दीठुं नही पण चार वाल्मिक एटले उदेहीनां शिखर (ढीम) दीठां अने तेना उपर नीलां वृक्ष उगेलां दीठां, तेथी जाण्युं के अहींआं अ

वश्य पाणी हशे ? एवुं जाणी एक शिखर फोडयुं तेमांथी घणुं निर्मल शीतल जल नीकल्युं, ते सर्वजनोये पीने तृषा नांजी, वली बीजा वासणोमां पण पाणी नरी लीधुं, पठी बीजुं शिखर नांगवा मांम्युं, तेवारें तेमांथी एक वृद्ध वाणीयो बोल्यो के आपणुं काम थयुं, माटे हवे बीजुं शिखर फोडशोमां; एम वाख्या थका पण तेणें बीजुं शिखर फोड्युं, तेमांथी सोनुं नीकल्युं, तेवारें लोन लागो तेथी जोपण वृद्धें वर्ज्यो तो पण त्रीजुं शिखर फोडयुं तेमांथी रत्न नीकल्या वली वृद्धें घणो वार्यो तोपण चोथुं शिखर फोडयुं, तेमांहेथी महाविकराल नयंकर दृष्टिविष सर्प नीकल्यो, ते सर्पें दृष्टिविषें करी सूर्य सामुं जोइने सर्वने बाली नस्म कीधा, एक सुशिक्षाना आपनार वृद्धने दया आणी जीवतो मूक्यो, ए दृष्टांतें ताहारा धर्माचार्यने एटली संपदा प्राप्त थइ तो पण असंतुष्ट थको महारो अपवाद लोको आगल बोलीने मने रोषवंत करे ठे तेथी हुं त्यां आवी महारा तेजथी सर्वने बाली नस्म करीश, माटे तुं उतावलो जइने ताहारा धर्मचार्यने कहेजे, हुं वृद्धवाणीयानी पेरें मात्र एक तनेज जीवतो मूकीश, ए वात सांनली आनंद,मुनि नयभ्रांत थयो थको नगवंत पासें आवीने गोशालाना सर्व समाचार कह्या, तेवारें नगवंते कह्युंके हे आनंद तमे गौतम प्रमुख सर्व साधुउने कहेजो जे अहींआं महारो कुशिष्य गोशालो आवशे, ते उपसर्ग करशे माटे तमें कोइ पण तेनी साथें नाषण करशोमां जो बोलशो तो बाली नस्म करशे तेथी अरहा परहा टली रहेजो ते सांनली सर्व साधुउ एकांते बेशीरह्या तथापि सर्वानुनूति अने सुनक्षत्र ए बे साधु, नगवंत पासेंज रह्या, एटलामां गोशालो आवीने नगवानने कहेवा लाग्यो के हे काश्यप ! तुं कहे ठे जे महारो शिष्य गोशालो ठे ते खरी वात ठे पण ताहारो शिष्य जे गोशालो हतो ते तो मरण पाम्यो अने

हुं तो बीजो छुं मात्र तें गोशालानुं शरीर परीग्रह सहन करवा सरखुं हतुं माटे में तेना शरीरमां प्रवेश कर्यो छे ते सांजली जगवान बोल्या के अरे गोशाला कोइ चोर चोरी करी नाठो होय तेनी पछवाडे वाहार चढी होय ते जोइने पहेलो चोर नाशी जवानें असमर्थ छतो एक तरणुं लइने पोताने ढाकवा सारुं आडुं आपे अने मनमां जाणे के हवे मने कोइ देखी शकशे नही तेथी शुं ते छानो रही जाशे! तेम तुं पण महारी आगल केवीरीतें छप्यो रहीश तुं तेहज महारो शिष्य गोशालो छो! एवुं सांजली गोशालो रोषआणीने जगवाननें कहेवा लागो के अरे तुं जीवतो रहीश त्यांसुधी मने सुख थाशे नही एवा तेना तुछ बोल सांजलीने सुनक्षत्र मुनि बोल्या के अरे गोशाला तुं पोताना गुरुने सामुं बोले छे एतो तुं संसारमां अनंता जव ज्रमण करवानुं काम करे छे एटलुं बोल्यो तेटलामां गोशालायें तेनां उपर तेजोलेश्या नाखी तेथी ते मुनि बली जस्म थइ गयो. फरी पण जगवानने गोशालो कडवां वचन कहेवा लाग्यो तेवारें सर्वानुजूति मुनि बोल्या तो तेने पण तेजोलेश्यायें करी बाली जस्म कीधो ते बन्ने साधु मरण पामीने देवलोकमां गया हवे जगवाने गोशालाने कह्युं के तुं चोरनी पेठे कां छिपतो रहे छे तेवारें जगवान उपर पण तेजोलेश्या मूकी ते तेजोलेश्या जगवाननें त्रण प्रदक्षिणा आपीनें पाछी गोशालाना शरीरमां पेठी तेथी गोशालो दाझ्यो तेना ताप थकी सात रात्रि सुधी विविध वेदना जोगवीने गोशालो मरण पाम्यो अने तेजोलेश्याना तापथी जगवानना शरीरें वेदना थवा लागी. छ महीना सुधी लोही खंम जाडो थयो, रेवती श्राविकानां घेरथी बीजोरांपाक सिंह अणगार पासें मगावी जगवंतें खाधो, तेथी शरीरें शाता थइ. एवीरीतें जेनो नाम मात्र लीधाथी पण सर्वे उपद्रव मटी जाय तेमने पण महा

पीडा थइ एम तीर्थंकरने जिनपद लह्या पछी एटले केवलज्ञान उपन्यापछी उपसर्ग न थाय, ते थयो. ए प्रथम आश्चर्य जाणवुं ॥ ॥ हवे बीजुं अछेरूं जे आ वर्त्तमान चोवीशीमां श्रीमल्लीनाथ उंगणीशमा तीर्थंकर स्त्रीवेदपणे उपन्या, तेनो संबंध कहे छे. आजं बूद्वीपना श्रीमहाविदेह क्षेत्र ने विषे सलिलावती विजयमां वीतशोकानामें नगरीनो बलनामें राजा तेने धारिणी नामें स्त्री छे, तेनो महाबल नामें पुत्र छे, ते यौवन अवस्था पाम्यो, तेवारें राजायें तेने पांचसो स्त्री परणावी, पछी वृद्धावस्थायें पुत्रने राज्य आपी पोतें दीक्षा लइ चारित्र पाली मोक्षे पोहोतो, हवे महाबल राजा राज्य करे छे, तेने एक अचल, बीजो धरण, त्रीजो अभिचंद्र, चोथो पूर्ण, पांचमो वसु, छठो वैश्रमण, ए छ मित्र हता. एकदा ते साते जणे गुरु पासें धर्म सांभली दीक्षा लीधी, अगीआर अंग भण्यां अने ते साते जणे मांहोमांहे एवो संकेत कस्योके आपण सर्व जणायें छठ अठ्ठमादिक जे तप करवुं ते सरखुं बराबर करवुं पण एक बीजाथी अधिकन्यून तप कोइयें करवुं नही ते प्रमाणे ते सातेजण सरखुं तप करे, तेमां एकदिवस महाबल रूषि ना मनमां एवो विचार थयो के हुं एनांथी कांइ अधिक तप करुं के जेथकी हुं ए सर्वथी अधिक थाउं एवो निश्चय करी, कपटथकी ते छ जणथी छानो जेवारें पारणुं करवानो दिवस आवे तेवारें छ जणने एम कहे कें महारुं तो माथुं दुखे छे,हुं आज पारणुं करीश नही तमें सुखे पारणुं करो. बीजे दिवसें वली तेमना सरखुं तप करे. ए प्रमाणे कपट थकी वीश थानकतप कर्युं तेथी तीर्थंकरनाम कर्म उपार्ज्युं परंतु कपटनेलीधे स्त्रीपणानुं कर्म बांध्युं शेवट सातेजणा बे मासनी संलेषणा करी चोराशी लाख पूर्वनुं आयु पाली मरण पामीने बत्रीश सागरोपमने आउखे विजयंतनामा अनुत्तर विमानें जइ ऊपन्या, पछी तिहांथी चवी एक अचल

नो जीव तो अयोध्यानो सुप्रतिबद्धनामें राजा थयो, बीजो धरणनो जीव, चंपानगरीयें चंद्र
जसा नामें राजा थयो, त्रीजो अभिचंद्रनो जीव, काशी नगरीयें शंखनामें राजा थयो, चोथो
पूरणनो जीव, सावत्थी नगरीयें रुक्मिनामें राजा थयो, पांचमो वसुनो जीव कुरुदेशें अदी
नशत्रुनामें राजा थयो, छठो वेश्रमणनो जीव कपिला नगरीयें जितशत्रुनामें राजा थयो, अ
ने सातमो महाबलनो जीव मिथिला नगरीयें कुंभ राजा तेनी प्रभावती राणीनी कूखें आवी
मल्लीकुमरी पणे उपन्यो,तेवारें मातायें चौदसुपनां दीठां,आशु शुदि अगीआरशें पुत्रीपणे ज
न्म्या अनुक्रमें यौवन अवस्था प्राप्त थइ, पछी अवधिज्ञानें करी पोताना छ मित्र, जूदे जूदे
ठेकाणें उपन्या देखी तेने प्रतिबोध करवाने अर्थे अशोक वाडीमां रत्नें जडित घर कराव्युं, तेनां
छ बारणां कराव्यां, तेमां पोताना रूप सरखी रत्नेंजडित सोनानी एक पूतली करावी, हवे म
ल्लीकुमरी जे जे वारें भोजन करे, ते ते वारें ते रत्ननी पूतलीने माथे बारणुं कराव्युं छे ते बा
रणानी उपर एकेको कवल नाखती जाय अने फरी पाछुं ढांकणुं आपी दीये, एम नित्य
करती जाय. हवे एकदा अयोध्या नगरीयें सुप्रतिबद्ध राजायें यक्षने देरे पूजा रचावी छे,
तिहां फूलनी माला देखीने दूतने पूछ्युं जे तमें एवो फूलनो श्रीदामक्यांहिं पण दीठो छे?
तेवारें दूत बोल्यो जे हे राजन्! मल्लीकुमरी घणी चतुर छे घणा रूपमय छे, ते जेवो फूल
नो श्रीदाम बनावे छे तेहना लाखमां अंशें पण ए श्रीदाम नथी हवे पूर्वभवना प्रेमथकी सुप्र
तिबद्धराजायें मल्लीकुमरीनी याचना करवाने कुंभराजा उपर दूत मोकल्यो अने कहेवराव्युं जे
तमारी बेटी मुजने परणावो ॥ इति प्रथम दूत ॥ १ ॥ तेवार पछी चंपानगरीना अरहन्नक
प्रमुख व्यवहारिया प्रवहण भरी गंभीर पत्तने द्वीपांतरें चाल्या, एवा समयमां इंद्र महाराज

अरहन्नक श्रावकनी प्रशंसा पोतानी सनाने विषे करवा लाग्या जे धन्य छे अरहन्नकने, आज नरत क्षेत्रमां एना समान बीजो कोइ दृढ श्रावक नथी! ते इंद्रना वचनने कोइएक मिथ्या त्वी देवता अण सद्दहतो थको तिहां अरहन्नक पासें आवीने ते देवतायें समुद्रमां महोटो उत्पात कस्यो ते जोइ अरहन्नक तो सागारी अणशण करीने निश्चल मनें श्रीवीतराग देवनुं स्मरण करवा लाग्यो, तेनें देवतायें घणोए चलाव्यो अने एवुं कह्युं जे तुं श्रीवीतराग देवनुं स्मरण मूकीने हरि हरादिक देवोनुं स्मरण कस्य, तो उपसर्ग निवारण करुं नहींतर ताहारां जिहाज समुद्रमध्यें बूडावी देईश, एम कही जिहाज समुद्रमां बूडाववा लाग्यो, तें जोइ सर्व लोक एकठा मली अरहन्नकनें कहेवा लागा जे देवतायें कह्युं तेम करो,तो पण अरहन्नक श्रा वकनुं समकित दृढ छे, तेथी चलायमान न थयो, ते जोइने देवता तुष्टमान थइ कुंमलानरण नो जोडो आपी, अर्हन्नकने पगें लागीने कह्युं के अहो अर्हन्नक ! तमोने धन्य छे,हे कृत पुण्य! तमारुं जीवितव्य सफल छे,तमोने इंद्र महराजें सना समक्ष वखाण्या ते अणमा नता में तमारो अपराध कस्यो, ते म्हारो अपराध तमें खमजो, ते सांनली अर्हन्नक बोल्या जे इह लोक अने परलोकनुं साधन एवो श्रीजिनधर्म पामीने बीजो धर्म हुं अंगीकार न करूं, तेवारें देवतायें चार कुंमल आप्यां, अनें पोताने स्थानकें गयो, हवे ते व्यावहारीयो कुशल क्षेमें गंनीरपत्तनें गयो तिहां व्यापार करी फरी मिथिला नगरीयें आव्यो तेवारें देवतायें आ पेला चार कुंमलमांथी राजाने बे कुंमल आप्यां, राजायें मल्लीकुमरीने दीधां, पछी व्यापा रियें पोतानी चंपानगरीयें आवी, तिहां चंपागरीना राजाने बाकी रहेला बे कुंमल आप्यां राजायें पूछ्युं जे हे व्यवहारीया! तमें परदेशमां कोइ तमासो दीठो ? ते सांनली व्यवहारीयो

बोल्यो के अमें मल्लीकुमरीनुं रूप अद्भुत दीठुं, एवुं रूप बीजे क्यांहिं पण दीठुं नथी, पछी चंद्रजसा राजायें पण कुंनराजा पासें दूत मोकलीने कहेवराव्युं के तमारी पुत्री मल्लीकुमरी मुजने परणावजो ॥ इति द्वितीयदूतः ॥२॥ एक दिवसें मल्लीकुमरीनां बे कुंमल भांग्यां, तेवारें कुंनराजायें सोनीउं बोलावीने कह्युं के आ कुंमलनो जोडो सांधी आपो, तेवारें सोनी कुंमल जोइने बोल्या जे महाराज ! ए संधाय नहीं एतो देवतानां कुंमल छे, ते अमें केवी रीतें सांधियें ? तेथी राजायें सर्व सोनीउंने देशनिकाल कीधा, ते सोनी वाणारसी नगरीयें गया, तेवारें त्यांना शंख राजायें पूछ्युं के तमें देश केम छोड्यो ? सोनी बोल्या जे महाराज ! मल्लीकुमरीनां कुंमल देवता संबंधी छे, ते अमारा थकी संधाणां नहीं, तेणें करी देश छोडवो पड्यो अने मल्लीकुमरीना रूपनुं वर्णन कह्युं, तेवारें वाणारसीना राजायें पण मल्लीकुमरी याचवाने अर्थें कुंनराजाने दूत मोकल्यो ॥ इति तृतीयदूतः ॥ ३ ॥ हवे रुक्मी राजायें पोतानी पुत्रीने चार महीना सुधी पीठी करावीने दूतने पूछ्युं जे हे दूत ! तें आवुं रूप क्यांही पण दीठुं छे ? तेवारें दूत बोल्यो जे मल्लीकुमरीने लाखमे अंशें पण ए रूप नथी, ते सांभली, रुक्मी राजायें पण कुंनराजा उपर दूत मोकली,मल्लीकुमरीनी याचना करावी ॥ इति चतुर्थदूतः ॥४॥ हवे कुंनराजानो पुत्र छे,तेणें पोतानी चित्रशाला चित्रावी,तिहां चितारे मल्लीकुमरीनो अंगुठो दीठो, ते प्रमाणें मल्लीकुमरीना सर्व अंगनुं स्वरूप चित्री काढ्युं, एकदा मल्लीकुमरीना भाइयें क्रीडा करतां मल्लीकुमरीनुं रूप चित्रशालामां जोयुं, तेने रीश चढी तेथी चिताराना हाथनुं अंगुठो कापीने काढाढी मूक्यो, चितारो हस्तिनापुरें अदीनशत्रु राजाने मल्यो, तिहां मल्लीकुमरीनुं रूप, वर्णन कह्युं, ते सांभली तेणें पण मल्लीकुमरीनी याचना करवा कुंनराजाने दूत मोक

व्यो ॥ इति पंचम दूतः ॥ ५ ॥ ॥ एक दिवस धर्मचर्चा करतां एक परिव्राजिकाने मल्लीकुं
मरीयें जीती, मानभ्रष्टा करी, तेथी ते रीशाणीथकी कपिल्लानगरीयें . जइ जितशत्रुराजाना
मुख आगल मल्लीकुमरीना रूपनुं वर्णन कर्युं, तेणें पण मल्लीकुमरी याचवाने अर्थें कुंभराजा
उपर दूत मोकल्यो ॥ इति षष्ठदूतः ॥ ६ ॥ ॥ ए रीतें ब दूत कुंभराजा पासें समकालें आ
व्या, कुंभराजायें सर्व दूतोने कह्युं के हुं म्हारी कन्या कोने आपवानो नथी, एवी रीतें अप
मान करी काढी मूक्या, पछी ते ब्रए राजाउ पोत पोतानुं लशकर लइने समकालें आवी मि
थिला नगरीने वींटी लीधी, कुंभराजायें पण बाहिर आवी युद्ध करवा मांम्युं युद्ध करतां हार्यो
अने पाछो नगरीमां पेठो, तेवारें मल्लीकुमरीयें ब्रए राजाउने कहेवराव्युं के तमें म्हारा रत्नघ
रमां आवजो, पछी ते ब्रए राजा ब बारणामांथी जूदा जूदा आव्या, मल्लीकुमरीनी मूर्त्ति
देखी व्यामोह पाम्या, एटलामां मल्लीकुमरीयें आवीने ते पुतलीना माथा उपरथी ढांकणुं
उघाड्युं तेवारें ते सडीगयेला अनाजमां कीडा पड्या हता तेमांहेथी डुर्गंध नीकल्यो एटले
सर्व जणे मोढा पासें लूगडुं आपी थुथुकार कीधो अने डुःखी थवा लागा तेवारें मल्लीकु
मरी बोल्यां जे हे नडो ! आ रत्नमय पूतली छतां नित्यप्रत्यें एक कवल आहारना संयोगथी
एवी डुर्गंध वास आपे छे, तो म्हारा शरीरमां तो नित्यप्रत्यें शेर धान्य पडे छे. तेथी मलमूत्र
नो नंभारज छे. तेमां तमें शुं रागांध थया छो ? एवो प्रतिबोध करीने पछी पूर्वलो नव संभला
व्यो, तेथी ते ब्रए राजाने पण जातिस्मरण ज्ञान उपन्युं, पूर्वेंनव दीठा पछी ते ब्रए कहेवालाग्या
के हवे अमने तारो, तेवारें मल्लीकुमरीयें कह्युं के हमणां तो तमें घेर जाउ, जेवारें मने के
वलज्ञान उपजे, तेवारें तमें आवजो, हुं तमोनें दीक्षा आपीश, पछी ते ब्रए राजा पोतपोता

ने स्थानकें गया, मल्लीकुमरीयें पण संवत्सरी दानआपीनें त्रणशें राजपुंत्र साथें मार्गशिरशु
दिअगीआरशने दिने दीक्षा लीधी, तेज दिवसें केवल ज्ञान उपन्युं, पछी ते छए मित्रें आवी
श्रीमल्लीनाथ पासेंथी दीक्षा लीधी ते छए ने गणधर कस्या तेहज जवें मोक्ष गया, ए श्रीमल्ली
नाथ स्त्रीवेदें ओगणीशमां तीर्थंकर थया, तेमना समोसरणमां स्त्रीनी परषदा आगल बेशती
हती अने पुरुषनी परषदा पाछल बेशती हती ते स्त्रीवेदें कोइ तीर्थंकर थाय नहीं ते थयुं ए
बीजुं अछेरूं जाणवुं ॥ २ ॥ ॥ त्रीजुं कोइ तीर्थंकरने गर्भपालटो थयो नथी, ते आहीं श्रीम
हावीर स्वामीने ब्याशी रात्रि पछी देवानंदानी कूखथी हरणिगमेषी देवतायें अपहरीनें त्रिश
ला क्षत्रियाणीनी कूखमांहे धस्यो अने त्रिशलानी कूखें पुत्री हती, ते महाणकुंमें देवानंदानी
कूखे मूकी. तेवुं कोइवारें थाय नही, माटे ए त्रीजुं गर्भ पालटन आश्चर्य जाणवुं ॥ ३ ॥ ॥
चोथुं श्रीवीरभगवाननें जेवारें केवलज्ञान उपन्युं, तेवारें देवतायें मली समोसरणनी रचना
कीधी, त्यां घणी महोटी परषदा भेली थइ तेवारें भगवानें धर्मदेशना दीधी परंतु प्रभुनी देश
ना सांभलीनें कोइ समकेत पाम्यो नही, तेमज व्रत पच्चरकाण पण कोइयें लीधुं नही एरीतें
देशना निःष्फल गइ, एम तीर्थंकरनी देशना कोइ वखतें खाली न जाय ते आ वेलाये खाली
गइ, माटे ए चोथुं आश्चर्य जाणवुं ॥ ४ ॥ ॥ पांचमुं जे एक द्वीपनो वासुदेव होय ते बीजे
द्वीपें जाय नही, ते श्रीकृष्णजी द्रौपदी लाववानें अर्थें धातकीखंमें गया तेमज कपिल वासु
देवनो शंख अने श्रीकृष्ण वासुदेवनो शंख ए बे शंखेशंख मल्या ते पण कोइवारें मले नही
माटे आश्चर्य जाणवुं तेनी कथा कहेछे. कांपिलपुर नगरमां द्रुपदराजानी चुलणी पटराणीनी
कूखे द्रौपदी नामे पुत्री थइ तेना विवाह सारुं स्वयंवर मंमप मांम्यो, सर्व देशोना राजा ते

डाव्या हस्तिनागपुरथी पोताना युधिष्ठिरादिक पांच पुत्रने तेडी पांडुराजा पण आव्यो, अर्जुने राधावेध साध्यो तेवारें द्रौपदीयें अर्जुनना गळामां वरमाळा नाखी ते वरमाळा पूर्वभवमां द्रौपदीयें पांच भरतारनो नीयाणो कस्यो हतो तेना प्रभावथी पांचे पांडवोना गळामां जइ पडी पूर्वला भवमां द्रौपदीनो जीव नागिला नामें ब्राह्मणीनो हतो तेणे एक दिवस धर्मरुचि मुनिने कडवी तुंबडीनुं शाक वोहोराव्युं ते मुनियें अनशन करी खाधुं तेनां योगथी मुनि मरण पाम्या पछी नागिला साधुनी घात करनारी छे एवुं आचार्यें साधुउने गाममां मोकली कहेव राव्युं तेवारें ब्राह्मणे नागिलाने घरमांथी काहाडी मूकी, ते भमती भमती मरण पामीने नरकें गइ त्यांथी अनेक तिर्यंचादिकना भव करी एक शेठने घेर घणी स्वरूपवाळी सुकुमालिका नामे पुत्री पणे उपनी तेनें तेज गाममां एक बीजा शेठना दीकराने परणावी ते रात्रे सुवा गयो त्यां सुकुमालिकानो स्पर्श थतांज तत्काळ तेने दाहज्वर उपन्यो तेथी ते पडती मूकी चाल्यो गयो पाछळथी सुकुमालिकाने शोक करती जोइने तेना बापे एक भिक्षुकने परणावी ते पण तेमज मूकी भागी गयो पछी सुकुमालिका दुःखगर्भित वैराग्य पामीनें साधवी थइ तेने गुरुणीयें नाकारो कस्यो तो पण ते वनमां तप करवा गइ त्यां एक वेश्याने पांच पुरुष हाज रीमां रह्या छे तेने जोइने सुकुमालिकायें कह्युं के म्हारा तपनो प्रभाव होय तो आगला भ वमां मुजनें पण पांच भरतार होजो एवुं नियाणुं कस्युं, अंते अनशन करी इशान देवलोकें गइ त्यांथी चवीने अहीं द्रौपदी थयेली छे ते पूर्वकृत नियाणाना योगें वरमाळा पांच जणानां कं ठमां पडी, देवोयें आकाशथी एवी वाणी करी के द्रौपदी पांच भरतारी छतां पण सती छे, पांच पांडव द्रौपदीने परणी हस्तिनागपुरमां आव्या त्यां सुखें रहे छे, एक दिवस जेनी मुखाकृति सौम्य

छे, परंतु मनमां कपट घणुं राखे छे, वल्कल चीर पहेरे छे, जनोइ पहेरे छे, काला मृगना चाम डानो उत्तरासंग करेलो छे, जेनो जटाजूट महाकांति वालो छे, जे कलह कोलाहलनो लगा डनार छे, एवो नारद ऋषि आकाशमार्गथी ते पांडुराजानी सनामां आव्यो, तेवारें पांडवो स हित सर्व सनाजनोयें ऊना थइने आदर सन्मान आप्युं, परंतु ते नारद जेवारें द्रौपदीनें जो वा गयो तेवारे द्रौपदीयें तेंने असंयती जाणी वांद्यो पूज्यो नही, तेम उठीने उनी पण थइ नही, अने बोलाव्यो पण नही, तेथी नारदने रीश चडी अने विचार करवा लाग्यो के आ द्रौ पदी पांच नरतार पामीनें मस्त थइ गइ छे, तेथी गर्वित थकी बेठी छे तो हवें हुं एने संकट मां नाखुं एम चिंतवी, धातकीखंडना पूर्व नरत क्षेत्रमां अमरकंका नामे नगरी छे त्यां कपि लवासुदेवनो सेवक पद्मनान नामे राजा राज्य करे छे, ते राजा पोतानी सातसें राणीयो सा थें वाडीमां रमतो हतो तेवा समयमां नारद पण त्यां गयो, तेने पद्मनान राजायें वांदीने पूछ्युं के हे नारदजी! महारो जेवो अंतेउर छे तेवो अंतेउर बीजे क्यां तमें जोयो छे, तेवारें नारदजिये जाण्युं के आ स्त्रियोनो लोलुपी छे. एम जाणी अवसर जोइने नारदजी कहेवा लाग्यो, के हे राजन् तुं कूवानां देडका सरखो देखाय छे, जेम कोइएक समुद्रनो देडको कूवाना देडकानी पासें आव्यो, तेवारें तेने कूवानां देडकायें पूछ्युं जे तुं किहां रहें छे अने क्यांथी आव्यो छो, तेणे कह्युं हुं समुद्रमां रहुं छुं अने त्यांथीज आव्यो छुं तेवारें कूवानां देडकायें पूछ्युं जे ताहारो समुद्र केटलो महोटो छे, तेणे कह्युं घणो महोटो छे, तेवारें कूवानो देडको हाथ पग पसारीने बोल्यो के आटलो महोटो छे, समुद्रना देडकायें कह्युं एथी तो घणोज महोटो छे, तेवारें कूवानो देडको पोताना कूवानी चारे बाजुयें कूदका

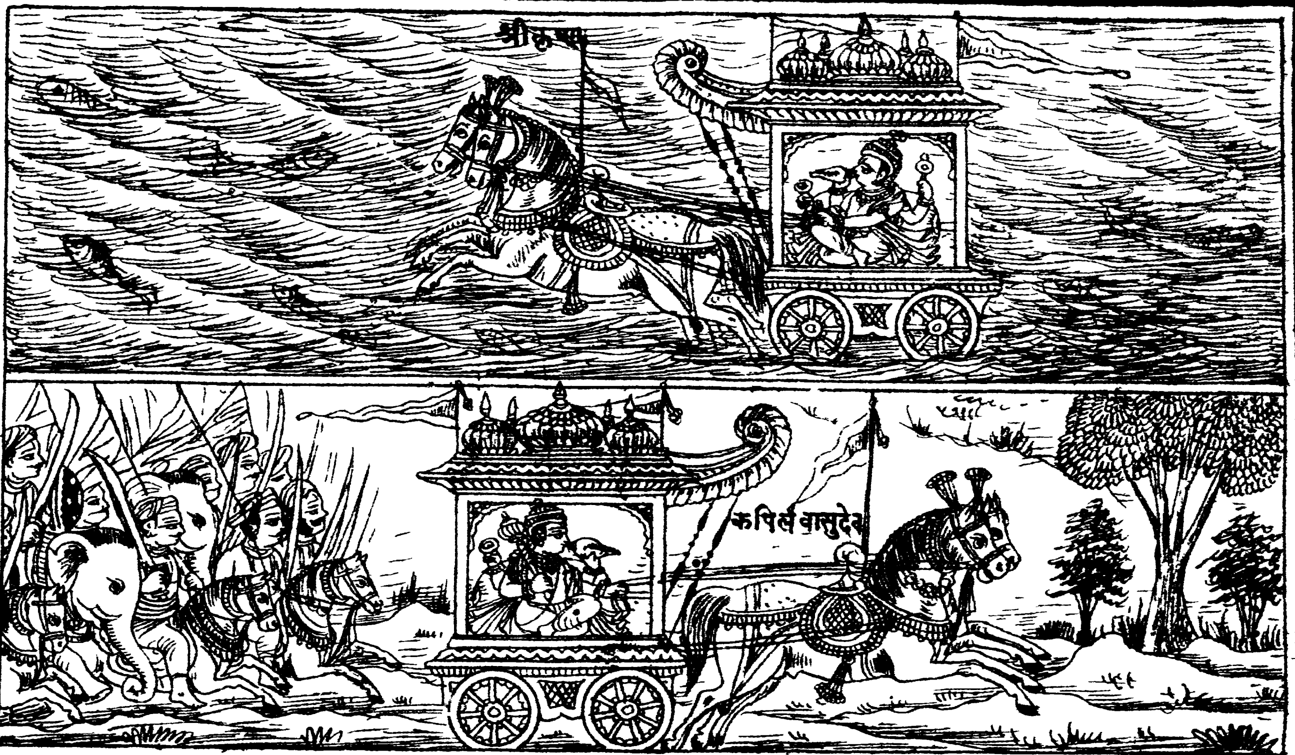
मारीनें बोल्यो के आटलो महोटो छे, तो पण तेणे कह्युं के एनाथी तो घणोघणो महोटो छे, तेवारे कूवानो देडको रोष आणीनें बोल्यो के अरे असत्य वादी तुं इहांथी दूर जा, म्हारी फालथी पण वली कोइ महोटो हशे ? माटे तुं जुठुं बोले छे, तेम हे राजन्! तें पण कूवाना देडकानी पेरें आटलीज स्त्रीयो दीठी छे तेथी एनाज वखाण करे छे, परंतु पांच पांडवनी स्त्री द्रौपदी एवी छे के तेना एक अंगुष्ठना नखाग्रना रूप सरखुं पण ताहारी कोइ राणीनुं रूप नथी, त्रण लोकमां ए द्रौपदी समान कोइ स्त्रीनुं रूप नथी एम कहीनें नारद चालतो थयो, पाछलथी पद्मोत्तर राजा कामे पीडित थको चिंतववा लाग्यो जे एवी स्त्री विना जन्म निष्फल छे पण द्रौपदीने पामवानो कोइ उपाय सूज्यो नही तेवारें अष्ठम तप करी पूर्वभवसंगति देवतानुं आराधन कर्युं देवता प्रत्यक्ष आवी ऊभो रह्यो अने कहेवा लाग्यो के हे राजन्! मने केम संभार्यो माटे जे काम होय ते फरमावो, पद्मोत्तर राजायें द्रौपदी लेइ आववानी याचना करी तेवारें देवतायें कह्युं ते महा सती छे माटे शील भंग करशे नही तो तुं फोकट शा वास्ते तेने तेडावे छे. तो पण पद्मोत्तरें घणो हठ कर्यो त्यारें देवतायें द्रौपदीनें अवस्वापिनी निद्रा आपी, ज्यां सुती हती त्यांथी ढोलीया सहित उपाडीनें पद्मोत्तर राजानी अशोक वाडीमां आवी मूकी अने राजाने कह्युं के तें महारा हाथें मारुं काम कराव्युं छे, माटे हवे कोइ पण दिवसें तुं मने याद करजे नही कदापि बोलावीश तो पण हवे हुं आवीश नही एम कही देवता स्वस्थानकें गयो, केटलिक वार पछी द्रौपदी निद्रामांथी जाग्रत थइनें विचारमां पडी जे हुं इहां क्यां आवी छुं! तेवारें पद्मनाभ बोल्यो के में तुजनें महारी साथें भोग करवा सारुं देवतानी मारफते इहां मगावी छे, तो हवे तुं महारी साथें विषयसुख भोगव, हुं ताहारो दास छुं, तेवारें

डौपदी बोली हे देवाणुप्रीय! तुं ढ महीना सुधी महारुं नाम लइश नही, महारी वाहार करवा वाला, पांच पांमव तथा श्रीकृष्ण ढे ते जो ढ महीनामां आंही आवशे नही तो तुं कहीश तेम थाशे, पद्मनाजें पण हा कही अने विचार्खुं जे इहां एनी खबर लेवा कोण आवनार ढे? वली जोरावरीथी प्रीति पण नथाय एम जाणी, डौपदीनें पोताना महेलमां तेडी गयो डौपदीयें त्यां ढठ ढठनुं तप अने पारणे आयंबिल करवा मांम्युं, हवे प्रजातें हस्तिनाग पुरमां डौपदीनें महेलमां दीठी नही, तेवारे पांमवोयें घणो शोध कराव्यो पण क्यांये पतो लागो नही, तेवारे पांमवोनी माता कुंताजीयें द्वारिकामां जइने श्रीकृष्ण वासुदेवने कह्युं के हे पुत्र! डौपदीने रात्रियें सुतां थकां कोइ देव, दानव, राक्षस अथवा विद्याधर अपहरी गयो ढे, अमे सर्व जगा जगायें जोइ पण मली नही तेवारें श्रीकृष्णजी कांइक हास्य पूर्वक बोल्या के पांच पांमव एक डौपदीने पण राखवाने समर्थ न थया, हुंतो महारी बत्रीश हजार स्त्रीयोनी रक्षा करुं बुं, ते सांजली, कुंताजी बोल्यां के हे वत्स! आ अवसरमां हास्य करवानुं काम नथी तुं तरत डौपदीनी खबर कराव पढी श्रीकृष्णजीयें पण घणो शोध कराव्यो परंतु क्यांय खोज पाम्या नही तेवारें चिंतातुर थइ बेग. एटलामां नारदऋषि त्यां आव्यां तेणे आवी कृष्णजीनें चिंतामां बेसवानुं कारण पूढ्युं त्यारें कृष्णजीयें कह्युं के तमें कोइ स्थानकें डौपदीनें दीठी? नारदजी बोल्या ते पापणी कोइ साधुनें पण बोलावती नहती माटे डुःखमां पडी हशे, तथापि हुंतो कांइ उंलखतो नथी, परंतु धातकीखंममां अमरकंका नगरीयें डौपदी सरखी एक स्त्री दीठी ढे पढी कोण जाणे तेहज होयतो होय एम कही, नारदजी चाल्या गया पढी श्रीकृष्णे विचार्खुं के आ कृत अवश्य कुबुद्धि नारदनुंज करेलुं ढे माटे अमरकंका मांहेज डौपदी हशे

एवुं जाणी पांमवोंने लइ सेना सहित श्रीकृष्णजी समुड तटें आव्या, समुड उलंघवाने अर्थे अष्टम तप करी लवणाधिप देवताने बोलाव्यो ते पण प्रगट थइ बोल्यो के कहो शुं काम बे हुं करवाने तत्पर बुं, तेवारें कृष्णजीयें सर्ववृत्तांत निवेदन करी कह्युं के अमनें धातकीखंममां जावुं बे, माटे अमारी सेनाने समुडमांथी जवानो मार्ग आपो, त्यारे देवता बोल्यो के तमे शा वास्ते त्यां जवानो श्रम करो बो हुं पोते जइ डौपदी लावीने तमोने आपीश,वली तमारो हुकुम होय तो अमरकंका नगरी सहित पद्मनाभ राजाने समुडमां नाखी देउं, तेवारें श्रीकृष्ण बोल्या के हे देव ! तमे एवाज शक्तिवान बो एमां कांइ संशय नथी तथापि अमोने पांच पांमव सहित ब जणने जवानो मारग आपो तो अमारें त्यां जवानी इच्छा बे ते सांजली सुस्थित देवे ते ब जणाना ब रथ चालवानो मार्ग आप्यो पबी पांमवो सहित श्रीकृष्ण समुड उलं घीनें अमरकंका नगरीना उद्यानमां जइ दारुक नामा सारथीने दूत बनावीने श्रीकृष्णे पद्म नाभ पासें मोकल्यो तेणे जइ पगउपर पग आपी त्रिवडी ललाटें चडावी,कह्युं के हे पद्मनाभ ! श्रीकृष्णवासुदेवें तमोने कहेवराव्युं बे के,पांमवोनी स्त्री डौपदीने तमे लइगया बो ते घणुं अ योग्य काम कर्युं बे तथापि हजी कांइ बगड्युं नथी माटे तमे आवी डौपदी अमोने आपी जाउ, तेवारें पद्मनाभ बोल्यो के हुं तमोने पाबी आपवा सारुं डौपदीने लइ आव्यो नथी, हुंतो म हारा बलथी लाव्यो बुं माटे तुं ताहारा स्वामीनें जइ कहे के तमारे युद्ध करवुं होय तो सुखें क रो,हुं पण क्षत्री बुं एम कही दूतने निश्रंबी ने काहाडी मूक्यो,दूतें आवी श्रीकृष्ण आगल तेणे कहेली सर्व वात निवेदन करी, श्रीकृष्णे जाण्युं के असाध्य रोग कांइ औषध विना जाय नही माटे युद्ध करवा तैयार थया,पद्मनाभ पण सेना लइ लडवाने साहामो आव्यो,पांमवो बोल्या के

अमे एनी साथें युद्ध करीशुं कदापि जो हारी जश्यें तो आपे सहाय करवो त्यारें श्रीकृष्णे कह्युं के तमें महोटा योधा बो पण तमारी आवी आणी सांजलतां थकां एवुं लागे बे के तमारे जीतवुं कठण थइ पडशे,तो पण पांम्वो श्रीकृष्णनी आज्ञा लइ युद्ध करवानें गया,पद्मनाजें पण महोटुं लशकर लइने पांम्वो साथें युद्ध कर्युं, त्यां नवितव्यताना वशथी पांम्वो हारी गया ते वारें नाशतां थकां सिंहनाद कर्यो ते सांजली पांम्वो हार्या जाणी, एकलाज श्रीकृष्ण रथ उपर बेशीनें पद्मनाजनी सेनाने मथन करवा लाग्या त्यां धनुषना टंकारवथीज पद्मनाजनी सर्व सेना नाशी गइ अने पद्मनाज पोतें पण नाशिनें नगरमां घुंसी गयो नगरना दरवाजा बंधकरी मूक्या, तेवारें श्रीकृष्णे नरसिंह रूप धारण करीनें हाथल मारी अमरकंका नगरीनो सर्व कोट नांजी नाख्यो, सर्व नंगर धुजवा लाग्युं, घणा महेल पडीगया, पद्मनाज राजा श्रीकृष्णजीनुं एवुं पराक्रम देखीने बीहीनो थको डौपदीने शरणे गयो अने कहेवा लाग्यो के हे सति! तुं महारी रक्षा कर्य, डौपदी बोली हे कंगाल! में तुजने प्रथमथीज कहेलुं हतुं जे महारी पबवाडे श्रीकृष्णादिक घणा बलवंत राजाउ वाहार करनारा बे तो पण तें मान्युं नही तेतो ठीक पण हवे जो तुं जीववानी चाहना राखतो होय तो स्त्रीनो वेश पहेरी: मुखमां तृण लइ महारी पबवाडे बेसी रहे एटलुं जो महारुं कह्युं करीश तो हुं तुजने पगेलगाडी दइश केमके श्रीकृष्ण सत्पुरुष बे तेनी आगल जे नमी जाय तेने मारे नही माटे ताहारे जीवतो रहेवानो ए उपाय बे ते कर्य, पद्मनाजे पण तेमज कर्युं, एटलामां श्रीकृष्ण पण आव्या, त्यां जूवे तो पद्मनाज स्त्रीनुं रूप करी डौपदीनी पबवाडे बेगे बे, श्रीकृष्णें डौपदीनें पूब्युं के आ कोण बेगे बे, डौपदीयें कह्युं पद्मनाज राजा तमारा जयथी नाशिनें महारे शरणे आ

चित्र ८



र्थ्यो छे एम कही द्रौपदियें पद्मनाजने श्रीकृष्णनें पगें लगाड्यो तेवारें श्रीकृष्णे तेना उपर दया आणी जीवतो राख्यो अने पद्मनाजनें कह्युंके अरे तुं जाणतो नहतो जे आ द्रौपदीनी पखवा डे महोटा महोटा वाहार करवा वाला छे? पण मूर्खोना माथामां जेवारें पडे छे तेवारें अक ल आवे छे, तो हवे ताहारुं कर्युं कर्म तें जोगव्युं, द्रौपदीना प्रतापथी तुं जीवतो रह्यो एवुं कही अखंम शीलवंती एवी द्रौपदीने लइने पांच पांमव सहित श्रीकृष्णजी पाछा वल्या जयमो शंखपूर्यो, एवा वखतमां ते खेत्रमां श्रीमुनिसुव्रत तीर्थंकर पासें त्यांनो कपिल वासुदेव वखाण सांजले छे, तेणें शंखनाद सांजल्यो, मनमां शंका उपनी जे कोइ बीजो वासुदेव उत्पन्न थयो! तेथी जगवंतने पूछ्युं के महाराज! ए बीजो वासुदेव कोण थयो छे केंणे महारो शंख वजाव्यो? जगवंत बोल्या के हे कपिल! एक खेत्रमां बे तीर्थंकर अने बे वासुदेव, न थाय पण एतो जं बुद्वीप संबंधि जरत क्षेत्रनो श्रीकृष्णनामें वासुदेव ताहारा सरखी रुद्धिनो धणी छे, ते पद्म नाज राजा द्रौपदी हरण करी लाव्यो हतो,तेने लेवाने आव्यो हतो,ते पद्मनाजने जीतीने पाछो जाय छे,तेणें शंखनाद कर्यो,ते सांजली तीर्थंकरनी आज्ञा लइने कपिल वासुदेव तरत तिहांथी उठीने पोताना सरखो वासुदेव जोवा सारु समुद्रने कांठे आव्यो, पण श्रीकृष्णतो दूर नीकली ग या,मात्र समुद्रमां नीली, पीली रथनी ध्वजाउदेखीने, शंखनो शब्द कर्यो, तेमां एवुं जणाव्युं के हे मित्र! आप उजा रहो हुं तमोने मलवा सारुं आव्यो छुं माटे एकवार पाछा आहीं आवो, तमारा दर्शननी मने अजिलाषा छे, एवो शंखनो शब्द सांजलीनें श्रीकृष्णे पण पाछो शंख नो शब्द कर्यो तेमां आवीरीतें कहेता हवा के हे मित्र! अमे घणा समुद्रनु उल्लंघन करी गया छैयें माटे पाछा अवाशे नही तमे अमारा उपर कृपादृष्टि राखजो एवुं कहीने चालता थया,

पाछलथी कपिल वासुदेवें जइ, पद्मनाजनें कह्युं के आ ताहारी नगरीना गढ मढ कोट केम पडीगया ? पद्मनाजें कह्युंके अहींआं जंबूद्वीपना जरतक्षेत्रनो वासुदेव महारी राजधानी लेवा आव्यो हतो तेनी साथें महोटुं युद्ध थयुं तेणे ए गढादिक त्रोडी नाख्या छे, कपिलवासुदेवें कह्युं के अरे अन्यायी महारी पासें तुं जुठुं बोले छे एम कही घणो निर्त्रछीने देशमांथी काढी मूक्यो अने तेना पुत्रनें राज्यपाटे थापी कपिल पोतानें स्थानकें गयो, पछी श्रीकृष्ण पांमवो सहित समुद्र उल्लंघन करी पांमवोने कहेवा लाग्यो जे हुं लवणाधिप सुस्थित देवने मलवा जाउं छुं एटलामां तमे नावा लइ गंगानदी उतरीने पछी एक जण साथें तरत नाव मोकली देजो पछी पांमव द्रौपदी सहित नाव लइ गंगानदी उतर्या अने विचार्युं के जोइयें तो खरा जे कृष्णजी पोतें एकला गंगानदी उतरी आवे छे के नथी आवता एम निरधार करीने नाव मोकली नही, त्यां श्रीकृष्ण घणो वखत थोन्या पण नाव आवी नही तेवारें मनमां जाण्युंजे पांमवो डुंबी गया देखाय छे एवुं विचारी चार जुजाउ करीने एक हाथमां सारथी सहित रथ उपाड्यो, एक हाथमां शस्त्र राख्या, एक हाथमां घोडाने पकड्या अने एक हाथथी गंगा नदी तरवा लाग्या तिहां साडी बासठ योजन गंगानदी पोहोली छे तेनी मध्य जागमां जेवारें आव्या तेवारे श्रीकृष्ण घणा थाकी गया ते वखत गंगादेवीयें सहाय आपीने मध्यमां विकूर्वित थल कर्युं त्यां केटलोएक वखत विश्राम लइने वली पोतानी जुजाउथी गंगानदी तरीने तट उपर आव्या तिहां आगल आवीने जुवें छे तो पांमवो नांव सहित बेग बेग हसे छे, तेवारें श्रीकृष्ण रीश चढावीने पांमवोने पूछवा लागा के अरे दुष्टो! तमें नाव पाछी केम न मोकली ? पांमवो बोल्या, तमारी परीक्षा जोवाने न मोकली, तेवारें श्रीकृष्ण बोल्या

के अरे में बे लाख योजन समुद्र उल्लंघन करी पद्मनाजथी तमे नागा तेने जीती द्रौपदी आणी आपी, तेवारें मारी शक्ति न दीठी? जे हमणा मह्ारुं बलजोवा बेग? एम कही क्रोध चढावी ने पांचे पांडवोने मारवा सारु लोहदंड उपाड्यो, वली दया आवीने जाण्युं जे महोटो अ नर्थ थाशे? एम विचारी पांचे पांडवना रथ नांगी चूर्ण कर्या अने कह्युं के जाउ रे पापीउ हवें मह्ारी नजरे आवशो नही अने मह्ारा देंशमां पण रहेशो नही एम कही पांचे बांध वने देंशनिकाल कर्या अने जिहां रथ नांग्या, तिहां रथमर्दन कोट थयो, श्रीकृष्ण पोतानी सेना लइ द्वारकामां गया अने पांडव पण द्रौपदीने लइ सेना सहित हस्तिनापुरें आवी कुंता जीने देंशनिकालनी वात कही, तेवारें कुंताजी द्वारकामां आवी श्रीकृष्णने मीठे वचनें संतोषी पांडवोने बोलावी श्रीकृष्णने पगे लगाड्या पछी श्रीकृष्णे आज्ञा आपी के ज्यां में तमारा रथ नांग्या त्यां तमे पांडवरथनुपुर नगर वसावीनें रहो पछी पांडवो त्यां श्रीकृष्णजीनी सेवा करता थका रह्या छेवट पांडुसेन नामें पोताना पुत्रने राज्य पाटें थापी पांच पांडव अने छठी द्रौपदीयें दीक्षा लीधी, छठ, अठमादिक तप करी चौद पूर्व नणी ते पांचे पांडव श्रीश त्रुंजय तीर्थ उपर मोक्षें गया, अने द्रौपदी पण अगीआर अंग नणी मासनी संलेषणा करी पांचमा ब्रह्मदेवलोकें गइ. तिहांथी चवी महाविदेंहक्षेत्रें मोक्ष पामशे. ए रीतें जंबूद्वीपनो वासु देंव, धातकीखंडमां न जाय, ते गयो. ए पांचमुं अछेरूं जाणवुं. वली केटलाएक आचार्य एम कहे छे के बे वासुदेंवनुं शंखेशंख पण नेगो न थाय अने इहां शंखेशंख मल्यो, माटे ए पण अछेरूं जाणवुं. ॥ ६ ॥ ४ ॥ हवे छठुं आश्चर्य कहे छेः—युगलिया मरण पामीने नरकें न जाय, अने अहीं हरि तथा हरिणी, ए बें युगलिया मरण पामीने नरकें गयां माटे

ए अछेरूं थयुं. तेनी कथा आम छे के, जंबुद्वीपमांना जरतक्षेत्रनेविषे कोशंबी नगरीनो सुमुख नामें राजा हतो. एकदा प्रस्तावें वसंत ऋतुयें ते राजा हाथीऊपर आरूढ थइ नगरीनी नजीकना वनमां रमवाने अर्थें जतो हतो. मार्गें जतां वीरकनामें कोलीनी वनमाला नामे नार्या अत्यंत स्वरूपवती छे ते पोताना धणीने घणी वल्लन्न छे तेने देखीने मांहोमांहे सराग दृष्टियें जोतां प्रीतिजाव उत्पन्न थयो तेथी राजा त्यांथकी आगल जाय नहीं. तेवारें सुमतिनामा प्रधान कहेवा लाग्यो के हे स्वामि! समस्त सौजन आव्यां छतां तमें आगल केम चालता नथी? ते सांजली राजा पोताना प्रधाननी लाज आणी आगल वनमां गयो. पण शून्यचित्तथको मनमांहे केवल ते स्त्रीनुं चिंतवन छे तेथी क्यांयें पण चेन पामतो नथी. ते जोइने प्रधानें पूछ्युं के हे महाराज! तमें आज आवा शून्यचित्त केम देखाउ छो? एम फरी फरी घणो आग्रह करी पूछ्याथकी पोताना मननी सर्व वात राजायें प्रधानने कही. ते सांजली प्रधान बोल्यो के तमें कांइ चिंता करशो नहीं; हुं तमने ए स्त्री मेलवी आपीश. पछी घेर आवी प्रधानें आत्रेयिकानामें परिव्राजिकाने बोलावी सर्व वात समजावी वनमालानी पासें मोकली, ते पण त्यां जइ जुए छे तो वनमाला पण विरहविह्वलथकी मुखें निःश्वास नाखती क्षणेक बेसे, क्षणेक उठे, क्षणेक पडे, ए रीतें महाविरहिणी देखी तेने ते परिव्राजिका केहेवा लागी के हे वत्से! तुं आज एम दुःखित केम देखाय छे? ताहारुं दुःख मने कहे तो हुं ते दुःखथी तने पार उतारुं. ते सांजली वनमालायें गुह्यनी वात कही. तेवारें परिव्राजिका बोली के हुं तने राजानी साथे काले मेलवीश, तुं कांइ चिंता करीश नहीं, पछी ते परिव्राजिका हर्षवंतथकी त्यांथी जइ सर्व वात प्रधाननें कही. प्रधानें जई राजाने सर्व वृत्तांत संज

लाव्युं. तेवार पछी प्रन्नातें परिव्राजिका वनमालाने राजा पासें तेडी आवी. राजायें हर्षवंत थइ अंतःपुरमां तेने राखी अने तेनी साथें ते पंचविध विषयसुख नोगववा लाग्यो.हवे वीरक कोली घेर आव्यो, तेवारें तेणें स्त्रीने दीठी नहीं. पछी पाडोशी प्रमुखने पूछतो थको नार्यांना विरहथी घेलो थयो थको आखा गाममां हे वनमाला हे वनमाला करतो फरतो फरतो एक दिवसें चोमासामां राजाना प्रासाद नीचें आवी उन्नो रह्यो तेवामां राजा पण वनमालानें साथे लइ गोंखमां आवी बेठो. राजायें वीरककोलीने देखीने मनमां विचार्युं जे में पापिष्टें पारकी स्त्री लइ लीधी ए अत्यंत लोक विरुद्ध अनार्य कार्य कीधुं. माटें मने धिःकार छे एम मनमां घणीज पोतानी निंदा करवा लाग्यो. अने वनमालायें पण विचार्युं जे में पापणीयें स्नेहवंत नरतारने त्याग्यो ए महारा विरहथी ग्रंथिल थयो माटे महारी शीगति थाशे एम बन्ने जण पश्चात्ताप करे छे. तेवामां अकस्मात् उपरथी विजली पडी तेथी बेउ जणां शुन्न ध्यानें मरण पामी हरिवर्ष क्षेत्रे युगलिया पणे उपन्यां.त्यां समस्त मनोवांछित कल्पवृक्ष पूर्ण करे छे अने सुखें रहे छे. पछी वीरक कोली पण ते बेहुनुं मरण जाणी ग्रंथिलनाव त्यागी, अज्ञान तपस्या करी सौधर्म देवलोकें किल्बिषिया देवमां जइ उपन्यो त्यां अवधिज्ञानें जोयुं त्यारे जाण्युं के अरे महारा पूर्वनवना वैरी तो युगलीया थया छे, ते त्यांथी मरण पामीने वली देवता थशे माटे ए देवता न थाय एवो उपाय करुं एम विचारी ते युगलने त्यांथी उपाडीनें चंपानगरीमां इक्ष्वाकुवंशनो चंद्रकीर्त्ति राजा अपुत्रीयो मरण पाम्यो छे त्यां नगरनां लोक सर्व आपणो कोण राजा थाशे एवी चिंतामां पड्या छे एटलामां ते देवतायें ते युगलीयाने लावीने नगरीना लोकोने सोंप्या अनें कह्युं के हुं तमारे माटे ए राजा लाव्यो छुं, एने जेवारे

भूख लागशे तेवारे ए कल्पवृक्षनां फल खाय छे, तेनी साथें मांस मेलवीनें खवरावजो तथा आहेडो करवा शीखावजो, देवतायें मनमां विचार्युं जे ए मांस भक्षण करशे अने मांसना लोलुपी थाशे तेथी मरण पामीने नरके जाशे तो महारुं वैर वलशे एम चिंतवी हरि अने हरिणी एवुं तेनुं नाम आपी देवता पोतानें स्थानकें गयो, लोकें पण देवताना कह्या प्रमाणे तेने मांस मदिरा खवराववा शीखव्युं तेथी ते मांसना लोलुपी थयां, पछी ते हरिराजाना पुत्रादिक जे थया तेनो त्यांथी हरिवंश कुल कहेवाणो, ते हरिने हरिणी मरण पामी नरकें गया एरीतें युगलीया नरकमां जाय नही ते गया माटे ए छठुं आश्चर्य जाणवुं ॥ ६ ॥ ॥ हवे सातमुं अछेरुं कहे छे. आ भरतक्षेत्रने विषे बिभेलनामा सन्निवेषें एक पूरण नामा शेठ रहेतो हतो ते एक दिवसें पाछली रात्रें जाग्यो थको कुटुंब जागरण करतां मनमां विचार उपज्यो के, महारा धरमां घणुं धन परिवार छे ते में पूर्वला भवमां कोइ सारी धर्मकरणी कीधी छे तेना योगथी हुं संपदा पाम्यो छुं माटे फरी हमणा पण कांइक धर्मकरुं तो वली आगल पामीश, एम चिंतवी, प्रभातें स्वजनादिकने पूछी, पुत्रनें कुटुंबनो भार सोंपी, पोते तापसी दीक्षा लइने एवो अभिग्रह कर्यो के जावज्जीव सुधी महारे छठ छठ एटले बे बे उपवासें पारणो करवो अने पारणानें दिवसें चारखूणानुं पात्रुं लइने भिक्षा मागवी तेमां पहेला खूणामां जे भिक्षा मले ते जलचर जीवोने खवरावी देवी, पण महारे खावी नही तथा बीजा खूणामां जे भिक्षा पडे ते पंखीउंने खवरावी देवी तथा त्रीजा खूणामां जे भिक्षा पडे ते अभ्यागतने खवरावी देवी तथा चोथा खूणामां जे भिक्षा पडे ते जलमां धोइनें महारे पोतें खावी एरीतें बार वरस पर्यंत तपस्या करी मरण पामीनें चमरचंचा राज्यधानीमां चमरेंद्रपणे भुवनपति देवोमां जइ

उपन्यो त्यां उपजतांज अवधिज्ञानें करी जोयुं तो सौधर्मेंद्रना पग पोताना मस्तक उपर दीठा तेथी महाक्रोध उपन्यो तेवारें सर्व सामानिक देवोने बोलावीने कह्युं के हे देवो ! आ कोण दुष्ट माठा पुण्यनो धणी जे म्हारा मस्तकें पग देइने बेठो छे, तेवारें देवो. बोल्या हे स्वामी पूर्वे जन्मनें विषे संपादन करेला पुण्यें करी सर्वना करतां अतिशय समृद्धि अने पराक्रम छे जेनुं एवो आ सौधर्माधिप छे. ए अनादिकालनी मर्याद छे माटे इहां तमारे कोप न करवो तमारा सर खा इंद्र पूर्वे थइगया तेना उपर पण एमज पग रहेता आव्या छे माटे इर्ष्या म करो इत्यादिक देवोये कह्युं तोपण चमरेंद्र क्रोधें नर्यो थको बोल्यो के जेनी उपर सोधर्मेंद्र पग राखे एवा पूर्वे थयेला चमरेंद्र ते जूदा अने हुं जूदो माटे हुं त्यां जइ सौधर्मेंद्रने पग पकडी हेठो नाखुं, एवुं कही आयुधशालामां आवी, परशु शस्त्र हाथमां लइने सौधर्मदेवलोकें जावा लाग्यो तेवारें सर्व देवोये वर्ज्यो तोपण कोइनुं मान्युं नही, ते वखत सुसुमारपुरने विषे श्रीमहावीर प्रतिमा स्थित रह्या हता तेनुं शरण लइने लाखयोजननुं रूप विकूर्वी ब्रह्मांड फूटीपडे एवो शब्द करतो, पगथी धरती कंपावतो, हाथें तालोटा देतो, मेघनी परें गर्जारव करतो, वीजलीनी पेरें जबकार करतो, ज्योतिष्यचक्रनें त्रास पमाडतो, देवताउने जयभ्रांत करतो, देवीउ बीक पाम ती थकी देवोने गले वलगवा लागीउ एवा प्रकारनो कोलाहल करतो, परिघायुध फेरवतो, ग र्वेकरी अंध थयो थको सौधर्मेंद्र साहामो धायो त्यां पोतानो एक पग सौधर्मावतंसक विमान नी पद्मवर वेदिकाने विषे अने बीजो पग सौधर्मसभामां राख्यो तेवारें सर्व सौधर्मदेवलोकना देवता जयभ्रांत थइने इहां तिहां नाशीगया चमरेंद्र बोल्यो अरे देवो तमारो इंद्र क्यां छे ? काली अमावास्यानो जन्म्यो मने बतावो तो हमणा फरसुथी मारी नाखुं एवुं देवताउने क

हीने मुखमांथी अग्निज्वाला काहाडतो थको, लांबाहोठ, कूवा सरखा गाल, खाड सरखा नाकना फोरणां, अग्नि सरखां नेत्र, सूपडा सरखा कान, कुसी सरखा दांत, गलामां सर्प, हाथमां वींछीना घरेणा, क्यांकतो उंदरो बांधेला, क्यांकतो नोलीया घोह बांधेली, कालुं रूप धारण करेलुं एवो देखी, देवदेवीयें कोलाहल कर्यो, ते कोलाहल सांभलीनें इंद्रें अवधिज्ञाने जोयुं तेवारें जाण्युं जे एतो चमरीयो अडधो घडो भरेलो छलके छे माटे हवे एने हुं शिक्षा आपुं एम विचारी, हजार देवताउथी उपडी शके नही एवुं अग्निज्वाला करतुं देदीप्यमान वज्र चमरीया उपर मूक्युं ते पोतानी उपर आवतुं देखीनें चमरेंद्र बीक पामतो थको माथो नीचुं अने पग उंचा करेला एवो थको, त्यांथी नाठो तेना क्यांएक घरेणा पड्या, क्यांएक पोतें पडतो थको नासवा मांड्यो पण स्वभावें चमरेंद्रनी नीचे आववामां शक्ति घणी होय अने वज्रने उंचुं चडवामां शक्ति घणी होय तेथी छेटुं रही गयुं त्यारें चमरेंद्र पोताना लाख योजन वाला विकूर्वेला शरीरनो उपसंहार करी, “शरणं शरणं” एवुं बोली, कुंथुआ जेवो सूक्ष्म थइने श्रीमहावीरस्वामीना चरणनी वचमां प्रवेश करतो हवो एवीरीतें वज्रथी डरतो थको श्रीमहावीरस्वामीने शरणे बेठो एटलामां शक्रेंद्रें जाण्युं जे चमरीयानी एटली शक्ति नथी जे विना शरणे इहां चाल्यो आवे माटे निश्चेंथी ए श्रीअरिहंतनुं अथवा अरिहंतनी प्रतिमानुं अथवा भावित अणगारनुं शरण लेइनें इहां आव्यो हशे ? तो रखे आशातना थाय नही ? एवुं विचारी अवधिज्ञाननो उपयोग आपी जोयुं तो श्रीमहावीरस्वामीनुं शरण लेइ आव्यो हतो एवुं जाणी तत्काल वज्रनी पाछल शक्रेंद्र पण चाल्यो ने श्रीमहावीरस्वामीथी चार अंगुल अप्राप्त थयेला वज्रनें पाछुं खेंची लीधुं कारणके महावीरस्वामीथी चार आंगुल

छेटें वज्र परिभ्रमण करतुं हतुं पण तीर्थंकरनी आशातना टालवा माटे तीर्थंकरनी पासें वज्र जाय नही एरीतें चमरेंद्रने श्रीमहावीरने शरणे आव्यो जाणी छोडी दीधो अने भगवानने कह्युं हे प्रभु ! म्हारो अपराध खमजो एवुं कही लगारेक दूर जइने पगथी जमीकूटीने बोल्यो अरे चमर हवे श्रीवीरभगवाननी कृपायें तुं म्हारो भय म राखजे एवुं कही भगवानने वांदी तेमनी आज्ञा लेइ शक्रेंद्र पोतानें स्थानकें गयो, चमरेंद्र पण नाना प्रकारें भगवाननी स्तुति करी, वांदीनें पोतानी चमरचंचा राजधानीयें गयो, त्यां पोताना सिंहासन उपर उदास थइ बेगे त्यारें सामानिक देवे आवी वधाव्यो अने कह्युं के शोच कां करो छो तेवारें चमरेंद्रे पोतानी वीतक वात सर्व कही अने कह्युंके हे देवाणुप्रियो ! ए सर्व श्रीवीरभगवाननो उपकार छे माटे वांदवानें चालो एम कही सर्व देव देवीयोने लइ महोटी ऋद्धि सहित आवीने श्रीमहावीरने वांदी नाटक करी पोताने स्थानकें गयो एरीतें पातालवासी चमरेंद्र उंचो सौधर्मदेवलोकें जाय नही ते आ अवसर्पिणी कालें गयो माटे ए सातमुं चमरोत्पात नामे आश्चर्य जाणवुं ॥ ७ ॥ हवे आठमुं अछेरुं कहे छे. अष्टापद पर्वत उपर उत्कृष्ट पांचशे धनुष अवगाहना वाला एक श्रीऋषभ देव पोतें अने भरत विना नवाणुं भगवंतना पुत्र, तथा आठ भरतना पुत्र मली एकसो ने आठ पुरुष एक समयमां सिद्धि पाम्या, ते मध्य अवगाहना वाला सीझे पण उत्कृष्ट अवगाहना वाला एक समयें एकसोने आठ न सीझे, मात्र बेज सीझे अने इहां एकसो आठ सिद्धा माटे ए आठमुं अछेरुं जाणवुं ॥ ८ ॥ ॥ हवे नवमुं अछेरुं कहे छे. श्रीमहावीर देव कोशांबी नगरीयें समोसर्या, त्यां चंद्रमा अने सूर्य जेनां शाश्वतां विमान, ज्योतिषचक्रमां छे. ते तेज विमानमां बेसीने पश्चिम पोरसियें श्रीमहावीरने वांदवा सारु आव्या, अहिं

आं कोइएक एवुं कहे ठे के उत्तर वैक्रिय विमानमां बेशीने आव्या, परंतु तेम न जाणवुं. ए मूलगें विमानें बेशीनेज वांदवा आव्या ठे ते, मूलगें विमाने कोइवारें न आवे अने हमणां आव्या माटे ए अछेरुं जांणवुं ॥ ए ॥ हवे दशमुं असंयती, आरंजी, परिग्रहवंत, अब्रह्म चारी गृहस्थना वेषें रहेला, तेनी पूजा, सत्कार ते असंयतिपूजा नामें दशमुं अछेरुं ठे, ते आ वी रीतें के श्री सुविधिनाथना निर्वाण पठी केटलोक काल व्यतिक्रम्यानंतर हुंमावसर्पि णीना दोषने लीधे साधुउनो विछेद थयो, सर्व साधुकाल करी गया कोइसाधु रह्यो नही, ते वारें लोक बोल्या हवे कोने पूजीयें तेवारें रुषजदेवजीनी वारें श्रावक ब्राह्मण कहेवाता तेनो दारवलो लइ जे स्थविर श्रावक हता, तेनी पासें जइ लोको धर्म पूठवां लाग्या ते पण जेवुं जा णता हता, तेवुं तेउने कहेवा लाग्या. लोक पण तेमने धन वस्त्रादिक देवा लाग्या, तेथी तेउ गर्वित थया थका पोतानां मनःकल्पित नवीन शास्त्र बनावी कहेवा लाग्या के. जे कोइ पृथ्वी शय्या, मंदिर, सुवर्ण, रूपुं, लोह, कपास, गाय, कन्या, अश्व अने गज, अमने आपे, ते आ लोकें तथा परलोकें महा फल पामे अने अमेंज सुपात्र ठइयें. एवो उपदेश सांजली लोके तेमने गुरु करी मान्या. एवी असंयतीनी पूजा चाली. एम केटलाएक कालें तो वली साधुनो धर्मज विछेद गयो अने जैन विना पांखमी संन्यासी प्रमुख अन्य दर्शनीज पूजाववा लाग्या, प्रथम सदां सर्वदा संयतीनी पूजा थती हती. तेथी विपरीतपणांयें करीने श्रीशीतलनाथजिननां तिर्थ बेसतां सु धि आश्चर्य चाल्युं, इहांजे साधु नहोय अने साधुपणें पूजाय ते आश्चर्य जाणवुं तेमज श्रीतीर्थ करोनुं तीर्थविछेद नथाय ते विछेद थयो ते पण आश्चर्य जाणवुं ए दशमुं अछेरुं ठे ए रीतें ए दश आश्चर्य आ चोवीशीमां थयां. वली अनंते कालें थशे ॥ १० ॥ हवे दश अछेरां

कया कया तीर्थंकरनी वारें थयां ? ते कहे ले. श्री ऋषनदेवना वारामां एकशो ने आठ सिद्ध थया ॥ १ ॥ श्री शीतलनाथना वारामां हरिवंश कुलनी उत्पत्ति थइ ॥ २ ॥ श्री मल्लीनाथ ना वखतमां स्त्री तीर्थंकर थइ ॥ ३ ॥ श्री नेमिनाथना वखतमां अमरकंका नगरीयें श्रीकृष्ण नुं गमन थयुं ॥ ४ ॥ अने श्री सुविधिनाथना वारामां असंयती ब्राह्मणोनी पूजा थइ ॥ ५ ॥ ए असंयतीनी पूजा तो श्री आदिनाथना वखतमां पण मरीचि कपिलादिकनी सांतति यें लेयें. एम घणुं करीने बीजा तीर्थंकरोना वारामां पण प्रवाहें थाय ले ॥ ॥ अने पांच अछेरां श्री महावीर स्वामीने वारें थयां ॥ १० ॥ ॥ इति अछेरा अधिकार संपूर्ण ॥ ॥ हवे इंद्र महाराज विचारे ले के जगवान श्रीमहावीर स्वामी माहणकुंम नगरें ऋषनदत्त ब्राह्मणनी नार्या देवानंदानी कूखमां उपन्या ए आश्चर्य थयुं, जे माटे तीर्थंकर, चक्रवर्त्ती, बलदेव अने वासुदेव एमनो जो नीचगोत्रकर्मक्षय न थयो होय, वेद्यो न होय, निर्ज्जर्यो नहोय, ते कर्म उदय आवे तेना उदयें करीने श्रीअरिहंत, चक्रवर्त्ती बलदेव अने वासुदेव ते पण अंतप्रांत तुछ दरिद्री प्रमुख कुलमां आव्या, आवे अनें आवशे. कूखने विषे गर्नपणे उपन्या ले, ऊपजे ले अनें उपजशे पण जे योनी मारगे जन्म पणे निकलवुं ते कोइ निकल्या पण नथी निकलता पण नथी अने निकलशे पण नही एटले जन्म्या पण नथी, ज न्मता पण नथी अने जन्मशे पण नही ॥ १९॥ ॥एवीरीत ले पण ए जगवान श्रीमहावीरस्वामी, माहणकुंमनगरमां ऋषनदत्त ब्राह्मणनी नार्या देवानंदा तेनी कूखमां आव्या ॥ २० ॥ तो हवे महारो ए आचार ले के जे वखते जे इंद्रहोय ते इंद्र ते वखतें अरिहंत, चक्रवर्त्ति, बलदेव, वासुदेव ए जो अंतप्रांत तुछ दरिद्री प्रमुख यावत् ब्राह्मणना कुलोमां आवी उपन्या होय तो

तेने अंतप्रांतादिक नीच कुलोमांथी लइने, उग्र, भोग, राजन्य,क्षत्री, हरिवंश इत्यादिक उत्तम कुलोमां संहरावे, ए कुलोमां लावी मूके, नीच कुलमां जनम थवा आपे नही, ए सर्व त्रणे कालनां जे इंद्रहोय तेमनी मर्याद छे तो निश्चें हुं पण भगवान श्रीमहावीरस्वामीने देवानंदा ब्राह्मणीनी कूखमांथी लइने न्यातक्षत्री, जात सिद्धार्थक्षत्री, तेमनो काश्यप गोत्र, तेनी भार्या त्रिशला क्षत्रीयाणीनी कूखमां गर्भपणे मूकुं,एवुं तेमना भाग्य प्रमाणे विचारीनें इंद्रमहाराजें, हरणीगमेषी नामा देव जे पायदल कटकनो मालेक छे तेने बोलावीने एवीरीतें कह्युं ॥२१॥ के निश्चें हे देवाणुप्रिया! आ वात थइ नथी,थाती नथी ने थासे पण नही जे श्रीअरिहंतादिक शिलाका पुरुषो छे ते अंतप्रांतादिक नीचकुलोमां आव्या, आवे अने आवशे ॥ २२ ॥ अने जो कोइ नीचकुलमां आवेतो ते, लोकोमां अछेरो कहेवाय, अनंता उत्सर्प्पिणी अवसर्प्पिणी कालथी जो कोइ अरिहंतादिकोनो नीचगोत्रकर्मनो क्षय न थयो होय, वेद्युं भोगव्युं न होय ते उदय आवे तो श्रीअरिहंतादिक नीचकुलमां आवे खरा पण तेनो ते नीचकुलमां योनि मार्गें जन्म नथाय ॥ २३ ॥ अने ए भगवान श्रीमहावीरस्वामी, जंबूद्वीपना भरतक्षेत्रमां ब्राह्मणकुंडगामे ऋषभदत्तब्राह्मणनी भार्या देवानंदा ब्राह्मणीनी कूखमां उपन्या ॥ २४ ॥ तो अतीत, अनागत अने वर्त्तमान ए त्रणेकालें जेवारें जे इंद्र होय तेनो ए आचार छे जे श्री अरिहंतादिक जो नीचकुलमां आवी उपजे तो तेने उग्रादिक उंच कुलोमां जइ मूकवुं॥२५॥ तेमाटे हे देवाणुप्रिया! तमे जाउ ते भगवान श्रीमहावीर स्वामीनें ब्राह्मणकुंडगाम नगरने विषे ऋषभदत्त ब्राह्मणनी भार्या देवानंदानी कूखमांथी लइने, क्षत्रीयकुंड नगरने विषे सिद्धार्थक्षत्री राजा तेनी भार्या त्रिशला क्षत्रियाणी छे तेनी कूखमां गर्भ पणे जइ मूको अने

त्रिशला क्षत्रियाणीनो जे गर्न छे ते देवानंदा ब्राह्मणीनी कूखमां मूको आ महारी आज्ञा तत्का ल करीनें पाछी सोंपो अर्थात् ए काम करीने पाछुं मने आवी कहो. के जे आपे फरमास करी ते काम हुं करी आव्यो छुं एवुं कहो ॥ २६ ॥ ॥ इहां कोइ प्रश्न करेके इंद्रमहाराजनें एज विचार केम उपन्यो जे देवानंदानी कूखमांथी अपहरीने त्रिशलाराणीनी कूखमां संक्रम ण करावबो केमके ते वखतमां बीजा पण श्रेणिक प्रमुख महोटा महोटा राजा हता तेमने तो संनार्या नही अने ए सिद्धार्थ तो सामान्य राजा हतो तेने याद कर्यो तेनुं शुं कारण हशे? एनो उत्तर एम छे जे सहु सहुनां पोत पोतानां नाग्य प्रमाणे देवोने पण करवानी बुद्धि उप जे छे, कर्मथी उपरांत करवानी शक्ति देवोमां पण नथी इहां पण पूर्वला नवमां त्रिशलारा णीनो जीव देराणी हतो अने देवानंदानो जीव जेठाणी हतो बन्ने एक घरमां रहेती हती, परंतु कषाय महा बलवान छे जो जीव रुडुं करवानी चाहना करे तो कषाय मारुं करी आपे हवे लोनना वशथी जेठाणीयें देराणीनो रत्नकरंमीयो चोरी लीधो देराणीयें संनाळ्यो पण लाधो नहीं तेवारे बे जणीयोनें घरनी मांहोमांहे घणाघणी बोलाचाली थइ तोपण जेठाणीयें करंमीयो आप्यो नही तेना प्रनावथी कर्म बंधाणुं ते कर्म देवानंदानें उदय आव्यो, त्रिशला नी देवादार हती तेथी इंद्रने पण एवोज विचार स्वानाविक पणे आवीगयो जे त्रिशलाराणी नेंज पुत्र रत्न देवरावुं तेमाटे हे नव्य प्राणीयो तमे जूउ के जे जीव जेवुं शुनाशुन करशे ते जीवने तेवुं शुनाशुन मलशे ए उत्तर कहेवुं. इहां कदापि कोइ अन्यदर्शनी पूछे के ए नगवानने गर्नमां जे आघो पाछो कर्यो ते तमे दीठो तो नथी तेवारें अमे केम मान्य करीयें? एवो प्रश्न करे तेने कहेवुं के तमारा मतमां पण नागवतना दसमस्कंधना बीजा अध्यने बलदेवनुं

परावर्त्त थयुं ने वली पुराणने विषे पण पुरुषोने गर्भ उत्पन्न थया ने ते देवतायें काढ्या ने ए उपर मांधाता राजानी कथा कहे ने:—विशाला नगरीयें वनराजा महाधनवान ने परंतु ते अपुत्रीयो ने माटे पुत्र थवा सारुं शोलशे स्त्री परण्यो तो पण तेने पुत्र थयो नही तेथी ते राजा घणो चिंतातुर थयो जेमाटें शास्त्रमां कह्युं ने के "अपुत्रस्यगतिर्नास्ति, स्वर्गोनैवचनैवच ॥ तस्मात्पुत्रमुखंदृष्ट्वा, स्वर्गंगच्छतिमानवाः ॥ १ ॥ ॥ अपुत्रियाने गति न होय ते अवगतियों थाय तेवारे ते राजायें कोइकना उपदेशथी अठाशी हजार तापस रुषियोने नोतरीनें नोजन कराव्युं तेंत्रीशक्रोड देवता आराध्या, तथापि कोइमां पुत्र आपवानी शक्ति न दीठी तेवारें अठ्याशी हजार रुषियोने पूछ्युं जे स्वामी तमें पेटज नरी जाणो नो पण महारुं काम करंता नथी एवुं राजानुं बोलवुं सांनली एक तापस बोल्यो जे हे राजन्! ताहारे पुत्र थाय एवो उपाय हुं जाणु छुं, हुं तुजने सोनाना कचोलामां पाणी मंत्रीने आपुं ते पाणी ताहारी स्त्रीनें पीवरावजे तेथी ताहारे पुत्र थाशे पछी राजा पाणी मंत्रावीने कचोलो नरी घेर लइ आव्यो एटलामां तो सर्व राणीयोये पुत्र संबंधी वात सांनलीनें प्रत्येक जुदीजुदी राणी राजाने कहेवा लागीके पाणी अमने आपो एम मांहोमांहे क्लेश थवा लाग्यो, राजायें विचार्युं जे हवे हुं कोने पाणी आपुं अने कोने न आपुं! एम चिंतवी कोइनें पाणी आप्युं नही पछी ते कचोलुं लेइ वस्त्रे ढांकी पाणीयारा उपर राखीने राजा पोताने आवासें आवी सूइ रह्यो एटलामां रात्रीयें राजाने तृषा लागी त्यारे पाणी मगाववा सारुं पासे कोइ माणस हतो नही पण एक दासी तेनी शय्या पासे सूतीहती तेनें कह्युं के अरे दासी तृषा लागी ने माटे पाणी लइ आव ते दासीयें जइ मंत्रेलुं कचोलुं पाणीनुं नरेलुं हतुं ते आणी आप्युं

राजायें पण अजाणतां पीधुं ते पाणीना प्रनावथी राजायें गर्न्न धारण कस्यो दिवसें दिवसें पेट वधतुं गयुं तेथी राजा लज्जायमान थयो थको सनामां पण आवे नही, प्रधाने विचास्युं जे ए घणुं खोटुं काम थयुं पढी राजाने कही पाग अठाशी हजार रुषीउने नोतस्या अने उलंनो दीधो जे तमे आ शुं कस्युं? हवे करार करो. पढी रुषीउयें तेत्रीश कोटी देवतानुं आराधनकस्युं तेवारें इंडें आवी पोताना सेवकोने हाथे राजानुं उदर विदारीने मांहेथी गर्न्न काढ्यो तेवारे सर्वे बोल्या जे ए धावी शकशे नही पढी इंडें स्त्रीनुं रूप करी धवराव्यो क्रमेक्रमे वधवा लाग्यो तेनु मांधता एवुं नाम दीधुं इत्यादि अनेक वार्ता ढे माटे गर्न्न पण परावर्त्तन थाय ढे ए वात निःसंदेह ढे इति मांधाताद्दष्टांत ॥ हवे इंडे हुकुम कस्या पढी हरणीगमेषी देवता पालाकटकनो मालेक ते खुशीथइने हाथजोडीने मस्तकें अंजली करीने आज्ञाने विनय सहित प्रमाण करीनें इंडमहाराजनी पासेथी निकलीनें ते हरणीगमेषी उत्तरपूर्वनी वचमांनी इशानखुणमां आवीनें वैक्रियसमुद्घात करे ते केवीरीतें तोके पोताना जीवना प्रदेश शरीरमांथी बाहेर काहाडीने समुद्घात करे संख्याता योजननो उंचो दंमकरे, जीव प्रदेश कर्मपुज्जलनो समूह दंमरूप करीने प्रगट करे ते दंम रत्नमय करे ते रत्न केवी जातिउना होय ते कहे ढे. १ कर्केतनरत्न, २ वैमुर्यनीलरत्न, ३ वज्जरत्न, ४ लोहिताक्षरत्न, ५ मसारगल्लरत्न, ६ हंसगर्न्नरत्न, ७ पुलकरत्न, ८ सौगंधिकरत्न, ९ ज्योतिःसाररत्न, १० अंजनरत्न, ११ अंजनपुलकरत्न, १२ जातरूपरत्न, १३ सुनगरत्न, १४ अंकरत्न, १५ स्फाटिकरत्न, १६ अरिष्टरत्न, ए शोल जातिनां रत्न तेना असार पुज्जलने ढांमीने सार पुज्जल ग्रहण. करे ॥ २७ ॥ करीने उत्तर वैक्रिय धारण करे, मूलरूप तिहांहिंज राखे, नवुं रूप करीनें, मनुष्यलोकमां आवे, केवीगतिथी मनुष्यलोकमां आवे ते कहेढे. एक चंमा, बी

जी चपला, त्रीजी जयणा अने चोथी वेगा ए चारगतियें करीनें चालतां तो केटलोएक काल वीतीजाय तोपण मनुष्यलोकमां आवी शके नही ? ते चारगतिनुं प्रमाण कहेछे. २८३५८० एटले बे लाख त्रियाशीहजार पांचशेंने एंशीयोजन अने एक योजनना साठ जाग करीयें तेवा छ जाग उपर एटला क्षेत्रनुं एक मगलुं जरतो चाले ते प्रथम चंमा गतिनुं प्रमाण जाणवुं तथा ४७२६३३ एटले चारलाख बहोंतेर हजार छशेंनें तेंत्रीश योजन अने त्रीश कला उपर एटला क्षेत्रनुं एक मगलुं जरतो चाले ते बीजी चपलागतिनुं मान जाणवुं तथा ६६१६८६ एटले छ लाख एकसठ हजार छशे छयाशी योजन अने चोपन कला उपर एटला क्षेत्रनुं एक मगलुं जरतो चाले ते त्रीजी जयणागतिनुं मान जाणवुं तथा ८५०७४० एटले आठ लाख पंचाश हजार सातसें चालीश योजन अने अढार कला उपर एटला खेत्रनुं एक मगलुं जरतो चाले ते चोथी वेगागतिनुं मान जाणवुं ए चार गतिना प्रमाण कह्यां हवे ए गतियोना प्रमाणथी जो देवता चाले तो छ महीना सुधीमां पण आ मनुष्य क्षेत्रमां आवी शके नही तेमाटे दिव्य देवगतियें करी असंख्याता द्वीप समुद्र उल्लंघन करतो थको जिहां जंबूद्वीपनुं जरतक्षेत्र तिहां ब्राह्मणकुंम गाम नगर तेमां रुषजदत्त ब्राह्मणनो घर तेमां जिहां देवानंदा ब्राह्मणी सुती छे तिहां आव्यो, आवीनें जगवानने देखी प्रणाम करीने, देवानंदा ब्राह्मणीना सर्व परिवारने अवस्वापिनी निद्रा देइनें अशुज पुजल दूर करीनें शुज पुजल (घालीने) प्रक्षेप करीनें कहेतो हवो के हे जगवन् आज्ञा आपो एवुं कहीने, जगवानने पीडा रहित देवप्रजावे करीने हाथमां ग्रहण करी करसंपुटमां लइने, जिहां क्षत्रियकुंम नगर त्यां सिद्धार्थ क्षत्रिय राजाना घरमां जिहां त्रिशला क्षत्रियाणी छे तिहां आवीने तेना सर्व परिवारनें


चित्र ९
दासी पंखो करती सुई गई छे.
देवानंदा ब्राम्हणी सूतेली छे
हरणी गमेषी देव बालक हरण करी जाय छे.


चित्र १०
दासी
त्रिशला राणी सूता
छे
हरणी
गमेषी
देव
गर्भ
संक्रम
णकरे
छे

अवस्वापिनी निद्रा आपीने अशुज पुजल बाहेर काढाडीनें शुजपुजल प्रक्षेपीने जगवाननें पीडा रहित त्रिशलाराणीनी कूखमां मूक्या. दशमाद्वारथी देवे प्रवेश कर्यो अने नाजिथी पाछो निकल्यो एवुं वृद्ध वाक्य छे. पछी त्रिशलाना गर्जमां पुत्री हती तेने त्यांथी लइनें देवानंदानी कूखमां गर्जपणे मूकीने जे दिशाथी देवता आव्यो हतो ते दिशाये पाछो चाल्यो गयो ॥ २७ ॥ तिहां चंद्रा चपलादिक चारगतिथी अधिक दिव्य देवगतियें करीने तीर्छा असंख्याता द्वीप समुद्रमांथी थइने लाखयोजनना प्रमाणवाला शरीर सरखा पग मूकतो थको उंचो जिहां सौधर्म देवलोकमां सौधर्मावतंसक नामे विमान छे तथा शक्रसिंहासन छे अने जिहां शक्रेंद्रनामे देवताउंनो राजा छे तिहां आव्यो आवीनें शक्रेंद्रने पाछी आज्ञा सोंपी अर्थात् एम कह्युंके तमे कह्युं तें सर्व काम करी आव्यो छुं ॥ २९ ॥ ते कालने विषे ते समयने विषे, श्रमणजगवंत श्रीमहावीरस्वामीने वर्षा कालनो त्रीजो महीनो पांचमुं पखवाडियुं आसु वदि तेरशने दिवसें ब्याशीमी रात वीतीगइ अने त्र्याशीमी रातना वर्त्तमानमां पोताना हितने लीधे अथवा जगवाननी अनुकंपाने लीधे इंद्रे मोकलेला हरणीगमेषी देवता तेणे ब्राह्मणकुंमगाम नगरमां रुषजदत्तब्राह्मणनी जार्या देवानंदा ब्राह्मणी छे तेनी कूखमांथी लइने जिहां क्षत्रियकुंम गामनगरे सिद्धार्थक्षत्रिय राजानी त्रिशला क्षत्रियाणी राणी छे तेनी कूखे मध्यरात्रिनेविषे उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां चंद्रमानो योग आव्यां थकां पीडा रहित मूक्या ॥ ३० ॥ ते कालने विषे ते समयने विषे जगवान त्रणज्ञान सहित आवी उपन्या तिहां मुजने इहांथी संहरण करशे एवुं जाणे पण संहरणनी वेला सूक्ष्म छे माटे ते जाणे नही अने संहरण कर्या पछी जाणे जे मने संहरण कर्युं एवुं जाणे. जे रात्रिमां श्रमणजगवंत श्रीमहावीर स्वामीनें देवानंदानी कूखथी लइने त्रि

शला क्षत्रियाणीनी कूखमां गर्जपणें मूक्या ते रात्रियें देवानंदा ब्राह्मणी पोतानी सुकोमल शय्या मां सूति कांइक जागतीने सुपनुं आव्युं के महारा जे महामंगलकारी चौद स्वप्नां हतां ते त्रिशलाक्षत्रियाणीयें खेंची लीधां एटले हरणकर्यां एवुं सुपनुं देखीने जागी ॥ ३१ ॥ ॥ जे रात्रिमां श्रमणजगवंत श्रीमहावीरस्वामीने देवानंदानी कूखमांथी लइने त्रिशलाक्षत्रियाणी वासिष्ठ गोत्रवाली तेनी कूखमां मूक्या ते रात्रिमां त्रिशला क्षत्रियाणी शय्यामां सूती हती ते शय्यानुं स्वरूप आवीरीतें कह्युं ठे तिहां प्रथमतो जेनुं स्वरूप कहेवामां आवे नही एवुं तो वसवानुं घर ठे ते घर कहेवुं ठे तोके ते घरनी मध्य एटले जींतनी मांहेनी बाजु चित्रें चित्रित ठे अने जींतनी बाहेरनी बाजुने घसीने धोली चलकादार करी ठे एवुं ते घर ठे जिहां उपरनो जाग चित्राम सहित ठे अने जमीननो जाग तो जेवो मणिरत्नोनो उद्योत होय तेवो ठे तेथी ते घरमां सर्व अंधकारनो नाश थइगयो ठे, अने नित्य उद्योत रहे ठे वली जेने विषे जमीन उपर अनेक मांमणा मांम्या ठे एवुं आंगणुं ठे वली आंगणे सरस सुगंधि पांच वर्णना फूलनां पुंज मूकेला ठे ते फूलोनी रचना सहित ठे तथा कृष्णागर जलो कुंदरु शिलारस तेनो धूप तेणे घमघमायमान ठे तेणे करी मनोहर ठे सुगंध प्रधान चूर्णनो गंध ठे जिहां, गंधवट्टी समान ठे. तिहां पुण्यवंतने योग्य जेनुं वर्णन करवामां न आवे एवी शय्या ठे तेने विषे शरीर प्रमाणे बे पासें उशीसा तकीया राख्या ठे, बे पासे गालमसूरीयां मूकेलां ठे, बे पासें उंची ठे,मध्यमां उंमी ठे, जेम गंगानदीनी रेतिमां पग मूकीयें ते नीचो जाय तेम जेमां पग मूकतां नीचो जाय ते समान नीखाव्या अतलसना पटकूल वस्त्रें ते खाट ढांकी ठे, वली मच्छरदानीयें रचित. रजराखवाना वस्त्र लाल रमणीक सुकोमल वस्त्रे ढांकी ठे. आकडानां फल मांहेनो कपास तथा माखण ते सरखो ते श

चित्र ११





य्यानो स्पर्श छे, नलुं सुगंधित चूर्ण तथा फूलो जेने विषे विछाव्यां छे, एवी शय्या ते शय्याने विषे मध्यरात्रिना अवसरमां त्रिशलाक्षत्रियाणी अल्पनिद्रामां सुती छे ते वेलायें गजवृषनादिक चौद स्वपनां देखीनें जागी ॥३१॥ ॥ तेवारें ते त्रिशलाक्षत्रियाणी ते चौद स्वप्नामांथी पहेले स्वपनें हाथी देखे ते हाथी कहेवो छे तो के? चार दांत वालो छे, घणो उंचो छे, जेवा मेघ नां छांटा धोला थाय तेवो धोलो छे, तथा जेवो मोतीनोहार, क्षीरसमुद्रनुं पाणी, चंद्रमाना किरणो, पाणीना कणीयां, अने रुपानो पर्वत एना सरखो धोलो छे, वली ते हाथीनाकुंन स्थलमांथी मद झरे छे तेथी तेना कपोल पासें ज्रमरा गुंजारव करी रह्या छे, इंद्रना ऐरावत सरखो महोटो देखाय छे, ते हाथी मेघनी पेरें गंजीर शब्दें गाजतो थको छे, शुज उत्तम सर्व लक्षणे करी सहित, महोटा पेट वालो एवो हाथी पहेले स्वप्नें त्रिशलाक्षत्रियाणीयें दीठो ॥ ॥ १ ॥ ३३ ॥ ॥ तेवार पछी बीजे स्वप्ने त्रिशलाक्षत्रियाणी वृषज देखे ते वृषज कहेवो छे तोके? धोला कमलना समूह सरखो श्वेत छे, तथा पोताना शरीरनी कांतियें करी सर्वदिशा उमा उद्योत करतो थको छे, तथा घणी शोजाना समूहे करी शोजित एवी खांधानी शूनि छे जेनी एवो छे वली तेना शरीरमां पातला केश छे ते केश जाणे तेलें चोपड्या होयनहि? एवा छे, घणो रुडो स्थिर शरीर छे, वली जिहां जेवुं अंग जोइयें त्यां तेवुं अंग छे, जेनुं एटले जिहां पातलुं अंग शोजे तिहां पातलुं छे अने जिहां जाडुं अंग शोजे तिहां जाडुं अंग छे तथा दृढ गोल शोजायमान मलरहित तैलादिकें चोपड्या तीखां एवा बे शींगडा छे जेनां तथा मोती सरखा उजला बरोबर सरखा शोजता दांत छे जेना एवो वृषज ते जाणीयें अनेक मंगलनुंज मुख होय नहि? तेने बीजा स्वप्नामां त्रिशलायें दीठो ॥२॥३४॥ ॥ तेवार पछी त्रीजा स्वप्नामां त्रिशला राणी

सिंहने देखे ते सिंह कहेवो छे तोके? मोतीनोहार, खीरसमुद्रनुं पाणी, चंद्रमाना किरण, पाणीना कणीया, तथा रूपानो पर्वत तेना सरखो धोळुं शरीर छे जेनुं वळी ते सिंह रमणीक देखवा योग्य छे, तथा दृढ छे हाथ प्रमुखना अवयव जेना, वळी उज्वल गोळ अने तीक्ष्ण एवी जेना मुखमां दाढा छे तेणे करी मुख शोभतुं छे जेनुं, वळी कमळ सरखा सुकोमळ राता एवा जेना होठ छे, राता कमळना पत्रनी परें सुकोमळ ताळवुं छे, जीभ बाहेर काहाडतो थको लपलपायमान करतो थको शोभे छे, वळी पीळा अने वीजळी सरखा चळकतां चंचळ जेनां नेत्र छें, वळी विस्तीर्ण पुष्ट अने माता एवा साथळ छे जेना, स्कंध जेनुं दृढ प्ररिपूर्ण निर्मळ छे, वळी सुकोमळ छे नळा विस्तीर्ण एवां जे सिंहकेसरा इहां केसरा एटले मुखना केश जाणवा तेने आटोपे करी शोभित छे मुख जेनुं, वळी जमीन उपर पछाडीने फटकारीने उंचुं कयुं छे पुंछ जेणे एवा पूछडानो अंत एटले छेडो काननी वचमां छे वळी सौम्याकारवाळो लीला करतो थको आकाशमांथी उतरतो थको त्रिशलाना मुखमां पेसतो थको तीक्ष्ण नखवाळो सिंह त्रिशलायें त्रीजा स्वप्नामां दीठो ॥ ३ ॥ ३५.॥ ॥ ते वार पछी चोथा स्वप्नामां त्रिशलाक्षत्रीयाणी संपूर्ण पूर्णिमाना चंद्रमा सरखुं छे मुख जेनुं एवी लक्ष्मीदेवताने देखे ते लक्ष्मी किहां रहे छे ते कहे छे. उंचो हिमाचल पर्वत तेनी उपर एक पद्मद्रह छे ते द्रहमां एक कमळ छे तिहां रहेवा वाळी लक्ष्मी देवता तेनो पगथी लइने सर्व अंगनी शोभानु वर्णन श्रीभद्रबाहुस्वामी करे छे केमके प्रायें देवताना रूप वर्णनमां पगोथी वर्णन कराय छे माटे आंहीं पण पगोथी मांमीने वर्णन करे छे, ते लक्ष्मीदेवीना पग भले प्रकारें करी सोनाना काचबा सरखा जाणे लाखने रसे रंग्या मांस सहित एवा वचमां अति उंचा अने

चित्र १२





पळवाडे नम्या एवा छे तथा त्रांबा सरखा नख छे, कमळ सरखा कोमळ आंगळां छे तथा पिंडित केळ सरखी गोळ छे नीचेनीचें पातळी अने उपरउपर जाडी एवी जंघापिंडियो छे तथा गुफ्त मांसथी नेरेला छे माटे गुप्त छे हाड देखाय नही तथा ऐरावत. हाथीना सरखो जंघानो वचलो प्रदेश सोने छे, सोनानी कटिमेखला छे केडमां जेनी, वली लक्ष्मीदेवीनी फूटी थी लइनें स्तन सुधी रोमराजी छे, प्रायें स्त्रीयोना शरीरमां रोमराजी होती नथी तेमां वली देवताने तो सर्वथा नहीज होय तोपण कवीश्वर श्रृंगाररस वर्णन करतो बोले छे, हवें ते रोमराजी कहेवी छे तोके कज्जलनीपेरे तथा नमरानी श्रेणीनी पेरे श्याम छे, मेघघटा सरखी काली छे, सरल मलेला थका सुकोमल, मनोहार विलास सहित सरस सूका फूल सरखा कोमल छे, वली नाजिमंफल नलुं छे जेनुं, मुष्टीमां समाइ जाय एवी कटि छे, पेटमां त्रण सल पड्या तेथी शोनाये मान छे, वली सर्वांगोपांगमां घरेणा आनूषण पहेरेलां छे जेनें ते घरेणा कहेवां छे तोके अनेक प्रकारना मणियोंयें करी जडेला छे, रत्नोयें करी सोनामां मढ्या छे, वली रुदयमां बे स्तन छे ते जाणे सोनाना कलश ज होय नहि ? एवां छे, वली ते स्तन हारें करी तथा कुंदमालायें करी व्याप्त छे तथा नलां मोतीयोनां जालीयां तेणेकरी विराजमान सोनैयानी माला क्यांएक मणिसूत्रनो दोरो छे तेणेकरी कंठ शोनायमान छे, बे कानोमां कुंफल बे शोने छे, एवा घरेणाना समुदायथी लक्ष्मी देवतानुं मुख शोने छे, जेम राजा कुटुंबथी शोने छे तेम लक्ष्मीदेवीनुं मुख घरेणाथी शोने छे वली निर्मल कमलनी पांखडी सरखा दीर्घ तीखां अने अणीयालां एवां महोटां नेत्र छे जेनां बे हाथमां कमल छे तेमांथी पाणी छटकावती थकी छे, वली लीलाने वास्ते हाथमां कमलवींजणो धरेलो छे, ते जेवारें कमल लीलाने सारुं

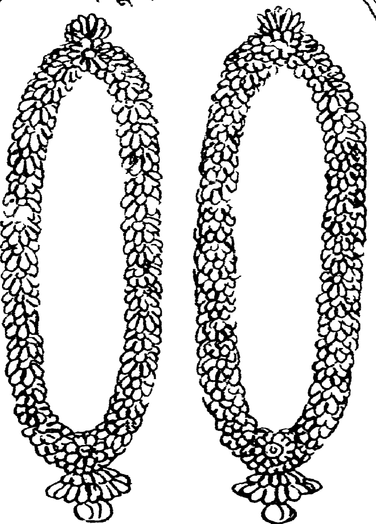
हलावे तेवारें कमलमांथी सुंगध नीकले वली लक्ष्मीदेवीने मस्तकें वेणीदंम घणो निर्मल नखो कालो छे लांबो केड सुधी शोन्ने छे एवी छे. ए नखथी मांमीने माथानी वेणीसुधा वर्णन कर्युं. एवी लक्ष्मीदेवता पद्मद्रहना कमलमां वसती हिमाचलनामा पर्वत उपर बेठी थकी दशदिशाथी शोनायमान छे वली हाथी आवी सूंढमां पद्मद्रहथी जल नरीनें लक्ष्मीदेवीने स्नान करावे एवी लक्ष्मीदेवताने त्रिशलाक्षत्रियाणीयें चोथा स्वनमां दीठी ॥ हवे हिमाचल पर्वत उपर लक्ष्मी देवता नो निवास छे तिहां ए देवीनो परिवार केटलुं छे तथा निवास केवा प्रकारनो छे ते कहे छे. आ नरतखेत्रना छ खंम छे तेना अंतमां उत्तरदिशा तरफ एक चुलहिमवंत पर्वत सोनानो छे ते एकसो योजन उंचो छे, तथा एक हजार बावन योजन अने बार कला उपर, एटलो पोहोलो छे, तेमध्यें पद्महद छे, ते दश योजन उंमो, हजार योजन लांबो, पांचशें योजन पोहोलो छे संपूरण जलेकरी नख्यो शाश्वतो छे, तेनुं तलीयुं वज्ररत्नमय छे, चोफेर पण वज्रमय छे, ते हृदना मध्यनागें एक कमल छे, ते कमलनुं नाल दश योजननुं दीर्घ छे, जलथी उपर बे कोश उंचुं छे, एक योजन पोहोलुं छे, एक योजन दीर्घ छे, कांइक जाजेरा त्रण योजननी परिधी छे, दश योजन पाणीमां नाल छे, तेनुं वज्र रत्नमय मूल छे, रिष्ट रत्नमय मूलनो कांदो छे, इंद्रनील रत्नमय नाल छे, राता सुवर्णमय बाहेरना पांदडां छे,कांइक जांबूनंद सुवर्णमय अन्यंतरनां पांदडां छे, तेमां सुवर्णमय कर्णिका छे, एटले वचली मोमी छे,ते बे कोश पोहोली अने एक कोश उंची छे, तिहां रातां सोनानां केसरां छे ते कर्णिकामां श्री लक्ष्मी देवीनुं नवन छे,ते एक कोश लांबु, अर्धो कोश पोहोलुं अने चउदशें चालीश धनुष उंचुं छे,ते घरनां बारणां पूर्व,दक्षिण अने उत्तर एवी त्रण दिशायें छे, ते बारणां पांचशें धनुष उंचां अने अढीशें धनुष पोहोलां छे. वली ते घरमां

अढीशें धनुष प्रमाण एक मणिमय पीठिका छे, ते पीठिका उपर लक्ष्मी देवीनी शय्या छे, हवे तिहां ए देवीनां मुख्य कमलनी पांखडियें लक्ष्मी देवीने आजरणादिक मूकवानां वलयाकारें एकशो ने आठ कमलो छे, ते कमलोनुं सर्व उंच नीचपणुं मुख्य कमलथी अर्द्ध प्रमाणे जाणवुं. ए एकसोने आठ कमलें करी ते मूल कमल वींटेलुं छे, जेम गढें करी नगरी विंटायेली होय छे, तेम जाणवुं, हवे ते मूलगा कमलना बीजा वलयनी पूर्व दिशायें महर्द्धिक चार देवीउने वसवानां चार कमल छे, तथा वायव्य कोण, उत्तर दिशा, अने ईशानकोण, ए त्रणे दिशायें देवीना सामानिक देवताने वसवानां चार हजार कमल छे, तथा श्री देवीनी अभ्यंतर पर्षदानां जे आठ हजार गुरुस्थानीय देवता छे, तेने वसवानां आठ हजार कमल, अग्नि कोणें छे, तथा मध्य पर्षदाना दश हजार मित्र स्थानीय देवताने वसवानां दश हजार कमल, दक्षिण दिशायें छे, तथा श्री देवीनां बाह्य पर्षदाना किंकर स्थानीय बार हजार देवताने वसवानां बार हजार कमल, नैरुत कोणें छे, अने श्रीदेवीना हाथी, घोडा, रथ, पायक, महिष, नाट्य, गंधर्व, ए सात कटकना स्वामीने रहेवानां सात कमल, पश्चिम दिशायें छे. हवे वली लक्ष्मी देवीना अंगरक्षक शोल हजार देवताने वसवानां शोल हजार कमल, ते त्रीजा वलयनी चार दिशामांहेली प्रत्येक दिशाने विषे चार चार हजार कमल करतां शोल हजार कमल छे, तथा चोथा वलयने विषे श्री देवीना अभ्यंतर आभियोगिक बत्रीश लाख देवताने वसवानां बत्रीश लाख कमल छे, तथा पांचमां वलयने विषे श्री देवीना मध्यम चालीश लाख आभियोगिक देवतानां चालीश लाख कमल छे, तथा छठा वलयने विषे श्री देवीना अडतालीश लाख बाह्य आभियोगिक देवतानां अडतालीश लाख कमल छे, एवं

मूल कमल सहित सर्व मली ठ वलयनां एक क्रोड, वीश लाख, पच्चाश हजार, एकसो ने वीश कमल जाणवां. ते कमलनां मान मुख्य कमलथी मांमी अनुक्रमें अर्द्ध अर्द्ध प्रमाण लेवां. ए सर्व कमलवासी देवता श्रीदेवीनो परिवार जाणवो. ए देवी जवनपति मांहेली जाणवी ॥ ए चोथुं स्वप्नं कह्युं ॥ ४ ॥ ३६ ॥ इहां बीजो वखाण संपूर्ण थयो ॥ २ ॥ ॥

हवे त्रीजो वखाण कहे ठे. तेवारपठी वली त्रिशलाराणी पांचमां स्वप्नमा फूलोनी माला देखे ते मालामां रस सहीत कल्पवृक्षना फूल, तेणे करी घणी मनोहर ठे, वली चंपानां फूल, अशोकनां फूल, पुन्नागनां फूल ते नागप्रियंगु सरखा ए फूलनां जाड थाय ठे, मोगरानां फूल, मालतीनां फूल, जायनां फूल, जूइना फूल, कोह्नज फूल ते कोइ वेलि विशेषना फूल, कोजनां फूल, कोरंटनां फूल, दमणाना फूल, नवमालिकानां फूल, बकुलवृक्षनां फूल, तिलवृक्षनां फूल, वासंतिकानां फूल, पद्मकमलनां फूल, उत्पलते पुंमरीकनां फूल, कुंदमचकुंद वृक्षनां फूल, अगथियाना फूल, आम्रमांजर एवा प्रकारनां फूलोनी घणी सुगंध ठे जेमां एवी बे फूलोनी माला तेनी मनोहर गंधथी खेंचाणा थका आव्यां एवां जे जमरा जमरीयो तेनो गुंजारव शब्द जेनेविषे थइ रहेलो ठे. वली ए बेउ मालामां सर्व ऋतुनां फूल सुगंधा पांच वर्णा ठे परंतु तेमां धोलो वर्ण विशेष ठे, ते ज्यां ज्यां जे जे फूल शोजे त्यां त्यां ते ते फूल गुंथ्यां ठे एवी बे माला पांचमां स्वप्नें त्रिशलादेवीयें दीठी ॥ ५ ॥ ३७ ॥ ॥ तेवार पठी ठठा स्वप्नमां त्रिशला देवी चंड्मा देखे ते चंड्मा कहेवो ठे तोके? गायना दूधना फीण सरखो उजलो ठे, रूपानां कलश सरखो धोलो ठे, वली हृदय नेत्रने वल्लन, संपूर्ण पूर्णिमाना अंधकारने हरवा वालो, वली शुकलपक्षमां शोजायमान, कुमुदवननो बोध एटले उघाडवा वालो, रात्रिनी शोजाने करवा

चित्र १३



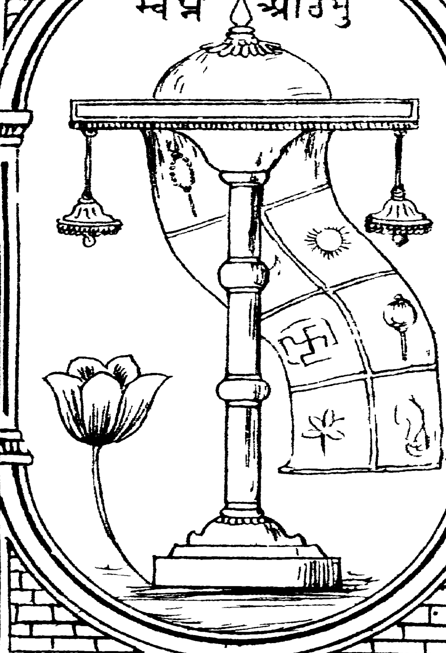


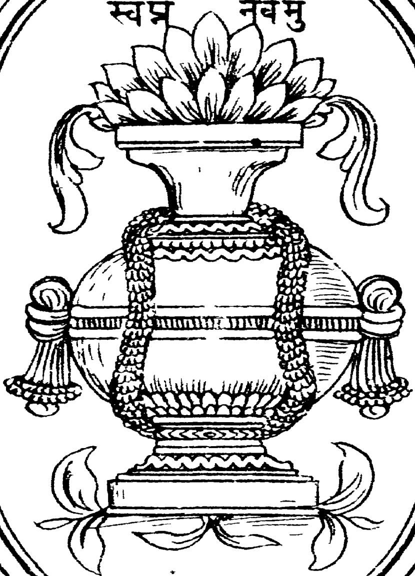


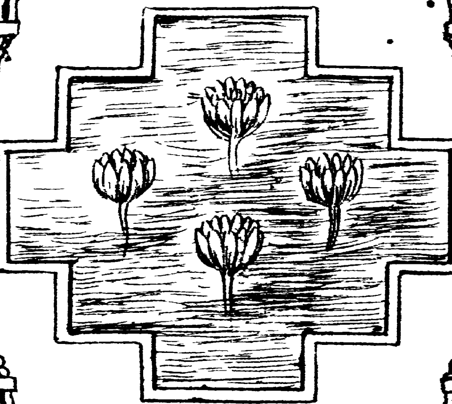
वालो, जलीरीतें उजला काचनी परें शोजायमान, आकाश रूप तलावनो हंस बेउ पद्दें करी पूर्ण, सर्व ज्योतिषियाना मुखनुं मंमन, अंधकारनो वैरी, कंदर्पबाणनो पूरवा वालो, समुड्नां जलनो वधारवा वालो केमके जेवारें शुक्लपक्षमां चंड्मा ऊगे तेवारें समुड्नी वेल वधे, विरहिणी स्त्रीनें चंड्ना उदयथी अधिक विरह जागृत थाय तेमाटे विरहियोने किरणोये करी शोषण करवा वालो, आकाशनुं तिलक, रोहिणीना हृदयनें वल्लन केमके चंड्मा रोहिणीनो जरतार छे एवी लोकोमां केवत छे परंतु रोहिणीतो नक्षत्र छे ते बने नही. एवो पूर्णिमानो चंड् त्रिशलादेवीयें छघा स्वप्नामां दीठो ॥ ६ ॥ ३७ ॥ ॥ तेवार पछी त्रिशलाराणी, सातमें स्वप्ने सूर्यदेखे ते सूर्य कहेवो छे तोके? अंधकारनां पमलने फोडवा वालो, वली रातो वर्ण छे तेवर्ण कहेवो छे तोके? राता अशोक सरखो, केशूडानां फूल सरखो लाल छे, जेवुं पोपटनुं मुख लाल होय, जेवी अर्द्धि चिणोठी लाल होय तेवो सूर्य लाल छे, वली कमलनां वननो उघाडवा वालो छे, तेमाटेज कमलनी शोजा करवा वालो छे, ज्योतिष शास्त्रनो तथा ज्योतिषचक्रना चिन्ह सरखो उंलखाणनो करवा वालो छे, आकाशमां दीवानी पेरे शोजे छे, ऊगतो थको हेमना समूहने हाथथी गरदन पकडीने काहाडवा वालो, वली ग्रहोनो राजा छे, रात्रिनो नाश करवा वालो छें, वली उगतीवेलाये तथा आथमति वेलायें बे घडी पर्यंत सुखे दीठामां आवे पछी सुखें दीठामां आवे नही, वली रात्रिना विचरवा वाला जे चोर आदिक तेमनुं ज्रमण मटाडवा वालो, वली शीत टाहाडने मथन करवा वालो, मेरुपर्वतने पाखति निरंतर महोटा मंमल सहित जमवा वालो, वली सूर्यना हजार किरणोये करी सर्वज्योतिषीयोनी प्रजा मटी गइ माटे इहां सूत्रकारोजे सूर्यनी हजार किरणो कहे छे ते जघन्यआश्रित लिखे छे अने लोकमां

पण सहस्त्र किरण कहेवानी रूढी छे परंतु सूर्यना किरणोमां तो महीने महिने वध गट थाय छे ते आ प्रमाणे जे चैत्रमां बारसें किरणो, वैशाखमां तेरसें किरणो, ज्येष्ठमां चौदसें किरणो आषाढमां पन्नरसें किरणो. श्रावणमां चौदसें किरणो, नादरवामां चौदसें किरणो, आसोमां शोलसें किरणो, कार्तिकमां अगीआरसें किरणो, मार्गशिरमां एकहजारनें पच्चाश किरणो, पोषमां हजार किरणो, माघमां साडादशसें किरणो, फाल्गुनमां अगीआरमें किरणो, एवो सूर्य लोकोना चक्षु समान त्रिशलादेवीये सातमे स्वप्ने दीठो ॥ ७ ॥ ३ए ॥ ॥ तेवार पछी आठमें स्वप्ने, त्रिशलामाता, ध्वजा देखे ते ध्वजा कहेवी छे तोके? सोनानो जेने दंम छे ते उपर रहेली छें, पांच वर्णना वस्त्रनी ध्वजा छे, वली ते ध्वजानी उपर सुकोमल अनेक रंगनां मोरपीछ धर्यां छे ते चोटी सरखा शोनायमान छे तथा घणो श्रीकार छे, तथा ते ध्वजामां सिंहनुं रूप लख्युं छे तेणेकरी वली बहुज शोने छे ते सिंह कहेवो छे कें जेवो शंख उजलो, कुंदवृक्षनुं फूल उजलुं, जलनो कणीयो उजलो तथा रूपानो कलश उजलो होय तेवो श्वेत वर्णे छे; जे सिंहनें देखीने लोक एवुं समजे के आ सिंह आकाश मंमल नेदवाने उद्यम करे छे के शुं? एवी ते सिंहनी मुखाकृति तथा शरीराकृति छे, जे ध्वजानुं वस्त्र वायरानी लहेरोथी थोडुं थोडुं चलायमान थइ रह्युं छे, वली घणो उंचो लोकोने देखवा योग्य एवो ध्वज आठमां स्वप्नामां त्रिशला देवीयें दीठो ॥ ८ ॥ ४० ॥ ॥ तेवार पछी, नवमां स्वप्नमां, श्रीत्रिशलादेवी, पूरण कलश देखे ते कलश कहेवो छे तोके? उत्तम देदीप्यमान छे रूप जेनु, निर्मल जलथी नर्यो थको घणोज सुंदर छे, सूर्यमंमल सरखी जाज्वल्यमानशोना छे जेनी, वली जे कलशनी पासें कमलनी वाडी छे एटले कमलोथी वींटयो थको छे वली ते कलश सर्व मंगलोनो मलाववा वालो छे,

चित्र १४

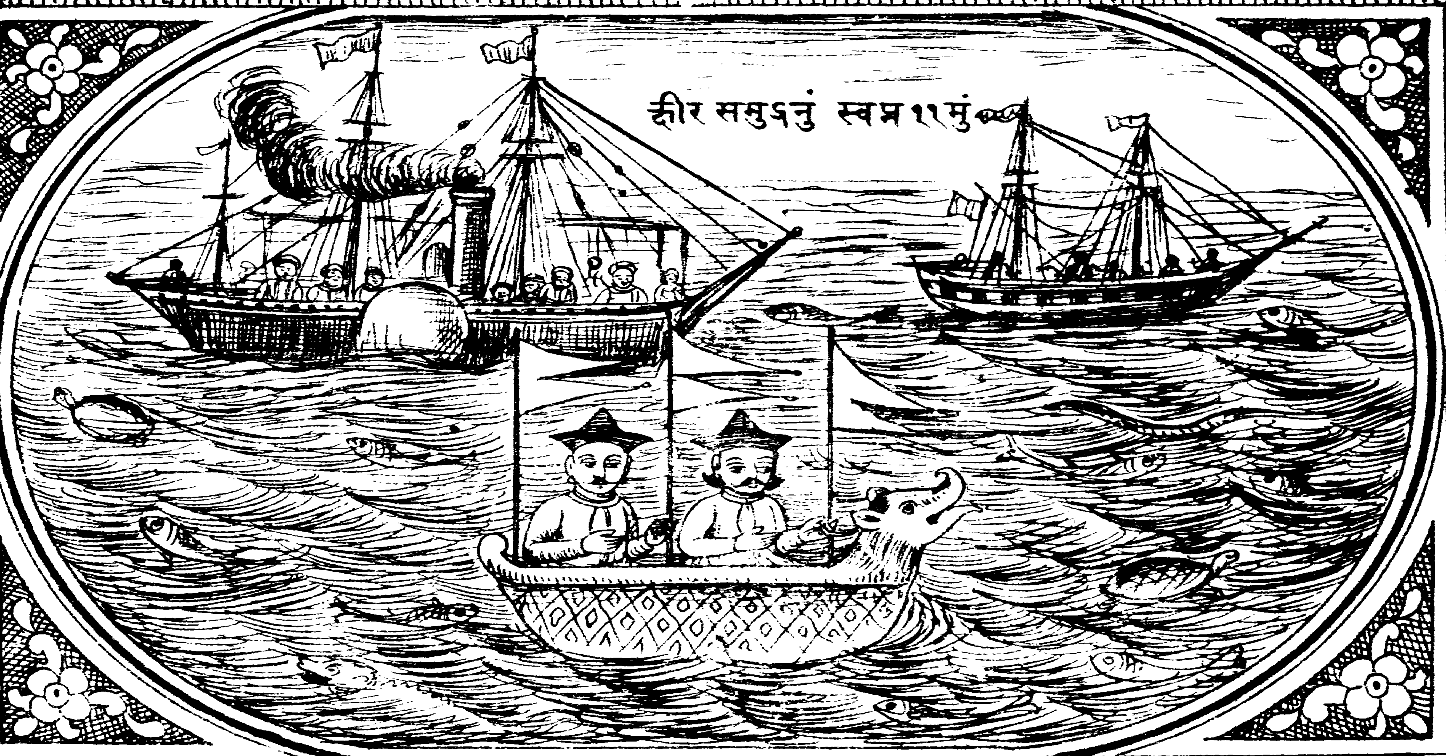






वली ते पूरण कलश, प्रधान रत्नोनुं कमल तेना उपर धरेलुं छे, नेत्रोने आनंद आपवा वालो छे, सर्व दिशाउमां उद्योत करतो थको सर्व लक्ष्मीनो घर तेनी परें .सर्व पाप रहित सर्व शोभा सहित लक्ष्मीनो निवास छे, वली जे कलशने गलामां छ रुतुना सुगंधि फूलोनी माला छे, एवो पूरणकुंभ जलो रूपामय ते नवमे स्वप्ने त्रिशलाराणीयें दीठो ॥ ए ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ तेवार पछी, दशमां स्वप्नामां त्रिशलादेवी पद्मसरोवर देखे ते पद्मसरोवर कहेवुं छे तोके ? जे सरोवरमां उगता सूर्यथी उघड्यां एवां हजार पांखडीना कमलो छे, ते विकस्वरमान कमलनी वासनायें करीने जेनुं पाणी सुगंधमय थयुं छे; वली ते कमलोनी प्रभायें करीने पाणी लाल पीला रंग जेवुं देखाय छे, वली जे पद्मसरोवर जलमत्स्य कछपादिक जलचर जीवोयें सेव्युं थकुं रह्युं छे, वली जे पद्मसरोवरमां कमल पत्र उपर पड्यो जलनो छांटो तेणे करी जाणे नीला आंगणामां मोती जड्यां होय नहि ? एवुं देखाय छे, वली ते महोटुं सरोवर छे तेमां सूर्यविकासी कमल, चंद्रविकासी कमल, नील कमल, महापद्म श्वेत कमल, रातां कमल, इत्यादिक कमलनी शोभा बनी रही छे तेथी घणुंज रमणीक थयुं छे, वली ते कमलो उपर प्रसन्नथया एवा भमर भमरीयो आवीने गुंजारव करी रह्यां छे ॥ ग्रंथा ग्रंथ ॥ २०० ॥ वली तिहां कादंबक हंस, चकवा, राजहंस, बगला, सारस, एवा पंखीयोंये करी शोभे छे, अर्थात् ए जातियोना पंखीयो तिहां रहे छे, एवो पद्मसरोवर त्रिशलादेवीयें दशमां स्वप्नामां दीठुं ॥ १० ॥ ४२ ॥ ॥ तेवार पछी अगीआरमां स्वप्नामां त्रिशलादेवी खीरसमुद्र देखे ते खीरसमुद्र कहेवो छे तोके ? चंद्रमाना किरणोनी जेवी शोभा तेवी शोभा ते समुद्रमां छे, वली चारे बाजु जे समुद्रनुं जल वृद्धि पामे छे, वली

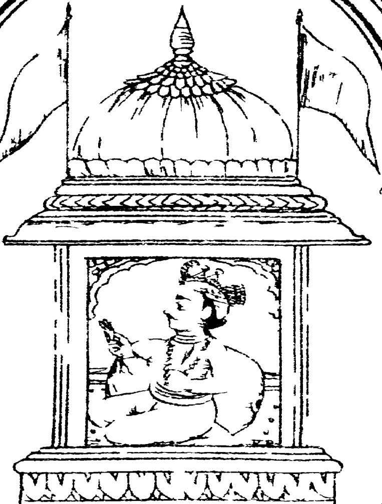
तेमांथी चंचलथी पण घणा चंचल एवा घणा उंचा कल्लोल उठी रह्या छे, ते कल्लोलेंकरीने पाणी घणुंज चंचल थयुं छे, वली मंदमंद वायराथी चलायमान थया जे कल्लोल ते समु द्रना तट उपर आवीने जफाका खाइ रह्या छे, तेनो शब्द थइ रह्यो छे जेनेविषे ते कल्लोलोथी समुद्र शोजी रह्यो छे, वली ते कल्लोल मल्या थका दोडता छे एटले एक कल्लोलनी पछवाडे बीजो कल्लोल दोडी रह्यो छे, पहेलो एक न्हानो कल्लोल चाले, वली महोटो कल्लोल चाले, एवी कल्लोलोंनी शोजा छे जेने विषे, वली जे समुद्रमां जलचर जीव कल्लोल करी रह्या छे, ते केवा जातिनां तोके महामगरमछ, तिमिंगलमछ, लघुमछ ते सर्व परस्पर मल्या थका रमत करे तेवारे तेमनां पूंछना उलालवाथी उछल्युं जे पाणी तेमांथी फीण प्रगट थइ ते फीण कल्लो लोथी तणाइने किनारापर आवी पडे छे, तेनां ढगला थइ गया छे ते ढगला सर्व कपु रना ढगला सरखा देखाय छे, वली जे समुद्रमां गंगा प्रमुख नदीयोना पाणी पडे छे तेमां चौद चौद हजार नदीयोना परिवार साथे गंगा अने सिंधु ए बे जरतक्षेत्रनी नदीयो पडे छे. एमज चौदचौद हजार नदीयोना परिवार साथें ऐरवतक्षेत्रनी रक्ता अने रक्तवती ए बे नदीयो पडे छे तथा अठावीश अठावीश हजार नदीयोना परिवार साथे रोहिता अने रोहितासा ए बे नदीयो हेमवंतक्षेत्रनी पडे छे तथा अठावीश अठावीश हजार नदीयोना परिवार साथे सुवर्णकुला अने रूपकुला ए बे नदीयो ऐरण्यवतक्षेत्रनी पडे छे तथा छपन्न छपन्न हजार न दीयोना परिवार साथे हरिकंता अने हरिसलिला ए बे हरिवर्ष क्षेत्रनी नदीयो पडे छे तथा छपन्न छपन्न हजार नदीयोना परिवार साथें नरकांता अने नारिकांता ए बे नदीयो रम्यकक्षे त्रनी पडे छे तथा पांच पांचलाखनी उपर बत्रीश बत्रीश हजार नदीयोना परिवार साथें सीता


चित्र १५
क्षीर समुद्रनुं स्वप्न ११मुं

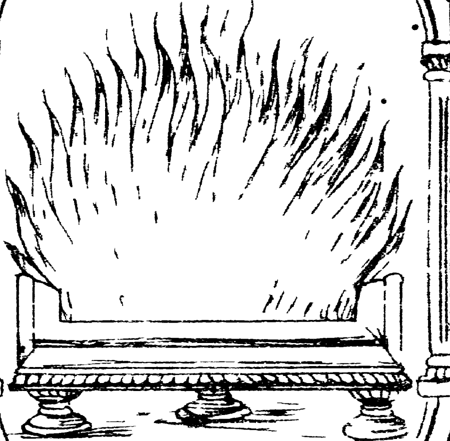
अने सीतोदा ए बे नदीयो महाविदेह क्षेत्रनीपडे छे, सर्वमली चौदलाखने छपन्न हजार न दीयोनुं पाणी जे समुद्रमां पडे छे इहां कोइ पश्न करे के सूत्रमांतो खीरसमुद्र स्वप्नमां दीठो एवो पाठ कह्यो छे अने तमे तो नाना प्रकारनी वेलाये वधतो पाणी कहोछो तथा नदीयो मांहे जले छे एवो कहो छो तेनुं शुं कारण छे? तेने उत्तर कहे छे जे खीरसमुद्रनो पाठ कहेवा थकी लवण समुद्र लेवो कारणके जो लवणसमुद्र नही कहेशो तो गंगा अने सिंधु नदीयो पडे छे ए पाठ पण सूत्रकारेंज कहेलो छे ते पाठ मलशे नही माटे इहां एम समजवुं के लवणस मुद्रनुं पाणी म्होलुं छे ते स्थानके त्रिशला माता ए लवणसमुद्रनुं पाणी खीरसमुद्र सरखुं देखे छे एवो अगीआरमे स्वप्ने खीरसमुद्र त्रिशला देविये दीठो ॥ ११ ॥ ४३ ॥ ॥ तेवार पछी बारमे स्वप्नें, त्रिशला माताये देवविमान दीठुं ते कहेवुं छे तोके? पुंमरीक उत्कृष्ट वि मान छे तेमां उत्तम सुवर्णमणीनां एकहजारने आठ थंजोये करी विराजमान छे वली ते वि मान आकाशमां दीपकनी पेरें दीपी रह्युं छे, उद्योतमां सूर्यमंमल सरखी शोजा छे जेनी, वली जे विमानमां सोनानी जींतोमां नागफणा खीला ठोक्या छे, वली स्थानकें स्थानकें दिव्यफूल मालाउ, सुवर्ण पत्रेंकरी लंबायमान एवी मोतीयोनी मालाउ लटके छे, वली ते विमाननी जींतमां मृग हरणना रूप, नाहारना रूप, बलदना रूप, घोडाना रूप, मगरमछ, जारंमपंखी, गरूड, मयूर एमनां रूप, सर्पनां रूप, किन्नरदेवोनां रूप, कस्तुरीया मृगनां रूप, सर्दूलसिंहनां रूप, हाथीनां रूप, वनलता, पद्मलता, एमनां रूप चित्रामणमां छे, वली जे विमानमां नाटक थइ रह्यां छे ते नाटकमां जे वाजिंत्रो वाजी रह्यां छे तेना शब्दें करी पूराणुं एवुं ते विमान छे, वली जे विमानमां मेघगाजे तेना सरखो देवडुंडुजीनो शब्द थइ रह्यो छे तेथी जाणीये छयें

के सर्व जीवलोक संसार ते शब्दथी पूरण कर्यो ढे अर्थात् ते शब्द सर्वत्र फेलाइ गयो ढे, वली ते विमानमां, अगर, कुंदरु, शिलारस, एमना धूपनो मघमघायमान धूप सुगंध थइ रह्यो ढे, वली जे विमानमां देवोने योग सदाउद्योत थइ रहेलो ढे, देवोने योग्य सर्वदा सात सुखनो निवास रूप एवुं देवविमान त्रिशला मातायें बारमां स्वप्नमां दीठुं ॥ १२ ॥ ४४ ॥ ॥ तेवार पढी त्रिशलाक्षत्रियाणीए तेरमे स्वप्ने रत्नोनो ढगलो दीठो तेमां कयां कयां रत्न ढे. १ पुलकरत्न २ वज्ररत्न, ३ नीलरत्न, ४ ससांकरत्न, ५ कर्केतनरत्न, ६ लोहितरत्न, ७ मरकतरत्न, ८ प्रवाल रत्न, ९ स्फाटिकरत्न, १० सौगंधिकरत्न, ११ हंसगर्भरत्न, १२ मसारगल्लरत्न, १३ अंजनरत्न, १४ चंद्रप्रभरत्न एवा बीजा पण अनेक जातिनां उत्तम रत्न ते सोनानां महोटा थालोमां भरेलां ते रत्नोनो ढगलो कहेवो ढे तोके? मेरुपर्वत जेटलो उंचो, आकाशमां देदीप्यमान एवो रत्ननोनो ढगलो त्रिशला देवीयें तेरमां स्वप्नामां दीठो ॥ १३ ॥ ४६ ॥ ॥ तेवार पढी चौदमे स्वप्ने त्रिशला क्षत्रियाणीयें निर्धूमअग्निदीठो ते अग्नि कहेवो ढे तोके? घणो उजलो निर्मल पीलो अने लाल वर्ण वालो, वली मधु अने घृतथी सींच्यो थको, निर्धूम धगधगायमान जाज्वल्यमान शिखावालो, वली ते अग्निमां अनेक न्हानी शिखाउ ढे वली तेथी कोइक शिखा अधिकी वली ते अधिकथी पण वली कोइक शिखा उंची केटलीएक शिखाउ वली घणीज न्हानी एवी अनेक ज्वालायें करी अग्ननी शिखा मली रही ढे वली जे अग्निमां अनेक ज्वालायो मांहोमांहे मली रही ढे, एवा धूम्ररहित अग्निनी ज्वालाउ ते कोइ आकाश प्रदेशमां चालती होय तेनी पेरें घणी चपल अग्निनी शिखा त्रिशला देवीयें चौदमां स्वप्नामां दीठी ॥ १४॥४६॥ आ स्वप्नामां बारमें स्वप्ने देवतानुं विमान कह्युं ते जे तीर्थंकरनो जीव देवलोकथी चवीने माता

चित्र १६







नी कूखमां आव्यो होय तेनी माता विमान देखे अने जे तीर्थंकरनो जीव नरकथी निकली मातानी कूखमां आव्यो होय तेनी माता बारमां स्वप्नांमां ज्ञुवन देखे एवो पाठ छे ॥ ॥ एवा चौदें स्वप्नां देखीनें त्रिशला राणी जागृत थइ ए स्वप्नां केवां छे तोके? शुज्न छे, सौम्य जलां छे, घणुं रूडुं वह्लन्न छे दर्शन जेमनुं, जलुं रूप छे जेमनुं, एवां स्वप्नां देखीने त्रिशला माता जागी ते केवी छे तो के? जेवा कमल उघडे तेवां नेत्र विकसित थयां छे जेना, हर्षना वशथकी सर्वअंग हर्ष सहित होतुं हवुं, सर्व रोमराजी उल्लसित थइ ॥ ए चौद स्वप्नां सर्व तीर्थंकरोनी माताउ देखे, जेवारें तीर्थंकर गर्नमां आवे तेवारे देखे, तेम त्रिशलादेवी पण श्रीमहावीर स्वामी कूखमां आव्या तेना योगें चौद स्वप्नां देखीने शय्यामां जागती हवी ॥ ४७ ॥ तेवारं पछी त्रिशला कृत्रियाणी पूर्वें कह्या एवां चौद स्वप्नां देखीने जागती थकी घणीज पोतानां हृदय मां खुशी थइ, संतोष पामी, जेवुं मेघनी धाराये करी हणाणुं कंदब वृक्तनुं फूल तेनी पेरे उल्ला सपाम्या छे रोमकूप जेनां, अर्थात् रोमरोम हर्ष पाम्या पछी ते स्वप्नाने याद करे जे अनुक्रमें में एवां एवां स्वप्नां दीठां एवी रीते याद करीने उठे, उठीने बाजोट ऊपर पग आपीने हेठी उतरे उतरीने नही उतावली एटले मनमां उतावल नथी तथा कायाथी चपल पणुं नथी, र स्तामां ठोकर रहित, विलंबरहित, जींत प्रमुखना उंठीगणने न लेती थकी, राजहंसी सरखी गतियें करी चालती थकी जिहां सिद्धार्थ कृत्रिय राजानी शय्या छे, जिहां सिद्धार्थकृत्रिय राजा पोढ्या छे, तिहां आवी, आवीनें, सिद्धार्थकृत्रियराजाने एवी वाणीथी जगावती हवी ते केवी वाणी तोके? जे सिद्धार्थराजाने वल्लज्ज लागे, सिद्धार्थराजा एवी वाणीनी सर्वदा चाहना करे, एवी वाणी तथा द्वेषरहित एवी तथा सर्वना मनने गमती एवी तथा वल्लजपणानी चेतवणी

करवा वाली तथा स्वर अक्षरें करी स्पष्ट एवी तथा कल्याणनी करवा वाली एवी तथा वृद्धिनी करवा वाली एवी तथा निरुपद्रव अर्थात् उपद्रव रहित एवी तथा धनना लाजनी करवा वाली एवी तथा मंगलनी करवावाली, श्रीकार अलंकारादि शोजा सहित, हृदयमां कोमल लागे एवी, वली जे वाणी सांजलवाथी मनमां आनंद थाय एवी, वली कोमल, मीठी रस युक्त, जेमां वचन थोडा अने अर्थ घणो एवी वाणीथी त्रिशलादेवी पोताना जरतारने जगावती हवी ॥ ४७ ॥ ॥ तेथी सिद्धार्थराजा जाग्यो, त्यारे त्रिशला राणी सिद्धार्थराजानी आज्ञाथी नाना प्रकारना मणिरत्नथी चितस्यो एवो सोनानो बाजोट मणिरत्नोथी जड्यो ते उपर पलोंठी वालीने बेठी, रस्तानो खेद मटाडीने सुखे बेठी, बेसीने सिद्धार्थराजा प्रत्यें जेवी रीते पूर्वें वर्णन करी आव्या एवी वाणीयें करी कहेती हवी ॥ ४ए ॥ ॥ हे स्वामी ! निश्चें हुं आज पूर्वोक्त शय्यामां कांइक सुती कांइक जागती थकी, में गज वृषन आदिदेइ जे पूर्वें कही आव्या ते चौद स्वप्नां दीठां, देखीने जागी, ते महोटा स्वप्नांनुं फल जाणुं जे कांइ फलवृत्ति फलनुं पामवुं कांइ थाशे ? एवुं त्रिशलायें पोताना जरतारने पूछ्युं ॥ ॥ ५० ॥ तेवारें सिद्धार्थराजा त्रिशलाना मुखथी एवो अर्थ सांजलीनें, हर्ष संतोष पामीनें, चित्तमां आनंद पाम्यो थको, प्रीतिकारी परम सौम्य हर्ष हृदयमां फेल्यो, जेम मेघनी धारायें छंटायेलुं एवुं कंदबवृक्षनुं फूल तेनी पेरें उल्लसित थयो थको, सांजलीने तेनो विचार कस्यो, पोताना स्वजाव प्रमाणे पोतानी बुद्धि विज्ञाने करी ते स्वप्नोनो अर्थ ग्रहण कस्यो, अर्थ ग्रहण करीने त्रिशलाराणीने मीठे वचने करी एवुं कहेतो हवो ॥ ५१ ॥ ॥ हे देवाणुप्रिया ! तें मनोहर स्वप्नां दीठां, तें कल्याणकारी स्वप्नां दीठां, शिवकारी, धनकारी, आरोग्यकारी,



चित्र १७
सिद्धार्थ राजा
त्रिशला देवी
दासीउ
दरबान

घणा दीर्घायुना करवा वाला एवा तें स्वप्नां दीगं ॥ ग्रंथाग्रंथ ॥ ३०० ॥ तेनुं फल आवी रीते छे. हे देवाणुप्रिया ! तमोने अर्थनो लाभ थाशे, तमोने जोगनो लाभ थाशे, सुखनो लाभ थाशे, राज्यनो लाभ थाशे, ए निश्चें नवमहीना उपर साडासात दिवस गये थके अमारा कुलमां ध्वजा समान, अमारा कुलमां दीप समान, अमारा कुलमां दीवासमान, अमारा कुलमां पर्वत समान स्थिर, अमारा कुलमां शिखर समान, अर्थात् मुकुट समान, अमारा कुलमां तिलक समान, अमारा कुलमां सूर्यसमान, कुलनो आधार, कुलनी वृद्धिनो करवा वालो, कुलनी कीर्त्तिनो करवा वालो, कुलना निर्वाहनो करवा वालो, कुलना यशनो करवा वालो, कुलमां वृक्षसमान, घणा लोकोने छत्रछायामां राखवाथी कुलनी विशेष वृद्धिनो करवा वालो एवो पुत्र थाशे. वली सुकोमल छे हाथ पग जेना, संपूर्ण पांचेंद्रिय परवडां छे जेनां. लक्षण, व्यंजन अने गुणे करी सहित. मानोन्मान प्रमाण सर्व शरीर सुंदर, चंद्रमानी पेरे सौम्याकार, मनोहर दर्शन करवा योग्य, एवो पुत्र तुजने थाशे ॥ ५२ ॥ ॥ ते पुत्र कहेवो थाशे तोके ? बालक अवस्था छांमीने जेवारें विज्ञान अवस्थामां आवशे तेवारे सर्व कलाउं मात्र देखवाथीज जाणी लेशे पण तेने शीखाववुं पडशे नही. वली युवान अवस्थामां शूरवीर, महादानेश्वरी, स्वप्रतिज्ञा निर्वाहक एटले पोते अंगीकार करेली वातना निर्वाहने करवा वालो, संग्राममां वीर एटले पाछो जागे नही, जमीन उपर राज्य करवा वालो, घणा हाथी घोडा रथ पायदल प्रमुखनो मालक एवो, राजाउंनो राजा थाशे ॥ ५३ ॥ ॥ तेमाटे तमे उदारकारी यावत् स्वप्नां दीगं एवीरीतें सिद्धार्थराजा बे वार त्रणवार त्रिशला राणीने कहे, प्रशंसा करे, तेवार पछी त्रिशला क्षत्रियाणी सिद्धार्थराजाना मुखथी आ वात

सांजलीनें हर्ष संतोष पामी, यावत् हाथ जोडीने, मस्तकें अंजली करीनें, एवुं कहेती हवी ॥ ५४ ॥ ॥ हे स्वामी ए अर्थ एमज छे, तमे कह्युं ते तहत्त छे, संदेह रहित छे, जे प्रमाणेमें वांछयोहतो हे स्वामी तेज प्रमाणेमें आपना मुखथी ग्रहण कर्यो, एम हे स्वामी जे तमे कह्यो छो ते अर्थ सत्य छे एवीरीतें वारंवार कहेती थकी एम कहीने, स्वप्नानां अर्थने रुडीरीतथी अंगीकार करीनें, सिद्धार्थराजानी आज्ञा लइने, नानाप्रकारना मणीये जडित एवा सोनानां बाजोट उपरथी उठीने, नही उतावली, नही धीरी एवी पूर्वें कहेली रीत मुजब चालती थकी जिहां पोतानुं शयन घर छे तिहां आवीने एम कहेती हवी ॥ ५५ ॥ ॥ जे म्हारे उत्तम स्वप्नां दीठामां आव्यां तो हवे म्हारे सूवुं नही, जो सुइजाउं तो वली कदापि बीजा कोइ पाप रूप खोटा स्वप्नां आवीजाय तो ए रुडा स्वप्नांनुं फल जातुं रहे तेमाटे देव गुरु संबंधि रूडी मंगलकारी, शुभकारी, धर्म कथा कहीने रात्रि पूरण करुं एवुं कहीने स्वप्न जागरण करती थकी, पोतें जागती बीजाने जगावती विचरे ॥ ५६ ॥ ॥ तेवार पछी प्रभात समये सिद्धार्थ राजा कौटुंबिक जे सेवक पुरुष तेमने बोलावीने एम कहेतो हवो ॥ ५७.॥ उतावलथी हे देवाणुप्रिय ! आज सारीरीतें बाहिरनी उवठाणशाला जे कचेरी छे तेनें गंधोदकथी सींचो,कचरो कांटो काढाडीने साफ करो, लींपो,लींपीने पछी प्रधान सुगंधि पांचवर्णना फूल तेना ढगला करावो, कृष्णागर, कुंदरु, शिलारस तेना धूप उखेवो अने सुगंधना चूर्णनी गोली, अगरबती उखेवो, सुगंधे अभिराम करो, सुगंधे वासित करो, गंधनी वाटमूको, आ काम तमे करो, बीजा कोइनी पासें करावो, आ म्हारी आज्ञा पाछी तत्काल सोंपो ॥ ५८ ॥ तेवारें कौटुंबिक पुरुष एवुं सांभली घणाज खुसी थइनें, हाथजोडी तहत्ति करीने, सिद्धार्थ

राजा पासेथी निकलीने ज्यां बाहेरनी सन्ना ठे त्यां आवीनें गंधोदकादिक ठांट्या आदिक सर्व काम राजाना हुकुम प्रमाणे करीने यावत् तिहां सिंहासन मांमीनें जिहां सिद्धार्थक्षत्रियराजा ठे त्यां आवीने हाथजोडी मस्तकें अंजली करी कहेता हवा के.हे स्वामी! जे आपे फरमाव्युं ते सर्व काम अमे करी आव्या एम कही आज्ञा पाठी सोंपी ॥ ५९ ॥ ॥ तेवार पठी कांइक रातुं धोलुं पीलो प्रन्नात थयुं, सूर्यविकासीकमल फूल्यां, चंद्रविकासी कमल कुमलाणा, उज्वलप्रन्नात थयुं, सूर्य उग्यो ते. सूर्य कहेवो ठे तोके? राता अशोक सरखो लाल ठे,केसुना फूल सरखो लाल ठे, सूडाना मुख सरखो लाल, अर्द्ध चिणोठी सरखो लाल, मा मोलीयो जीव थाय ठे तेना जेवो रातो. बफोरीयाना फूल सरखो लाल, कबूतरना पग नेत्र सरखो लाल, जासूसना फूल सरखो लाल, हिंगलुना ढगला सरखो लाल ए पूर्वे कही जे वस्तु तेवी कोइ पण लाल वस्तु होय तेथी पण अधिक लाल एवो ऊगतो सूर्य, कमलाकर नामे तलावने विषे घणा कमलोने उघाडतो थको एवो सूर्य ऊग्यो, हजार करणनो धिरनार, दिवसनो करवा वालो, तेजेकरी जलजलायमान,जेना किरणोथी अंधकार नाश पाम्यो ठे, चोरना प्रचारने टालनारो, बालिकानी जाणीयें कुंकुनी पीयाली ते सरखो, लाल, ते सूर्यनो नवो तावडो (तडको) ते तावडे करी जाणे कुंकु सरखो सर्व मनुष्यलोक लाल थयो ठे, एवुं प्रन्नात थयुं, ॥ ६०॥ तेवारें राजा शय्याथी उठीने बाजोट उपर पग मूके,बाजोटथी हेठे उतरे,उतरीनें, जिहां मल्लयुद्ध करवानी शाला ठे तिहां आवीनें,मल्लयुद्धशालामां प्रवेश करीने, अनेक प्रकारनी मल्लयुद्धनी कलाउ करीने थाका पठी, सो औषधीना पाकनुं तेल, हजार औषधीना पाकनुं तेल, सुगंध प्रधान तेल प्रमुख बीजा पण तेल जे धातुनी वृद्धि करवा वालां, जठराग्निनें

दीपाववा वालां,कामदेवनी वृद्धि करवा वाला, मांसने पुष्ट करवा वाला, बलवृद्धि करवा वाला, सर्व इंद्रिय शरीरने उल्लास करवा वाला, जेना अभ्यंगन थकी चामडीमां तेजनी वृद्धि थाय एवां अनेक जातिनां तेल ते तेलना मसलवा वाला कहेवा छे के घणा चतुर, जेमना हाथ पग घणा सुकोमल छे, ते तेलनें मसलतां थकां हाथना तलांनो जे मल ते शरीरमां समावी आपे, एवी क्रियामां दक्ष, परिपूर्ण छे हाथ पग जेना, अवसरना जाण, उतावलथी कार्यना करनार, सर्व मर्दन करवा वालामां उत्कृष्ट, विवेकवंत, बुद्धिवंत डाह्या, पंडित, मसलतां थकां हारे नही, एटले परिश्रमना जीतवा वाला इत्यादिक गुणना जाण पुरुषो ते केवी रीतें तेल मसले तोके जें थकी हाडने सुख थाय एटले हाडने सुखकारी, मांसनें सुखकारी, चामडीने सुखकारी, रोमने सुखकारी ए चारेनें सुखकारी एम ए पूर्वोक्त तेल ते उपर कह्या प्रमाणे मसलवाथी राजाने थाक मट्या पछी सिद्धार्थराजा मल्लशालाथी निकलीने॥ ६१ ॥ जिहां स्नानकरवानुं घर छे तिहां आवीने स्नान घरमां पेठा, ते स्नान घर कहेवुं छे तोके ? मोतीयोनी जालीयोनां गोखला छे जेमां,विचित्र मणिरत्ने जडित धरती तल छे जेनुं,तिहां रमणिक स्नान करवानो मंडप छे तेमां अनेक प्रकारना मणिरत्नोये करी जड्या चित्र्या एवा अनेक बाजोट छे तेना उपर राजा सुखें बेठो. हवे स्नान करवानुं जल, कहेवुं छे ते कहे छे. फूलना गंधवालुं जल, चंदन कपूरादि वासित जल, उष्णजल, शुद्धजल, गंगा प्रमुखनुं निर्मलजल, एवा जलथी कल्याणकारी प्रधान मज्जननी विधियें स्नान करे तिहां घणा प्रकारनां जल उछालवा प्रमुख कौतुक करीने कल्याणकारी स्नानना अंतमां कमल सरखा सुंवाला गंधवस्त्रथी अंग लूह्युं पछी घणां मोघां वस्त्ररत्न पहेर्यां, नला रस सहित गोशीर्ष चंदनथी शरीरने लेपन कर्युं, पवित्र माला पहेरी,

चित्र १८





वर्ण कुंकुमादि विलेपन कर्या पछी मणि जडित सोनाना घरेणा पहेर्या, वली अढार सरो हार, नवसरो हार, त्रीशसरो हार, लांबा जूमखां प्रमुख घरेणां तथा कनदोरो पहेर्यो तेथी शोजवा लागो, गलामां कंठीउं प्रमुख पहेर्या, आंगुलीउंमां वींटी, वेड प्रमुख पहेर्या, केशोमां फूल प्रमुखना घरेणां धारण कर्यां, रूडा जडाव कडा, जडाव बहेरखा पहेर्या, जुजा प्रमुखमां जुजबंधादिक पहेर्या तेणे जुजा थंजित थइ छे, तेथी घणुं श्रीकार रूप छे तथा कानोमां कुंमल पहेर्या तेणे करी शोजायमान मुख थयुं, मस्तकें देदीप्यमान मुकुट घाल्यो, हारप्रमुखे करी सुशोजित थइ छे गाती जेनी, वींटीयोथी पीली थयली छे अंगुलीउं जेनी तथा लांबा वस्त्रें करी कर्यो छे उत्तरासंग जेनुं, अनेक प्रकारना मणिरत्न निर्मल घणा मूल्यना माह्या कारिगरोनां घड्यां देदीप्यमान जली रचनाये करी एकमां बीजा घरेणां मलेला तेथी मनोहर देखाय छे तथा वीरवलयने धारण कर्यो ए घरेणो जे शूरवीर होय तेने राजा बक्षीश आपे छे एटले मान आपवानुं घरेणुं छे ते कोइक तो कहे छे के ए घरेणुं हाथमां पहेराय छे वली कोइ कहे छे ए वीरवलय कानमां पहेराय छे हवे घणुंशुं वर्णन करीयें ते सिद्धार्थराजा साक्षात् कल्पवृक्ष सरखो थयो, जेम कल्पवृक्ष पत्र, पुष्प, फल सहित शोजे तेम सिद्धार्थराजा घरेणाथी शोजे छे तथा पुरुषोमां इंद्र समान, कोरंट वृक्षनां फूलोनी माला सहित एवुं छत्र मस्तकें धरावतो थको, श्वेत चामरोथी वींजातो थको, जिहां लोकोयें मंगलिकना जय जय शब्द कर्या छे, वली १ अनेक गणनो नायक एटले पोताना घरमां जे मनुष्य छे तेनो मालक, २ दंमनायक देशनी चिंतानो करवा वालो, ३ हाथीयोनो इश्वर ४ राजानो पुत्र, ५ कोटवाल, ६ मांमवीया, ७ कुटुंबना स्वामी, ८ न्हाना प्रधान, महोटा प्रधान, ए मंमलिक, १० महामंमलिक, ११ ज्योतिषी, १२ दरवान, १३ जे

राजासाथें जन्म्या ते अमात्य, १४ पीठी मर्दनना करवा वाला, १५ नगरना चोवटीया, १६ चोधरी, १७ वाणीया, १८ शेठ, १ए सेनापति, २० सार्थवाह, २१ दूत, २२ देशनी सिंधीना रखवाला एटले सिंधिपालक तथा व्यवहारीया, २३ अंगरक्षक, २४ पुरोहित, २५ वृत्तिनायक, २६ वहिवाहक, २७ घटआयत, २८ पडुपडिआयत, २ए टाकटमाली, ३० इंद्रजाली, ३१ फलमाली, ३२ मंत्रवादी, ३३ धनुर्वादी, ३४ दंमधर, ३५ धनुर्धर, ३६ खड्गधर, ३७ छत्रधर, ३८ चामर धर, ३ए पताकाधर, ४० नेजाधर, ४१ दीवीधर, ४२ पुस्तकधर, ४३ जारीधर, ४४ तांबूलधर, ४५ प्रतिहार, ४६ शय्यापालक, ४७ गजपालक, ४८ अश्वपालक, ४ए अंगमर्दक, ५० आरक्षक, ५१ मिष्टवचनबोलनारा, ५२ कथाकहेनारा, ५३ सत्यबोलनारा, ५४ गुणना बोलनारा, ५५ समस्याना बोलनारा, ५६ पारसीभाषा बोलनारा, ५७ वैयाकरण पाठी, ५८ तर्क पाठी, ५ए साहित्य बंधक, ६० लक्षण बंधक, ६१ छंद बंधक, ६२ अलंकारना जाण, ६३ नाटक बंधक, आंहीं त्रेसठ नाममां जे सिंधीपालक कह्युं ते राजाना सीमाडीया राजा साथें सीमसेढानां वांधा पडवाथी राजाने विरोध थाय तेवारें सीमकाढी निवेडो करी आपे तेने सिंधीपालक कहीयें तेना दृष्टांत उपर कथा कहे छे. कौशंबीनगरीमां जितशत्रुराजा राज्य करे छे. तेने प्रधान, पुरोहित, शेठ, सेनापति, भंमारी, सिंधीपाल इत्यादिक घणो परिवार छे सहु सहु पोतपोताना अधिकारमां सावधान छे हवे कोइक पुरुषें राजाने कह्युंके तमारा बधा सेवको काम करे छे पण सिंधीपालतो तमारुं अनाज खाइने खोटुं करे छे माटे एनो तपास करवो, तेवारे राजायें सिंधीपालकने कह्युं के तमे मनचिंतित द्रव्य खाउ छो अने कार्यतो कांइ करता नथी तेवारे सिंधीपालक बोल्यो हुं महोटा काम करी आपुं, परस्पर वैरभाव होय तेनें मित्राइ करावी

आपुं अने मित्रता होय तेमां विरोध पाडी आपुं, अनेक बुद्धिना काम करुं, एवा महारामां गुण छे, पछी राजायें परिक्षा निमित्तें पोतानो दुसमन अरिमर्दन राजा छे तेनी साथें मेलाप करवा माटे जेटणा सारुं एक झाबलो सीवी आप्यो ते राजाने आपजो अने वैर टाली आवजो एवुं कही सिंधीपालकने मोकल्यो सिंधीपालक त्यांथी चालतां केटलेक दिवसें अरिमर्दनराजा पासे जइ जेटणुं मूकी पगेलागीने कहेवा लाग्यो जे हे राजन्! जितशत्रुराजायें तमोने सलाम कही छे अने जेटणुं आप्युं छे, राजाये ते जेटणुं छोड्युं तेमांथी झाबडो निकल्यो ते उघाड्यो तेमां वली घणे बंधनें बांधेली एक सोनानी झाबली निकली तेना बंधन छोड्यां तेवारे मांहेथी राख निकली तेवारे प्रधाने कह्युं तमारा वैरीयें राख मूकी छे, ते राख चोपडी तमे जोगी थाउ, ते सांजली राजा क्रोधातुर थयो तेवारें सिंधीपालके जाण्युं जे राजायें वैर सांध्युं एवुं चिंतवी उत्पातनी बुद्धियें करी कहेवा लाग्यो के हे राजन्! तमे उलटो विचार म करो, ए राख बहु गुण कारी छे राजायें पुछ्युं एमां शो गुण छे? सिंधीपालक बोल्यो अमारा राजायें यज्ञ कीधो हतो तेना उपर असंख्य द्रव्य खरच्युं ते यज्ञ पूरण थयाथी तेनी जस्म तिलक करवाने अर्थें सर्वे राजाउ ने मोकली छे एमां कांइ विरोध नथी एनुं प्रजातकालें तिलक करतां जन्मांतरनां पातक टले अने सौजाग्य पामे, ते सांजली राजा प्रसन्न थयो अने जाण्युं जे में वैरजावथी अवलुं विचार्युं पण एणे तो वैर टालवा ए उपकार कर्यो छे पछी राजायें ते सिंधीपालकने घणुं सन्मान आपी, एक महीनां सुधी पोतापासे खमावी घणा हाथी घोडा आजरण देइ पहेरामणी करीने शीख आपी, तथा हवे तमारा राजासाथें अमारे परम मित्राइ छे एवो पत्र लखी आप्यो ए सर्व जेट लइ सिंधीपालक पोताना राजा पासें आव्यो राजाने पत्र दीधो सर्ववस्तु पण आपी तेवारें राजा

विस्मय पाम्यो,वली राजायें पटराणीने कह्युंके तुं ताहारे पीयरे जा, जेवारें हुं नामांकितमुद्रिका मोकलुं तेवारें तरत आवजे पण बीजा कोइना कहेवाथी आवीश नही, पछी ते राणी पीयर गइ पाछलथी राजायें सिंधीपालकने कह्युंके महारी राणी रीसाणी थकी पीयरे गइ छे तेने तमे तेडी लावो तो तमारी अकल खरी जाणुं, पछी सिंधीपाल तीर्थवासीनो वेश करी राणीना पीयरनां गाममां गयो राणीने खबर पडी तेवारें राणीयें तेडाव्यो अने कह्युंके तुं मुजने मलवा केम नाव्यो तेणे कह्युं हुं तीर्थवासी थयो छुं तेथी संसार संबंधि कोइ कार्यमां पडतो नथी, राणीये कह्युं धन्य ताहारा अवतारने तोपण मने राजाना समाचार कहो तेवारे सिंधीपालक माथुं धूणावीने कहेवा लाग्यो के राजायें हमणा कोइक राजानी पुत्री परणवानो आदर कर्यो छे ते कन्या घणी रूपवंती छे तेने पटराणी करवा धार्युं छे एवी वात सांभली राणी उतावली पाछी पोताने घेर आवी राजायें पुछ्युं तमे तेड्या विना उतावलां केम आव्यां तेवारे राणी रीश आणीने बोली जे तमे नवी पटराणीने घेर जाउ छो तो हवे मुने शावास्ते तेडो एवो उलंभो सांभली राजा विस्मय पाम्यो पछी राजायें सिंधीपालकने तेडावी भ्रांतभांगी राणीने मनावी राजा हर्ष पाम्यो, सिंधीपालकने घणा वस्त्र आभूषण आपी सन्मान्यो ॥ एम सिद्धार्थराजानी सभामां एवा सिंधीपालक आदिदेइने शेठनापुत्र सेनापति बुद्धिवंत प्रमुख घणा बेठा छे॥ इति सिंधीपालक कथा ॥ इत्यादिक बावीशथी आदि लइने त्रेसठ पर्यंत टीकाकारें लख्या छे एमना परिकरसाथें परवर्यो थको सिद्धार्थराजास्नानघरथी निकलीने सभा मंडपमां आवे छे ते कहेवो शोभे छे तोके धवलमेघनी घटामां जेवो सूर्य निकले तेनी पेरे शोभे छे वली जेवा नक्षत्र ग्रह प्रमुखना तारामां चंद्रमा शोभे तेवो लोकोमां राजा शोभे एवो मज्जनघरथी निकलतां शोभायमान थयो थको

नरपति, नरोमां इंद्र, नरोमां वृषज्ज समान, नरोमां सिंहसमान, घणी अधिक राजतेजनी लक्ष्मी यें करी दीपतो थको, स्नानघरथी निकलीने ॥ ६२ ॥ ॥ जिहां सनानी शालाछे तिहां आवीनें सिंहासन उपर पूर्वदिशानी सन्मुख मोहोडुं करीने बेठो ॥ ६३ ॥ ॥ बेशीने पोताथी उत्तर अने पूर्वदिशानी वचमांनी इशानकूणमां आठ बाजोठ श्वेत वस्त्रथी ढांकेला श्वेत सरसव अने श्वेत धान्य कुंकुथ। मंगल अर्थें पूजीने थापे अने एक पडछि एटले पडदो बांधे तें पडछि कहेंवी छे तोके? नाना प्रकारना मणिरत्नोथी जडेली छे, सर्व लोकनें देखवा योग्य, घणामूल्यनी; जला पाटणमां नीपजेली, रेशमना वस्त्रनी, अनेक चित्रामवाली एटले मृग, वृषज्ज, घोडा, मनुष्य, मत्स्य, पंखी, सर्प्प, किंनर, अष्टापद, चमरीगाय, हाथी, वनलता, पद्मलता, इत्यादिक अनेक रूप जे पडछिमां मांड्या छे एवी पडछी बांधी, (पडछी एटले पडदो जाणवो) ते पडछीनी मांहेली बाजुयें, अनेक जातिना मणिरत्ने करी जडित रूडा सुंवाला गादलां सहित मशरूनें वस्त्र विशेषें ढाक्युं तेनी उपर श्वेत वस्त्र आछाद्युं, सुकोमल अंगने सुखकारी स्पर्श छे जेनो एवो रूडो एक बाजोठ त्रिशलाक्षत्रियाणीने वास्ते रचावे, रचावीने पछी सिद्धार्थराजा कौटुंबिक पुरुषने बोलावीने एम कहें ॥ ६४ ॥ ॥ के शीघ्रमेव एटले तत्काल हे देवाणुप्रिया, अष्टांग महानिमित्तना जाण, सूत्रअर्थना धरवा वाला, अनेक प्रकारनां शास्त्रमां कुशल, स्वप्न शास्त्रमां कुशल एवा स्वप्न लक्षण पाठकोने बोलावो इहां आठ अंगनां नाम कहे छे. तेमां प्रथम फरकण विचार अंग तेमां शरीर फरकें तेनो विचार जेमके स्त्रीनुं डाबुं अंग फरके तो सारुं इत्यादिक वातो जाणवी, बीजुं स्वप्नविचार अंग तेमां उत्तम, मध्यम अने कनिष्ट एवा स्वप्नांनो विचार, त्रीजो स्वरविचार अंग तेमां काली चिडी, रूपारेल, शीयाल प्रमुख बोले ते मुजब फल कहे

वाय, चोथुं नूमिकंप अंग तेमां नूमिकंपवाथी जे शुनाशुनफल तेनां कहेनारां शास्त्र ते नौमविद्या नामे चोथुं अंग जाणवुं, पांचमुं मसा, तिल, लसण इत्यादिकोनो विचार जेमां छे ते व्यंजनविद्या नामे पांचमुं अंग जाणवुं, छठो हाथ पगनी रेखा जोवानो विचार जेमां छे ते लक्षणविद्या नामे छठुं अंग जाणवुं, सातमुं उत्पातविद्या ते उलकापात तारा त्रूटे, मंगल मंगे इत्यादिकोनो विचार जेमां छे ते सातमुं अंग जाणवुं, आठमुं अंतरिक्षविद्यानुं अंग ते ग्रहोनां अस्त उदय वक्र तेना फल जेमां छे ते आठमुं अंग जाणवुं, एवा जाण स्वप्नपाठक पुरुषोने बोलावो. एवुं सिद्धार्थराजायें कह्युं त्यारे ते कौटुंबिक पुरुष सांनलीने घणो खुशी थयो पछी हाथजोडी यावत् सांनलीने तहत्त करीने ॥ ६५ ॥ ॥ सिद्धार्थक्षत्रिय राजानी पासेथी निकलीने खत्रीकुंम गामनगरनी वचमांथी थइने ज्यां स्वप्न पाठकोनां घर छे त्यां आवीने स्वप्नलक्षण पाठकोने कहेतो हवो ॥ ६६ ॥ ॥ हे स्वप्न पाठको तमोने सिद्धार्थक्षत्रिय राजा याद करे छे तेमाटे हुं तमोने बोलाववा आव्यो छुं तेवारें स्वप्नलक्षणपाठक सिद्धार्थक्षत्रिय राजाना कौटुंबिक पुरुषनी वाणी सुणीने एटले तमोने सिद्धार्थराजा बोलावे छे एवी वाणी सांनलीने, घणाज हर्ष संतोष हृदयमां पामवा लाग्या पछी स्नान मज्जन करीने, पोताना घरना इष्टदेवने पूजीने, शरीर उपर कौतुकने अर्थे तिलक छापा प्रमुख करीने, दहीं, माल अने सरसवने मांगलिक माटे करीने इहां डुष्टस्वप्न प्रमुखनो नाश करवो ए प्रायश्चित्त टालवुं छे, तेमाटे ते करीने, इहां कोइ प्रश्न करेके सिद्धार्थराजाना स्नानना वर्णनमां तो देवपूजा करवी आवी नही अने आ निमित्तियाउना संक्षेप पाठमां देवपूजा आवी तो शुं सिद्धार्थराजा देवपूजा नही करता हता ? एवुं पूछे तेने उत्तर कहे छे के आ वखत तो सिद्धार्थराजा शणगार करीने सनामां आव

ता हता तेथी तिहां दही, मान अने सरसवनी पेरे पाठ नथी तेथी जाणवामां आवे छे के निमित्तियाउने पूछी विदाय करीने पछी पूजा करी हशे ! केमके सिद्धार्थराजा पण श्रीपार्श्व नाथ जगवानना श्रावक छे तेथी श्रीपार्श्वनाथजीनी मूर्त्ति तेमना घरमां अवश्य होवी जोइयें, वली आगल "णायाकय बलिकम्मा" ए पाठ त्रिशलाजीना अधिकारमां चाल्यो छे अथवा कर्त्ता यें पण ए पाठ सहजनो जाणी नही लख्यो होय ! ! एम पण संजवे छे पछी केवली गम्य: हवे स्वप्नपाठक शुद्ध मांगलिक वस्त्र पहेरीने, घणा मूल्यनां घरेणां पहेरी सर्व शरीर शोजायमान करीने, वली पण सरसव अने दर्ज मंगल निमित्तें मस्तके धारण करीने, उछालीने, पोतपोताना घरथी निकलीने, क्षत्रियकुंम गामनगरनी वचमांथी थइने, जिहां सिद्धार्थराजानो मुख्य महेल छे तेने बारणे आवी सर्व एकठा थया, पछी सर्व जेला थइने मांहोमांहे विचार करवा लाग्या के आपणा बधायमां कोइने महोटो थाप्यो नथी माटे एक जणने महोटो थापो, केमके वृद्धविना तो अप्रतिबंध टोलुं वांजे माटे मांहोमांहे स्वप्नना अर्थ विचारीनें एक महोटाना मुखथी राजा आगल कहेवरावबुं, पण जणे जणें जुडुं जुडुं बोलवुं नही जो जणे जण जुडुं बोलवा जाशो तो आदर पामशो नही जेम न्यायशास्त्रमां कह्युं छे के ॥ यत्रसर्वेपिनेतारः सर्वे मत्सरवादिनः ॥ सर्वे ममत्वमिछंति, तेवसीदंति वृंदवत् ॥ १ ॥ जिहां सर्वजण अग्रे सर थावा जाय अने सर्व अहंकार सहित बोलवा वाला होय, परस्परें ईर्ष्या करवा वाला होय, सर्व महोटाइ पणाने वांछवा वाला होय तेमनो समुदाय जेम पांचशें सुजट अनादर पामी दुःख करवा लागा तेम दुःख करे ते पांचसें सुजटनी कथा कहे छे. कोई समयें इहां तिहांथी आवीने पांचसें सुजट जेला थइ गया, ते रोजगार करवा सारुं देशांतरे

गया तिहां कोइ कोइ राजाउनी पासें बे चार दिवस रही रही चाल्या जाय एम करतां एक म
हर्द्धिक महोटा राजाने जइ मल्या तेवारें ते राजायें घोडा, वस्त्र, घरेणां, शस्त्र इत्यादिक सामग्री
तेमनी पासे दीठी तेमज ते सुजटो सर्वे सुरूपवान हता तेने देखी राजा तेमने सन्मान आपी
बोल्यो के तमे कोण गो अनें क्यांथी आव्या गो तेवारें ते पुरुषोयें राजाने प्रणाम करीनें कह्युं
के हे राजन्! अमें नोकरी रहेवा सारुं आव्या बैयें यावत् तेमनी वातो सांजलीने राजा प्रमुख
सर्व सजा खुशी थइ तेवारें राजायें प्रधानने बोलावीने कह्युं के आ सुजटो सारा देखाय ठे, आ
बरुदार ठे, काम पडतां संग्राममां पाग हटे तेवा नथी एवां राजानां वचन सांजली प्रधान
बोल्यो के हे स्वामी! ए सुजट देखवामां तो सारा ठे पण असंबंध ठे केमके एमनामां कोइ मा
लेक नथी तेथी काम पडशे तेवारे जागी जाशे तो तमे उलंजो कोने आपशो? एवुं प्रधाने क
ह्युं तोपण राजा समज्यो नही तेवारें प्रधाने जाण्युं जे राजानुं मन ए सीपाइयोने नोकरी राख
वानुं ठे एवुं समजीने प्रधाने कह्युं हे महाराज! एनी परीक्षा करीने आपणे नोकरीमां राखशुं.
राजायें पण कह्युं के सुखेंथी परीक्षा करो पठी प्रधाने तेमने कोइ सारी जगा जोइने तेमां उ
तारो आप्यो अने रातनी वखतें एक ढोलीयो, एक गादलुं अने एक उसीसुं ते सुजटोनें उतारे
मोकल्यों वली जोजनादिक सामग्री पण घणी मोकली ते सुजटोये जोजन कर्युं पठी जेवारे
सुवा लागा तेवारें ढोलीयो देखीने मांहो मांहे पांचसे जण लडवा लाग्या तेमांथी एक बोल्यो
के मेरादादा बडाथा, और मेंबी बडाहुं, इस्सें मेंसुउंगा. तेवारें बीजो बोल्यो के एकदिन बनमें
सिंह बोलाथा, उसका साद घरमें बैठेबैठे सुनके मेरा बाबाकूं सातदिनं तक ताप आयाथा,
इस्सें मेंही सबसें बडा हुं, वली त्रीजो बोल्यो के मेरे वडे जइयानें सेके हूए सत्ताइस कूंपापडो


चित्र १८
राजसभा
सिद्धार्थ राजा
सखीओ सहित
त्रिशलादेवी
निमित्तप्रकाशक जण
आठ

एक पांवकी लातसें नांजि मारेथे, इस्सें मेंही बडाहुं. वली चोथो बोल्यो के मेरे मामाने एक उंदराकों हराइ दीयाथा इस्सें मेंही बडाहुं, वली पांचमो बोल्यो के मेरा मामाने सातसेरकी खीचडी खाइथी, छठो बोल्यो के मेंतो छ गोलीकी छास पीताहुं, सातमो बोल्यो के मेंतो घरमेंही जंगल जांता हुं,आठमो बोल्यो मेंतो सातदिनतक सोइ रहताहूं जागतानही, नवमो बोल्यो मेंतो बिल्लीसेंनी मरताहूं, दसमो बोल्यो में कुत्ता नसे जद नाग जाउं,एवीरीते एक कहे हूं सुउं, बीजो कहे हूं सुउं तुं कांइ मालेक नथी, एम अर्द्धरात्र सुधी लड्या तेवारें तेमां पांच सात जण समजु हता ते बोल्या अरे तमे लडाइ मकरो, ए शय्यानी साहामां पगराखीनें बढाये सूइ रहो ए न्याय सर्वने बराबर जाणवामां आव्यो तेथी सर्वजणो ढोलीया सामा पगराखीनें सूइ रह्या अने बीजी पण सर्व चीजो पाती प्रमाणे वेंची लीधी पछी प्रजात थयुं तेवारें राजाना माणसो जे निगाह करवा रह्यां हतां तेणे जइ राजा आगल सर्ववात कही तेवारें राजायें निश्चेंछीने स वेंने शीख आपी, कांइ आदर पाम्या नही एवुं स्वप्न पाठकें परस्पर विचारीनें एक जणाने मालेक थाप्यो अने जिहां सिद्धार्थक्षत्रियराजा छे तिहां आव्या आवीने सिद्धार्थराजाने जय विजय शब्द करी वधाव्या ॥ ६७ ॥ ॥ इति तृतियव्याख्यान समाप्त ॥ ॥ अथ चतुर्थ व्याख्यान प्रारंभः ॥ ॥ हवे ते स्वप्नपाठक सिद्धार्थक्षत्रिय राजाने हाथजोडीने जयविजय शब्द करी वधावे अर्थात् हाथ प्रसारीनें आशिर्वाद आपे अने कहेके हे राजा! तमे दीर्घ आयुष्य वाला हो, घणी आजीविकाना धणीहो, लक्ष्मीवान्हो, जशवान्हो, बुद्धिमान्हो, कीर्त्तिमान्हो, वली सिद्धार्थराजाने पार्श्वनाथ स्वामीनो सेवक जाणीने श्रीपार्श्वनाथजीनी स्तुतिकरीनें अशिर्वाद आप्यो ॥ श्लोक ॥ दशावतारोवः पायात्, कमनीयांजनद्युतिः ॥ किंतुदीपो नहि

श्रीपः, किंतुवामांगजोजिनः॥१॥ ॥अर्थ दश छे अवतार जेना तेने दशावतार कहीयें एवा वली मनोहर श्यामकांतिवाला एवा कोण छे? तेवारें बीजो कोइ कहेके दीप एवुं नाम दीवानुं छे अने दशा एवुं बतीनुं नाम छे वली काजलनी श्यामकांति छे, तेवारे कहे छे के ए दीवो तो नही परंतु श्रीपः एटले श्रीकृष्ण तेना पण दश अवतार थया तेथी कृष्ण हशे केमके कृष्ण काला पण छे अने तेना दश अवतार पण छे, तेवारे कवि कहे छे के दीवो अने श्रीकृष्ण ए बेउ नथी तेवारे ए कोण छे के? श्रीपार्श्वनाथ स्वामी वामादेवीना पुत्र छे केमके ए दशजव करीनें तीर्थंकर थया इहां अमरजूतिनां जवथी दशजव गणवा वली एमनी श्यामकांति पण छे तेथी पार्श्वनाथ स्वामी छे ते तमारी रक्षा करो. एवो आशिर्वाद सांजलीने सिद्धार्थ क्षत्रियराजायें ते स्वप्नलक्षण पाठकोनें वांद्या, वस्त्रादिक देवाथी पूज्या, सद्गुणेकरी स्तव्या, सन्मान आप्युं, अने पूर्वें तैयार करेला जे आठ जड़ासन छे तेनी ऊपर जूदा जूदा बेसाड्या ॥६८॥ ॥ इहां कोइ कहेके श्रीपार्श्वनाथजीनो श्रावक सिद्धार्थराजा समकेती छे तेणे मिथ्यात्वी एवा स्वप्न पाठकोने केम वांद्युं? हवे एने उत्तर कहे छे एतो लोकोपचार विनय छे तेतो संसारिक पणानो छे पण पूज्यपणाने तथा धर्मना कामने माटे नथी. जेम लौकिकमां जुहार करे तेने पण वंदन कहे छे तेम ए पण जाणवुं ॥ तेवारपछी सिद्धार्थराजा त्रिशलाक्षत्रियाणीने पडिछमां बेसाडे ते पण पोताना हाथमां फूलफल लेइने बेशे पछी उत्कृष्ट विनयथी सिद्धार्थराजा स्वप्न लक्षण पाठकोनें कहे ॥ ६९ ॥ ॥ हे देवाणुप्रिया आज त्रिशलाक्षत्रियाणीयें पूर्वें वर्णवी आव्या एवां महोटा गजवृषजादि चौद स्वप्नां ते यावत् अल्पनिद्रामां सुती थकी देखीनें जागी ॥ ७० ॥ ॥ तेथी ए चौद स्वप्नानुं हे देवाणु प्रिया कांइ कल्याणकारी फल थाशे?

॥ ७१ ॥ ॥ तेवारें ते स्वप्नलक्षणपाठक, सिद्धार्थक्षत्रियराजाना मुखथी ए अर्थ सांजली घ
णाज खुशी थया, ते स्वप्नांने हृदयमां धारण कर्यां, अने अर्थ विचारवा लाग्या मांहोमांहे
विचार कर्यो, ते स्वप्नांनो अर्थ ग्रहण कर्यो, मांहोमांहे एक बीजाने पूछीने निश्चय कर्यो,
पछी सिद्धार्थराजानी आगल स्वप्नांनां शास्त्रोनो विचार कहेता हवा ॥७२॥ ॥ ते शास्त्रांतरथी
स्वप्नांनो विचार लखे छे. मनुष्योने नव प्रकारें स्वप्नां आवे छे तेमां प्रथम तो जाणेली वात
स्वप्नामां आवे, बीजी सांजलेली वात स्वप्नांमां देखे, त्रीजो दिवसें दीठेली वस्तु स्वप्नामां देखे,
चोथुं वात, पित्त, कफना विकारथी स्वप्न आवे, पांचमो सहज स्वजावथी स्वप्न देखे अथवा
मलमूत्रादिकनी पीडाथी स्वप्न देखे, छठो चिंतामां पड्यो थको स्वप्न देखे, ए छ कारणथी जे स्वप्नां
आवे ते निष्फल छे एनुं कांइ शुजाशुज फल प्राप्त थाय नही. सातमो देवतानी सान्निध्यथी
स्वप्नुं देखे, आठमो धर्म कर्ममां रहेलो प्राणी घणो धर्म करे तेने धर्मना प्रजावथी उत्कृष्ट पु
ण्यने योगे स्वप्नुं आवे, नवमो घणा उत्कृष्ट पापनां उदयथी स्वप्न आवे ए पाछला त्रण स्वप्नां
नो प्राणी देखे तो तेनुं शुजाशुज फल अवश्य थाय खाली न जाय तथा धातुप्रकोपथी वा
युनुं जोर होय तेवारें वृक्ष, पर्वत, टूक उपर चडवुं तथा आकाशमां उमवुं एवा स्वप्नां आवे
तथा पित्त प्रकोपथी सोनुं, रत्न, सूर्य अने अग्नि प्रमुख स्वप्नांमां देखे तथा श्लेष्म अधिक होय
तेना योगथी अश्व, नक्षत्र, चंद्र, शुक्लपक्ष, नदी, सरोवर, समुद्र इत्यादिक उलंघणा देखे ते नि
ष्फल जाणवां वली गाय, बलद, हाथी, महेल, पर्वत, टूंक एमनां उपर चड्यो एवुं स्वप्न देखे
तो महोटाइ पामे. तथा विष्टाविलेपन शरीर देखे तो निरोगी थाय, स्वप्नमां रुदन करे तो हर्षनी
प्राप्ति थाय, स्वप्नांमां राजा, हाथी, घोडो, सोनुं, बलद, गाय, कुटुंब देखे तो कुलनी वृद्धि होय,

तथा प्रासाद उपर चढीनें जाणे जमुं छुं एवुं स्वप्न देखे तथा समुद्र तरुं छुं एवुं स्वप्न देखे तो जो नीचकुलमां तेनो जन्म थयो होय तोपण ते राजा थाय वली दीपक, मांस, फल, कन्या, पद्म, छत्र अने ध्वजा एटला वाना स्वप्नांमां देखे तो जय पामे, तथा पोताना इष्टदेवनी प्रतिमाने जो स्वप्नमां देखे तो आयुर्वृद्धि पामे तेमज कीर्त्ति, यश अने धननी पण वृद्धि पामे. वली जे कपास, भस्म, हाड अने छास ए चार श्वेतवस्तु वर्जीने बीजी कोइ पण सपेत वस्तु स्वप्नांमां देखे तो भली जाणवी तथा जे हाथी, देवता, घोडो अने राजा ए चार चीज विना बीजी कोइ काली वस्तु स्वप्नमां देखे तो ते सारी जाणवी नही. तथा स्वप्नमां गायन करे तो रुदन करवुं पडे, स्वप्नमां नाचे तो बंदीखाने पडे, स्वप्नमां हसे तो शोचमां पडे, स्वप्नमां भणे तो कलह थाय, वली जो स्वप्नमां देवता, साधु, ब्राह्मण, राजा, पितृ, वृषभ एटला मांहेलो कोइ आवीने कोइ प्रकारनी वात कहे ते वात अवश्य सत्य थाय. तथा स्वप्नमां धोलो सर्प भुजाने मसे तो हजार सोनैयानो लाभ थाय, वली कोइ फल्युं फूल्युं वृक्ष तथा रायणनुं वृक्ष तेना उपर पोते चढयो एवुं स्वप्नमां देखे तेने घणुं धन मले, वली गधेडो, उंट, भेंस भेंसो एमना उपर एकलो हुं चढयो छुं एवुं स्वप्न देखे तो ते तत्काल मरण पामे; वली जे पुरुष धोला कपडा वाली धोला चंदननुं विलेपन करेली एवी स्त्रीने हुं भोगवुं छुं एवुं स्वप्न देखे तो तेने सर्व प्रकारनी लक्ष्मी मले, वली जे रातां वस्त्रवाली, रातो चंदन कृष्णगंध विलेपन वाली स्त्री भोगवुं छुं एवुं स्वप्न देखे तो तेनुं लोही सुकाइ जाय, वली जे रत्ननां, सोनानां अने सीसानां ढगलाउ उपर हुं चड्यो छुं एवुं देखे तो ते अवश्य समकेत पामीने मोक्ष जाय तथा जे स्वप्नमां दारु प्रमुखनो घडो जाणे में उपाड्यो छे एवो पोताना आत्मा

ने माने तो ते समकेत पामीने बीजा भवमां मोक्ष जाय ॥ हवे त्रिशला मातायें जे चौद स्वप्नां दीठां तेनुं फल तो आ प्रमाणे छे जे प्रथम स्वप्नमां चार दंतोसलवाळो हाथी दीठो ते देखवाथी ए पुत्र महा पराक्रमी थाशे वली दान, शील, तप अने भाव रूप चार प्रकारनां धर्मनी प्ररूपणा करशे, वली चोसठ इंद्र तथा गजपति जे राजाउ ते एनां चरणकमलने सेवशे ॥ वली बीजे स्वप्ने वृषभ दीठो तेथी तमोने धर्मधोरी पुत्र थशे एटले भरतक्षेत्रने विषे जेम कर्षणीउ वृषभ थकी धान्यनुं बीज वावे तेम ए पुत्र बोधरूप धान्यनुं बीज वावशे ॥ त्रीजे स्वप्ने सिंह दीठो तेथी निर्भय अने शूरवीर त्रण भुवनमां पोतानी आज्ञा मनावशे एवो ए पुत्र थाशे एटले जेम सिंह होय ते श्वापद जीवोथी विनाश पामतुं एवुं जे वन तेनुं रक्षण करे तेम ए पण सम्यक् प्ररूपणा रूप सिंहें करी कुदृष्टि जे मिथ्यात्वरूप श्वापद जीवो तेथकी नाश पामतुं एवुं जे भव्यजीवरूप वन तेनुं रक्षण करशे, एटले मिथ्यात्वरूप आपदाथी भव्यजीवोनुं रक्षण करशे अथवा आठकर्म अने आठमदरूप श्वापदोनो नाश करशे, वली त्रण भुवनने विषे पोतानी आज्ञा मनावशे ॥ चोथा स्वप्नमां लक्ष्मी देवता दीठी तेथी त्रणजगतनी तीर्थंकर लक्ष्मीनो भोक्ता थशे एटले वरसीदान देइ दीक्षापाली केवल रूप लक्ष्मी पामीने आठ प्रातिहार्यरूप तीर्थंकरनी लक्ष्मीने भोगवशे ॥ पांचमां स्वप्नमां फूलनी बे मालाउ दीठी तेथी सत्पुरुषोने माथे पूज्य पणुं भोगवशे एटले जेम फूलनो तोरो मस्तकें धराय छे तेम एनी आज्ञा पण सर्व भव्यजीवो मस्तके धरशे तथा बे माला दीठी माटे एक श्रावकनो अने बीजो साधुनो एवा बे प्रकारना धर्म कहेशे ॥ छठा स्वप्नमां चंद्रमा दीठो तेथी ए सौम्यदर्शन वालो थशे, शीतल परिणामवालो थशे, भव्यजीवरूप कुवलयनो बोध प्रकाश करवाने चंद्रमा सदृश

थशे ॥ सातमा स्वप्नमां सूर्य दीठो तेथी मिथ्यात्वरूप अंधकारनो हर्त्ता थशे तथा पोते प्रजामंमलें करी अलंकृत थशे ॥ आठमा स्वप्नमां ध्वजा दीठी तेथी कुलमां ध्वजा समान उत्तम थाशे तथा धर्मध्वजायें करी बिराजमान थाशे, जगतने चारे दिशायें धर्मध्वजायें करी शोजावशे ॥ नवमा स्वप्नमां पूरण कलश दीठो तेथी संपूर्ण गुणी थशे तथा धर्मरूप प्रासाद उपर कलश चडावशे ॥ दशमा स्वप्नमां पद्मसरोवर दीठुं तेथी जगतना तापने हरवावालो थाशे तथा चालतां थकां एनां पगतलें देवताउ सुवर्ण कमल थापशे ॥ अगीआरमां स्वप्नमां खीरसमुद्र दीठो तेथी गंजीर हृदय वालो थाशे तथा केवल ज्ञानरूप रत्न पामीने चौदराजलोकना नाव जाणशे ॥ बारमां स्वप्नमां देवविमान दीठुं तेथी देवताउनो पूजनीक थाशे एटले वैमानिक पर्यंत चार निकायनां देवताउ एनी सेवा करशे ॥ तेरमां स्वप्नमां रत्ननो राशि दीठो तेथी देवता त्रणगढ करशे, तिहां बेशी नव्यजीवोने धर्मदेशना आपशे ॥ चौदमा स्वप्नमां निर्धूम अग्नि दीठो तेथी दीप्तिवंत थाशे तेजवंत थाशे तथा जेम अग्नि कंचनने शुद्ध करे ठे तेम ए तमारो पुत्र आत्माना शुद्ध स्वनावनी शुद्धि करनारो थाशे, नव्यजनोनां मन शुद्ध करशे, कर्ममलने बाली नाखशे ॥ तथा ए चौद स्वप्नां दीठां तेथी चौदराज लोकनो स्वामी थाशे ॥ एवां चौद स्वप्नांथी एवां फल वालो तमारो पुत्र थशे ॥ वली स्वप्न पाठको कहे ठे के हे देवा णुप्रिया अमारा स्वप्नशास्त्रमां बेतालीश स्वप्नां सामान्य अशुनफल दायक कह्यां ठे अने त्रीश स्वप्ना उत्तम महोटा फलनां देवावालां कह्यां ठे सर्वमली बहोतेर स्वप्नां कह्यां ठे तेमांथी श्री अरिहंत अने चक्रवर्त्तिनी माता, अरिहंत अने चक्रवर्त्ति गर्नमां आव्यां थकां ॥ ग्रंथा ग्रंथ ॥ ४०० ॥ ॥ त्रीश महोटा स्वप्नामांथी गज वृषजादिक चौद महोटा स्वप्नां देखे ॥७४॥ अने

वासुदेव गर्नेमां आवे तेवारे वासुदेवनी माता ए चौद महोटा स्वप्नां मांहेला कोइ पण सात स्वप्नां देखे ॥ ७५ ॥ ॥ बलदेव गर्नेमां आवे तेवारे बलदेवनी माता ए चौद महोटा स्वप्नां मांहेला गमे ते चार स्वप्नां देखे ॥ ७६ ॥ ॥ मंमलिक राजानी माता ए चौद स्वप्नां मांहेलुं एक स्वप्न देखे ॥ ७७ ॥ हवे बेतालीश मध्यम अने त्रीश उत्तम स्वप्न जे पूर्वे कह्यां तेना नाम कहे छे. तिहां प्रथम बेंतालीश स्वप्ननां नाम कहे छे. गंधर्व, राक्षस. नूत, पिशाच, बुकस, महिष, अहि; वानर, कंटकडुम, नदी, खर्जूर, स्मशान, उंट, खर, मार्ज्जार, श्वान, दोस्थ, संगीत, धीज, नस्म, अस्थि, वमन, तम, कुस्त्री, चर्म, रक्त, अश्म, वामन, कलह, विविक्तदृष्टि, जलशोष, नूकंप, ग्रहयुद्ध, निर्घात, नंग, नूमज्जन, तारापतन, सूर्यचंद्र स्फोट, महावायु, महातप, विस्फोटक, डुर्वाक्य. ए बेंतालीश मागां स्वप्न अशुन फल दायक जाणवां. हवे त्रीश उत्तम स्वप्ननां नाम कहे छे. अर्हन, बौद्ध, हरिकृष्ण, शंनु, ब्रह्मा, स्कंद, गणेश, लक्ष्मी, गौरी, नृप, हस्ती, गौ, वृषन, चंद्र, सूर्य, विमान, गेह, अग्नि, स्वर्ग, समुद्र, सरोवर, सिंह, रत्नरेल, गिरि, ध्वज, पूर्ण घट, पुरीष, मांस, मत्स्य, कल्पडुम, ए त्रीश स्वप्न शुन फलदायक जाणवां. ए बधां मली बहोंतेर स्वप्ननां नाम श्री वर्द्धमान सूरिकृत स्वप्नप्रदीप ग्रंथने अनुसारें लख्यां छे ॥ ॥ हवे जे पुरुष स्थिरचित्तवालो होय, जितेंद्रिय होय, पंचेंद्रिय जेणें वश करेलां होय, शांत मुद्रावालो होय, वली धर्मरुचि होय, धर्मानुरागी होय, धर्म उपर श्रद्धावंत होय, दयावंत होय, इत्यादिक उत्तम गुणनो धणी होय, तेने जे स्वप्नुं दीगमां आवे, ते सारुं अथवा मातुं तरत फले. वली रात्रिने प्रथम प्रहरें स्वप्न देखे, तो एक वरषमांहे फल आपे, रात्रिने बीजे प्रहरें स्वप्न देखे तो छमास मांहे फल आपे, रात्रिने त्रीजे प्रहरें स्वप्न देखे तो त्रणमास मांहे

फल आपे, रात्रिने चोथें प्रहरें स्वप्न देखे, तो एक मासमांहे फल आपे, रात्रिनां अंतनी
ठेहेली बे घडीरात्र रहे तेवारें स्वप्न देखे, तो तेनुं फल दश दिवसमांहे पामे, सूर्य उगती
वेलायें स्वप्न देखे तो तत्काल फल पामे. तथा जो मातुं स्वप्न दीठामां आवे तो पाछा सुइ रहेवुं
अने कोइनी आगल कहेवुं पण नही. तथा उत्तम स्वप्न देखी गुर्वादिक आगल कहेवुं, जो संभ
लाववा योग्य कोइ जन न मले तो गायना कानमां पण संजलाववुं, नलुं स्वप्न देखी पछी सुवे
तो निष्फल थाय, नलुं स्वप्न देखी मूर्ख जन आगल तो सर्वथा न ज कहेवुं. केम के जेवुं फल
सांजले, तेवुं फल पामे. पण उत्तम पुरुष आगलज कहेवुं ते उपर मूलदेवनुं दृष्टांत कहे छे. को
इएक राजानो पुत्र अणमानितो थको छे तेनुं नाम मूलदेव छे पण तेने दान आपवानुं घणुंज
व्यसन छे तेथी राजायें तेने काहाडी मूक्यो ते फरतो फरतो कोइक गामे आव्यो पोते महा
धर्मवंत जैनमति छे परंतु खावाने नहतुं तेवारे शहेरमां याचवाने गयो तिहां फरतां एक वा
णीयायें जेंशने अर्थें अडद रांध्या हता ते मूलदेवने आप्या तेने लइ वाडीमां आव्यो अने मन
मां चिंतववा बेठो जे कोइ अतिथि आवे तो तेने जोजन आपीने पछी हुं जोजन करुं. एटलामां
एक साधु पण जूख्यो थको त्यां आव्यो, तेवारे मूलदेवें ते ऋषिने देखी बाकला वोहोरावी दी
धा अने पोते आनंदपणे सुइ रह्यो तिहां निराबाध पणे बह्यो चंद्रमा मे गल्यो एवुं स्वप्नुं दीठुं,
ते स्वप्न देखीने जाग्यो अने वली जे वाडीमां ए मूलदेव सूतो हतो तेज वाडीमां एक बावानो
मठ छे ते बावानां चेलायें पण तेहज स्वप्नुं दीठुं देखीने जाग्यो प्रजातें पोताना गुरुनें कह्युं ते
वारे गुरुयें कह्युं जे तुं आज गाममां जिक्षा लेवा जइश तेवारे तुजने चंद्रमा जेटलो महोटो
घृतें चोपडेलो रोटलो गोल सहित मलशे ते सांजली चेलो राजी थइने जिक्षा लेवा गयो ते

वारे तेने गुरुना कह्या प्रमाणे रोटलो मळ्यो हवे ते वात राजकुमार मूलदेवें सांभलीने विचा
र्युं जे हुं एनी आगल म्हारा स्वप्नांनी वात जो कहीश तो मने पण एटलुंज फल कहेशे केम
के जे स्वप्न एना चेलायें दीठुं ले ते में पण दीठुं ले माटे एनी आगल तो.वात करीश नही ए
म विचारी हाथमां श्रीफल लेइने शहेरमां गुरु आगल गयो तिहां स्वप्नांनी वात कही तेवारें
गुरुयें कह्युं जे तुं म्हारी दीकरी परणीशतो हुं तुजने स्वप्ननुं फल कहीश मूलदेवे कह्युं म्हारी
नात जात तो तुं जाणतो नथी अने ताहारी पुत्री केम परणावे ले ? निमित्तियें कह्युं में सर्व
वात जाणी ले एम कही तेने पुत्री परणावीने पछी स्वप्नांनुं फल कह्युं के आ गामनो अपुत्रीउ
राजा आजथी सातमें दिवसें मरण पामशे अने तमे आ गामनां राजा थाशो तेवात साची
मानीने मूलदेव फरी तेहज वाडीमां गयो एम करतां सातमे दिवसे गामनो राजा पण मरण
पाम्यो तेवारे राजाविना कोइने चाले नही तेथी पंच एकठा थइने एवो ठेराव कर्यो के पाटवी
घोडो, पाटवी हस्ति अने पाटवी प्रधान इत्यादिकने शणगारीने कह्युं जे जेने ए राजा करी
थापे तेने राजगादीयें बेसाडीयें केमके एम कर्याथी पित्राइ गोत्राइ जे होय ते आगल कोइ
वांधो करी शके नही हवे हाथी अने घोडो ए बे बाहेर नीकलीने जे वाडीमां मूलदेव सूतो
ले ते वाडीमां आवी हाथीयें गलगाट करी मूलदेवना मस्तके कलश ढोळ्यो अने घोडे हणह
णाट कर्यो पछी हाथी तेने सूंढथी उपाडी पोतानी पीठ उपर बेशाडीने शहेरमां लइ आ
व्यो, लोकोये तेने राजपाटें थाप्यो. माटे सारुं स्वप्न दीठुं होय तो उत्तम डाह्या पुरुष आगल
कहेवुं पण मूर्ख आगल नज कहेवुं ॥ हवे उत्तम स्वप्न मूरख आगल कहेवाथी जे दुःख थाय ते
आश्रयी वणिकस्त्रीनुं बीजुं दृष्टांत कहे ले, कोइएक वणिकस्त्रीयें स्वप्नमांहे समुद्र पीधो, प्रभातें

गुरु समीपें पूछवा जतां मार्गमां एक सहियर मली तेणें पूछ्युं जे हे बेहेन ! गहूंली लइ किहां जाउ छो ? एम घणा बलात्कारें पूछ्युं, तेवारें तेने यथास्वरूप कह्युं जे में स्वप्नमां समुद्र पीधो, तेनुं फल गहूंली करी गुरुने पूछीश, एवुं सांभलतांज सहसाकारें सहियर बोली एवडो मोहोटो समुद्र पीतां ताहारुं पेट केम फाट्युं नहीं ? एम हांसीमां बोलीने चालती थइ, पछी गहूंली करी गुरुने स्वप्ननुं फल पूछ्युं, तेवारें गुरुयें आकार इंगित देखीने कह्युं के ए स्वप्न तमें प्रथम कोइ आगल प्रकाश्युं देखाय छे ? तेवारें तेणीयें सहियरनी वार्ता कही, ते सांभलीगुरु बोल्या जे तमें पूर्वे कोइ आगल जो न कह्युं हत, तो तमोने भाग्यवंत पुत्र थात, हवे तो आजथी सातमे दिवसें शरीरें कष्ट थशे, तेमाटे तमें घेर जइ आत्मसाधन करो, पछी बाइ घेर आवी आत्मसाधन करी देवगत थइ, तेमाटें रूडुं स्वप्न जेना तेना आगल कहेवुं नहीं, तथा कोइ कहेवा योग्य न मले, तो गायना कानमां कहियें, पण कह्या विना फल न होय तथा प्रथम शुभ स्वप्न देखी पछी माठुं स्वप्न देखीयें,तो माठा स्वप्ननुं फल पामीयें, एम परावर्त्त जाणवुं. तथा कोइ सिंहें अथवा घोडे अथवा वृषभें जोतर्यो रथ तेना उपर पोतें बेठो छे एवुं स्वप्न देखे, तो राजा थाय, घोडा, वाहन, वस्त्र, घर, कोइ लइ जाय छे, एवुं स्वप्न देखे, तो राजभय, शोक, बंध, विरोध अर्थहानि थाय. सूर्य चंद्रनुं बिंब गल्युं पीधुं देखे, तो समुद्र पर्यंत पृथ्वीनो धणी थाय. तथा उजले गजे बेठो, नदीतीरें शालन्नु करुं छुं. एवुं स्वप्न देखे, तो समस्त देशनो पति थाय. पोतानी स्त्रीनुं हरण देखे, तो धननो नाश थाय, उजले सर्प्पे जमणी भुजायें डंक दीधो, एवुं स्वप्न देखे, तो रात्रिमां सहस्त्र सोनैया पामे. मनुष्यनां मस्तक, चरण, भुज, खाउं छुं, एवुं स्वप्न देखे तो राज्य पामे. काली गाय. अश्व, गज, प्रतिमा देखें,

तो सारुं थाय अने बीजी काली वस्तु देखे, तो माठी जाणवी. तथा मातुं स्वप्न देखी देवनी पूजा देखे,तो सारी वस्तु पामे, ध्रो,अक्षत,चंदन देखे, तेने मांगलिक थाय. वली राजा,हाथी, घोडो, सुवर्ण, वृषन्न, गाय, एटलां वानां स्वप्नमां देखे, तेनी कुटुंबवृद्धि थाय. रथें बेठो जाय, ते राजा थाय, तांबूल, दधि, वस्त्र, चंदन, जाय, बकुल, कुंद, मचकुंद, फूल, वृक्ष, एटला वानां देखे, तो धनागम थाय. दीप,पान्नां, फल, पद्म, कन्या, छत्र, तथा ध्वज, हारादिक आन्नरण देखे,तो लक्ष्मीनो लान्न थाय. हरण, प्रहरण, नूषण. मणि मोती, कनक, रूपुं तथा कांस्यपात्रनुं हरवुं देखे, तो तेने धननी हानि थाय. बारणां,नोगल, हींमोलो, पावडी, घर, नांग्यां देखे,तो तेने स्त्रीनो नाश थाय. पगरखां तथा छत्र लाधां देखें अथवा तीक्ष्ण तरवार देखे, तेने मार्गे चालवुं थाय,जे वाहाणमां चढयो,ते वाहाण नांग्युं ने पोतें तरी नीकले एवुं स्वप्न देखे,ते परदेशें जाय. तिहां धन पामी आवे. अंजनें नेत्ररोग,रोमछेद देखे, तो धन क्षय थाय,नेंशो, उंट उपर चढी दक्षिण दिशायें जाय, तेनुं शीघ्र मरण थाय. कमलाकर, रत्नाकर, जलें पूर्ण नदी, तथा मित्रनुं मरण देखे, तो घणुं द्रव्य पामे, क्वाथ पीधुं छुं एवुं देखे,तें अतिसार रोगें मरण पामे, वली जात्रायें जाय, पूजा करें,तेने कुलवृद्धि थाय. हृद, सरोवरें कमल उग्यां देखे,ते कोढ रोगें मरण पामे. हाथी, घोडो, गादलुं, सिंहासन तथा घरनां वस्त्र एटलां वानां गयां देखे तो राजानो नय थाय, हथीयार, आन्नरण, मणि, मोती, सोंनुं अने रूपुं एटला वानांनो नाश थतो देखे तो तेनुं धन अने मान बे वानां जाय, जे पोतानी नार्याने कोइ लइ जाय छे एवुं देखे तो तेनी संपदानो नाश थाय, पोतानी स्त्रीने कोइ परान्नव करेछे एवुं देखे तो क्लेश उपजे, गोत्रमांहेली स्त्री कोइ लइ जतो देखे तो तेना नाइ प्रमुख बंधीखाने पडे, पोतानो

ढोलीयो अने धोलुं वस्त्र स्वप्नमां देखे तो पोताने पीडा उपजे, कोइ मनुष्यना पगनुं हुं मांस नक्षण करुं बुं एवुं स्वप्न देखे तो राजा थाय, पद्मसरोवर, समुद्र अने नदी उतरतो देखे तो घणुं द्रव्य पामे वली उनुं पाणी, गायनुं छाण गोलमां नेलवेलुं पीधुं एवुं देखे तेने अतिसार रोग थाय तेथी मरण पामे, देवमूर्त्तिनी पूजा करुं बुं, यात्रा करुंबुं एवुं देखे तेने सर्वप्रकारें वृद्धि थाय, हृदय उपर कमल उग्युं देखे तो तेनुं शरीर कोढरोगे विनाश पामे इत्यादि ॥ माटे हे देवाणुप्रिया! त्रिशलाक्षत्रियाणीयें जे चौद महोटा स्वप्ना दीठां ते उदारकारी, मंगलकारी बे तेनुं फल हे देवाणुप्रिया! अर्थनो लान्न थाशे नोगनो लान्न थाशे, पुत्रनो लान्न थाशे, सुखनो लान्न थाशे तेमाटे हे देवाणुप्रिया! निश्चे ए त्रिशला क्षत्रियाणीनें नव महीना अने साढासात दिवस व्यतिक्रम्यानंतर तमारा कुलमां ध्वजा समान, दीपकसमान, मुकुटसमान, पर्वतसमान, तिलकसमान, कुलनी कीर्त्तिनो करवा वालो, कुलना निर्वाहनो करवा वालो, कुलमां सूर्यसमान तेजवंत, कुलनो आधार, कुलना यशनो करवा वालो, कुलमां वृषन्न समान, कुलपरंपरानी वृद्धि करवा वालो, जेना हाथ पग घणा सुकोमल बे एवो वली कोइ इंद्रिये हीन नही, लक्षण व्यंजन गुण सहित, मानोन्मान सहित, संपूर्ण सर्व अंग नलो सौम्याकार, वल्लन्नकारी जेनुं दर्शन बे एवो पुत्र थाशे ॥ ७८ ॥ वली ते बालक बाल्यावस्था बोडीने जेवारे विनय विज्ञान पणो युवान अवस्था पामशे तेवारे शूरवीर, पराक्रमवंत, घणा हाथी घोडा रथ प्रमुख सेनानो मालक, चार अंत पृथिवी सुधी राज करवा वालो एवो चक्रवर्त्ति राजानो राजा थाशे अथवा त्रण लोकनो नाथ धर्मचक्रवर्त्ति एवो तीर्थंकर थाशे ॥ ७९ ॥ तेमा वास्ते हे देवाणुप्रिया त्रिशलाक्षत्रिया

णीयें यावत् मंगलकल्याणकारी, स्वप्नां दीठां ॥८०॥ तेवारें सिद्धार्थराजा ते स्वप्न लक्षण पाठ कोनां मुखथी एवो अर्थ सांजली करीने हृदयमां हर्ष संतोष पाम्यो थको हाथजोडी अंजली करीने स्वप्न लक्षण पाठकोने कहेतो हवो ॥८१॥ एमज थवानुं छे, हे देवाणुप्रिया एवोज ए अर्थ छें, जुगे नथी, में वांछ्यो तेज प्रमाणे तमारा मुखथी ग्रहण कर्यो, जे तमे कहो छो ते सत्य छे एवुं कहे. आ वचन उपर कोइक टीकाकारे जोजराजानी वारमां एक गांगो तेली थयो छे तेनुं दृष्टांत आपेलुं छे परंतु ते पाछलथी थयेलो छे अने आ वातता प्रथमनी छे तेथी ए दृष्टांत मलतुं नथी पण उपनयनमां मलती वात छे वली दृष्टांत होय ते एक देशीय होय मांटे लो कने आनंदने वास्ते जोपण अंतर्वाच्यादिकोमां नथी तोपण लखी मूकीये छैयें तद्यथा ॥ सिद्धार्थराजा कहे छे के सुसिद्धिनुं कहेवुं ते सर्व स्थानके सिद्धज थाय छे जेम गांगा तेलीने थयुं. ते गांगा तेलीनी कथा कहे छे. कोइएक विद्यार्थि दक्षिणदेशमां प्रतिष्ठानपुर नगरने विषे कोइ एक नट्टनी पासेंथी त्रीश वर्ष पर्यंत विद्या जणीने अहंकारमां आव्यो तेवारे माथा उपर अंकुश धारण कर्यो तथा रखेने विद्याये करीने मह्वारो पेट फाटी जाय तेना गर्वथी पोताना पेटने पाटो बांध्यो, वली जो कोइ वादी मह्वारा साथे वाद करतां नाशिने आकाशमां जाय तो तेने निसरणी उपर चढी नीचो पटकी आपुं एवा गर्वे करी एक नीसरणी पण पोतानी पासे राखी, वली वादी जो नाशिने पातालमां प्रवेश करी जाय तो तेने खोदीने बाहार काढीश एवा अनिमानथी एक कोदाल पण पोतानी पासे राखी तिहां निसरणी तथा कोदाल एक चाकरना माथा उपर आपी तथा वली जो कोइ वादी मह्वारा साथें वादमां हारी जाय तो तेना मुखमां तृण रखावी देवुं एवा विचारथी एक माणस घासनो पुंलो लइने तेनी

पछवाडे पछवाडे चाले एवा आमंबर सहित चालतो थको दक्षिण, गुजरात, मारवाड, मेवाड इत्यादिक. देशोनां पंमितोनी साथे वाद करी तेने जीतीने सरस्वतीकंठाजरण इत्यादि बिरुदा वली बोलावतो थको सर्व गामोना पंमितोने जीततो थको अनुक्रमे मालवदेशमां उज्जेणी नगरीना नोजराजानी सनामां पांचशें पंमित छे एवी वात सांजलीने ते पंमितोनी साथें वाद करवा सारुं उज्जेणीयें आव्यो तेने राजायें महोटा आमंबरथी नगरमां प्रवेश कराव्यो, रुडा महेलमां उतारो आप्यो, पछी ते पंमित राजानी सनामां आवी पंमितोनी साथे वाद करीने राजानी समक्ष कालिदास माघ आदिक पांचशें पंमितोने जीत्या तेवारें राजाये विचार्युं जे आ महोटो आश्चर्य थयो जे परदेशी नट्टें आवीने महारा सर्व पंमितोने हरावी दीधा तेथी महारा पंमितोना मानकी हानि थइ एवो चिंतातुर थइने क्रीडा करवाने अर्थे जावा लाग्यो मार्गमां जतां रस्तामां एक आंख्य वालो एक गांगोतेली घाणी उपर बेठो छे ते घाणीमांथी तेल लइने बीजो एक जुदो घडो हतो तेमां नाखे पण तेलनुं एक टीपुं मात्र बाहेर पडवा दीये नही एवा काणा घांचीने देखीने राजाये विचार्युं जे आ काणानी बुद्धि जूउ केवी छे ! तो ए काणानी अक्कलनो तो पारज नही होय एम कहेवुं तेज सत्य छे पछी राजायें तेने बोलावीने पुछ्युं के अरे तुं नट्टाचार्य साथे संवाद करीश ? तेवारें ते बोल्यो हा महाराज ! हुं वाद करीश एमां महारुं शुं जवानुं छे ? ए नट्टाचार्यनी साथे वाद करवो कांइ महोटी वात नथी जो जोरावर जबर देखीश तो पण अटपटा न्यायथी तेने जीती लइश पछी राजायें आदित्यवारने दिवसें नट्टाचार्यने बोलावीने कह्युं के हे नट्टाचार्य ! महारा जे साधारण नट्टो हता तेने तमेजीत्या पण हजी महारा सर्व पंमितोनो जे आचार्य छे तेनी साथे जो वाद करो अने जीतो तो हुं जाणु जे तमे

खरा पंडित छो तेवारें दक्षिण भट्टाचार्यें कह्युं हा राजन्! हुं तेनी साथें पण वाद करीश माटे ते क्यांछे तेने आंही बोलावी ल्यो तेवारे राजायें भट्टाचार्यने आसन आपी बेसाड्यो पछी कालीदास, क्रीडाचंद्र प्रमुख भट्टोने एकठा करीने कह्युं के जाउ पंडितजीने लइ आवो तेउये जइ गांगातेलीने भट्टाचार्यनो वेश कराव्यो, घरेणां पहेराव्यां अने शरीरमां तो ते, प्रथम थीज मातेलो मदोन्मत्त हाथी सरखो छे तेने पालखीमां बेसाडी पांचशें पंडितोयें परवर्यो थको राजसभामां लाव्या, राजायें उठी आदर दीधो, सर्व सभा उठी ऊभी थइने महोटा सन्मानथी सिंहासन उपर बेसाड्यो तेवारे दक्षिण भट्टाचार्यें तेने जोइने विचार्युं जे आतो मातेलो छे अने हुंतो शरीरे दुबलो छुं तेथी एनी साथें वाद करतां पार आवे नही माटे एनी साथें वचननो कलह करवो नही, मात्र तत्त्वज पूछवुं एम चिंतवीने एक आंगुली उंची करी तेवारें भोजराजाना भट्टें क्रोधकरी बे आंगुली उंची करी ते जोइ दक्षिण भट्टाचार्यें चमत्कार पामीने पांच आंगुली उंची करी बतावी ते जोइ गांगातेलीयें मुठी भीडी बतावी तेवारें दक्षिण भट्टाचार्यें पोताना मस्तक उपरथी अंकुश उतारी नाख्यो, पेटे पाटो बांध्यो हतो ते छोडी नाख्यो अने निसरणी तथा कोदाली पण नाखी दीधी, तृणनो पूलो बाली नाख्यो, समस्त माननो त्याग करी सर्व सभा समक्ष भोजराजाना भट्टने पगे लाग्यो अने कहेवा लागो के महोटी आश्चर्यनी वात छे जे मने कोइए पण जीत्यो नही पण तुं महोटो पंडित माटे तें मुजने जींत्यो ते जोइ भोजराजा विस्मय पामीने दक्षिण भट्टाचार्यने पूछ्युं के तमे केवा प्रकारनो वाद कर्यो तेवारे भट्ट बोल्यो के तमारो भट्ट महाज्ञानवान् छे कारणके में एनी साथें समस्यायें वाद कर्यो जे आ जगतमां एक शिव छे एवुं स्थापन

करवा सारुं एक आंगुली तमारा जट्टने बतावी तेवारे तमारा जट्टे बे आंगुली देखाडी तेथी हुं समजी गयो के एक मात्र शिवज नथी पण शिव अने शक्ति ए बेउ छे पछी वली में कह्युं के इंद्रियो पांच छे तेथी पांच आंगुली बतावी तेवारें आपना जट्टाचार्यें मुठीजीडीने बतावी तेथी हुं समजी गयो के पांचइंद्रियोतो खरी पण तेने वश राखवी जोइयें तेवारें में जाण्युं जे ए पंम्डित त्यागी ज्ञानी अने जितेंद्रिय छे एवीरीते वाद थयो तेमां हुं हारीगयो एना समान बीजो पंम्डित में क्यांय पण दीठो नही एवुं कहीने दक्षिणजट्टाचार्य मानभ्रष्ट थयो थको पोताने देशे चाल्यो गयो, पाछलथी जोजराजायें गांगातेलीने पूछ्युं के तें केवा प्रकारनो वाद कर्यो अने केवीरीते जीत्यो तेवारे तेली बोल्यो के महाराज दक्षिणजट्टाचार्य घणो खराब माणस छे मने कहेवा लाग्यो के ताहारी एक आंख छे ते हुं फोडी नाखीश एवुं मनमां लावीने एक आंगुली उंचीकरी तेवारें में बे आंगुली उंची करीने समजाव्यो के तुंतो एक आंख फोडतो पण रही जाइश परंतु हुं ताहारी बे आंखो फोडी नाखीश त्यारे मने पंजो देखाडी बोल्यो के हुं तने थाप मारीश तेथी ताहारुं मोहोडुं फरी जाशे तेवारे में मुठीवाली बतावीके हुं तुजने एक मुठी मारीश तो तुं पातालमां पेसी जइश एवी वात तेलीना मुखथी सांजलीने राजा प्रमुख सर्व सजाने हसवुं आव्युं अने बोल्या के ए महोटो जाग्यशाली सुसिद्धिवालो छे एवुं कही वस्त्रादिक पहेरामणी आपी सन्मान देइ गांगा तेलीने घेर पोचतो कर्यो एनी पेरे सिद्धार्थ राजा कहे छे के हे स्वप्न पाठको! तमे सुसिद्धि कहो तेथी महारेतो तमारुं कहेवुं सत्य थाउ एवुं सिद्धार्थराजाए स्वप्न पाठकोने कह्युं कहीने ते स्वप्नोने रुडीरीते धारण करीने ते स्वप्नलक्षण पाठकोने घणा अशन पान खादिम स्वादिमादिक चार आहार जमाडीने फूल फल गंध माला

वरेणादिकें करीने सत्कार सन्मान आप्युं ते सत्कार सन्मान आपीने घणी आजीविका जीवे तिहां सुधी खाया करे एवी करी दीधी अर्थात् गाम प्रमुख आपीने शीख आपे ॥७२॥ ॥ तेवारपछी सिद्धार्थ क्षत्रियराजा सिंहासन थकी उठीने जिहां त्रिशलाक्षत्रियाणी पडिछमां बेठी छे त्यां आवीने कहे छे ॥७३॥ ॥ एवो निश्चय हे देवाणुप्रिया स्वप्न शास्त्रमां बेंतालीश सामान्य स्वप्नां अने त्रीश महा स्वप्नां सर्व बहोत्तेर स्वप्नां कह्यां छे तेत्रीशमांथी चौद महोटां स्वप्नां तीर्थंकर अने चक्रवर्त्तिनी माता देखे अने एज चौद स्वप्न मांहेला सात स्वप्नां वासुदेवनी माता देखे अने चार बलदेवनी माता देखे, एक मंडलिकराजानी माता देखे, एवुं स्वप्न पाठके कह्युं ने जे तमे चौदे स्वप्नां दीठां ॥७४॥ ॥ ते तमारे चक्रवर्त्ति तथा तीर्थंकर होवावालो पुत्र थाशे ॥७५॥ ते पछी त्रिशलादेवी ए अर्थ सांजलीने हृदयमां खुशी थइ यावत् स्वप्नांनो अर्थ धारण करीने ॥७६॥ ॥ सिद्धार्थराजानी आज्ञा लइने नाना प्रकारना मणिरत्नोना बाजोठथी उठीने ताकीदरहित यावत् राजहंस सरखी गतियें चालती थकी ज्यां पोतानुं जुवन छे तिहां आवीनें पोताना मंदिरमां प्रवेश करती हवी ॥७७॥ ॥ जे दिवसथी श्रमणजगवंत श्रीमहावीरस्वामी ते राजानाकुलमां हरिणिगमेषी देवें संहराया ते दिवसथी वैश्रमणनामे इंद्रमहाराजनो जे जंमारी जेनुं लोकोमां धनद एवुं नाम छे ते जंमारीना हुकुमना उठाववा वाला एवाजे तिर्यक लोक निवासी वैताढ्यपर्वतनी मेखलाये रहेनारा व्यंतरनिकायनां तिर्यगजृंजक देवता ते शक्रेंद्रना हुकुमथी घणाजघणा एवा जे जुनाधन घल्या महानिधान ते केवा धन तोके जे धनना स्वामी हीण थइगया, जे. धनना संचयकरवा वाला घडाववा वाला मरण पामी गया छे, तेमनो कोइ गोत्री पण रह्यो नथी, सर्वथा ते धनना स्वामी विछेद गया, फाटवा वाला विछेद गया,

झाटवा वालानां कुलगोत्र पण विछेद पाम्यां तेमनुं धन. ते हवे जे स्थानकें गालीने मरीगया ते स्थानकोनां नाम कहे छे. गामबुधिनां गुण जिहां जता रहे तेने गाम कहीये तिहां घडावीने मरीगया ते धन तिहांज रहीगयुं, ते धन तथा जिहां कर नही लागे तेनें नगर कहीये, धूल नो कोट जिहां होय तेने खेट कहीयें, खोटुं नगर ते कर्बट कहीये, शहेरथी बे कोश उपर जे गाम होय ते मंडप कहेवाय, जेने चारे बाजुये गाम वसे ते द्रोणमुख कहेवाय, जलमां अने थलमां थइने मार्ग जाय ते पट्टण कहीये, जिहां तापसोनुं वसवुं होय तेने आश्रम कहीयें, तीर्थस्थानके जे गाम होय तेने संवाह कहीयें, सार्थवाहने उतरवानुं स्थानक होय तेने सन्निवेश कहीयें. एवा प्रकारनां गामोनें विषे सिंघोडाने आकारें रस्ता होय तेने विषे तथा त्रिवाटाने विषे, चोवटाने विषे तथा घणा मार्ग जिहां भेला थता होय तेने चच्चर मार्ग कहीये तथा चौमुखां देवोनां मंदिरमां, महोटापंथ वाला राजमार्गने विषे, देवकुलमां, सभामां, पाणीना स्थानकमां, बागमां, उद्यानमां, वनमां, वनखंडमां, एकजातिनां वृक्ष होय तेने वन कहीयें, अनेक जातिनां वृक्ष जेमां होय तेने वनखंड कहीयें, मसाणमां, सूनाघरमां, पर्वतनी गुफाउमां, होमना स्थानके, पर्वतनी शिला खोदेली होय तेमां, बेसवानी शालामां, लोकोने वसवाना स्थानकोमां एटला स्थानकें घालेलां जे धन ते सर्वजगाउनां धन लइ जइने सिद्धार्थ राजानां घरमां नाखो एवो इंद्रमहाराजनो हुकुम थयो तेवारें तिर्छालोकना वसवा वाला तिर्यग्जृंभक देवता ते सर्वधन लइ जइने सिद्धार्थराजानां घरमां नाखे ॥८८॥ ॥ जे रात्रिमां श्रमण भगवान श्रीमहावीर स्वामी ज्ञातकुल जे सिद्धार्थराजा तेना कुलमां आव्या ते रात्रिथी मांडीने सिद्धार्थराजा, सोनेकरी, रूपेकरी, धनेकरी, धान्येकरी राज्येकरी, देशेकरी, वाहनेकरी, कटकें

करी, पालखी प्रमुखेकरी, जंमारेंकरी, धान्यना कोगरेकरी, पुरेंकरी, अंतेउरजे राणीयोनो परिवार तेणेकरी, देशवासी लोकोयेकरी, यशवातेकरी, घणुं घणुं वध्या, वृद्धि पाम्या तथा घणो धान्य गणवामां आवे एवां चोवीश प्रकारनां धान्य तेनां नाम कहेछे. जंव, घउं, शालि, व्रीहि, साठी, कोद्रवा, सामो, कांग, राल, तिल, मग, अडद, अलशी, चणा, तिउमा, वाल, सिलिंद, राजउडद, उन्नू, मसूर, तुअर, कुलथ, धाणा, कलायरो, इत्यादिक प्रकारनां धान्यथी तथा बीजां पण सोनुं, रूपुं, रत्न, मोती, मणि, दक्षिणावर्त्तशंख, राजवर्त्त, शिला, मुगिया, लाल रत्न, पद्मराग आदिके करी वध्या वृद्धि पाम्या तथा प्रीति, सत्कार, समुदाये करीनें घणा घणाज वध्या, वृद्धिपाम्या, तेथी श्रमणजगवंत श्रीमहावीरस्वामीनां माता पिताउनां मनमां एवो हर्ष विचार उपन्यो ॥ ८९ ॥ ॥ के जे दिवसथी अमारे आ पुत्रकूखमां आव्यो छे ते दिवसथी लइने अमे सर्वप्रकारें पूर्वे कह्यां एवां सोनां रूपां प्रमुख वस्तुयेंकरी वध्या, प्रीति सत्कारें करी घणाघणाज वध्यां, माटे जेवारे अमारे घेर आ पुत्रनो जन्म थाशे तेवारे अमे ए छोकरानुं नाम जेवा एमां गुण छे तेवुं आपीशुं, वृद्धिपणाना गुणेकरी वर्द्धमान एवुं नाम स्थापन करीशुं ॥ ९० ॥ ॥ तेवारे श्रमणजगवंत श्रीमहावीर स्वामी पोतानां मातानी उपर अनुकंपा एटले दया लावीने विचार्युं जे हुं जेवारे गर्नमां हालुं चालुं छुं तेवारे माताने दुःख उपजे छे एम चिंतवीने मातानी कूखमां निश्चल रह्या, हाल्या चाल्या नही, कंप्या नहि, पोतानां अंगोपांग गोपवी राख्यां एवा थया थका रह्या, इहां कवि उत्प्रेक्षा करे छे के जाणे जगवान् मोहराजाने जीतवासारुं एकांते विचार करता रह्या छे केशुं ? अथवा कोइ परब्रह्मनुं अगोचर ध्यान करे छे केशुं ? अथवा कल्याणरस प्रत्यें पोताना आत्मगुण साधवा

रह्या ठे केह्युं ? अथवा कामदेवनो निग्रह करवाने अर्थे रूपपरावर्त्तन विद्या साधता रह्या ठे केह्युं ? एवीरीतें श्रीजगवान् मातानी कूखने विषे रह्या ते तमोने कल्याणरूप लक्ष्मीने अर्थे थाउ इति ॥ ए१ ॥ ॥ तेवारे त्रिशलामातानां मनमां एवुं थयुं जे महारोगर्ज्ज कोइ देवता लइगयो, ए महारोगर्ज्ज मरण पाम्यो, महारो गर्ज्ज चविगयो, महारो गर्ज्ज गलिगयो, ए महारो गर्ज्ज प्रथम हालतो चालतो हतो ते हमणां हालतो चालतो नथी तेथी जाणुबुं जे गर्ज्जने कुशल नथी एवुं विचारीने मनमां संकल्प थयो, चिंतारूप समुद्रमां बुड्यां, अने हाथ उपर मोहोडुं धरी नीचीदृष्टि राखीनें आर्त्तध्यान ध्याववा लागी, ते आर्त्तध्यान आ प्रमाणे ठे ते आगला आलावामां कहे ठे ॥ ए२ ॥ ॥ हवे त्रिशलादेवीनो शोक विचार लखीये ठैयें ॥ अहो एटले खेदकारक वचने शोक करे ठे के माहारो जे गर्ज्ज जतो रह्यो ते हुं निश्चें अजागणी बुं, हीणापुण्यवाली बुं, अजागीयाना घरमां चिंतामणीरत्न रहे नही अथवा दारिड्रीनां घरमां निधान केम रहे ? जेम मारवाडमां कल्पवृक्ष रहे नही तेम पुण्यहीणने तृषालागे तेवारे अमृत पान करवानी इब्रा थाय तो ते इब्रा केवीरीतें पूरणथाय ? वली कहे ठे के हे दैव, हे कर्म, तुं महा निर्दय बो, निर्लज्ज बो, तुजने करुणा नथी, अरे पापिष्ठ दुष्ट अरे निरपराधी लोकने मारवा वाला, तुं महारो विना मुद्दे वैरी केम थयो ? ताहारो में शो अपराध कर्यो के जेथकी तें मा- हारो मनोरथरूप कल्प वृक्ष उखेडी नाख्यो, जो में कोइ ताहारो अपराध कर्यो होयतो हे पापी तुं प्रगट थइने शावास्ते कहेतो नथी ? तें मुजने दुःखनी खाण प्राप्त करी दीधी, तें मु- जने आंख्यो आपीने पाठी खेंची लीधी, तें मुजनें हाथमां निधान आपीनें पाठो खेंची लीधो, तें मुजनें मेरुपर्वत उपर चडावीने पाठी जमीन उपर नाखी दीधी, तें महारा मुखमां आ

वेलो कोलीयो खेंची लीधो, तें महारा निपजेला पाकेला धान्यना क्षेत्रने बाली दीधुं, तें महारी रसकुपिका नांजी दीधी, तें महारुं जहाज नर समुद्रमां डूबावी दीधुं, अथवा वली देवने उलंनो देवाथी शुं थाय ! अरे जीव तें आगला नवमां एवाज कर्म बांध्या हशे ते कर्म तुजने हमणां उदय आव्यां छे. पूर्वनवमां में माताउनी पासेथी बालकोने दूर कर्यां हशे तथा गाय प्रमुखनां वाछरुने दूध पीवा दीधुं नही, वृक्षनी मालीयो नांगी, सरोवरनी पाल फोडी, दव लगाव्या, अणगल पाणी पीधां, उंदरोना बिल खोद्यां, धूलथी नर्यां, नोलीयां अने गोहनां दरोमां उनुंपाणी तथा तेल रेड्युं, कीडी मकोडाना दरमां उष्ण पाणी रेड्यां, पोपट मेना प्रमुखने पांजरामां घाल्यां, तेमनी माताना वियोग कर्या, चिडा प्रमुख पंखीउनां माला पाड्या, ईमां फोड्यां, जूं लीख मार्यां, लोकोना गर्न उपर द्वेष कर्यो, गर्न पडाव्या, गर्नस्तंनन कराव्या, वशीकरण, उच्चाटन कराव्यां. ताहारो पुत्र मरण पामजो एवा शराप दीधा, पापना मंत्र अने औषध कर्यां, कोइने विष दीधुं, कोइना रत्न चोरी लीधां, कोइनुं शील नंगाव्युं, अथवा व्रत लेइने नांग्या, कोइनां गाम बाल्यां, महोटां वृक्ष धरतीमांथी उखेडी नाख्यां, महोटा तालावनां शोषण कर्यां अथवा देवद्रव्य नक्षण कर्यां, जैनमंदिर पाड्यां, गुरुना अवर्ण वाद बोल्या, देवगुरु उपर द्वेष कर्यो, दान देतांने वर्जना करी, वृक्षनां फल विदार्यां अथवा अनंतकाय नक्षण कर्यां, काचांफल तोड्यां घणुंशुं कहुं ! एवा माहारे जीवें पाप कर्यां हशे ते पाप हमणां मुजने उदय आव्यां छे के जेथकी महारो आवो गर्न गली गयो, माटे हुंतो पारविनानी डुखणी थइ, जो महारो ए चौद स्वप्ने सूचित गर्न गयो तो हवे महारे संसारमां बीजुं शुं सुख छे, हुं राजपाटने शुं करुं वधारे शुं कहुं, त्रणलोके पूजित एवा पुत्र विना

सर्व म्हारे सुनुं छे, हवे हुं किहां जाउं, शुं करुं, कोनी आगल जइ पोकार करुं, एवा विलाप करती थकी त्रिशला देवी यूथभ्रष्ट हरणी सरखी थइ, इहां तिहां भमे, नीसासा नाखे, एवी अव्यवस्थित थयेली त्रिशलादेवीने देखीने सखीयो पूछवा लागी के हे स्वामिनि! आज तुं एवी केम थइ रही छो? अमे तने पूछीये छैये के आ दुःखनुं शुं कारण छे तेवारे त्रिशलादेवी आंखमांथी आंसु नाखीने निशासा मूकती बोली के हे सखीयो! हुं तमोनें शुं कहुं, हुं निर्भागणी छुं, म्हारुं जीवितव्य गयुं. तेवारे सखीयो बोली हे सखि! आवा अमंगलिक वचन म बोल, बीजुं सर्व रह्युं पण ताहारा गर्भने तो कुशल छे? तेवारे त्रिशला बोली हे सखियो! जो म्हारा गर्भने कुशल होय तो बीजुं म्हारे शुं दुःख छे? म्हारो गर्भ जतो रह्यो एज दुःख छे. एवुं कहेतां मूर्छा खाइने जमीन उपर पडीगइ तेवारें सखीयोए चंदनजल छंटकावीने वींजणाये वायरो करी सचेतन करीने फरी पुछ्युं जे ताहारा गर्भने शुं थयुं तेवारे राणी गदगदस्वरथी बोली के म्हारो गर्भ जतो रह्यो एवुं सांभली सखीयो पण सर्व दुःखी थइ थकी राजाने जइ ए हकीगत कही तेथी राजा पण दुःखी थयो, नाटक वाजित्र सर्व निषेध कर्यां, सर्व शोकाकुल थइ बेठा के हवे शुं करीये. एवा थया के तेने कांइ पण सूजे नही, तेवारे कोइक तो निमित्तियाने पूछता हवा, कोइ ज्योतिषीया जोगीने पूछता हवा अने वृद्ध स्त्रीयो, शांति पुष्टि करती हवी,कुलदेवीने उलंभा देती हवी के हे देवी आ वखत तुं किहां गई,एवा एवा विलाप करे छे पण त्यां कोइ शब्दथी बोले नही, स्तब्ध थया, सर्व शोकनी राजधानी सरखां थयां. आंसुंथी मुख धोतां थकां, निशासा खाता थकां,दुःखे पीडातां थकां, कोइने खावुं पीवुं पण सूजे नही एवा स्वरूपे थयां. तेवारे थोडी वार पछी भगवाने जाण्युं के प्रथम वाजित्र प्रमुख वाजतां

हतां ते हमणा केम नथी वाजतां? एवुं जाणी अवधिज्ञाने जोयुं तेवारे सर्व व्यतिकर जाणीने वि चार्युं के जुउ यतः ॥ किंकूर्म्मैःकस्यवाब्रूमः, मोहस्यगतिरीदृशी ॥ दुखैर्धातुरिवास्माकं, दोषनिष्प त्तयेगुणा ॥१॥ ॥ आ मोहराजानी गति कहेवी छे जे में तो गुण कर्युं तो आंही उलटुं अवगुण थयुं ते उपर कलिकालनुं दृष्टांत कहेछे. जेम कोइक पंथी परदेशथी घणु द्रव्यउपार्जन करी पोताने घेर आवतो हतो तेवामां रस्ते चालतां कोइक अटवी आवी तेमां दव लागो दीठो ते दवमां कोइ सर्प्प दाझे छे ते सर्प्पें पहेला वाट मार्गुने कह्युं के मुजने आ दवमांथी बाहेर काहाड्य तेवारे तेणे बाहेर काहाड्यो त्यारे सर्प्पें कह्युं उभो रहे हुं तुजने भक्षण करीश ते पुरुष बोल्यो में तुजने बलतो राख्यो, उपकार कर्यो, मरणमांथी उगार्यो तो उलटो तुं मुजने भक्षण करीश? सर्प्पें कह्युं आज कलिकाल वर्त्ते छे आजना समयमां गुणनो दोष थाय तेमाटे हुं तुजने करडीश तेवारे पंथी बोल्यो हुं घणा वर्षे घेर जाउंछुं वली माहारी पासे द्रव्य छे माटे घेर जइ महारी स्त्रीने द्रव्य आपी तेनी शीख मागी आवुं छुं एवो कोल आपी पोताने घेर आव्यो, स्त्रीने सर्व वात कही शीखमागीने ते पुरुष अटवीमां पाछो आव्यो, स्त्रीपण पाछलथी आवी सर्प्पने स्तुति करी कहेवा लागी जे अहो नागराजा महारा भरतारनुं भक्षण करशोतो महारी शी वले थशे, महारे शत्रु पण घणा छे तेवारे सर्प्पें कह्युं ते शत्रुनिवारण उपाय तुजने बतावीश, तेनी तुं चिंता मकरजे आ औषध महारा राफडा पासे छे तेनुं मूल लइ पाषाण उपरे घसीने तेना छांटा वैरी उपर नाखजे तो बलीभस्मथाशे. स्त्रीयें ते औषधीनुं मूललइ, अमृत मूलीने पाषाण उपर घशीने सर्प्प उपर छांटा नाखवा तैयार थइ तेवारें सर्प्प बोल्यो में तुजने औषधी देखाडी तो वली मुनेंज बाले छे उलटो गुण उपर अवगुण करे छे तेवारे स्त्री बोलीजे गुणनो नाइ दोष छे एवुं तमेज तमारा मुखथी

कह्यो छो माटे हवे तमारे बोलवुं नही एम कही सर्प्पउपर छांटा नाख्या ते बली नस्म थयो ॥ इति कलिकाल दृष्टांत ॥ एम विचारी गर्नमांहे रह्यां नगवाने एक देशें टचली अंगुली ह लावीने एक देशे हाल्या तेवारे त्रिशलाजीये जाण्युं अरे मह्यारो तो गर्न छतो छे, अने में फोकट खोटो शोक कस्यो एवुं चिंतवन करीने कहेती हवी के हे सखीयो ! मह्यारा गर्नने कुशल छे, एवी वात हर्षथी कहेती हवी, में अज्ञानथी विलापात कस्यो, मह्यारा नाग्य मह्योटां, हुं धन्य कृतपुण्य, हुं त्रणनुवनमां मान्य, माह्यारुं जीववुं प्रशंसनीय, मने जैनधर्म फल्यो, में पूर्वे जे धर्म सेव्यो हतो ते प्रगट थयो, मह्यारुं जीववुं सफल, सखीयो जयजय करवा लागी, अष्टमंगल मांमयां, कुंकुमछांट्यां, राजाने वधाइ दीधी, राजापण खुशी थयो, वाजित्रवाज्यां, नाटक मह्योत्सव थया, तोरण बांध्यां, बंदीजन जयजय शब्द बोल्या, बंदीखानां छोड्यां, अनेक लोक मल्या, मंगलिकनी वातोयें करी कोलाहल थइ रह्यो, मह्या दान आप्यां, ए प्रमाणे आनंदथी राजानी राजधानी हर्ष रूप थइ, सूत्रकार कहे छे के ते गर्ननुं कुशल न जाणवाथी सिद्धार्थराजाना घरमां मृदंग, ताल, बीणा, हस्तताल, नाटक इत्यादि लोकवह्नन एवा सर्व कार्य आनंद रहित थया हता ॥ए३॥ तेथी महावीर स्वामी माताने शोकातुर जाणीने एक देशथी हालता हवा तेवारे त्रिशला हृदयमां हर्ष पामीने बोली ॥ ए४ ॥ ॥ माह्यारो गर्न हरण थयो नथी, यावत् गल्यो नथी, आ मह्यारो गर्न प्रथम हालतो न हतो ते हमणा हाले छे, एवुं कहीने हर्ष पामीने विचरवा लागी. हवें श्रमण नगवंत श्रीमहावीरस्वामीने विचार थयो जे मह्यारा मा बाप हमणाथीज एवा प्रकारनो मोह करे छे तो जेवारे हुं दिक्षा लउं तेवारें तो ए घणुं दुःख पामे माटे हवे मह्यारे मह्यारा माता पिता जीवे तिहां सुधी दीक्षा लेवी कल्पे नही एवुं जेवारें साडाछमहिना

गर्भने थया तेवारे जगवाने अजिग्रह लीधो अर्थात् आंही साडाबमहीनानो गर्भ थयो, साडा बमहीना वीत्या ॥ ए५ ॥ ॥ तेवार पबी त्रिशलामातायें स्नान कर्युं, घरे देवपूजा मंगल कर्यां, सर्व घरेणां आजूषण पहेर्यां, हवे गर्भप्रतिपालन करवाने अर्थे घणो ठंडो आहार लीये नही, घणो उन्हो आहार लीये नही, घणो तीखो सुंठ मिरचादिकनो आहार लीये नही घणो कडवो निंबादिक, घणो कशायेलो हरडे प्रमुख, घणो खाटो ते आंबली प्रमुख, घणो मीठो ते गुडादिक, घणो चोपड्यो ते घी प्रमुख, घणो लूखो ते चणा प्रमुख, घणोसूको ते पूडला पापडी प्रमुख, घणो लीलो ते फल फूल कंदमूलादिक इत्यादिक जोजन खाय नही, जे जोजन करे ते पण विधि सहित करे, वस्त्रपण विधियें करी पहेरें, गंधादिक विधियें लीये, माला प्रमुख विधियी पहेरें, गर्भनी रक्षानें वास्ते पोताने रोग थवा दीये नही, शोक करे नही, मोह करे नही, जय राखे नही, घणा काम करे नही, जेजे काम गर्भने हितकारी होय ते ते कामकरे, मानोपेत पथ्यकरती थकी गर्भने पोषे, जे देशमां जे चीज पाचन थती होय, जे कालमां जे चीज गुणकर्त्ता होय ते चीज वापरे, एवुं करे, कोमल शय्याये शयन करे, सुखासनने विषे बेसे, ऊंची नीची फरे नही, इत्यादिक गर्भ यत्न करे वली वाग्जट्टादिक ग्रंथोमां कहेलुं बे ते कहे बे. गर्भिणी स्त्रीजो वायडुं खाय एटले वायुचीज खाय तो गर्भ कुबडो थाय, आंधलो थाय, वामन थाय, पित्तकर नारी चीज खाय तो गर्भ पडीजाय तथा तेनुं अंग पीलुं थाय, कफ करनारी चीज खाय तो पांडु रोग श्वेत वर्ण वालो थाय अथवा काबरचितरो थाय तथा जो गर्भवाली स्त्री लूण घणुं खाय अने आंखमां काजल घणुं घाले तो बोकरो नेत्र रहित आंधलो थाय, घणोठंडो आहार करे तो वायु घणो थाय, घणुं उनुं खाय तो बोकरो निर्बल थाय, मैथुन सेवन करे तो गर्भ

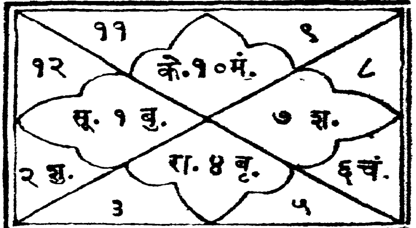
मरण पामे, घोडा प्रमुख उपर चडे, घणी दोडे, घणी चाले, चालती पडे, पेट मसलावे, खाल प्रमुख उल्लंघे, उंची नीची सूवे, मेडी प्रमुख उपर चडे उतरे, उत्कट बेसे, उपवास करे, वमन विरेचन जुलाब लीये एटलां वानां करे तो गर्भ पडीजाय, घणुं रुदन करे तो छोकरो चीपडी आंख वालो थाय, घणा गीत गायतो छोकरो बहिरो थाय, घणी वातो करे तो लायर थाय, घणुं हसे तो मश्करो थाय, घणी गालो बोले तो छोकरो लंपट थाय ॥ तथा ऋतुऋतुमां शुं शुं पथ्य करवुं शुं खावुं ते कहे छे, वर्षाऋतुमां लूण गुणकारक छे, शरद ऋतुमां जल गुणकारक छे, शिशिर ऋतुमां खाटोरस गुणकारी छे, वसंत ऋतुमां घृत गोल इत्यादिक गुणकारक छे ॥ वली कोइ महोटी वृद्धावस्था वाली सश्यर बतावे तेरीते त्रिशलाराणी करे छे ते कहे छे के बाइ धीरजथी बोलो, धीरजथी चालो, क्रोध मकरो, पथ्य खाउ, घणो आकरो घाघरो अने काचली बांधो नही, घणुं हसवुं मकरो, चांदणीमां सूवो नही, केमके अगासें सुवाथकी पुत्र बाम्हो रावणखंम्हो थइ जाय इत्यादिक वली घणुं नीचुं न चालवुं, घणी उंची चडीशमां, दिवसे सुवाथकी छोकरो उंघण थाय, आधीउं थाय, नख कापवा थकी पुत्र कुशीलीयो थाय, घणुं दोडवाथी पुत्र चंचल थाय, घणुं हसवाथी होठ, दांत, तालु अने जीभ कालां थाय, घणां गीत गावाथी बहेरो थाय, वींजणे वायु करवाथी उन्मत्त थाय, अति बोलवाथी बोलको थाय, अति शोक करवाथी उच्चाटीयो थाय, मूर्छाथकी निर्बुद्धि थाय, अति भय राखवाथी गर्भ बीकण थाय, अति परिश्रम करवाथी मंदशक्ति वालो अने आलसु थाय इत्यादिक वातो सर्व वडेरी कहे ते प्रमाणे त्रिशलाराणी पण गर्भनी प्रतिपालना करे ॥ हवे त्रिशला माताने भला म्हो होला उपजे छे के पूजा करुं, दान आपुं, साहमी वात्सल्य करुं इत्यादिक म्होहोला सर्व सिद्धार्थ


चित्र १०
पर्वत
सैन्य
सिद्धार्थ राजा
कुंदलउतारे छे
इंद्र नासी जाय छे

राजा संपूरण करे, हर्ष सहित सन्मान करीने पूरा करे पण एवुं न कहेके तुंतो बेगी बेगी फंद
करे छे एवीरीतें डोहोलानुं अपमान करे नही, एम त्रिशलादेवीने उपजता डोहोलानी इच्छा
सर्वथा तेना मनमां रहे नही एप्रकारें मटावी आपे छे. तिहां रयवाडी प्रमुख वनक्रीडा प्रमुखनां
डोहोला तो सर्व सिद्धार्थराजायें पूर्या परंतु एक दिवसें त्रिशलादेवीने एवो डोहोलो उपन्यो
के इंद्राणीनां कुंडल खेंची लइने हुं पहेरुं ते डोहोलो राजाथी पूरण थयो नही तेथी मनमां
उमणी थइ (अर्थात् खिन्न थइ) तेवारे राजाना पूछवाथी डोहोलो पूरो करवानी वात राणी
ना मुखथी सांभलीने राजा कहेवा लाग्यो के ए डोहोलो पूरण करीश पण ए वात महारा
हाथमां नथी एटलामां इंद्र महाराजनुं आसन चलायमान थयुं तेवारें इंद्रे अवधिज्ञाने जो
इने भगवाननी माताने डोहोलो पूरण करवा सारुं इंद्राणी प्रमुख देवांगनाना समूहने लइने
क्षत्रियकुंड नगरनी समीपे एक महादुर्गम पर्वत छे तिहां इंद्रपुरनामे नगर वसावीने पोताना
परिवार सहित आवी रह्यो, सिद्धार्थराजायें सांभल्युं जे इंद्र महाराज आपणा पर्वतमां रहे छे
तेवारे सिद्धार्थराजायें इंद्र महाराजने कहेवरावी मोकल्युं के अमारी राणीने कुंडल जोइयें छैयें
माटे तमारी इंद्राणीनां कुंडल आपजो ते सांभली इंद्रे कुंडल आप्यां नही तेवारे सिद्धार्थराजा
सेना लइ इंद्र सार्थे युद्ध करवा गयो तिहां इंद्रमहाराजतो जीतवाने समर्थ छे तथापि जाणी
बूजी हार खाइने भागी गया पाछलथी सिद्धार्थराजायें पोकार करती रुदन करती एवी इंद्राणी
अप्सरानां वृंदमां बेठेली हती तेना कुंडल लूटीने त्रिशलाराणीने आपीने डोहोलो पूरण
कर्यो. वली बीजा पण सत्तरभेदी पूजा रचावुं, तीर्थयात्रा करुं, देवगुरुनी भक्ति करुं, सुपात्रे
दान आपुं इत्यादिक अनेक डोहोला त्रिशलाने उपन्या ते राजायें पूरण कर्या ॥ ॥ एवी

रीतें त्रिशला राणी मोहोला पूरीजती, सूवे, बेशे, उन्नीरहे, सघली ऋतुने विषे सेववा योग्य, गर्भनें सुखनां करनार, एवां जोजन, आछादन, वस्त्र, गंध, माला प्रमुख लीये, गर्भना हित कारक पथ्ये करी देशकाल योग्य आहार करती थकी, गर्भपोषण करती थकी पोताना परिजन जे दासी साहेलीउं प्रमुख तेमनी साथे विचरती थकी फरती थकी पोताना आवासमां रहे ले ॥ ए६ ॥ ॥ ते कालने विषे ते समयने विषे श्रमणजगवंत श्रीमहावीर स्वामी उनालानो पहेलो चैत्र महीनो तेनुं बीजुं पखवाडियुं एटले चैत्रशुद्, ते चैत्रशुद्नी तेरशने दिवसें नवमहीना उपर साडासात दिवस गया थकां इहां नवमहीनाने साडासातदिवस गर्जावासनो अधिकार ले परंतु उंगो अधिको होय तोपण पाठ एवो बोले तो तेनी कांइ हरकत नथी गर्भमां रहेवानो काल तो चोवीशेयतीर्थंकरनो आ प्रमाणे लेः— श्रीरुषजदेवजी नवमहीनाने चारदिवस रह्या, श्रीअजितनाथजी आठ महीनाने पच्चीश दिवस रह्या, श्रीसंजवनाथ नवमहीनाने ब दिवस रह्या, अजिनंदन आठ महीनानें अठावीश दिवस, सुमतीनाथ नवमहीनाने ब दिवस, पद्मप्रज नवमहीनाने ब दिवस,सुपार्श्वनाथ नवमहीनाने बदिवस,चंद्रप्रज नवमहिनाने आठदिवस,सुविधिनाथ आठ महीनाने बवीश दिवस, शीतलनाथ नवमहीनाने ब दिवस, श्रेयांसनाथ नवमहीनाने ब दिवस, वासुपूज्य आठमहीनाने वीशदिवस, विमलनाथ आठमहीनाने एकवीश दिवस, अनंतनाथ नव महीनाने ब दिवस, धर्मनाथ आठमहीनाने बवीश दिवस, शांतिनाथ नव महीनानें ब दिवस, कुंथुनाथ नवमहीनाने पांचदिवस, अरनाथ नवमहीनाने आठदिवस, मल्लीनाथ नवमहीनाने सातदिवस, मुनिसुव्रत नवमहीनाने आठदिवस, नेमिनाथ तथा नेमनाथ नवमहीनाने आठदिवस, पार्श्वनाथ नवमहीनाने ब दिवस, श्रीमहावीरस्वामी नवम

हीनाने साडासात दिवस ए चोवीश तीर्थंकरनी गर्नस्थिति कही ॥ हवे उंचराशिना सात ग्रहमां पहेलो चंद्रयोग होते बते, निर्मल दशदिशाउ ते वादला अने धूल रजे करी रहित होते बते, जनमति वेलायें अंधकाररहित, अग्नि दावानल प्रमुख उपद्रव रहित दिशाउ होते बते, एवा वखतमां पक्षीयो सर्व जयकारी शब्द बोली रह्यां बे, प्रदक्षिणावर्तसानुकूल शीत मंदमंद सुगंध सहित एवो पवन नूमिमां चालीरह्यो बे पृथ्वीमां सर्वजातिनां धान्य नीपज्यां बे तेना योगें करी हर्षवंत थया थकां सर्वदेशोना लोक क्रीडा करता थका विचरी रह्यां बे तेकालें मध्य रात्रिना समयमां उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रना त्रीजा पाया सार्थे चंद्रमानो योग होते बते रोग रहित एवी त्रिशलाराणी ते रोगरहित त्रणज्ञान सहित एवा पुत्रने प्रसवती हवी ॥९७॥ ॥ इति चतुर्थ व्याख्यान समाप्त ॥ यत्र जन्मकुंमली स्थापना ॥ स्वस्तिश्री रुद्धि वृद्धि जयोमांग



ल्याभ्युदयश्च संवत् बविशें एकाणुना वर्षे मासोत्तममासे चैत्रमासे शुक्ल पक्षे त्रयोदशी तिथौ नौमवासरे घटी. ५५ पल. ११ उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र घटी. ६० ध्रुवयोग घटी. ४५ पल. ५५ तैतलकर्णे एवं पंचाग शुद्धौ श्री इष्ट घटी. ४५ पल, १५ इक्ष्वाकुवंशे श्रीक्षत्रिय कुंमल पुरनयरें सिद्धार्थगृहे नार्या त्रिशला क्षत्रियाणी कुक्षौपुत्ररत्नमजीजनत्, त्रण नुवन दीपक नगवंत श्रीमहावीर जन्म्या तस्य जन्म कुंमली स्थापना ॥ ॥ अथ पंचम व्याख्यान प्रारंनः ॥ जे रात्रिमां श्रीमहावीर स्वामी जन्म्या ते रात्रिमां घणा देवता अने देवीयो ते स्वर्गमां जातां आवतां जाणे घणाज आकुल व्याकुल थइ रह्या होय तेनी पेरें जाणवामां नही आवे एवो तेनो शब्द होतोहवो अर्थात् अव्यक्त कोलाहल शब्दमय होतो हवो एटले जेवारे घणाजनो बोले

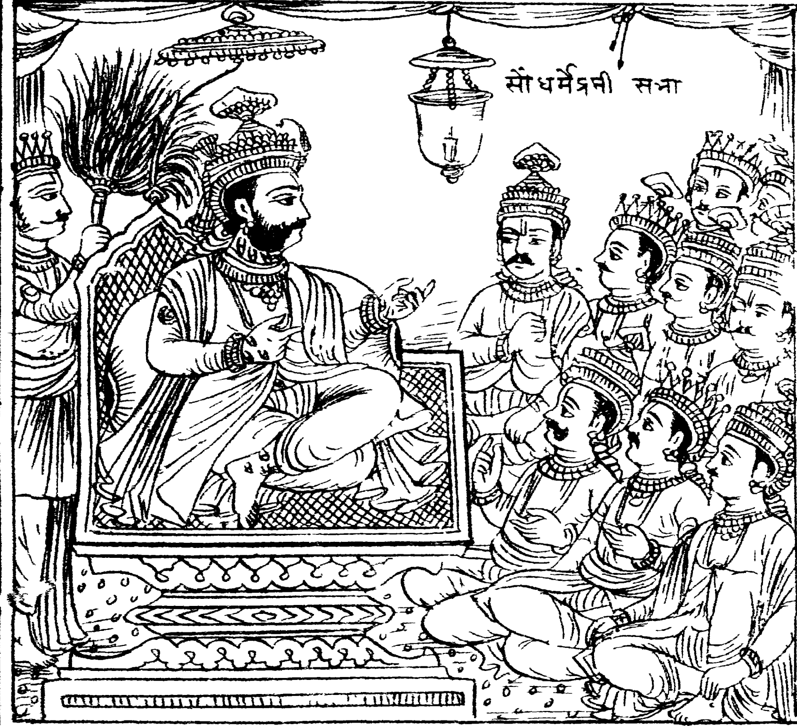
तेवारे शब्दमय थाय पण मालम पडे नही ॥ हवे सूत्रना अर्थने अनुसारें विस्तार सहितजन्ममहोत्सव कहिये छैयें ॥ जे समयमां श्रीमहावीर स्वामीनो जन्म थयो तेवारे त्रण जगतमां उद्योत थयो, वली आकाशमां देवडुंडुनी वाग्यां, वली नरकना जीवोने पण क्षणमात्र आनंद थयो, केम के जगवंतना अतिशय थकी नारकी जीवने पण मुहूर्त मात्र शाता रहे वली स्थावरजीवोनुं पण विशेष छेदन जेदन नथाय तेथी तेने पण सुख उपजे, जन्मती वेलायें सर्व जमीन उल्लासमाननी पेरें थइ रही, हवे श्रीजगवंतनो जन्ममहोत्सव कहेछे. तेमां पण प्रथम छप्पन्न दिशाकुमारीयें करेलो जन्ममहोत्सव कहे छे. तिहां जगवानना जन्म थयाथी छप्पन्न दिग्कुमारिकानां आसन चलायमान थयां तेवारें अवधि प्रयुंजी. जगवाननो जन्म थयो जाणी, रात्रें तिहां आवे, तेनां नाम कहे छे, रुचकद्वीपनी वसनारी चार दिशानी आठ आठ, तथा बे विदिशानी चार चार अने मेरुनी ऊर्ध्व दिशानी तथा गजदंत गिरीनी अधो दिशानी आठ आठ, मली छप्पन्न दिग्कुमारिका ते रात्रें तिहां आवे, तेमां प्रथम जोगंकरा, जोगवती, सुजोगा, जोगमालिनी, तोयधरा, विचित्रा, पुष्पमाला अने अनंदिता, ए आठ दिग्कुमारिकाउ अधोलोकें गजदंताकार पर्वतनी हेठें वसनारी छे, ते आवीने जगवंतने तथा जगवंतनी माताने नमस्कार करीने, ईशानकोणें एक सूतिका घर बनावे, एक योजन एटले चार गाउ प्रमाण धरतीने संवर्तक वायरे शुद्ध करीने कांटा, कांकरा, दूर करीने सुगंधित करे ॥ तेवार पछी मेघंकरा, सुमेघा, मेघवती, मेघमालिनी, सुवत्सा, वत्समित्रा, वारीषेणा अने बलाहिका, ए आठ दिग्कुमारिकाउ ऊर्ध्व लोकें नंदन वनना कूटोने विषे वसनारी छे, त्यांथी आवीने प्रभुने तथा प्रभुनी माताने नमस्कार करीने ते सूतिका घरने विषे सुगंधित पाणीयें करी सहित फूलनो वरसाद वरसावीने गीत गाती रहे ॥ तेवार


चित्र २१
आकाशमां देवदुंदुभी
सूतिका घर
दिग् कुमारिका
दिग कुमारिका
भगवान्

पछी वळी नंदोत्तरा, नंदा, आनंदा नंदीवर्द्धिना, विजया, वैजयंती, जयंती अने अपराजिता, ए आठ दिग्कुमारिकाउ रुचकद्वीपनी पूर्वदिशाना पर्वतने विषे वसनारी छे. ते त्यांथी आवीने नगवान् तथा नगवाननी माताने नमीनें मुख देखवाने प्रजुंआगळ दर्प्पण हाथमां लइने गीत गाती नजी रहे॥ तथा समाहारा,सुप्रदत्ता, सुप्रबद्धा, यशोधरा, लक्ष्मीवती, शेषवती, चित्रगुप्ता अने वसुंधरा, ए आठ दिग्कुमारिकाउ रुचकनामा तेरमा द्वीपनी दक्षिणदिशाना पर्वतने विषे वसनारीउ छे, ते त्यांथी आवी जिनने तथा जिननी माताने नमस्कार करीने सोनाना नृंगार कलश सुगंधित पाणीथी नरी हाथमां धारण करी नगवाननीमाताने स्नान करावे प्रजु आगळ गीत गान नाटारंन करे ॥ तथा इलादेवी, सुरादेवी, पृथिवी. पद्मावती, एकनासा, नवमिका, नडा, अने सीता, ए आठ रुचक द्वीपनी पश्चिम दिशाना पर्वतने विषे रहेनारीयो छे, ते त्यांथी आवीनें प्रजु तथा प्रजुनी माताने नमस्कार करी नगवाननी मातानी आगळ वायरो करवाने अर्थें वींजणा हाथमां लइ नजी रहे ॥ तथा अलंबुशा, मितकेशी, पूंमरीका, वारुणी, हासा, सर्वप्रना, श्रीं अने ह्रीं, ए आठ दिग्कुमारिकाउ रुचक द्वीपनी उत्तरदिशाना पर्वतने विषे वसनारीउ छे, ते आवी नगवंत तथा नगवंतनी माताने नमीनें नगवंतनी बे बाजुयें चार चार नजी थकी चामर हाथमां लइने प्रजुने ढोळे ॥ तथा विचित्रा, चित्रकनका, तारा अने सौदामिनी ए चार दिग्कुमारिकाउ रुचकद्वीपनी विदिशाना पर्वतने विषे वसनारी छे, ते आवीने नगवंत तथा नगवंतनी माताने नमीने हाथमां दीवा ग्रहण करीने नजी रहे ॥ तथा रूपा, रूपासिका, सुरूपा अने रूपकावती, ए चार दिग्कुमारिकाउ रुचकद्वीपनी विदिशिमां वसे छे, ते आवीने नगवंत तथा नगवंतनी मातानें नमीने नगवंतनुं चार अंगुल प्रमाण नाळवर्जीने कापे पछी

धरतीमांहे खाडो खणीने दाटे, तेना उपर वैडूर्य रत्ननो चोखंडो चोतरो करे, तेनी उपर दर्भ वावे तेवार पछी सूतिका गृहथकी वेगलां एक पूर्वदिशें, एक दक्षिणदिशें अने एक उत्तर दिशें, ए त्रण ठेकाणें त्रण केलीनां घर करे, तेमां सिंहासन रचे पछी दक्षिण दिशिना केलीगृहमध्यें भगवंत तथा भगवंतनी माता, ए बेहुने लावीने सिंहासन उपर बेशाडीने तेमने सुख उपजे एवुं सुगंधी तेलोनुं मर्दन करे, पछी पूर्वदिशिना केलीगृहमां लइ जइ सिंहासन उपर बेसाडी स्नान करावें, चंदन लेपन करे, पछी उत्तर दिशिना कदलीगृहमां सिंहासन उपर बेसाडी अरणीकाष्ठथी घसीने अग्नि जगाडी चंदनना काष्ठथी शांति पुष्टि होम करी, ते होमनी रक्षा पोटली करी भगवंत तथा भगवंतनी माता ए बेहुना हाथमां बांधे, बांधीने हे भगवान्! पर्वतायुर्भव. एवी आ शीष आपीने मणिमय गोला बे उछाले पछी तेने वजावीने भगवानने रमवासारुं पल्यंक उपर बांधीने गीत गान करी भगवंत तथा भगवंतनी माताने जन्मस्थानकें मूकी पाछी पोत पोताने स्थानकें जाय॥ ए एकेकी दिग्कुमारिकाने चार चार महत्तरादेवी छे, चार हजार सामा निक देवो छे, शोल हजार अंगरक्षक देवो छे, सात अनीकाधिपति छे, तथा बीजा पण घणा परिवारें परिवृतथकी एक योजनना विमानमां बेशीने प्रभुनो जन्ममहोत्सव करवाने जेम आवे, तेम महोत्सव करीने पोताने स्थानकें पाछी जाय, ए देवी भवनपतिमांहेली एक पल्योपमायु वाली जाणवी, ए देवीयोनो एज स्वभाव छे, के तीर्थंकरनो जन्म थयाथी प्रथम एमनुं आसन चलायमान थाय, तेवारें प्रभुनो पहेलो जन्ममहोत्सव ए देवीयो करे, पछी बीजा इंद्रादिक देवो करे इति॥१॥ एम दिग्कुमारिकाउयें महोत्सव कर्या पछी चोसठ इंद्रोना आसन चलायमान थाय तेवारें श्रीमहावीर भगवाननो जन्म थयो एवुं अवधिज्ञाने जाणीने प्रथम सौधर्म

चित्र ७७





इंद्र, हरणीगमेषी देवतानें बोलावी बार योजन पोहोली अने छ योजन उंची तथा एक यो जन नाली, पाठांतरें चार योजननी नाली कहे छे ॥ उक्तंच ॥ बारसजोयण पहुला, सुघोसा घंटाइं अद्धउच्चत्तं ॥ चत्तारिय नालाउ, देवा सयपंच वायंति ॥ १ ॥ एवी सुघोषा नामे घंटा वजाववानो हुकुम आपे, तेवारें हरणी गमेषी देवता पांचसें देवोनी साथें ते घंटा वजावे ते घंटाना शब्दथी सौधर्म देवलोकनां बत्रीश लाख विमाननी घंटा वाजे, तेवारें सर्व देवता साव धान थइ जाय ॥ यदुक्तं ॥ सुणिऊण संखसद्दं, मिलंतिजवणाय विंतरं पडहं ॥ जोइसिषं सीय नायं, घंटेण विमाणिया देवा ॥ १ ॥ एज प्रमाणें इशानेंद्र लघु पराक्रमनामा देवता पासे सुघोषा घंटा वजडावे, एम चोसठ इंद्र सहु पोतपोताना देवोनी पासें घंटा वजडावे तेवारें सर्व देवो इंद्र महाराजनुं कांइ कार्य छे एवुं जाणीने इंद्रमहाराजनी पासें आवी हाजर थाय पछी सौधर्मेंद्र पण पालकनामा देवतायें बनावेल लाख योजननुं पालकनामक विमान तेना मध्यजागमां पूर्वदिशानी साहामो सिंहासन उपर बेसे तेनी आगल इंद्रनी आठ अग्रमहिषी आठ नद्रासन उपर बेसे अने इंद्रनें डाबे पासे चोराशी हजार सामानिक देवो नद्रासनो उपर बेसे जमणे पासे त्रण पर्षदा बेसे तेमां बार हजार अन्यंतर पर्षदाना, चौद हजार म ध्यम पर्षदाना तथा शोल हजार बाह्य पर्षदाना मली बेंतालीश हजार देवो नद्रासन उपर बेसे तथा इंद्रनी पछवाडे सात कटकना देवो नद्रासन उपर बेसे चारे दिशायें चोराशी चो राशी हजार आतमरक्षक देवता नद्रासनो उपर बेसे. एवीरीतें सर्व चोसठ इंद्रो पोतपोताना विमानमां बेग जाणी लेवा. ए प्रकारें सर्व इंद्र देवदेवीउ सहित नंदीश्वर द्वीपें आवे तेमां केटलाएक देवो इंद्रनो हुकुम राखवा सारुं आवे, केटलाएक देवो मित्रना प्रेर्या थका आवे,

केटलाएक पोतानी देवीउंना प्रेर्या थका आवे, केटलाएक तीर्थंकरनी भक्ति भावें करी आवे, केटलाएक कौतुक जोवा सारुं आवे, केटलाएक अपूर्व आश्चर्य जोवाने अर्थें आवे, ते देवो पोतपोताना जूदा जूदा वाहन ऊपर चड्या थकां मांहोमांहे आपसआपसमां सिंहना वाहन ऊपर चडेला देवता हस्तिना वाहन ऊपर चडनारा देवताने कहे छे के ताहारो हाथी दूर राख, नही तो महारो सिंह जबरजस्त छे ते तारा हस्तिने मारी नाखशे एमज पाडाना वाहन ऊपर चडेला देवता घोडाना वाहन वालाने कहे छे तथा गरुड ऊपर असवारी करनार देव सर्प ऊपर असवारी करनाराने कहे छे तथा चित्राना वाहन ऊपर बेठेला देवो छे ते गगना वाहन ऊपर बेसनाराने कहे छे एम वचन विवाद करता कोडाकोडी देवताउं सहु पोतपोताना वाहननी प्रशंसा करता चाले छे, तिहां देवसमुदायें करी आकाश यद्यपि घणुं मोटुं छे तोपण सांकडुं थई गयुं, वली मार्गमां कोइएक देवता मित्रने छोडी आगल चाल्या जाय तेवारें तेनो मित्र कहे के अरे थोडीवार उभा रहो हुं पण आवुं छुं तेवारें ते देवता कहे प्रथम भगवानने वांदवानो महोटो लाभ कोण मूके? एवुं कहीने चाल्यो जाय एवीरीतें जे जबरजस्त होय ते आगल निकली जाय अने कोइएक नबला होय ते पडता थका बोले जे भाइ आ मार्ग घणो सांकडो छे तेवारें बीजो कोइ कहे चुप रहो ए पर्वना दिवस सांकडाज होय छे कोइ कहे घणुं नही बोल खबर पडशे तो इंद्र मारशे एवीरीतें आकाशथी वेग उतरतां थकां जेवारें ज्योतिषीना तारा पासें आव्या तेवारें ताराउंनी किरणों लागवाथी कवि उत्प्रेक्षा करे छे के जो पण देवता सर्व निर्जर छे तोपण जरा सहित थया मस्तकमां जाणे धोला केश उग्या के शुं? एवा देवताना मस्तकें ताराना विमान शोभि रह्यां छे. ते जाणीयें





चित्र १६
सूतिका घर
इंद्र पांच
रूपे करीने
प्रभुने लईजाय छे.

रूपानो घडोज होय नहि!! वली शरीरें तारा लाग्या तेना योगें परसेवाना बिंदु सरखा दिसवा लाग्या एरीतें सर्व इंद्र अने देवो नंदीश्वरद्वीपमां विमान संकोचीने रहेता हवा ॥ हवे सौधर्मेंद्र जगवानना जन्म घरने विषे आवीने, जगवान तथा जगवाननी मांताने नमस्कार करीने, त्रण प्रदक्षिणा आपी जगवाननी माताने कहे के हे रत्नकुक्षिधारिणी! हे रत्नगर्ने! हे रत्नदीपक हे माता! पहेला देवलोकनो हुं इंद्र बुं ते ताहारो पुत्र चोवीशमो तीर्थंकर छे तेनो जन्म महोत्सव करवा सारुं आव्यो बुं माटे तमे कांइ मरशो नही एम कही "नमोस्तु रत्नकुक्षिधारिके तुन्यं" ए पाठ जणीने जगवंतनी माताने अवस्वापिनी निद्रा आपीने बीजो जगवानं जेवुंज स्वरूप करी मातानी पासे राखीने इंद्रे पोतानां पांच रूप वैक्रिय बनाव्यां तेमां एक रूपे करी बे हाथे करसंपुटमां राखी जगवानने उपाड्या अने एक रूपें जगवंतनी पठवाडे रह्यो थको उपर छत्र धर्युं अने बे रूपें बे पासें चामर ढालवा लाग्यो, अने एक रूपें वज्र उलालतो थको जगवाननी आगल चाल्यो, एम बधां मली पांच रूप इंद्र महाराजें वैक्रिय कर्यां, तेमां आगलो पाछला रूपने वखाणे अने पाछलो आगला रूपने वखाणे, एम पांच रूपें करी इंद्रमहाराज, मेरुपर्वत उपर जिहां पांडुक वन छे, तिहां जगवंतने लइ आवीने मेरुनी चुलिकाथी दक्षिण दिशियें अतिपांडुकमला शिलाने तले शाश्वतुं सिंहासन छे, तेनी उपर जगवानने उत्संगमां लइने इंद्रमहाराज पूर्व सन्मुख बेठा, तेवारें तिहां बार देवलोकना दश इंद्र, जवनपतिना वीश इंद्र, व्यंतरना बत्रीश इंद्र, अने चंद्रमा तथा सूर्य, ए बे ज्योतिषीना इंद्र, एम सर्व मली चोसठ इंद्र सपरिवार प्रभुनेस्नात्र कराववाने अर्थे मल्या छे, ते सर्व इंद्र तथा देव मलीने पोतपोताना सेवक देवताउने आज्ञा आपे के जाउ एक हजारने आठ

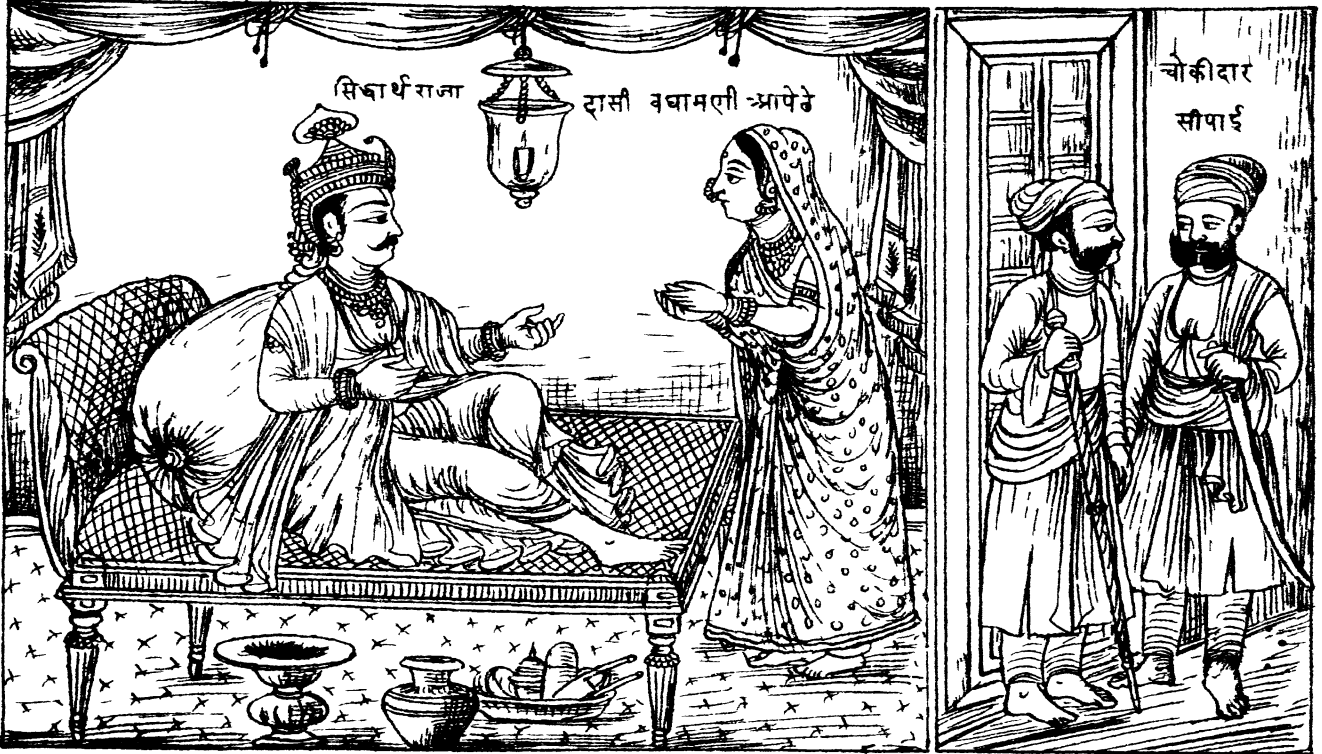
सोनाना कलश, तथा एक हजारने आठ रूपाना कलश, तथा एक हजारने आठ रत्नना कलश, तेमज चोथा सुवर्णरौप्यमय, पांचमां सुवर्णरत्नमय, छठा रत्नरौप्यमय, सातमा सुवर्णरौप्यरत्नमय,आठमा मृत्तिकामय, ए आठ जातिना प्रत्येक एक हजारने आठ आठ कलशो, करतां आठ हजारने चोसठ कलश थाय एवा सर्व मली अभिषेक कलशो एक क्रोडने साठ लाख होय तेनो विवरो लखीयें छैयें जवनपतिना वीश इंद्र, व्यंतरना बत्रीश इंद्र, वैमानिकना दश इंद्र, तथा अढी द्वीपना एकसोने बत्रीश सूर्य चंद्र, धरणेन्द्र जूतानेंद्रनी बार इंद्राणी, व्यंतरनी चार इंद्राणी, चमरेंद्रनी दश इंद्राणी, ज्योतिषीनी चार इंद्राणी, सौधर्म ईशान ए बेनी सोल इंद्राणी, सामानिक देवोनो एक, त्रायत्रिंशकनो एक, लोकपाल देवोना चार, अंगरक्षक देवोनो एक, पर्षदाना देवोनो एक, प्रजाना देवोनो एक, अने सात कटकना देवोनो एक, एम सर्व मली बशें ने पच्चाश अभिषेक थाय, ते एकेंक अभिषेकें चोसठ हजार कलश होय, तेवारें चोसठ हजारने अढीसो गुणा करतां,एक क्रोडने साठ लाख कलश थाय. ए एकेका जातिना कलश, पच्चीश योजन उंचा बार योजन पोहोला, अने एक योजननां नालवा वाला जाणवा, एवा कलश, तेमज वली भृंगार, दर्प्पण, रत्नकरंमीआ, थालां, पात्रिका, पुष्प चंगेरी इत्यादिक पूजानां उपकरण प्रत्येकें एक हजारने आठ प्रमाणे जाणवां तथा मगधादिक तीर्थनां जल, गंगा प्रमुख नदीउनां जल, पद्म द्रहनां जलथी कलशाजरी लावो अने चह्नहिमवंत, वृक्षधर, वैताढ्य, विजय, वक्षस्कार, देवकुरु, उत्तरकुरु, नद्रशाल अने नंदनवन प्रमुखना सर्व फल, प्रधान गंध, सर्व औषधि, पाणी प्रमुख अभिषेक वस्तु पण देवतापासेंथी अणावें, तेवारे सेवक देवो सर्व क्षीरसमुद्र प्रमुखना जलें करी कलशाजरी पोताना हृदय आगल


चित्र २४
पांडुक वनमां प्रभुजीनो स्नात्रमहोत्सव देवो करेछे.
चार वृषभना रूपें इन्द्र नवरावेछे.

धरीने उना रहे ते सर्व विचारे ले जे इंद्रमहाराज आज्ञा आपे तो कलश ढोलीये ते देवता एवा शोभे ले के जाणीयें संसार समुद्रने तरवाने अर्थें कुंज धस्यो होय नहीं ? एवा शोजे ले. तथा जावतृक्षनें सिंचेले किंवा पोतानां पापरूप मलनें धुवे ले, अथवा धर्मरूप प्रासाद उपर कलश चढावे ले, के शुं ? हवे एवा अवसरने विषे, इंद्र महाराजना मनमां एवो संशय उत्पन्न थयो के आ नानो बालक थका श्रीवीर जगवान्, एटला कलशोनी जलधाराथी महारा खोलामांथी क्यांय जता रहेशे एवडा जलाजिषेक केम सहन करी शकशे ? एवुं जाणी अजिषेकनो आदेश न देता हवा, तेवारें जगवंतें अवधिना बलें करी इंद्रनुं शंकित मन जाणीने अरिहंतपणानुं अतुल्य बल जणाववा निमित्तें खोलामां बेठा थकांज बालरूपें डाबा पगने अंगुठेथी सिंहासन फरश्यो, तेवारे शिला कंपायमान थइ तेना कंपवाथी मेरुचुलिका कंपायमान थइ, तेवारें लाख योजननो मेरुकंप्यो, तेना कंपवाथी सर्व पृथ्वी कंपी, सकल धरती थरहरवा लागी, पर्वतनां शिखर त्रूटवा लागां, समुद्र जलक्षोज पाम्यो चलाचल थयो, ब्रह्मांड फाटवा सरखो शब्द थयो, सर्व देवो जय पाम्या, देवांगनाउ जयने लीधे देवोना गलामां वलगी तेवारें इंद्र क्रोधें धाम्यो थको कहे ले, के अरे आ हर्षना समयने विषे आवो उत्पात विषाद कोणें कस्यो ले ? वली प्रजुना जन्म महोत्सवमां एवां विघ्न करवा वालो आ कोणदुष्ट ले ? एम विचारी हाथमां वज्र लइने अवधि प्रयुंजीने जोयुं तो प्रजुनी शक्ति जाणी के एतो जगवाने पोतेज सर्व कस्युं ले में अज्ञानथी तीर्थंकरनुं बल नही जाण्युं एवुं जाणीने इंद्र पगे लागी खमावीने स्तुति करवा लागो ॥ जुजंगप्रयात छंद ॥ सुणो वीर्य बोलुं विशालो विबुधो, नरें बार योधें मली एक गोधों ॥ दशे गोधले लेखवो एक घोडो, तुरंगेण बारें मली एक पाडो ॥ दशे पंच महिषो

मदोन्मत्त नागो, गज पांचशें केशरी वीर्य त्यागो ॥ हरि वीशशें वीर्य अष्टापदेको, दश लक्ष अष्टापदे राम एको ॥ नला रामयुग्में समो वासुदेवो, द्वितीय वासुदेवें गणी चक्रि लेवो ॥ नला लक्ष चक्री समो नाग शूरो, वली कोडि नागाधिपें इंद्र पूरो ॥ अनंते सु इंद्रें मली वीर्य जेतुं, टची अंगुली वीरप्रनु वीर्य तेतुं ॥ १ ॥ ॥ एम इंद्रें वखाण्या तथा मेरुपर्वतें विचार्युं जे अनंता तीर्थंकरना जन्माभिषेक म्हारा उपर थया, परंतु मुजनें कोणे पगें फरश्यो न हतो, ते हमणां श्रीवीरें फरश्यो, तेथी हुं पण धन्य बुं. एम समजीने जाणे हर्षथी नाच्यो थको चिंतवे छे जे हुं सर्व पर्वतनो राजा ते खरे खरो बुं. वली पांच मेरुमां पण हुं महोटो अग्रेसर ते पण खरेखरो बुं. हवे शक्रेंद्रना आदेशथी प्रथम बारमां देवलोकनो अच्युतेंद्र स्नात्र करावे ते पछी अनुक्रमे उतरता उतरता इंद्रादिको अभिषेक करे छेल्ला चंद्र सूर्य स्नात्र करे एम सर्व अढीशें अभिषेक थाय पछी इशानेंद्र, जगवानने खोलामां लेइनें बेसे अने सौधर्मेंद्र चार धवल वृषजना रूप विकूर्वीने तेना आठ सींगडांयें करी खीर समुद्रना पाणीनी धारायें अभिषेक करे एवा विधिथी सर्व देवो पोतपोतानी नक्ति करी स्नात्र करावे पछी जगवंतनुं शरीर गंधक षायें वस्त्रें लोहीने फूल, बावना चंदन विलेपन, अक्षत ढोकन, दीप, फल, धूप, पाणी, नैवेद्य ए आठ प्रकारनी पूजा करीने जगवाननी आगल श्रीवत्स, मत्स्ययुग्म, दर्प्पण, पूरण कलश; स्वस्तिक, नंदावर्त्त, नद्रासन, सरावसंपुट ए आठ मंगल रूपानां अक्षतें करी आलेखे, पछी आरति करे, गीतगावे नृत्य करे, वाजित्र वजावे, पछी अपूर्व एकसो आठ काव्यनी रचना करी स्तुतिरूप जावपूजा करे ते करीने पछी जगवानने जगवाननी माता पासे मूके, अवस्वापनी निद्रा दूर करे, वली जगवाननो प्रतिबिंब जिहां प्रथम थापन करेलो हतो तेपण दूर


चित्र १५
सूतिका घर
अष्टमंगल
इंद्र
महाराजे



चित्र ३६
सिद्धार्थ राजा
दासी वधामणी आपे छे
चोकीदार
सीपाई

करीने रत्नजडित कुंमल युगल तथा देवडुष्य युगल, त्रिशलामाताने आपीने सुवर्णजडित दडो जगवानने रमत करवाने अर्थे मूकीने तथा बारक्रोड सोनैयानी वृष्टि करीने वली एज पाठ केठलिएक प्रतोमां आवीरीते लखेलुं ठे के उपर रत्नजडित चंडुउ बांधी, रत्न जडित बे कुंमल तथा श्रीदाम ते रत्नजडित सुवर्णनो दडो ए सर्व उसीशे मूकी बत्रीश क्रोड सोनैयानी वृष्टि करी पठी सौधर्मेंड सर्व देवोमां एवो हांको करीने कहे के जोजो देवो जे हुं कहुं बुं ते तमे सांजली लेजो के जे कोइ देव अथवा असुर दानव, जगवान उपर तथा जगवाननी माता उपर माठी चिंतवणा करशे तेनो मस्तक अर्जुनवृक्षनी मांजर नी पेरे आ वज्रथी ठेदी नाखीश ए प्रमाणे कहीने जगवानने अंगुठाथी अमृत संचार करी सर्व इंड नंदीश्वरद्वीपमां आवी अठाइमहोत्सव करीने पठी पोतपोतानें स्थानकें जाय तिहां पण अठाइ महोत्सव करे इति देवकृत जन्ममहोत्सव समाप्त ॥ १ ॥ हवे सिद्धार्थराजायें करेलो जन्ममहोत्सव लखे ठे. पुत्र जन्म्या पठी दासीयें जइने राजाने वधामणी आपी राजा पोताने घेर पुत्रनो जन्म सांजलीनें रोमरोम हर्षवंत थयो एक मुकुट विना बीजा सर्व आजूषण जे पोताना अंग उपर हतां ते दासीनें आपी दीधां, माथुं धोवरावीने तेनुं दासीपणुं दूर कर्युं, पेढीधरपेढी सुधी खाय एटलुं धन दासीने आप्युं. जे रात्रिमां श्रमणजगवंत श्रीमहावीर स्वामीनो जन्म थयो ते रात्रिमां घणा वैश्रमण देवनी आज्ञा धारक तिर्यक्जृंजक देवताउए, सिद्धार्थराजाना महेलने विषे रूपानी वृष्टि करी, सोनानी वृष्टि करी, वज्रहीरानी वृष्टी करी, वस्त्रनी वृष्टी करी, आजूषणनी वृष्टि करी, नागरवेल पत्र, फल, फूल तथा बीजजे शालि प्रमुख ते सर्वनी वृष्टि करी, माला, गंध, वास, सुगंधि चूर्ण तथा हिंगलु

प्रमुख रंग अने सोनामोरोनी वृष्टि करी, ते अगणित वृष्टि करी, कोइक ठेकाणे एवुं लखेलुं छे के पन्नर मास पर्यंत त्रणक्रोड रत्न वरसावे ॥ ९९ ॥ हवे देवताउयें जे घरेणानी सिद्धार्थराजाने घेर वृष्टि करी तेनां नाम कहे छे ॥ मुकुट, कुंमल, हार, अर्द्धहार, बाजुबंध, बेरखा, त्रिसरा, चोसरा, छसरा, सातसरा, आठसरा, नवसरा, अढारसरा, एकावली, कनकावली, टकावली, रत्नावली, मुकुटावली, चंद्रावली, हीरावली, प्रवाली नक्षत्रावली श्रोणिसूत्र, कटीसूत्र, रसना, खूंप, पट्टशिखर, चूडामणि, कटक, कंकण, अंगद, मुद्रानंदक, दशमुद्रक, मुद्रिका, अंगुलीय, कदंब, पुष्पक, तिलजंगक, कर्णपीठिक, चत्रक, अजर, मेखला, मुंदक, पदक, पडकडि, सांकलुं, सांकली, विशिष्ट, मौक्तिकजंग, उतरी, दोरा, हांसडी, कर्णपाल, संकपाल, गेययक, हेमजाली, मणिजाली, मौक्तिकजाली, रत्नजाली, गोपुछक, उरसूका,ममेक, वर्ण, वरिका, हांस, जांजर, नेपूर, घूघरा, पागडां, वीठीआ, अंगूथली, बालाजाली, फूंमणा, अकोटा, रूपालहेरिआ, राखमी, गोफणो, फूली, सिथो, त्रसंटीउ, त्रोटी, बोरडां, कडी, वेढला, मुरकी, मोती, नरगंगोडा, नागफणां, तुंगल, चंपकली, पानडी, डुलरा, वाली, मोतीसर, तांति, गांठिआ, बरघली, पोंची, गलसिरि, टीली, चांदला, आडी, नवग्रह, मुद्रडी, अंगुठी, वेढ, वींटि, वांकडा, छाप, करजालुं, मादलिआं, कंदोरो, खेलमादलियां, पाटीआलो कंदोरो, लटकण, मउड, नागफूली, नाग, नागलां, मौर, वैसण, नथ, कांटो, मयोदय, आंजण, उगनियां, हिंगलो, कुंकुम, एला, जवला, चूडी, चूडली, थर, कंकण, कारेली, लालि, पंचमेखला, हाथसांकली, सोनानांलहेरिआं, तावीत, कडलां, सलिआलुं, कलाडी, अणवट, लोलिआं, कुंची, पाईल, सातग्रैवेयक, नवग्रैवेयक, छापलवींटी, मकोडांखली, जेदेह इत्या

दिक अनेक जातिनां आजरणोनी वृष्टि करता हवा ॥ हवे जगवंतने जन्म कल्याणके चौदरा
जलोके उद्योत थाय नरकमां पण उद्योत थाय तिहां पहेली नरकें सूर्यसमान तेज थाय, बीजी
यें वादलायें ढांकेला सूर्यसरखो तेज थाय, त्रीजीयें चंद्रमा सरखुं तेज थाय, चोथीयें वाद
लायें ढांकेला चंद्र सरखुं तेज थाय, पांचमीयें ग्रह सरखुं तेज थाय, छठीयें नक्षत्र सरखुं तेज
थाय, सातमीयें तारा समान तेज थाय एम जगवानने जन्मादिक पांच कल्याणकें नरकादि सर्व
चौदराजलोक पृथ्वी आदिकमां सर्वत्र तेज थाय एवीरीतें जवनपति, व्यंतर, वाणव्यंतर, ज्यो
तिषी अने वैमानिक देवतायें तीर्थंकरनो जन्ममहोत्सव कर्या पछी प्रजातसमये सिद्धार्थराजा
नगरना रखवालाने बोलावीने कहेतो हवो ॥१००॥ ॥ हे देवाणु प्रिया तमे उतावला क्षत्रियकुं
डनगरमां बंदिवानोने बूटा करी मूको अने तोल मापां वधारो तथा क्षत्रियकुंडनगरनी मांहेली को
रे अने बाहेर कचरो कांटो काहाडी साफ करो, लींपावो, तेनी उपर सुगंधजलनो छटकाव करावो,
त्रिखूणामार्ग त्रणमार्ग, त्रवाटा, चोवटा तथा जिहां घणा मार्गजेलाहोय तेचच्चर चारमुखमार्ग,
राजमार्ग ए सर्व रस्ताने पवित्र करावो, कचरा कांटा काहाडीने साफकरावीने रस्ताने बरोबर करो,
तथा जेनी उपर बेशीने सुखेथी सर्व लोको महोत्सव जोइ शके एवा महोटा मांचाउपरमांचा
बंधावो, अनेक प्रकारना रंगनी ध्वजा पताकाउ करावी स्थानके स्थानके बंधावीने नगर शोजा
यमान करो, शहेरना मार्गोने लीपावो, धोवरावो, वली गोशीर्षचंदन, रक्तचंदन, पांचआंगु
लीआ छापा देवरावो, घरमां चंदनना कलश थापन करावो,चंदनकलशघटित तोरणोने घरोना
बारणे बंधावो, लांबी महोटी अने गोल तथा लटकति एवी पुष्पमालाउनो समूह लटकावो,
पांचवर्णा फूलोना ढगला करावो, कृष्णागर, जलोकुंदरु, शिलारस, धूकतो थको घमघमायमान

मनोहरगंध सुगंधगंधित अगरबती उखेवो, मनोहर गंध करो, वली नाटक करवा वाला जे पोतें नाटक करे ते, रशीउपर नाचे ते, मल्लयुद्धकरनारा, मुठीयोथी युद्धकरनारा, जांम नवाइया, कथाना करवावाला, रास बोलवावाला, उंट अने हाथी उपरथी कूदी जाय तेने प्लवक कहे छे ते, राजानी वंशावलीनां बोलनारा, पाठक कवित कहेनारा, कोटवाला, शुभाशुभ निमित्तना कहेवा वाला, वांसनी उपर नाचनारा, चित्रामणना पाटीया देखवावाला जेने मंख कहे छे ते, तथा चामडानी मसकने वायराथी नरीनें बजावे तेने तूणयल्ला कहे छे ते, तुंबिनी वीण बजावनारा, हाथताल देइने नाचनारा, अनेकतालना बजावनारा,ए सर्वेने बोलावीने ठेकाणे ठेकाणे बेसाडी आपो ए सहु. पोतपोतानी कलाउ लोकोने देखाडे ए काम तमे करो तथा बीजापासें करावो वली हजारो गमे धूंसरा एटले विवाहना मंम्पमां घाले छे ते तथा हजारो गमे मुसल उंचा करावीने महारी आज्ञा मने पाछी सोंपो ॥ १०१ ॥ ॥ तेवारें ते कौटुंबिक पुरुष घणाखुशी थइने राजाना हुकुम प्रमाणे काम करीने राजानी आज्ञा राजानें पाछी सोंपी ॥ १०२ ॥ तेवार पछी सिद्धार्थराजा मल्लयुद्धनी शालामां आवी, युद्ध करी, तेल मसलावी, स्नानकरीने सर्व वस्त्र घरेणां माला प्रमुख पहेरीनें महोटा तेजसहित, मोहोटाबलसहित, सर्व वाजा वाजतां थकां, महोटी ऋद्धि, महोटीकांति, महोटी सेना, घणां वाहन, घणो समुदाय, महोटां महोटां वाजित्र सर्व नेलां समकाले सार्थे वजाड्यां, तेथकी शंख, पठह ढोल, नेरी, जल्लर, खरमुखी ते कालही, रणसिंगो कोइ वाजानुं नाम छे. मांदलनी जात, मृदंग, देवबाजुं तेने डुंडुभि कहीयें, ए नव जातनां वाजाना शब्द, प्रतिशब्द तेणे करी सिद्धार्थराजा हर्ष करतो रहे, वली क्षत्रियकुंड गामनगरमां उमुकं एटले दश दिवस सुधी दाण कोइनी पासेथी लेवुं नही

तथा उक्करं एटले गायो ढोर प्रमुखनुं जे कर लागे ते दशदिवस पर्यंत न लेवो तथा उक्किष्टं एटले खेत्र प्रमुखथी जे कर लागे ते दशदिवस सुधी नही लेवो तथा अदिज्जं एटले दशदिवस सुधी कोइ हाटमां मूल्यलइने वस्तु वेंचे नही जेने जोइति होय ते राजानी पासेंथी मफत लइ जाय तेना पैसा राजाना नंमारमांथी देंवाय तथा अमिज्जं एटले दशदिवस सुधी कोइ चीज मापवी नही तथा अप्पवेसे एटले दशदिवस लगें कोइ राजानो माणस जोरकरीने जोरावरीथी कोइना घरमां प्रवेश करी कोइ चीज वस्तु लीये नही तथा अदंम एटले कोइयें अपराध कस्यो होय तेनी पासेंथी गुनाह प्रमाणे दंम लेवो जोइयें ते दंम दशदिवस सुधी लेवो नही तथां कुदंम एटले कोइकें अपराध अल्प कस्यो होय अने दंम वधारे लेवो तेने कुदंम कहीयें ते कुदंम दशदिवस पर्यंत लेवो नही तथा अधरिम एटले दश दिवस सुधी कोइ उधारे लइने रुण करे नही एटला वाना सिद्धार्थराजायें मूक्या बक्षीस कस्यां वली अत्यंत स्वरूपवान एवी वेश्याउंना नाटक थाते तथा अनेक ताल·वाजा सहित नाटक थाते पछी उत्कृष्ट मृदंग बजाववा सारुं सज्जकस्या छे मृदंग जिहां ग्रंथाग्रंथ ॥ ५०० ॥ ॥ कुंमलाणी नथी एवी विस्तार सहित फूल मालाउंनो समूह छे जिहां, हर्षवान थया थका ते देशना सर्वलोक क्रीडा करे छे. ए प्रमाणे दशदिवस पर्यंत स्थितिपतिका एटले पोताना कुल परंपरानी मर्यादा पुत्रजन्मनी ते सिद्धार्थ राजा क्षत्रियकुंम नगरमां करे ॥ १०२ ॥ ॥ तेवार पछी सिद्धार्थराजा दशदिवसनी कुल मर्यादामां जिनपूजामां सो सोनैया लागे तथा हजार सोनैया लागे तथा लक्ष सोनैया लागे एवुं जे पूजन तेना निमित्तें द्रव्य राखे एटले पछी पूजा करावीशुं एवो अभिप्राय करीनें पूर्वोक्त द्रव्य काहाडे वली आठम, चौदशनां दिवसें पोसह करनारा श्रावकोनी भक्ति करवा

निमित्तें द्रव्य राखे ते एवा अभिप्रायथीके जाणे पोसह करवावालाने पारणे साहामी वात्स ल्यना काममां आवशे वली बीजुं पण देवायोग्य द्रव्य धर्मने अर्थें कल्प्युं एवुं द्रव्य पोतें सिद्धार्थराजा देतो थको, बीजाउंनी पासेथी देवरावतो थको विचरे ॥ वली पूर्वोक्त रीतें सो, हजार अने लाख सोनैया प्रमाणे वधामणाने अर्थें भेट लोको लइ आवे छे ते लेतो थको, बीजा कने लेवरावतो थको एवीरीतें दशदिवस सुधी करतो थको कुलमर्यादा करे ॥ १०४ ॥ तेवार पछी श्रमण भगवान श्रीमहावीरस्वामीना माता पिता भगवानना जन्मदिवसथी पछी आगल पहेलादिवसें तो कुलस्थिति करे अने त्रीजे दिवसें चंद्रमा तथा सूर्यना दर्शन करावे. हमणा आजना कालमां तो त्रीजे दिवसे काच देखाडे छे. परंतु मूल विधि आवो छे जे गृह स्थगुरु आवीने श्रीअरिहंतनी प्रतिमा आगल स्फाटिक अथवा रूपानी चंद्रमूर्त्ति करावे ते प्रतिष्ठावी पूजीने मांहे पछी बालक तथा बालकनी माताने स्नान करावी भला वस्त्र पहेरावी चंद्रोदयनी वेलायें पुत्रने हाथमां लइने माता सहित पुत्रने बेशाडी प्रत्यक्ष चंद्रमा साहामां आणी आवीरीतें मंत्रभणे ते लखे छे ॥ ॐअर्हंचंद्रोसि निशाकरोसि नक्षत्रपतिरसि सुधाकरोसि औषधिगर्भोसि अस्यकुलस्यऋद्धिंवृद्धिं कुरुकरु ॥ एवा मंत्रनो गुरु उच्चार करे, माता पुत्रनें चंद्रमा देखाडी नमाडे वली पुत्रने लइ गुरुने पगें लगाडे, गुरु आशिर्वाद आपे ते आवीरीतें:—श्लोक ॥ सर्वौषधिमिश्रमरीचिराजी, सर्वापदांसंहरणे प्रवीणः ॥ करोतु वृद्धिंसकलेपिवंसे, युष्माकमिंदुः सततं प्रसन्नः ॥१॥ ॥ तेवार पछी चंद्रमानी स्थापेली मूर्त्तिने विसर्जन करे. कदाचित् कालि चौदस, अमावास्या होय अथवा वादला होय तेथी चंद्रमा न देखाय तो तेज रात्रियें तेज चंद्रमानी मूर्त्ति आगल तो जरुर करे एवीरीतें तेज दिवसनी सांजे जे विधि होय ते अवश्य

चित्र २७





करे. पछी ते दिवसें प्रजातें सूर्य उदयनी वेलायें सोनानी अथवा त्रांबानी सूर्यमूर्त्ति करीने पूर्वनीपेरे स्थापन करी ते मूर्त्तिनी आगल पुत्र सहित मातानें बेसाडी गृहस्थ गुरु आवीरीतें मंत्र बोले ॥ ॐअर्हंसूर्योसि, दिनकरोसि, तमोपहोसि, सहस्रकिरणोसि, .जगच्चक्षुरसि, प्रसीदास्य कुलस्य तुष्टिं पुष्टिं मोदं कुरु कुरु ॥ ए सूर्यमंत्रउच्चारीने माता सहित पुत्रने सूर्यनुं दर्शन करावे पछी माता पुत्रने लइ गुरुने पगें लगाडे तेवारे गुरु आशीर्वाद आपे ते लखीयें छैयें ॥ श्लोक ॥ सर्वसुरासुरवंद्यः, कारयिता सर्वधर्मकार्याणां ॥ जूयात्रिग च्चक्षुः, मंगलं. दस्ते सपुत्राय ॥ १ ॥ ॥ पछी थापन करेली सूर्यमूर्त्तिने विसर्जन करे वली छठे दिवसें धर्म जागरण करे, अगीआरमें दिवसें अशुचिकर्मनिवर्त्तन करे, माटीना जुना जाजन काहाडी नाखे, नवा वस्त्र पहेरे ॥ ॥ हवे बारमो दिवस आव्या थकां अशन ते अन्न विगय प्रमुख तथा पान ते मीठ पाणी प्रमुख तथा खादिम ते खारक टोपरा प्रमुख तथा स्वादिम ते लविंग पान प्रमुख ए चार प्रकारनो आहार रंधावे रंधावीने सिद्धार्थराजा पोताना मित्रोने,न्यातिने एटले पोतानी जातिवालाने, पोताना पुत्रपौत्रादिकोने, काकाने,ससरा प्रमुखने,पोताना दास दासीयोने, वली सिद्धार्थराजानाज गोत्रवालाउने, वली क्षत्रियोने तथा गामना क्षत्रियोने, एवा बीजा पण महोटा लोकोने निमंत्रण करे अर्थात् नोतरा आपे पछी जगवानने तथा त्रिशलाजीने स्नान करावे, घरे देवपूजा करावीने पछी विघ्ननिवारवानें अर्थे कौतुकथी काजलना टीलांटबकां करे, मंगलिकने अर्थे सरसव, दही, दर्ज, चावलनुं तिलक मस्तकें धारण करे, नवा वस्त्र पहेरे, वली जेमां जार अल्प अने मूल्य घणुं एवा घणा मूलनां घरेणा पहेरें, पहेरीने जोजननी वेलायें जोजन मंमपमां सुखे बेसे. वली पूर्वें नोतरेला मित्रादिकोने

अशन, पान, खादिम, स्वादिमादिक चार प्रकारना आहार जमाडे हवे तेमां केटलाएक आ
हार स्वाद करवा योग्य तेना स्वादकरतां थकां अशनादिक मोदक प्रमुख सर्व चीज खवाइ
जाय तथा केटलीएक सेलडीप्रमुख चीज थोडी खाय अने घणी नाखी आपे वली केटली
एक खजुरप्रमुख चीज घणी खाय अने थोडी नाखीदीये एवीरीतें चारे प्रकारनो आहार साध
र्मिकादिकोने सिद्धार्थराजा जमाडता थकाविचरे ॥ १०५ ॥ ॥ हवे ग्रंथांतरथी जोजननो
विधि लखीयें छैये ॥ केलिपत्रे छायेला मांडवा नीचें मध्यान्ह वेलायें कुंकुमछंटित मंडपमां सर्वने
बेसाड्या, मखमलनां पांतिया नाख्यां, ते उपर सर्व पवित्रथइने आवीबेठा, तेना पेट पाताले
पेठा, आगल स्वर्णरत्नजडित बाजोट मेल्या, तिण उपर सोनाना थाल,जमवावाला थया उज
माल ॥ कनेमेली कटोरीयां, निर्मल जलसें धोवे, मांहे मुखडा जोवे, ते कहेवा छे तोके ? फां
दाला, फुंदाला, डुंदाला, सुंहाला, आंखे अणिआला, मुछाला, केइ जमाइ केइ साला, इसी
पांति बेठी, तिहां पीरसणवाली पेठी, ते घणी रूपाली, नवा वस्त्र पहेर्यां, शोले सणगार कर्या,
हाथमां मह्रोटी झारी, युवानोंकी निजरो ठारी ॥ हाथधोवाया, मनमें काम जुराया, पहेलां ते
फल पिरसे, देख्यासें मन विकसे ॥ ते कहेवा फल पिरस्यां तेनां नाम कहे छे. अखोड
मिसरिकीपात, चोपडी चारोली, केला रायण लीलांनालियेर बदाम पिस्ता द्राख आखा आंबा
तथा स्याग दाल पक्क, सेवां सेतुत दाडिम नारंगी मीठांलींबु, पाकांकिरणां खारक खजुर
सेव जांबु गुंदा पेमदीबोर लीलीद्राख छोलेली सेलडी कांगटा जामफल रामफल सीताफल
बीजोरां, इत्यादिक उदार मनथी पिरस्यां. ढेरकीया खातां हीया हर्ष्यां ॥ किस्याक खावे के पिर
सवावालीतेना मुख सामा जोइ मोहमां पड्या खायां जावे, पण पेटपाडे ते नजर न आवे ॥

माळवानी जमीनमां नीपज्या घउं हाथथी मसळ्या धोइने दळ्या ऌला वस्त्रथी मेदो ळाएयो तेना पिरस्या खाजां, दांतोमां करे अवाजा ॥ हवे कहुं पकवान, खावा थया सावधान ॥ पिरसण वाळी सुंहाळी, मानकरे रढीयाळी, पहेळी पिरसे ळाडू, जिमे बेंग जाणे साढु, सिंहकेसरीया मेळ्या, मसाळा अधिका भेळ्या ॥ कंसार मगदारा मोदक, किटिया जसरीया दाळिया, इस्यामो दक खावे, बूढो मरद हो जावे, अन्नीपिरसी मुरकी, खावा जीभडी फुरकी, जळेबी मुखमां घाळे, रसना गटका चाळे, पेडापेटमां पडिया, मुखमेळंता गुडिया, मखाणा मुखमां घाळे. ब्रडबड जाणे बोळे, घेवर मुखमां धरिया, खातां घृतबहु ऊरिया, जीणातारनी फीणी, आणीसेवां जीणी. दहीथरा दोंग खावे, मनमां हसता जावे, सांकळी तिळनी खाधी, सिंघोडा सेवसु साधि, आवे साकर सीरो, भोकरा मन थयो धीरो, ळापसी आठी आवें, मेवाखीचडी खावे ॥ इम अनेक पकवान, जिमे बेग राजान ॥ देंवसुगंधीसाळ, खावा थया ऊजमाळ ॥ मुगदाळनें भेळी, घीसुगंधी ठेळी ॥ खीचडी पतळी पोळी, थाये इकवीशनी एककोळी ॥ साळणा मुखमां जावे, जीनवरफरी थावे ॥ मूगीया केर रायभोभी, वाळोळ, करमदा काचा, केळां, चोरानी फळी, मुगनी फळी, नीळाचणा, मिरच, पीपळ, सांगरी, काचरी, बावळ्या, करेळां, नींभी, तरोइ, वेंगण, मोगरी काकडी तरडा तीभसी इस्या जातना साग, जीरा मिरच समभाग ॥ गरम मसाळा पडिया, घृतमांहे पहेळा ठमकिया ॥ हिंग वघार सुगंधा, खातां तज्या सब धंधा ॥ जीनवरफरी होवे, कळीकंदने जोवे ॥ भाजीविणारीमेथीरीचदळेवारी पाळखारी सुआरी थेगरी, खातां जीभ शोभाधरी ॥ मिसरीमां भेळ्यो दूध, पीतां नरही शुद्ध ॥ भख्योपेट बोल्या सहु एम, हवे खावानो नेम ॥ दहीदेखीनें मुखडे चाल्यो पाणी, जीराराब शुद्ध तिहां आणी ॥ करबो खाधो

पूर, राइपडी रायतापूर ॥ मीग पाणी पीधां, पापडमुख शुद्ध कीधां ॥ शुद्ध पाणीसें चलु करीजें, न मावे पेटमें उत्तर दीजे ॥ वली दीधा पान तंबोल, केशरछांटे रंगरोल ॥ हीरचीर मखमल पटंबर, वस्त्रदीधां ते पहिरे सुंदर ॥ फूलमाला पहेरावे, हर्ष मने बहुलावे ॥ आजूषण पहेरामणी देवे, एम सिद्धार्थ जस बहु लेवे ॥ इति सिद्धार्थराजाकृत जन्मोत्सव ॥ एवीरीतें मरुदेशआदिकमां जे जोजन विधि कहेवाय छे ते प्रमाणे लख्यो ॥ हवे वली प्रकारांतरें कछगुर्जरादि देशोमां जे प्रमाणे जोजनविधि कहेवानो चाल प्रवर्त्ते छे ते मुजब आहीं लखीयें छैयें. ए बै प्रकारमांथी वाचनारने जे रुचे ते वांचवुं अथवा बेहु प्रकार सजा आगल वांची संजलाववा. ते प्रकारांतर आंहीं लखीये छैयें ॥ मांड्यो तोरण उत्तंग मांडवो, तरत आंगणुं बेसवानुं नवुं ॥ तेतो नीलां रत्नज तणुं, तिहां सखरा मांड्यां आसन, बेसतां किसी विमासण ॥ वली आगल मूकी सोनानी आंडणी, ते केम जाये गांडणी ॥ उपर सोनाना थाल, अत्यंत घणा विशाल ॥ विचमा चोसठ वाटकी, लगार नही जास काट की ॥ गंगोदक दीधा थाल, कचोलामें हाथ लाल ॥ हवे सघली पंक्ति बेठी, एटले पीरशण हारी पेठी ॥ ते कहेवी छे? शोल शणगार सज्या, बीजां काम तज्यां ॥ हावजावनी रूडी, खलके हाथें सोनानी चूडी ॥ लघु लाघवनी कला, मन कीधां मोकलां ॥ चित्तनी उदार, अति घणी दातार ॥ बोलती हाथ, परमेश्वर देजो तेहनो साथ ॥ धसमस्ती आवे, सघलांने मन जावे ॥ पहेलां फलहवें पीरसे, सघलांनां मन हर्षे ॥ एवी छे पिरसनारी जली; मृगनयनी, हांसनी पूरी, धर्मनी शूरी, शीलवंति, शक्तिवंति एवी पिरसनारीयो छे ते प्रथम फल खावानां लावे छे पाकां आंबानी कातली, ते बूरा खांड्युं जली ॥ वली पातलां पाकां केलां, ते खांड्युं

कीधां नेलां ॥ सखरां करणां, वली पीला वरणां ॥ लीलां नारंगा, दीसे महासुरंगा ॥ नी
लीरायण, पीरसी नली नायण ॥ दाडिमनी कली, खातां पूगे मन रली ॥ लींबजाने अखोड,
खातां पूगे मनना कोड ॥ डाखने बदाम, कइ कागदीने कइ श्याम ॥ सिलेमी खारेकनें खजू
र, ते पीरश्यां नरपूर ॥ नालियेरी नगरी, ते मालवी गोलश्युं नरी ॥ लींबु खाटांने मीठां, एह
वां ते कदी न दीठां ॥ चारोलीने पीस्तां, लोक जमे हसतां ॥ वली शेलडीने सीताफल, ते पण
पीरश्यां परिघल ॥ हवे पकवान आणे, ते केहेवां वखाणे ॥ सतपडा खाजां, ते तुरत. कीधां
ताजां ॥ सदलांने साजां, जाणे प्रसादनां गजां ॥ एहवां पवित्र प्रधान, मालवी घउं, तेह
ने दल्यां तेहनी पडछुदी, महाचतुरें शोधी ॥ घीयें करमोइ, तेहनां खाजां घीयें तल्या फूल्यां,
महाविशाल, एवा सातपुडां खाजां, वली फगफगता फेणा, डुधवर्णा दहीथरां ॥ घृतवर्णीसुं
वाली, अमृतजेवी जलेबी ॥ घीनाघेवर पतासा मोतीचूर गुंदवडां एलचीदाणासहित साक
रीया चणा, खांमसाकरनां दहीथरां, अनेक नातिनी सुखमी पिरसें. विछुहदलें केलव्या, सा
रमिश्र खांमथी नेलव्यां ॥ मांहे एलचीना चमत्कार, पछी पिरश्या लाडु, जाणे नाना गारु ॥
कुण कुण तेहनां नाम, जमतां मन रहे नही एक गम ॥ वली लाडुनां नाम कहे छे. मो
तीआ लाडु, दलिया लाडु, सेवैया लाडु, चूरमांनां लाडु, तिलना लाडु, तिगफुना लाडु, मग
ना लाडु, जगरीना लाडु, सिंहकेसरीया लाडु, कीटीनां लाडु, तेजाना लाडु, खसमसीयाना
लाडु, जांखरीया लाडु, चोंटीया लाडु, अडदीया लाडु, अमृतिया लाडु, दीठां दाढ गले, पूर
णपुन्याइयें ए मले ॥ नोजनने अर्थें पीरसे, लक्ष्मी एवा मोदक, जातजातनां दीसे, जमतां
वाधे मुखनो वान, तेनां हैयडा हीसे ॥ दातारना हाथें परीघल, कृपणना हाथ धूजे ॥ वली

बीजां आव्यां पकवान, जमतां वाधे मुखनुं वान ॥ कुण कुण जाति, नव नवि जांति, सखरासांटां, तेमांहे नही खाटां ॥ बरफीनी जाति, फीणीनी जाति, मरकीनी जाति, डुधपिंमीनी जाति, साकरीयांमोतिचूरनी जाति, मसूरनी जाति, जलेबीनीजाति, सक्करपारानीजाति, गोलपापडीनी जाति, हवे आव्यां वडां गुंदवडा, फीणी सखरां सोट ॥ तेमांहे नही खोट ॥ दहीवडां, फेण वडां, मंथीयावडां, कांजीयावडां, सालियावडां ॥ पातली सेव, पीरश्यानी रूडी टेव, ताजो गुंद, तव्यो गुंद ॥ कुंमलाकृत जलेबी, शीरो, लापसी ॥ जिण दीठे दाढा गले, स्वर्गहुंति देव देवी टलवले ॥ वली मीठो मगद, सारो माल नगद ॥ खांमनुं चूरमुं, साकरनुं चूरमुं, पछी पीरशी सालि, ते जमीयें विशाल॰॥ ते कुण कुण नेद, सांजलतां उपजे उमेद ॥ सुगंधसालि, सुवर्ण सालि, धवली सालि, राती सालि, नीली सालि, पीली सालि, महा सालि, शुद्ध सालि, कौमुदि सालि. मालवी सालि, कलम सालि, कुंकणी सालि, तिलवासी सालि, जीरा सालि, कंद सालि, रायनोग सालि, कुंवारी सालि, चंद्रायण सालि, निकी सालि, गुरुडा सालि, वली साबु चोखा अखंम चोखा ने वली खांमया, सबला गांमया, हलवा हाथथी सोह्या, नख थकी वीण्या, उत्तम स्त्रीयें उरया, सुजाण स्त्रीयें उसाया, एवा अणीयाला सुगंधि फरहरा, उंवा कूर पीरश्या ॥ वली उपर दाल पीरशी, तेनां नाम कहे छे, मंमोरनी दाल, मुगनी दाल, कावली चणानी दाल, गुजराती तुयरनी दाल, अडदनी दाल, जालरनी दाल, मठनी दाल, वर्णे पीली, परिणामें सीली, वली परिघलघृत पीरश्यां ते कहेवां छे ? तो के आजना ताव्यां, एवा गायनां घी, नेशनां घी, पीला वरणनां घी, नाकें पीयां घी, मजीठवर्णां घी, हवे पोली पीरसी, ते कहेवी छे ? तो के आछी पोली, घीमांहे जबोली, फूंकनी मारी फलसी जाय, एकवीश पोलीनो

एक कोलीउं थाय ॥ छप्पो ॥ मुरकी मोतीचूर, सेवफिणी साकर सरखी ॥ खाजां खुरमां खांड, प्रिया तिहां पीरसें हरखी ॥ केला तणी कातली, अंबरस मूके घोली ॥ घल घल घीनी नाल, पीरसें पातली पोली ॥ साल दाल बहुसालणां, गोरस करबे चित्त रह्युं ॥ कृष्ण कहे ए जमण कह्युं, बाकी सघलुं एजो बह्युं ॥ १ ॥ चोला मरटी तेल, साक विण नित्यें सारे ॥ पीरसे नूंनी नार, पेट कहो केणी परें गारे ॥ उपर ढीली घेंश, गास पण पीरसे पाणी ॥ सिंधव नही घ गार, किशुं कहे कर्मनी कांणी ॥ आहार सेर अढी तणो, सेंर सवा दोहिलो लहे ॥ कवी कृष्ण कहे एजो बह्युं, भोजन एहने कुण कहे ॥ हवे शाक पीरस्यां तेनां नाम कहे छे, नीली भा जीनां शाक, टिंडसीनां शाक, चीभडांना शाक, कोहेला, कंकोडां, करमदां, कालिंगडां, केलां, कारेलां, आरियां, तुरियां, खडबुजां, वेंगण, मोघरी, नींबु, अंबोलीया, वालोल, चोलानी फली, सरगवानी शिंग, सांगरी, काचरी, आमलां, केरनां फूल, केरडां, लीलां मरचां, लीली पीपर, लीली रायण, खाटां, खारां, मोलां, गल्यां, तल्यां, वघार्यां, फुगार्यां, छमकार्यां, वली पीरसी भाजी, ते उपरें सहुको राजी ॥ ते कोण कोण जातनी ते कहे छे. सरसवनी भा जी, सूवानी भाजी, मूलानी भाजी, चणानी भाजी, चीलनी भाजी, मेंथीनी भाजी, थेगीनी भाजी, अफीणनी भाजी, तांदूलनी भाजी, हवे वडीनां शाक कर्या तेना नाम कहे छे. दाल वडी भबकावडी चूथरावडी घासवडी घारवडी दहीवडी घोलवडी पापडवडी मरियालावडी, घणा जोलेंभीना, घणा वघार मसालाना चमत्कार सबडका देतां अंगुली चाटता मनमां विशेषे भावतां, हवे रायतानां नाम कहे छे. खारेकना रायतां, टोपरानां रायतां, शखना रा यतां, बदाम प्रमुख मेवानां रायतां, हवे वडां कइ कइ जातनां पीरश्यां? ते कहे छे. मरचा

नां वडां, तल्यां वडां, कोरां वडां, काजीघोलवडां, घोल वडां, मगनी दालनां वडां, चोलानी दालनां वडां, अडदनां वडां, दहींवडां, गूंदवडां, फेणवडां, मेथीया वडां, सालीयावडां, घणे जोलें नीनां, घणे तेलें सीनां, मरचांना घणा चमत्कार, अत्यंत घणा सुकुमार, हाथें लीधा ऊछले, मुखें घाल्यां तरत गले, घणुं शुं कहियें ए वडां एवां तो छे, के जेने खावाने अर्थें घणा देव देविउ पण टलवले छे. हवे पलेव पीरसी, ते कहेवी छे? चोखानी पलेव, जुहारनी पलेव, बाजरीनी पलेव, गहुंनी पलेव, हलदीया पलेव, पींपलीयां पलेव, सुंठीयां पलेव, सबडकीया पलेव, हवे नोजन जमतां वचमां पीवानां पाणी आवे छे, ते कहे छे. साकरनां पाणी, डाखनां पाणी, खांडनां पाणी, गंगानां पाणी, घालर पाणी. कपूरे वास्यां पाणी, एलचीयें वास्यां पाणी, टाढां सीतल पाणी, हीमनां पाणी. हवे दही अने दहीनां घोल आवे, ते कहेवां छे? ते कहे छे. गायनां दहीं, नेशनां दहीं, काढ जाम्यां दहीं, मधुरां, सखरां, सजीरालां, सलवणां जाडां, घोल, तेनां नर्यां कचोल, चावलशुं जिमतां, थया रंगरोल ॥ वली सखरां करंबा नरी आणीने पीरस्यां, ते करंबामांहे घणी राइ, जमतां ढील न कांइ, उपर जीरा लुणनो प्रतिवास, करणहारी पण खास ॥ एम नोजन कराव्या पछी एकांते तेहज आशने रह्या थकां ने चलु करान्या ते चलु करावनानां पाणी केवां आव्यां, ते कहे छे. केवडानी वासनां पाणी, काथानां पाणी, कपूरें वास्यां पाणी, चंदने वास्यां पाणी, पाडले वास्यां पाणी, सुगंधी पाणी, गंगोदकना पाणी, चंदने निवास्यां पाणी, एलचीयें निवास्यां पाणी, इत्यादिक पाणीयें करी चलु कस्था. पछी तृणशला प्रमुखथी मुख सोधी दांतोनी शुद्धि करीने परम सोच्य थया. हवे मुखवास दीधां ते कहे छे. वांकडी सोपारी, चीकणी सोपारी, ते पण केशर वरणी, कपूरें वा

चित्र १८



प्रभुनो नाम नाखती वखते ज्ञातिने भोजन.



ज्ञाति भोजन.

सित, वली तीखां लविंग, जावंत्री, जायफल, मोटा मोम्हा, एलची, पाकां नागरवेलनां पान, ते वली काथा चूना सहित दीधां, वली घणां आदर सन्मान, घणां गीत गान, घणां तानने मान, हवे कइ कइ जातिनां कइ कइ भांतिनां वस्त्रोनी पहेरामणी करी, ते कहे छे. देवदुष्य वस्त्र, रत्नकंबलवस्त्र, पांभडी, खीरोदक, अटाणां सेलां, अधोतर, मूलकसबी, जरबाफ, मखमल, चिणीयां, बुलबुल, चसम, पाटु, टसरिया, शणीया, भेरव, नारीकुंजर, पट्टहीर, पट्टसीउंली, पंचसइयां. फूलपगर, फूलकारी, दोरीयां, जादर, चादर, नेत्रपट्ट, धोतीपट्ट,. राजपट्ट, गजवडी, सुवर्णवडी, हंसवडी, कालवडी, लुअच्चिआ, पटकूल, पट्टहीरसाडी, घाटडी, चीर, कुंमखाव अतलशलाहि. खाराचीनी, पापडीआंचीनी, सथीआ गुआगरी, आसणिआ आगराइ, सणलीपट्टणी, मशरु तास्ता, शालु, दोपट्टा, त्रपट्टा, बास्ता, टुकडी, मुगटां, छायल नारी कुंजर, शाडला, रत्नकंबल, चुनडी, घाटम्ही, इत्यादिक पांचरंगी वाघा पहेराव्या, वली काशमीरी केशरना छांटणां कीधां, भलां-भलां सुगंध बावना चंदननां विलेपन कीधां, अरगजा, चूआ, चंपेल, फूलेल, केंवडो, मोगरो, जाइ, जुइ, कुंद, मचकुंद, चंपो, मरुओ, दमणो, केतकी अने मालती प्रमुख फूलोनी मालाउ पहेरावी. पछी वली मुकुट, तिलक, बाजुबंध, हार, चीर, बेरखा, रत्नावली, मुक्तावली, चंद्रावली, हीरावली, प्रवालावली, सूर्यावली, ग्रहावली, नक्षत्रावली, श्रोणिसूत्र, कटीसूत्र, पट्टशीखर, चूडामणि, कुंम्हल, कटक, कंकण, अंगद, मुद्रनंदक, दशमुद्रक, चक्रक, अजर, मेखला, मुदक, पदक, सांकलुं, सांकली, चिचिष्ट, भंगउत्तरी, दाराहांशडी, कपाली, ग्रैवेयक हेमजाली, मणिजाली, मौक्तिकजाली, वर्णसरीका, जांजर, नेउर, घुघरा, पीगडां, वींछीया, अंगुठडी, वालाजाल झुमणां, अकोटा, रूपाला, हरीयारारवडी, गो

फणा, उलसीयो, त्रिसंधीयो, त्रोटी, वोरडांकरी, वेढला, मुरकी, मोतीदर, गंगोडा, तुंगल, चं पकली, पानडी, होलेरताली, मोतीसर, सरलीया, टीलां, टीली, चांदला, आड, नवग्रह, मु द्रडी, अंगुठी, वींटी, वांकरुं, गलसरी, छापकरजाली, हेमजाली, मादलीयां, खेलमादलीयां, कंदोरा, पाटीआला कंदोरा, लटकणमोड, नागफूली, नागला, मोरवेसण, नथवाली, सिंदूर, कुंकुमरीली, जवलाचूडी, घरचूडी, चूफा, कांकणी, कारेली, लाल, पोंची, मेखला, हाथलां कली, सोना लहेरीयां, तावीत, कफलां, कमली, वांकडी, वेलीयां, लोलीयां, इत्यादिक आभ रण पहेराव्यां. ए रीतें मित्र, ज्ञाति पोताना क्षत्रियो तथा कुटुंब, सगा संबंधीनी भक्ति विवि ध प्रकारनी कीधी. इति भोजन तथा आभरण विधिः हवें बालकनुं श्रीवर्द्धमान एवुं नाम दीधुं, ते वखाणे छे. हवे ते मित्र, न्याती, गोत्री, स्वजन, पितरीया प्रमुखने सत्कार, सन्मान आपीने त्रिशलादेवी तथा सिद्धार्थराजा एवुं कहेवा लाग्या ॥१०६॥ ॥ जे हे देवानुप्रियो! अमारे घेर ए पुत्र गर्भने विषे आवी उपन्या पछी अमें रूपेकरी, अणघडे सोनें करी, धान्यें करी, राज्यें करी, वाहनें करी, मनुष्यना सत्कारें करी, अत्यंत घणा वृद्धि पाम्या तथा सा मंत जे सीमाडाना राजा अने चंदप्रद्योतनादिक राजा, ते पण अमारे वश थया. तथा अमारी चाकरी करवा आव्या ॥१०७॥ तेथी अमारा मनमां एवुं चिंतव्युं हतुं के जेवारे अमारे घरे बाल कनो जन्म थाशे तेवारें ए बालकनुं नाम रूप गुणें करी प्रधान निष्पन्न श्रीवर्द्धमान एवो आपीशुं, ते अमारा मनोरथ सिद्ध थया, अमारी इच्छा पूरण थइ माटे अमें ए कुमारनुं वर्द्ध मान एवुं नाम आपीयें छैयें. तमें पण ए कुमारने श्रीवर्द्धमान कुमार एवा नामें बोलावजो. एरीते संबंधी सर्वने शिरपाव पहेरामणी करीने सर्व सज्जननी साखें बालकनुं नाम स्थापन

कर्युं ॥ १०८ ॥ पछी ते सर्वने विदाय कर्या ॥ इतिश्री वर्द्धमान नामस्थापन संपूर्ण ॥ ते श्रीव र्द्धमान जगवान् कहेवा छे? तोके सात हाथनुं महोटुं शरीर छे जेनुं, वळी समचोरस संस्थान छे, सुवर्णवर्ण देहनी निर्मल कांति छे, वज्र रूषजनाराच संघयण छे, एवा जगवान् छे. हवे श्रीवर्द्धमान स्वामीनां सर्वमळी त्रण नाम थयां ते कहे छे. एकतो माता पितायें आपेलुं नाम श्रीवर्द्धमान जगवान् छे अने बीजुं रागद्वेष रहित तपस्यामां खेद सहन करवाथी श्रमण एवुं नाम जाणवुं अने त्रीजुं जे अकस्मात् उपजे ते जय अने सिंहादिकोना उपद्रवथी जे जय उत्पन्न थाय ते जैरव कहीये ए जय जैरवोथी चलायमान थया नही निर्जय पणें रह्या थका जूख तृषा प्रमुख परिसहे करीने क्षोज पाम्या नहि एम परिसह उपसर्ग सहन कर्या तथा सर्वतोजड प्रमुख प्रतिमाना पालवा वाला, चारज्ञान सहित, धैर्यवान, अरति रति परिसहने वेठीने रागद्वेष रहित पणे सुख डुःख सहन कर्यां तेथी इव्यवीर्य पाम्या थका मोक्षजवानो निश्चय कर्यो छे तोपण चारित्र पालवामां तत्पर रह्या एवा वीरपणांनां गुणोये करी देव तायें श्रीमहावीरस्वामी एवुं नाम दीधुं तथा जगवान् आमल क्रीडा करतीवेलायें देवता क्षोज पमाडवा आव्यो तेनाथी बीक पाम्या नही ते कथा आगल कहेवाशे तेवारे पण देव तायें महावीर एवुं नाम दीधुं ॥ १०९ ॥ ॥ हवे जगवान् श्रीमहावीरस्वामी दिवसें दिवसें चंड्कलानी पेरें वधता थकां, घणा दासदासीयो साथे परवर्या थकां, अत्यंतरूपवान, मस्तकें जमरानां सरखा काला केश छे जेना, कमल सरखां नेत्र छे, परवाला समान बिंबोष्ठ छे, धोला दांत छे, कमल गर्ज सरखो गौर वर्ण छे, कमलना गंध सरखो श्वासोश्वास छे, सर्व देवताउना रूपथी पण घणुंज रूपछे जेनुं एटले सर्व देवोनुं रूप जो एकठुं करीयें तो जगवानना

डाबा पगना अंगुठानी एक कलाने पण पहोंचे नही केमके त्रणे लोकमां सर्वथी अधिक रूप श्रीतीर्थंकर जगवाननुं होय छे तेथी उंछुं गणधर महाराजनुं रूप, तेथी उंछुं आहारक शरीर वाला साधुनुं रूप, तेथी उंछुं अनुत्तर विमानवासी देवोनुं रूप जाणवुं, तेथी उंछुं नव ग्रैवेयकना देवोनुं रुप, तेवार पछी बारमो देवलोक, अगीयारमो, दशमो, नवमो, आठमो, सातमो, छठो, पांचमो, चोथो, त्रीजो, बीजो, पहेलो देवलोक ए सर्वे क्रमें करी एक बीजाथी उतरता उतरता रूप वाला कहेवा. तेवार पछी जोतिषि देवोनुं, पछी जवनपतिदेवो, पछी व्यंतर देवो, पछी चक्रवर्त्तिराजा, पछी वासुदेव, पछी बलदेव, पछी मंमलिक सामान्यराजानुं रूप जाणवुं ए सर्वे अनुंक्रमें एकेकथी हीनहीन रूपवाला जाणवा वली जगवान जातिस्मरण ज्ञानसहित अप्रतिपाति मति, श्रुत अने अवधि मली त्रणज्ञानें करी सहित, सर्वथी उत्कृष्ट देहनी कांति छे जेनी, एवा जगवान अबीह, बलवंत, बुद्धिमंत, सुरूपी, दिव्यस्वरूपधारी, साहसिक वली रूपाला, रंगीला, रढीयाला, रेखाला, रतीला, मतिला एवा जगवान रमतां रमतां जेवारें आठवर्षनां थया तेवारें सरखे सरखा राजकुमारो साथें क्रीडाकरता थका ते देशमां प्रसिद्ध पामेली एवी आमलकी क्रीडा रमवा सारुं नगरनी बाहिर एक पीपलीनुं वृक्ष छे त्यां सर्वकुमारो एकठा थइने सर्व छोकरा दोडवा लाग्या ते आवीरीतें के बे बे छोकरा साथें दोडे तेमां पहेलो जे पीपलीना वृक्षने जइ पकडे ते जीत्यो अने जे पाछल रहीजाय ते हार्यो पछी जे हारे ते पोतानी खांध उपर जीतेला छोकराने बेसाडीने जे स्थानकथी होड करीने दोड्या होय ते स्थानकें पाछो जइ मूके एवीरीतनी रमत पोताना जेवडा छोकरा साथें जगवान करे छे एवामां सौधर्मेंद्र सजामां बेठा थकां अवधिज्ञाने करी जगवाननुं महाबल


चित्र ३९
देवता
ताडजेवो रूप करीने प्रभुने लईजाय छे
पीपलीनो
वृक्ष
आमली
नो वृक्ष
छोकरा रमत करे छे

जाणीने सन्नामां कहेवा लागा के, आजना समयमां जेवा श्रीमहावीर नगवान बलवान ने एवो कोइ बीजो बलवान नथी जो महारासहित सर्वदेवो मलीने तेने मरावदा जाय तोपण मरे नही एवा ने. ते इंद्रमहाराजना वचनने अणसद्दहतो थको एवो कोइ मिथ्यात्वी देवता तिहांथी चलीने जिहां नगवान रमे ने तिहां आव्यो अने गोकरानुं रूप करी नगवान साथें रमवा लाग्यो तेवारे नगवान अत्यंत वेगथी छोडीने तरत जइ पीपलीना फाडने हाथ लगा डीने आगल चाल्या अने देवतायें पीपलीना नीचेनी मालीयोमां सर्वत्र फूंकरा करतो एवा सर्पनुं रूप बनाव्युं ते नगवाननी सामो फणाटोप करीने बीवरावदा लाग्यो पण नगवानें सर्पने पोताना हाथथी दूर करीने पोतें पीपली उपर चडीगया अने मनमां ते सर्पनो कांइ पण नय आव्यो नही हवे जेवारे ते देवकृत बालक हाखो अने श्रीवर्द्धमान जीत्या तेवारे ते देवरूप बालके पोतानी खांध उपर नगवानने चडावीने तेने बीवरावदा सारुं सात ताडवृक्ष जेटलुं उंचुं रूप कर्युं तेने जोइने बीजा सर्व बालको नयपामीने नाशि गया अने प्रनुना मा तापिताने जइ सर्ववृत्तांत कह्युं तेवारे माता पिता चिंता करवा लाग्यां तेमनी चिंता टालवा ने माटे नगवाने वज्रप्रहार जेवी पोतानी मुष्टि, देवनी पीठ उपर मारी तेथी ते देव अरराट करतो चीश पाडतो थको जमीन उपर पडी गयो पढी घणो लज्जायमान थइ पोतानुं रूप प्रगट करीने कहेवा लाग्यो के हे प्रनु ! जेवा तमोने इंद्रमहाराजे वखाण्या तेवाज तमे धीरजवाला महाबलवान गो ए अवसरमां इंद्रमहाराज पोतें पण तिहां आव्या अने ते देवताने नगवानने पगे लगाड्यो देवतायें पण नगवानने पगे लागी अपराध खमाव्युं ते देव मिथ्यात्वपणुं त्यागी समकेति थयो पढी इंद्रमहाराज तेने पोतानी साथें देवलोकमां लइ गयो इति आमलपीपलि क्रीडा संपूर्ण ॥

हवे जगवान आठवर्षना थया एटले माता पितायें मोहना वशथकी विचार्युं ॥श्लोक॥ लाल येत्पंचवर्षाणि, दशवर्षाणिताडयेत् ॥ प्राप्तेषोडशकेवर्षे, पुत्रंमित्रवदाचरेत् ॥ १ ॥ ॥ तथा ॥ मातावैरीपिताशत्रुः, पुत्रोयेन नपाठितः ॥ शोजते न सजामध्ये, हंसमध्येबकोयथा ॥२॥ ॥ अर्थः—ठोकराने पांचवर्ष रमाडवो रमतकरावववी अने दशवर्षनो थाय तेवारें धाकमां राखवो तथा शोलवर्षनो जेवारें थाय तेवारें तेने मित्र सरखो जाणवो ॥ १ ॥ ॥ तथा जो पुत्रने जणावे नहि तो माता तेनी वैरिणी जाणवी अने पिता तेनो शत्रु जाणवो केमके जो जणे नहींतो ते पंमितोनी सजामां जेम हंसोनी पंक्तिमां बगलो शोजे नही तेमतेपण शोजा पामे नही ॥ २ ॥ एवो विचारकरी, सारुं मुहूर्त्त जोइने शुजदिवसे पोताना स्वजन क्षत्रियोने जमाडी वस्त्राजरण आपी, केशर कस्तूरीनां ठांटणा करी, हाथी रथ घोडा शणगारी, गीत वाजित्र सहित महा महोत्सवथी निशालीयाउने आपवा सारुं गोलधाणी मेवा प्रमुख लीधां तेनां नाम कहेठे. वरसोला, गुंदवडा, खारक, टोपरां, डाख, खजूर, सिंघोडा, अखोड, बदाम, चारोली, नालियेर, साकर, सेंव, पेडा, फल, फूल, साकरीया चणा, एलचीपाक, धाणी, गोलधाणी, बीजोरां, चणा, सोनानाखडीया, रत्नजडित लेखणो, रूपानीपाटीउ, पाननां बीडां प्रमुख अनेक वस्तुउ साथें लइने तथा पंमितने आपवा योग्य वस्त्राजूषण साथें लइनें सोहागणी स्त्रीयो गीत गाती थकी श्रीवर्द्धमानने स्नान करावी शणगार पहेरावी हाथी उपर बेसाडी मेघा मंबर ठत्र चामरो सहित, याचकोने दान देतां थकां, जाटस्तुति करता थकां, ब्राह्मणवेदध्वनि जणता थका, अशिर्वाद करी वंदीजताथकां, जणाववा वाला पंमितनी पासें आव्या तेवारे पंमित पण सिद्धार्थराजानो ठोकरो सकलदेशनो अधिपति महारीपासें जणवा आवे ठे एवुं


चित्र ३०
भणावनार मेता
वृद्ध ब्राह्मणने
रूपें इंद्र महाराज
भणनार निशालिया

जाणी अहंकार आणी महोटुं आसन मंमावी शणगार करीने बे मणिबंध, बे बाहु, बे कक्षा, बे कान, बे काननी मूलमां, एक ललाटमां अने एक कोटमां एवा बार स्थानके तिलक करी पोताना परिवारने सर्व शणगारी वाट जोतो जोतो बेगो छे. ए अवसरमां इंद्रमहाराजनुं आसन पण ध्वजानी पेरे कपायमान थयुं अथवा जलमां चंद्रबिंबनी पेरे चपल थयुं अथवा हाथीना काननी पेरे चपल थयुं तेवारे इंद्रमहाराजें अवधिज्ञाने जोयुं तो नगवान नणवा बेगा छे एवुं देखी कौतुक पामी चिंतववा लाग्यो के आ मोहनीयनो चमत्कार जूउ कहेवो छे माटे मातापिता: जाणे जे एने नणावीयें पण नगवानतो त्रणज्ञाने सहित छे महागंनीर छे एने शुं नणवुं छे ? एतो नण्या गुण्या स्वयंबुद्ध छे, अमृतमां वली मीगाश शी करवी छे ? सरस्वतीने वली पोथी शी देखाडवी छे ? चंद्रमाने वली उज्वलता शी करवी छे ? आंबाने विषे तोरण बांधवुं ? तथा मातानी आगल मोसाल वर्णव करवो तेम एमणे अज्ञानना वशथी नगवानने निरर्थक नणवा बेसाड्या छे माटे हवे नगवाननी आशातना न होवी जोइयें एवुं विचारी शक्रेंद्र ब्राह्मणनुं रूप करी जिहां नगवान नीशालमां आव्या छे तिहां ब्राह्मणनें सिंहासन उपरथी उगाडी नगवानने उंचा सिंहासन उपर बेसाडी प्रथमतो उपाध्यायनी समीपें बेशी तेने केटलाएक शास्त्रार्थना प्रश्न पूछ्या परंतु उपाध्यायथी बराबर तेनो जवाब अपाणो नही तेवारे वली तेहज प्रश्न नगवानने पूछ्या तेना उत्तर नगवाने निःसंदेह पणे आप्या ते जोइ अध्यापक जे नणावनारो ते मनमां विचार करवा लाग्यो के आ वातोना तो महारा मनमां पण आज सुधी संदेह हता में पूर्वे घणा पंमितोने एनां अर्थ पूछेला हता पण कोइये महारी शंकाउनुं समाधान कर्युं नही अने आ न्हाना बालकें महारा संदेह दूर कर्या ए महोटो

आश्चर्य जणायछे वली पण इंड्महाराजें नगवाननें शब्दोनी उत्पत्ति पूछी तेवारें नगवानें संज्ञा सूत्र, परिनाषा सूत्र, विधि सूत्र, नियम सूत्र, प्रतिषेध सूत्र, अतिदेश सूत्र, अधिकार सूत्र, अनुवादसूत्र, विनाषा सूत्र अने निपात सूत्र ए दश सूत्रना अर्थ सर्व पृथक् पृथक् कही बताव्या, शब्दसाधनिका बतावी तेवारे लोकोये जाण्युं जे आ कोइ परदेशी ब्राह्मण आवेलो छे ते बालकने प्रश्न करे छे अने बालक तेना उत्तर आपे छे पण एवा उतरतो आ नणावनार पंमितनां मातापिता पण जाणतां नथी एम लोक सर्व आश्चर्य पामीने विचारवा लाग्यां के आटलां शास्त्र आ बालक ते किहां नण्यो हशे ? अनें उपाध्याय पण चमत्कार पामीने कहेवा लाग्यो के आते कोण ब्रह्मा पोते साक्षात् आहीं आव्या छे केशुं ? ते वारें सर्व लोकना मननां संशय मटाडवा सारुं इंड्महाराज बोल्या के अरे लोको आ वर्द्धमान कुमार छे, एने सामान्य पुरुष जाणशो नही ए त्रण लोकनो नाथ छे, सर्व पदार्थोनो जाण छे, परंतु महागंनीर छे माटे पूछयाविना उत्तर आपे नही. लोकोमां केवत छे के गला ते वाजणा, गला बोला पोलाढोल, जाणे आश्विन अने कार्त्तिकनो मेघ, जेवो असति स्त्रीनो स्नेह तथा जेवो शरदृतुनो गर्जारव तेवो गलो जाणवो पण जे पंमित छे ते तो वर्षादना मेघ सरखा गला बोले नही जे मूर्खहोय ते पोतें पोतानें जाणेजे हुं पंमित छुं एवी लपरायो करे पण एवा महोटा पुरुष जे छे ते विना पूछे बोले नही एवुं कहीने नगवाने प्ररूप्यां जे व्याकरण संबंधि दशप्रकारना सूत्र तेनी वृत्ति तथा उदाहरण करीने व्याकरण बनाव्युं ते जिनेंड् व्याकरण नामा आठ व्याकरणनी आदिमां थयो पछी इंड्महाराज पंमित प्रमुख लोकोमां नगवान सर्वज्ञ छे एवुं जणावी पोतानुं रूप प्रगट करीनें स्वर्गमां गयो. उपाध्यायें नगवानने पछी

लागीने कह्युं के हे प्रभु! तमे ज्ञानसमुद्र छो हुंतो अपूर्ण कलशनी पेरे छुं माटे तमे महारा गुरु छो पछी प्रभुयें उपाध्यायने घणुं दान आप्युं भगवानना माता पिता घणां राजी थयां थकां भगवानने हाथी उपर बेसाडी उत्सव सहित गाजते वाजते घरे तेडी आव्या इति लेखक शालामहोत्सव समाप्त ॥ ॥ हवे प्रथम इंद्रमहाराजें आवीने भगवानने भलेना अर्थ पूछ्या छे ते विस्तार होवाथी उपरे सूचव्या नथी माटे अहीं लखीयें छैयें ॥ ॥ अथ भलेना अर्थ प्रारंभः॥ श्रीवीरप्रभुने नीशाले बेग जाणीने सौधर्म इंद्र ब्राह्मणनें रूपें आवी प्रभुने नमस्कार करी सर्वलोकनें चमत्कार उपजाववा निमित्तें प्रथम भलेना अर्थ पूछ्या थकां प्रभुजीयें आ प्रमाणे अर्थ कह्या ॥ १ बे लीटी ते जीवनी बे राशि छे तेमां एक सिद्धना जीव ते निष्कर्मी अने बीजा संसारी जीवते सकर्मी जाणवा. २ भले ते अरे जीव तुं सिद्धना जीवनी राशिमां भलवानी इच्छा राखजे. ३ मिंडुं ते संसार रूप गोलाकारें ऊंडो कूप छे ते मांहेथी निकलवानुं छिद्र छे माटे नीकलीश.तो सिद्धमां भलीश. ४ बिलाडी ते जेम कूवामां वस्तु पडी होय तेने लोढानी बिलाडीथी बाहेर काहाडीयें तेम इहां संसारी जीवने संसार रूप कूप मांथी काहाडवानी एक देशविरति अने बीजी सर्वविरति रूप बे बिलाडी जाणवी. हवे ते सिद्धना जीव किहां रहे छे ते कहे छे. ५ उगण चोटीउं माथे पोटीओ एटले चौदराज लोकना एक अधोलोक बीजो मध्यलोक अने त्रीजो उर्ध्वलोक एवा त्रण भाग छे तेमां उर्ध्व लोकनें चोटीने स्थानके बार योजन विस्तार वाली इसीपभारा नामे पृथिवी छे तिहां एक योजननें चोवीशमें भागें ३३३ धनुषउपर बत्रीश अंगुल जेटला विस्तारमां लोकने मस्तकें अलोकने अडी रह्यां थकां सिद्धना जीव रहे छे. ६ ननो वीटालो ते हे जीव! तुं संसारना

कामजोगमां मग्न थइ वीटाइ रह्यो छो तेथी अधोगति एटले नीचीगति पामीश. ७ ममो माउलो ते आ संसारजे छे ते जीवनुं अनादि घरछे तेमां मोहनामे माउलो एटले मोसाली यो छे. ८ ममा हाथ बे लाकुवा ते पूर्वे कहेलो जे मोह नामे मोसालीयो छे ते जीवने काम जोग रूप बे लाडवा हाथमां आपीने जोलवी राखे छे संसारमांथी नीकलवा देतो नथी. ए सेरीराणी चोकडी तें सिद्धिरूप राणीने मंदिर चढतां चार कषाय रूप चोकडीनी चोकी राखी छे ते चोकीनें वंचीने कदापि कोइ उंचो चडे तोपण तेने चडवा आपती नथी. १० पाछी चारकुंझावलि ते अगीआरमी पावडीथी पाछो ढोलीने तेने ते चोकडी संसार कूपमां नाखे छे. ११ ढांउं ढांउं ढोकलो माथे छोकरो एटले हे जीव ! तुं संसारमां धाइ धाइनें गर्नावासमां पडीश तिहां ढोकलानी पेरे सीजाइ रहीश वली छोकरां छैयां ते ताहारे माथें विटंबना पाडशे माटे जो तुं धर्मना चक्रवर्त्ती महाराजनुं सिद्ध नगर छे तेने जोवाने वांछतो होय तो प्रथम तेनो सम्यक्त्व नामे महामंत्रीश्वर छे तेनी साथे.मलजे एटले ते तुजनें धर्म महाराजथी मेलाप करावी देशे. हवे ते सम्यक्त्व नामा प्रधानना घर सुधी जातां थकां वचमां घाट छे तिहां लूंटारा रह्या छे तेने निवारण करवानो उपाय कहे छे. १२ हाथमां झांगडी ते धर्मकथा वार्त्तारूप यथा प्रवृत्ति करण करी, अपूर्वकरणना शुन परिणाम रूप झांगडी एटले महामुजर हाथमां लइने. १३ आइडा दो जाइडा वडो जाइ कांनो एटलें राग द्वेष रूप बे जाइडानें पछाडी वेगला करजे तथा बीजो पण सात प्रकृति रूप चोरनो क्षय करी अपूर्वकरण रूप मुजरथी मिथ्यात्वनी गांठ जांगीनें एटले ग्रंथीजेद करी आघो जाजे तिहां सम्यक्त्वनामा महामंत्रीश्वर पांच रूप करी रह्यो छे तेनां तुं दर्शन पामीश. पछी तेनी सेवामां रहेतां थकां ते ताहा

रामां योग्यता जाणीनें आगल धर्म चक्रवर्त्तीनी बे पुत्री छे. १४ इडिकेवली इडिञकारु एटले एक देशविरति नामे लघु पुत्री छे अने बीजी सर्वविरति नामे मह्रोटी दीकरी छे ते तुजने पर णावी देशे परंतु जो सम्यक्त्व मंत्रीनी सेवा एकाग्रचित्तें सन्मुख रही करीश तो ते प्रसन्न थाशे केमके. १५ आत आत आंकोडा वडे आंकड फांकोडा एटले तिहां शंका कंखा कषाय रूप आंकडा फांकडा मह्रोटा छे तेनी जो तुं संगत करीश तो सम्यक्त्व मंत्रीना चित्तमां नर्म पडशे तेवारें ते ताहारी साथे दोहलो थाशे. १६ निलीतोडवे कांगेला वडे एटले तिहां वली विषय कषाय रूप अथवा ममता माया रूप एवी बे विषनी वेलडी छे तेमांहे काम अने जोगरूप बे सर्प सूताछे तेने जगाडीशमां छेडीशमां एम करवाथी स्वामी सुप्रसन्न थयो थको तुजने सिद्ध नगरीयें जवानो सथवारो करी आपशे. १७ एनवेन बेगाडी एटले समिति अने गुप्ति रूप बे गाडीयोमां बेसाडीनें. १८ उरखवाला बलदिया एटले तेमां ज्ञान अने चारित्र रूप बे बलद जोतरी आपशे तेने. १९ अमीयां बे रासडी एटले संवर अने निर्जरा रूप बे रासडी बांधीनें गाडली शिवपुर नगरना मार्गे जणी चलावजे. २० क कोकेवडो एटले केवलज्ञान रूप वोलावा विना सिद्ध नगरे पोहोचातुं नथी ते केवल ज्ञा नतो अणाहार मार्गेथी उपजें छे माटे. २१ खरको खाजलो एटले तुं चार प्रकारना आहारनो स्वादी थाइशमां रसेंद्रियना लोलुपी थाइशमां. २२ गगा गोरी गाय वीयाणी एटले ते अणा हारीजे तपादिक मार्ग छे तेना बतावनारा तो गुरु छे माटे गुरुनी जक्ति बहुमान्य करजे केम के गुरुमह्रोटा उपकारी छे संसार समुद्र तरवाने बोधबीज धर्मनुं आलंबनादिक गुरु आपे छे माटे गुरुनुं गौरव पणुं करजे. २३ घघोघरट पलाण्यो जाय एटले अरे जीव तुं घरनो धंधो जे

आरंन समारंन तेना नारें करी अहर्निश पलाएयो थको वहे छे ते नारथी तुजने गुरु मू कावशे. २४ ननीउ आमण दूमणो एटले गुरुयें जे घरनो नार छोडाववा माटे पांच अणु व्रत अने पांच महाव्रत रूप अनिग्रह नियमादिक अंगीकार कराव्या ते पालतां थकां आमण दूमणो नग्न चित्तवालो थइने पश्चात्ताप करीशमां. २५ चच्चाचिनीचोपडी एटले गुरुदत्त चारित्र धर्म पालवानी चित्तमां चोंप राखजे. २६ छच्छावदियापोटला एटले छद्मस्थ पणे गुरु समीपें श्रुतज्ञात चौदपूर्वनी विद्यानुं पोटलुं बांधजे ज्ञाननो अन्यास घणो करजे. २७ जज्जोजेसलवा णीउं एटले नियाणशल्य, मायाशल्य अने मिथ्यात्वशल्य ए त्रणशल्य ताहारा अंतरंगने विषे छे तेने टालवानो वणिज व्यापार करजे. २८ ऊझोऊारीसारिखो एटले तुं ऊारी सरखो स्वनाव राखजे जेम ऊारीनुं मुख सांकडुं होय अने पेट पोहोलुं होय तेम तुं पण पेट महोटुं राखजे अने मुखथकी कोइना दोष मर्म प्रकाशीशमां एवीरीतें मुखने सांकडुं राखजे. २९ ञञीयो खांमोचांदे एटले खांमोचांदो ते अर्द्धचंद्रमा जाणवो तेना जेवा आकार वाली सिद्धशिला छे ते स्थानकें जावानुं तुं निरंतर साधन करजे. ३० टट्टापोलिखांमेषु एटले तुं पोताना व्रत नियम अगड आखडी जे कांइ गुरु समीपें लीधां छे ते खंमित करीश नही अर्थात् पच्चरकाणनी पोल जे बारणा तेने दृढ राखजे. ३१ ठगठोबर गाकुउ एटले तुं ठोबर ते नांगेलो घडो तेनी पेरें थाइशमां गुरुयें आपेली श्रुतिशिक्षा ते हृदयरूप घटने विषे संग्रह करी राखजे. ३२ मम्माडामरगांठे एटले तुं बाह्य आमंबर करी अन्यंतर कर्मनी गांठे बंधाइशमां. ३३ ढढा लुणोपूंछे एटले तु ढुणो ते श्वान तेना पूछडानी पेरें वक्रस्वनाव राखीश नही परंतु सरल स्व नाव राखजे. ३४ राणोताणोसेले एटले जो तुं मोहराणा साथें फूफकरे तो ज्ञान, दर्शन, चारित्र

तथा त्रणगुप्तिरूप त्रण सेल हाथमां राखजे. ३५ तत्तोतावे तेजें एटलें तुं तप जप करतो थको कोइनां आक्रोश वचन सांजलीने तप्त तेलनी पेरें तातो थाइशमां. ३६ थन्ना थेरखवा ली एटले कदापि ताहारुं मन वशवर्त्ति नथाय तो पण वचन अने कायां ए बेनें तो थिरथाप करी राखजे. ३७ दद्दीयोदीवट्टो एटले समकेत दर्शनरूप दीवो तेने हृदयरूप घरमां राखजे वली दया दमननें दान तेनी अजिलाषा धरजे. ३८ धद्धीयोधाणको एटले तुं धन कमाववानुं परिग्रह मेलववानुं ध्यान राखीशमां केवल धर्मध्यान ताहारा हृदयमां राखजे. ३९ ननीयो पुलायरो एटले तुं नास्तिक मति अंगीकार करीने हृदयमांथी समकेतने पोलुं एटले पातलुं करीशमां. ४० पप्पापोलीपाटें एटले पाप आववानी पोल जे पांचेंड्यिनां आश्रवद्वार छे तेने संवर रूप कमाड जडीनें बंधकरी राखजे पण पोलां राखीश नही जेम अढार पापस्थानकनो प्रचार तेमां प्रवेश करी शके नही एवां दृढ मजबुत बंधकरी राखजे. ४१ फप्फाफगडेजोडे एटले फोकट फांसीया, अशुद्ध, अविनीत, अनाचारीनी जोडे संगत करी विचरीशमां. ४२ बब्बा मांहेचांदणुं एटले बोधबीजनो वधारो करजे जेम जेम बोध वधतो जाशे तेम तेम हृदयने विषे ज्ञानरूप चांदणुं एटले चंद्रमां प्रगट थाशे. ४३ जन्नोजारीजेंसको एटले जेंस जेम सूकुं लीलुं जक्षण करीने पेटें जारी थाय तेम तुं पण बावीश अजक्ष अने बत्रीश अनंतकाय जे कंदमूल कहेवाय छे ते पामीने तेनुं जक्षण करी पेटे जारी थाइशमां कदापि देवादिक आवीने चलावे तोपण चलायमान थाइश नही. माममूकीशमां एटले अर्हन्नक श्रावकनी पेरे दृढता राखजे तथा वली व्रत नियमादिक पालतो थको मनमां महोटो अजिमान धरीशमां, फरी कहे छे. जजीयोजाटचूलेतरो एटले जेम चूलानी जाट धगधगती रहे छे तेम तुं कोइना आ

क्रोश असह्यमर्मवेधाळां वचन सांजळीने अंतरंग हैयामां क्रोध रूपअग्नियें धगधगतो रहीशमां एटले क्रोधाग्नियेंजेटीशमां. ४४ ममयीयोमोचक एटले आठकर्मने मूकजे मोक्ष मार्ग महोटो ठे तेने आदरजे. ४५ ययीयोजाडोपेटको एटले संसारमांहे यमजे कृतांत तेनुं पेट महोटुं ठे ते सर्वजगतने ग्रास करे ठे तोपण तेनुं पेट जरातुं नथी तेमाटे एनो जय ताहारा हृदयमां राखीने धर्मने विषे आळस करीशमां. ४६ रायरोकटारमह्ल एटले राग अने द्वेष ए बे महोटा मह्ल ठे तेमां रागना वळी बे प्रकार ठे एक प्रशस्तराग अने बीजो अप्रशस्तराग ए बेहु मह्लने जीतीश तो कर्मथी हलवो थइ केवलज्ञान उपार्जन करीने अक्षयपद जे मोक्षपद तेनो जोगी थइश. ४७ लह्लाघोडोजातवा एटले लोजरूप घोडानी लातथी वेगळो रहेजे. ४८ ववाविंगणवासदें एटले कामादिक व्यंग ठे तेने ताहारा मनरूप घरमां वास एटले वसवा देंजे नही, केमके जो कामादिक ताहारा मनरूप घरमां प्रवेश करशे तो आत्माना उत्तमगुण रूप धनने सर्व चोरी लइ जशे. ४ए शशाकोटा मरडीया एटलें शसलानी फेरें कोट अने कांनथी ढंकाइने गलीयार थइ बेसी रहीशमां पण धर्मने विषे उद्यमी थाजे जे पटलालोकनी गतिथाशे तेम ताहारी पणथाशे एवुं चिंतवतां एकदिवसें काळरूप पाराधी दुर्गतिमां लइजाशे जेम ससलानें आहेडी लेइ कोट एटले गळुं मरडी नाखे तेम तुजने पण काळ आहेडी मरडी नाखशे. ५० षषाखूणे फाडियां एटले खरुं बोलजे खोटुं बोलीशमां केमके एक पण मृषावाद वचन बोलवाथी सर्वगुण अने सर्वव्रतनो नाश थइ जाशे जेम कोइक वस्त्रनो कोथळो खूणें फाटो पठी तेमां जे वस्तु जरेली होय ते हलवे हलवे निकलतीथकी अनुक्रमें सर्वखाली थइ जती रहे तेम ताहारा गुण तथा व्रत जता रहेशे. तथा खूणेबेशी एटले कोइ नही देखे एवीरीतें एकांते बेशी पाप करीश तो

पण ते आगल उदयिककालें प्रगट थाशे इत्यर्थः ५१ सारसे दंती लोक एटले जो तुं मोहरा जानी साथे युद्ध करे तो दंती एटले हाथीनी पेरें साहसिक थाजे जेम हाथी साहसिक थको सर्वनी आगल आगेवान थइ किल्लानां कपाट, गढ कोट सर्वने नांगी नाखें तेम तुंपण मोह राजानो मिथ्यात्वरूप गढ नांगी नाखीश. ५२ हाहोलोहरिणेकलो एटले तुं मोहरूप पाराधीनां पाशमां पडीशमां पण हरण जेम पाराधीने देखी नाशी जाय तेनीपेरें तुंपण फाल मारीने नाशी जाजे परंतु जो मोहना पाशमां पड्यो तो संसारनां बंधनथी छूटीश नही. ५३ लावेलच्छी दोप णीहार एटले जोतुं मोक्षनो अनिलाषी थइने संसारनां बंधन छेदीश तो एक इव्यलक्ष्मी अने बीजी नावलक्ष्मी ए बे प्रकारनी लक्ष्मी ताहारे घेर पाणी नरशे एटले जो अनुत्तरविमाने देव ता पणे उपजीश अथवा मनुष्यनवे नरदेव चक्रवर्त्ति पणे उपजीश तो नरतादिक जेम इव्य लक्ष्मीनां पुण्य नोगवीने सिद्धने विषे नावलक्ष्मी नोगवे छे तेम तुं पण पामीश ॥ हवे एवां सिद्धनां सुख केवीरीते पामीयें ते आगल कहे छे. ५४ खडीयारवाटक मोर पालें बांध्या बे चोर एटले संसारने विषे षट्काय जीवोना आत्माना जे ज्ञानादिक गुण छे तेने लूटवाने माटें राग अनें द्वेष रूप बे चोर खडा छे एटले उन्ना छे तेने पकडी बांधीने तेनुं बीजमात्र का हाडी नाखजे के जेथकी कर्मरूप वृक्षनी उत्पत्ति फरी थायज नही ॥ रागोयदोषोयमाबीज ॥ इतिवचनात् ॥ माटे ए बे ने टालीने चारघनघातीया कर्मने टालजे के जेम केवलरूप लक्ष्मी पामे पछी ते केवलश्री नोगवीने अंते चौदमे गुणठाणे योगनिरुंधी शैलेसी करण करी शुक्ल ध्यानने चोथे पाइये कार्मणशरीर छेदी क्रिया रहित थइ सिद्धना जीवोनी राशिमां नलजे के जेम ५५ मंगलमहाश्री, देविद्या परमेश्वरी एटले मंगलिक रूप महोटी नावलक्ष्मी पामीश अर्थात्

पोताना आत्मानां अनंतज्ञान, अनंतदर्शन, अनंतचारित्र, अनंतवीर्य, अगुरु लघु, अरूपी, अखंड, अक्षय, अव्यय एवी महामंगलिक रूप नावलक्ष्मी पामी सादिअनंतनांगे अजर, अमर, अविनाशि पणे, महानंद, परमानंद पद पणे रहीश इतितत्त्वं ए नलेनो अर्थ समाप्त थयो ॥ वली एनो अर्थ प्रकारांतरे जुदा जुदा महापुरुषोनो करेलो घणा प्रकारनो टीकामां आव्यो ठे परंतु आंही ग्रंथगौरवना नयथी मात्र आ एक प्रकारनोज दाखल कर्यो ठे ॥ ॥ हवे नगवान जेवारें बाल्यावस्थायें करी रहित थया अने यौवनवय पाम्या तेवारें मातापितायें रूडुं मुहूर्त्त जोवरावीनें घणा आडंबर सहित समरवीरनामा सामंतनी पुत्री यशोदा नामे हती ते प्रजुने परणावी घणी प्रतोमां नरवर्मराजानी पुत्री यशोदा परण्या एवा अक्षर लखेला ठे पढी ते यशोदा राणी साथें विषयसुख नोगवतां प्रियदर्शना नामे एक पुत्री थइ ते पुत्री नगवाननी बहेननो पुत्र जमाली नामे हतो तेने परणावी एम करतां नगवानने गृहस्थ पणामां अष्ठा वीश वर्ष वीत्यां ॥ हवे नगवानना परिवारनां .नाम सूत्रकार वर्णवे ठे. महावीरस्वामीनां पिता काश्यपगोत्रीया ठे तेनां त्रण नाम ठे ते कहे ठे. एक सिद्धार्थ, बीजुं श्रेयांस, त्रीजुं यशस्वी हवे नगवाननी मातानुं वाशिष्टगोत्र ठे अने तेमना पण त्रण नाम ठे ते कहे ठे. एक त्रिशला, बीजुं विदेहदिन्ना, त्रीजुं प्रीतिकारिणी तथा नगवाननां काकानुं सुपार्श्व एवुं नाम ठे तथा नग वाननां महोटा नाइनुं नंदीवर्द्धन एवुं नाम ठें तथा बहेननुं नाम सुदर्शना ठे तथा स्त्रीनुं नाम यशोदा ठे तेनुं कोडिन्न गोत्र ठे तथा नगवाननी पुत्रीनुं काश्यप गोत्र ठे तथा तेनां अणोद्या अने प्रियदर्शना एवां बे नाम ठे तथा नगवाननी दौहित्री तेनुं काश्यपगोत्र ठे अने शेषवती तथा यशवती एवां बे तेनां नाम ठे ॥ ११० ॥ ॥ हवे नगवान श्रीमहावीरस्वामी


चित्र ३१
चोरिनुं
चित्र

कहेवा छे तोके ? सर्वकळाउमां निपुण छे, नलीरीतें निर्वाह करवा वाला, नला रूपवंत, सर्व गुणे संपूर्ण, सरलपरिणामी, विनयवान, ज्ञातराजाना पुत्र, प्रसिद्ध एवाजे सिद्धार्थराजा तेनां कुलमां चंद्रमा समान, नलो छे देह एटले शरीर जेमनुं, वज्रऋषननाराच.संघयण, समचउरंस संस्थान, त्रिशलामाताना पुत्र, महा कोमल शरीर वाला, कांतिवंत, ममता रहित, दीक्षानी वांछा करनार, त्रीशवर्ष गृहस्थावासें रह्या तेवारे मातापितातो प्रभुनी अठावीशवर्षनी वयमां देवलोके पहोतां हतां ते दिवसें दीक्षा लेवाने माटे पोताना महोटा नाइ नंदीवर्द्धननी आज्ञा लीधी अने नाइने कह्युं के मातापिता जीवता रहे तिहां सुधी महारे घरमां रहेवुं एवी म हारी प्रतिज्ञा हती ते पूरण थइ फरी नाइनी अनुमतिथी बे वरस घरमां रह्या तेवारे लोकां तिक देवो आवीने इष्टकारी वल्लन वाणीयें करी नित्यआशीष देता थका नित्य स्तवना करता थका एवुं कहे ॥ १११॥ ॥ के हे प्रभु! हवे तमारो अनिग्रह पूरण थयो, ते हवे अनिग्रह संबंधि वात लखे छे. नगवान. अठावीश वर्षना थया तेवारे नगवानना मातापिता देवलोके गयां ते आवश्यकनिर्युक्तिमां तो चोथे देवलोके गयां एवुं लख्युं छे अने श्रीआचारांगसूत्रमां बारमे देवलोके गया एवुं लख्युं छे ए वातनुं समाधान करवा सारुं केटलाएक एवी कल्पना करे छे के देवोनी बधीमली चारनिकाय छे तो ते चार देवनिकाय आश्रयी ए चोथी निकाय वैमानिक देवोनी छे माटे ए चोथो देवलोक ते चोथी निकाय वैमानिक देवोनी समजवी तो ते चोथी निकायमां बारमो देवलोक आवीगयो तेथी आचारांगमां कह्या प्रमाणे बराबर वात मली आवे छे ए प्रमाणे समाधान करे छे पछी तत्त्वकेवलीगम्य छे ॥ हवे मातपिता देवलोके गया पछी महोटा नाइ नंदीवर्द्धनने नगवाने पूछ्युं के हुं दिक्षा लउं तेवारे नंदीवर्द्धन बोल्या

के नाइ तुं दाऴथा उपर लूण नाखे छे केमके मातापिता मरण पाम्यां तेना वियोग रूप दाघ जे बलतरा एटले फोडला तेतो हालमां मने कायम छे तेना उपर वली ताहारा वियोग रूप लूण नाखवुं ते महाराथी सह्युं जाय नही हजीतो माता पितानो शोक पण मळ्यो नथी माटे हुं दीक्षा लेवानी रजा हमणा आपीश नही तेवारें नगवान बोल्या जे माता पिता नाइ बहेन एतो जीवने अनंतिवार थयां ते सर्वने मूकीने वली जीवतो एकलोज आवे छे, एकलोज जाय छे, एकलोज पोतानां करेलां शुनाशुन कर्मोने नोगवे छे, एवीरीतें संसारमां कोइ कोइनो सगो नथी तो हवे कोनो कोनो शोक करीयें अने कोनी कोनी साथें प्रतिबंध राखीयें? फरी नंदीवर्द्धन बोल्या के नाइ! एवुं हुं पण जाणु छुं तोपण हुं शुंकरुं जे महारे मोहनीयकर्मनो बंध हजी घणो नारे छे तेथी ताहारो विरह हुं खमी शकतो नथी तेमाटें हजी महारा कहेवाथी तुं बे वर्ष घरमां रहेतो ठीक छे हवे उत्तम पुरुषनी चाल छे के दुःखीयाने देखी तरत करुणा आवे माटे नाइनुं एवुं कहेण सांनलीने कह्युं के हे नाइ हुं बे वर्ष रहीश पण नातपाणी सर्व फासु लइश महारा वास्ते आरंन करीने कांइपण बनाववुं नही तेवारे नाइयें कह्युं के सुखे एमज रहो अमे तमारा वास्ते कांइ करीशुं नही तेवारें नगवान फरी पण बे वर्ष गृहवासें रह्या ॥ हवे जेवारें नगवान जन्म्या हता तेवारें लोकमां एवी प्रसिद्धि थइ हति जे चौद स्वप्न मातायें दीठा माटे ए चक्रवर्त्ति थाशे, एवुं जाणीनें श्रेणिक अने चंदप्रद्योतन राजायें पोताना कुमरोने बालक ठाकोरनी सेवा करवा निमित्तें मोकल्या हता ते सहुयें प्रनुने आवा घोर अनुष्टान करता देखीने विचार्युं जे ए चक्रवर्त्ति नथी एतो संयम ग्राही तीर्थंकर छे एवुं जाणी ते सर्व पोतपोताने स्थानकें गया नगवान पण एवी स्थितिमां


चित्र ३१
श्रीमहावीर
भगवान्
नवलोकांतिक
देव

वली बे वर्ष गृहस्थावासे रह्या, सर्व सचित्त वस्तुनो त्याग कर्यो, ब्रह्मचर्य पाल्युं पण जे वखत दीक्षालीधी छे ते वखत सचित्तजलथी स्नान कर्युं छे केमके एवी मर्याद छे जे दीक्षा लेती वखतनुं स्नान उष्णजलथी करवुं तीर्थंकरने न होय तेथी प्रतिमांने पण उष्णजल च डावता नथी एवी स्थिति छे पछी बे वर्षमांथी जेवारे एकवर्ष वीत्युं तेवारें नवलोकांतिक देवो आव्या तेनां नाम कहे छे. १ सारस्वत, २ आदित्य, ३ वन्हि, ४ वरुण, ५ गर्द्दतोय, ६ तुषित, ७ अव्याबाध, ८ अग्नि, ९ अरिष्ठ ए नव आवीने जो पण भगवान स्वयंबुद्ध छे तो पण एमनी एवी मर्यादा छे माटे प्रभुनी पासे आवीनें जाण करे केवीरीतें जाण करे ते केहे छे. जय जयवंत होवो हे समृद्धिमान! हे कल्याणवान! तमारुं भलुं थाउ, हे क्षत्रियोमां वृषभसमान! तमारो जयहोवो बोधकरो बोधकरो बुजो बुजो हे भगवान! हे लोकनाथ! सर्वजगत जीवने हितकारी प्रवर्त्तो हे भगवान्! तमे धर्मतीर्थ प्रवर्त्तावो, ते धर्मतीर्थ सर्वलोकनें हितकारी, सुखकारी, मोक्षकारी थाशे एवुं कहीने जयजय शब्द कहे ॥११२॥ ॥ हवे श्रमण भगवान श्रीमहावीरस्वामीनें मनुष्ययोग्य गृहस्थधर्मथी, गृहस्थना व्यवहारथी पहेला, पण अनुपमउपयोग ते अप्रतिपाति एवुं अवधिज्ञान अने अवधि दर्शन होतुं हवुं ते अनुत्तर अवधिज्ञान अने अवधिदर्शनें करी पोतानी दीक्षानो अवसर जाणीने, रूपानो त्याग करीने, सोनानो त्याग करीने, धननो, राजनो, देशनो, वाहननो, कोठारनो, भंडारनो, अंतेउरनो, देशवासी लोकनो, धन, कण, धान्य, मणिरत्न, मोति, दक्षिणावर्त्त शंख, शिला, प्रवालुं, रातांरत्नादिक जे पोतानी पासें छतां छे हाजर छे ते सर्वनो त्याग करीने अर्थात् तेना उपरथी मन उतारी लीये, सर्व रूपादिक छोडीने जे चांदी प्रमुख धरतीमां दाटेला होय तेने बाहार काढा

डीने ते सहु आपणा गोत्रियाने वांटी आपीने आ सूत्रथी वरसीदाननो अधिकार एवो छे के जगवान दिक्षाना दिवसथी एक वर्ष पहेलां वरसीदान देवा मांमे ते सूर्यउग्याथी मांमीने जमवानी वेला सुधी प्रतिदिवसें प्रजातना सवा पहोर दिवस चडता सुधी नित्यप्रत्यें एक क्रोडनें आठ लाख सोनैया जगवान दानमां आपे अने गाममां एवी उद्घोषणा करे के जेने जे वस्तु जोइयें ते धणी ते वस्तु मागे तेवारें जे धणी जे मागे तेने ते आपे ते सर्वशक्रेंद्रना आदेशथी देवता पूरण करे एवी रीते एक वर्षमां जेटला सोनैया दान आपे ते कहे छे. त्रणसो क्रोड एटले त्रण अब्ज अठासी क्रोड ने एंशीलाख एटला सोनैया एक वर्षमां दान आपे ते सोनैयो एक एंशी रतीजार जेटलो होय अने तेना उपर तीर्थंकरनां मा बापनुं तथा पोतानुं नाम होय ते बारसो सोनैयानो एक मण करता नवहजार मण सोनैया दिनप्रत्यें दान देवाय तेना आजना समय प्रमाणे एक गाडलामां चालीशमण जार नाखतां बसोने पच्चीश गाडलां थाय ते सोनैया शक्रेंद्रना आदेशथी वैश्रमण देवता देवमायायें करी आठ समयमां नीपजावीनें, तीर्थंकरनां घरमां जरे, ए दानदेवानो अतिशय छे, अने तीर्थंकरना हाथने विषे सौधर्मेंद्र एवी स्थिति करे के दान देतां थकां तीर्थंकरनो हाथ थाके नही अने इशानेंद्र रत्ने जडित सुवर्णनी लाकडी लइ उनो रहे ते चोसठ इंद्रवर्जीने बीजा सामान्य देवताउने दान लेतां वर्जे तथा जे मनुष्यनां ललाटमांहे जेवी प्राप्ति होय जेवुं जेने आपवुं पोसाय तेवुं तेना मुखमांथी इशानेंद्र वचन कहेवरावे, तथा चमरेंद्र अने बलेंद्र ए बे इंद्र जो तीर्थंकरनी मुठीमांहे अधिकद्रव्य आव्युं होय तो पाछुं पडावी नाखे अने उंछुं द्रव्य आव्युं होय तो पूरण करे. मागनारनी प्राप्ति माफक पामे तथा जुवनपति देवता

चित्र ३३





भरतक्षेत्रनां मनुष्यने दानलेवा सारुं तेडी आवे अने वाणव्यंतर देवो ते मनुष्यने पाछा तेने स्थानके मूकी आवे तथा ज्योतिषी देवता विद्याधरोने दान लेवानी खबर आपे ए सर्व तीर्थंकरनां अतिशय जाणवा ए प्रस्तावें तीर्थंकरनो पिता महोटी त्रण शालाओ करावे आंहीं भगवानना मातापिता देवलोकें गयां छे माटे तेने ठेकाणे एमनो महोटो भाइ नंदीवर्द्धन छे ते त्रणशालाओ करावे तेमां पहेली शालायें भरतक्षेत्रनां मनुष्यने अन्नपानादिक आपे, बीजी शालामां वस्त्र आपे अने त्रीजी शालामां आभरण आपे हवे तीर्थंकरना हाथनां दाननो महिमा कहे छे. चोसठइंद्रने दानने प्रभावे बार वरस पर्यंत मांहोमांहे क्लेश उपजे नही तथा राजा अथवा चक्रवर्त्ति प्रमुख तीर्थंकरनुं दान लइने ते सोनैया पोतानां भंडा रमां मूके तो बार वर्ष सुधी तेमनो भंडारअखूट रहे तथा शेठ सेनापति आदिकने दान मलेतो तेना महिमा थकी बारवर्ष पर्यंत यशःकीर्त्ति घणी वधे तथा रोगी पुरुषने दान मलेतो तेना प्रभावथी रोग सर्व मटी जाय अने फरी बारवर्ष पर्यंत तेना शरीरमां कोइ नवो रोग पेदा थाय नही इत्यादिक दाननो महिमा जाणवो हवे छ घडी दिवस चड्या पछी दानदेवा मांमे ते पोणा बे पोहोर दिवस चड्या सुधी दान आपे एवो पाठ घणी प्रतोमां लखेलो छे परंतु आमां सूर्यउग्याथी ते जमवाना वखत सुधी आपे एवो प्र थम लेख आव्यो छे एवीरीते प्रभुजी वरसीदान रूप वर्षाद एकवर्ष सुधी वरसावीने मनुष्योना दारिद्र्य रूप दावानलने उपशमावे. जे दारिद्री हता ते सर्व धनवंत थया, घोमें करी वध्या, वस्त्रेंकरी वध्या, आभरणे करी वध्या, ए आदिक लक्ष्मीयें करी सहित थया ए प्रभुना हाथनुं दानलइने जेवारें पोताने घेर पाछा आवे तेवारे तेना घरनी स्त्रीयो

सरखी पण पोताना स्वामीनें उंलखे नही पठी इंद्र महाराज आवी उंलखाण करावे ते वारें तेने सर्व प्रकारनी उंलखाण पडे ए प्रज्जुना हाथनुं दान सर्व जव्यजीवोने मले परंतु अजव्यनेंतो ए प्रज्जुना हाथनुं दान सर्वथामलेज नही इति संवत्सरीदान महिमाधिकार वर्णन समाप्त ॥ ॥ हवे जगवान महाराजनो दीक्षा समय जाणीने नंदीवर्ध्धन राजा दीक्षानो महोत्सव करवाने अर्थें प्रथमतो क्षत्रियकुंमपुर नगरने विषे ध्वजाउ बंधावी हाट शणगार्यां, घरघर तोरण बंधाव्यां एवीरीतें नगरशणगारीने पठी चोसठ इंद्र अजिषेक करवा आवे तेवारें देवोना प्रजावथी देवोयें करेला जे आठजातिना अजिषेक कलश ते कलश नंदीवर्ध्धन राजाना करावेला अजिषेक कलशमां प्रवेश करी मली जाय पठी नंदीवर्ध्धनराजा जगवानने पूर्व सन्मुख बेसाडीने देवतायें लावेला जलथी जगवानने अजिषेक करे तेवखतें इंद्रादिकदेवो सर्व जृंगार दर्पण हाथमां लइ जयजयशब्द कहेता थका आगल उजा रहे पठी जगवाननां शरीरने लूठी बावनाचंदने करी शरीर लेपे अमूल्य वस्त्र मुकुट, मोतीना हार, कंठसूत्र, केयूर, बाजुबंद, बहिरखा अने कुंमलादिक सर्व जातनां आजरण पहेरावे, पुष्पादिके करीने कल्पवृक्ष समान करे पठी नंदीवर्ध्धनना कहेवाथी अनेक सेवक पुरुष पच्चाशधनुष लांबी, पच्चीश धनुष पोहोली अनें ठत्रीश धनुष उंची मणिकनक रचित एवी एक चंद्रप्रजानामे पालखी बनावे तेमज देवता पण एवीज एक पालखी बनावे ते पालखी दिव्यानुजावे नंदीवर्ध्धनकृत पालखीमां प्रवेश करे पठी ते पालखी प्रज्जुना मुख आगल मूके प्रज्जुते पालखीमां पूर्व सन्मुख सिंहासनें आवीने बेसे अने जगवाननी जमणी बाजु कुलमा वडेरी कुलमहत्तरिका हंसलक्षण स्त्री साडीलेइने बेसे तथा माबी बाजु जगवाननी धाव्यमाता आवी दीक्षानां उपकरण लइने बेसे तथा जगवान

नी पछवाडे शोल शणगार पहेरीनें एक घणीज स्वरूपवान जली स्त्री छत्रधरीने बेसे तथा इशानकोणे एक स्त्री जलें पूरण कलश हाथमां लइ उन्नीरहे अग्नि कोणे एक स्त्री मणिमय विचित्र वींजणो करती उन्नीरहे,ए सर्व स्त्रीयो शणगार करेली युवान अवस्था वाली जाणवी तेवार पछी नंदीवर्द्धन राजानी आज्ञाथी एक हजार सेवक पुरुषो जेटलामां ते शिबिकाने उपाडे एटलामां ते वखतमां शक्रेंद्र ते पालखीनी जमणी बाजुनी आगली उपरली तरफनी बाहा उपाडे,तथा इशानेंद्र डाबी बाजुनी आगली उपरली बाहा उपाडे तथा चमरेंद्र जमणी बाजुनी पाछली तरफनी उपरली बाहा उपाडे तथा बलिंद्र डावी बाजुनी पाछली तरफनी उपरली बाहा उपाडे अने बीजा जवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी अने वैमानिक देवोना जे इंद्र छे ते जिहां देखे तिहांथी उपाडे, केटलाएक देवडुंजी वजावे, केटलाएक पंचवर्ण फूलनो वर्षात करे पछी शक्रेंद्र अने इशानेंद्र बाहने छोडीने चामर ढोले तेवारे शिबिकानें बीजा इंद्र उपाडे एम शिबिकाने प्रथमतो मनुष्य उपाडे पछी सुरेंद्र, असुरेंद्र, नागेंद्र उपाडे बीजा सर्वदेवो हर्ष पाम्या थका केटलाएक आकाशे रह्या थका नृत्यादिक करे आ ठेकाणे जेम वनखंड फूलें करी शोजे, जेम पद्मसरोवरमां शरदकालें कमल शोजे, तेम देवता आकाशें रह्या थका शोजे छे तथा जेम अलशीनुं वन, कणेरनुं वन, चंपानुंवन, फूलेकरी शोजे तेम क्षत्रिय कुंड नगरथी मांडीने देवताना जवन सुधी दवदेवीउंये करी आकाश संकीर्ण थयुंथकुं शोजे छे. प्रधान पडह जेरी झल्लरी डुंडुजी इत्यादिक कडोगमे वाजित्र आकाशें तथा धरतीयें वाजी रह्यां छे, घरना व्यापारधंधा मूकीने मनुष्यना वृंद जोवा मल्या छे, हवे पालखी चालतां देवदेवी तथा नर नारी पोतपोतानी खुशी प्रमाणे मनमां आवे तेवाप्रकारनां हर्षनां वाजां बजावे छे, गाय छे, नाचे

छे, फूल फल मोतीप्रमुखने वरसावे छे ॥ हवे वरघोडामां जगवाननी आगल अनुक्रमे सहुथी पहेलातो आठमंगल चाले, पछी पूरण कलश जृंगार चाले, पछी महोटी वैजयंति ध्वजा चाले, पछी छत्रधरचाले, पछी मणीपीठ सिंहासन चाले, पछी शणगारेला पण अस्वार विनाना एवा एकसोने आठ हाथी चाले, पछी एकसोने आठ घोडा चाले, पछी एकसोनें आठ शस्त्रे जरेला रथ चाले, पछी एकसोने आठ पुरुष चाले, पछी घोडा, हाथी, रथ अने पाला ए चार प्रकारनी सेना चाले, पछी एक हजार योजन उंचो अने न्हानी न्हानी एक हजार ध्वजायें मंमित एवो महेंद्रध्वज चाले, पछी कुंतग्रहा, बाणग्रहा, तीरग्रहा, गोफणग्रहा, हास्यकारिका, कर्मकारिका, वशकारिका, ज्ञानकारिका, विनोदकारिका, खड्गधर, धनुर्धर, एवा पुरुषो चाले, पछी पाटीया धरवावाला पुरुष चाले, पछी घणा चारण जीखारी मागता थका चाले, पछी घणा उग्र जोगकुलादिकना क्षत्रिय, मांमविक, कोमंबिक, शेठ, सेनापति, सार्थवाह, देव, देवी प्रजालोक चाले, जगवाननी पछवाडे घणी सेनायें परवस्यो थको, छत्र चामर धरावतो थको, घणा आमंबर सहित नंदीवर्द्धनराजा चाले, बीजा पण घणा लोक चाले, ते वखत अनेक प्रकारनां वाजां वाजे तेनो शब्द सांजलीने नगरनी स्त्रीयो पोतपोतानुं काम मूकीनें त्यां आवे ते केवी थकी आवे तोके? त्रणवातो स्त्रीयोने वल्लज छे एक ऊगडो, बीजुं काजल, त्रीजो सिंदूर वली त्रण वातो बीजी अत्यंत वल्लज छे एक दूध, बीजो जमाइ, अने त्रीजुं वाजुं यतः ॥ तिन्निवितियां वल्लहा, कलिकज्जल सिंदूर ॥ एपुण अतिहि वल्लहा, दूध जमांइ तूर ॥ १ ॥ ॥ माटे ते स्त्रीयो वाजानो शब्द सांजलीने उतावलथी आवीयो तेथी कोइएक स्त्रीतो काजल आंखमां आंजती हती ते आंखने बदले गालोमां लगावी दीधुं अने गालोमां कस्तुरी लगा

चित्र ३४



डवी ते आंखोमां आंजी दीधी, केटलिएक स्त्रीयो पगोमां झांझर पहेरवां नूलीगइ तेने बदले गलामां झणेणाट करतां झांझर पहेरी लीधां, केटलिएक स्त्रीयोये गलामां पेहेरवानां घरेणां ते पगमां पहेरी लीधां, केटलीएक स्त्रीयोये कटीमेखला गलामां पहेरी लीधी अने गलानो हार ते कटीमेखलाने स्थानके केडमां बांधी दीधो, केटलिक स्त्रीयोये चंदन घसीने पगे चोपड्युं अने अलतो मस्तकें चोपडी लीधो, केटलिएक स्त्रीयो अर्धुस्नान कर्युं न कर्युं एवी थकी दोडती आवी, कोइकतो घाघरा उंढीनें चालती आवी तेथी नीचेना नागमां नागीज दीसवा लागी, कोइक बीजी पारका पुरुषनी स्त्रीयोनां छोकरा ते नूलथी पोताना काखमां तेडीनें दोडी आवी, केटलिएक तो पोताना रडतां बालकने पडतां मूकी चाली आवी, केटलिएकें पहेरवानुं वस्त्र ताणी बांध्युं नही तेथी वायराने योगें ते वस्त्र उडीगयुं तेना योगें नववधू बालकुमारी सरखी दीसवा लागी, कोइएक स्त्रीये एक कानमां आनूषण पहेर्युं अने बीजा कानमां पहेरतां नूलीगइ, कोइएक स्त्री जमी तो रही पण चलु करवुं रहीगयुं, कोइक स्त्रीये एकज पगधोयो बीजो धोवो रहीगयो, कोइक कांचली पहेरतां वीसरीगइ एवी उतावलथी जोवा नीकली केटलिएक चावल उछाले छे, केटलिएक नाचे छे, एवा आडंबरथी नगवाननो दिक्षा महोत्सव थयो ते कया दिवसे थयो ते दिवस कहे छे. तेकालने विषे ते समयने विषे श्रमण नगवंत श्रीमहावीरस्वामी ते हेमंतऋतु एटले शीयालानी ऋतुनो पहेलो महीनो पहेलुं परववाडीयुं, मागशिरवदि दशमीने दिवसें दिवसनी पाछली छाया एटले पोरिसी दिन रहे एक पहोर दिवस रहे तेवारे तथा सुव्रतनामा दिवसनुं नाम ते दिवसने विषे, विजयमुहूर्त्त आवे थके, चंद्रप्रना नामा पालखीमां बेठा थका, जेनी आगल पाछल देवता अने

मनुष्य चाली रह्या छे, शंखना वजाववा वाला, सोनानां चक्रना धरवावाला, हलना धरवा वाला तथा मंगल शब्द बोलवावाला एवा भिक्षु प्रमुख चारण प्रमुख जाट प्रमुख तथा घंटाने वजाववा वाला तेमनो समुदाय ते सर्व आशीष आपे छे ॥११४॥ के हे समृद्धिवंत! तमारो जय जय होवो, हे कल्याणवंत! तमोने जद्र थाओ, तमारां ज्ञान, दर्शन अने चारित्र अतिचार रहित होवो, एमां जंग मथाजो, नही जीतवामां आवे एटले जीतवाने घणी कठण एवीजे इंद्रियो तेने तमे जीतो, साधुधर्म पालो, सर्वविघ्न रहित होवो, उग्रविहार करवामां तमारुं नाम थाओ, रागद्वेषरूप बे मल्लोने तमो हणो, तथा तपरूप धैर्य अने संतोष रूप लंगोटाने कसीने आठकर्मरूप शत्रुओनुं मर्दन करो, उत्तम शुक्लध्यानें करीने अप्रमत्तपणे रह्या थका विचरो, हे वीर! तमें आराधना पताका ग्रहण करो, त्रणलोकरूप रंग एटले मल्लनो अखाडो तेमां अंधकार रहित एवुं अनुपम केवलज्ञान, ते तमे पामो. मोक्षरूप परमपद पामवाने के वली जगवाने देखाड्यो जे सूधो मार्ग ते मार्गे तमे जाओ. केवीरीतें जाओ तोके? बावीश परिसह रूप फोजने हणीने जाओ, हे क्षत्रियोमां वृषभ समान, तमारो जय थाओ, घणादिवस, घणा पक्ष, घणामास घणावर्ष जय पामो वली बे पक्षनो एक मास, बेमासनी एकऋतु थाय, त्रण ऋतुयें एक अयन थाय अर्थात् छ मासें एक अयन थाय एवा घणा अयन लगें, वली बे अयनें एक वर्ष थाय छे, पांच वर्षनो एक संवत्सर थाय छे, एवा घणा संवत्सर पर्यंत परीसह तथा उपसर्गोथी मर नही राखो, वीजली सिंहादिकोना बीहामणा जय जैरवोने क्षमायें करीने सहन करो, तमोने धर्ममां कोइ विघ्न म करो, एवुं कहीने जय जय शब्द करे ॥११५॥ पछी जगवान श्रीमहावीर स्वामी दिक्षा लेवा नीकल्या ते वखत हजारो नेत्रोथी देखता थका

अर्थात् हजारो लोको देंखी रह्या छे, देखीदेंखीने हर्ष पामे छे, हजारो लोको वचने करी स्तव
ना करी रह्यां छे, हजारो लोकोना मनमां एवुं छे के घणा कालपर्यंत ए जीवता रहो, ह
जारो लोको विस्तारी विस्तारीने मनमां एवा मनोरथ करी रह्या छे के एं .तीर्थंकर थाशे तेवारे
एनी सेवा करीशुं, एमना कांति रूप गुण देंखीने लोको एवुं चिंतवन करे छे के ए अमारो
स्वामी थाउ, हजारो लोको पोताना जमणाहाथनी आंगुलीथी देंखाडी रह्या छे के ए नगवान
बिराज्या छे एवो कहेते थके, हजारो लोकोना एटले हजारो पुरुष हजारो स्त्रीयो अंजली सहित
हाथ जोडीजोडीने प्रणाम करे छे ते जमणा हाथें लेते थके, हजारो गमे घरोनी श्रेणी प्रत्यें उल्लं
घते थके, रूडा प्रकारें वीणा, हस्तताल, वाजित्र, गीत, शब्द ते मीग मनोहर जयजय शब्दनी
साथे मलेला एवा लोकोना स्वरें करीने सावधान होते थके, सर्व ऋधिसहित, सर्व आमंबर स
हित, सर्वबले सहित, सर्वसेना सहित, सर्ववाहन सहित, सर्वसमुदाय सहित, सर्वआदर सहित,
सर्वसंपदा सहित, सर्वउत्सव सहित, देखवाने मनमां आवें एवा सर्वमलाप सहित, सर्वलक्ष्मी
सहित, सर्वसंभ्रम सहित, सर्वनगरलोक सहित, सर्वनाटक सहित, सर्वतालेवर सहित, सर्वअं
तेउर सहित, सर्वपुष्प गंधमाला घरेणायें सुशोभित, सर्व वाजानां घोष सहित, महोटी ऋद्धि,
द्युति, बल, वाहन, समुदाय सहित, महोटा नलां वाजां समकाल वाजतां थकां, शंख ढोल,
पडह, जाल्लर, खरमुखी, हुंडुक्क, देवडुंडुनी प्रमुख वाजानां प्रतिशब्द सहित, क्षत्रियकुंडपुरन
गरनी वचमां थइने निकले, नीकली करीने जिहां ज्ञातपंडवन नामें उद्यान छे तिहां अशो
कवृक्ष घणुंज रूडुं छे, तिहां आवे ॥ ११६ ॥ ॥ आवीनें अशोकवरवृक्षनी नीचे पालखी
राखे, राखीने पालखीथी उतरे उतरीनें पोतानां हाथथीज घरेणां माला प्रमुख अलंकारादि

उतारे, उतारीने ते घरेणां जे तेमनां कुलमां वडेरी हंसलक्षण स्त्रीते पोताना वस्त्रमां लीये, पछी पोतानां हाथथीज पंचमुष्टि लोच करे ते केश इंद्रमहाराज पोते लइजइने खीरसमुद्रमां मूके. लोचकरीने चउविहारी छठ एटले बेलानी तपस्या करे, उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रनी साथें चंद्रमानुं योग आवे थके एकज शक्रेंद्रे आपेला देवदुष्य वस्त्र लइने, एकला रागद्वेष रहित तथा साधुना सथवारा रहित थका द्रव्यथी अने भावथी मुंडित थइने, गृहस्थपणानो त्याग करीने अणगारपणानो अंगीकार कर्यो ॥ ११७ ॥ ॥ हवे जे वखतें भगवान सामायिकनो उच्चार करे ते वखतें शक्रेंद्र सर्व कोलाहल वाजित्र प्रमुख बंध करे. पछी भगवान् नमोसिद्धाणं एवुं कहीनें करेमिसामाइयं इत्यादि यावत्तस्सपडिक्कमामि इत्यादिक कहे इहां बीजो गुरु करवानो अभाव छे पोते स्वयं चारित्र लीये छे माटे भंते ए पद कहे नही तीर्थंकरनो एवोज कल्प छे, ते माटे भंते पद न कहे, इहां भगवानने चोथुं मनःपर्यवज्ञान उपन्युं हवे सर्व इंद्र तथा देवो ते भगवाननें नमस्कार करीनें नंदीश्वरद्वीपे जइ अठाइ महोत्सव करीनें पोत पोतानें स्थानके गया, अने भगवाने पण पोताना भाइ नंदीवर्द्धन प्रमुखने पूछीने विहार कर्यो हवे स्वजनादिको पण ज्यांसुधी भगवान नजरे देखाता हता त्यांसुधी त्यांज उभारह्या पछी भगवानना गुण याद करता फूरता फूरता पोताने घेर आव्या ॥ इति कल्पव्याख्याने पंचमो वखाण समाप्त ॥ ॥ हवे भगवाने दीक्षा लइने पछी विहार कर्यो ते वखतमां बे घडी दिवस शेष बाकी रह्यो हतो तेवारे भगवान कुमारगामनी बाहेर काउस्सग्ग रह्या ते वखत एक हाली आव्यो तेणे पोताना बलदो भगवानने भलाव्या अने पोतें घेर जइ जमीनें केट लिएक वार रही पाछो तिहां आव्यो एटलामां आखो दिवस खेडवाथी थाकी गयेला बल


चित्र ३५
इन्द्र
भगवान्
नंदीवर्धन राजा
रा.


चित्र ३६
भगवान्
सिद्धार्थव्यंतर
बलदो

दीया तो वनमां चरता चरता क्यांय चाल्या गया पछी हालीये इहां तिहां घणा जोया पण बलद मल्या नही तेवारे जगवानने पूछवा लाग्यो के बलद क्यां गया ते वखत जगवान मौन रह्या थका कांइपण बोल्या नही पछी ते हालीयें वनमां जइ आखीरात्रि बलदोने शोध्या परंतु तेने बलद जड्या नही अने बलदतो वनमां चरीचरीने पाछली रात्रें पोतानी मेले त्यांज आवी बेशी रह्या हालीपण पाछो आवीने जूएछे तो बलद त्यांज बेठा छे ते देखीनें क्रोध पाम्यो थको बोलवा लाग्यो के हे पापी! हे पाखंमी! आ बलद तेंज संताडी मूक्या हता ए बधुं ताहारुंज काम करेलुं देखाय छे मने आखी रात्रि निरर्थक जमवुं पड्युं एम कही हाथमां रासडी लइने जगवानने मारवा दोड्यो ते वखतमां इंद्रमहाराजें पण अवधिज्ञाने करी जगवानने थतुं उपसर्ग जाण्युं अने पोते तिहां आवीने हालीने कहेवा लाग्यो के अरे दुष्ट! तुं जाणतो नथी के आ श्रीवर्द्धमान स्वामी नंदीवर्द्धनराजाना नाइ छे, सिद्धार्थराजाना पुत्र छे एणे दीक्षा लीधेली छे एमकहीने हालीने हलकारी काहाड्यो पछी इंद्रमहाराजे जगवानने कह्युं के हे जगवान! आपने बारवर्ष पर्यंत छद्मस्थपणुं छे तेमां उपसर्ग घणा थवाना छे माटे आप आज्ञा करो तो हुं आपनी पासें हरहमेश रहुं अने आपनी सेवा करुं तथा उपसर्ग निवर्त्तन करुं एवो महारा मननो मनोरथ छे तेवारें जगवान बोल्या हे इंद्र! आ वात थई नथी थातीनथी अने थाशे पण नही जे श्रीअरिहंत जगवंत इंद्रना सहायथी केवलज्ञान उपजावीने मोक्ष जाय? अरिहंततो पोतानाज उठाणकर्म बलवीर्यथीज केवलज्ञान पामीनें मोक्ष जाय एवुं सांजल्युं तोपण इंद्रे मरणांतिक उपसर्ग टालवा सारुं जगवाननी माता त्रिशलादेवीनां बहेनना पुत्र सिद्धार्थनामे विंतर तेने आज्ञा आपीने जगवान पासे मूकी गयो आंही सिद्धार्थविं

तरने मासीनो दीकरो कह्यो पण कोइक स्थानके एने काको करी पण लखेलो छे पछी इंद्रमहा
राज देवलोके गयो अने हालीपण पोताने घेर गयो ॥ इतिहालीकृत उपसर्ग ॥ हवे प्रजातमां
जगवान तिहांथी विहार करीनें कोल्लाग सन्निवेशें गया तिहां बहुलनामे ब्राह्मणने घरे कांस्य
पात्रें खीरलइने प्रजुयें परमान्ने पारणुं कीधुं पात्र धर्म बताववा सारुं गृहस्थनां कांस्य पात्रमां
खीर लीधी तिहां पांचदिव्य प्रगट थाय ए जगवंतनो अतिशय छे ते पांचदिव्य कहे छे. एकतो
आकाशमां ध्वजा विस्तार देवता करे, बीजो सुगंधि जलदेवता वर्षावे, त्रीजो फूल वर्षावे, ४ चोथो
देवडुंडुजी वजावे, पांचमो अहोदानमहोदान एवो ध्वनि करे, प्रकारांतरें क्यांएकतो साडीबार
क्रोड सोनैया वरसावे एवा पाठ पांचमां दिव्य विषे लखेला छे. इहांपण कोइक आचार्यना मतें
पांचमुं वखाण पुरुंथयुं कहेवाय छे ॥ ॥ हवे प्रजुयें जेवारें दीक्षा लीधी, तेवारें इंद्रादिकोयें सुगं
धितबावना चंदनादिकें करी जगवंतने शरीरें लेप कर्यो छे, तेनो गंध, चार मास जाजेरा पर्यंत
न जाय, ते वासनायें करी हजारो गमे जमरादिक मदोन्मत्त थया थका जगवंतना अंगोपां
गने वेधे छे, महोटो उपड्व करे छे कोनी पेरें तो के ? जेम कामी पुरुष कामांध थया थका
स्त्रीने आलिंगन देता तेना गलस्थल होठादिकने विषे अनुकूल पणे चुंबन करे, फंख मारे तेम
जमरापण वासनायें अंधधुंध थया थका, जगवंतना शरीरना अवयवें फंकमारे छे. ए दृष्टांत कह्युं
पण अहींआं एटलो फेर छे, जे स्त्री तो कामी पुरुषथी हारी जाय, परंतु जगवान् तो जम
रानो एटलो बधो उपड्व छतां पण वज्रऋषजनाराच संघयणना प्रतापथी मेरुनी पेरें अफग
रहे छे. अथवा बीजे अर्थें अजाण्या कामी पुरुष, गंध उपर मूर्छा पाम्या थका गंध लेवाने
अर्थें. जगवाननां शरीर साथें पोतानुं शरीर घसवा लाग्या तथा कामी स्त्रीयो आवीने आलिं

गन करवा लागी एम नगवान पासेंथी सुगंध मागवा लागा एवो उपसर्ग चार महीना जाजेरा रह्यो तोपण नगवान मग्या नहीं मेरुनी पेरे अकंप रह्या ॥ ॥ हवे नगवान तिहांथी विचरता मोराक सन्निवेशने विषे सिद्धार्थराजा प्रजुना पिता तेनो मित्र कुलपति, दुईजंत नामा तापसने आश्रमें आव्या, तापस पण नगवानने देखी सामो मलवा आव्यो, तेने नग वंत पण ढूंकडा पूर्वपरिचयान्यास थकी हाथ पसारीने मल्या, पढी तेना आग्रहथकी नीराग चित्तथका एक रात्रि तिहां रह्या, फरी प्रनातें विहार करवा लागा, तेवारें ते तापस, प्रहोंचा डवा साथें चाल्यो अने आठ मास अन्यत्र विहार करीने चोमासुं पोताना आश्रमें रहेवानी प्रजुने विनंति करी, घणो आग्रह कस्यो तेवारें प्रजुयें देशकाल विचारीने कह्युं के एमज थाउ एवुं कही पढी चार ज्ञानें सहित एवा प्रजु ते पृथिवीने विषे विहार करतां जेवारें चोमासुं आव्युं तेवारे ते तापसनी फुंपडीमां रहेवाने आव्या कुलपतियें तृणषलानुं फुंपडुं प्रजुने रहेवा सारु आप्युं नगवान तेमां रह्या पण दैवयोगें वर्षाद न थयो तेवारें गामनी गायो प्रमुख ढोर नूखें मरतां थकां फूंपडीना तृणखलां खावा आवे ते जोइ बीजा तापसो तो पशुना समूहने हांकी काढे पण प्रजुतो मौन पणे रहे कोइ जानवरने तृणखलां खातां दूर करे नहीं, एम करतां सर्व तृण पशुउं खाइ गयां तेवारें फुंपडुं उघाडुं देखी कुलपति बोल्यो कें हे देवाणुप्रिया हे प्रजु ! पंखीउं पण पोताना माला साचवे ढे अने तमे तो राजपुत्र थइ पोतानो आश्रम केम सां चवी शकता नथी ? एवी रीतें कुलपतिने अप्रीति उपनी देखी नगवाने निर्धास्युं जे महारे अहीं आं रहेवुं नहीं, पढो आशाढी पूनेमथकी पंदर दिवसें एटले श्रावण वदि अमावास्यायें चो मासाना पन्नर दिवस जातां प्रजुयें तिहांथी विहार कस्यो तेथी उपज्या नगवंतने न गणे

चोमासुं एवुं कहेवाणुं तिहां नगवंतें पांच अनिग्रह लीधा, ते कहे ने. एक अप्रीति उपजे तिहां न रहेवुं. बीजुं ज्यांसुधी बद्मस्थपणुं ने त्यांसुधी निरंतर काउस्सग्गमांज रहेवुं, त्रीजुं गृहस्थनो विनय न करवो, चोथुं यथा संनवें मौन पणे रहेवुं, कायायें करीउंचु उनाउन रहेवुं पण सुवुं नही पांचमुं सर्वदा हाथमां नोजन करवुं, एवा अनिग्रह सहित विचरतां थकां शूलपाणि यक्तने देहरे अस्थियग्रामे प्रथम चोमासुं रहेवा पधास्या. त्यां अत्यंत उपसर्ग सहन करीने शूलपाणि यक्तने प्रति बोध्यो, तेनी कथा कहे ने. धनदेव नामें सार्थवाह पांचशें गाडां मालनां नरी, व्यापार करवा कोइ गामांतरे जतो हतो, मार्गमां वेगवती नामे बहुवालुका नदी वर्द्धमान गामपासे आवी, तिहां उनालाना दिवस हता तेथी कोइ बलद ते रेती नरेली नदी मांथी गाडुं ताणीने चाली शके नहीं पण ते बलदोमां एक बलद घणो जोरावर हतो तेणे ते पांचशें गाडां नदीथकी उतारी पहेले पार कस्यां, परंतु पोते त्रुटी पड्यो, तेथी चाली न शक्यो ते वारें सार्थवाहें चारा पाणीने अर्थें वर्द्धमान गामना अधिकारि शेठ, पटेल, गामोद, पटवारी, प्रमुख पंचने ते धोरी नलाव्यो. तेने घृत गोल तृण जलादिक सारु घणुं धन आप्युं, वली ते बलदनी चाकरी करवानी घणी नलामण आपीने शेठ तिहांथी चाल्यो गयो. पबवाडेथी ते गामना लोकोयें ते बलदनी सार संनाल कांइ पण कीधी नही, शेठनुं धन आपेलुं सर्व वांटीने खाइ गया. पबी ते बलद नूख तृषायें पीड्यो थको अकाम निर्ज्जरायें मरण पामीने व्यंतर देवोमां शूलपाणीनामे यक्त थयो, तेणें अवधिज्ञानें पाबलुं वृत्तांत जोयुं, पबी गामनां लोको उपर रूगेथको मरकी विकूर्वी तेथी घणां माणस अनें ढोर मरवा लाग्यां तिहां कोइ माणसने बालवावालो पण मले नही जे कोइ मरे तेने कोलो गामनी बाहेर नाखी जाय तेथी त्यां हाडकांना ढगलां थइ पड्या तिहां आवजाव


चित्र ३७
शूलपाणी यक्ष
सिद्धार्थ व्यंतर
भगवान्
पूजक

करनारा लोकोयें तेनुं अस्थिगाम एवुं नाम पाडी दीधुं पछी घणा माणसोने मरता देखीने गामनां लोकें मली तेने आराध्यो तेवारें यक्ष प्रगट थइ आकाश वाणीयें करी बोलवा लाग्यो के हुं बलदनो जीव छुं, तमें महारुं द्रव्यखाइने कांइपण चाकरी करी नही तेथी तमे मने कुमरणें मार्यो छे माटे हुं कोप्यो छुं तो तमें हवे महारा नामनुं हाडका उपर देहेरुं करावो, तेमां वृषजना रूपें शूलशस्त्र हाथमां आपीने महारी मूर्त्ति थापो, तेनी पूजा करो तो रोग पण मटशे, अने जीवता पण रहेशो नहीकां सर्व मरण पामशो एवी वात सांजलीने लोकोयें म रण जयथी तेनी प्रतिमां करी दहेरे थापी पूजा करी, तेथी मरकी उपशम थइ. हवे जगवान् ते शूलपाणी नामा यक्षने प्रति बोधवाने माटे तेने देहेरे आव्या, तेवारें ते यक्ष महादुष्ट छे, कोइने पोताना देहेरे रात्रें वास करवा आपे नहीं, तेथी ते यक्षना देरानो पूजारो इंद्रशर्मा नामें विप्र हतो, तेणें जगवंतने रहेवानी मनाइ करी, तेम बीजा लोकोयें पण वार्या, तो पण प्रभु मौनपणे तिहां रात्रें काउस्सग रह्या, ते देखीने यक्ष रूठो अने संध्या समयथी उपसर्ग करवा लागो, तिहां प्रथम तो मरावा सारुं अट्टहास्य कर्युं, पछी हस्तीनुं रूप करी उछाल्युं, पिशा चनां रूप करी छरी कहाडी बीवराव्युं, तेमज सर्प्प थइने मंक मार्यो इत्यादि घणा उपसर्ग क रवा मांम्या पण जगवंत लगार मात्र क्षोज न पाम्या तेवारें वली मस्तक, कान, नासिका, आंख, दांत, होठ, पूठ, नख, ए आठ स्थानकें विविध वेदना उपजावी. तथापि जगवंतने अ क्षोज जाणी, यक्ष प्रतिबोध पाम्यो अने प्रजुनी जक्ति करवा लाग्यो, एटलामां सिद्धार्थ व्यंतर आव्यो, तेणें कह्युं के अरे शूलपाणि यक्ष ! आ तें शुं कर्युं ? तुं नथी जाणतो के ए सिद्धार्थ राजानो पुत्र छे, महोटी समतानो जंमार छे, जो इंद्रमहाराज जाणशे, तो तने बाहिर काढी

मूकशे, ते सांजली जगवाननी शांतमुद्रा देखी वली पण यक्षें पोतानो अपराध खमाव्यो अने प्रज्ञु आगल गीत गान करवा लागो तिहां ते यक्ष समकेत पाम्यो इति ॥ हवे जगवंत पण रात्रिना चार प्रहर कदर्थना पाम्या तेना श्रमें करी काउस्सग्गमांज पाछली रात्रें बे घडी निद्रा आवी गई, तिहां निद्रामां दश स्वप्न प्रज्ञुयें दीठां, ते कहे छे. एक तालपिशाच हण्यो, बीजुं उजलो कोकिला पक्षी अने त्रीजुं पंचवर्ण विचित्र कोकिलानुं जोडुं, सेवा करतुं दीठुं, चोथी फूलनी माला बे दीठी, पांचमुं गायनो वर्ग दीठो, छठुं पद्मसरोवर दीठुं, सातमुं समुद्र जुजायें तर्यो दीठो, आठमुं सूर्य उगतो दीठो, नवमुं आंत्रडे वींट्यो मानुष्योत्तर पर्वत दीठो, दशमुं पोते मेरुपर्वतें चढ्या एवुं दीठुं, ए दश स्वप्न देखीने जगवंत प्रजातें जाग्या, ते वखतें लोक पण एवुं जाणताहता जे ए साधु रात्रें मरीजशे. तेथी प्रजातना जोवा आव्या तिहां जगवाननो देव महिमा देखीने लोकोयें जगवंतने पूज्या, घणां हर्ष पाम्यां, यक्ष पण नाटकादिक पूजा सेवा करतो हवो, तेथी लोक चिंतववा लागा जे साधुने उपसर्ग करी हवे गीत गान करे छे, पुष्पादिकें करी पूजे छे. त्यां लोके पण स्वामीनो घणो महिमा कर्यो, एवा समयने विषे श्रीपार्श्वनाथनो श्रावक उत्पलनामा निमित्तियो ते पण तिहां आव्यो प्रज्ञुने वांद्या, अने कहेवा लागो जे हे स्वामि! तुमें पाछली रात्रें स्वप्न दीठां तेनुं फल कहुं छुं ॥ हे प्रज्ञु! तमें जे ताल पिशाच हण्यो, तेथी तमें तरत मोहनीय कर्मने हणशो. वली श्वेत कोकिलापंखी दीठो, तेथी अक्षोन शुकलध्यान ध्यावशो. पांचवर्णा विचित्र कोकिल पंखीनुं जोडलुं दीठुं, तेथी द्वादशांगी प्ररूपशो तथा गायनो वर्ग दीठो तेथी अनुपम चतुर्विध संघनी थापना करशो वली तमें देवतायें सेवित पद्मसरोवर दीठुं, तेथी च्यार निकायना देवता तमारी सेवा करशे. वली मेरुपर्वतनी चूलिका उपर

तमे चढया एवुं दीठुं, तेथी तमें देवोयें रचित सिंहासने बेशी, धर्मोपदेश देशो, धर्मनी प्ररूपणा करशो वली सूर्यनुं मंम्ल दीठुं, तेथी केवलज्ञान पामशो,तथा मानुष्योत्तर पर्वत आंत्रडे वींट्यो दीठो, तेथी जगत्मां जशकीर्त्तिनुं मंम्राण पामशो तथा प्रतापवंत देवनिकाये करी सेवनीय थाशो. पोतानी ज्जुजाबलें समुद्र तस्यो दीठो तेथी तमे संसार रूप समुद्रने तरशो, हे जगवन् ! तमें फूलनी मालानुं युगल दीठुं तेनो अर्थ हुं नथी जाणतो माटे तमेज उपकार करीने कहो तेवारें जगवंत मौन ठे माटें ठद्मस्थावस्थाने विषे बोल्या नहीं,तेथी सिद्धार्थ व्यंतरो जगवानना मुखमां प्रवेश करीने कहेवा लागो के फूलनी बे माला दीठी माटें श्रावकनो अने यतिनो ए बें प्रकारना धर्मनी प्ररूपणा हुं करीश एवीरीतें फल सांजलीने सर्वलोक जगवानने वंदन करी पोतपोताने स्थानके गया हवे जगवाने निरविघ्न पणे पन्नरदिवस न्यून प्रथम चोमासुं तिहां पूर्ण करीने मेरुनी परे धैर्य धरता समता रूप रसमयथकां चोमासीपारणुकरी तिहांथी विहार कस्यो ए प्रथम चोमासुं ॥१॥ तिहांथी विहार करी मोराकसन्निवेशें उद्यानमांआवी काउस्सग्गें रह्या तिहां जगवाननो महिमाकरवा सारुं सिद्धार्थ व्यंतरो स्वामीना शरीरमां संक्रमीने लोक आगल जूत, जविष्य अने वर्त्तमान संबंधि निमित्त जांखें ठे तेथी त्यांनां लोक जगवाननी सेवा करवा लागा हवें ते गाममां अहछंदक नामा निमित्तियो रहे ठे ते जगवाननी इर्ष्या करवा लाग्यो केमके लोक तेने कहेवा लागा के देवार्य सरखो तुं निमित्त जाणतो नथी में काले खेत्रमां सर्प्प दीठो ते तेणे कही दीधो तथा हुं जमीने गयो हतो ते कही दीधुं तेवारें ते अहछंदक नामा निमित्तियो क्रोधकरी जगवाननुं निमित्त जूठुं करवा सारुं हाथमां तृण लइने प्रजुने पूठवा लागो के हे आर्य आ तृण ठेदाशे, किंवा नहीं, ते सांजली सिद्धार्थें ना कही तेवारें

ते छेदवा लागो एटलामां इंद्रे अवधियें जोइने जगवंतनो महिमा राखवाने ते निमित्तिआनी आंगली छेदी नाखी तेथी तृणत्रुट्युं नही निमित्तिउ विलखो थयो पछी सिद्धार्थें लोक आगल कह्युं के ए निमित्तिउ चोर छे, कांइ जण्योनथी एणें वीराघोष कर्मकरनो दश पलनो कांसानो पात्र चोरीने खजुरीनावृक्ष हेठे माव्यो छे तथा इंद्रशर्मा ब्राह्मणनो बोकडो मारीने तेनुं मांस एणे खाधुं छे, तेनां अस्थि एना घरनी पछवाडे बोरडीनाझाड नीचें माव्यां छे तथा त्रीजुं दूषण जे एमां छे ते हुं नही कहीश एनी स्त्रीज केहेशे एवुं सांजली लोकें सर्ववातसाची मानी एनी स्त्रीने जइ पूछ्युं, तेवारें ते स्त्री बोली के ए पापिष्ट, पोतानी जगिनीने जोगवे छे, एवी पोतानी निंदानी वातो प्रसिद्ध थंयाथी अहछंदक लज्जापाम्यो अने गाममां फिट फिट थयो थको प्रजुपासें आवी विनंति करी के तमें त्रैलोक्य पूजनीक छो, हुं अहींआंज सुखे उदर पूरणा करुं छुं ने जीवुं छुं जगवंतें अप्रीति जाणी त्यांथी विहार कर्यो ॥ ॥ हवे जगवान श्रीमहावीर स्वामी एक वर्ष उपर एक महीना सुधीतो इंद्रे आपेला देवदुष्य वस्त्र सहित रह्या अने ते वार पछी वस्त्र रहित अचेलक थया हाथमां जोजन करे पण अतिशयना योगथी नागा देखाय नही हवे वस्त्र रहित शीरीतें थया ते कहे छे. जगवाने जेवारें वरसीदान दीधुं तेंवारें सिद्धार्थराजानो मित्र सोमदेव नामा ब्राह्मण जन्मथी दारिद्रीछे ते परदेश धनकमाववा गयो हतो पण क्यांयें धन पाम्यो नही तेवारे वली जगवाने दीक्षा लीधा पछी जेवो गयो तेवो गले हाथे पाछो पोतानें घेर फरी आव्यो पण एक कोडी मात्र कमाइ आव्यो नही दारिद्रीज रह्यो तेवारें तेनी स्त्रीयें तेने घणो निर्भ्रंछ्यो अने कहेवा लागी के अरे निर्जाग्य तुं किहां गयो हतो तुं जिहां गयो हतो तिहां आवोनें आवो दारिद्री रह्यो जेम घडो जिहां जाय

तिहां पाणीजरे तथा कपासीयो जिहां जाय तिहां लोढाय तेम तुं पण जिहां गयो तिहां दरिद्री रह्यो पण दारिद्र्य ताहारो केडो मूकतुं नथी जेम कोइ दरिद्री पुरुष धन कमावानें अर्थें परदेशे जवा तैयार थयो तेवारें ते पुरुषें दारिद्र्यने कह्युं के ॥ रे दालिद्दवियरकणा, वत्ता इक सुणिय, हम देसांतर चल्लिया, तुं घर घरें रहिज्ज ॥१॥ एटले हे दारिद्र्य हे विचक्षण, तुं एक महारी वात कहुं ते सांजल जे हवे हुं देशांतर जाउं बुं अने तुं घरमांज थिरथइ रहेजे एवां तेना वचन सांजली दारिद्र्य बोल्युं ॥ पडिवन्नो गिरुआ तणो, अविहड जाण सुजाण ॥ पागं तरें ॥ पालिज्जइ सुविहाण ॥ तमे देसांतर चल्लिया, तो अमे आगेवान ॥ १ ॥ अर्थः—हे जाइ सांजलो हुं तो महोटानो विनय मूकुं नही केमके जे उत्तमपुरुष अंगीकार करे ते अविचल जाव जीव अंगीकार करे तेमाटे हे जाइ! जो तमे देशांतर जाशो तो हुं पण आगेवान थइने तमारी साथें आगलनुं आगल चालुं बुं. तेम हे निर्जाग्य! ताहारी पठवाडे पण एमज दारिद्र्य रहे बे तुं हमणाघरमां आव्यो बो पण घरमां तो कांइ पण नथी, खावाने अन्न नथी, पीवाने पाणी नथी, जुखे मरती बेठी बुं, क्यांथी ताहारा वास्ते खावा सारुं लइ आवुं, घरमां तो शाकमां नाख वाने मिरची अने मीठुं पण नथी, मात्र दारिद्रज लहेरो ले बे ॥ यतः ॥ जिणघर जेंस न रीके पाडो, जिणघर बलद न दीसे गाडो ॥ जिणघर नारि न चूडी खलके, तिणघर दारिद्र ले हेरि लहके ॥ १ ॥ ॥ अर्थः— जेना घरमां जेंस सहित पाडो रीकतो न होय, वली जेना घरमां बलद अने गाडु दीसतुं न होय, वली जेनां घरमां स्त्रीना हाथमां चूडी खलकती न होय, तेना घरमां दारिद्र लहेरें लहकतुं जाणवुं. ते माटे तुं घरमां आवीश नही आवीश तो जूखे मरीश अरे दारिद्री हजी हमणा पण तुं जगवान पासें जइश तो कांइक पण मलशे

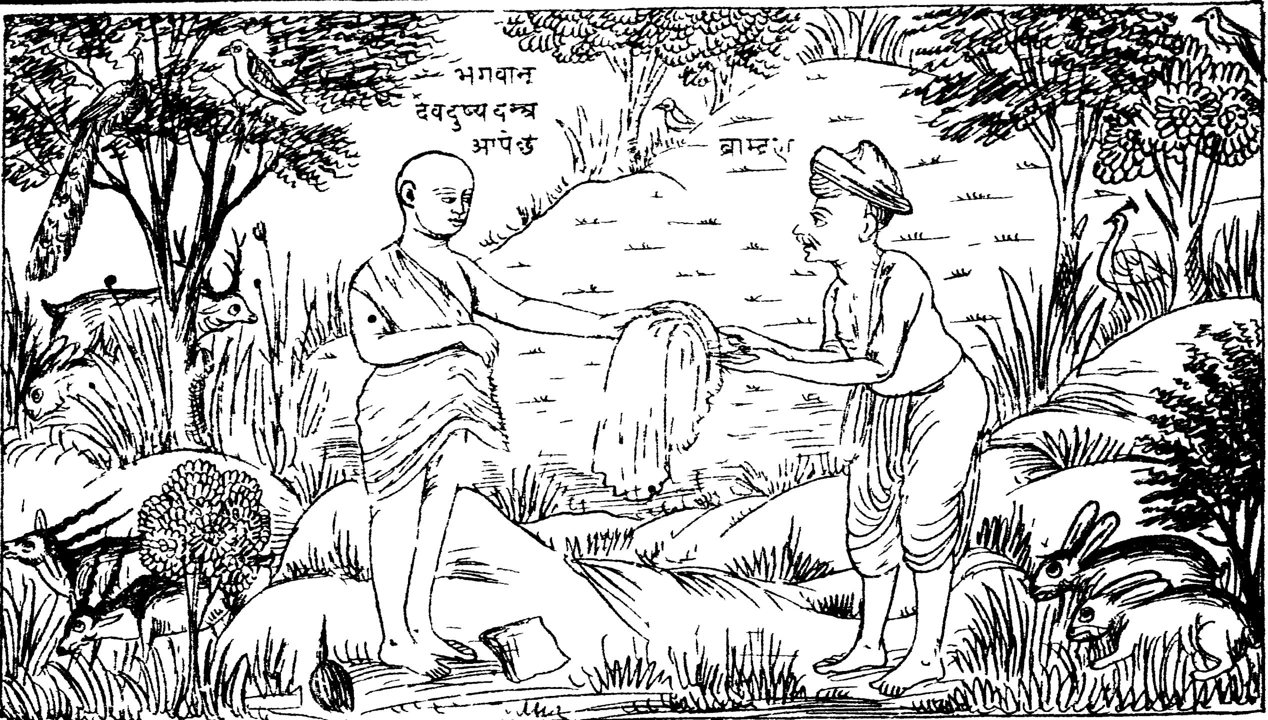
एवां स्त्रीनां वचन सांजली ते ब्राह्मण, जगवान पासें आव्यो अने बे हाथजोडी दीनस्थितियें थको दीन वचने करी श्रीवीरजगवाननें पगे लागीने विनंति करतो हवो के हे कृपानाथ,! हे परडुःखजंजक! हे परमार्थना करनार! हे महारामित्रना पुत्र! हे दारिद्र्य रूपवेलडीनां बेदक! तुं महारी मूलथकी विनंति सांजलीने महारो निस्तार कर, आ महारो दारिद्ररूप बांधव, महारो सहायी, महारी सायें जन्म्यो, महारी सायें वध्यो, वली परणवानें समयें पण महारा पहेलां महारी स्त्रीनें एणे परणी, शुं घणुं तमारा आगल कहुं ए दारिद्र्य महारा शरीरनी बायानी पेरे तथा पोतानी बांधेली कर्मप्रकृतिनी पेरें एक क्षण मात्र पण महारो केड मूकतुं नथी में धन उपार्जन करवा निमित्तें परदेश चालवानें समयें एने घणो घणो वर्ज्यो तो पण ए महारी सायेंज चाल्यो, में गंगामां स्नान कर्युं तो पण एणे महारी सायेंज स्नान कर्युं, में यमुना, नर्मदा संबंधि तीर्थकर्यां तो एणे पण महारी सायेंज तीर्थकर्यां, माटे एना प्रजावथी परदेशमां घरघरने विषे लोकोनी आगल जिक्षा मागती वखत हुं तो सर्वने देखुं परंतु दारिद्र्य बांधवना प्रतापथी हुं प्रत्यक्ष प्रगट बतां पण मने कोइ पण देखे नही ॥ यडुक्तं ॥ दीसंतिजोग सिद्धा, अंजनसिद्धा य केइ दीसंति ॥ दारिद्दजोग सिद्धा, पासेविठिया न दीसंति ॥ १ ॥ पुनरपि ॥ जोदारिद्र्यनमस्तुन्यं, सिद्धोहंतवदर्शनात् ॥ अहंसर्वंप्रपश्यामि, नमांपश्यति कश्चन ॥२॥ ए बे श्लोकोनो जावार्थ कहे बे जें योगसाधीने सिद्धथया तेपण नजरे देखाय बे, वली जे आंखोमां अंजन करी अदृश्य थाय एवा सिद्ध जे होय तेपण कोइएक प्रयोगथी प्रगट नजरे देखाय, परंतु दारिद्र्यरूप योगें करीने जे सिद्धथया ते पुरुष जो पासें उन्नारह्या होय तो पण देखाय नही ते माटे हे दारिद्र्य! तुजने नमस्कार थाउ जे हुं ताहारा दर्शनथी सिद्धपुरुष

थयो तेथी हुंतो सर्वेने देखुं छुं पण मनेंतो कोइ पण देखतो नथी ॥ २ ॥ ए कारण माटे हे स्वामी! ते दारिद्र्य बांधवना प्रसादथी हुं परदेशने विषे घणो नम्यो, घणो उद्यम कर्यो, घणा शेठ साहुकारोनी चाकरी करी पण, हुं भाग्य हीन तेथी एक फूटी कोडी मात्र पण धन पाम्यो नही. जेवो घरथी गयो हतो तेवोज घेर पाछो आव्यो तेथी में हजी म्हारा घरमां प्रवेश न कर्यो तेनी पहेलांज तेणे माहारा घरमां प्रवेश कर्यो तेना प्रतापथी अनार्जणी एवी जे म्हारी स्त्री ते क्रोध करी मुसललेइने म्हारी सन्मुख मने मारवाने छोडी आवी तेवारे में जाण्युंजे मंगलिक करीने मुजने वधावे छे पण तेणेतो पासें आवीने एवां कठोर अने निष्ठुर वचन बोलवा मांड्यां अने कह्युंके हे निर्भाग्य शिरोमणी! अरे जन्मदरिद्री अरे निर्गुणनाथ! अरे ढोलण! हुं तुजने धनविना साक्षात् दारिद्री रूपनें शुंकरुं! तुं परदेशें गयो थको पण कांइ लाव्यो नही. म्हारे पण ताहारा दारिद्र्य रूप भाइनां सहायथी ॥ यतः ॥ अन्नंनास्त्युदकंनास्ति, गृहे नास्ति युगंधरौ ॥ शाकमध्येलवणंनास्ति, तन्नास्तियत्तुभुज्यतें ॥ १ ॥ भावार्थः— स्त्री कहे छे के ताहारा बांधवना सहायथी महाराघरमां अन्नपण खावाने नथी अने पाणीपण पीवाने नथी, जुवार पण नथी शाकमां नाखवानें मीठुं पण नथी एवुं कांइ पण घरमां नथी के जेथी तुजने आदरकरी घरमां बेसाडीने जमाडुं महाराघरमां तो एक दारिद्र्य लहके छे. वली ब्राह्मणी कहे छे रे ढोला, धनेकरीने जगतमां मानीता थाय छे, पण धनविना जगतमां कोइ कोइने पूछतुं नथी, यदुक्तं ॥ धनैर्दुष्कुलीनाः कुलीनाभवंति, धनैरेवपापात्पुन र्निस्तरंति ॥ धनिभ्यो विशिष्टोन लोकेपिकश्चित् धन प्रार्जयध्वंधनं प्रार्जयध्वं ॥ १ ॥ भावार्थः— धनेकरीने हीणाकुलवालो पण उत्तम कुलवान कहेवाय, वली धनेकरीनें पापथकी निस्तार पामे, धन

वान होय तेज जगतमां महोटो कहेवाय, ते कारण माटें धनउपार्जन करवानो उद्यम पुरुषने श्रेष्ट छे वली धनविना जीवतो थको पण पुरुष मडदा समान छे ॥ यदुक्तं ॥ धनमार्जय काकुस्थ, धनमूलमिदं जगत् ॥ अंतरंनैवपश्यामि, निर्धनस्य मृतस्यच ॥ १ ॥ भावार्थः— जेवारें रामचंद्रजीने वनवास थयो तेवारें विचार्युं जे वसिष्ट रुषिने नमस्कार करीने चालीये तेवारे जिहां कदलीवनमां वसिष्ट रुषि बेठा छे तिहां जइ रामचंद्रजीयें नमस्कार कर्यो परंतु वसिष्ट रुषियें नेत्र उघाडीनें सामुं पण जोयुं नही कारण के रामचंद्रजीनी पासें ते वखत धनकांइ पण न हतुं पछी जेवारें लंकाजीतीने चतुरंगिणी सेना लइ धनधान्य सहित पाछा आव्या ते वखत वसिष्ठ रुषि सात आठ पगलां सामा चाली आव्या तेवारे रामचंद्रजी बोल्या के तेहज हुं रामचंद्र छुं अने आ तेनुं तेज कदलीवन तथा तमे वसिष्टरुषि पण तेना तेज छो परंतु पहेला हुं तमारी पासें आव्यो हतो तेवारें तो तमे नेत्र उघाडीनें सामुं पण जोयुं न हतुं अने हमणा उठीने सात आठ पगलां सामा आव्या तेनुं शुं कारण? तेवारें वसिष्ठजी पूर्वोक्त श्लोक कहेता हवा के हे काकुस्थ,! हे रामचंद्र! एक धननुं उपार्जन करो, आ जगतमां धनेकरीनेंज प्राणी शोभे छे, परंतु निर्धनने अने मडदाने कांइपण अंतर देखातुं नथी, ते कारणें तुं प्रथम आव्यो हतो तेवारे निर्धन हतो तेथी में ताहारा सामुं न जोयुं अने हमणातो तुं सर्व विभूति सहित छो माटें हुं सामो चाली आव्यो छुं एवुं कहीने वली स्त्री कहेवा लागी के हे मूर्ख! धनविना हुं तने शुं करुं? वली कह्युं छे के ॥ पुत्तायसीसायसमंविभत्ता, रीसाय देवाय समंविभत्ता ॥ मुरकातिरिकाय समंविभत्ता, मुयादरिद्दाय समंविभत्ता ॥ १ ॥ भावार्थः—पुत्रने शिष्य ए बे बरोबर जाणवा, वली रुषी अने देव ए बे पण बराबर जाणवा,

वली मूर्ख अने तिर्यंच ए बे पण समान जाणवा, तेम मूवेला अने दारिद्री ए पण बे सर खाज जाणवा ॥ वली ते स्त्री कहेवा लागी के अरे नाग्यहीन ! श्रीवीरजगवानें वरसीदान आपीने सर्वनां दारिद्र्यदुःखनो विनाश कर्यो, ते वेलायें तुं परदेश गयो ते ताहारे कहेवुं थयुं के जेम डाख पाकवाने समये कागडानी चांच पाकी आवे तेनी पेरे थयुं अथवा नदी तटे जवासाना जाड तुल्य तुं थयो. अथवा रात्रि दिवस मेघ वर्षतां बतां पण पलाशवृक्षनां पान डां त्रणज होय माटे रे अनिष्ट ! रे पापिष्ट ! रे पांडुरपृष्ठ ! तुं इहांथी जा इत्यादिक निष्ठुर वचने घणो निर्नंडीने गलहत्थो देइ मने घरथी बाहेर काहाड्यो ते कारण माटे ॥ आगेंदारिद्र्यं पाबे दारिद्र्य, नावे जमणे पासि ॥ पिंभियाणीमुज मारण मांभ्यो, तेणे हुं आयो नासि ॥ १ ॥ माटें हे स्वामी ! महारे आगल पण दारिद्र्य चाले बे, पाबल पण दारिद्र्य चाले बे अने बे बाजुयें पण दारिद्र्य चाले बे एम महारे चारे बाजु दारिद्र्य चाल्युं आवे बे तेथी ब्राह्मणीयें मने मारवा मांभ्यो माटे हुं नाशिनें तमारी पासें आव्यो बुं अने में विचार्युं जे श्रीवीर अगम्यगतिवंत बे, जो पण दीक्षा लीधी बे तो पण परमकृपालु बे, माटें मुजने निश्चयथी कां इक पण आपशे एवुं चिंतवीने प्रतीति पूर्वक निरधारकरीने तमारी पासें आव्यो बुं माटे म हारा दारिद्र्यने चूरीने मनोरथ पूर्ण करो. पण हे स्वामी ! एवुं मनमां आणशो नही जे महारा वर्षीदाननें अवसरें सर्वलोक मनवांछित दान पामी गया अने तुं कांइपण केम पा म्यो नही एवो विचार आणशोमां ॥ यतः ॥ स्वामिन्कनकधाराभि, स्त्वयि सर्वत्रवर्षति, अना ग्यबत्रसंबन्ने, मयिनायांतिबिंदवः ॥ १ ॥ नावार्थः—हे स्वामी ! तमें कनक रूप धारायें सर्वत्र वरस्या पण महारा मस्तक उपरें अनाग्य रूप बत्र ढंकायुं हतुं तेथी एक बिंदुमात्र पण

मह्वारे माथे पड्युं नही तेवारें एवुं विचार्युं जे यतः ॥ रे मन अप्पा खंतिधर, चिंताजाल म पाड ॥ फलतत्तोहिज पामीयें, जित्तो लख्यो लिलाड ॥ १ ॥ एम चिंतवी बेसी रह्यो पण हे स्वामी ! एकतो तमारुं दान न पाम्यो ने वली तमारा दाननो व्यतिकर सांजलीनें सामो मुजने मह्वारीस्त्रीयें घरथी काढाडी मूक्यो तेमाटे कह्युं बे के ॥ यतः ॥ त्वयि वर्षति पर्जन्ये, सर्वेपल्लविता डुमाः ॥ अस्माकमर्कवृक्षाणां, पूर्वपत्रेषु संशयः ॥ १ ॥ जावार्थः– हे स्वामि ! तमारा रूप मेघवर्षतां बतां सर्वजन रूप वृक्ष नवपल्लवयुक्त थयां अने मह्वारा सरखा अर्क वृक्षोनें पूर्वपत्रनो संशय थयो इत्यादि जलित पल्लवित वचन सांजलीनें, कृपासागर जगवंत विचारता हवा जे हुं निर्ग्रंथ बुं मह्वारी पासें कांइपण नथी अने ब्राह्मणने नही देवाथी इंडादिक सर्वलोक समक्ष प्रार्थना जंग होय ते प्रार्थनां जंग कखाथी लघुता थाय ॥ यतः ॥ तणलहु यं तूस लहु यं, तिणतुस लहुयंच पबणा लहुयं ॥ तत्तोवि सो लहुउ, पबण जंगो कउजेण ॥ १ ॥ जावार्थः– सर्वथकी तृणलघु बे ते थकी तुष लघु बे अने तृणथलां तथा तुष थकी पण प्रार्थना करवा वालो लघु जाणवो अने वली प्रार्थनानो जंग करवा वालो जे बे तेतो सर्व थकी लघु जाणवो ॥ पुनरपि ॥ परपबणापवत्ति, मा जणणी जणउ एरिसंपुत्तं ॥ उयरोवि मा धरिज्जउ, पबण जंगो कउ जेण ॥ १ ॥ जावार्थः– परपासें प्रार्थनानो करवा वालो एवो पुत्र हे माता तुं जणीश नही अने वली प्रार्थना जंग करनारनें तो उदरने विषे पण धारण करीशमां ॥ पुनरपि ॥ यांतुयांतु बत प्राणाः, अर्थिनिव्यर्थतांगते ॥ पश्चादपिहिगंतव्यं, कसार्थः पुनरीहशः ॥ १ ॥ जावार्थः– जाउ रे मह्वारा प्राण जे अर्थिप्राणी व्यर्थ घरथी जाय तेनी साथें तमे पण जाउ केमके पाबल पण तमने कोइक


चित्र ३८
भगवान्
देवदुष्य वस्त्र
आपेछे
ब्राम्हण

दिवसें जावुं तो छेज तो एवो साथ वली तमोने मलवो मुशकील छे माटे हमणाज जाउं ॥१॥ इत्यादिक शिष्टाचार आचारनो विचार जाणीने श्रीमहावीर देव कृपाकरी अरधुं देव डुष्य वस्त्र फाडीनें ब्राह्मणने देता हवा ए विप्रने चीवर दीधाथी बीजा प्राणीउंने एवुं जणावता हवा ॥ यतः ॥ जांसंतितां देड्ड धन, इणपरि अरकइ वीर ॥ पितामित्र बांजण जणी, आधो दीधो चीर ॥ १ ॥ जावार्थः—ज्यांसुधी घरमां संपत्ति होय त्यां सुधी धन, चीवर, अन्नादिकनुं दान देवुं, पिताना मित्र ब्राह्मणनें अरधुं चीर आप्याथी श्रीवीर एवुं पूर्वोक्त प्रमाणे जणावता हवा ॥ १ ॥ हवे ते ब्राह्मण अरधुंचीर लइने पोताने घेर गयो तेने चीवर सहित बारणाने समीपें आवतो देखीने ब्राह्मणी हर्षित थइ. थकी उठीने सन्मुख आवी बे हाथ जोडी एवीरीते कहेती हवी के हे प्राणनाथ! हे मम जीवना! हे महारा हैयाना हार, हे कांत! सुजग हुं तमारी मेघनी पेरें वाटजोती हती अने जेम जल विना माछली टलवले तेम तमारा विना हुं टलवली रही हती इत्यादिक मीठां मनोहर वचन रचना कथन पूर्वक अपूर्वरीतें घणी प्रीतियें स्नान मज्जन करावी जोजन पान तांबूल आपीने वली घणा सन्मान पूर्वक सुखशय्या शयन प्रमुख सुख उपचार करीनें स्त्री घणो प्रमोद पमाडती हवी तेवार पछी ब्राह्मण ते वस्त्रनी दशीयो बंधाववाने वास्ते तुंनारा पासें गयो तुंनारे पण ते वस्त्र तेवुं अणत्रुटधुं जाणीने सोमविप्रने कहेवा लागोके हे ब्राह्मण! आ वस्त्रनो बीजो कटको लइ आव्य तो एनें सांध्यां थका ए लाख मूलनुं थाशे तेथी ताहारा अने महारा बेहुना दारिद्र्यनो नाश थाशे तेवारें ते विप्र पाछो फरीने लोजें वधतो छतो श्रीवर्द्धमान स्वामी पासें आवतो हवो पण मनमां विचारवा लागो के हुं वारंवार केवीरीतें याचना करुं, अतिलोज करवो पुरुषनें युक्त नथी अने जग

वान पण एवुं जाणशे जे आ विप्र लोजी ले. एवुं जाणीने लाजनो मार्यो मौन करी रह्यो पण मुखथी मागे नही ॥ यतः ॥ लज्जा वारेइ मुहं, असंपया जणई मागिरे मग्ग ॥ दिन्नं मानकवाडं, देहित्तिमग्गिया वाणी ॥ १ ॥ नावार्थः– लज्जा ले ते मुखने वारती हवी अने असंपदा कहेति हवी के माग्य रे माग्य ! पण मानरूप कमाड देवराणा तेथी आपो एवी वाणी मुखथी न निकलती हवी ॥ १ ॥ अने जाण्युं जे क्यांय पण खंनाउपरथी पडी जाय तो उपाडी लइश एवीरीतें जेवारें जगवंतने दीक्षा लीधे एकवर्षने उपर एक मास थयो त्यां सुधी जगवाननी पाछल ते ब्राह्मण चाल्यो पछी एकदिवस ते देवडुष्य जगवाननां खंना उपरथी वायराना गोटथी उपडयुं ते उत्तरचावालागामनी पासें सुवर्णवालुका नदीनें कांठे बोरडीना वृक्षनां कांटामां जइ पडयुं तेने विप्रे ग्रहण कर्युं. जगवान पण सिंहावलोकन दृष्टियें करी देखता हवा इहां कोइकतो कहे ले के ममत्वें करीनें देखता हवा, कोइक कहे ले के शुजस्थानकें पडयुं के अशुजस्थानकें पडयुं ते जोवाने माटे देखता हवा वली कोइक कहे ले के सहसात्कारे देख्युं, कोइक कहे ले के महारी पाछल महारा शिष्योने वस्त्रपात्र सुलजनावे थशे के नही थाय एवा कारणथी देखता हवा कंटके लाग्युं तेथी जगवाने विचार्युं जे महारी पछवाडे जे साधु स्वसंतानिक थाशे ते सर्व बहुल कषायि कंटकी कलहकारी प्राय असमाधिकारक थाशे मूंमा घणा थाशे अने साधु थोडा थाशे एवुं जाणीनें निर्ममत्वथी ग्रहण न कर्युं. हवे विप्र पोताना आत्माने धन्य कृतार्थ मानतो थको, संपूरण मनोरथवंत थयो थको तुंनारा पासें बे खंम संधावी तूणावीने वेंच्युं तेना लक्ष सोनैया आव्या तेमांथी अर्द्धा तुंनाराने दीधा अने अर्द्धा ब्राह्मणे राख्या बेहुनुं दारिद्र्य गयुं जावज्जीव सुधी सुखी थया आनंदमां रह्या ॥ इति अचेलक

दृष्टांत ॥ ॥ तेवार पछी भगवाने कपडां राख्यां नही ते दिवसथी अचेलक थया अने बीजा त्रेवीश तीर्थंकरोनां देवडुष्य वस्त्र जावज्जीव रह्यां हतां केटलिक प्रतोमां वचला बावीश तीर्थंकरोनां देवडुष्य जावज्जीव रह्यां कह्यां छे तेथी ते सचेलक जाणवा हवे. श्रीमहावीर स्वामी बारवर्ष उपर साडा छमहीना छद्मस्थपणे कायाने वोसरावी कांइ शुश्रूषा करे नही एवाथका विचर्या तेमां जे कांइ देवताना करेला, मनुष्यना करेला, तिर्यंचना करेला, अनुलोम अने प्रतिलोम एवा बे प्रकारनां उपसर्ग थया तिहां जे नाटक देखाडवां, आलिंगन करवां, इत्यादिक देवादिकोये करेला उपसर्ग ते सर्व अनुलोम उपसर्ग जाणवा अने जे देवादिकोयें भय बताव्या, प्रहार कर्या, कूट्या, मार्या एवा उपसर्ग ते सर्व प्रतिलोम उपसर्ग जाणवा ए बन्ने प्रकारना उपसर्ग सर्व पोतानी खुशीथी सहन कर्या पण चारित्रथी लगार मात्र चलायमान थया नही तेमज कोइ उपर रागद्वेष पण लाव्या नही तथा कोइनी पासें दीन वचन पण बोल्या नही तेमज कोइनुं भय पण लाव्या नही एवी रीतें अनेकप्रकारना उपसर्ग सहन कर्या ते कही देखाडे छे ॥ ॥ एकदा भगवान् उत्तर वाचाल सन्निवेशें जातां मार्गें वर्द्धमान गामें आव्या, तिहां एक सुवर्णवालुका, बीजी रूपवालुका, ए बे नदीउ आवी, ते उतरी आगल चालतां एक वक्रमार्ग बीजो सरल मार्ग, एवा बे मार्ग आव्या, तिहां लोके निवार्या के पाधरामार्गमां सर्पनो भय छे माटे जाशो नही तो पण भगवंत वक्रमार्ग मूकीने सरल मार्गें चंद्रकोशीया सर्पने प्रतिबोध देवासारुं चाल्या, ते मार्गमां कनक खल नामा वनमां तापसनो आश्रम छे, तिहां एक महा जोरावर घणो झेरीलो चंद्रकोशीयो सर्प रहे छे. ते चंद्रकोशिया सर्पने भगवाने देवता कर्यो, तेनी कथा कहे छे. कोइक गामने विषे बे साधु गुरु चेला चोमासुं रह्या हता ते एक दिवसें

मास खमणना पारणाने अर्थें बे जणा गोचरीयें गया, त्यां वर्षाऋतुने लीधे घणा जीवोनी उत्पत्ति थये छते मार्गमां गुरुना पग नीचें सूक्ष्म मेंमकी आवी ते चंपाइ मरण पामी तेवारें चेलायें कह्युं महाराज तमारा पग नीचें मेडकी आवी ते मरण पामी एवुं सांजली गुरु बोल्या घणी मेडकी मरेली पडी छे माटे बीजा कोइनो पग आववाथी मरण पामी हशे तेवारें तिहां ते चेलो मौन रह्यो वली गोचरी आलोवतां शिष्य बोल्यो के मेडकीनो मिछामि डुक्कड ल्यो ते सांजली गुरुने रीश चडी अने चेलाने कहेवा लागो जे अरे आ मेडकीतो प्रथमथीज मरेली हती, मेंतो मारी नथी चेले घणुं कह्युं तो पण मान्युं नही तेवारें चेले विचार्युं जे सांजें पडिक्कमणामां आलोयण लेशे गुरुयें पण सांजें पडिक्कमणामां सर्व आलोयण लीधी, पण मेडकीनी आलोयणा न लीधी तेवारें वली पण चेले कह्युं जे महाराज मेडकीनी आलोयणा ल्यो तेवारें पण गुरुयें रीश करीने तेवोज जवाब आप्यो फरी रात्रें संथारानी वेलायें कह्युं के हे महाराज! मेंमकीनी आलोयणा ल्यो.एवुं सांजलतां गुरुने रीश चडी तेथी हाथमां उंघानी मांमी लइने मारवा दोड्यो रातनी वेला हती तेथी चेलो नाशी गयो, गुरु तेनी पाछल दोड्यो अने उपाशराना थांजलामां अथडायो तेथी गुरुनुं मस्तक फूटयुं त्यांथी मरण पामी बीजे जवे ज्योतिषी देवता थयो त्यांथी चवीने चंमकोशी नामें तापस थयो तेना पांचसो शिष्य थया परंतु पोतें घणो क्रोधी हतो तेथी एक दिवसें राजकुमारने वाडीमांथी फूल लेतां देखीने हाथमां फरसी लइ तेमने मारवा दोड्यो तिहां पग लपसीगयो तेथी मार्गमां एक अंध कूवो आव्यो, तेमां पड्यो पोताने फरसीवागी तेथी आर्त्तध्याने मरण पामीने तेहज आश्रमने विषे चोथाजवें चंमकोशीउ सर्प्प थयो छे, आंख्यमां ऊहेर घणुं छे, जे कोइने


चित्र ३५
भगवान्

देखे, तेने बाली जस्म करे डे, घणा तापसोने बाल्या, बीजा केटलाएक नाशी गया लोकें पण ए मार्गे जवानुं ढोडी दीधुं, एककोश प्रमाण जूमिमां रहेला जीवमात्रने बाली नाखे डे. त्यां ते सर्प्प कोइने रेवा देतो नथी ते सर्प्पना बिलउपर जगवंत काउस्सग्गें रह्या, ते देखी सर्प्पें क्रोध आणीने प्रजुने मंख मार्यो, तेवारें प्रजुना पगमांथी दूध सरखुं लोही मांस नीकल्युं, तेने देखी सर्पें विचार्युं जे हुं जेने साहामुं जोउं, तेने पण बाली जस्म करुं अने एने तो मंख मार्यो तो पण धोलुं लोइ नीकल्युं माटे ए कोइ महोटो पुरुष डे एम चिंतवीने जगवानना मुख सामुं जोयुं. तेवारें जगवान् बोल्या के अरे चंमकोंशिया ! बूज बूज तुं नथी जाणतो एवुं केतां थकां ते सर्प्पने विचार उपन्यो जे आवुं रूप में क्यांक दीठुं डे एटलामां मूर्डा आवी गइ अने जाति स्मरण ज्ञान उपन्युं तेवारें पाडलो जव दीठो, पडी प्रजुने त्रण प्रदक्षिणा देइ विनति करी के हे करुणासागर ! दूर्गतिरूप कूपथी तमें मुजने उद्धर्यो, पडी वैराग्यपामी पन्नर दिवसनुं अनशन करी परोपकारार्थें ते सर्प्प पोताना बिलमांहे मुख घाली अने आखुं शरीर बाहेर राखीने रह्यो पडी ते मार्गे दूध, दहीं, घृतनी वेचनारी आहिरलोक तेणें ते नागराज संतुष्ट थयो एवुं जाणी दूध, दहीं, घृत, शर्करादिकें करी सर्प्पने पूज्यो तेनी गंधें करी कीडीउ शरीर उपर चडी पडी विचार्युं, जे हुं महारा शरीरने फेरवीश तो कीडीयो मरीजशे एवुं जाणी शरीर हलाव्युं नही कीडीयें ते सर्प्पने फोली चालणी सरखो कीधो, ते सर्प्प शुजध्यानें मरण पामीने आठमे देवलोकें देवता थयो. प्रजु तिहांथी विचरता उत्तर वाचाल सन्निवेशें पहोता तिहां नागसेन श्रावकनें घेर परमान्नें पारणुं कर्युं, देवतायें पंचदिव्य प्रगट कर्यां. तिहांथी विहार करीने जगवान श्वेतांबिका नगरीये गया तिहां परदेशीराजायें प्रजुनो महिमा

कह्यो ॥ तिहांथी विचरता थका जगवान सुरजिपुरनगरनां मार्गमां गंगानदी आवी ते उत्तर वाने अर्थें घणा लोक सिद्धदत्त खारुआनी नावमां बेग तेनी साथें प्रजु पण बेग एवा मां घूवड बोल्यो तेनुं शुकन जोइ क्षेमिलनामे निमित्तिउ ते नावमां हतो तेणे कह्युं के हे लोको आज आपणने मरणांत कष्ट उपजशे परंतु आ साधु महात्मा पुरुषना प्रजावथी जीवता रहीशुं मरशुं नहीं एवामां जगवंते त्रिपृष्ठ वासुदेवना जवमां जे सिंहने विदार्यो हतो ते सिंह घणा जवज्रमण करीने हमणां जुवनपति देवोमां सुदंष्ट्रनामे नागकुमार देवता थयो छे ते अवधिज्ञाने प्रजुने जोइ पूर्व वैर संजारी इहां आवीने नाव बूडाववानो उपद्रव करवा लाग्यो तेवखत नवा उपन्या एवा कंबल अने संबल नामे बे नागकुमार देवता तेणे आवीने एक देवतायें तो नाव बूडती राखी अने बीजा देवतायें पहेला सुदंष्ट्रदेवनी साथें लडाइ करी तेमां सुदंष्ट्र हारीगयो तेथी जगवान सुखें गंगानदी उतर्या हवे ए कंबल संबलनी पूर्वजव संबंधि कथा कहे छे, मथुरा नगरीमां जिनदास नामा श्रावक रहे छे तेनी साधुदासीनामे स्त्री ते पण श्राविका छे ते बन्ने जणायें पांच अणुव्रतमां चतुष्पद जीवो राखवानो त्याग करेलो छे तेथी दूध दही जे घरमां वापरवा सारुं जोइयें ते एक आहिर पासेथी मूल्य आपीनें वेंचातुं लीये छे तेने लीधे ते आहिरने अने शेठनें मांहोमांहे प्रीति थइ ते आहिर साथें लेवड देवडनो संतोषव्रतमां, राखेलुं छे हवे एकदिवस ते आहिरने घेर विवाह आव्यो तेवारे आहिरे शेठ पासेंथी विवाहने माटे केटलिएक चीजो मागी शेठे पण तेने चंद्रवा प्रमुख सर्व उपकरण तेना मागवा मुजब आप्या तेथी तेनो विवाह घणो सरिकार थयो तेवारें ते आहिर खुसी थइने सरखी अवस्थावाला घणा रूपवंत एवा बे बाल वृषज लावीने शेठने घेर बलत्कारें बांधी चा

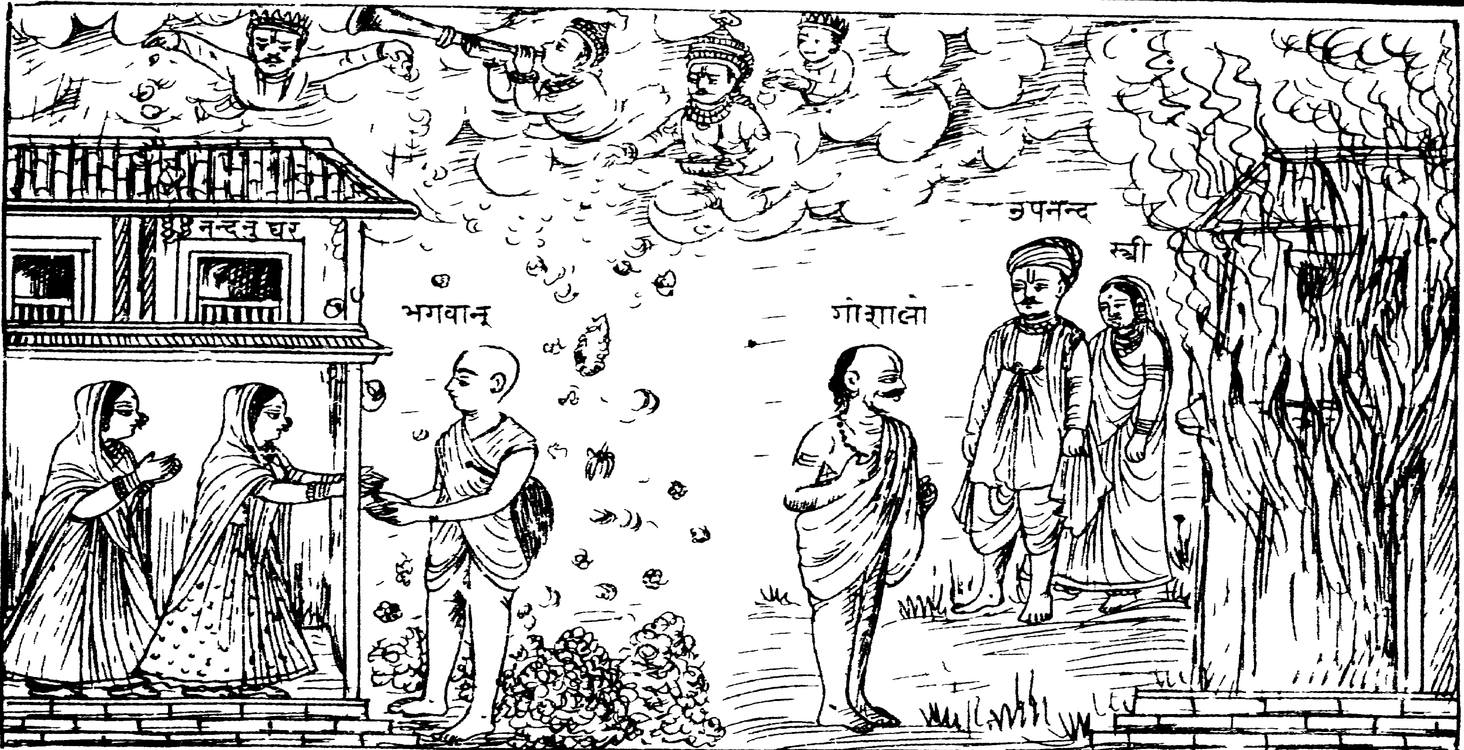

चित्र ४०
कंबलदेव
भगवान्
संबल देव

ल्यो गयो ते यद्यपि शेठने तो राखवानी इच्छा हती नही तोपण शेठे विचार्युं जे पाछा आ
पीश तो ए बीजे क्यांय वेचशे तिहां ए बापडा दुःखी थाशे, बांध्या रहेशे, मार ताणशे, एवुं
विचारीनें पोताने घरें राख्या तिहां तेमने पुत्रनी पेरे फासु घास जल प्रमुख खवरावीने पोष्या
कंबल अने संबल एवां बे नाम दीधां हवे शेठ पाखीने दिवसे पोसह करे धर्मचर्चा करे पुस्तक
वांचे ते वातो सांभलतां सांभलतां ते बलदीया घणीज रूडी समजण वाला थया एवा
भद्रिक परिणामि थया के शेठ जेवारें उपवास करे तेवारे ते पण उपवास करे तृणादिक
चारो बिलकुल खाय नही एवीरीतें शुभभावनायें विचरे छे हवे एक दिवस शेठ पोसहमां
बेठा हता एटलामां कोइएक शेठनो मित्र आव्यो ते पुष्ट वृषभनुं जोडलुं देखी शेठने
पूछ्या विना पोताना रथमां जोडीनें भंडीर वनमां यक्षनी यात्रायें लइ गयो मार्गमां घणा
दोडाव्या तेथी ते बलदोनी नाडियो त्रूटी पडी पछी ते छानो आवीने पाछा शेठने घेर बांधी
गयो पण हाडकां भांगी गयां तेथी चारो पाणी त्यागी बेठा शेठें पोताना पुत्र जेवा बलदोने
दुःखी थयेला देखी घणो विषाद करीने अनशन कराव्युं चार आहारना पच्चख्काण करावी न
वकार संभलाव्युं ते बलदीया शुभध्याने मरण पामीनें नागकुमार देव थया ते नवा उपन्या
थका अवधिज्ञाने उपयोग आप्यो तेथी ए कृत देखी इहां आवीनें भगवानने थतो उपसर्ग
मटाड्यो अने भगवान आगल नाटक नाची गीतगान करी पूजा सत्कार करी स्वस्थानकें गया
॥ इति कंबल संबल दृष्टांत ॥ एक दिवसें भगवान् विहार करता गंगा नदी उतरतां सूक्ष्मवेलु
मांहे प्रतिबिंबित पगलानी श्रेणीने विषे चक्र, ध्वज, अंकुश प्रमुख लक्षण थया एवामां पाछ
लथी कोइ एक पुष्पनामा सामुद्रिकशास्त्रनो जाण, आव्यो तेणे मनमां चिंतव्युं जे आ कोइएक

चक्रवर्त्ती थनारो जीव छे चक्रवर्त्ति विना एवा पग बीजानां न होय ते ब्रमणां एकाकी जाय छे माटे हुं जइ एनी सेवा करुं, पछी ते चरणानुसारें तिहां आव्यो अने जगवानने वस्त्ररहित दिगम्बररूपें देखीने विचारवा लागो जें हुं सामुद्रिकशास्त्र फोकट जण्यो छुं जो एवा लक्षणनो धणी जिक्षुकरूपें एकाकी छे तो ए महारां पुस्तक खोटां छे पाणीमां बोलवा लायक छे, एम चिंतवी पुस्तकने पाणीमां बोलवा लाग्यो, इंद्रमहाराजें ए वृत्तांत जाण्युं तेवारें तिहां आवीने प्रजुनी सेवा साचवी. पुष्पनिमित्तिया आगल प्रजुनुं स्वरूप वर्णवी शास्त्र पाणीमां बोलवां न दीधां, पछी जगवंतना गुण ग्राम कही इंद्र स्वस्थानकें गयो, पुष्प पण इंद्र पासेंथी मणि कनकादिक धन पामी हर्ष पामतो पोताने स्थानकें गयो, प्रजुयें परोपकारार्थें गंगानदीउतरी विहार कीधो ॥ हवे गंगानदी उतरीने जगवान बीजे चोमासे राजगृही नगरीयें नालंदीनामा पाडामां वणकरनी एटले तंतुवायकनी शाला छे तेना एकदेशने विषे खूणामां आज्ञा लइने रह्या तिहां प्रथम मास खमण कर्युं अहींआं शरवणग्रामे मंखली पुत्र सुजद्रानो अंगज बहुल ध्वजनी गोशालाने विषे उपन्यो छे तेमाटे तेनुं नाम पण गोशालो राखेलो छे ते अनुक्रमें जमतो जमतो जगवंत पासें आव्यो, जगवाने तिहां चारमासमां चार मास खमण करीने चार पारणां कर्यां तेमां पहेला मास खमणने पारणे प्रजुनें विजयशेठें क्षीरादिक विपुल जोजने पारणुं कराव्युं तिहां देवतायें पंच दिव्य प्रगट कर्या पछी ते सरस क्षीरादिक कूरादिक मोदकादिकनो आहार देखीने गोशालायें विचार्युं जे एने घर घर वोरावे छे माटे हुं पण जूदो जिक्षायें फरीश तो माहारी पण मान्यता वधशे, तेवारें जगवंतने जेणे वोहोराव्या तेना पाडोशीने घरें गोशालो पण वहोरवा गयो ते देखी पाडोशी हर्ष पाम्यो जे महारें घरे जग

वान् पधाख्या तेथी उठी बेठो थयो पठी वांदीने कह्युं के हे महाराज ! म्हारे घरे पारणुं करो तेवारें गोशालायें बे हाथ पसाख्या गृहस्थें उनी उनी रसोइ पीरशी अने उंचुं माथुं करी जोवा लाग्यो जे म्हारे घरे सोनैयानो वर्षाद थाय एम करतां वायस आवी माथे बेठो ते वारें मेडा उपरथी गोशालाना हाथ उपर एक बाइयें देवता नाख्यो. ते जोइ शेठें विचाख्युं जे पाडोशीने घेर तो सोनैयानो वर्षाद वरश्यो अने माहारे घरे तो कोयला वरश्या गोशालाना हाथ बल्या तिहांथी उदास थइ गोशालो निकल्यो हवे जगवानने बीजुं पारणुं नंदे पक्वान्ना दिकनुं कराव्युं, त्रीजे मासखमणे त्रीजुं पारणुं सुनंदे परमान्नादिकें कराव्युं तिहां सर्वत्र पंच दिव्य प्रगट थयां ते जोइ गोशाले मनमां विचाख्युं. जे एनी पासें सारविद्या ठे जे घर घर सोनुं वरसावे ठे, ए विद्या हुं पण शीखुं माटे एनी संगत करुं तो शीखुं अने म्हारी शोजा वधे ! एम विचारी गोशालो बोल्यो हे जगवान ! हुं आपनो शिष्य बुं एम कही जगवंत साथें फरवा लागो, जगवाने तिहांथी जइ चोथुं पारणुं कोलागसन्निवेशे बहुलनामा ब्राह्मणने घेर केवल खीरना जोजने कर्युं. तिहां पांच दिव्य प्रगट थयां ए बीजुं चोमासुं जाणवुं ॥ २ ॥ पाठलथी गोशाले जगवानने दीठा नही सर्व नगरमां फरी जोयुं तो जगवान मल्या नही तेवारें सर्व उपक रण ब्राह्मणनें आपी मुंम थइने चाल्यो पठी कोल्लागसन्निवेशे जगवानने देखी बोल्यो के आ पनी दिक्षा मुजने हो हुं आपनो चेलो बुं ए वात जगवाने पण मानी पठी गोशाला सहित जगवान विहार करी एक दिवसें जगवान् स्वर्णखलग्रामें चाल्या, मार्गमां कोइ गोवालीए खीर पकावतां देखी तिहां गोशालो बोल्यो, हे जगवान् ! ए खीर थाशे ते खाइने जइशुं माटे थो डीवार बेसो तेवारें सिद्धार्थ बोल्यो ए खीरनुं पात्र जांगशे पठी गोशालायें जइ गोवालीयाने

कह्युं हांमी फुटशे गोवालीयायें घणा यत्न कराव्या तो पण हांमी फूटी गइ तेवारें गोशालो बो
ल्यो जे थानार होय ते थायज. एवुं बोली हठ पकडी नियतवादीपणुं पडिवज्युं ॥ तिहांथी
नगवान विहार करी ब्राह्मण गाम गया तिहां एक नंद अने बीजो उपनंद ए बे नाइना बे
पाडा ठे तेमांथी नगवाने नंदनां पाडामां पारणुं कर्युं अने गोशालाने उपनंदने घेर वाशी
अन्न सातदिवसनी घेंस मली तेथी कोपायमान थइने गोशालो बोल्यो जे महारा धर्माचा
र्यना प्रनावथी तहारुं घर बली नस्म थाउ एवुं कहेतांज व्यंतरदेवोयें नगवाननुं महत्त्व रा
खवा माटे तेनुं घेर बाली नाख्युं. हवे त्रीजें चोमासें बे बे मासनी तपस्यायें प्रनु चंपानगरीयें
रह्या ए त्रीजुं चामासुं ॥ ३ ॥ ॥ त्यां ठेलुं पारणुं करी कोल्लाग सन्निवेशें गया तिहां शून्य
गृहमां काउस्सग्ग रह्या तिहां सिंहो रजपुत चोधरीनो पुत्र विद्युन्मती दासी साथें क्रिडाकरतो
हतो तेने रमतो देखीने गोशालो हस्यो तेवारें तेणे गोशालाने कूट्यो गोशालो प्रनुने कहेवा
लागो जे मने मार आपे ठे माटे तमें एने कां वारतो नथी ? प्रनु मौन ठे तेथी सिद्धार्थे बोल्यो
के आज पठी एवुं हास्यनुं काम म करीश ए काम करीश तो एवांज फल पामीश. तेवार
पठी स्वामी मोराकसन्निवेशें रमणीय नामा उद्यानमां काउस्सग्ग रह्या, त्यां कुंनारशालामां
श्रीपार्श्वनाथना शिष्य मुनिचंद्र सूरि घणा शिष्यो साथे रह्या ठे ते साधुउने देखी गोशाले पूठ्युं
तमें कोण ठो, ते बोल्या अमें साधु ठैयें गोशालो बोल्यो तमें क्यां अने महारो धर्माचार्य क्यां ?
तेंवारे ते साधु बोल्या जेवो तुं ठे, तेवो ताहारो गुरु पण हशे तेवारें गोशालो रुठो थको बो
ल्यो जे महारा धर्माचार्यना तप तेजना प्रनावथी तमारो आश्रम बली नस्म थाउ तेवारे
शिष्य बोल्या एथी कांइ अमे मरता नथी. हवे आश्रमबल्यो नहीं तेवारें गोशाले आवीनें प्र


चित्र ५८
नन्दनु घर
भगवान्
गोशालो
उपनन्द
स्त्री

भुने कह्युं के स्वामी आगल जेवो तमारो प्रभाव हतो तेवो हमणां नथी तप तेज घटी गयुं जणाय छे तेवारें सिद्धार्थ बोल्यो अरे गोशाला! ए साधुउने शाप लागे नही ए साधु नहीं बले, पछी ते पार्श्वनाथना शिष्य मुनिचंद्र सूरिजिनकल्पनी तुलना करता काउस्सग्गमां उभा छे तेने कुंभारें चोर जाणीने मार आप्यो मुनिचंद्रने अवधिज्ञान उपन्युं मरण पामी देवलोकें गया तेनो देवतायें महमा कर्यो त्यां अजवालुं थयुं ते देखीने गोशालो बोल्यो जुउ साधुना आश्रम बले छे म्हारा गुरु साचा छे, तेवारें सिद्धार्थ व्यंतरो बोल्यो के, अरे कुपात्र! ए तो मुनिचंद्र देवलोकें गया तेनो महोत्सव थाय छे ते सांभली गोशालो विलखो थयो ॥ ते पछी प्रभु चोरा नगरियें गया तिहां गोशालो गाममांहे हेरतो फरे तेवारें त्यांना लोकोयें हेरु जाणी प्रथम गोशालाने(कूप) खोडामांहे घाल्यो पछी भगवंतने पण नाखवा लागा, एवामां उत्पलनामा विप्रनी बेहेन सोम जयंतिनामे ते चारित्र त्यागीने सन्यासणी थइ छे तेणे आवी भगवानने उलखीने छोडाव्या. गोशालाने पण छोडी मूक्यो ॥ तेवार पछी त्यांथी विहार करीने चोथुं चोमासुं स्वामी पृष्ठ चं पायें चार मासी तप करीने रह्या, तिहां चोमासुं संपूर्ण करी बाहेर पारणुं कर्युं ए चोथुं चोमासुं जाणवुं ॥ ४ ॥ ॥ तिहांथी विहार करी भगवान कयंगलें गया, तिहां माघ मासें जागरणना दिवसें दारिद्र अने स्थविर पांखण्डिणी नाचें छे, गाय छे तेनी गोशाले हांसी करी तेथी तेउए गोशालाने मार आप्यो वली प्रभुनो शिष्य जाणी मूक्यो ॥ तिहांथी विहार करी भगवान सावत्थीनगरीयें आवीने काउस्सग्गें रह्या तिहां पितृदत्तवणिकनी स्त्री श्रीभद्रा छे तेने पुत्र जीवता नथी, तेवारें शिवदत्त निमित्तियें तेने पूर्वें कह्युं छे के मृतक पुत्रनुं मांस खीरमां रांधीने कोइ भिक्षुकने खवरावजो तो तमारा पुत्र जीवता रहेशे, हवे ते स्त्रीने जेवारे

मृतक पुत्र थयो तेवारें तेनां मांसनी खीर तैयार करी राखी अने अहीं गोशाले सिद्धार्थ व्यंतरने पूछ्युं के मने आज केवुं भोजन मलशे? सिद्धार्थें कह्युं तनें आज मनुष्यनुं मांस मलशे, ते खाइश. पछी सिद्धार्थनुं वचन खोटुं करवा सारुं गोशालो श्रावक वाणीयाने घेर वोहोरवा गयो, मनमां विचार्युं के वाणीयाने घेर मांस होयज नही एवुं जाणी तिहां खीर जमी फरी पाछो आवी सिद्धार्थने कह्युं के हुं खीर जम्यो छुं सिद्धार्थें कह्युं तुं मांस जम्यो छो, तेवारें गोशालायें गलामां आंगली घाली वमन कर्युं, मांहे मांसना कटका दीठा तेवारें गोशालो क्रोध करीने तेने घेर गयो परंतु ते स्त्रीयें शरापना भयथी घरनुं बारणु फेरवी नाख्युं हतुं तेथी गोशालायें घर लाधुं नही तेवारें कहेवा लाग्योजे महारा स्वामीना तप प्रभावथी तमारो पाडो बली भस्म थाजो तेथी पाडो बल्यो ॥ इति ॥ तिहांथी भगवान दरिद्र सन्निवेशनी बाहेर काउस्सग्गें रह्या तिहां पंथीयोयें भगवानना पग पासें वासदी बाली तो पण भगवान किंचित्र मात्र सरक्या नही भगवानना पग बलता देखीनें गोशालो नाशि गयो ॥ तिहांथी गलगामें वासुदेवनें देहरे काउस्सग्गें रह्या तिहां गोशालो आंख्यो काढीने बालकोने बीहीवरावना लाग्यो तिहां लोकोयें मार्यो, कूट्यो वार्यो भगवाननो· शिष्य जाणी मूक्यो त्यांथी विहार करीने भगवान आवर्त्त गाममां बलदेवनां मंदिरने विषे काउस्सग्गें रह्या तिहां गोशालायें छोकराउने बीवरावना सारुं महोडुं मरडी बताव्युं तेथी छोकरा सर्व भय पामीने पोताना माता पितानी आगल कहेवा लागा तेवारें ते माता पिताउ तिहां आवीने कहेवा लागा के आ चेलानें शुं मारवो एना गुरुनेंज मार आपो एटले फरी चेलाने पाधरे मार्गे चालवानो उपदेश करशे एवुं कहीने जेटलामां भगवानने मारवा

तैयार थया एटलामां बलदेवनी मूर्त्तियें हल लइने लोकोनें बीवराव्या तेवारें सर्वलोक भगवा
ननें नमवा लागा ॥ पछी तिहांथी विहार करी घणा क्लिष्टकर्मोनी निर्जरा करवाने अर्थें भग
वान लाटदेश गया तिहां अनार्य लोकोयें घणाज उपद्रव कर्या ते प्रभुयें सहन कर्या ॥ ति
हांथी पूरणकलश नामें अनार्य गामें जातां थकां भगवाननें मार्गमां बे चोर मल्या ते भ
गवानने देखी अपशुकन थयां एवुं मानीने खड्ग लइ मारवा दोड्या तेने इंद्र महाराजें वज्रथी
मारी नाख्या केटलिक प्रतोमां इंद्रमाहाराजें ते चोरोनां पग थंभ्या तेथी ते वृक्षनी पेरें ति
हांज उभा रह्या एवीरीतें उपसर्ग निवारण थयो ॥ पछी तिहांथी प्रभु चोरांगे आव्या तिहां
मांडवे धान रंधातुं देखी गोशालो नीचो थइ जोवा लाग्यो तेने लोकोयें चोर जाणी मार्यो,
गोशालो रुठो थको बोल्यो जे महारा स्वामीना तप बलें तमारो मंडप बलजो, ते तेमज थयुं
तेवार पछी भगवंत हरिवृक्ष नीचें काउस्सग्गें रह्या, तिहां कोइ पंथीयें आगल भूमिका बाली
हती तिहां गोशालानां पग बल्या तेवारें त्यांथी गोशालो नाठो ॥ तेवार पछी पांचमुं चोमासुं
प्रभु भद्दिकानगरीयें रह्या तिहां चोमासी तप प्रभुयें कीधुं ए पांचमुं चोमासुं चार मासी त
पनुं जाणवुं ॥ ५ ॥ ॥ पछी पारणुं करी तिहांथी भगवान कुदिक सन्निवेशें गया त्यां लो
कोयें चोर जाणीने पकड्या पछी श्रीपार्श्वनाथजीनी एक विजया बीजी प्रगल्भा ए बे सा
ध्वियो परिव्राजिकणी थयेलीउं छे तेमणे छोडाव्या तिहां गोशालायें जाण्युं जे एनी पछवाडे
फरवाथी घणा दुःख सहन करवा पडे छे एवुं विचारी भगवंतथी जूदो विचर्यो मार्गमां जातां
पांचसें चोर मल्या ते मामो मामो कहीने गोशालानी खांध उपर चडी आगल पाछल
फरावता लागा तेथी दुःख पाम्यो वली बीजे पण ज्यां जाय त्यां तोफान करे, तेवारे

लोक मार आपे तेथी गोशालायें विचार्युं जे नगवंत साथें रहेवुंज नलुं ठे एवुं जाणी नग वानने जोवालाग्यो हवे नगवंत विशाला नगरियें गया, तिहां लोहकारनी शालायें काउस्सग्गें रह्या, लोहार पण ठ महीना सुधी आजारी हतो, ते पण ते दिवसें साजो थयो ठे, तेथी लोह घडवानां उपकरण लइने आव्यो, प्रजुने मुंमा देखी अपमंगलिक जाणी घण लइने मारवा उठ्यो, एटलामां इंडें अवधिज्ञानथी जाणी त्यां आवी लोहारने निवार्यो कोइक स्थानकें इंडमहाराजें लोहारने तेहज घणथी मारी नाख्यो एम स्पष्ट लखेलुं ठे पठी तिहांथी नगवान ग्रामाकसंन्निवेशे आव्या तिहां वनमांहे विन्नेलेक यद्दें महिमा कर्यो त्यांथी निकल्या थका शालिशीर्षग्रामनी बाहेर आवी काउस्सग्गें रह्या ते वखतें माघ मासनी ऋतु हती तेमां अत्यंत टाहाड पडे ठे एवा वखतमां नगवानें शीत उपसर्ग सहन कर्यो ते कहे ठे. त्रिपृष्ठ वासुदेवना नवमां नगवाननी अपमानिती स्त्री हती ते स्त्री अनेक नवनमती थकी ते वखत कटपूत नामा व्यंतरी थयेली ठे नगवानने देखी तेने द्वेष उपन्यो तेथी तापसणीनुं रूप करी पोतानी जटामांहे पाणी नरीने परमेश्वरनां शरीर उपर ठांटयुं घणो कठण शीत उपसर्ग कर्यो एकतो शीयालानी ऋतु हती तेमां वली व्यंतरियें मेघवृष्टि करी, घणो ठंमो वायरो विकूर्व्यो एवा एवा विकट उपसर्ग कर्या ए सर्व प्रमाण विनानां पूर्वकृतकर्म प्रजुनां हतां ते आहीं आवी नड्यां तेने कठण उपसर्ग सहन करीनें दूर कर्या पठी व्यंतरिनां उपसर्गथी प्रजु अमग रह्या एवा धैर्यवंत प्रजुने जाणी पोतानो अपराध खमावीने व्यंतरि स्वस्थानकें गइ. हवे तिहां शीतवेदना सहन करतां थकां नगवंतने ठठ्ठनें तपें करी यथार्थ लोकावधिज्ञान उपन्युं ॥ त्यांथी नगवाने फरी ठठुं चोमासुं नद्दिका नगरीयें कर्युं तिहां चार महीना

सुधी अनेक प्रकारना दुःसह अभिग्रह कर्या ए छतुं चोमासुं जाणवुं ॥ ६ ॥ ॥ इहां छ म हीना बाहेर भटकीनें गोशालो पण फरी आवी प्रभुने मल्यो हवे ए चोमासुं पुरुं थया पछी शेषकाल आठ महीना सुधी भगवान मगधदेशमां विचर्या ते आठ महीनामां भगवानने कोइ पण उपसर्ग थयो नही तेवार पछी सातमो चोमासो आलंभिका नगरीनी बाहिर देव कुलें चारमासी तप करीनें रह्या ए सातमुं चोमासुं ॥७॥ ॥ तिहां गोशालायें बलदेवनी प्रति मानां मुखमां लिंग घस्युं ते लोकें दीठुं तेवारें गोशालाने मार आप्यो कोइक प्रतमां बलदेवनी मूर्त्ति उपर पुरुषचिन्ह राखीने सूतो तेथी पूजारायें मार आपी एम पण लखेलुं छे तिहांथी विहार करी मर्द्दनग्रामे वासुदेवने देहेरे तेमज गोशालायें मूर्त्ति उपर पुरुषचिन्ह कर्युं तिहां पण मार खाधो पछी प्रभु उन्नागगामे जतां रस्तामां कोइएक नवपरिणीतवधूने तेडी जाय छे तेमां वरनां दांत बाहार निकलेला महोटा हता अने वहु कांणी हती ते जोइ गोशालो हसीने बोल्यो के आ तो दैवें सरखी जोड मेलवी आपी छे तेणे गोशालानें मार आपीनें वंशजालमां नाखी दीधो ॥ आ ठेकाणे कोइक कूटपूतनानो उपसर्ग लखे छे एकदिन विचरता थका भग वान पुरिमताल नगरनी बाहेर शकटमुख उद्यानमां काउस्सग्गे रह्या ते वखत ते नगरनो व ग्गुर नामा शेठ तेनी सुभद्रा नामे भार्या ते बेहु जणे पुत्र थवा सारुं श्रीमल्लीनाथजीनी मा नता करी हती ते जेवारें पुत्र थयो तेवारे उद्यानमां श्रीमल्लीनाथजीनुं नवुं मंदिर करावीने तिहां नित्य पूजा करे छे हवे जे वखत शेठ स्त्रीसहित पूजा करवा आव्यो छे तेवखत भगवाननी आगल इंद्रमहाराज बेठा छे तेणे भगवाननो महिमा करवा माटे शेठने कह्युं के हे शेठ! जेनी तुं पूजा करे छे ते हुं तुजने प्रत्यक्ष देखाडुं एवुं कही शेठने तेडी भगवानने [illegible] लगाड्यो शेठें

पण जावेंकरी सहित जगवानने पूजीने पढी श्रीमल्लीनाथजीनी पूजा करी तेवार पढी आठ
मुं चोमासुं जगवानें राजगृही नगरीमां कर्युं तिहां चार मास तप कर्युं पढी चोमासी तपनुं
बारणे पारणुं करीने प्रजु अनार्यदेशमां विचरवा गया ढे ए आठमुं चोमासुं जाणवुं ॥ ७ ॥
हवे अनार्यदेशमां विचरतां थकां जगवानें घणा घणा कठण उपसर्ग सहन कर्या ढे अने न
वमुं चोमासुं पण तिहां अनार्यदेशमांज कर्युं ते वली चारमासी तप सहित कर्युं वली ति
हां रहेवानें जग्या पण मली नही तेथी विचरताज रह्या ढे ए नवमुं चोमासुं जाणवुं ॥
॥ ए ॥ वली पाढल पण बे महिना तिहांज अनार्यदेशमां तप सहित विचर्या ते पण आहार
विनानुं बें मासी तप थयुं ॥ पंढी अनार्यदेशमांथी विहार करीनें सिद्धार्थगामथी कूर्मगामें जतां
मार्गमां एक तलनुं झाड उंचुं देखीनें गोशाले जगवानने पूढ्युं के आ थंन थाशे के नही
थाय जगवानने कह्युं ए तिलनां फूल सात ढे तेना जीव मरण पामीने एक सांकलीमां शींगमां
तलपणे उपजशे ते सांजली गोशाले जगवाननुं वचन जुतुं करवा सारुं ते झाडने उखेडीने
फेकी दीधुं तेवारें निकट रहेला व्यंतर देवतायें चंतव्युं जे जगवाननुं वचन जुतुं म थाजो एवुं जाणी
वर्षाद कर्यो पढी गायना खुरथी ने तलनुं झाड चंपाणुं तेथी धरतीमां पेठुं थिरथयुं अने
वर्षादनां योगें पाढुं उंचुं थयुं ॥ हवे जगवान कूर्मगाम गया तिहां एक वेश्यायन नामा ता
पस ढे तेनुं नाम वेश्यायन केम पड्युं ते कथा कहे ढे. राजग्रही नगरी अने चंपानगरी ए
बेनी वचमां गूर्वर नामा एक गाम ढे तेमां कोशांबी नामे एक कुटुंबी रहे ढे हवे ते गूर्वर गा
मनी पासें वली एक बीजुं गाम ढे ते गामनी बाहेर कोइक राजानी फोज आवी पडी तेथी
गामना लोक सर्व नाशी गया तेमां एक स्त्री पोताना पुत्र सहित नाशति थकी जाय ढे ते स्त्रीनें



चित्र ४१

मार्गमां चोर लोकोयें पकडी लीधी अने बालक गूर्वरगामने बाहेर पड्यो रह्यो तेने कोशंबी नामा कुटुंबीयें बाहेर भमतो देखीने उपाडी लीधो ते कुटुंबीने पुत्र हतो नही माटे तेने पुत्रनी पेरे राखीने मह्होटो कर्यो अने ते छोकरानी मातानें चोर लोकोये जइ चंपानगरीमां कोइ वेश्यानी पासे वेची तेथी ते वेश्यानो धंधो करवा लागी पछी अनुक्रमें ते छोकरो जेवारे मह्होटो थयो तेवारे एक दिवसें चंपानगरीमां व्यापार करवानें अर्थें आव्यो तिहां पोतानी माता जे वेश्यानो धंधो करे छे तेनी सार्थें अजाण पणे भोगभोगववा लाग्यो एक दिवस तेनी कुलदेवी गाय वाछडानुं रूप करीनें रस्तामां आवी बेठी एटलामां ते छोकरो पण वेश्यानें घेर जाय छे तेणे रस्तामां वाछडानां पूंछ ऊपर पगदीधो तेवारे वाछडो बोल्यो जूउ माताजी आ मह्हारा पूंछ उपर पग आपीनें चाल्यो जाय छे पण रस्तो देखतो नथी तेवारें गाय बोली के हे बेटा! तुं एनुं नाम लइश नही एतो पोतानी सगी माता सार्थें भोग करतां पण कांइ डरतो नथी तो वली ताहारूं शुं सांभलशे? ए वात सांभली छोकरो चमक्यो पछी सर्वेहकीगत कुलदेवीयें कही तेथी सांभलीने तापस थयो लोकोये तेनुं वेश्यायन रुषि एवुं नाम आप्युं ते फाडमां ऊंधे मुखे लटकतो नीचे अग्नि कुंड कर्यो छे तेमां तापे छे तेने तेजोलेश्या उपजी छे एवामां तिहांथी भगवान चाल्या जाय छे पछवाडे गोशालो पण चाल्यो जाय छे ते वखत वेश्यायन पोतानी जटाजूटमांथी जूंउ निकलीने जमीन उपर पडी गयेली छे तेने उपाडीने पाछी पोतानी जटामां मूके छे ते जोइने गोशालो बोल्यो अरें तुंतो निष्केवल जूंनोज घर छो के मुनिछो? एवुं हास्यनुं वचन त्रणवार बोल्यो एटले वेश्यायनने क्रोध चड्यो तेवारे गोशाला उपर तेजोलेश्या मूकी ते जोइ भगवानने करुणा आवी तेंवारें भगवाने तेने साहामी सीतलेश्या मूकी तेथी गोशालो बल्यो नही

तपसीये पण ज्ञगवाननो प्रताप जाणी ज्ञगवानें खमाव्या पठी गोशालायें ज्ञगवानने पूठ्युं के तेजोलेश्या केम प्राप्त थाय तेनो ज्ञपाय बतावो तेवारें ज्ञगवान बोल्या के बेलानी तपस्या करे एटले ठठ करीने पारणे एक मुठी अडदना बाकुला खाइने तेना ज्ञपर एक पसलीज्ञर ज्ञष्ण पाणी पीये, सूर्य साहामो ज्ञज्ञो रहे, एरीते ठ महीना सुधी करे तो ठेवट तेजोलेश्या पुरुषनें ज्ञपजे आंही केटलाएक कहे ठे सिद्धार्थ व्यंतरे ए विधि कह्यो ठे. गोशाले पण ए सामान्य विधि धारण करी लीधो ॥ हवे ज्ञगवान कूर्मगामथी सिद्धार्थपुरें आवतां रस्तामां पूर्वे कहेलुं तलना ठाडने ज्ञगेलुं थंजरूप देखी तेने गोशालें विदार्युं तेमां सातपुंज तल दीठा तेवारे सर्व सत्य मानीने गोशाले विचार्युं जे थवा वालुं होय ते जरुर थाय एवीरीतें मानीलइने दृढनिश्चय वादी थयो ए मत निरधार करी लीधो तेवार पठी गोशालो ज्ञगवानथी जूदो रह्यो अने सावडीनगरीयें आवी तेजोलेश्या साधि तेपण सिद्ध थइ, तथा दिशाचरोनी पासेथी अष्टांग निमित्त शीख्यो ते जिन नही एटले तीर्थंकर नहतो तोपण लोकोने कहे ढुं तीर्थंकर ठुं एवीरीतें तीर्थंकर नाम धरावतो पोतानी सिद्धाइ लोकोनी आगल देखाडतो थको ज्ञगवानथी न्यारो सावडी नगरीयें फरे ठे ॥ एवामां ज्ञगवान पण विचरता विचरता दशमुं चोमासुं सावडी नगरीयें आवीने रह्या अने तिहां अनेक प्रकारनां तप कर्यां ए दशमुं चोमासुं जाणवुं ॥ १० ॥ हवे ज्ञगवान चोमासुं पुरुं कर्या पठी विचित्र तपें विचरता थका ॥ ज्ञक्तंच ॥ दृढज्ञूमि बहुमिढा, पेढालु जाणमागयो ज्ञयवं ॥ पोलास चेइयंमि, विएगरायं महापडिमं ॥ १ ॥ सक्कोइय देवराया, सज्ञागज्ञ ज्ञणइ हरिसीज्ञ वयणं ॥ तिन्निविलोग समढा, जिणवीरं मणं चलेज्ञजे ॥ २ ॥ सामाणिय संगमज्ञ, देवो सक्कस्समो अमरिमेण ॥ अह आगज्ञ तुरंतो, मि


चित्र ५६
भगवानने संगमो देवता उपसर्ग करेछे
यक्षनु मदिर

ब्रदिठि पडिनिविठो ॥ ३ ॥ ॥ हवे जगवान दृढ एटले करणजूमिने विषे बहुम्लेछ जिहां वसे ठे एवा म्लेछना देशमां गया तिहां जगवानने कुतरा प्रमुखें करड्या ठें एवा बीजा पण अनेक प्रकारना करण उपसर्ग थया ठे ते सर्व सहन कस्या पठी एकदिवस जगवान पेढाल नामा ग्रामना उद्यानमां पोलास नामा कोइएक देवनो चैत्य ठे तेने विषे अठमतपें सहित एक रात्रि महाप्रतिमायें रह्या ठे एवामां शक्रेंद्र देवताउनो राजा ते पोतानी सजाने विषे रह्यो थको जगवानना धीरपणानी प्रशंसा करे ठे के जो त्रणलोक जेगा थाय तोपण श्रीवीरप्रजुने चलाववानें समर्थ थाय नही एवुं प्रजुनुं सत्व ठे एवुं इंद्रमहाराजनुं वचन सर्व देवतायें सत्य करी मान्युं परंतु एक संगम नामे सामानिक देव मिथ्यादृष्टि अजव्यजातिनो ठे तेणे अमर्ष आणीने विचार्युं जे मनुष्यने चलाववुं मगाववुं एकांइ महोटी वात नथी एवुं चिंतवी इंद्रमाहाराज पासें बोल्यो के हुं एक क्षणवारमां चलावी आवुं एवुं कही इंद्रनां वचन अणमानतो थको चलाववानी प्रतिज्ञा करीने तुरत प्रजु पासें आव्यो तेणे आवीने एक रात्रिमां महोटा वीश उपसर्ग प्रजुने कस्या तिहां प्रथमतो धूल उडावी धूलनो वरसाद करीने प्रजुनां श्वासोश्वास रुंध्या, पठी बीजो वज्रना जेवां मुखवाली कीडीयो विकूर्वीनें प्रजुना शरीरनें चुंटाव्युं करडाव्युं चालणी जेवुं शरीर कस्युं, पठी त्रीजुं वज्रना जेवा मुखवालां मांस मछर विकूर्वीने प्रजुना शरीरने करडाव्युं, चोथुं घीमेल कीडीयो बनावीने चुंटाव्युं, पांचमुं वांठी बनावीने शरीरने करडाव्युं, ठठुं सर्पनां रूप करीने मसाव्युं, सातमुं नोलीयानां रूपबनावीने मुख अनें नखथी शरीरने विदारण कराव्युं, आठमुं उंदरोनां रूप बनावीने शरीरने करडाव्युं, नवमुं हाथी अने हाथीउना रूप करीने सुंढथी उंचा उगाल्या, दशमुं दांत

अने पगथी शरीर मर्दन एटले शरीरनें कचराव्युं, अगीआरमुं पिशाचोनां रूप बनावीने अट्ट
हास्य करी बीवराव्या, बारमुं सिंहनुं रूप करी नख माख्या, शरीर फाड्युं, तेरमुं सिद्धार्थ पिता
तथा त्रिशला मातानां रूप करीने विलाप करतो बोल्यो के हे पुत्र! अमे ताहारां माता पिता
आव्यां बैयें माटे तुं दुःख देखीशमां अमारी साथे आव अमे तुने सुख करी आपीशुं, चौदमुं
तीक्ष्ण चांच वालां पंखीनां रूप विकूर्वीने प्रज्जुना कान अने मुखनुं मांस खवराव्युं,
पन्नरमुं चांमालनां रूप करीनें तर्जना करी, सोलमुं लाकडा खंधा बाली करीनें बेहु पग उ
पर हांमी चडावी उपर खीर रांधी, अग्निथी बाल्या. सत्तरमुं प्रचंम वायरे करी जगवंतने
ऊंचा उगलीने पाठा नीचे जमीन उपर पटकी दीधा, अढारमुं कलिकाल वायरो विकूर्वीने जे
वायरो जगवानने चक्रनी पेरें जमाडे तेरीतें जमाड्या, ते पढी उंगणीशमुं हजार जार प्रमाण
लोखंमनो गोलो बनावीने जगवानना मस्तक उपर नाख्यो तेणे करी जगवान केडसुधी केट
लिक प्रतोमां ढींचण सुधी नूमिमांहे पेसी गया एवं उपसर्गथी जो बीजो कोइ गमे तेवो बलवान
होय तो पण चूरण थइ जाय पण एतो तीर्थंकरनुं शरीर ढे तेने कांइ पण थयुं नही, वीशमुं
रातनी वखतें दिवस करी देखाड्यो अने संगमो बोल्यो के हे देवार्य! प्रजात थयुं माटे हवे
विहार करो, गोचरी जाउ ते वखत जगवाने अवधिज्ञाने करी रात्रि जाणीने विचार्युं जे ए
देवकृत चरित्र ढे वली संगमाये देवतानी ऋद्धि देखाडी देवांगनानां रूप करी हाव जाव दे
खाडी अनुकूल उपसर्ग कख्या अने वली बोल्यो के तमोने जोइये ते वर मागो जो स्वर्ग मागो
तो स्वर्ग आपुं एवुं कह्युं तो पण कोइ रीतें जगवान जगारमात्र मग्या नही चलायमान थया
नही एम महाविकट एवा वीश उपसर्ग एक रात्रिमां संगमे कख्या पढी जेवारे जगवान

गाममां गोचरी करवा जाय तेवारे ते घरनो आहार अशुद्ध करी आपे जे भगवानने लेवो कल्पे नही एवो करी नाखे तथा हरहमेश गाममांथी चोरी करीने ते चीज भगवान आगळ मूकी जाय तेथी लोक भगवानने मार आपे कलंक चडावे वळी भगवाननो चेलो बनीने गाममां कोइकोइ लोकोनां छिद्र जोवा जाय जेवारें लोक पूछे के तुं शावास्ते आंही आडो अवळुं जोयां करे छे तेवारे तेने कहेके महारो गुरु रात्रिये चोरी करवा आवशे ते माटे हुं आगळथी जोइ राखुं छुं ते सांभळी लोक आवीने भगवाननें मार आपे एवो उपसर्ग थयेलो जोइने भगवाने अभिग्रह कर्यो के जिहांसुधी आ उपसर्ग मने थाय छे तिहांसुधी महारे आहार पाणी लेवुं नही वळी ते संगमो केटलिएक गामनी स्त्रीयो भगवान साथे मळती छे एवुं लोक माने तेवुं करी देखाडे तेवुं छतां पण तिहां भगवान एकांत स्थाने रह्या एवा छ महीनासुधी उपसर्ग कर्या तो पण इंद्रमहाराजे तेने उपसर्ग करताने वार्यो नही केमके इंद्रमहाराजें एवुं विचार्युं जे हुं एनें वारीश तो ए कहेशे के हुं तो भगवंतनें चळायमान करत पण शुं करुं के तमे मने वर्जना करी तेथी लाचार थयो एवो अपवाद टाळवा सारुं इंद्रें तेने कांइपण कह्युं नही तोपण जिहांसुधी एणे उपद्रव कर्या तिहांसुधी इंद्रें श्वास लीधो नही, मनमां घणोज उदास रह्यो, बीजां पण सर्व देव देवीयो शोकमां निस्तेज थकां बेशी रह्यां एम करतां छ महीनानी अंते ते संगमो देवता पोतानी मेळे पोतेज हार खाइनें बोल्यो के हे आर्य! तमे सुखेथी गोचरी करो हुं हवे बिलकुल उपसर्ग करीश नही तेवारें भगवाने कह्युं हुं महारी इच्छायें गोचरी जइश एवी रीतें हारीने संगमो स्वर्गमां गयो, इंद्रमहाराजें तेनुं मुख पण जोयुं नही लाकडीयोथी कुटावी मार मराव्योनें स्वर्गमांथी काहाडी मूक्यो, ते ति

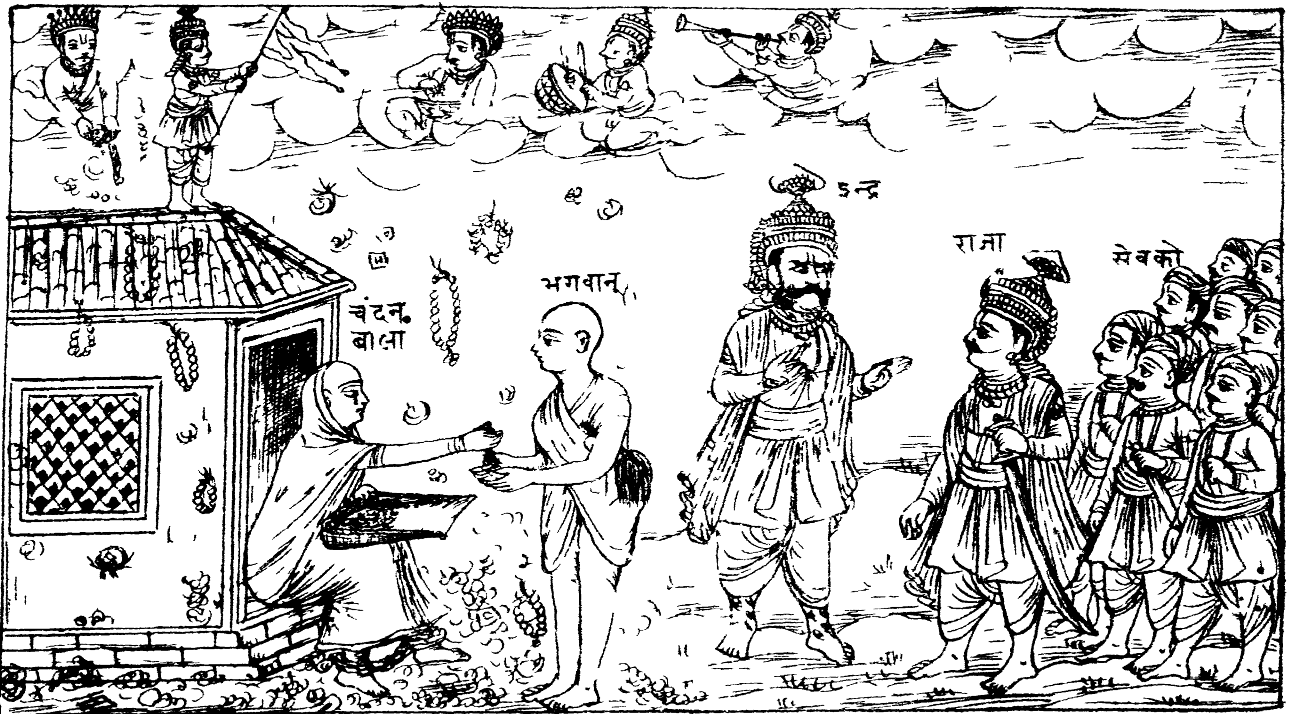
हांथी निकलीने पोतानी देवांगनाउं साथें लइने मेरुपर्वतनी चूलिकायें आवी रह्यो, एनुं एक सागरोपमनुं आयुष्य छे, अने ए अनव्यजीवनी जाति छे एवुं कहेवाय छे. एम प्रभुनें दशमा वर्षने विषे घणा उपसर्ग थया पछी प्रभुयें छमासी तपनुं पारणुं वज्रगाममां गोपालकनें घरे खीरनां नोजने कर्युं. घणी प्रतोमां गोकुलने विषे वत्सपालीनामें वृद्ध स्त्रीयें तथा परमान्ने पारणुं कराव्युं कह्युं छे तिहां पांचदिव्य प्रगट थयां. वली चोसठ इंद्रादिकोयें प्रभुने देवोये आवीने प्रभुने सुखशाता पूछी सावछी नगरीयें शक्रेंद्रें प्रतिमामां प्रवेश करीनें प्रभुने वांद्या लोकोये देखीनें नगवाननो महिमा कर्यो ॥ हवे अगीआरमुं चोमासुं नगवाने विशाला नगरीमां कर्युं, तिहां जीर्णशेठें नावना नावी के नगवान नातपाणीनो लान देजो एवीरीतें चार महीनां पर्यंत नावना नावी तोपण मिथ्यात्वी पूरणशेठें दासीने हाथे अडदना बाकुला आप्या ते लइने नगवाने तेने घेर पारणुं कर्युं तिहां पंचदिव्य प्रगट थयां तेवारें लोक सर्व पूरणशेठने धन्य छे धन्य छे एम कहेवा लाग्या अने जीर्णशेठें जाण्युं जे हुं नाग्यहीण तेथी महारे एवो योग किहांथी मले, एम पश्चताप करतो रह्यो पछी केटलेक दिवसे केवली. नग वान ते गाममां पधार्या तेवारें राजा प्रमुखें पूछ्युं के महारा नगरमां नाग्यशाली कोण छे? केवलीबोल्या के जीर्णशेठ नाग्यशाली छे राजायें पुछ्युं नगवानने दानतो पूरणशेठें दीधुं छे? केवली बोल्या एणे नावविना दान दीधुं छे माटे तेने द्रव्यथी लान थयो छे अने जीर्णशेठें नावथी दान दीधुं छे माटे बारमो देवलोकनुं आयुष्य बांध्युं छे ए अग्यारमुं चोमासुं कर्युं ॥ ११ ॥ हवे नगवान तिहांथी विहार करीने सुसमारपुरे प्रतिमास्थित काउस्सग्गें रह्या तेव खतें चमरेंद्रनुं सौधर्म देवलोकें जावुं थयुं छे अने ते चमरेंद्रें प्रभुनुं शरण लीधुं छे ए अधिकार



चित्र ४४
जीरण शेठनुं घर
भगवान्
पूरणशेठनु घर
भेंसो

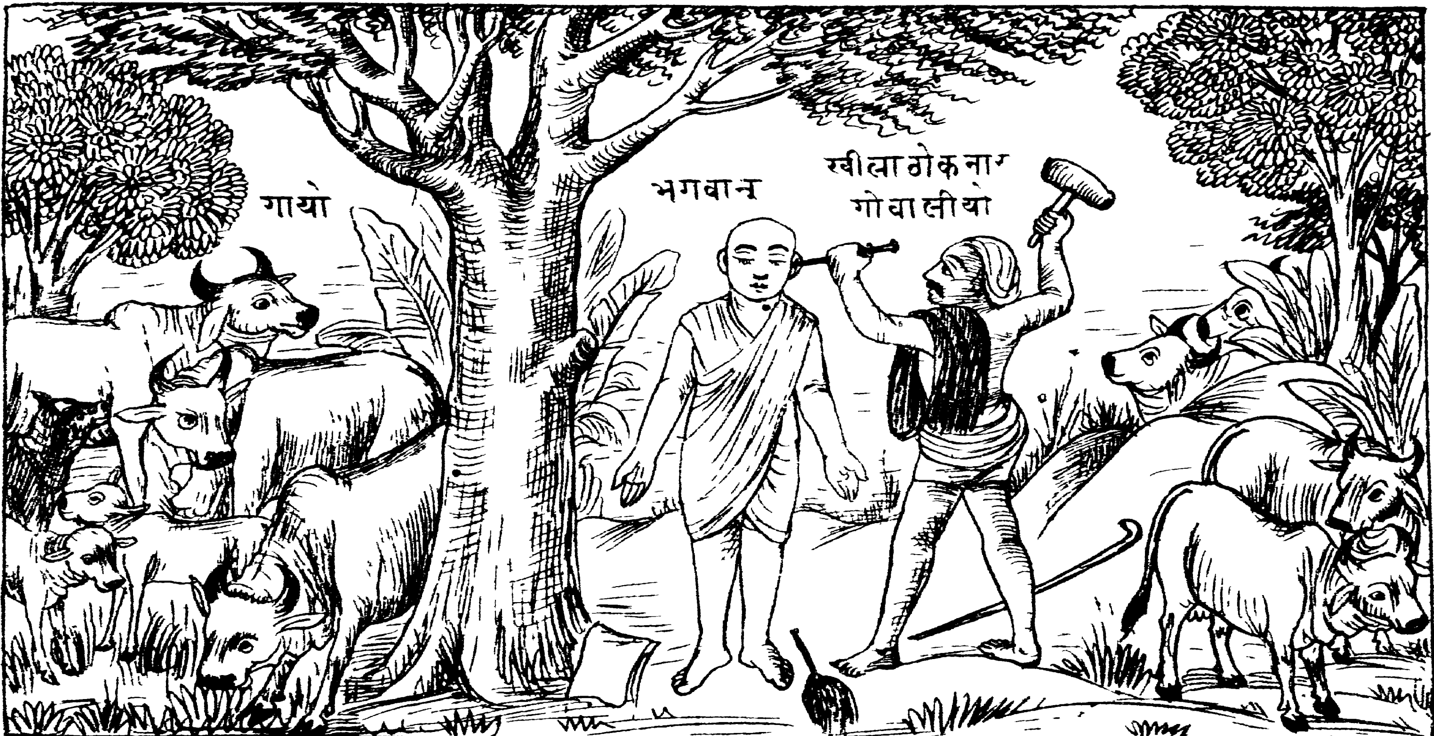
आगल दश अछेरानी वातमां सविस्तर आवी गयो छे माटे आहीं लख्यो नथी. तेवार पछी अनुक्रमें चंदनवालायें प्रजुने पडिलाज्या छे एटले जगवंतें कांइक कर्म शेष रह्यां जाणी कोशंबीनगरीने विषे पोष वदि एकमना दिवसें पोतानी इछाथी एवो अजिग्रह कीधो छे के १ इव्यथीतो सूपडानां खूणामां अडदनां बाकला राखेला होय, २ क्षेत्रथी एकं पग घरनी मेलीनी मांहेली कोरे होय अने एक पग मेलीनी बाहेर रह्यो होय ३ कालथी सर्व जिक्षुक लोक जिक्षा मागी जाय ते पछी ४ जावथी राजानी पुत्रीहोय परंतु दासपणुं पामेली होय, ५ माथुं मुंमेलुं होय, ६ जेनां पगमां बेडीयो पडेली होय, ७ अठम तपकर्युं होय ते वली रुदन करती बेठी होय एवी स्त्री जो बे पोहोर दिवस चडे मध्यान्ह पछी जिक्षा आपे तो महारें पारणुं करवुं एवो अजिग्रह करीने श्रीवीरजगवान् गोचरियें नित्य ज्रमण करे पण क्यांय एवो योग बने नही त्यां राजानां मंत्रीश्वर प्रमुखें अनेक उपाय कर्या पण कोइरीतें प्रजुनो अजिग्रह पूर्ण थाय नही एवा अवसरमां चंपानगरीनो दधिवाहन नामें राजा तेनी धारणी नामा स्त्रीनी वसुमतिनामा पुत्री छे तेनुं अपर नाम चंदनबाला छे हवे कोशंबी नगरीनो संतानिक नामें राजा छे तेणें राज्यविरोधें लशकर लेइ चंपानगरीने लूटी तेवारे दधिवाहन राजा नाशी गयो अने धारणी राणी तथा चंदना ए बे कोइ एक संतानिक राजानो पायदल सेवक हतो तेना हाथमां आवी तेणे धारणीने कह्युं के तने हुं महारी स्त्री करीश ते सांजली धारणी राणी तो पोतानी जीज चांपीने मरण पामी पछी सुजटें विचार्युं जे रखेने आ छोकरी पण मरी जाय एवुं जाणी तेने विश्वास आपीने कोशंबी नगरीनां चोवटा मांहे ते चंदनबालानें वेचवा गयो तेने वेश्या लेवा आवी तेवारे चंदनायें पूछ्युं तमारो शो आचार छे वेश्या बोली उत्तम पुरुष साथे

प्रीति करवी जलां मन मान्यां नोजन करवां, ए अमारो आचार छे. तेवारें चंदना बोली ए म
हाराथी न थाय तथापि ते वेश्यायें बलात्कारें लेवा मांमी तेवारें शासन देवीयें वेश्याना कान अने
नाक छेदी नाख्यां वेश्या नाशी गइ पछी धनावहनामे शेठ जिनधर्मी हतो तेणे मूल आपी चंदनाने
वेचाती लइ पोताने घेर तेडी आव्यो अने चंदना एवुं नाम आपी पुत्री पणे थापी, पण चंदनानुं सु
रूप देखी धनावहशेठनी मूलानामा वांजणी कुहाड स्त्री छे ते मनमां द्वेष राखवा लागी के रखेने
ए माहारी शोक थाय ! तेमाटे प्रथमथीज कांइ उपाय करुं तो सारुं पछी एक दिवस शेठना पग
पखालतां चंदनाना माथानी वेंणी धरतीयें पडी तेने शेठें उपाडी उंची करी ते पेहेली डुराचार मूला
स्त्रीयें दीठी अने मनमां चिंतववा लागी जे शेठ एनी वेणीयें मोह्यो देखाय छे मुखथी तो
पुत्री कहे छे पण एने स्त्री करी राखशे एमां संदेह नथी केमके हुं हवे बुढी थइ छुं अने ए स्वरूप
वती छे. पछी एक दिवसें शेठ कोइएक गामें गया पछवाडे मूलायें चंदनानुं मस्तक मूंमावी
हाथ पगमां बेडी घाली धूसानुं वस्त्र पहेरावीने छाणा प्रमुखना उंरडामां बेसाडी पोते
घरने बारणें तालुं आपी पोतानें पीयरें जती रही हवे चंदना तो उंरडासां बेठी नवकार. गणे
छे पोताना करेला कर्मने निंदे छे एम करतां चोथे दिवसें शेठ फरी पोताने घेर आव्यों तिहां
चंदनबालाने दीठी नही, तेवारे पडोसी लोकने पूछवा लाग्यो पण पहेली कजीयाखोर मूलानी
बीकथी कोइ जवाब आपे नही पछी एक मोकरीयें सर्व वात कही तेवारें शेठें तालुं उघाडी उंर
डामांथी बाहेर काहाडी मेलीमां बेसाडीने कह्युं के हुं लोहारने बोलावी लावुं छुं ते ताहारी
बेडीयो उघाडशे चंदनायें कह्युं हुं नूखें मरुं छुं तेवारें शेठें अडदना बाकला एक सूपडाने खूणे
नाखी चंदनाने आणी आप्या अने कह्युं के तुं त्रण दिवसनी नूखी छो ते आ बाकला खाजे हुं

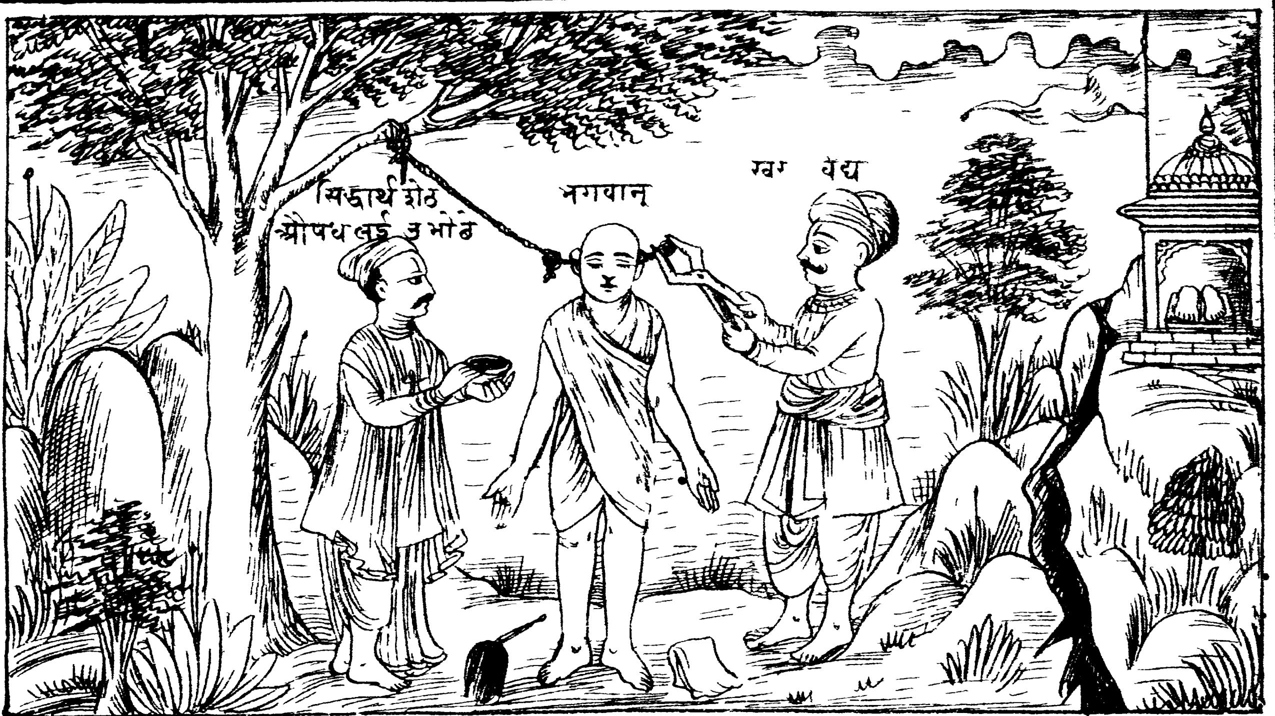

चित्र ४५
इन्द्र
राजा
सेवको
भगवान्
चंदन.
बाला

बेडी काहाडवा सारुं लोहारने तेडी आवुं छुं एम कही चंदनाने पूर्वली अवस्था सहित उंबरे बेसाडी पोते लोहारने तेडवा गयो पछवाडे शुद्धसम्यक्त्वनी धरनारी चंदना सती चिंतवे छे जे कोइ अतिथि आवे तो तेने ए वोहारावी आपुं एवामां मध्यान्ह वीत्या पछी प्रभु पधा र्या तेने देखी चंदनबाला हर्षवंत थइ थकी बाकला देवा लागी परंतु प्रभुयें लीधेला अभिग्र हना चार भेद तो मलता दीठा पण पांचमुं रुदन दीठुं नहीं तेथी पाछा वल्या तेवारें चंदना दुःख धरती थकी रुदन करवा लागी जे साधु पण महारा हाथनो आहार लेता नथी माटे मने धिःकार छे पछी भगवंते रुदन करती देखी पोतानो संपूर्ण अभिग्रह थयो जाणी ते अ डदना बाकला लीधा तिहां देवतायें पंचदिव्य प्रगट कर्यां बेडी भांगीने नेउर थयां मस्तकें वेणी पाछी आवी इंद्रमहाराज आव्या, चंदनानी मातानी बहेन मृगावती ते चंदनानी मासी थाय तेना संबंधथी संतानिकनामे राजा धन लेवा लाग्यो तेने इंद्रे वार्यो अने कह्युं के चंद नाने दीक्षा लेवानी वखते ए धन काममां आवशे, चंदनायें कह्युं ए धन धनावह शेठनें स्वाधीन करो तेने आपीने इंद्र बोल्यो भगवाननी प्रथम साधवी ए चंदना थाशे एम कही इंद्र स्वस्थानके गयो आहींआ पांचदिवसें उणा छम्मासी तपनुं प्रभुने पारणुं थयुं वली कोइक प्रतमां एम कह्युं छे के वसुधारानी वृष्टि आपणे घरे थइ एवुं सांभलीने मूला पोताना पिय रथी छटति छटति कसति कांचलीने जेम तेम बांधती तिहां आवी पछी महोटो जोलो बाल ती उतावलमां खोला भरीने धन उपाडवा मांड्युं तें उपाडतां अग्निज्वाला उठी वस्त्र सर्व बली भस्म थयां श्याम वदन थइ थकी जाती हवी तेने देवतायें तर्जना करी कह्युं के ए द्रव्य चंदनबालानुं छे चंदनायें ते धन शेठने आप्युं शेठें ते सर्व धन चंदनानी दीक्षाना म

होत्सवें खरच्युं छे. पछी भगवान षण्माजिनिका गामे कायोत्सर्गें रह्या तेवारें इंद्रमहाराज वां
दवा आव्या अने बोल्या के हे भगवान! आपने आटला दिवस पछी अमुक दाहाडे केवलज्ञान
उपजशे एवुं कहीने गया. हवे प्रभु विचरता अनुक्रमें चंपा नगरीयें स्वातिदत्त ब्राह्मणनी शा
लायें बारमुं चोमासुं रह्या ए बारमुं चोमासुं ॥ १२ ॥ ॥ पछी तिहांथी पारणुं करीने भग
वान विचारता षण्मानिक गामें आवी बाहेर उद्यानमां काउस्सग्गें रह्या ॥ ते अवसरमां भग
वंतना कानमां गोवालियें खीला ठोक्या ते उपसर्ग कहे छे. प्रभुयें त्रिपृष्ठ वासुदेवने भवें शय्या
पालकना कानमां तरुउं उष्ण करी नखाव्युं हतुं ते कर्म अहीआं प्रभुने उदयें आव्युं, ते शय्या
पालक अनेक भवभ्रमण करी हमणां गोपालक थयो छे, तेथी ते वैरने लीधे तेणे गोवालीये
प्रभुने बलद भलाव्या पोतें गाममां गयो त्यांथी पाछो आव्यो तेवारें बलद न दीठा, पछी बलद
जोवा सारु चार प्रहर रात्रि भम्यो प्रभातें आव्यो तो भगवंत पासे बलद बेठा दीठा, ते वखत ते
गोवालीयानें पूर्वभवना वैरथी द्वेष उपन्यो तेथी भगवंतना कानमां खीला बेसाड्या, जेम कोइ
देखे नहीं कोइने खबर पडे नही तेवीरीतें बाहेरथी कापीने सरखा करीदीधा ते खीला जेना
तीर थाय छे एवा शरकट वृक्षना अग्र कापीने कानमां ठोक्या तेथी भगवंतने महावेदनां प्राप्त
थइ तेनायोगें अत्यंत कृश थइ गया पछी भगवंत तिहांथी विहार करता मध्यम अपापायें सिद्धार्थ
वणिकने घेर गोचरीयें पधार्या तिहां खरक वैद्य बेठो हतो तेणे मार्गानुसारें प्रभुने सशल्य दीठा ते
वारें शेठने कहेवा लाग्यो के भगवाननें व्यथा छे.शेठे कह्युं तो ए व्यथा मटावी आपवानो लाभ तमे
कां लेता नथी? पछी शेठ अने वैद्य बेहु प्रभुनी पछवाडे गया तिहां वैद्यें विचार करी बे साणसा
लइ बे वृक्षोनी वच्चे वृक्षोनी डालीयो रेसमथी बांधी कान मांहेली खीली साणसामां पकडीने


चित्र ४६
गायो
भगवान्
खीला ठोकनार
गोवालीयो

चित्र ४७



रेसमनी दोरीयोथी बे बाजुंयें वे वृक्षोनी मालोमां बांध्यां पछी ते बेहु मालीयो एकज वखतें साथेज छोडी तेथी बेहु कानना खीला तरत साथेंज नीकली आव्या एम बुद्धिना प्रपंचें करी खी लातो काढाव्या पण तेवखते प्रभुने वेदना एटली थइ के ते वेदनाना योगथी हांकमारी अर डाट मूक्यो वनमां घोराकार शब्द थयुं तेथी पर्वत फाटी पड्या ते पर्वत हालमां बंभणवाड गामनी पासें छे त्यां बंभणवाड तीर्थ थयो. प्रभु मूर्छापामी धरतीयें पड्या तेने बे पुरुषे उ पाडी बेसाड्या एम लोको कहे छे परंतु तीर्थंकरने एवुं संभवे नही ते उपरथी अनुमान क रीयें छैयें के कायाना व्यापारथी हांक थइ हशे पण भावथी थयेली जणाती नथी "अनंत बलित्वात्" ए वचन उपरथी निरधार थाय छे पछी काननी उपर व्रणसंरोहिणी औषधी ल गावी तेथी ते घाव मली गयो समाधि थइ ते शेठ अने वैद्य बेहु मरण पामी देवलोकें गया, गोवालीयो मरी सातमी नरकें गयो ए रीते भगवानने ए छेहलो महोटो उपसर्ग गोवालीये कर्यो हवे भगवानने जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्ट एवा त्रण प्रकारना उपसर्ग थया तेमां कया कया जातिना उपसर्गमां महोटामां महोटो उपसर्ग कयो कयो थयो ते कही देखाडे छे प्रथम जघन्य उपसर्गोंमां तो शीत परीसहनो महोटो उपसर्ग व्यंतरीयें कर्यो तथा मध्यम उपसर्गों मांहे संगम देवतायें महोटो उपसर्गकर्यो, अने उत्कृष्ट उपसर्गोंमांहे महोटो उपसर्ग कानमां खीला ठोकाणा तथा खीला काढयानो थयो ए रीतें भगवाने बारवर्ष सुधी काया वोसरावी जेम कोइ पुरुष गाय दोहोवाने बेसे तेवे आसने प्रभु बेठा पण कोइ दिवसें धरतीयें बेठा नही ॥ तेमां मात्र बे घडी शूलपाणि यक्षने देहेरे निद्रा करी बाकी सर्वकालनिद्रा विनानुं गयुं एम श्रीवीरप्रभुनें घणा उपसर्ग सहन करवा पड्या अने श्रीऋषभदेव तीर्थंकरने एक वर्ष सुधी

निद्रा मली नही एटलो उपसर्ग थयो तथा मध्यम बावीश तीर्थंकरने स्वल्प उपसर्ग थया ले ॥ हवे नगवान जेवारे आगार एटले घर तेणे करी रहित एवा अणगार थया तेवारे एक चाल वानी ईर्या समिति एटले जोइने चाले, बीजी नाषा समिति एटले विचारीने बोले, त्रीजी एषणा समिति एटले दोष रहित आहार लीये, चोथी आदाण नंमंमत्त निरकेवणा समिति एटले नांम मात्रां प्रमुखने जोइने जयणायें ग्रहण करे तथा जयणाये मूके, पांचमी उच्चार प्रश्रवण खेलजल्ल सिंघाणपारिष्ठापनिका समिति एटले वलो, मात्रो, खंखार अने सेमो ए सर्व निर्जीवस्थानकें परठवे ए पांच समितियें समता होता हवा पण श्रीतीर्थंकरनो आहार निहार कोइनां दीठामां आवे नही, कोंइना जाणवामां आवे नही, खेल, नाकमल, खंखार, होयज नही केमके एने रोगनो अनाव ले वली नगवान मन, वचन अनें कायाने कुकर्ममां न चलावता हवा मन वचन कायानें नलीरीतें वर्त्तावव्वाथी त्रण समिति सहित थया ॥ वली नगवान मनगुप्ति, वचनगुप्ति अने कायगुप्ति ए त्रण गुप्तियें गुप्ता होताहवा, वली नगवान इंद्रियोने गोपवी नववाड सहित शील राखता हवा, वली क्रोध मान माया अने लोनरहित, घणाज शीतल स्वनाववाला, जेमने क्रोधादिक उपशांत थइ गया ले एवा ले, वली जेणे पापने रोधि मूक्यां ले, निराश्रव थया ले, ममत्त्वरहित, धनरहित, ग्रंथरहित होवाथी निर्ग्रंथ थया ले जेम कांसानां पात्रने पाणी लागे नही तेम नगवान पण निर्लेप स्नेह रहित ले, जेम शंखने रंग लागे नही तेवा निरंजन ले तथा कोइ उपर राग नही द्वेष नही माटे रागद्वेष रहित, जेमजीवनी गति क्यांय रोकाती नथी तेम नगवानने क्यांयजातां गति हणाती। एटले नगवानने विहार करवामां कोइ रोकी शके नही,आकाश जेम निरालंब ले तेम नगवान पण कोइनो आधार राखता नथी,

वायरानी पेरें अप्रतिबद्ध विहार करें, शरदरुतुना मेंघ समान जेनु हृदय निर्मल ठे कमलनां पत्रनी पेरें निर्लेप जाणवा, काचबानी पेरें इंड्रियोने गोपवी राख्यां ठे, वली खम्गी नामनुं जानवर थाय ठे तेना शिंगडानी पेरें एकलाज ठे, पंखी जेम पोतानी पासें कांइ पण परिग्रह राखे नही तेम जगवान पण पोतानीपासे कांइ पण परिग्रह राखे नही, जारंमपंखीनी पेरे अप्रमत्त, हस्तिनी पेरे कर्मरूप शत्रुउने मथन करवामां महापराक्रमवंत, वृषजनी पेरे संयमरूप जार निर्वाह करवाने सामर्थ्यवान, सिंहनी पेरें परिसह जीतवामां डुर्द्धर, मेरुनी पेरे अचल अकंप चलायमान थाय नही एवा ठे, समुद्रनी पेरे गंजीर ठे, चंड्मानी पेरे सौम्यले श्यावंत ठें, वली सूर्यनीपेरे दीपतुं तेज ठे जेनुं, तपाव्या कुंदनना सोना सरखा जातरूप ठे, पृथ्वीनी पेरें सर्व फरस सहन करनार ठे, घृते होमेला अग्नि सरखा तेजे करी जाज्वल्यमान ठे, तेथी जगवानने क्यांये प्रतिबंध नथी, हवे जेनो प्रतिबंध नथी ते प्रतिबंध चार प्रकारनो ठे ते कहे ठें प्रथम ड्व्यथकी प्रतिबंध त्रण प्रकारनो ठे तेमां एकतो मातापिता पुत्रादिक ते ड्व्य थकी सचित्त प्रतिबंध जाणवो बीजो घरेणा प्रमुखनो प्रतिबंध ते ड्व्यथी अचेत प्रतिबंध जाणवो, त्रीजो शणगार करेली स्त्री प्रमुखनो प्रतिबंध ते मिश्रप्रतिबंध जाणवो एरीतें ड्व्यथकी त्रणे प्रकारनो प्रतिबंध जेने नथी माटे ममत्व रहित ठे. वली बीजो खेत्रथकी प्रतिबंध ते गाम, नगर, उज्जड, खेत्र, खलां, घर, घरनां आंगणां, आकाश इत्यादिक कोइनी उपर महारा पणुं नथी माटे प्रतिबंध नथी, त्रीजो कालथी प्रतिबंध ते समयने विषे, आवलिका, श्वासोश्वास, सातश्वासोश्वासें एक स्तोक, क्षण, सातस्तोकनो एक लव, बे घडीनुं मुहूर्त्त, त्रीशमूहूर्त्तें एक अहोरात्रि, पन्नर अहोरात्रीयें एक पक्ष, बे पक्षें एक मास, बे मासे एक रुतु, त्रण रुतुनुं एक अयन, बे अय

ननुं एक वर्ष, पांच वर्षनो एक संवत्सर, इत्यादिक बीजा पण दीर्घ कालने विषे कोइ वखत आ अमुक काम हुं करीश एवो प्रतिबंध नथी तथा चोथो जावथी प्रतिबंध ते क्रोध, मान, माया, लोज, जय, हास्य, राग, द्वेष, वचन युद्ध, खोटुं कोइने कलंक आपवुं, चुगली करवी, परना दोष प्रगट करी कहेवा, अरति द्वेष, रति प्रीति, कपटथी बोलवुं, मिथ्यात्वशल्य ॥ ग्रंथाग्रंथ ॥ ६०० ॥ ए काम करे तो जावथी प्रतिबंध कह्यो कहेवाय ते मांहेलो ए जगवानने विषे कांइ पण नथी ॥ ११७ ॥ ॥ वली ते जगवंतें वर्षादना कालविना शेष उनाला अने शीयालाना आठ महीनामां गामने विषे एक रात्रि अने नगरने विषे पांच रात्रि लगण रहेवुं एवो विहार कह्यो एवा थका विचरे तथा जेम कुहाडो चंदनने कापीनाखे पण चंदनतो उलटो कुहाडानी धारनें सुगंधज आपे अने जे नही छेदे तेने पण सुगंध आपे छे तेम जगवानने कोइ वांसले छेदे कोइ चंदने लेपे ते बेहुनी उपर समान सरखुं मन छे जेनुं वली तृण अने मणी तथा पाणो अने सोनुं ए बेहु समान छे जेने, दुःख अने सुख बेहु समान छे जेने, इहलोक अने परलोकनी गरज नथी जेने, जीववा अने मरवानी इछा नथी जेने, संसार समुद्रथी पार थवा वाला, कर्म रूप शत्रुनें मारवाने उजमाल थया एवा थका विचरे छे ॥ ११९ ॥ ॥ जे जगवाननां उत्कृष्ट ज्ञान दर्शन अने चारित्र छे, आदि रहित स्थान विहार पराक्रम आर्जव मार्दव अल्प उपधी क्षमा निर्लोजता गुप्ति मनप्रसन्नता ए सर्व काम उत्कृष्ट छे. साचो संयम तप करवाथी उपचय करेलुं फल निर्वाणमार्ग तेने विषे आत्माने जावता थका विचरे एवी रीतें जगवाननें बारवर्ष वीत्यां ॥ हवे जगवाने बारवर्षमां जे कांइ तप कर्युं तेनी संख्या तथा पारणां कर्यां तेनी संख्या कहे छे. एक संगम देवना उपसर्गमां छ मासी तप तेनुं पारणुं

एक. बीजुं पांच दिवसें न्यून छ मासी तप तेनुं एक पारणुं, नव वखत चारमासी तप कर्युं तेनां
नव पारणां, बे त्रिमासी तपनां बे पारणां, बे अढीमासी तपनां बे पारणा, छ दोयमासी
तपनां छ पारणां, बे दोढमासी तपनां बे पारणां, बार एकमासी तपनां बार पारणां, ब
होतेर अर्द्धमासी तपनां बहोतेर पारणां, बसेनें उंगणत्रीश छठ तप कर्यां तेनां बसेने उंगण
त्रीश पारणां, ए बेजानी तपस्या करतां पन्नरमहीनानें आठ दिवस तपस्यामां गया, भद्रप्र
तिमा दिन बे, महाभद्र प्रतिमा दिन चार, सर्वतोभद्र प्रतिमा दिन दश, ए त्रण प्रतिमानां
त्रण पारणां अनें तपना दिवस सोळ जाणवा तथा एक रात्रिकी प्रतिमा बार तेनां पारणां
बार. ए रीतें सर्व तपना दिवसो मेळवतां सरवाळे अगीआर वर्ष छ महीनानें पचीश दिवस
एटला सर्व दिवस निराहार पणे चउविहारा जाणवा एनां यंत्रनी स्थापना नीचें करी छे
तेमां बशेने उगणत्रीश छठ करी छे तेनां पारणा बशे उंगणत्रीश थयां तेमांथी एक छठ्ठनुं छेल्लुं
पारणुं केवळी पणे थयुं गणीनें बाकी बशे अठावीश पारणां लख्यां छे तथा बार एक रात्रिकी
प्रतिमाने स्थानकें बार अठ्ठम तप लखीने सरवाळे ४१६५ दिवस चउविहारा तपना थया
अने ३५० दिवस प्रथम पारणा सहित आहारना थया सर्वमळी ४५१५ दिवस छद्मस्थपणे
रह्या तेना एकवर्षमां ३६० दिवसनी संख्या करतां बार वर्षने साडा छमहीनां थाय. एरीतें भग
वानें नित्य भोजनतो रह्युं पण चोथ तप एटले एक उपवास करीने पण पारणुं कोइ वखत
कर्युं नही थोडामां थोडुं तप कर्युं तें पण छठ्ठनुं एटले बे उपवासनुं कर्युं छे ॥ यंत्र स्थापना ॥
हवे श्रीवीरचरित्रानुसारें छद्मस्थपणाना चोमासानी संख्या कहीयें छैयें. एक अस्थिग्रामें,
बीजुं नालंदी पाडे, त्रीजुं चंपानगरीयें, चोथुं पृष्ठचंपायें, पांचमुं भद्रिकायें, छठ्ठुं पण भद्रिकायें,

तपनां नाम.	केटला कर्या	एकंदरदिवसनीसंख्या.	पारणानी संख्या.
छमासी पूरण.	१	१८०	१
पंचदिवसूण छ मासी.	१	१७५	१
चारमासी.	९	१०८०	९
त्रणमासी.	२	१८०	२
अढीमासी.	२	१५०	२
बेमासी.	६	३६०	६
दोढमासी.	२	९०	२
एकमासी.	१२	३६०	१२
अर्धमासी	७२	१०८०	७२
प्रतिमा, अठ्ठमतप.	१२	३६	१२
छठ्ठतप.	२२९	४५८	२२८
भद्रप्रतिमा.	१	२	१
महाभद्रप्रतिमा.	१	४	१
सर्वतोभद्रप्रतिमा.	१	१०	१
सरवाळे.		४१६५	३५०

सातमुं आलंभिकायें, आठमुं राजगृहीयें, नवमुं वज्रभूमीयें, दशमुं सावथ्थियें, अगीआरमुं विशालायें, बारमुं चंपानगरीयें, एरीतें बार चोमासां प्रभुनां थयां ॥ हवे तेरमां वर्षने विषें वर्त्तमान थका उनालानो बीजो महीनो. चोथुं पखवाडयुं एटले वैशाखशुदि दशमने दिवसे पाछलो पोहोर दिवस रहे थके सुव्रतनामा दिवसे. विजयमुहूर्त्तमां जंभिक गामने बाहेर ऋजुवालुका नदीना तीर उपर वैयावर्त्तनामा चैत्यने घणुं दूर नही तेम घणुं ढूकडुं पण नही एवा स्थानकें सामक नामे गाथापतिना खेत्रमां शालिवृक्षने नीचें भगवान गोदुह आसनें एटले गायने दोहोवा बेसीये तेवा आसनें उकडा बेसी आतापना लेता थका पाणी रहित बेलानी तपस्यामां आत्मानें भावता एवा स्वरूपें रह्या थका उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां चंद्रमानो योग आवे थके ते अव

सरें ध्यानमां वर्त्तमान अर्थात् शुक्लध्यान ध्यावता थका नगवानने जे समान बीजुं कोइ ज्ञान नथी एवो व्याघात रहित, आवरण एटले ढांकणा रहित, सर्व इव्य पर्यायोने ग्रहण करवा वालुं संपूर्ण पूर्णिमानां चंइनी पेरें केवल एटले एकज पण बीजो कोइ जेने सहाय नही एवुं केवलज्ञान अने केवलदर्शन उत्पन्न थयुं ॥१२०॥ पठी नगवान श्रीमहावीरस्वामी अर्हन् एटले पूजनीय थया, राग द्वेष रहित थया, केवली थया, सर्व जाण थया, सर्वना देखवावाला थया, सर्व देव, मनुष्य, असुर लोकना पर्यायोने जाणे देखे, सर्वलोक सर्वजीवोनी आगति, गति, नवांतरमां जावुं, आयुष्य, देवलोकादिकोथी चववुं, देवलोकादिकोमां जइ उपजवुं, ते जीवोने मन, मनमां चिंतवेते, अन्न प्रमुख खाय ते, चोरी प्रमुख करे ते, मैथुनादिक सेवे ते, प्रकटकर्म करे तें, ठानुं कर्म करे करावे ते, इत्यादिक वातो मांहेली कोइ एक पण वात जेनाथी ठानी रहे नही एवा ज्ञानवान थया. जेनी जघन्यथी पण एक क्रोड देवता सेवा करे एवा थया, ते कालमां मन वचन कायाना योगमां वर्त्तमान सर्वजीवोना सर्व नाव जाणता थका, देखता थका नगवान विचरे ॥१२१॥ ॥ हवे नगवानने केवलज्ञान उत्पन्न थया पठी चोसठ इंइोनां आसन चलायमान थयां तेवारें चोशठे इंइ दिक्षा महोत्सवनी पेरे केवलज्ञाननो महोत्सव करवा आव्या ते महोत्सव करीने जांनिकागामनी बाहेर समोसरणनी रचना करी तिहां प्रज्ञुयें क्षणेकवार देशना आपी पण ते देशना निष्फल गइ कोइयें मात्र सामायिकादिक व्रत पण ग्रहण कस्यां नही तथा देव सर्वे अव्रति ठे तेणे नवकारशी प्रमुख पच्चरकाण पण कस्युं नही, "इदमपिआश्चर्यं" एटले ए पण आश्चर्य जाणवुं जे तीर्थंकर जेवानी देशना पण खाली गइ. तेवारे नगवाने लानो अनाव जाणी आगल लान थवानो अवसर जाणी तेज वखत तिहांथी विहार कस्यो. यतः

कहेतां जेमाटे कह्युं छे के ॥ श्लोक ॥ तत्रादिश्यक्षणंधर्मं, देवोद्योतेजगद्गुरुः ॥ लाजालावान्मध्य मायां, महीसेनवनेगमत् ॥१॥ ॥ अर्थः—जिहां केवलज्ञान उपन्युं तिहां नगवान जीत एटले तीर्थंकरनो आचार पालवा माटे एक क्षणमात्र धर्मदेशना आपीने देवोना उद्योतने विषे जग तना गुरु एवा वीरस्वामी लाजनो अजाव जाणी तिहांथी बार योजन मध्यम पावानगरी तेनो महसेन नामक वन तिहां आवता हवा एटले रात्रियें विहार करवानी मर्याद नथी अने एमणे विहार कर्यो ते कल्पातीत पणुं जणाववा माटे जे तीर्थंकर आचरे ते कल्पमां होय तथा कदापि नही पण होय. परंतु छद्मस्थ साधु तो जे प्रमाणे तीर्थंकरें कल्प कह्यो होय ते प्रमा णेज चाले पण जो तेथी विपरीत चाले तो प्रायश्चित्तने पामे वली रात्रिनो विहार ते जीवनी जयणानें अर्थे वर्ज्यो छे केमके रात्रियें कोइ जीव जोवामां आवे नही माटे इहां श्लोकमां देवोद्योत एवो पाठ कह्यो ते व्यवहार जणाव्यो अन्यथा तीर्थंकरनें तो ज्ञान उद्योत सदा सर्वदा छे. वली देवरचित कनककमल उपर पगला देतां चाले छे तेमाटे एमनुं चालवुं सदा रात्रि दिवस सरखुं छे पण एनुं दृष्टांत आपीने जे साधु रात्रिये विहार करे छे ते सुखशीलिया तीर्थंकरनी आज्ञा बाहिर छे माटें ते चारित्रथी भ्रष्ट जाणवा ॥ हवे नगवान मध्यमपावापुरीयें आव्या तिहां शुं थयुं ते कहे छे. जेवारें मध्यम पावापुरीयें वीर प्रभु पधार्या तेवारें देवोये विशेष समवसरणनी रचना करी तिहां नगवंत पूर्वने बारणें पेसी अशोकवृक्षने त्रण प्रदक्षिणा देइ सिंहासने बेसी " नमोतित्थस्स." एम कही धर्मोपदेश आपे इहां मंगलाचार जणाववा माटे तीर्थ एवुं सूत्रनुं नाम छे तेने नमस्कार करीनें पछी धर्मोपदेश करे हवे एहवामां तिहां एक सोमिल ब्राह्मण यज्ञार्थि यज्ञ एटले होम करावे छे

तिहां घणा ब्राह्मणो एकठा थयेला छे वली तेना तेड्या अगीयार महा पंडित सर्वशिरोमणि ब्राह्मण आव्या छे यतः ॥ अपापायां महापुर्यां, यज्ञार्थी सोमिलोद्विजः ॥ तदाहूताः समाजग्मु, रेकादशद्विजोत्तमाः ॥ १ ॥ ॥ अर्थः— अपापा नामनी महानगरी तेने विषे रहेनारो सोमिलनामा ब्राह्मण तेणें यज्ञकरवाने अर्थे अगीयार महोटा ब्राह्मण बोलाव्या ते तिहां आव्या छे " तेषां नामानि " एटले तेनां नाम कहे छे. १ इंद्रभूति, २ अग्निभूति, ३ वायुभूति, ४ व्यक्त, ५ सुधर्म, ६ मंडित, ७ मौर्यपुत्र, ८ अकंपित, ९ अचलभ्राता, १० मेतार्य, ११ प्रभास ए अगीयारे महापंडित, चौदेविद्यानां जाण, वेदपाठी, महाअभिमानी छे ते एवुं जाणे छे के अमारा जेवो जगतमां कोइ पंडित नथी तेम सर्वज्ञ जे लोक कहे छे ते अमेज छैयें हवे ते अगीयारे जणना मनमां जे अगीयार जुदाजुदा संदेह छे ते कहे छे ॥ पहेला इंद्रभूतिना मनमां जीव छे के नथी एवो संदेह छे, बीजा अग्निभूतिना मनमां कर्मनो संदेह छे, त्रीजा वायुभूतिना मनमां जीव अने कर्म जुदां छे के एक छे एवो संदेह छे, ए त्रणे संदेह वाला त्रणे जण सहोदर एटले सगा भाइ छे एमनुं गौतमगोत्र छे. चोथा व्यक्तना मनमां पंचभूतनो संदेह छे, पांचमां सुधर्मना मनमां जे जेहवो ते तेहवो एटले जे स्त्री होय ते मरीने बीजे भवे पण स्त्रीज थाय अने जे पुरुष होय ते मरीने पुरुषज थाय एवो संदेह छे, छठा मंडितना मनमां बंध मोक्षछे के नथी एवो संदेह छे, सातमा मौर्यपुत्रनां मनमां देव छे के नथी एवो संदेह छे, आठमा अकंपितना मनमां नरक छे के नथी एवो संदेह छे, नवमा अचलभ्रातना मनमां पुण्य पाप छे के नथी एवो संदेह छे, दशमा मैतार्यना मनमां परलोक छे के नथी एवो संदेह छे, अगीआरमा प्रभासना मनमां मोक्ष छे के नथी एवो संदेह छे. एवा अगीयारे जणने वेदना अर्थ

विपरीत समजवाथी संदेह रही गया छे. पोतापासें पंमिताइनुं बल घणुं छे माटे अभिमा नथी बीजानी वात चालवा देता नथी हवे ए अगीआरनी पासें जे छात्र जणे छे तेंनी संख्या कहे छे ॥ गाथा ॥ पंचएहं पंचसया, अछुठसयाइंहुंति डुन्निगणा ॥ डुन्नं तु जुअल सयाणं, तिसउ तिसउ हवइगछो ॥ १ ॥ ॥ अर्थः— पहेला पांच पंमितोनी पासें पांचपांचसो छात्र जणे छे. ते पांचेनां पचीशसो छात्र थया तथा छठा अने सातमा पासे अछुठसया एटले साडात्र णसें साडात्रणसें छात्र जणेछे एम बेउनां सातसे थया तेवारपछी वली बे युगल एटले आठमो अने नवमो ए पहेलो युगल अने दशमो तथा अगीआरमो ए बीजो युगल मली चारजणनी पासे त्रणसो त्रणसो छात्र जणे छे ते चारना मली बारसो थया एम सरवाले अगीआरेनां मली चुमालीशसो छात्रोनो गछ एटले समुदाय थयो एटले अगीआरे पंमितोने चुमालीशसो विद्यार्थिउ छे एम घणा विप्र तिहां यज्ञमां मल्या छे ते सर्व यजन, जापन, अध्ययन, अध्या पन, दान, प्रतिग्रह ए षट्कर्म साधे छे, प्रजातें ब्रह्म गायत्री जपे छे, मध्यान्हे विष्णुगायत्री जपे छे, संध्यायें शिवसरस्वती जपे छे, हवे एमां प्रथम उपाध्यायनां नाम कहे छे. शंकर, शिवंकर, इश्वर, महेश्वर, धनेश्वर, सोमेश्वर, शुंनंकर, सीमंकर, क्षेमंकर, करुणाकर इत्यादि हवे ज्ञानीनां नाम कहे छे. गंगाधर, गयाधर, विद्याधर, महीधर, श्रीधर, लक्ष्मीधर, धरणी धर, नूधर, दामोदर, वृषोदर इत्यादि हवे दवेनां नाम कहे छे. महादवे, शिवदवे, रामदवे, धामदवे, कामदवे, सहदवे, हरदवे, वासुदवे, श्रीदवे, बलदवे, धनदवे, चंद्दवे. हवे व्यासनां नाम कहे छे. श्रीपतिव्यास, उमापति, गणपति, प्रजापनि, विद्यापति, नूपति, महिपति, ल क्ष्मीपति, गंगापति, पृथ्वीपति, देवपति, दानवपति, धनपति. हवे पंमितोनां नाम कहे छे.


चित्र ૪૯
यज्ञशाला
यज्ञशालाना ब्राह्मणो

नागार्जुन पंम्फित, गोवर्द्धन, गुणवर्द्धन, विष्णु, कृष्ण, मुकुंद, गोविंद, आनंद, परमानंद, उ
द्धव, माधव, केशव, पुरुषोत्तम, नरोत्तम. हवे जोशीनां नाम कहे छे. खिमाश्तजोशी, नीमा
श्त, रामाश्त, प्रजाश्त, गुणाश्त, विख्याश्त, सोमाश्त, धनाश्त, कर्माश्त, धर्माश्त, देवाश्त,
चंड्राश्त, सूराश्त. हवे त्रिवाडीनां नाम कहे छे. हरिशर्म, अग्निशर्म, महाशर्म, देवशर्म, नर
शर्म, सोमशर्म, सूरशर्म, राजशर्म, वासशर्म, गुणशर्म, धर्मशर्म, कर्मशर्म, कुमारशर्म, धन
शर्म, जयशर्म, नागशर्म, विष्णुशर्म, शिवशर्म. हवे चतुर्वेदीनां नाम कहे छे. हरि, हरिहर,
नरहरि, नारायण, नीलकंठ, कालकंठ, वैकुंठ, श्रीकंठ, मुरारि, हरिराम, जगन्नाथ, विश्वनाथ,
श्रीराम, रामकृष्ण, शुकदेव, वामदेव, चंड्देव, स्वयंनू. हवे शुकलनां नाम कहे छे. कमला
कर, दिवाकर, प्रजाकर, शंकर, यशस्कर, शोजाकर, गुणाकर, रत्नाकर, श्यामदास, रामदास,
गोकुलदास, कृष्णदास, देवीदास, हरदास, द्वारिकादास, इत्यादिक जुदीजुदी शाखानां नाम
वाला ब्राह्मण ते देवलोकनां सुख पामवानां अर्थि थया थका यागकर्म करी रह्या छे॥ एवा
अवसरमां श्रीवीरस्वामी पूर्व सन्मुख बेठा थका मिथ्यात्वकर्दम दूर करे एवी मेघसमान गं
नीर ध्वनियें देशना आपे छे ते सांजलवा सारुं वैमानिक देवता आकाशें देवडुंडुनि वजा
डता थका आवे छे, ते डुंडुनिनो नाद सांजली सर्व ब्राह्मण हर्ष पाम्या अने चिंतववा
लागा के अमारा यज्ञमंत्र कहेवा छे के जे जणवाथकी प्रत्यक्ष देवो आवी उन्ना रहे एवा
मंत्र अमे हमणा जण्या जेथी देवो पण आव्या एटलामां तो जेम चांमालनो पाडो वे
गलो मूकीनें माणस बीजे रस्ते चाले तेम ते देवो पण विप्रोनो याग मंम्प मूकीने
श्रीवीरने समोसरणे जावा लागा वली ते देवो मांहो मांहे एवुं कहेता थका चाल्या जाय छे

के जलदी उतावला जइ सर्वज्ञदेवने वांदीयें एवीदेवोना मुखनी वाणी सांजलीने इंद्रनूति म नमां अमर्ष लावीने बीजा ब्राह्मणोनी आगल कहेवा लागो के जूवो जाइ ए आश्चर्य जेवी वात ने के जे मनुष्यतो अजाण ने मूर्खने माटे नूले पण आ देवो ज्ञानवान थइने पण नूले ने जे माटे ए आश्चर्य लागे ने के आवो महोटो यज्ञमंमप देखीने आघा ते वली किहां जाय ने वली महाराथी उपरांत बीजो सर्वज्ञ ते कोण ने के जेनी पासें ए जाय ने? तेवारे ते ब्राह्म णमांथी एक ब्राह्मण कहेवा लाग्यो के हे स्वामी! ए कोइक महोटो ढोंगी इंद्रजालीउ आ नग रनी बाहेर आव्यो ने ते इंद्रजाल काढीनें पोते ज्ञानी थइ बेगे ने. बीजा लोकोने कहे ने के हुं पारका मननी वात बधी जाणुं बुं, एम घणा लोकोने जरमाव्या ने तेथी देवता पण तिहां जोवा जाय ने. एवुं सांजली इंद्रनूतिने अत्यंत मान सहित क्रोध चढयो तेवारें कहेवा लाग्यो के एवो कोण ने जे महारा ग्रतां ज्ञानीनुं अनिमान धरीने इहां आवे. ते शुं मने जाणतो नथी? माटे जूउ जाइ ए देवजे नूला ते एदेव पण एनां जेवाज अणसमजु हशे जेवो ए ज्ञानी तेवा ए देव पण जाणवा ॥ यतः ॥ अहोसुराःकथंभ्रांत्या, तीर्थीश्वइववायसाः ॥ कमलाकरव भेका, मक्षिकाचंदनंयथा ॥ ३ ॥ ॥ अर्थः—अहो इति आश्चर्य जे ए देव थइने भ्रांतियें करी जेम कागडा तीर्थप्रत्यें ग्रोडी जाय ने तेम ए पण यज्ञ ग्रोडीने जाय ने माटे ए देव का गडा सरखा ने, वली जेम देडका समुद्र तजी जाय ने तेम ए पण समुद्र जेवो यज्ञ तजीने जाय ने माटे देडका जेहवा ए देव ने. वली जेम मक्षिका चंदनने ग्रोडी जाय तेम ए देव पण यज्ञरूप चंदनने ग्रोडी जाय ने ॥ श्लोक ॥ करजा इव सद्वृक्षान्, क्षीरान्नं शूकरायथा ॥ अ र्कस्यालोकवद् घूका, त्यक्त्वायागं प्रयांतियत् ॥४॥ ॥ अर्थः— वली ए देव कहेवा ने ते कहे

छे. जेम ऊंट भला वृक्षोने छोडी देइने कांटाना वृक्ष उपर जाय तेम ए देवो पण यज्ञने छोडी चाल्या जाय छे, माटे ऊंट जेवा छे, वळी जेम क्षीरना भोजनने मूकीने भूंड विष्टा उपर जाय तेम ए देवो पण यज्ञरूप क्षीर भोजन तेने मूकीने विष्टाना भोजन समान इंद्रजालीया पासे जाय छे माटे भूंड जेवा ए देव छे; वळी जेम सूर्यना तेजने मूकीने घूड अंधारामां जाय तेम यज्ञरूप सूर्यने मूकीने ए देव अंधारारूप इंद्रजालीया पासे जाय छे माटे घूड समान ए देवो छे. ॥ ४ ॥ ॥ अथवा वळी एवी पण रीतिछे के जे भूंडो माणस होय ते भूंडा पासे जाय जे माटे कह्युं छे के ॥ गाथा ॥ अहवा जारिसो चिय, सो नाणी तारिसा सुरावेति ॥ अणुसरिसो संजोगो, गाम नडाणं च मुक्खाणं ॥ १ ॥ ॥ अर्थः— अथवा वळी इंद्रभूति चिंतवे छे के जेहवो ए ज्ञानी छे तेवा ए देव छे तेथी ए बेहुनो सरखो संयोग मळ्यो छे जेम ग्रामनट मूर्ख छे तेम गामना लोक पण मूर्ख छे ए बेनो सरखो संयोग मळे छे तेम ए देवता जे जाय छे ते पण मूरख छे अने जे ए ज्ञानी छे ते पण मूरख छे तेमाटे जे पोते जेवो होय ते पोताना सरखा बीजा पासे जाय एम सरखे सरखा एक बीजानी पासे जाय आवे छे ए रीत छे वळी गाहा ॥ रे हिल्ली विहिल्ली करेल्ली, मम चडिस पायवे निंबे ॥ अहवा तुज्झ न दोसो, सरिसा सरिसेण रच्चंति ॥ १ ॥ ॥ अर्थः— कोइ एक माणस कारेळीनी वेलिनें लिंबडाना वृक्ष उपरे चढती देखीने बोल्यो के हे सखि ! हे कारेळी ! तुं ए निंबना वृक्ष उपर चढीश नही केमके तुं पोते कडवी छो अने निंब वृक्ष पण कडवो छे माटे रे भूंडी ! तुं वळी अधिक कडवी थइश एवुं केण तेणे मान्युं नही अने निंबना वृक्षनी उपर चढती बंध थइ नही तेवारे ते माणस बोल्यो हे भोळी ! ए ताहारो दोष नथी केमके जगतमां सरखे सरखा

मळे तेवारे राजी थाय तेम तमे पण बे सरखे सरखां छो तो एमां कांइ आश्चर्य नथी तेम इहां पण ए देवता अने ए ज्ञानी बेहु सरखे सरखा मळ्या छे वळी एवा इंद्रजाळीयाने जइ देवो वांदे छे तो शुं ए देवो पण भूला पड्या न कहेवाय ? वळीपण इंद्रभूति चिंतववा लाग्यो के महारा जेवा पंडितनी आगळ ए लोकोने ठगे छे अने ज्ञानी नाम धरावे छे, ते महाराथी केम सहन करी शकाय ? महाराथी तो एनुं खोटुं अभिमान सह्युं जाय नही अने ए ढोंगीनो ढोंग पण माहारा शिवाय बीजो कोइ पाधरो करी शकशे नही माटे हुं जइने एनुं अभिमान उतारी नाखुं जेम एक आकाशमां बे सूर्य होय नही वळी एक गुफामां बे सिंह एकठा न रहे तथा एक म्यानमां बे तरवार समाय नही तेम ए पण सर्वज्ञ अने हुं पण सर्वज्ञ एम कोइ वारे थायज नही. ए इंद्रजाळियो तो विदेशे कळा शीखी आवेलो छे ते सर्वज्ञनुं नाम धरावी लोकोने अने देवताओने भोळवे छे अने हुंतो सर्व विद्याओमां निपुण छुं एवो विचार करे छे एवामां प्रभुने वांदीने समोसरणथी केटला एक लोक फरी आव्या तेमने इंद्रभूति पूछवा लाग्यो के अहो लोको तमे जेनी पासे गया हता ते सर्वज्ञ कहेवोक छे ? तेवारे लोक बोल्या के एनी वात कांइ कहेवामां आवती नथी परंतु तमे पोते सर्वज्ञ नाम धरावीने अमने शुं पुछोछो, ते सर्वज्ञतो बधी मननी वातो जाणे छे पण तमे तो एटलुं पण नथी जाणता अने फोकट सर्वज्ञ कहेवरावो छो ते सांभळी इंद्रभूतियें जाण्युं जे ए निश्चय मायानुं घर छे माटे सर्वलोकतो एने मानवा लाग्या पण जेवारे हुं जइश तेवारे ए माहारा आगळ बोली शकशे नही, यतः ॥ घरसूरा मछ पंडिया, गाम गमारा गोठ ॥ भरी सभामां बोलता, थरथर ध्रूजे होठ ॥ १ ॥ ॥ अर्थः— पोताना घरमां तो बधाय कहेके अमे शूरवीर छैयें अने पोताना मठमां पण ब

धाय कहेके अमे पंमित थैयें वली पोताना गाममां जे गमार होय तेपण पंच थाय छे परंतु जे वारे पंमितोनी जरी सन्नामां बोलवुं पडे तेवारे तो तेना होठपण थर थर धूजवा मंमी जाय छे तेम ए पण सर्वज्ञ एवुं नाम बीजानी आगल कहे छे पण माहारी आगल ते बोली शकशे नही वली पण विचारे छे के जे अग्नियें पर्वतोने बाली नाख्या तो ते अग्निनी आगल वृक्षनो श्यो नार? तथा जे वायुयें हाथी जेवाने उडाडी मूक्या ते वायरानी आगल पुणीनुं शुं जोर चाले? तथा जे नदीमां हाथी तणाइ गया ते नदीमां कीडी बापडी शा हिसाबमां गणाय? एम इंद्रनूति चिंतवे छे एवामां अग्निनूति बोल्यो के हे नाइ! तमे ए इंद्रजालीयाने जीतवा माटे एटलो विचार शुं करो छो, ए कीडी ऊपर कटक श्यो करवो? अलसीयानी ऊपर गरुडने तेडवो ते शुं? तृणनी उपर कुहाडो उपाडवो ते शा कामनो, कमलनी नालने कापवा सारुं फरशी उपाडवी ते शा कामनी, वेलडी उखेडवामाटे हस्तिनुं शुं काम पडे! तेम ते बिचारा गरीबडा सर्वज्ञ पासे तमे वाद करवा शुं जाशो; मनेज आज्ञा आपोतो हुंज एने जीती आवुं, एवां नाइनां वचन सांनली इंद्रनूति बोल्यो के हे नाइ! एने शुं जीतवो छे एनेतो महारा पांचशे शिष्य मांहेलो कोइ एक शिष्य जाय तेपण जीती आवे तथापि महाराथी रह्युं जातुं नथी केमके थोडुं पण शल्य कामनुं नही माटे हुं पोतेज जाइश जे कारण माटे बीजा तो सर्व वादी मात्रने में जीत्या छे पण एक ए किहांएक रही गयेलो देखाय छे जेम हाथीना मुखमांथी कोइक कण पडी जाय, जेम मग रांधतां कोइक करडुं रही जाय, जेम घाणी पीलतां कोइक तलनो दाणो रही जाय, जेम अगस्ति रुषिने समुद्रनां त्रण चलुं करतां कोइक जलबिंदु रही जाय, जेम चणा नुंजतां कोइक चणो बाहेर पडी जाय, तेम ए

पण रही गयेलो जाणवो माटे हे नाइ! ए एकने अणजीते सर्वने न जीत्या एम लोकोमां कहेवाय जेम एकवार जे स्त्रीनुं शील खंमन थयुं ते स्त्री असती कहेवाय तेम एने जीत्या विना लोकमां मह्हारो यश रहे नही माटे एनाथी माहारे पोतानेज वाद करवा जवुं पडशे अने एने हुं हरावुं तोज मह्हारो यश जगतमां रहे, वली पण अभिमानथी इंड्भूति कहेछे॥ ॥ यतः॥ हंहो वादिगणा भोटाः, कर्णाटादि समुद्भवाः ॥ कस्माददृश्यतां प्राप्ता, यूयं मम पुरः सदा ॥ १ ॥ ॥ अर्थः– अरे कर्णाटादिक देशोमां उत्पन्न थयेला वादिउ! तमे मह्हारा आगल केम नथी देखाता? शा माटे अदृश्य थइ रह्या छो? भावार्थ ए छे जे तमे बधाय वादियो मह्हारा आगल हारेला छो तेथी छुपी रह्या छो, ते शा माटे के में आटला देशोना पंमितोने हराव्या छे. ते कहेछे–॥ काव्य ॥ लाटा दूरगताः प्रवादिनिवहा मौनं श्रिता मालवाः, मूकत्वं मगधागता गतमदा गर्जंति नो गुर्जराः ॥ काश्मीराः प्रणताः पलायनकरा जातास्ति लंगोद्भवाः, विश्वे चापि सनास्ति योहि कुरुते वादं मया सांप्रतं ॥ १ ॥ ॥ अर्थः–भोट कर्णाटक देशना वादि माहारी आगल अदृश्य थया, तो बीजा देशोना वादिउनो माहारे आगल श्यो भार तेज कहे छे, लाट देशना वादिउना समूह तेतो मह्हारुं नाम सांभलीने दूर जइ रह्या, परंतु कोइ ढूकडो नाव्यो, एटले तेणे एवुं विचार्युं जे जइशुं तो हारीने पाछुं आववुं पडशे एम जाणी दूर जइ रह्या तथा एकलाखने बाणुं हजार मालव देशना वादि हता ते हारी जवाना भयने लीधे माहारी आगल मौनपणुं धारण करी रह्या वली मगध देशना दश लाख वादि तेतो मह्हारा आगल मुंगा थया एटले एक बोलपण बोली शक्या नही तथा सत्तर हजार गुजरात देशना वादि ते मह्हारी आगले मद रहित थइ गया परंतु हाथीनी पेरे गाजीने

एक शब्द पण कही शक्या नही एटले दीन थइ रह्या हता वली जिहां सरस्वतीनो वास छे एवो श्रीकाश्मीर देश तिहांना वसनारा वादी ते आवीने म्हारे पगे लागा तथा जे तैलंग देशमां उत्पन्न थयेला नवलाख वादि तेतो मात्र म्हारुं नाम सांभलीने नाशि गया बीजी कांइ पण बुद्धि तेमने उपनीज नही वधारे शुं कहुं जगतमां एवो कोइ पण पंडित नथी जे म्हारी साथे आवीने हमणा वाद करे एटले में सर्वकोइने जीत्या पण मने जीतनारो जगतमां कोइ पण नथी तो ए इंद्रजालीयानो श्यो भार छे हुं ज्यांसुधी प्रमादमां छुं त्यांसुधी ए सर्वज्ञ कहेवाय छे पण जेवारे हुं वाद करवाने साहामो थयो तेवारे ए तेज वखत नाशि जाशे जेमाटे कह्युं छे के ॥ श्लोक ॥ तावद्गर्जंति खद्योता, स्तावद्गर्जंति चंद्रमाः ॥ उदिते तु सहस्रांशौ, न खद्योतो न चंद्रमाः ॥ १ ॥ ॥ अर्थः—खजुआनो उद्योत क्यांसुधी रहे के जिहां सुधी चंद्रमानो उद्योत नथाय त्यांसुधी खजुउं झलहल करी गाजतो चलके परंतु चंद्रमानो उद्योत थाय तेवारे खजुआनो उद्योत कांइ पण चाले नही अने चंद्रमानो उद्योत पण क्यां सुधी रहे के ज्यांसुधी सूर्यनो उदय नथाय त्यांसुधी रहे, पण जेवारे हजार किरणोने धरनार एवो जे सूर्य तेनो उदय थाय तेवारे खजुआनो अने चंद्रमानो ए बेहुनो उद्योत रहे नही तेम बीजा वादीयोने हरावावाने तो ए इंद्रजालियो समर्थ छे पण माहारी आगल एनो प्रभाव चाले नही एणे ज्यांसुधी मुजने दीठो नथी त्यांसुधी बीजा लोकोने भरमावे छे तो हवे म्हारे फोकट घरमां बेशी मान करवुं ते शा कामनुं! हुं पोते तिहां जइने तेनुं बल पराक्रम जोउं के ए शुं भण्यो छे मुजने एटलां शास्त्रतो जलेना पाठनी पेरे आवडे छे॥ श्लोक ॥ लक्षणे मम दक्षत्वं, साहित्ये संहिता मतिः ॥ तर्के कर्कशता नित्यं, क्व शास्त्रे नास्ति मे श्रमः ॥ १ ॥ ॥ अर्थः—लक्षण शा

स्त्रमां महारुं दक्षपणुं छे एटले लक्षण शास्त्रतो हुं सारी पेरे जाणुंछुं स्त्री पुरुषादिकोनां बत्रीश लक्षण रुडीरीते कही देखाडुं तथा पदार्थनां लक्षण तो एवां प्रतिपादन करुं के जेमां अव्याप्ति प्रमुख दोष रहे नही ॥ १ ॥ तथा साहित्य शास्त्र जे काव्यादिक तेतो सर्व माहारे अस्खलित छे ॥ २ ॥ तथा तर्कशास्त्रमां तो हुं एवो निपुण छुं के महारा साहामो कोइने जवाब देतां आवडेज नही एवा कठण तर्कने हुं जाणु छुं माटे तर्कशास्त्र महारे कठण नथी एतो सदा अकर्कश छे ॥ ३ ॥ घणुं शुं कहियें एवुं कयुं शास्त्र छे के जेमां महारो श्रम न थयो होय? अर्थात् अढार व्याकरण, कोशनीतो गणतरीज नथी, छंद रत्नाकरादिक, अलंकार ते काव्यनी शोजा अतिशयालंकारादिक, नवरसादिक ते वात्स्यायनादिक, धर्मशास्त्र ते सर्व पुराण मीमांसादिक, ज्योतिष शास्त्र ते चूडामणि प्रमुख, वैद्यकशास्त्र कालज्ञानादिक, ए बधां शास्त्र महाराथी अजाण्यां नथी तो ए इंद्रजालीयो ते शुं महाराथी जीते एवोछे माटे हवे हुं त्यां जइ देव, दानव, मानव सर्वने देखतां एने हरावीने एनुं सर्वज्ञपणानुं बिरुद टाली नाखुं एवो मनमां गर्व आणी पांचशे छात्रोने लेइ जेम जाणे इंद्र खेंची लइ जतो होयनी? ते श्यामाटे के जगवाननी देशना प्रथम खाली गइ छे ते माटे जगवान बार योजन चालीने एक रात्रीयें आव्या तेथी इंद्रमहाराजे जाण्युं के एमने शिष्यनी प्राप्ति थाय तो रुडुं थाय ते माटे इंद्रनो प्रेर्योज जाणे इंद्रजूति समोसरण तरफ जतो होयनी? एवी कवीश्वर घटना करे छे अन्यथातो एमज थनारुं छे. हवे इंद्रजूति पांचशे छात्रसहित परवर्यो थको वाद करवानी इच्छाथी श्रीवीर जगवानना समोसरण तरफ चाल्यो ते वखते पांचशे छात्रो इंद्रजूतिनी बिरुदावली बोले छे ते कहीयें छैयें. सरस्वती कंठाजरण एटले सरस्वतीतो अमारा उपाध्या

यने गलानुं आभूषण छे अर्थात् सरस्वतीतो सदा एमना कंठमांज वसेछे, वादिविजय लक्ष्मी शरण, ज्ञात सर्वपुराण, वादिकदली कृपाण, पंडितश्रेणी शिरोमणि, कुमतांधकार नभोमणि, जितवादिवृंद, वादिगरुड गोविंद, वादिघटमुद्गर, वादिघूकभास्कर, वादिसमुद्र अगस्ति, वादिवृक्षहस्ति, वादिमुखभंजन, सकलभूपालरंजन, षट्भाषावल्लीमूल, परवादिमस्तकशूल, वादिगोधूमघरट्ट, मर्दितवादि मरट्ट, वादिकंदकुद्दाल, वादिवृंदभूपाल, वादिगजसिंह, वादिशिरलीह, वादिवेश्याभुजंग, शब्दलहरी, गंगातरंग, सरस्वतीभंडार, चौदविद्या अलंकार, वादिहृदयशाल, वादियुद्धमाल, बहुराजसमाजमुकुट, बहुबुद्धिविकट, ज्ञानरत्नाकर, शब्ददिवाकर, महाकवीश्वर, कृतशिष्यबृहस्पति, निर्जितभार्गवमति, कौजंगम सरस्वती, प्रत्यक्षभारती, जितानेकवाद, सरस्वतीलब्धप्रसाद, इत्यादि अनेक प्रकारनी बिरुदावली छात्रो बोली रह्या छे अने इंद्रभूति चाल्यो जाय छे वली रस्तामां विचार करवा लाग्यो के अरे जुउंतो खरा के आ मूर्खें शुं कर्युं एणे सर्वज्ञपणांना आटोपथी मने नाहक क्रोध चडाव्यो तो हवे एथी ए शुं सुखी थवानो छे जेम कोइ अग्निमां पडे तो बली भस्म थया विना रहे नही तेम एणेपण कर्युं छे एम चिंतवतो चालतो चालतो जेवारे समवसरणनी पहेली पावडी छे तिहां चडीने जोवा लाग्यो ने जोयुं तो त्रण गढ दीठा ते गढ कहेवा छे ते कहेछे त्यां प्रथम रूपानो गढ छे तेना सुवर्णमय कोशीशा छे, चारेदिशायें चार पोहोल छे. बीजो सुवर्ण गढ छे तेना रत्नना कोशीशा छे. त्रीजो रत्नो गढ छे तेना मणिकांतना कोशीशा छे एक योजनने विस्तारे छे तेनी बचमां अशोकवृक्ष छे उपर त्रण छत्र तिहां सुवर्णनुं सिंहासन छे तेनी उपर स्वामि बेठा छे ते इंद्रभूतियें पोतानी नजरे दीठा तेवारे मनमां विचार्युं जे में घणाय वादी दीठा छे परंतु आवो प्रकार किहां पण

दीठो नथी तो ए शुं ब्रह्मा छे, ना ए ब्रह्मा पण देखातो नथी केमके ब्रह्माने तो सावित्री नामे स्त्री छे, हाथमां पवित्री छे, करे कमंमल छे, हंसवाहन छे, पांचमुं गर्दननुं मुख छे एटलां एं घाण मलतां नथी तेंमाटे जाणीयें छैयें जे ए ब्रह्मा तो नथी, तो शुं ए विष्णु छे, ना ते पण नथी केमके विष्णुनेतो लक्ष्मी नामे स्त्री छे, चार हाथ छे, शंख, चक्र, गदा अने धनुष ए आयुध छे, गरुड वाहन छे, वरणे श्याम छे, ते एंधाण एने नथी माटे ए विष्णुपण नथी. तो ए शुं ब्रह्मज्ञानी छे, ना ते पण नथी केमकें ते तो अरूपी छे, वली चंड्मा सोले कलायें संपूर्ण छे परंतु कलंकसहित छे माटे चंड्मा पण ए नथी तथा वली जो एने सूर्य कहुं तो सूर्यथी पण एनुं तेज तो घणुं अधिक छे परंतु तेना किरण उष्ण छे ते उष्ण किरण एने नथी माटे सूर्य पण केम संजवे!! वली इंड् छे एम जो कहुं तो ते पण नथी कारण के तेने सहस्रनेत्र छे ते एने नथी वली जो ए मेरु हशे एम कहुं तो मेरु कठण छे ते एमां कठणपणुं देखातुं नथी माटे ए मेरुपण नथी तो ए सर्वगुणसंपूर्ण सर्वथी अधिक जे तीर्थंकर कहेवाय छे ते ए तीर्थंकर छे केमके एवा गुण तो तीर्थंकर विना बीजा कोइमां होय नही माटे समस्त पापहर, सर्वलोकना शिवकर, षट्कायना रक्षक, अनाथना नाथ, अशरण शरण, तरण तारण; एवा श्रीवर्द्धमान सर्वज्ञ तीर्थंकर जे कहेवायछे ते ए संजवे छे सूर्यनी पेरे तेजवंत, चंड्मानी पेरे सौम्य, समुड्नी पेरे दीठे डुस्तर, एवा ए छे ते श्रीमहावीर तीर्थंकर विना बीजो केम संजवे!! वली पण इंड्नूति श्रीवीर प्रजुने देखीने चिंतवे छे ॥ काव्य ॥ किंनंदी किंमुरारिः किमुरतिरमणः किंनलः किंकुबेरः, किंवा विद्याधरोसौ किमिद् सुरपतिः किंविधुः किंविधाता ॥ नायं नायं न चायं न खलु न हि न वा नापि नासौ न चैव, तीर्थं कर्त्तुं प्रवृत्तो निजगुणविनवैर्वीरदेवाधिदेवः ॥

॥ १ ॥ ॥ अर्थः— शुं ए महादेव छे? अथवा शुं ए कृष्ण छे? अथवा शुं ए बहुरूपवंत छे माटे कामदेव छे? अथवा शुं ए नलराजा छे? अथवा शुं ए इंद्रनो भंमारी कुबेर छे? अथवा शुं ए विद्याधरछे? अथवा शुं इहां ए इंद्र आव्यो छे? अथवा शुं ए चंद्र छे? अथवा शुं ए विधाता छे? एवीरीतें कल्पनाओ करीने पछी विचारपूर्वक निर्णय करवा लाग्यो के ए महादेव तो नथी केमके ते तो लंगोट्यो छे तथा एनो सुवर्ण सरखो वर्ण छे माटे ए कृष्ण पण नथी वली स्त्रीवर्जित छे माटें ए कामदेव पण नथी वली राजचिन्हे करी वर्जित होवाथी निश्चयथी ए नलराजा पण नथी वली त्यागी छे माटे कुबेर भंमारी पण नथी, तथा पादचारी छे माटे विद्याधर पण नथी, नगरहित छे माटे इंद्र पण नथी, कलंक रहित छे माटे चंद्र पण नथी, घटना विवर्जित छे माटें विधाता पण नथी, एतो ए पूर्वें जे कह्या ते सर्वथी अधिक लक्षण धारी छे तो ए कोण छे एम विचार करतां जाणवामां आव्युं जे अरे एतो तीर्थंकरवाने अर्थे पोताना अतिशयादि गुण रूप धनवडे करीनें प्रवर्त्यो छे एवो देवाधिदेव श्रीवीर जिनेंद्र जे लोक कहे छे ते एज छे बीजो कोइ नथी. एम जणाय छे तो हा इतिखेदे एमें शुं कर्युं आ हुं क हेवा संकटमां आवी पड्यो, हवे हुं शुं करुं एनी आगल माहरुं मान केम रहेशे! ॥ श्लोक ॥

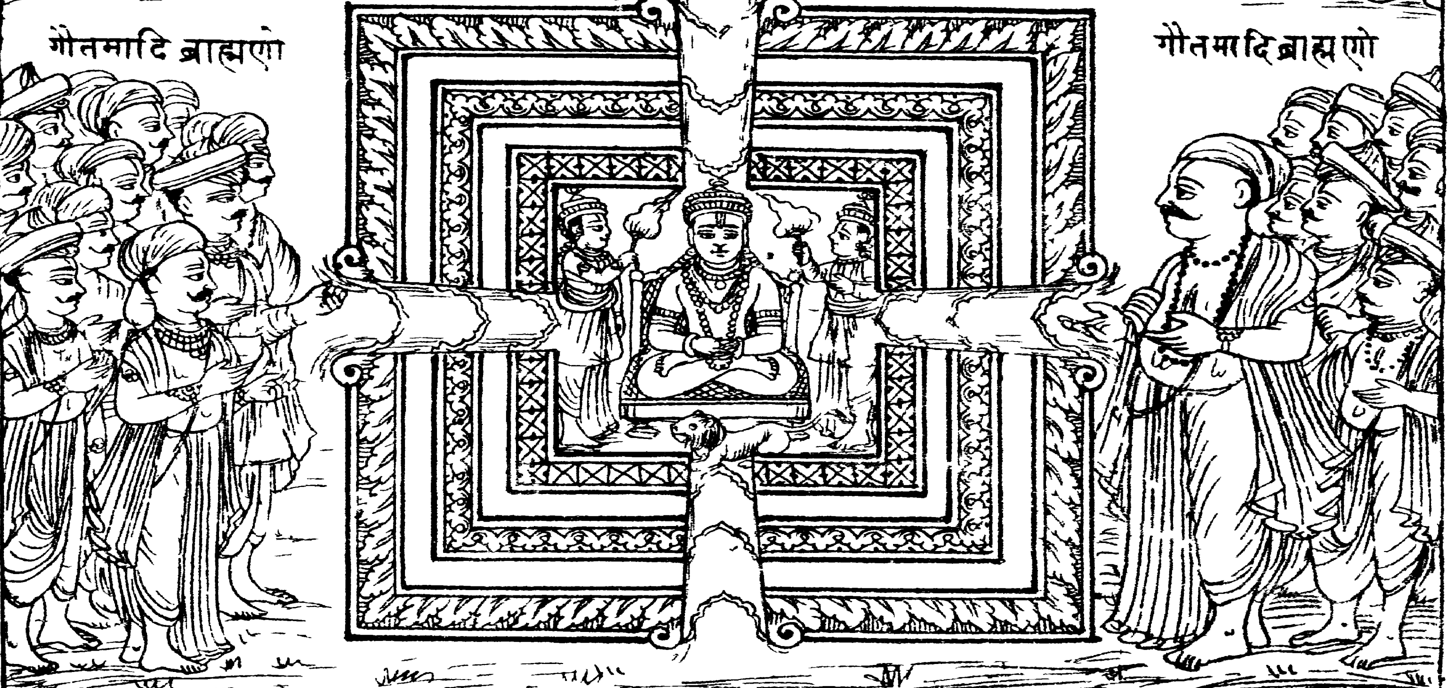
कथं मया महत्वं मे, रक्षणीयं पुरार्जितं ॥ प्रासादं कीलिकाहेतो, भंकुं कोनाम वांछति ॥ १ ॥

अर्थः— तो हवेजे महारुं पूर्वें महोटापणुं थयुं छे तेने हुं केम करीने राखीश? एटले में पूर्वें घणा वादियोने जीत्या छे तेथी हुं लोकमां प्रसिद्ध थयो छुं, पंमित वडुंछुं, तो हवे मुजने महारा पंमितपणांने राखवानो उपाय श्यो करवो के जेथकी ए महारी पंमिताइ लोकोमां कायम रहे अने जो एनाथी वाद न करुं तो लोको कहेशे के ए वाद करवा गयो हतो ते पाछो केम फरी

आव्यो, माटे में ए मूरखाई करी तो पण हवे वाद कर्या विना म्हारे पाछुं जावुं नही केमके मारे तो हवे ए एकज जीतवो रह्यो छे तो हवे अल्पने माटे म्हारो बधो यश न गमाववो जेम कोइने एक खीलो जोइतो होय तो ते एक खीलाने माटे आखो प्रासाद भांगी खीलाने काढवा वांछे नही एवो मूर्ख कोइ होय नही वली कहेछे ॥ श्लोक ॥ सूत्रार्थी पुरुषोहारं, क स्त्रोटयितुमीहते ॥ कः कामकलशस्यांशं, स्फोटयेत् ठिक्करीकृते ॥ ३ ॥ ॥ अर्थः– एवो कोण पुरुष होय जे सूत्र एटले तांतणाने अर्थे हारने त्रोडवानी वांछना करे एटले सूत्रनो तागो जोइतो होय तेटला माटे हार त्रोडवो एम कोइ वांछे नही तेम म्हारे पण ए एकने हराव्या विना म्हारो यश रूपी हार त्रोडी नाखवो नही ए तात्पर्य जाणवुं तथा वली कोण पुरुष ठीकरी जोइती होय तेने अर्थे मनोवांछितने पूरनार एवो जे कामकुंभ तेना गला प्रमुखने फोडी नाखे अर्थात् ठीकरीने अर्थे कामकुंभने. कोइ फोडी नाखे नही तेम हुं पण एनी साथे वाद कर्या विना जो एमज पाछो फरी जाउं तो कामकुंभ जेवो माहारो यश रूप घट ते फोडी नाख्या जेवुं थइ पडे, तेथी हुं मूर्खोनी गणतीमां थाउं माटे म्हारे एम न करवुं वली पण कहेछे॥ श्लोक ॥ भस्मने चंदनंकोवा, दहेदुःप्राप्यमप्यथ ॥ लोहार्थी कोमहांभोधौ, नौभंगं कर्तुमिच्छति ॥ ४ ॥ ॥ अर्थः– वली कोण म्हाह्यो पुरुष भस्म एटले राखने अर्थे दुःखे प्राप्त थाय एवा चंदनने बाले एटले भस्मने अर्थे मलयागिरि चंदनने कोइ बाले नही तथा एवो कोण मूर्ख होय जे लोखंडना कटकाने अर्थे महासमुद्रनी मध्ये नाव एटले वाहाण तेने भांगी नाखवानी वांछा करे अर्थात् कोइ पण भांगे नही परंतु जो मूर्ख होय तो भांगी नाखे तेम जो हुं एनी साथे वाद न करुं तो म्हारुं यशरूप मलयागिरि चंदन ते बालीने

नस्म थाय तथा महारी यश रूपी नौका महासमुद्रमां नांगी नाख्या जेवुं मने थाय माटे एवो मूर्ख हुं न थाउं इति ॥ अथवा ए पूर्वोक्त श्लोकोनो अर्थ आवी रीते मेलववो जे इंद्रनूतियें जगवानना अतिशय दीठा तेथी चिंतववा लाग्यो जे ए कोइ महापुरुष छे माटे एनी साथे हुं वाद करीने अवश्य हारी जइश तेथी में पण एनी पासें आवीने एक खीलाने माटे महारो यशरूपी प्रासाद नांगी नाखवा जेवी मूरखाइ करी तथा एक तांतणाने माटे हार त्रोडी नाखवानी इछा करी वली एक ठीकरीने माटे कामकुंजनें फोडी नाखवा जेवुं कर्युं तथा राखने अर्थे चंदन बालवा जेवुं कर्युं तथा लोखंमना कटकाने अर्थे महासमुद्रमां महारा संपादन करेला यशरूपी जहाजने नांगी नाखवां जेवुं कर्युं एम चिंतवी प्रजुना वचननो अतिशय जोवा मांमयो तो आ प्रमाणे छे ते कहेछे ॥ श्लोक ॥ सारंगी सिंहशावं स्पृशति सुतधिया नंदिनी व्याघ्रपोतं, मार्जारी हंसबालं प्रणयपरिवशात्केकिकांता नुजंगं ॥ वैराण्याजन्मजातान्यपि गलितमदा जंतवोन्येत्यजंति, श्रुत्वासाम्यैकरूढं प्रशमितकलुषं योगिनं क्षीणमोहं ॥ १ ॥ ॥ अर्थः— सम परिणामे करी एकांते रहेवाथी प्रकर्षे करीने उपशम्यां छे कलुष एटले पाप जेमनां एवा वली क्षीण थयो छे मोह जेमनो एवा योगीयोने सुणीने एटले उपशमसहित, पापरहित, मोहरहित एवा जे योगी मुनिराज तेमने सुणीने अर्थात् एवा मुनिनां वचन सांजलीने बीजा जीव पण जेने जन्म थकीज अरस्परस एक बीजानी साथे वैर रहेलां छे एवा तिर्यंच जीव पण समोसरणमां मद रहित थया थका पोतपोतानां वैरने छांमे छे एटले जेनां एवां वचन छे के जे सांजलवा थकी जीवो जन्मनां वैरने पण नूली जाय छे ते वैर कोने कोने छे ते कही देखाडे छेः—प्रजुना समोसरणमां आवेली (सारंगी के०) मृगली ते सिंहना बालकने स्पर्शे छे एटले सिंहने अने हरणने

जन्मनुं वैर छे पण इहां समोसरणमां तेने वैर मटी जाय छे तेथी ते पोतपोतामां मळीने एकठां बेठां छे तथा (नंदिनी के०) गाय ते (सुतधिया के०) पोताना पुत्रनी बुद्धियें करीनें (व्याघ्रपोतं के०) वाघना बाळकने चाटी रही छे एटले वाघने अने गायने वैर छे तोपण इहां ते वैर टळी गयुं छे माटे वाघना बाळकनी पासे बेठी थकी लाड करे छे वळी बिलाडी छे ते (प्रणयपरिवशात् के०) स्नेहना वश थकी हंसना बाळकने स्पर्श करीने बेठी छे एटले बिलाडी पण हंसना बाळकने मारती नथी वळी मोर अने सर्प्पने पोतपोतामां वैर छे तोपण ते इहां प्रभुना समोसरणमां कहेवा थई बेठा छे तोके (केकिकांता के०) ढेल छे ते (भुजंगं के०) सर्पनी साथे बेठी छे ए रीते इहां एवा प्रकारनां वैर ते सर्व जीवोनां मटी गयां छे एवो भगवानना वचननो अतिशय देखी इंद्रभूति विस्मय थइ रह्यो छे एटलामां भगवान बोल्या के हे इंद्रभूति! गौतम गोत्रिया! तुं भले आव्यो तुं सुख समाधिमां वर्त्ते छे एवुं स्वामिनुं वचन सांभळी इंद्रभूति मनमां चिंतववा लाग्यो जे ए म्हारुं नाम गोत्र किहांथी जाणे छे केमके हुं एनी साथे क्यारे पण मळ्यो नथी, तथापि वळी एम विचार्युं जे म्हारुं नामतो जगतमां प्रसिद्ध छे माटे कोण नथी जाणतो सर्व कोइ जाणेज छे जे हुं कांइ छानो माणस नथी सूर्य किहां पण छानो रहे नही पण एणे मने म्हारुं नाम कहीने जे बोलाव्यो तेनुं तत्व म्हारा जाणवामां आवी गयुं के एणे मात्र मने ठगवा सारुंज बोलाव्यो जणाय छे परंतु हुं कांइ एवो अणसमजु नथी जे एना मीठा वचनथी रीझ पामुं पण हुं तो जेवारे ए म्हारा मनमां जीव छे के जीव नथी एवो संदेह रहेलो छे ते कही आपे अथवा ते संदेह भांजी आपे तेवारे रीझ पामीने जाणुं जे ए खरेखरो सर्वज्ञ छे. नही कां तो मात्र म्हारी साथे एने वाद करवो पडे


चित्र ४८
भगवाननुं समवशरण
गौतमादि ब्राह्मणो
गौतमादि ब्राह्मणो

तेथी बीहितो थको मने राजी राखवा माटे मीठे वचने करी बोलावे छे तेणे करी ए पोताना मनमां एवुं समजतो हशे जे ए म्हारी साथे वाद करशे नही, पण तें तो हुं मानुं नही एवुं विचारे छे एटलामां फरी नगवान बोल्या हे इंद्रनूति ! जीव छे के नथी एवो ताहारा मनमां संदेह छे ते हे इंद्रनूति ! ते वेदनां पद जीवने उछापवावालां अने जीवने थापवावालां जाणीने संदेहमां पड्यो छो तेहनो अर्थ तुं विपरीत करे छे तेथी तने संदेह रही गयो छे माटे ते वेदनां पदोनो अर्थ पूर्वापर विरोध रहित हुं तमोने कहुं छुं ते सांजल एम कही नगवान पोतें स्वमुखें वेदनां पदोनुं उच्चारण करे छे ते कहेवा ध्वनिथी करे छे ते कहे छे. श्लोक ॥ समुद्रोमथ्यमानःकिं, गंगापूरोथवा किमु ॥ आदिब्रह्मध्वनिः किंवा, वीरवेदध्वनिर्बभौ ॥ १ ॥ अर्थः—जेम समुद्र मथन करवा मांड्युं होय ते वखतें जे ध्वनि थाय तेहवोज ध्वनि थायछे के शुं? अथवा गंगानदीनुं पूर आवे ते वखतें जे ध्वनि थाय तेज ध्वनि थाय छे के शुं? अथवा आदिब्रह्म ध्वनि थायछे के शुं एवो वीर नगवानना मुखथी ध्वनि थयो तेमां वेदमां जीवसत्ता निषेधपद एवां छे ते कहे छे ॥ अथ वेदपदानि यथा ॥ अर्थः—वेदना पद एम छे "विज्ञान घन एवैतेन्योनूतेन्यः समुत्थाय, तान्येवानुविनश्यति, नप्रेत्यसंज्ञास्तीति इति जीवानावश्रुतिः ॥ अर्थः—हे गौतम ! ए वेदना पदोनो अर्थ तें आ प्रकारें जाण्योछे के विज्ञानघन एटले विज्ञान समूह जे चेतननो पिंम (सएव के०) तेहज चेतन पिंम ते (एतेन्योनूतेन्यः के०) नूतजे पृथ्वी, अप, तेज, वायु अने आकाश ए पांच नूतो थकी (समुत्थाय के०) उत्पन्न थइने (तान्येवानुविनश्यति के०) ते नूतोनो नाश थया पछी ते विज्ञानघन चेतननो पण नाश थाय छे तेमाटे (नप्रेत्यसंज्ञास्ति के०) परलोक नथी एटले ए पृथिव्यादिक पांच नूतोथी जीव उत्पन्न

थाय ठे अने ए पृथिव्यादिक पांचनूत जेवारें नाश पामे तेवारें जीवनो पण नाश थइ जाय ते माटे जीव मरण पामीने परलोके जाय ठे एम कहेवुं वृथा ठे केमके परलोकें जाय एवो जीव नथी तो शुं ठे तोके ज्ञान ठे तेहज ए नूतोथी उत्पन्न थाय ठे जेम दीपक उपजीने जेवारें विनाशने पामे ठे तेवारें तेनो प्रकाश पण जतो रहे ठे तेम नूतोनो नाश थये ए जीवनो पण नाश थाय ठे. वली प्रयोग पण इहां ठे ॥ ज्ञानंनान्यनवगंनौतिकत्वात् दीपवत् ॥ अर्थः—ज्ञान ठे ते नूतथकी उत्पन्न थायठे माटे बीजे नवे जनार नथी एटले बीजा नवमां जवावालुं नथी जेम दीपक ठे तेम ए पण ठे माटे परनवे जनारो जीव नथी वली प्रत्यक्ष देखीयें ठैयें जे पांचनूतततो देखवामां आवे ठे पण जीव देखवामां आवतो नथी जेवारें माणस मरण पामे ठे तेवारें तेने बालीने राख करीयें ठैयें तिहां हाम प्रमुख तो नजरें दीगमां आवे ठे पण जीवनुं चिन्ह तो काइ देखातुं नथी एवो विचार वेदना पदना अर्थथी तने नासे ठे के जीव नथी बीजुं वली ताहारा मनमां एम पण थाय ठे के वेदमां एवुं पण पद ठे॥ सवैअयमात्मा ज्ञानमयो मनोमयो वाङ्मयश्चक्षुर्मय आकाशमयो वायुमय स्तेजोमयः आपोमयः पृथिवीमयः क्रोधमयः अक्रोधमयः हर्षमयः शोकमयः धर्ममयः अधर्ममयः इत्यादि ॥ अर्थः—(स के०) ते (वै के०) पादपूरणे अथवा संबोधने (अयं के०) ए (आत्मा के०) जीव ते ज्ञानमयः एटले ज्ञानवंत, मनवालो, वचनवालो, नेत्रवालो, एमज आकाशमय, वायुमय, तेजमय, जलमय, पृथ्वीमय तथा क्रोधमय, अक्रोधमय, हर्षमय, शोकमय, धर्ममय, अधर्ममय, इत्यादिक वेदनां पद देखवाथी तने शंका उत्पन्न थयेली ठे के जीव ठे के नथी एवो तुने संदेह ठे पण हे इंद्रनूति! योगीश्वरें प्रत्यक्ष जाणेलो एवो ए आत्मा ठे एटले ज्ञानीने

ए आत्मा प्रत्यक्ष छे जेम परमाणु बीजा सामान्य जीवोने दीठामां आवतां नथी पण ज्ञानवंत जाणे छे (अनुमानादपि के०) अनुमानथी पण ए जीवसत्ता सिद्ध थाय छे ते अनुमान आ प्रमाणेछेः—अस्त्यात्माशुद्धपदवाच्यत्वाद्घटवत् ॥ अर्थः—छे आत्मा शुद्धपद कहेवापणुं छे माटे. जेम घट पद छे ते असंयोगी पद छे तो ए घट नथी एम न कहेवाय तेम आत्मा पद जे छे तेपण संयोग रहित पद छे तेथी एनी पण नास्ति कहेवाय नही जगतमां जे जे पदार्थ शुद्धपद वाच्य छे ते ते पदार्थ असत् नथी अर्थात् सत् छे वली शास्त्रमां पण आत्मा कहे छे तो हवे शुं जाणीयें जीव छे के नथी केमके एक सूत्र जीव कहे अने एक सूत्र नास्ति कहे एवुं जाणी हे इंद्रभूति ! तने संदेह पड्यो छे पण ते संदेह खोटो छे, व्यर्थ छे, केमके जीवने नास्ति कहेनारूं जे "विज्ञानघन" पद तेनो अर्थ तुं विपरीत करे छे तेथी ए पूर्वापर विरोधने लीधे तने शंका रही छे माटे एनो अर्थ आम करवो योग्य छे जे विज्ञान एटले ज्ञान अने दर्शन ते अभिन्नपणाथकी विज्ञानघन एवुं जीवनुं नाम छे तेहज "एतेभ्योभूतेभ्यः" एटले भूत ते घटादिक छे तेने देखी उत्पन्न थाय छे एटले ज्ञाता जे विज्ञानघन तेने घटादिक जे ज्ञेय ते देखी ज्ञान उपजे छे तेवारे जाणे जे घट ते एहज छे ए ज्ञान ते (समुत्थाय के०) उपजीने (तान्येवके०) तेहज ज्ञान ते ज्ञेयनो उपयोग जावाथी तेमांज नाश थाय (अनुविनश्यति के०) पछी ते घटना बोधनो पर्याय करीने विनाश पामे छे (नप्रेत्यसंज्ञास्ति के०) जे पूर्वली ज्ञानसंज्ञा हती ते रहे नही एटले जे घट दीठो ते घटनुं ज्ञान तेहज घटमां रह्युं पण घटनो उपयोग पटमां नथाय परमार्थ ए छे जे इंद्रभूतिने विज्ञानघननी श्रुतिना अर्थथी संदेह हतो के जीव भूतमां उत्पन्न थाय अने भूतमांज नाश थाय परंतु परलोक नथी ए संदेह हतो ते

प्रजुयें अर्थ कह्यो के जे उपयोग घटनो हतो ते उपयोग घटमांज रह्यो? परंतु पटमां नथी जो एम न मानीयें तो (यथाकारी तथा नवति के०) जेहवुं करे तेहवुं थाय (साधुकारी साधुर्नवति के०) नलुं करनारो नलो थाय अने (पापकारी पापी नवति के०) पाप करनारो पापी थाय (पुण्यंपुण्येन कर्मणाज्नवति के०) पुण्य कर्म करीने पुण्य थाय (पापः पापेन नवतिके०) पापे करीने पापी थाय तथा "ददद" ए त्रण दकारनो अर्थ दया दान अने दम छे (इति दकार त्रयंयोवेत्ति के०) ए त्रण दकारने जाणे (सजीवः के०) ते जीव छे ए यजुर्वेदादिकनां पद छे ते केम मले, माटे ए अनुमान करीयें॥ विद्यमान नोक्तृकमिदं शरीरं, नोग्यत्वादोदनादिवत्॥ अर्थः—विद्यमान छे नोक्ता जेहनो एवुं ए शरीर एटले विद्यमान छे नोगवनारो जेहनो एवुं शरीर छे तो ए सूत्रथी एनो नोगवनारो जीव छे ते विद्यमान छे एम सिद्ध थयुं तेथी ए शरीर नोगववा योग्य छे माटे एनो नोगवनार पण छे जेम आहार नोग्य छे तो तेनो नोक्ता पण छे तेम ए शरीरने नोगववावालो नोगवनारो जीव छे ए अनुमानथी जीव छे तेमाटे हे इंद्रनूति! जेम (क्षीरेघृतं के०) दूधमां घृत तथा (तिलेतैलं के०) तिलमां तेल अने (काष्टेअग्निः के०) काष्ठमां अग्नि तथा (सौरन्यं कुसुमे के०) फूलमां सुगंध वली (चंद्रकांतौ सुधा के०) चंद्रनी कांतिमां अमृत (यद्वत्तथा के०) जेम ए छे तेम (आत्मांगगतः प्रतिक्षेत्रं निन्नः के०) आत्मा शरीरमां छे सर्व शरीर शरीरमां जुदो जुदो छे ते (अपौज्जलिकः के०) पुज्जल रहित (पारिणामिकः के०) पारिणामिक छे, कर्ता छे, नोक्ता छे, (सजीवः के०) ते जीव छे (अन्यथा जीवं विनादयाकिंविषया स्यात् के०) एम जो जीव न मानियें तो जीवदया ते शाने विषे होय (तस्मादस्तिजीवः के०) ते माटे हे इंद्रनूति! जीव छे॥ इत्यादिक वेदपदना अर्थ सांनली, संशय

टाळी, मदभांगी, वैराग्यपामी, वीश सहस्रमी पावडीयें चडी, श्रीवीरप्रभुने त्रण प्रदक्षिणा देइ, इंद्रभूति पगेलाग्यो अने शुद्धभावथी पांचसो छात्रो सहित दीक्षा लीधी एनुं गौतमगोत्र हतुं माटे गौतम एहवे नामे प्रसिद्ध थयो भगवानना मुखथी उपन्नेवा, विगमेइवा, धुवेवा ए त्रिपदी पामीने द्वादशांगीनी रचना करी जे माटे कहे छे ॥ श्लोक ॥ श्रीवीरमुखतोवेद, पदार्थमवगत्यच ॥ प्रव्रज्य त्रिपदीं लब्ध्वा, द्वादशांगीं स निर्ममे ॥ १ ॥ ॥ अर्थः—श्रीवीरना मुखथी वेदपदनो अर्थ जाणी दिक्षा लेइने त्रिपदी पामी बार अंगने रचतो हवो ॥ इति प्रथम गणधर ॥ १ ॥ ॥ हवे इंद्रभूतियें दिक्षा लीधी ए वात एनो बीजो भाइ अग्निभूति छे तेणे सांभली तेवारें विचारवा लाग्यो के कदाचित् अग्नि जे छे ते पाणी थइ जाय, पाषाण नरम थइ जाय, पर्वत वायुथी भगी जाय, सूर्य पश्चिम दिशायें उदय थाय, चंद्रमाथी अंगारा वर्षे, पाणी छे ते अग्निज्वाळा थइ जाय, अमृत खाधाथी मरण नीपजे, विष खाधाथी जीवतो थाय, पातालमां पृथ्वी पेसी जाय, मेरु पर्वत चलायमान थाय, समुद्र मर्यादा मूकी आपे, एटलां वानां बनी जाय तेनी ना नथी परंतु महारो भाइ ए इंद्रजालीयाथी हारी जाय ए वात केवारे बने नही एम चिंतवना करे छे एवामां समोसरणथी केटलाक बीजा लोको गाममां आव्या तेमने अग्निभूतियें पोताना भाइ संबंधि वृत्तांत पूछवाथी ते कहेवा लाग्या के शुं पूछो छो ? इंद्रभूतितो भगवानना शिष्य थया ए अमे अमारी नजरे जोइ आव्या छैयें एवुं सांभली अग्निभूति विचारवा लाग्यो के महारो भाइ अत्यंत डाह्यो छतां केम छलाय ! पण दैवेछायें वखते छलाइ गयो हशे तो हवे हुं त्यां जइ ए इंद्रजालियाने जीतीने महारा भाइने पाछो वाली आवुं अने एना सर्वज्ञ पणानुं बिरुद पण टाली आवुं एम कही आमर्ष सहित

पांचशे गत्रोना परिवारे परवर्यो थको बिरुदावली बोलावतो थको त्यां जइ समवसरणनी पहेली पावडीयें पग आप्यो तेवारे प्रभुयें पण तेने पूर्वली रीते नामगोत्र कहीने बोलाव्यो अने कह्युं के हे अग्निभूति ! तुजने कर्म छे किंवा नथी एवो संशय छे ते तुं वेदपदनो अर्थ जाणतो नथी तेथी संशय रहे छे ते आवी रीतेः—अथ वेदपद ॥ पुरुष एवेदंऽसर्वंयद्भूतं यच्च नाव्यं ॥ इत्यादिक वेदना पदथी तुं जाणे छे के जीव छे तेहज सर्व छे तो एथी बीजुं कर्म ते वली जूदुं केम संभवे ! एटले कर्म नथी केमके आत्मा तो अमूर्त्ति छे तेने कर्म केम लागे कारण के मूर्त्तिने अने अमूर्त्तिने मांहोमांहे संयोग होय नही माटे कर्म नथी वली कर्मथी जीवने सुखदुःख पण केम थाय ए पद उपरथी कर्म नथी एम तुं माने छे तथा वली कोइक वेदनां पद आम पण छे जे " पुण्यः पुण्येन, पापः पापेन " ए उपरथी कर्म छे एम पण देखाय छे. तो शुं कर्म छे-के नथी ए ताहारो संदेह छे पण हे अग्निभूति ! ते जे वेदनां पद छे ते आत्मस्तुतिनां छे, परंतु कर्म निषेध करनारां नथी केमके अमूर्त्ति छते मूर्त्त द्रव्य साथे संयोग तो प्रत्यक्ष देखाय छे अमूर्त आकाशने मूर्ति वादला तेउने परस्पर योग थाय छे जे मूर्तिवंत छे ते अमूर्तिने सुख दुःख करे छे जेम मदिरापान करनारने अचेत पणुं थाय छे ते मदिरा मूर्तिवंत छे पण अमूर्ति जीव छे तेने मुंझावे छे ते माटे कर्म छे एम सिद्ध थाय छे वली लोकमां एक सुभाग्य, एक दुर्भाग्य, एक सुरूपवान एक कुरूपवान, एक धनवान एक दारिद्री ए सर्व शुभाशुभ कर्मविना केवी रीते संभवे ए रीतें वेदपदमां पण कर्म सत्ता सिद्ध छे तेथी कर्म अवश्य छे, इत्यादिक वेदपदना अर्थ सांभलीने अग्निभूतिनो पण संशय टल्यो तेवारे अहंकार छोडी भावसहित पांचशे छात्रनी साथे दिक्षा लीधी ॥ इति द्वितीय गणधर ॥

॥ २ ॥   ॥ हवे त्रीजो भाइ वायुभूति छे तेणे अग्निभूतियें दीक्षा लीधी ते वात सांभळी ते वारे चिंतववा लाग्यो जे महारा बे भाइयें ए सर्वज्ञनी पासे दिक्षा लीधी तो ते कोइ महात्मा पुरुषोत्तम देखाय छे तेमाटे हुं पण तेने वांदु पूजुं अने संशय पूछी पाप रहित थाउं एम विचारी ते पण भगवान पासे आव्यो भगवाने तेमज पूर्वोक्त रीते बोलाव्यो अने कह्युं के हे वायुभूति! जीव तेहज शरीर एटले जीव अने शरीर ए बे एक छे एवो तुजने संशय छे ते वेदपदना अर्थ बराबर न जाणवाने लीधे छे तें वेदपद "विज्ञानघनएवैतेभ्योभूतेभ्यःसमुछाय" इत्यादिक एनो अर्थ पूर्वली पेरे जाणवो ए पदथी जीव सत्ता छे तो एम जाणीयें जे जीव छे तो ते जीवनुं भोग्य जे शरीर ते जीवथी भिन्न छे तथा ॥ सत्येनलभ्यस्तपसाह्येषब्रह्मचर्येण ॥ इत्यादि वेदपदनो ए अर्थ छे के सत्य, तप, ब्रह्मचर्य, एणे करीनें संयतपुरुष, एह जाणे छे जे जीव शरीरथी भिन्न छे वळी प्रमाणथी पण प्रत्यक्ष जीव अने शरीर भिन्न देखाय छे केमके ए महारुं शरीर छे एम कहेवाय छे तो इहां महारुं शरीर छे एम कहेनारो जीव छे माटे जीव अने शरीर भिन्न छे एवुं सांभळी वायुभूतियें पण दीक्षा लीधी ॥ इति तृतीय गणधर ॥ ३ ॥   ॥ हवे चोथो अव्यक्त पण प्रभुपासें आव्यो स्वामीये कह्युं के पांचभूत छे के नथी ए तुजने संदेह छे ते तुं वेदपदनो अर्थ नथी जाणतो माटे संदेह रहे छे ते वेदपद (स्वप्नोपमंवैसकलंके०) स्वप्ननी पेठे सर्व छे एवो अर्थ थाय छे ए पद उपरथी तुं जाणे छे जे पांचभूत छे के नथी! पण ए पाठ जे छे ते अनित्यता बतावनारो छे परंतु भूतनी नास्ति करनारो नथी वळी पृथ्वी देवता, आपो देवता, इत्यादिक वेदपद जे छे ते सहु भूतनी सत्ता जूदी जूदी कहे छे माटे पांचभूत छे ते प्रत्यक्ष देखाय छे एवुं सांभळी संशयरहित थइ तेणे पण दीक्षा लीधी ॥ इति चतुर्थ गणधर

॥ ४ ॥ ॥ हवे पांचमो सुधर्म आव्यो तेने नगवाने कह्युं के हे सुधर्म ! आ नवमां जे जेहवा होय ते परनवमां तेहवाज थाय एटले पुरुष मरीने पुरुषज थाय अने स्त्री मरण पामीने पर नवमां पण स्त्रीज थाय ठे एवो तुजने संदेह ठे ते वेदपद कहे ठे ॥ पुरुषोवैपुरुषत्वमश्नुतेपशुः पशुत्वं ॥ एनो अर्थ तुं आवीरीतें जाणे ठे के पुरुष मरीने पुरुष थाय अने पशु मरण पामीने पशु थाय ए अर्थ तुं नित्य जाणे ठे परंतु नित्य नथी ए जे वेदपद ठे ते कोइक जीव आश्रयी ठे जो ए पद नित्य होय तो वेदमां लखे ठे जे ॥ शृगालोवैजायतेयःसपुरुषोदह्यते ॥ अर्थः—(यः के०) जे पुरुष (दह्यते के०) बले ठे (स के०) ते पुरुष (शृगालो के०) सीआलीउं वै शब्द पादपूरणार्थमां ठे (जायते के०) थाय ठे एटले जे पुरुष बले ठे ते पुरुष मरण पामीने सी आल थाय ठे एमां पुरुष ते सीयाल थाय एम कह्युं माटे पुरुष मरीने पुरुषज थाय एवो संशय रा खवो नही पुरुष मरी सीआल पण थाय इत्यादि सांनली संशय मटावी दीक्षा लीधी ॥ इति पं चम गणधर ॥ ५ ॥ ॥ हवे ठठो मंमितजी आव्यो तेने प्रभुयें कह्युं बंध मोक्ष ठे के नथी ए तुजने संशय ठे ते तुं वेदपदनो अर्थ जाणतो नथी ते वेदपद कहे ठे ॥ सएषविगुणोविभुर्नबध्यते, संसरति वा न मुच्यते ॥ अर्थः—(सके०) ते (एष के०) ए (विगुणः के०) सत्वगुणादि रहित (विभुके०) सर्वव्यापी (नबध्यते के०) कर्मेंकरी बंधातो नथी (संसरतिवा के०) संचरतो नथी एटले चालतो पण नथी (नमुच्यते के०) कर्मादि बंधनथी बूटतो पण नथी ए अर्थथी तुं जाणे ठे जे जीवने बंध मोक्ष नथी परंतु एम न जाणवुं ए वेदपद जे ठे ते सिद्ध वर्णववनुं ठे केमके सिद्धना जीवोने बंध मोक्ष नथी पण जे रागादियुक्त संसारी जीवो ठे तेने तो बंध अने मोक्ष बेहु ठे एवुं सांनली संशय टाली एणे पण दीक्षा लीधी ॥ इति षष्ट गणधर ॥ ६ ॥ ॥

हवे सातमो मौर्यपुत्र आव्यो तेने प्रजुयें कह्युं हे मौर्यपुत्र! तुजने देव नथी एवो संदेह छे ते तुं वेदना पदनो अर्थ बराबर जाणतो नथी ते वेदपद आम छे ॥ मायोपमान इंद्र यम वरुण कुबेरादि ॥ एनो अर्थः— माया जेम इंद्र, यम, वरुण, अने कुबेरादिक छे. एनाथी तुजने एवो संदेह छे के देवादि सर्व मायारूप छे परंतु वस्तुगतें नथी एम तुं जाणे छे पण ए मायारूप जे कह्या छे तेतो अनित्यता जणाववामाटे कह्याछे अने वेदमां ॥ सएष यज्ञायुधी यजमानो जसा स्वर्गलोकं गच्छति ॥ अर्थः— यज्ञरूप आयुध छे जेहने ते ए यज्ञ करनारो यजमान तत्काल सूधो स्वर्ग एटले देवलोकें जाय छे ए वेदपद उपरथी हे मोर्यपुत्र! देवलोक छे एम सिद्ध थाय छे एवीरीतें वेदपदनो अर्थ सांजली मौर्यपुत्रनो संदेह टव्यो तेथी दीक्षा लीधी ॥ इति सप्तमगणधर ॥ ७ ॥ ॥ हवे आठमो अकंपित आव्यो तेने स्वामीयें कह्युं हे अकंपित! तुजने नारकी नथी एवीरीतनो संदेह छे ते वेदपदना अर्थनुं रहस्य तुं जाणतो नथी तेने लीधे संदेह छे ते वेदपद कहे छे ॥ नेह वै प्रेत्य नरके नारकास्संति ॥ ए वेदपदना अर्थथी तुं एम जाणे छे के परलोकमां नारकी नथी परंतु ते अर्थ तुं खोटो समजे छे एनो अर्थ आम छे ते हुं तुजने कहुं बुं के (नेह के०) नही इहां (प्रेत्य के०) परलोकमां (नरके के०) नरकने विषे शाश्वता (नारका के०) नरकना जीव (वै के०) निश्चें एटले नारकीना जीव शाश्वता नथी एम जाणवुं, पण नारकी नथी एम न जाणवुं केमके वेदपदमां नारकी छे ते पद कहुं बुं ॥ नारको वै एष जायते यःशूद्रान्नमश्नाति ॥ अर्थः— जे शूद्रनुं अन्न लीये ते नारकी थाय ए वेदपद उपरथी नारकी छे एवो अर्थ सांजली एणे पण दीक्षा लीधी ॥ इति अष्टम गणधर ॥ ८ ॥ ॥ हवे नवमो अचलभ्रातजी आव्यो तेने प्रजुयें कह्युं के ताहारा मनमां पुण्य पाप छे किंवा नथी एवो

संदेह ने ते तुं वेदना पदनो अर्थ विरुद्ध समजे ने तेने लीधे ने ते वेदपद ॥ पुरुष एवेदङ्ग ॥ इत्यादि बीजा गणधरना वेदपदना पाठमां एनो बधो अर्थ करेलो ने ते रीते आंही पण जाणवो माटे जीव पुण्यथी सुख पामे अने पापथी दुःख पामे एम पुण्य अने पाप ए बे वेदमां ने ए अर्थ सांजली संदेह टाली एणे पण दिक्षा लीधी ॥ इति नवम गणधर ॥ ए ॥ हवे दशमो मेतार्यजी आव्यो तेने प्रजुयें कह्युं हे मेतार्य ! परलोक ने के नथी एवो तुजने संदेह ने तेना उपर वेदनां पद जे रीते प्रथम गणधरने कह्यां हतां ते रीते सर्व कही देखाड्यां वली ॥ अस्ति परलोक इहलोकस्यान्यथानुपपत्तेस्त्वत्पूर्वजवत् ॥ अर्थः—परलोक ने जो न होय तो आ लोक पण केम कहेवाय माटे ताहारा पूर्वजनी परें परलोक पण ने जेम ताहारा पूर्वज ने तो तुं पण ने अने जे पाप करीने मरण पामे ते नरकमां जाय अने धर्म करे ते मोक्षे जाय एवो अर्थ सांजली तेणे पण दिक्षा लीधी अने प्रजुनो शिष्य थयो ॥ इति दशम गणधर ॥ १० ॥ ॥ हवे अगीआरमो प्रजासजी आव्यो तेवारे प्रजु बोल्या हे प्रजास ! तुजने मोक्ष ने के नथी एवो संदेह ने ते तुं वेदपदनो अर्थ बराबर जाणतो नथी तेने लीधे ने ते वेदपद कहे ने ॥ जरामर्यं एतत्सर्वं यदग्निहोत्रं ॥ अर्थः— जे ए (अग्निहोत्रं के०) यज्ञ ने (तत्सर्वं के०) ते सर्व (जरामर्यंवा के०) जावज्जीव करवो अने ए होममां जीव मरण पामे ने ते पाप रूप ने ते स्वर्गना सुख आपे पण तेथी मोक्ष न थाय केमके जावज्जीव ए करवो कह्यो माटे स्वर्गेज जवाय पण ते विना मोक्ष जावानो उपाय नथी तो मोक्ष केम थाय एम विचारतां मोक्ष नथीज एवो अर्थ तुं करे ने तेथी तुजने संदेह रह्यो ने परंतु ते अर्थ तुं करे ने तेम नथी एनो अर्थ आवी रीते ने ते हुं तुजने कहुं बुं ते सांजल जे ए अग्नि

होत्र छे ते जावज्जीव सर्व पण छे परंतु वा शब्दथी मुक्तिना अर्थी जे जीवो छे तेउए मोक्षना कारण सारूं पण क्रियानुष्ठान करवुं एटले ए होमज सर्वकाल करवो नही परंतु मोक्षनो पण उपाय करवो तथा वली बे ब्रह्म छे (परमपरंके०) तेमां एकतो परब्रह्म अने बीजो अपर ब्रह्म (तत्रपरंसत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म के०) तिहां परब्रह्म तो सत्यरूप ज्ञान अनंतरूप नाशरहित ब्रह्म छे एटले अनंत ज्ञानमय ब्रह्म ते पर छे ए श्रुतिथी मोक्ष छे एम जाणवुं ए अर्थ सांभली एणे पण दीक्षा लीधी ॥ इति एकादशम गणधर ॥ ११ ॥ ॥ एरीते श्रीगौतम स्वामीथी मांडीने यावत् प्रभासजी पर्यंत सर्व मली अगीआर गणधर आव्या ते सर्वना मनमां जे जे संशय रह्या हता ते प्रभुयें टाल्या तेथी अगीआरे जणे मली पोताना चुम्मालीशसो शिष्यो सहित प्रभु पासेथी दीक्षा लीधी प्रभुयें सर्वने त्रिपदी आपी ते आवीरीतें:— प्रथम उपन्नेइवा ॥ एटले सर्व उपजे छे एम कह्युं तेवारे शंका पेदा थाय जे सर्व उपजे छे तो ते जगतमां केवीरीतें समाय तेवारे बीजुं पद ॥ विगमेइवा ॥ एटले विनाश पामे छे ए पदमां पण शंका उपजे छे के जो विनाश थतो जाय तो सर्व संसार शून्य थइ जाय एम विचारी त्रीजुं पद कहेछे ॥ धुवेवा ॥ एटले ए संसारनी स्थिति निश्चल छे तेवारें जाण्युं जे उपजे छे, विणसे छे अने रहेनारो छे ते रहे पण छे एवी संसारनी स्थिति सदा सर्वदा त्रणेय कालमां चालती आवे छे एम त्रिपदी प्रभु पासेथी पामीने ए अगीआरेय गणधरे बे घडीमां एटले एक मुहूर्त्तमां द्वादशांगीनी रचना करी ते अवसरने विषे इंद्र महाराज पोते रत्नना थालमां वासक्षेप लेइ हाजर थया तेमांथी प्रभुयें मुठी भरीने अगीआरे गणधरने माथे अनुक्रमे वासक्षेप कर्यो ए तीर्थनी स्थापना थइ देवताउए देवदुंदुभि वगाड्यां अने जयजय शब्दने बोलवा लाग्या ॥ इति गणधरवाद

स्तथा गणधरस्थापनाधिकारः ॥३॥ ॥ पछी चंदनबालायें जगवाननी देशना सांजली प्रतिबोध पामीने महामहोत्सव सहित प्रजुपासेथी दीक्षा लीधी तेनी पछवाडे बीजा पण घणा जनोए दीक्षा लीधी घणा श्रावक थया,घणी श्राविकाउ थइ, एम चार प्रकारना संघनी स्थापना करी ॥

॥ हवे गौतम स्वामीनो संबंध कहे छे, गौतम स्वामीनुं उत्कृष्टरूप, प्रथम संघयण, प्रथम संस्थान, छठ अठमादिक तपश्चर्या करता थका, धर्मदेशना देता थका, तेजोलेश्यादिक अठावीश लब्धि नाधरनार, चार ज्ञानवंत, चौदपूर्वधारी, श्रुतकेवली थया, जेने दीक्षा आपे, तेने केवल उपजे पोताने प्रजुउपर स्नेह घणो तेथी केवल उपजे नही तेवारें चिंतव्युं जे केम मने केवलज्ञाननी प्राप्ति थाशे के नही ? गौतमनी एवी चिंतवणीजोइ श्रीवीर जगवान देशनामां एवीरीतें बोल्या के जे पोतानी लब्धियें अष्टापद पर्वत उपर चढी चोवीश तीर्थंकरनें वांदे, ते जीव तेहज जवें मोक्ष जाय, एवी वीरनी. वाणी सांजली बत्रीश कोश उंचो अष्टापद पर्वत छे जेनी आठ पाव डीयो छे तेना उपर सूर्यना किरण अवलंबीने श्रीगौतम स्वामी पोतानी लब्धियें चढया, तिहां चोवीश जिनने वांदी जगचिंतामणि स्तवन जोडी श्रीवयरस्वामीनो जीव तिर्यक्जृंजकनामा सामानिक देवछे तेने पुंडरीकाध्ययनें प्रतिबोधीने नीचें उतरया, तेवारें पन्नरशेनें त्रण तापस चोथ, छठ अने अठम तपने पारणें कंदमूल फलादिनुं पारणुं करे, एम करतां बार मास वहि गया छे तेमणें श्रीगौतमने उतरता दीठा तेवारें चिंतव्युं जे आपणे एना शिष्य थाइयें तो अष्टापद उपर जइ देवने वांदीयें एम धारी उठीने श्रीगौतमजीने पगें लागा, गौतमें तेमने प्रतिबोधिनें दीक्षा आपी पछी मंकोलारें अष्टापदें चडावी तापसने देव वंदावीने पाछा उतारया, तेवारें गौतमजीयें पूछ्युं के हे शिष्यो ! तमें पारणुं करशो ? ते बोल्या हा स्वामी, पछी गौत

मजी पोतानी लब्धियें करी खीरनो एक पडघो सवा शेरनो नरी आव्या अने तापसोने कह्युं के जगो पारणुं करो, तेवारें खीरपात्र देखी तापस कहेवा लागा के खीर थोडीने खानार घणा माटे आटली खीरथी तो आंखे आंजण थाशे ? अथवा बधाने एकेकुं टीलुं कराशे ! पडी, गौतमजीयें कह्युं के हे शिष्यो मांफले चालो महारे पारणुं करी गुरु पासें जावुं डे एम कही मांफले बेसाडी तापसोनो संदेह नांजवाने अर्थें खीरना पात्रामां पोतानो अंगुगो मेल्यो, तेवारें अक्षीण लब्धिथकी पन्नरशें त्रणे तापसने पारणां कराव्यां, पोतें पण पारणुं कर्युं, तिहां पांचशे ने एक तापसने तो खीर जमतां जमतां श्रीगौतमना गुण चिंतवतां चिंतवतां केवल ज्ञान उपन्युं अने पांचशेंने एकने प्रजुनुं समोवसरण देखी केवल ज्ञान उपन्युं तथा पांचशें एक तापसने तो श्रीवीर जगवाननुं मुख देखतांज केवल ज्ञान उपन्युं एम पन्नरशें त्रणे तापस केवली थया तेणे वीरजगवानने वांदी केवलीनी सजायें जावा मांम्युं, तेवारें गौतम बोल्या हे शिष्यो ! तमे उद्मस्थनी सजायें बेसो अहींयांतो केवलीनी सजा डे माटे न बेसवुं तेवारें वीरजगवान् बोल्या हे गौतम ! तमें केवलीनी आशातना म करो, ए पन्नरशें त्रणे केवली थया डे, तें सांजली गौतम खेद पाम्या कें जुउ ? महारा शिष्य केवली थया पण हुं केवली थातो नथी एम घणो घणो चित्तमां खेद करवा लाग्यो, तेवारें जगवानें कह्युं के हे गौतम ! तुं खेद म कर, अंते आपणे बे सरखा थाशुं ॥ इति गौतम संबंधः ॥ हवे जगवानें कया कया गाममां केटलां केटलां चोमासां कर्यां ते सूत्रकार कहे डेः– ते कालने विषे, ते समयने विषे, श्रमण जगवंत श्रीमहावीरस्वामीने अस्थिग्रामनी निश्रायें वर्षाकालनुं पहेलुं चोमासुं थयुं तेवार पडी चंपानगरीमां अने पृष्ठचंपानी निश्रायें त्रण चोमासां वर्षावकालनां थयां एवं चार तथा विशाला नग

रीयें वाणिय गामनी निश्रायें करीने बार चोमासां वर्षाकालनां थयां एवं सोल तथा राजगृह नगरना नालंदीनामे पाडानी बाहेर निश्रायें चौद चोमासां वर्षाकालनां थयां एवं त्रीश तथा मिथिला नगरीयें छ चोमासां कर्यां तथा नद्दिका नगरीयें बे चोमासां कर्यां तथा आलंनिका नगरीयें एक चोमासुं कर्युं तथा सावत्थि नगरीयें एक चोमासुं कर्युं तथा अनार्य देशमां एक चोमासुं कर्युं एवं एकतालीश थयां छेलुं बेतालीशमुं चोमासुं मध्यम पावापुरी अपापा नगरीयें हस्तिपाल राजानी जूनी लेखकशालामां जगातनी मांमवी कारकुननी सनामां वर्षाकाले रह्या ॥ १२३ ॥ ते चोमासानो चोथो महीनो सातमुं पखवाडीयुं कार्त्तिक वदि आमावास्याना दिवसनी रात्रिना छेहेंडाने विषे, नगवान श्रीमहावीरस्वामी काल प्राप्त थया. जाति, जरा, मरण बंधन एटले जनमवुं, वृद्ध थावुं, मरवुं तेनुं जे बंधन तेने छेदीने सिद्ध थया, तत्त्व जाणवा वाला थया, मुक्त थया, सर्व दुःखनो अंत कर्यो, संताप रहित थया, सर्व दुःखनो क्षय थयो. ॥१२४॥ पांच संवत्सर मांहेलो चंद्रनामा बीजो संवत्सर वर्त्ते छे तेने विषे, प्रीतिवर्द्धन नामे मास ते कार्त्तिक मास तेने विषे, नंदीवर्द्धन नामा पक्ष, अग्निवेश्य नामा दिवस तेने विषे तथा क्यांएक उपशम एवुं बीजुं नाम ए दिवसनुं कहे छे, देवानंदा नामा रात्रि क्यांएक बीजो निरत्ति एवुं नाम पण ए रात्रिनुं छे जे लवमां नगवंत मोक्षे पहोता ते लवनो नाम अर्च छे एटले अर्च नामा लव, मुहूर्त्त नामा प्राण एटले श्वासोश्वास, सिद्ध नामा स्तोक, नाग नामा करण, सर्वार्थ सिद्ध नामा मुहूर्त्त, स्वाति नामा नक्षत्रनी साथें चंद्रमानो योग होते छते नगवान कायस्थिति नवस्थिति खपावीने कालगत थया, यावत् मन संबंधि शरीर संबंधि सर्व दुःखथी रहित थया ॥ १२५ ॥ ॥ जे रात्रिमां श्रमण नगवंत श्रीमहावीरस्वामी कालगत थया ते रा

चित्र ५०



भगवान् सुवर्ण कमल बेठा घणा भव्यजीवोने धर्मोपदेश देता थका निर्वाण पाम्या समाधिस्थ थया

त्रियें चारे निकायना घणा देव, घणी देवीयो स्वर्गलोक थकी हेठा तिर्छा लोकने विषे उतरवा लाग्यां तेणे करी तथा ऊंचा ऊर्ध्वलोकने विषे जावा लाग्यां तेथी करीने ते रात्रिने विषे आकाशमां घणो उद्योत होतो हवो ॥ १२६ ॥ ॥ जे रात्रियें श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी कालगत थया, ते रात्रियें घणा देव अने देवीयो आवतां जातां बहुल आकुल थयां तेथी अव्यक्त कोलाहल शब्द थवा लाग्यो ॥ १२७ ॥ ॥ जे रात्रियें भगवान श्रीमहावीरस्वामी कालगत थया ते रात्रिमां गौतम जे इंद्रभूति अणगार भगवाननो शिष्य तेनुं प्रेमबंधन त्रूटयुं तेथी श्रीगौतमजीने केवल ज्ञान केवल दर्शन उपन्युं ॥ १२८ ॥ ॥ जे रात्रिमां श्रीगौतमस्वामीजीने केवल ज्ञान उपन्युं ते केवीरीते उपन्युं तेनी कथा कहे छेः— पोतानो अंतसमय जाणीने श्रीमहावीर देवें श्री गौतमजीनो पोतानी उपर निबड स्नेह जाणी ते प्रशस्त स्नेह राग निवर्तन करवाने अर्थें संध्यासमयथी पहेलां श्रीगौतमस्वामीने देवशर्मा ब्राह्मणने प्रतिबोध करवा सारुं पार्श्ववर्त्ती ग्रामें मोकल्या हता, ते ब्राह्मणने प्रतिबोध आपी तिहां रात्रि रही प्रभातें पाछा वल्या, तेवारें मार्गमां केटलाएक देवोने शून्य चित्तें देख्या अने उपयोगथी वीरनिर्वाण सांभल्युं, ते वारें वज्राहतनी पेरें मूर्छा पाम्या, थोडीवेला पछी सावधान थया, तेवारें मोहने वशें विलाप करवा लागा के हे प्रभो! तमे त्रण लोकना सूर्य अस्त पाम्या तो हवे मिथ्यात्वरूप अंधकार पसरवा मांडशे! कुतीर्थरूप घुवडना समूह जाग्रत थइ गर्जारव करशे! दुरमति दुःकालरूप राक्षस प्रवेश करशे! कुमतिरूप चोर घणा थाशे! जेम सूर्य अस्त थये कमल कुमलाय, तेम चतुर्विध संघरूप कमल वन कुमलाशे! जेम चंद्रविना आकाश, जिम दिवाविना मंदिर, जेम सूर्यविना दिवस, ए जेम शोभता नथी तेम तमारा विना ए भरत क्षेत्र शोभा रहित थाशे!

हे वीर तमारा विना हवे सात प्रकारना इति उपद्रव प्रवृत्त थशे, हे वीर तमारा विना पा
खंडी रूप तारा दे दीप्यमान थशे, तमाराविना धर्मरूप चंद्रमाने पापरूप राहु ग्रहण क
रशे, हे श्री महावीरदेव ! हवे हुं कोना पगतलियां उल्लासतो थको महारा मनना संदेह पू
छीश कोने हुं नगवान् कही बोलावीश ! कोने हुं नमीश ! हे प्रनो ! हवे मुजने तुम विना
बीजो कोण गौतम कही बोलावशे ! हाहा ! ! हे वीर हे वीर ! तमें ए शुं कर्युं जे आ वखतें मने
दूर कीधि, लौकिक पणुं पण नही राख्युं, हुं शुं बालकनी पेरे आडो बेशी आपनो छेडो प
कडी रहेत ? अथवा शुं केवल ज्ञाननो नाग मागत ? शुं मोक्षमार्ग संकीर्ण थात ? अथवा
शुं तमोने कांइ नारलागत ? के मुजने नोलावीने चाल्या गया, हे वीर जे वेलायें पोतानो बा
लक वेगलो होय तो पण तेने बोलावीने पोतानी पासें राखवो जोइयें ते वेलायें उलटो तमे
मुजने पोताथी दूर कर्यो, हे वीर तमे शुं तमारा उपर महारो कृतिम स्नेह जाण्यो ? हे वीर
हुं तमारे शुं असुखकारी थातो हतो जेथी मने मूकी गया, हे वीर तमे मुजने केम वीसारी
मूक्यो, हे वीर तमे आजे मुजने महोटा विरह रूप समुद्रमां नाख्यो, हे वीर तमारा विना हुं
महोटा वियोग रूप दाहमां दाझ्यो, हवे तमारा विना महारो दुःख कोण नांजशे, हे वीर हवे
समोसरणनी शोना विलय थइ गइ, हवे मुक्ति मार्गनो साथ नांग्यो, हे वीर हवे जेम जल
विना माछली टलवले तेम तमारा विना चतुर्विध श्रीसंघ टलवलतो थशे, हे वीर तमारा व
चनरूप उपशम जलविना जिनशासन रूप वाडीयो बाग बगीचा सूकाइ जशे, हे वीर तमारा
विना समता रूप केतकी सूकाइ जशे, हे वीर हवे नव्यजीवना मनरूप न्रमर ते किहां जइने
गुंजारव करशे, हे वीर हे गुणनिधान, हे जिनशासन नायक, हे नव्यजीव सुख दायक, हे

जिनशासन सणगार, हे करुणासागर, तमे मुजने विलविलतो मूकीने सातागज दूर जइ वस्या तो हाहा हे वीर हवे हुं कोनी साथें संदेसो कहेवरावुं एम अनेक प्रकारें गौतमजी प्रशस्त मोहना उदयथी नाना प्रकारनो दुःख करता थका श्री गौतमने वार वार मोहने वशें करी वीर ! वीर ! एवा अक्षर मुखें रही गया. पछी गौतमजीयें विचार्युं जे ए श्रीवीतराग तो निःस्नेहीज होय, माटे अहीआं तो महारोज अपराध छे, हुंज मूर्ख थयो जे में मोहने वशें तदा श्रुतनो उपयोग आपी जोयुं नही माटे ए महारा एक परका स्नेहने धिःकार होजो. ए स्नेहें सर्युं ॥ अरे आ मोहराजानो कहेवो महात्म्य छे जे महारा सरखाने पण एवीरीतें पीडाकरे छे तो वली बीजा ते सी गणतीमां ? अरे में रागना वशथकी विचार्युं नही जे ए श्रीवीर प्रभुतो निरागी निस्नेही हता तो महारे एना उपंर राग करवो ते फोकट क्लेष कारीज जाणवो ए निरमोहीने शानो मोह होय अर्थात् कांइ पण नहोय वली हे जीव तुं कोणछो अने ते कोण छे तेमां पण जो निश्चे दृष्टीयें विचारवा जइयें तेवारें तो श्रीवीर अने हुं कांइ जूदा नथी केमके आ आत्मातो एकजं ज्ञान, दर्शन, चारित्र मयी शाश्वतो छे, बीजा सर्वभाव अशाश्वता छे, हुं एकलो छुं, महारो बीजो कोइ स्नेही नथी, जगतमां कोइ कोइनुं नथी इत्यादिक सम भावना भावतां श्रीगौतम स्वामीने केवलज्ञान उपन्युं, इंद्रादिकदेवतायें प्रभातें केवलज्ञाननो महोत्सव कीधो, इहां कवि युक्ति करे छे के श्रीगौतमस्वामी अहंकारथी तो प्रतिबोध पाम्या अने रागथी गुरुभक्ति करी तथा विषवादमां केवल ज्ञान पाम्या ए आश्चर्य छे, दीर्घायुष्यवंत जाणीने सौधर्मस्वामीने पाटदीधो ॥ पछी बार वरस केवल पर्याय पाली सर्व मली बाणुं वर्षायु पाली, मोक्षें पोहोता छे ए गौतमस्वामी जेमने दीक्षा आपे ते तेहज भवमां मोक्ष जाय ए गौतम

स्वामीमां महोटो अतिशय कह्यो छे इति गौतम केवलोत्पत्ति संपूर्ण ॥ जे रात्रीयें नगवान मोक्ष गया ते रात्रिमां नव मल्लनी जातिना उपन्या, नव लच्छनी जातीना उपन्या, काशी कौशल्य देशना मालक गण एटले परिवारना धणी एवा अढारे गण राजा छे ते नगवाननो मामो चेडो महाराजा छे तेना ए अढारे देशना राजा मित्र समान छे माटे मलवाने अर्थें आव्या छे ते राजा अमावास्याने दिवसें उपवास करीने रात्रें पोसहमां बेठा हता पछी ते राजाउए नगवंत निर्वाण पाम्या माटे केवलज्ञान रूप जे नाव उद्योत हतो तेतो गयो तो हवे ड्रव्य उद्योत करीशुं ॥ १२७ ॥ एटले पोसह उपवास रूप जे ड्रव्य उद्योत ते आगला वरसो वरसें ए अमावास्या आवे थके करीशुं अथवा हवे ड्रव्य उद्योत करशुं एवुं विचारीनें दीवा प्रमुख ड्रव्य उद्योत कस्यो ते दिवसथी मंगलिकने अर्थें महोटुं पर्व दीवालीनुं थयुं ते पर्वे नगवान मोक्ष पाम्या, शिवसुख निरुपड्रव सुख पाम्या ॥ वली कार्त्तिक शुदी एकमने दिवसें गौतम स्वामीने केवलज्ञान उपन्युं तेनो हर्ष जाणवो अने कार्त्तिक शुदी बीजने दिवसें नगवाननो महोटो नाइ नंदीवर्द्धन छे ते प्रनुनुं निर्वाण सांजलीने घणोज शोकवंत थयो तेनो शोक मटाववा सारूं नगवाननी बहिन सुदर्शनायें पोताने घेर नंदीवर्द्धनने तेडीने जिमाड्यो नाइनो शोक टाल्यो ते दिवसथी लोकोमां नाइबीज चाली ॥ १२९ ॥ जे रात्रिमां नगवान मोक्ष गया ते रात्रिमां क्षुड्र एटले क्रूर स्वनाव छे जेनो एवो अठ्यासी ग्रह माहेलो त्रिशमो नस्मराशिनामा ग्रह तेनी बे हजार वर्षनी एक नक्षत्र उपर स्थिति छे ते नगवानना उत्तराफाल्गुनी नामे जन्मनक्षत्र उपर आव्यो छे ॥ १३० ॥ ॥ जे दिवसथी नस्मराशि नामा महोटो ग्रह नगवानना जन्म नक्षत्र उपर आव्यो ते दिवसथी प्रारंनीने निर्ग्रंथ जे साधु साधवी छे तेमनी घणी

पूजा एटले उठीने उन्नुं थावुं आहारादिकनुं देवुं तथा सत्कार ते वस्त्रादिकनुं देवुं तेनी वृद्धि थाशे नही ॥१३१॥ इहां प्रथम जगवानने सौधर्मेंद्रे वीनंति करी हती के हे महाराज! तमे मोक्ष जाउंगो परंतु तमारा संतानीयांने बे हजार वर्ष पर्यंत पीडा थाशे. माटे बे घडी जस्म ग्रह बाकी रह्यो छे एटलुं बे घडीनुं आयुष्य तमारुं वधारो एटले जस्मग्रह उतरी जाय तो पाछलथी आपना संतानीयां चेला चेलीने शाता उपजशे ते सांजली जगवान बोल्या हे इंद्र! ए वात त्रणे कालमां न थाय तमे तो बे घडी आयु वधारवा कहो छो परंतु एक समय मात्र आयु पण महाराथी वधे नही त्रूटयुं आयु कोइथी वधार्युं जाय नही ए एमज जावी छे जे बे हजार वर्ष पर्यंत महारा तीर्थमां शिष्योने बाधा थवा वाली छे तेने कोण वर्जी शके कोइनुं पण सामर्थ्य नथी अनें जेवारे जस्मराशी ग्रहनां बे हजार वर्ष पूरण थइ जाशे तेवारे निर्ग्रं थोनी घणीज पूजा सत्कारादिक मानता थाशे धर्मनो उदय थाशे, श्रीसंघने हर्ष थाशे ॥ दोहो ॥ घडीन लभ्ने आगली, इश्युं अरके वीर ॥ इम जाणी जीव धर्मकर, ज्यां लगे वहे शरीर ॥ १३२ ॥ ॥ जे रात्रियें जगवान मोक्ष गया ते रात्रियें घणा झीणा झीणा कुंथुआ तेंद्रिय जातीना जीव उत्पन्न थया ते उठ्या पण नजाय, उठरीने अलगा पण न मूकाय अने साधु साधवीने नजरे नही आवे सीघ्र चाले तेवारे देखाय ॥ १३३ ॥ ते देखी घणा साधु सा ध्वीयें जात पाणी आदिक चारे आहारनो त्याग करी अनशन कर्युं तिहां शिष्यें पुछ्युं जे हे गुरु महाराज आवी रीतनो उपद्रव केम थयो तेवारें गुरु बोल्या हे वत्स! आज पछी चारित्र डुःखे पलशे ॥ १३४ ॥ ते कालने विषे ते समयने विषे जगवान श्रीमहावीरस्वामीने इंद्रजूति आदेदेइने चौद हजार उत्कृष्टी साधुउंनी संपदा थइ ॥ १३५ ॥ ॥ जगवान श्रीमहा

वीरस्वामीने चंदनबाला प्रमुख छत्रीश हजार उत्कृष्टी साध्वीउंनी संपदा थइ ॥ १३६ ॥ ॥ जगवानने शंखजी तथा शतकजी आदे देइने १५९००० उत्कृष्टी श्रावकोनी संपदा थइ ॥ ॥ १३७ ॥ ॥ जगवानने सुलशा, रेवती प्रमुख ३१८००० उत्कृष्टी श्राविकाउंनी संपदा थइ ॥ १३८ ॥ जगवानने केवली नही पण केवली सरखा सर्व अक्षरोना संयोग जाणे तेवा केवलीनी पेरें सत्य प्ररूपणा करवा वाला एवा त्रणशें साधुउं चौद पूर्वधारीनी उत्कृष्टी संपदा थइ ॥ १३९ ॥ जगवानने तेरशो साधुउं अवधिज्ञानीनी उत्कृष्टी संपदा थइ ॥ १४० ॥ ॥ जगवान श्रीमहावीर स्वामीने सातसें केवलज्ञानी संपूर्ण केवलज्ञान अने केवल दर्शनना धरनारनी उत्कृष्टी संपदा थइ ॥१४१॥ ॥ जगवानने जे देवतानी ऋद्धि बनावी लीये एवा सातशें वैक्रियलब्धिना धरनारनी उत्कृष्टी संपदा थइ ॥१४२॥ ॥ जगवानने पांचशें विपुलमति जे अढीद्वीप बे समुद्रमां संज्ञीपंचेंद्रीय पर्याप्ता जीवोना मनना नाव जाणे एवा विपुलमति मनःपर्यवज्ञानीनी उत्कृष्टी संपदा थइ १४३ जगवानने जे देवो अने मनुष्योनी परषदामां बेशी वाद करता कोइथी हारे नही एवा चारसे वादिउंनी उत्कृष्टी संपदा थइ ॥१४४॥ ॥ श्रीमहावीरने जे अंते एटले समीपे वासी एटले वसे रहे तेने अंतेवासी कहीयें एवा सातशे शिष्य उत्कृष्टा मोक्ष गया ए जगवानना पोताना हाथ दिक्षित जाणवा तथा चौदशे साधवी उत्कृष्टी मोक्ष गइ ते पण पोतानी हाथ दिक्षित जाणवी ॥१४५॥ ॥ श्रीमहावीरने जे आगामि नवे मोक्ष जावावाला जेमनी गतिनुं जलुं आयुष्य एवा उत्कृष्टा आठशे साधुउं विजयादि पांच अनुत्तर विमाने गया ॥ १४६ ॥ श्रमण जगवान् श्रीमहावीर स्वामीने बे प्रकारें अंतगड जूमि थइ एटले मुक्ति मार्गनी मर्यादा थइ ते आवी रीते के जव जे संसार तेनो अंत करवो तेनी जे जूमिका एटले मर्यादा अथवा

कर्मनो अंत करवो तेनी मर्यादा ते बे प्रकारनी थइ ते बे प्रकारनां नाम कहे छे एक जुगांत कृत जूमि अने बीजी पर्याय अंतकृत जूमि जाणवी तेमां प्रथम युग एटले कालमान विशेष, अनुक्रमे गुरु शिष्य प्रतिशिष्यादिरूप जे पुरुषो तेना प्रमाणे कालमान जाणवुं ते आंही श्रीवीर जगवानने त्रण पुरुषना पाट पर्यंत काल सुधी कर्मनो अंत थयो एटले बीजा घणा जीवोए कर्म खपाव्यां छे ते श्रीवीर जगवानना पाटथी मांमीने श्रीजंबूस्वामी पर्यंत मोक्ष मार्ग चाल्यो तेमां एक तो श्रीवीर जगवान पोते बीजा तेमने पाटे तेमना शिष्य श्री सुधर्मा स्वामी त्रीजा जगवानना प्रतिशिष्य अने श्रीसुधर्मे स्वामिना शिष्य श्रीजंबूस्वामी ए त्रणं पाट सुधी मोक्ष मार्ग वह्यो छे तेने युगांतकृत जूमि कहीयें अने बीजी पर्याय अंत कृतजूमि ते श्रीतीर्थंकरने केवल ज्ञानं उपन्या पछीनो काल ते आश्रयी जाणवो ते जगवान श्रीमहावीरस्वामिने केवलज्ञान उपना पछी चार वर्षे मुक्तिमार्ग वह्यो एटले प्रजुने चार वर्षनो केवल पर्याय थया पछी बीजा कोइक जीवने कर्मनो अंत थयो कोइ मुनि मोक्ष गयो एम चार वर्ष वीते मोक्षमार्ग प्रवर्त्यो छे, बीजा जीवोने कर्मनो अंत थयो छे ते पर्याय अंतकृत जूमि कहीये ॥ १४७ ॥ ॥ ते कालने विषे, ते समयने विषे श्रमण जगवंत श्रीमहावीर स्वामी त्रीश वर्ष घरवासे रह्या अने कांइक जाजेरा बार वर्ष छद्मस्थ पणे रह्या तथा कांइक उछा एटले साडा छ मासे जणा त्रीश वर्ष केवली पणे विचर्या एकंदर बेतालीश वर्ष लगे चारित्र पर्याय पाली साधुपणुं पाल्युं सर्वमली बहोतेर वर्षनुं आयुष्य पालीने वेदनीकर्म, आयुकर्म, नामकर्म अने गोत्रकर्म ए चार कर्म शेष रह्यां हतां ते क्षय थयां तेवारे एहज अवसर्पिणी कालने विषे डुसुम सुसमानामे चोथो आरो घणो वीत्यो अने चोथा आरानां

त्रण वर्षने साडा आठ महीना बाकी रहे थके पावानगरीमां हस्तिपाल राजानी कारकुननी सन्नामां पोते एकला परंतु साथे बीजो कोइ नही एटले बीजा तीर्थंकरो सर्व साधुर्उना परिवार सहित मोक्ष गया छे अने श्रीवीर नगवान तो एकलाज बेलानुं तप एटले पाणी रहित बे उपवास चउविहारा करीने पलांठीवाली बेठा थका स्वाति नक्षत्रमां चंद्रमानो योग आवे थके पाछली चार घडी रात रहे थके पञ्चावन्न अध्ययन पुण्य फलना कहेवावाला अने पञ्चावन्न अध्ययन पाप फलना कहेवावाला तथा छत्रीश अध्ययन पूछ्या विना कहीने छेल्लो प्रधान नामा मरुदेवीनुं अध्ययन प्ररूपता थका काल प्राप्त थया, ऊंचा गया, जाति जन्म जरा मरणनुं बंधन कापीने सिद्ध थया, बुद्ध थया, मुक्त थया, कर्मोनो अंत करीने सर्व संताप रहित थया. दुःखथी छूटा ॥ १४७ ॥ ॥ नगवान श्रीमहावीर स्वामि मोक्ष गया पछी नवसे वर्ष वीत्यां अने दशमां सैकडानां एंसी वर्ष थयां तेवारे एटले वीरनिर्वाणथी ए७० वर्षे पुस्तक लखाणुं अने वांचनामां नवशे त्याणु वर्षे पुस्तक लखाणुं एवुं देखाय छे ॥ १४ए ॥ हवे नगवंतनुं निरवाण थयुं, तेवारे इंद्रादिकना आसन चलायमान थयां, नगवंतनुं पांचमुं निर्वाण कल्याणक जाणी सर्व इंद्र नेगा थइने चमरेंद्रादिकें बावना चंदने करी नगवंतनी चय रची, अग्निकुमार देवोयें अग्नि मूक्यो, वायुकुमारे वायरो विकूर्व्यो, नगवंतना मांस सर्व शोषाव्यां पछी मेघकुमार देवोयें वरसाद वरषाव्यो शरीरनी राख खीर समुद्रमां नाखी, नगवंतनी उपरली दाढा सौधर्मेंद्रें लीधी, हेठली दाढा चमरेंद्रे लीधी, ते दाढाने रत्नमय डाबलामां राखी पूजे. ए विस्तारे अधिकार श्री जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिमां कह्यो छे, त्यांथी जोवुं ॥ हवे पुस्तक लखाणुं ते आ प्रमाणे के श्रीवीर निर्वाण पछी वल्लनीपुर नगरे देवर्द्धिगणि क्षमाश्र



भगवानने अग्नि संस्कार करवा माटे पालखी मांथी उतार्या



अग्निसंस्कार कर्यापछी राखनो ढगलो करी तेमांथी देवताओ दाढा अने अस्थि प्रमुख लई जायछे. केटलाएक राखनी पोटलीओ बांधी लई जायछे

मण प्रमुख सर्व श्रीसंघे मळीने सिद्धांत पुस्तकारूढ कीधो, एटले आगल तो सर्व सूत्रो आ चार्य प्रमुखने मुखपाठे हतां पछी बार वर्ष दुःकाळ पड्यो तेने लीधे केटला एक साधुउ मरण पाम्या तेथी घणा सूत्रपाठ साधुउने मुखे हता ते विछेद गया, तेवार पछी जेवारे सुगाळ थयो, तेवारे सूत्रोनो विनाश थतो देखी साधुनो संघ भेगो थइ जेने मुखे जेटलो पाठ स्म रणमां रह्यो हतो ते सर्व ताळपत्र उपर लखी पुस्तकारूढ कर्यो तथा केटला एक एम कहे छे के नवशे एशीमा वर्षथी सर्व सिद्धांत पुस्तकें लखवा मांड्या ते नवशेने त्याणुमे वर्षें संपूरण लखाइ रह्या एवुं पण देखाय छे यतः ॥ वल्लहिपुरंमिनयरे, देवढ्ढिपमुह सयल संघेहिं ॥ पुत्थे आगमलहिउ, नवसय असिआउ वीराउ ॥ १ ॥ तथा कोइ एक कहे छे के सकंदिला चार्यें माथुरी वाचना करी पुस्तक लिख्यो छे तथा कोइएक कहे छे के कालिकाचार्यें चोथनी संवत्सरी नवशेने त्याणु वर्षें थापी अने पक्खी चौमासी एक दिवसे थापी एवा केटला एक मतथी बोले छे तेनो मुद्दो केवली जाणे. ए वातनो विशेष विस्तार दीपिका प्रमुख थकी जा णवो ॥ श्रीवीर प्रभुना शासननुं प्रमाण एकवीश हजार वर्षनुं कह्युं छे ॥ श्रीवीर प्रभुना नव ग णधरतो प्रभु पोते छतांज राजगृहि नगरीयें एक महीनानी संलेषणा करीने परिवार सहित सिद्धि पाम्या छे अने वीरनिर्वाण पछी बार वर्षें श्रीगौतम स्वामी मोक्ष पाम्या छे, सांप्रत पां चमा काळमां जे मुनिराज वर्त्ते छे ते सर्व भगवंतना पाटे श्रीसुधर्मा स्वामी पांचमा गणधर बेठा हता तेनो परिवार जाणवो ते श्रीसुधर्मा स्वामी वीरनिर्वाण पछी वीश वर्षें सिद्धि पाम्या छे तथा श्रीवीर भगवानना जन्म चैत्र महीनामां छे अने कार्तिक मासमां मोक्ष गया छे माटें बहोतेर वर्षायु बराबर मळतुं नथी ते बाबत घणा ग्रंथोमां संवत्सरना दिनमानना फेर

देखाडी समाधान करे छे परंतु खरेखरी वात केवली गम्य छे ए श्रीमहावीरना पांच कल्या णक विस्तारे कह्यां ए छठा वखाण पर्यंत श्रीवीर जगवाननो अधिकार जाणवो ॥ इति सुबो धिनी जाषायां षष्ठी व्याख्यानं समाप्तं ॥ ६ ॥ ॥ अथ सप्तम व्याख्यान प्रारंजः ॥ ॥ हवे पच्चानुपूर्वी न्यायथी श्रीपार्श्वनाथ स्वामीनां पांच कल्याणक कहे छे. ते कालने विषे ते समयने विषे श्रीपार्श्वनाथ अरिहंत त्रेशठ शिलाका पुरुषमां प्रसिद्ध जेने सर्व मतवाला जाणे छे एवा श्रीपार्श्वनाथ स्वामीना पांच कल्याणक विशाखा नक्षत्रमां थया ते कहे छे. विशाखा नक्षत्रमां देवलोकथी चवीने वामादेवीनी कुखे उपन्या, विशाखा नक्षत्रमां जन्म पाम्या, विशाखा नक्षत्रमां गृहस्थ पणाने त्यागीने साधु पणानुं ग्रहण कीधुं, एटले दिक्षा लीधी, विशाखा नक्षत्रमां सर्वोत्कृष्ट केवलज्ञान अने केवल दर्शन उत्पन्न थयुं छे अने विशाखा नक्षत्रमां मोक्ष गया छे इति संक्षेप वाचना ॥ १५० ॥ ॥ हवे विस्तारथी वाचना लखीये छैयें ते का लमां ते समयमां श्रीपार्श्वनाथ पुरुषोमां प्रधान ते उनालानो पहेलो महीनो, पहेलुं पखवा डयुं एटले चैत्रवदि चोथने दिवसे प्राणातनामा दशमा देवलोकथी वीश सागरोपमनुं आ उखुं पूरण करीने तिहांथी चव्या ते इहां जंबूद्वीपना जरत क्षेत्रने विषे वाणारसी नगरीमां अश्वसेन नामा राजा तेनी वामादेवी नामे राणी तेमनी कूखे मध्यरात्रीयें विशाखा नक्ष त्रमां चंद्रमानो योग होते छते देव संबंधि आहार, देव संबंधि शरीरनो त्याग करीने ॥ ग्रंथा ग्रंथ ॥ ७०० ॥ गर्जपणे उपज्या ॥ १५१ ॥ ॥ हवे श्रीपार्श्वनाथ जगवान प्राणात देवलोकें कया जवथी आव्या ते दर्शाववा सारु श्रीपार्श्वनाथ स्वामिना दशजव लखियें छैयें ॥ आ जंबूद्वीपना जरतक्षेत्रमां पोतनपुर नामक नगरनो अरविंद नामा राजा तेनो विश्वजूति नामे

पुरोहित हतो तेनी अनुधरी नामनी स्त्रीना एक कमठ अने बीजो मरुभूति ए बे पुत्र हता पछी अनुक्रमे तेनां माता पिता काल धर्म पाम्यां केडे राजायें कमठने पुरोहित पदवी आपी पण ते कमठ स्वभावे कठोर, लंपटी, दुष्ट माठालक्षणवालो मूर्ख छे तेनी स्त्रीनुं नाम वरुणा छे अने अमरभूति तो सरल स्वभाववालो भद्रकपरिणामी धर्मात्मा श्रावकधर्म पालनारो छे तेनी स्त्री वसुंधरा नामे अत्यंत स्वरूपवाली अने घणी चपल स्वभाववाली छे एक दिवसे ते कमठ मरुभूतिनी स्त्रीने देखी रूपें मोह्यो थको भोग करवाने माटे तेने बे त्रण वार बोलावी तेवारे ते स्त्री पण कमठ उपर राग करवा लागी एक दिवसे कमठे प्रधान वस्त्राभूषण आपीने वसुंधराने पोताने वश करी मांहोमांहे प्रीति बांधी भोग कर्म करवा मांड्यो ते वात कमठनी स्त्री वरुणाना जाणवामां आवी तेवारे पोताना भरतारने कहेवा लागी जे हे भरतार! आ अकृत तमे करोछो ते सारुं देखातुं नथी जो देवरना जाणवामां आवशे तो लोकोमां निंदा थाशे एवो पोतानी स्त्रीयें कहेलो उपदेश कमठे मान्यो नही तेने लीधे ते वरुणा नाराजी थइ थकी कमठना अनाचारनी वात मरुभूतिने कही तेवारे मरुभूतियें जाण्युं जे पोतानी नजरे दीठा विना एकाएक स्त्रीयोनी वात मानवी नही एम विचारी एकदिवसें कपटथी कोइक गामे जवानो मिष करीने बाहेर गयो वली कापडीनो वेश करी पाछो मरुभूतिने घेर एटले पोताने घेर आवी रह्यो ते रात्रीयें तेणे दुराचार। कमठ अने पोतानी स्त्री बेहुने क्रीडा करतां दीठां तेवारे क्रोधकरीने प्रभातें कमठना दुराचारनी वार्त्ता अरविंद राजा आगल आवीने कही राजायें कमठने पकडी चोरनी पेरे भूंडे हाले करी रासभ उपर चडावी नगरमां फेरवी विटंबना करी शहेरनी बाहेर काहाडी मूक्यो अने मरुभूतिने पुरो

हित कर्यो पछी कमठ डुःखी थयो थको कोइ तापसनी पासेथी दीक्षा लइ बारवर्ष पर्यंत
तपस्या करतो पृथ्वीमां नमतो नमतो फरी पाछो पोतनपुरनी बाहेर एक पर्वतनी उपर
आवी तपश्या करवा लाग्यो पण गाममां न आवे गामना सर्वलोक तेने तपशी देखी नो
जनादिक आपे प्रशंसा करे तेवात मरुनूतियें सांनलीने विचार्योजे ए मह्वारो मह्वोटो नाइ छे
में एने डुःख दीधुंछे तेथी तापस थयो छे माटे हुं पण जइने मह्वारो अपराध खमावी आवुं
एम चिंतवी घणा नोजनादिक रंधावी साथे लइ कमठने खमाववा गयो तिहां जइ तेने पगे लागी
पोतानो अपराध खमावी पाछो वले छे एटलामां कमठे मरुनूतिने उलखी पोतानो वैर सं
नारी तेना मस्तक उपर एक मह्वोटी शिला नाखी तेथी मरुनूति मरण पाम्यो ए पहेलो नव
कह्यो ॥ १ ॥ ॥ हवे ते मरुनूतिनो जीव आर्त्तध्यानथी मरण पामीने बीजे नवें विंध्याच
लनी अटवीमां सुजातिक नामा हाथी थयो अने कमठनो जीव पण डुष्टकर्मना जोरथी ते
पर्वत उपरथी उतरतां नीचें त्रूटी पड्यो तेथी मरण पामीने तेहज विंध्याचलनी नूमिमां पं
खीनी पेरे उडतो चाले एवो कूर्कट नामे सर्प्प थयो हवे एकदा अरविंद राजायें संध्या सम
यने विषे पंचवर्णां वादलां दीठां तेथी वैराग्य पामी दीक्षा लेइ अगीआर अंग नणी उग्रतप
करता थका एकाकी विचरवा लाग्या एकदा सागरचंद्र नामा सार्थवाह्वना संघनी साथें अष्टा
पद समेतशिखरनी यात्रायें गया तिहां विंध्याचल वनमां एक सरोवर देखी संघे तेस्थानके उ
तारो कर्यो एवामां मरूनूतिनो जीव जे हाथी थयो छे ते पोतानी हाथणीयोना परिवार स
हित तिहां सरोवरने विषे जल पीवा सारुं आव्यो तेणे क्रोधें करी सर्व संघने उपद्रव कर्यो
तेथी सर्व सथवाराना लोक नासी गया पछी साधु काउस्सग्गमां ऊना हता तेने ते हाथी मा

रवा आव्यो तेवारें मुनिना तपप्रनावथी तिहां थंनाइ गयो ते अलगो उनो थको मुनिने जो
वालागो मुनिने जोतां थकां हाथीने जातिस्मरण ज्ञान उपन्युं तेवारें पूर्वला नव देखी साधुने
उंलख्या पछी शूंढ लांबी करी साधुनें पगें लागो मुनियें पण नव्यजीव जाणीने तेने प्रतिबोध
आप्यो तेथी ते हाथी समकेत पाम्यो ते जोइने बीजा पण घणा लोक तिहां प्रतिबोध पाम्या
पछी हाथीयें श्रावक धर्म अंगीकार कस्यो श्रावकना बार व्रतनी अनिलाषा धरतो थको सा
धुने नमस्कार करी सरोवरमांथी पाणी पीइने पोताने स्थानकें गयो साधुजी पण तिहांथी
विहार करी सथवारानी पाछल चाली यात्रायें गया चारित्र पालीने शुनगति पाम्या हवे मरु
नूतिनो जीव हाथी ते एक दिवस उनालाना दिवसोमां मध्यान्ह समयें तृषायें पीडायो थको
तलाव उपर पाणी पीवाने आव्यो तिहां कादवमां खूची रह्यो ते वखत पेहेलो कूर्कट सर्प्प
पण तृषायें पीडायो थको उडतो उडतो तिहां आव्यो तेणे पाणी पीइने पछी हाथीने दीठो
तेवारे आगला नव ना वैरनेलीधे हाथीनी उपर चढीने तेना मस्तकमां मंक मास्यो तेथी
तेज वखत हाथीने ऊेर व्यापी गयुं तिहां श्रावकधर्म पालवाना योगें शुनध्याने मरण
पाम्यो ए बीजो नव ॥ २ ॥ ॥ हवे त्रीजे नवे ते हाथी त्यांथी मरण पामीने आठमें
देवलोकें देवता थयो अने हाथी पडतां सर्प्प पण चंपाइने मरण पाम्यो ते हाथीनी घातना
पातकथी पांचमी नरकें जई नारकी पणे उपन्यो ए त्रीजो नव ॥ ३ ॥ ॥ चोथे नवें
मरुनूतिनो जीव आठमा देवलोकथी चवीने जंबूद्वीपना पूर्वमहाविदेह क्षेत्रमां सुकच्छ नामा
विजयना वैताढ्य पर्वतनी दक्षिणश्रेणिमां तिलवती नामा नगरीने विषे विद्युतगतिराजानी
कनकवती नामा स्त्रीनी कूखें पुत्र पणे उपन्यो तेनुं करणवेग एवुं नाम मातपितायें दीधुं अ

नुक्रमें युवावस्थायें सुरुपा नामा स्त्री परण्यो, राज्यने पण पाम्यो एकदिवसें सुरुपा राणी सार्थे सुख भोगवतां गोखमां बेठा थकां संध्या फूली देखी वैराग्य पामी दीक्षा लीधी पछी वैताढ्य ना हेमशैल उपर काउस्सग्गमां ऊभा रह्या ते अवसरमां कमठनो जीव पांचमी नरकथी नीकलीने ते पर्वत उपर सर्प थयो छे तेणे साधुने करड्यो तेथी साधुयें काल कीधो ए चोथो भव ॥४॥ ॥ पांचमें भवें साधु बारमे देवलोके देवता थया अने सर्प्प मरण पामीने पांचमी नरके गयो ए पांचमो भव ॥५॥ ॥ छठे भवे मरुभूतिनो जीव बारमां देवलोकथी चवीने आ जंबूद्वीपना पश्चिम महाविदेहने विषे गंधीलावती विजयमां शुभंकरा नगरीनो वज्रवीर्य नामे राजा तेनी लक्ष्मीवती नामे राणीनी कूखे पुत्र पणे आवी उपन्यो मात पितायें तेनुं वज्रनाभ एवुं नाम दीधुं अनुक्रमे तेना पितायें तेने राजपाटें बेसाड्यो ते यौवनवयमां राज पालतो थको संसारिक सुख भोगवे छे एक दिवसें शुभंकरा नगरीना उद्यानमां श्रीक्षेमंकर नामा तीर्थंकर आवी समोसर्या तेमने वज्रनाभ राजा वांदवा गयो तिहां तीर्थंकरनी देशना सांभली संसार अनित्य जाणी तीर्थंकर पासेथी दीक्षा लइ अगीआरे अंग भण्या जंघाचारणनी लब्धीना बले करी सुकच्छविजय मांहे निज्वलन पर्वत उपर काउस्सग रह्या ते अवसरमां कमठनो जीव पांचमा नरकथी नीकलीने वली वचमां संसारने विषे बीजां पण घणां भवभ्रमण करी ते पर्वतमां कुरंग नामा भिल्ल थयो छे ते भिल्ल पोताना स्थानकथी बाहेर आहेडो करवा निकल्यो छे तेवारे वज्रनाभ साधुने देखी आगला भवना वैरने लीधे साधुने देखतांज अपशुकन थयुं जाणी क्रोध उपन्यो माटे साधुने सामुं एक बाण मार्युं ते मर्मस्थानके लाग्युं तेथी साधु शुभध्यान ध्यावता मरण पाम्या ए छठो भव ॥ ६ ॥ ॥ सातमे भवे साधु शुभध्याने मरण

पामीने मध्यम ग्रैवेयकें देवता पणे उपन्यो अने भिल्ल मरण पामी साधुनी घातना पापथी सातमे नरकें गयो ए सातमो भव ॥ ७ ॥ ॥ आठमे भवें मरुभूतिनो जीव मध्यम ग्रैवेयकथी चवीने आ जंबूद्वीपना पूर्व महाविदेहमां शुभंकर विजयने विषे पुराणपुर नामे नगर तिहां कुशलबाहु नामे वासुदेवनी सुदर्शना नामे राणीनी कूखनेविषे पुत्रपणे आवी उपन्यो मातायें चौदसुपनां दीठां पछी पुत्रजन्म थयो त्यारे माता पितायें सुवर्णबाहु एवुं नाम आप्युं हवे चौद सुपन देखवाना प्रभावथी ते सुवर्णबाहु चक्रवर्त्तिनी पदवी पाम्यो, छ खंड साधी चक्रवर्त्तिनी पदवी भोगवी, वृद्धावस्थामां तीर्थंकरनी देशना सांभळी दीक्षा लइ वीश स्थानकनुं तप आराधन करी तीर्थंकर गोत्र बांध्युं. हवे ते साधु एक दिवसें उजाडमां काउस्सग्ग ध्याने रह्या छे एवामां ते भिल्लनो जीव सातमा नरकथी मध्यम आउखुं पूरण करीने तिहांथी मरण पामी ते उजाडमां क्षीर गुफायें सिंह पणे आवी उपन्यो छे तेणे तिहां सुवर्णबाहु मुनिने दीठो तेवारे पूर्वभवना वैरथी सिंहने क्रोध उपन्यो तेथी साधुने विदारी नाख्यो ए आठमो भव ॥८॥ ॥ नवमे भवे साधु शुभध्याने मरण पामी दशमा प्राणात देवलोके देवता पणे जइ उपन्या अने सिंह मरण पामीने चोथे नरकें गयो ए नवमो भव ॥९॥ ॥ हवे दशमा भवने विषे मरुभूतिनो जीव दशमा देवलोकथी चवीने श्रीवामादेवीनी कूखें आवी उपन्यो अने कमठनो जीव चोथा नरकथी मरण पामीने एक दारिद्री ब्राह्मणने घेर पुत्रपणे आवी उपन्यो तेनां मा बाप बालपणामांज मरण पाम्यां पाछलथी दुःखी थयो थको लोके तेना उपर दया आणीने महोटो कीधो अनुक्रमे यौवनावस्था पाम्यो तेवारे निर्धनपणा माटे स्त्री मली नही तेथी अमर्ष धरी पेट भरवा सारुं अज्ञान तपश्या आदरी तापसनी पछवाडे लागी पंचाग्नि

साधवा लाग्यो तेथी ते तापस अग्नितापणे कमठनामे विख्यात थयो. इति पार्श्वनाथ दश नव अधिकार समाप्त ॥ हवे श्रीपार्श्वनाथ अरिहंत, पुरुषमां प्रधान, त्रण ज्ञाने करी सहित माता नी कूखमां आव्या इहां चौदसुपन मातायें दीठां तथा सुपनपाठक बोलाव्या यावत् गर्भनी प्रतिपालना करी इत्यादिक सर्व अधिकार श्रीमहावीर स्वामिनी पेरे जाणी लेवो ॥ १५२ ॥ ॥ ॥ ते कालने विषे ते समयने विषे पार्श्वनाथ स्वामी शीयालानो बीजो महिनो त्रीजुं पखवाडियुं पोषवदि दशमीने दिवसे नव महीनाने साडासात दिवस गर्भमां गया थका मध्यरात्रिमां विशाखा नक्षत्रें चंद्रमानो योग आवे थके वामाराणीनी कूखे रोगरहित पुत्रपणे जन्म्या ॥ १५३ ॥ ॥ जे रात्रिमां श्रीपार्श्वनाथ जन्म्या ते रात्रिमां घणा देवता आव्या ॥ १५४ ॥ ॥ यावत् चोसठ इंद्र जन्ममहोत्सव प्रमुख करवा आव्या तथा दिग्कुमारिकादि आवी ते सर्व श्रीमहावीर स्वामिनी पेरे श्रीपार्श्वनाथ स्वामीनुं नाम लइ लइने इहां पण कहेवुं पछी अश्वसेन राजा जन्ममहोत्सव करीने कहेता हवा के महारी वामाराणीनी कूखे जेवारे ए पुत्र आव्यो तेवारे वामाराणीयें शय्यामां पोतानी पासेथी निकलतो कालो सर्प दीठो तेथी अमारा आ पुत्रनुं नाम पार्श्व होजो एम कही श्रीपार्श्व एवुं नाम दीधुं ॥ १५५ ॥ ॥ पांच धावे पालन कराता, बीजना चंद्रमानी पेरे वृद्धि पामता, माता पितादिकने आनंद उपजावता थका अनुक्रमे युवान अवस्था पाम्या तेवारे कुशस्थल नगरना प्रसेनजीत नामे राजाने म्लेछ लोकोये रोक्यो तेनो सहाय करवा माटे अश्वसेन राजा जावा लाग्यो ते वखत पिताने व र्जीने पार्श्वकुमर तिहां जवाने तैयार थया ते जोइ इंद्रमहाराजे पोतानो रथ सारथी सहित मूक्यो ते उपर चडीने आकाश मार्गे थइ तिहां उतर्या तेने जोइ सर्व म्लेछ लोको नाशी



श्री पार्श्वनाथनु रथ



चित्र ५४

गया नगवान तिहां गया तेने प्रसेनजीत राजायें सन्मान दीधुं तिहां नीलवर्ण छवी, नवहा थनुं शरीर, युवान अवस्था अने एक हजार आठ लक्षणधारक, अत्यंत रूपवान, महा कांतिवंत सुंदर देदीप्यमान तेजस्वी एवा श्रीपार्श्वकुमरने देखीने प्रसेनजीत राजानी पुत्री प्रनावती नामें हती ते बोली जे हे पिताजी! मुजने पार्श्वकुमर साथे परणावो पछी नगवानने परणवानी इच्छा हती नही तो पण राजायें घणो आग्रह करीने पोतानी पुत्री परणावी ते परणीने पाछा घेर आव्या प्रनावती राणी साथे सुख नोगवे छे एवामां एक दिवसे वाराणसी नगरीने बाहेर पेलो कमठ नामा तापस आव्यो तिहां घणा लोको हाथमां पूजापो लइने पंचाग्नि तापतो देखी तापस पासे जाता हता तेने प्रचुयें गोखमां बेठा थकां दीठ तेवारे पार्श्वकुमर बोल्या के आ लोको सर्व क्यां जाय छे तेवारे हजुरीउ चाकर पासे ननो हतो ते बोल्यो हे महाराज! एक दरिद्री ब्राह्मण हतो तेना मा बाप न्हानापणमां मरी गयां तेथी तापस थइ कमठ नाम धारण करीने फरतोफरे छे ते इहां आव्यो छे तेने आ सर्व लोको पूजवाने जाय छे ते सांनली नगवान पण तिहां आव्या त्यां काष्टमां बलता सर्पने अवधि ज्ञानथी देखी करीने नगवान बोल्या अरे मूढ तपस्वी! आ तुं दयाविना शुं वृथा कष्ट करे छे; आ ताहारो श्रम ते दयाविना सर्व मिथ्या छे तेवारें क्रोध करीने कमठ तापस बोल्यो अरे राजाउना पुत्रोने तप जप करवानी शी परीक्षा होय तमे तो हाथी घोडाउनी परीक्षा करो तपनी वातनो अमेज योगी पुरुषो समजीयें छैयें ए वातमां तमे शुं समजो? एवुं कमठनुं बोलवुं सांनली नगवाने ते अग्निकुंडमांथी एक बलतुं लाकडुं बाहेर काहाडी तेने कोहाडाथी फाड्युं तेमांथी तापे करी व्याकुल थयेलो सर्प नीकल्यो ते सर्प नगवानना मुखने देखीने श्रद्धापूर्वक

भगवानना मुखथी नवकार पच्चरकाण सांभलीने तत्काल मरण पामी धरणेंद्र नागराजा थयो "घणी प्रतोमां तो अग्निकुंडमांथी बलतुं लाकडुं भगवाने सेवकने हाथे बाहार काहाडावी कुहाडो मगावी फोडाव्युं अने बलता सर्पने जे नवकार संभलाव्यो छे ते पण सेवकना मुखथी संभलाव्यो छे एम स्पष्ट लखेलुं छे" पछी तिहां एकठा थयेला लोको कमठने कहेवा लागा के अरे ए अज्ञानी अधर्म करे छे जीवोने हणे छे एवो पोतानो अवर्णवाद सांभलीने कमठ लज्जा पाम्यो, भगवान घरे आव्या पछी कमठ तिहांथी मानभ्रष्ट थइ वली अन्य स्थानके जइ घणा हठथी घणा कालपर्यंत विशेष पणे अज्ञान तपश्या करी मरण पामीने भवनपतिमांहे मेघमाली नामा देवता थयो ॥ ॥ हवे एकदा वसंतऋतुमां भगवान पोतानी राणी साथें वनक्रीडा करवा गया तिहां एक सुंदर प्रासाद जोइ तेमां जइ बेठा ते प्रासादमां नेमीश्वर भगवाननी जान संबंधी राजीमतीने त्यागी दीक्षा लीधी तेनुं चित्र चित्रेलुं जोइने वैराग पाम्या हवे भगवान श्रीपार्श्वनाथ अरिहंत दक्ष, चतुर, भली प्रतिज्ञा वाला, रूपवान गुणवान, भद्रक, विनयवान, त्रीश वर्ष लगण गृहस्थावासें रह्या पछी लोकांतिक देव आवीने तेमने इष्टकारी वाणीयें करी कहेता हवा ॥ १५६ ॥ ॥ जयजय होवो हे समृद्धिमान्! यावत् हे कल्याणवान्! एवुं कहीनें जयजय शब्द करे ॥ १५७ ॥ ॥ पहेलां पण श्रीपार्श्वनाथजी मनुष्ययोग्य गृहस्थ धर्ममां पण अवधिज्ञाने करी सहित छे तेणे करी जाण्युं जे महारे हवे दीक्षा लेवानो अवसर आव्यो एवुं जाणीनें संवत्सरी दान प्रमुख सर्व श्रीमहावीरस्वामीनी पेरे आपीने शीआलानो बीजो महीनो, त्रीजुं परववाडियुं, पोषवदि अगीआरसने दिवसें बपोर पहेला विशाला नामा पालखीमां बेठा, देव मनुष्ये ते पालखी उपाडी ए सर्व दीक्षा महोत्सव श्रीमहावीरजीनी


चित्र ५५
श्री पार्श्वनाथजी
कादम्बरी अटवीमां
श्री पार्श्वनाथने हाथी
पाणी ढोले छे.

पेरें आहीं पण समजवो परंतु एटलुं विशेष जे वाराणसी नगरीमांथी थइनें जिहां आश्रम पद नामा उद्यान छे जिहां अशोकवृक्ष छे तिहां आवीनें पालखीथी उतरीने अशोकवृक्षनी नीचें पोताना हाथथी घरेणा प्रमुख सर्व उतारीने पोताना हाथथी पंचमुष्टी लोच करे लोच करीने अष्ठम तप पाणीरहित करीने विशाखा नक्षत्रें चंइयोग आवे थके एक देवडुष्य वस्त्र लेइने त्रणसें पुरुषोनी सार्थे दीक्षा लीधी, अणगार थया ॥ १५८ ॥ ॥ श्रीपार्श्वनाथ अरिहंत त्र्याशी दिवस पर्यंत नित्य कायाने वोसरावीने जेकोइ देवना मनुष्यना अने तिर्यंचना करेला उपसर्गो होय ते सर्व सहन करे ॥ १५ए ॥ ॥ हवे श्रीपार्श्वनाथजीयें अष्ठम तपनुं पारणुं कोपट सन्निवेशमां धन्नाने घेर परमान्ने करी कर्युं तिहां पांच दिव्य प्रगट थया साडी बारक्रोड सौनैया वर्ष्या ॥ ॥ एकदिवस जगवांन् विचरता थका कादंबरी अटवीमां गया, तिहां कलिगिरि पर्वतनी नीचे कुंमनामा सरोवरनी पासे काउस्सग्गमां रह्या ते स्थानके महीधरनामा हाथी पाणी पीवा आव्यो ते जगवानने देखीने जातिस्मरण ज्ञान पाम्यो, तेणेकरी पोतानो पूर्वलो जव दीगे जे आगला जवमां हुं हेमलनामा वामनो कुलपुत्र हतो महारां स्वजन कुटुंब महारा उपर हसतां हतां तेथी मने चिंतातुर देखीने महारो सुप्रतिष्ट नामा मित्र मने गुरु पासें लइ गयो तेनी पासेथी में श्रावकधर्म लीधो पण अंत अवस्थामां महारी वामणी न्हानी कायाने निंदतो थको मरण समयें महोटी काया पामवानुं में नियाणुं कर्युं तेना योगथी हुं महोटी काया वालो हाथी थयोछुं एवुं जाणी ते हाथीयें जगवानने कमले करी पूज्या ए हाथीनी वात सांजली चंपानगरीनो वासी करकंमू राजा तिहां आव्यो ते टलामां जगवान विहार करी गया जेथी राजा घणो डुःख करवा लागो तेवारें इंइें आवीने

तिहां नव हाथनी श्रीपार्श्वनाथ स्वामीनी प्रतिमा प्रगट करी पछी राजायें तेनी पूजा क
रीने तिहां मंदिर कराव्युं ते स्थानकें कलिकुंड नामे तीर्थ थयुं, हाथी मरण पामीने व्यं
तर देवता थयो ते चैत्यनो अधिष्ठायिक थइ रह्यो ॥ ॥ एकदा समये राजपुरनो ईश्वर
नामा राजा ते श्रीपार्श्वनाथ स्वामीने काउसग्गमां उना देखी जातिस्मरण ज्ञान पाम्यो, तेणे
करी पोतानो पूर्वलो नव दीठो तेथी मूर्छा आवी गइ पछी ज्यारे सावधान थया त्यारे तेने मं
त्रीयें पुछ्युं स्वामी तमे मूर्छा केम पाम्या ? तेवारें राजा बोल्यो में म्हारो पूर्वलो नव
दीठो जे हुं वसंतपुर नगरमां एक कोढीयो ब्राह्मण हतो ते रोगना दुःखने लीधे गंगानदीमां
पडीने मरवा तैयार थयो हतो एटलामां एक चारण मुनियें आवीने मुजने प्रतिबोध दीधो
पछी समकेत वासनाथी हुं नित्य चैत्यनां दर्शन करवा जाउं तिहां मुजने पुष्कल नामा
श्रावकें दीठो अने कहेवा लागो के अरे आ कोढीयो मंदिरमां केम जाय छे! पछी ते श्रा
वकें मुनिने पूछ्युं महाराज! ए कोढीउ मंदिरमां जाय छे तेनो कांइ दोष छे किंवा नथी तेवारें
मुनि बोल्या दूरथी नमवामां कांइ पण दोष नथी वली हे श्रावक! ए ब्राह्मण आगामिक नवे
राजपुरनगरे ईश्वर नामा राजा थाशे ते श्रीपार्श्वनाथजीने काउस्सग्गे रह्या देखीने जातिस्मरण
पामशे माटे हे प्रधान! ते कोढीयो ब्राह्मण मरीने हुं ईश्वर नामे राजा थयो छुं; पछी ते ईश्वर
राजायें नक्तिनावथी तिहां चैत्य कराव्यो तेमां श्रीपार्श्वनाथजीनी प्रतिमा थापी तिहां कुकुडे
सर नामे तीर्थ थयुं ॥ एक समये नगवान विहार करता थका कोइ नगर नजीक तापसनो
आश्रम हतो तेनी पासें आव्या एटलामां सूर्य अस्त थयो तेवारें नगवान वडवृक्षने नीचे
एक कूवानी पासें अमग ध्याने काउस्सग्ग रह्या ते अवसरमां पूर्वनवनो वैरी मेघमाली अ

चित्र ५६





चित्र ५७

धम देवता अवधिज्ञानने बन्ने जगवानने इहां उजा देखी पूर्वजवनुं वैर संजारी अमर्षे पूर्यो थको क्रोधे करी उपसर्ग करवा लाग्यो तेणे प्रथम वेतालनां रूप करी जगवानने बीवराव्या पण जगवान तेनाथी ऋया नही पढी सिंहनां रूप, वींढीनां रूप, सर्प्पनां रूप, हाथीनां रूप बीजां पण अनेक जातिनां रूप विकूर्वीने जगवानने करडवा लाग्यो मसलवा लाग्यो तोपण जगवान तेनाथी क्षोज पाम्या नही चलायमान थया नही तेवारे विशेष क्रोधारुण थइने घणो गर्जारव करी विजली विकूर्वी तेनी साथे कल्पांतकालनो पवन विकूर्वी ते पवने करी धूलने उमावतो थको आकाशने पण ढाइ मूक्युं अने धूल साथे मलेला पाणीनी मूसल धारायें वृष्टि करी तथा ब्रह्मांम स्फोट सदृश गर्जारव कर्यो, दशे दिशायें वीजलीना कणीया उत्पन्न करी त्रास पमाडवा लाग्यो तिहां पाणीनुं पूर नदी जेवुं वहेवा लाग्युं जोरवालुं पाणी चढ्युं, मेघलीनेविषे आकाश अंधकारमय थइ गयुं ते वखते जगवानने कंठसुधी पाणी उंचुं आवी लाग्युं तोपण ऋग्या नही ते समये धरणेंइनुं आसन चलायमान थयुं तेवारें अवधिज्ञान प्रयुंजी जगवानने उपसंर्ग थयो जाणीने पद्मावती प्रमुख अग्रमहीषीयो सहित तिहां आवीने प्रजुने मस्तकें फणाटोपे करी ढत्र धर्युं अने प्रजुना चरणनी नीचें कमलनी रचना करी ए प्रकारें वरसादना समूहने बंध राखवानो उपाय करी पोतें इंद्राणी सहित प्रजु आगल नाटक करवा लाग्यो पण वरसाद पडतो बंध थयो नही तेवारें धरणेंइें जाण्युं जे प्रलयकालतो हमणा ढे नही तो आवा प्रकारनो मेघ केम वरसे ढे एम विचारी अवधिज्ञाने जोयुं तो मेघमाली कृत उपसर्ग जाण्यो तेवारे मेघमालीने ललकार्यो के अरे दुष्ट, पापिष्ट, उद्धंठ, अधम, तें आ शुं अकार्य करवा मांमयुं ढे प्रजुयें तो ताहारा उपर गुण कर्यो ढे ते उलटो

तुजने अवगुण थइ परिणम्यो तेथी तुं विपरीत थइने एमनी उपर द्वेष करे छे परंतु जग
वान पोते तो अतुलबलना धणी छे तथापि ते क्षमावंत दयालु छे तेतो सहन करशे पण हुं ता
हारो अपराधसहन करनार नथी अरे मूर्ख! तुजने रुडो उपदेश पण वैरकारी थइ पड्यो
तो हवे तुजने हुं ताहारी कमाइ देखाडीश, तें स्वामीनी घणी आशातना कीधी छे पण हवे
तुं क्यां नाशी जइश एम कही धरणेंद्रें तेना उपर वज्र मूक्युं तेवारे जेम बाजने देखी सूडो
तथा कबुतर जयभ्रांत थाय तेम कमठ जयभ्रांत थयो थको पोतानी देवांगना सहित जग
वान पासें आवी तेमना चरणनुं शरण ग्रही जगवानने नमस्कार करीनें पोतानो अपराध
खमाववा लाग्यो अने कहेवा लागों के हवे आजपछी हुं एम नही करीश ते जोइ धरणेंद्रें
कह्युं के तुं महोटाने शरणे आव्यो माटे महारो साधर्मि जाइ समजीने तुने मूकुंछुं पछी दश
जवनुं वेर खमावी प्रजु पासे नाटक करीने कमठ पोताने स्थानके गयो अने धरणेंद्र पण
नाटक करी पोतानी इंद्राणी सहित स्वस्थानकें गयो आहीं धरणेंद्रें त्रण दिवस पर्यंत जग
वानने मस्तकें फणनुं छत्र राख्युं तेथी ते नगरी अहिछत्रा एवे नामे करी प्रसिद्ध थइ.॥ हवे
श्रीपार्श्वनाथ स्वामी अणगार थया, पांच समिति अने त्रण गुप्ति सहित थया यावत्
ग्रामानुग्राम विचरता आत्माने जावता थका त्याशी दिवस वीत्या अने चोराशीमो
रात्रि दिन वर्त्तमान छतां उनालानो पहेलो महीनो, पहेलुं पखवाडियुं चैत्रवदि चो
थने दिवसे, विशाखा नक्षत्रें चंद्रमानो योग आवे थके, पहेला बे प्रहोरना काल सम
यने विषे, धावडी वृक्षनी हेठे पाणीयें रहित चउविहारो छठ्ठतप कीधे थके, निर्व्याघात
पणे आवरण रहित समग्र परिपूर्ण जलहलता सूर्य सरखुं एवुं केवलज्ञान अने केवलदर्शन

प्रभुने उत्पन्न थयुं तेथी सर्व जीवोना भाव जाणता थका देखता थका विचरवा लाग्या ॥ ॥ १५९ ॥ ॥ श्रीपार्श्वनाथजीने एक शुभ, बीजो आर्यघोष, त्रीजो विशिष्ठ, चोथो ब्रह्म चारी, पांचमो सोम, छठो श्रीधर, सातमो वीरभद्र, अने आठमो यशस्वी ए आठ महोटा गछना धणी एवा गणधरोनी संपदा थइ ॥ १६० ॥ ॥ श्रीपार्श्वनाथजीने आर्यदिन्न प्रमुख शोलहजार साधुउंनी उत्कृष्टी संपदा थइ ॥ १६१ ॥ ॥ श्रीपार्श्वनाथजीने उत्कृष्टी पुष्प चूला प्रमुख आडत्रीश हजार साधवीउंनी संपदा थइ ॥ १६२ ॥ ॥ श्रीपार्श्वनाथजीने उत्कृष्टी सुव्रत आदिदेइ एक लाखने चोसठ हजार श्रावकोनी संपदा थइ ॥ १६३ ॥ श्रीपार्श्वनाथजीने उत्कृष्टी सुनंदा प्रमुख त्रण लाखने सत्तावीश हजार श्राविकाउंनी संपदा थइ ॥ १६४ ॥ ॥ श्रीपार्श्वनाथजीने उत्कृष्टी केवली नहीं पण केवली सरखा एवा साडा त्रणशे चौद पूर्वधारी मुनिउंनी संपदा थइ ॥ १६५ ॥ ॥ श्रीपार्श्वनाथजीने उ त्कृष्टी चौदशे अवधि ज्ञानिउंनी संपदा थइ, एक हजार केवलीउंनी संपदा थइ, अगीआ रसें वैक्रिय लब्धिवंतोनी संपदा थइ, छशें रुजुमति मनःपर्यवज्ञानीउंनी संपदा थइ, एक हजार साधु मोक्ष गया, बे हजार आर्या मोक्ष गइ, आठशे विपुलमतिनी संपदा थइ, छसे वादीउंनी संपदा थइ, बारसे साधु अनुत्तर विमाने गया एकावतारी थया, ए प्रभुना परिवा रनुं प्रमाण जाणवुं ॥ १६६ ॥ ॥ श्रीपार्श्वनाथ पुरुषादाणीने बे प्रकारनी अंतगड भूमि थइ तेमां एकतो युगंतकृतभूमि ते श्रीपार्श्वनाथना चार पाट पर्यंत मोक्ष मार्ग चाल्यो वह्यो, बीजी पर्याय अंतकृतभूमि ते भगवान केवल ज्ञान पाम्या पछी त्रणवर्षे कोइक मुनि सिद्धि पाम्यो एटले त्रणवर्षे मोक्षमार्ग चाल्यो ॥ १६७ ॥ ॥ ते कालने विषे ते समयने

विषे श्रीपार्श्वनाथ पुरुषादाणी त्रीशवर्ष पर्यंत घरवासे रह्या अने त्र्याशी दिवस छद्मस्थपणे रह्या तथा त्र्याशी दिवसे न्यून सीतेर वर्ष पर्यंत केवल पर्याय पाल्यो परिपूर्ण सीतेर वर्ष साधुपणुं पाल्युं सर्व मली एकसो वर्षनुं आयुष्य पालीने, शेष रहेलां चार कर्म खपावी आ अवसर्पिणी कालनो दुषम सुषमा नामे चोथो आरो ते घणो वीती गयो अने स्वल्प रह्यो ते अवसरमां वर्षादनो पहेलो महीनो बीजुं पखवाडियुं, एटले श्रावण शुदि आठमने दिवसे समेतशिखर पर्वतनी उपर मास खमणना चउविहारा पाणीरहित तपमां अणसण कीधे थके सैलेसी अवस्थायें योग संवरीने तेत्रीश बीजा साधुउ अने चोत्रीशमा श्रीपार्श्वनाथ पोते, विशाखा नक्षत्रमां चंद्रमानो योग आवे थके मध्यरात्रिना समयमां लांबा हाथें काउसग्गें उभा काल प्राप्त थया निरवाण पाम्या सर्व दुःखथी रहित थया ॥ १६८ ॥ ॥ विशेष वात श्रीपार्श्वनाथ चरित्र थकी जाणवी, श्रीपार्श्वनाथ परमेश्वर पुरुषमांहे आदानी एटले आदेय वचनीय ए बिरुदना धरनारा छे एम प्रत्येक शब्दे जोडी देखाडीयें श्रीपार्श्वनाथ स्वामी मोक्ष गया पछी बारसोने त्रीश वर्षे श्रीकल्पसूत्र पुस्तक उपर लखाणुं केमकें श्रीपार्श्वनाथ मोक्ष गया पछी अढीशे वर्षे तो श्रीमहावीरस्वामी मोक्ष गया ते पछी नवशे एसी वर्षे पुस्तकारूढ थयुं ॥ १६९ ॥ ॥ इति श्रीपार्श्वनाथ चरित्र समाप्त ॥ ॥ हवे पश्चानुपूर्वीयें करीने बावीशमा श्री नेमनाथ स्वामिनुं चरित्र लखीयें छैयें ते कालने विषे, ते समयने विषे अरिहंत श्रीअरिष्ठनेमि तेमना पांचे कल्याणक चित्रा नक्षत्रमां थया ते कहे छे एक चित्रा नक्षत्रमां देवलोकथी चव्या, बीजो चित्रा नक्षत्रमां जन्म थयो, त्रीजो चित्रा नक्षत्रमां दीक्षा लीधी, चोथो चित्रा नक्षत्रमां केवल ज्ञान उपन्युं, पांचमो चित्रा नक्षत्रमां मोक्ष गया इति संक्षेप वांचना ॥ १७० ॥ ॥ हवे


चित्र ५८
देव दुंदुभि
साधुओनी साथे
पार्श्वनाथ
निर्वाण पाम्या

विशेष वांचना कहे छे ॥ ते कालमां ते समयमां श्रीनेमनाथ स्वामी आ वर्षा कालनो चोथो महीनो, सातमो पक्ष एटले कार्त्तिक वदि बारसने दिवसें अपराजित नामा महा विमान जिहां बत्रीश सागरोपमनुं आयु छे तिहांथी चवीने आ जंबूद्वीपना भरतक्षेत्रनेविषे शौरीपुर नगरना समुद्रविजय नामा राजानी शिवादेवी नामे भार्या तेनी कूखमां मध्यरात्रिने विषे चित्रा नक्षत्रमां चंद्रमानो योग होते छते गर्भपणे आवी उपन्या तेवारें चौदस्वप्न मातायें दीठां इत्यादिक सर्व वर्णन श्रीमहावीर स्वामीनी पेरें इहां पण कहेवुं ॥ १७१ ॥ ॥ ते कालने विषे ते समयने विषे श्रीनेमिनाथ अरिहंत वर्षाकालनो पहेलो महीनो, बीजुं पखवाडियुं एटले श्रावणशुदि पंचमीने दिवसें नव महीनाने साडासात दिवस गर्भमां पूरण थये थकें यावत् चित्रा नक्षत्रें चंद्रमानो योग आवेथके पुत्र पणे जन्म्या, इहां जन्म महोत्सव प्रमुख सर्व श्रीमहावीरस्वामीनी पेरे श्रीनेमिनाथजीना नामथी कहेवुं पछी माता पितायें अरिष्टनेमि एवुं नाम आप्युं, तेनुं कारण कहे छे जे भगवाननी माता शिवादेवीजीयें पन्नरमा स्वप्नमां अरिष्ट रत्ननुं चक्र दीठुं तेथी अरिष्टनेमि एवुं नाम आप्युं तथा लोकोनां अरिष्ट चूर्यां मटाड्यां माटे अरिष्टनेमि एवुं नाम दीधुं हवे भगवानने बालपणामां इंद्राणी आवी रमत करावे जे वारें प्रभुने भूख लागे तेवारें पोताना अंगूठाने चूशे ते अंगूठामां देवो आवीने अमृतनो संचार करे परंतु मातानां स्तन चूशे नही एवा अनुक्रमे प्रभुजी वृद्धि पामता हवा प्रभुना शरीरनो श्यामवर्ण छे तथापि महा स्वरूपवान छे एकदिवसे श्रीनेमिनाथजी पालणामां रमत करे छे ते वखते इंद्रमहाराजे पोतानी सभामांहे प्रभुना बल पराक्रमनी प्रशंसा करी ते वात कोइएक देवता अणसद्दहतो थको त्यांआवी भगवानने पालणामांहेथी ऊपाडीने सवालाख

योजन दूर लइ गयो तेवारे जगवाने आ कोइ देवप्रयोग ले एवुं जाणीने कांइक स्वल्प बल देखाडयुं तेथी देवता नीचे आवी पड्यो अने एकसो योजन पर्यंत धरतीमां पेसी गयो तेवारे इंद्रें आवी अनुकंपा आणीने देवताने गेडाव्यो अने जगवानने पाछा पालणामां मूकी स्तवना करीने इंद्रमहाराज पोताने स्थानकें गया ॥ ॥ हवे सूत्रकार आगल एवुं कहेशे के श्री नेमीश्वर जगवाने द्वारिका नगरीमां दीक्षा लीधी तेवारें सांजलनारने आशंका उपजशे के जन्मतो शौरीपुरमां थयो अने दीक्षा द्वारिकामां लीधी ए वात केम मले ए संदेहने मटाववाने माटे यादवोनी उत्पत्ति कहे ले ॥ ॥ पूर्वें हरि अने हरिणी ए बे युगलीया थकी हरिवंश कुल प्रगट थयुं, ए वात आगल दश अछेराना अधिकारमां संक्षेपथी लखाइ गइ ले ते पछी ते हरिराजानो पुत्र अश्व थयो अने तेनो पुत्र वसुराजा थयो तेना वंशमां अनुक्रमें यदुराजा थयो तिहांथी यादववंश प्रगट्यो पछी ते यदुनो पुत्र शूरराजा थयो तेना वली एक शौरी अने बीजो सुवीर ए बेपुत्र थया तेमां महोटो पुत्र शौरी ले तेने मथुरानुं राज्य आपीने सुवीरने युवराज पाटे थापी शूरराजायें चारित्र लीधुं, पछी शौरीराजायें पोताना न्हाना जाइ सुवीरने मथुरानुं राज्य आपी पोतें कुशावर्त्त देशमां जइ पोताने नामे शौरीपुर नामा नवीन नगर वसावीने तेनुं राज्य करवा लाग्यो अने सुवीर मथुरानुं राज्य करे ले हवे शौरीराजाने अंधकवृष्णि नामे पुत्र थयो अने सुवीरने जोजकवृष्णि नामा पुत्र थयो ते जोजक वृष्णिने वली उग्रसेन नामा पुत्र थयो पछी जोजकवृष्णियें उग्रसेनने मथुरानुं राज्य आपी पोते दीक्षा लीधी, हवे अंधकवृष्णिने दश पुत्र थया तेनां नाम कहे ले एक समुद्रविजय, बीजो अक्षोज, त्रीजो स्तमित, चोथो सागर, पांचमो हिमवंत, छठो अचल, सातमो धरण, आठमो पू

रण, नवमो अभिचंद्र अने दशमो वसुदेव ए दशे दशार्ह कहेवाय हवे अंधकवृष्णियें पोताना महोटा पुत्र समुद्रविजयने शौरीपुरनुं राज्य आप्युं अने एज अंधकवृष्णिनी एक कुंती अने बीजी माद्री ए बे नामे बे पुत्रीउं थइ तेमां कुंती पांडुराजाने परणावी अने माद्री दमघोष राजानें परणावी ॥ ॥ इहां संक्षेपथी पांमवोनी उत्पत्ति कहे छे, प्रथम ऋषभदेवजीनो पुत्र कुरु नामा थयो तेणे कुरुदेश वसाव्यो तेनी पछवाडे तेना पाटें असंख्यात राजा थइगया तेमांथी एक हस्ति राजायें हस्तिनागपुर वसाव्युं तेवार पछी केटलोएक काल वीत्याकेडे सुभूमनामा. चक्रवर्त्ति राजा थयो तेवार पछी वली घणा राजा थयाकेडे एक शंतनु नामे राजा थयो तेनी बे स्त्री थइ तेमां एकतो विद्याधरनी पुत्री गंगा हती तेने गांगेय नामे पुत्र थयो तेनुं भीष्मपितामह एवुं बीजुं नाम लोकमां प्रसिद्ध थयुं हतुं अने बीजी राणी सत्यवती नामे हती तेना बे पुत्र थया एकनुं नाम चित्रांगद अने बीजानुं नाम विचित्रवीर्य पछी शंतनु राजा चित्रांगदने राज्य आपीने परलोक प्राप्त थयो हवे ते चित्रांगद एक दिवसे कोइ नीलांगद राजा सार्थे युद्ध करतां मरण पाम्यो तेवारें विचित्रवीर्य राजा थयो तेनी एक अंबिका, बीजी अंबालिका अने त्रीजी अंबा ए त्रण भार्या हती तेमां अंबिकानो पुत्र धृतराष्ट्र थयो तेनी गांधारी प्रमुख आठ स्त्रीयो हती तेना दुर्योधनादिक सो पुत्र थया अने बीजी अंबालिकाने पांडु नामे पुत्र थयो तेनी एक कुंती नामे स्त्री हती तेने एक युधिष्ठिर, बीजो भीम अने त्रीजो अर्जुन ए त्रण पुत्र थया अने वली बीजी माद्री नामे स्त्री हती तेनुं अपर नाम पद्मा एवुं हतुं तेना एक नकुल अने बीजो सहदेव एवा बे पुत्र थया एम बन्ने स्त्रीयोना मली पांडु राजाना पांच पुत्र थया ते पांच पांमवो कहेवाणा, हवे विचित्रवीर्यनी त्रीजी स्त्री अंबा हती तेने एक विदूर नामे

पुत्र थयो एरीतें पांमवोनो संबंध संक्षेपथी कह्यो ॥ ॥ हवे अंधकवृष्णिनी बीजी पुत्रीजे दमघोष राजाने परणावी हती तेनो शिशुपालनामा पुत्र थयो तेने श्रीकृष्णे मार्यो छे एवीरीतें व्यवस्था कर्यापछी अंधकवृष्णियें दीक्षा लीधी, हवे मथुरानुं राज्य उग्रसेन राजा चलावे छे तेनी धारणी नामे राणी छे अने शौरीपुरनुं राज्य समुद्रविजयराजा चलावे छे तेनी शिवादेवी नामे भार्या छे ते शिवादेवीने नेमिकुमार पुत्र थयो बीजा पण सर्व भाइउ एकठा भेला रहे छे हवे मथुरामां उग्रसेनराजा सुखे राज पाले छे एक दिवसे ते नगरीनी बाहेर वनमां एक मासी उपवासनो करनारो एवो एक तापस आव्यो तेनो एवो नियम छे के महीनानी अंदर कोइ आवीने कहे के म्हारे घेर पारणुं करजो तो तेने घेर पारणुं करे पण बीजाने घेर पारणुं करे नही अने जो नोतरुं आपनार धणी भूली जाय अने तापसने पारणुं करावना माटे तेडवा सारु नही आवे तो वली बीजा एक मासनुं पच्चरकाण करी लीये एवो ते तापस मासिक उपवास करीने वनमां बेठो छे तिहां उग्रसेन राजा रमवा गयो अने वनमां तापसने देखी राजायें पोताने घेर पारणुं करवानी वीनंति करी पारणुं करवुं कबुल करावीने पोताने घेर आव्यो परंतु जे दिवसें पारणुं करावनानुं हतुं ते दिवसें विस्मृतिमां तापसने बोलाववा मा णस मोकल्युं नही तापसें पण सांज सुधी वाट जोइ कोइ बोलाववा नही आव्यो तेवारे वली बीजा महीनानी तपस्यानो नियम करी लीधो तेवारपछी वली केटलेक दिवसें राजाने ते तापस याद आव्यो के अरे में आ केवुं अकार्य कर्युं जे तापसने नोतरीने जमवा तेड्यो नही एम चिंतवी फरी पण तापसने जमवानुं आमंत्रण करी आव्यो परंतु बीजी वार पण पारणाने दिवसें जमवा सारुं तेडवाने भूली गयो एवीज रीतें वली त्रीजे महीने पण नोतरुं

आपीने जमाडवाने वखतें तेडवानुं भूली गयो तेथी तापसें राजा उपर क्रोध करीने विचार्युं जे आ दुष्ट राजा मने नोतरुं आपी जाय छे ने जमाडतो नथी माटे जो म्हारा तपनो प्रभाव होयतो हुं एने भवांतरमां दुःख देवावाळो थाउं एवुं नियाणुं करी. तिहांथी मरण पामीने उग्रसेन राजानी भार्या धारणीनी कूखमां आवी उपन्यो तेना प्रभावथी राणीने त्रीजे मही ने राजानुं काळजुं खावानो डोहोळो उपन्यो तेथी शरीरें दुर्बळ थइ तेने घणुं घणुं राजायें पूछयुं तेवारे डोहोळा संबंधि जेवी वात हती तेवी राजा आगळ कही, पछी राजायें प्रधाननी अकळथी ते डोहोळो पूरण कर्यो राणीयें गर्भ पाडवाना घणा उपाय कर्या पण गर्भ पड्यो नही छेवट नव महीना पूरण थये पुत्र जन्म्यो ते जन्मतांज राणीयें तेंने कांसानी पेटीमां नाखीने मांहे नामांकित मुद्रिका मूकीने ते पेटी यमुना नदीमां वहेवरावी दीधी ते कांसानी पेटी तरती तरती मथुरांथी शौरीपुर आवी एवामां घृत अने तेलनो वेचनार सुभद्र नामे वाणीयो ते यमुना नदीमां स्नान करवा आव्यो तेणे ते पेटी नदीमांथी बाहेर काहाडी लइने उघाडी जोइ तो तेमां बाळक दीठो तेवारे ते वाणीयो मुद्रिकासहित ते बाळकने छानो मानो पोताने घेर लइ आवीने पोतानी स्त्रीने पुत्र सोंप्यो अने लोकोने कहेवा लाग्यो के म्हारी स्त्रीने गूढगर्भ पुत्र थयो तेनुं नाम कंस आप्युं अनुक्रमे ते बाळक महोटो थयो तेवारे मस्ति करे लोकोना छोकराउने मार आपे तेथी लोक आवीने सुभद्रने नित्य उलंभा आपे तेवारे वाणिये विचार्युं जे हुंतो सामान्य माणस छुं अने आतो राजपुत्र छे माटे म्हारे घेर ए केवीरीतें रही शके एवुं जाणी वाणीयायें ते छोकरो वसुदेव कुमरने जइ सोंप्यो अने कंस पण वसुदेवजीनो चाकर थइ रह्यो तेमज वसुदेवजी पण कंस उपर घणी कृपा दृष्टि राखवा

लाग्या एवा अवसरमां वसुराजाना वंशमां बृहद्रथ राजा थया तेनो पुत्र जरासंध नामे प्रति
वासुदेव त्रण खंडनो जोक्ता छे ते राजगृही नगरीमां राज्य करे छे अने यादव पण सर्वे ते
नीज आज्ञा पाले छे ते जरासंध राजायें समुद्रविजयनी उपर दूतनी साथें एक कागल लखी
मोकल्यो के वैताढ्य पर्वत पासेनो रहेवासी सिंहनामे पल्लिपति ते सिंहपुर नगरनो राजा छे
तेने जीवतो बांधी पकडीने जे म्हारी पासे लइ आवे तेने हुं म्हारी जीवयशा नामे पुत्री छे
ते परणावुं अने वली एक नगर जे ते धणी पसंद करे ते नगरनुं राज्य पण आपुं एवी री
तनो कागल वांचीने समुद्रविजयजी पोतानी सेना तैयार करी सिंह नामा पल्लिपतिने जी
तवा माटे चडाइ करवाने तैयार थया एटलामां वसुदेव कुमरे आवी समुद्रविजयजीने वर्ज्यो
अने कंसने साथे लइ पोते सैन्य सहित ते राजानी उपर चडी गयो तिहां जइ कंसने आगे
वान करी तेनी साथे युद्ध कर्युं तिहां कंसे सिंहराजाने बांधी लावीने वसुदेवजीने स्वाधीन
कर्यो पाछलथी समुद्रविजयजीयें कोष्टक निमित्तियाने पूछ्युं जे वसुदेवजी अने जीवयशानुं
जोडुं मलतुं छे के नथी? तेवारें निमित्तिये कह्युं के ए जीवयशा जे छे ते परण्या पछी श्वसुरना
कुलनो अने पोताना पिताना कुलनो एरीते बेहु कुलनो क्षय करनारी छे माटे तमे विचा
रीनें काम करजो म्हारा वचनमां लगार मात्र संदेह जाणशो नही एवुं सांजली निमित्तियाने
शीख आपी विदाय कर्यो अने निमित्तियानी वातथी चिंतातुर थयो थको विचारवा लाग्यो जे
वसुदेवजी जीत्यो एवुं सांजलशे तो जरासंध पोतानी पुत्री वसुदेवजीने आपशे अने ते
कन्या तो बंने कुलनो क्षयकरनारी छे तो हवे आपणने एनो शो उपाय करवो एवो चिं
तातुर थको बेठो छे एटलामां तो वसुदेवजी पण सिंहराजाने बांधीने समुद्रविजयजीनी पासे

लइ आव्यो अने समुद्रविजयजीने चिंतातुर थयेलो देखीने पूछवा लाग्यो जे तमे शी चिं तामां बेठा छो? तेवारें वसुदेवजीने एकांतमां लइ जइने समुद्रविजयजीयें, जीवयशा बेहु कु लना क्षयने करवावाली छे ए वात संनलावी तेवारें वसुदेवजी बोल्या के ए सिंहराजाने में बांध्यो नथी परंतु कंसें बांध्यो छे ए वात सांनली समुद्रविजयजी विचारमां पड्या के ए वाणि याना छोकरामां एटलुं बल होय नहि माटे तेनी हकीगत पूछवासारुं सुनड वणिकने बो लाव्यो तेणे सर्व वृत्तांत कह्यो पछी ते वाणियानी पासेंथी मुद्रिका मगावी कंसने आपी सिंह राजासहित कंसने राजगृहनगरे जरासंध पासें मोकल्यो जरासंधें पण कंसने पोतानी पुत्री जीवयशा परणावी दीधी अने वली कंसें तेनी पासेंथी मथुरानुं राज्य माग्युं तेवारे जरासंधें पोतानुं सबल सैन्य आप्युं ते लेइ कंसें मथुरामां जइ पोतानो पिता जे उग्रसेन तेने जीवतो फाली काष्ठना पांजरामां नाखी दीधो अने पोतें मथुरानुं राज्य करवा लाग्यो, हवे पोतानो पिता काष्ठपिंजरमां पड्यो थको दुःख नोगवे छे एवुं जोइने कंसनो न्हानो नाइ अतिमुक्तक नामे छे ते संसारथी विरक्त थयो अने दीक्षा लइ चाली निकल्यो ॥ ॥ हवे वसुदेवकुमरें पूर्वनवमां स्त्रीवल्लन कर्म उपार्जन कर्युं छे ते पूर्वनवनी कथा कहे छे वसुदेवनो जीव पाछला नवमां कोइएक गामनेविषे नंदीषेण एवे नामे कुलपुत्र हतो तेनां माता पिता बाल्यावस्थामां मरण पाम्या पछी ते मामाना घरमां रहीने महोटो थयो ते जेवारे युवान अवस्था पाम्यो तेवारे कालुं रूप, कुदर्शनी, बिलाडाना जेवी न्हानी आंख, गणेशना जेवुं महोटु पेट, हा थीना जेवा मोटा दांत, उंटना जेवा मोटा होठ, वानराना जेवा कान, नासिका चापडी, त्रिखूणुं कपाल, एवो कुरूपो देखीने तेने कोइ कन्या आपे नही सर्व स्त्रीयो तेनी निंदा करे

तेथी चिंतातुर थयो थको मामाना घरमां कामकाज करवुं मूकी दीधुं, मामाये कह्युंके म्हारी सात पुत्री छे तेमांथी एक तुजने परणावीश तुं चिंता करीश नही पछी मामायें पोतानी दीकरीयोने एनी साथें परणवानुं कह्युं तेवारे ते साते जणीउ बोली जे अमे मरी जाइयें ते कबुल करीये पण ए दांतलाने तो कदापि काले परणीयें नही एवुं सांजली ते नंदीषेण मरवाने माटे कोइएक पर्वत उपर चडीने त्यांथी पडवा लाग्यो एवामां एक मुनि राजें तेने वर्ज्यो अने कह्युं के हे जोला आवा प्रकारें मरवाथी ताहारूं दुःख मटे नही तिहां प्रतिबोध पामीने चारित्र लीधुं अने साधुउनो वैयावच्च करवानो अभिग्रह धारण कर्यो वली पोते मासखमणनी तपस्या करे अने साधुउनो पण वैयावच्च करे एक दिवसें इंद्रमहाराजें पोतानी सजामां ते नंदीषेणनी वैयावच्च करवा आश्चर्यी घणीज प्रशंसा करी के एना सरखो वैयावच्चनो करनार बीजो कोइ नथी ते . वातने एक देवता अणमानतो थको तिहां आव्यो तेणें अतिसारना रोगेंकरी ग्रस्त थयेला एवा एक साधुनुं रूप विकूर्वीने एक गामने बाहेर जइ बेसाड्यो अने वली बीजा एक साधुनो रूप बनावीने जिहां नंदीषेण मासखमणनुं पारणुं करवा लाग्यो छे तिहां मोकल्यो ते कृत्रिम साधु आवीने नंदीषेणने कहेवा लाग्यो के अरे, अतिसारना रोगवालो साधु बहार पड्यो छे तेनो वैयावृत्य कर ते सांजली नंदीषेण पारणुं करवुं पडतुं मूकीने तरतज ते साधुनी शरीर शुद्धिने माटे गाममां सूजतुं पाणी लेवा सारुं फरवा लाग्यो परंतु तेपण ते देवें देवमायाथी असूजतुं करी दीधुं लेवा योग्य क्यांय मले नही तोपण मनमां खेद आवतो नथी पण उलटो पश्चात्ताप करवा लाग्यो के अरे जूउतो खरा के हुं कहेवो जाग्यहीन छुं जे आवा मुनिउनो वैयावच्च करवामां पण

मने अंतराय पडवा लागो छे पछी एम करतां पाणी पण मल्युं ते लइने साधु पासें आव्यो ते वारे ते अतिसारी साधुयें रीशकरी लात मारीने पाणी ढोली नाख्युं अने कहेवा लाग्यो के अरे मूर्खा आटलो वखत रहीने केम आव्यो एम कह्युं तो पण तेना उपर रोष.न कर्यो पछी ते साधुने पोतानी खांध उपर चडावी गाममां लइ चाल्यो तेवारे ते साधुयें देवमायाथी वली अत्यंत दुर्गंधित विष्टा करवा मांडी तेथी नंदीषेणनुं शरीर संपूर्ण मलथी भराइ गयुं तो पण नंदीषेणने द्वेष उपज्यो नही एवी तेनी धीरज जोइ देव तुष्टमान थइ नंदीषेणने वांदीने स्वस्थानके देवलोकमां गयो एवीरीते नंदीषेणे बार हजार वर्ष चारित्र पाल्युं अने घणा ग्रंथोमां पच्चावन्न हजार वर्ष चरित्र पाल्युं एम कहेलुं छे अंते अनशन कर्युं ते वखत कोइक चक्रवर्ति तेने वांदवा आव्यो तेवारे चक्रवर्तिनी पटराणीने देखी तेणे नियाणुं कर्युं जे हुं परभवे स्त्रीवल्लभ थाउं एवुं नियाणुं बांधी तिहांथी काल करी देवलोक गयो अने देवलोकथी चवीने इहां वसुदेव थयो छे तेनुं पूर्वे करेला नियाणानां प्रभावथी कामदेव जेवुं रूप थयुं छे ते वसुदेव जे वखत शौरीपुर नगरमां फरे तेवारे ते नगरनी सर्व स्त्रीयो पोताना घर उघडां मूकी तथा बीजां पण सर्व कामकाज पडतां मूकी रूपे मोही थकी वसुदेवनी पछवाडे फरे अने भरतारनुं कह्युं पण माने नही तेथी कोइ कोइना घरोमां चोर पेसी जाय अने घर पण लूंटी चाल्यो जाय एवुं कृत्य जोइ ते नगरना रहेनारा सर्व लोकोयें समुद्रविजय राजानी पासे जइ विनति करी के गामनी सर्व स्त्रीयो घर सूनां मूकीने वसुदेव कुमरनी पाछल भमे छे माटे जो तमे वसुदेवजीने नही वर्जो तो अमने बीजे क्यांइ रहेवानी जगा बतावो ते सांभली समुद्रविजय राजा बोल्या के हे पंचो! तमे कहो छो तेम हुं करीश हवे तमे सुखे आपणे घरें जाउ अने सुखसमाधिमां रहो एम

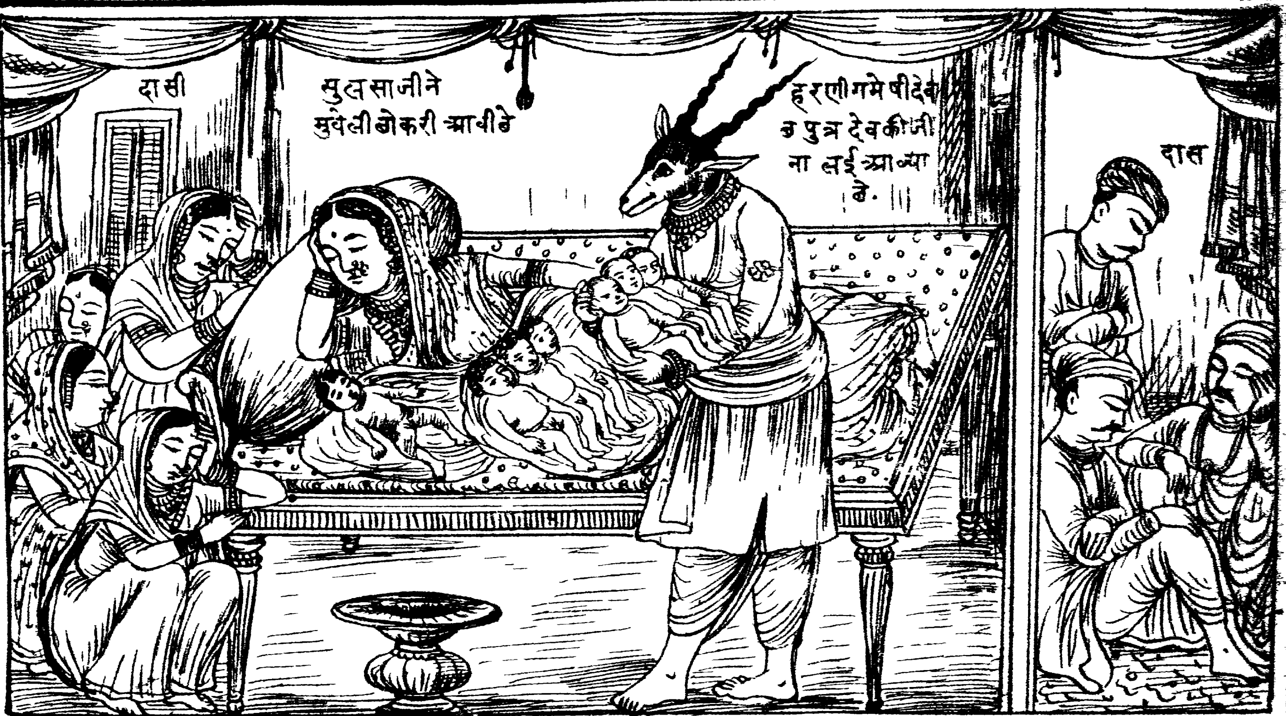
कही महाजनने शीख आपी, थोडी वार पछी वसुदेवजी पण समुद्रविजयने पगे लागवा सारुं तिहां आव्यो तेवारे वसुदेवजीने खोलामां बेसाडीने समुद्रविजयजी बोल्या के हे नाइ! आज काल तुं शरीरमां डुर्बल थइ गयेलो देखाय छे ते हुं जाणुं बुं जे तुं इहां तिहां घणो रखडे छे माटे वेलाये कुवेलाये कोइ छिद्र जोइ छल करीने ताहारा रूपनी खराबी करशे तथा वली आपणे राजा छैयें माटे आपणा वैरी पण घणा छे ते कोइ उपद्रव करे माटे तुं आपणा घरना बगीचामां रम्या करजे पण बाहेर नमवानुं मूकी आपजे वली बाहेर नमवाथी विद्या शीखेली छे तें पण नूली जइश एवुं सांजली वसुदेवजी पण विनयपूर्वक बोल्यो के तमारो हुकुम महारे प्रमाण छे एम कही घरनी वाडीमांहेज रमत करवा लाग्यो एवामां उनालो आव्यो तेवारे शिवादेवीयें समुद्रविजयजीने माटें चंदन घसी तेनी कटोरी नरी ढाकीने दासीना हाथमां आपी समुद्रविजयजी पासे मोकली तें कटोरी दासी लइ जाय छे तेने देखी वसुदेव बोल्यो के आ शुं छे? दासी बोली हजुरने विलेपन करवा सारुं चंदननी कटोरी राणीयें दीधी छे ते लइ जाउं बुं तेवारे वसुदेवजीयें ते दासीना हाथमांथी छीनवी लइ पोताना अंग उपर चंदननुं विलेपन करी लीधुं ते जोइ दासी कोप करीने बोली जे ताहारां आवां लक्षण छे तेथीज तुं बंदीखानें पड्यो छो ते सांजली वसुदेवजीयें दासीने पूछ्युं के बंदीखानुं ते वली कयुं! तेवारे दासीयें जवाब दीधो नही पण जेवारे घणो हठ करीने पूछ्युं तेवारे दासीयें गामना लोको संबंधि विचार सर्व कही संजलाव्यो तेथी वसुदेवजी राजानी उपर तथा पंचोनी उपर अमर्ष आणीने अर्द्धरात्रें एकलो घरमांथी बाहेर निकली गयो, अने विचार्युं जे हवेथी ए समुद्रविजयजी महारी आशा मूकीने पछवाडे शोध

करवा नीकळे नहीं एवो कोइ उपाय करुं पछी नगरनी बाहेर एक मडदाने बाळीने पोळना कमाड उपर लोहीना अक्षरोथी लख्युं जे हे नगरवासी लोको! तमे सांभळो हुं तमोने तथा म्हारा म्होटा भाइने सुख थवाने माटे बळी भस्म थयो छुं हवे तमे सुख समाधीमां रहेजो एवी रीते लखीने चालतो थयो प्रभाते पोळीयें पोळ उघाडी तेवारे मुडदुं बळ्युं दीठुं अने वसुदेवजीना लखेला अक्षर वांची समुद्रविजयजीने जइ कह्युं समुद्रविजय तिहां आवी ते कृत्य जोइ शोकथी मरवा लाग्यो तेवारे प्रधानादि लोकोयें तेने समजावी राख्यो तोपण शोकमां गरकाब थयो थको राज्य करे छे हवे वसुदेव गामें गामे फरवा लाग्यो ते ज्यां ज्यां जाय तिहां पूर्वे करेला नीयाणाना प्रभावथी अत्यंत स्वरूपवान कन्याउ परणे एम क्यांक दश, क्यांक वीश, क्यांक सो, क्यांक पांचसो कन्याउने परणे ते सर्व विद्याधरराजाउनी पुत्रीयो तथा बीजा भूचरराजाउनी पुत्रीउ तथा शेठ प्रमुख म्होटा धनाढ्य लोकोनी पुत्रीउ जाणवी एम सर्वमळी बहोंतेर हजार कन्याउने वसुदेवजी परण्यो अने घणी विद्याउ पण शीख्यो, एवा अवसरमां रोहक राजानी पुत्री रोहिणी नामे छे तेनो स्वयंवर मंडप मंडाणो छे तिहां त्रण खंडनो स्वामी जरासंध आदि देइने सर्वराजाउ ते स्वयंवर मंडपें आव्या छे तेमज समुद्रविजय प्रमुख सर्व यादवो पण आव्या छे ते रात्रियें वसुदेवजीने रोहिणीप्रज्ञप्ति विद्यादेवीयें आवी स्वप्नामां कह्युं के हे वसुदेव! रोहिणीना स्वयंवर मंडपने विषे तुं जा अने तुजने ते रोहिणी परणशे वळी रोहिणी शिवाय बीजी पण एक कन्या तुं हजी परणीश एम सर्वे तुजने बे कन्याउनी प्राप्ति हवे थवानी छे माटे तुं कां सूतो छो! प्रभातें तुं तिहां जाजे एम कहीने पछी ते विद्यादेवीयें रोहिणीनी पासें जइ तेने पण स्वप्नामां कह्युं के तुं मृ

दंग वजाववावाला कुबडाने परणजे ॥ हवे रोहक राजायें प्रजातें स्वयंवर मंमप शणगार्यो त्यां सर्व राजा, राजकुमारो पण शणगार करी पोत पोताना नामनां सिंहासनो उपर आवी बिराजमान थया एटलामां रोहिणी राजकन्या पण पोताने शरीरे सोल शणगार करी स खीउंये करी परवरी थकी हाथमां फूलमाला लेइने स्वयंवर मंमपमां आवी तेवारे सर्व राजा ते कन्याने देखवा लाग्या अने बडीदारणी प्रतिहारिणी प्रत्येक राजाउंना गुण रूपादिकनो वर्णन करे ले केमके ते रोहिणी सती ले माटे काचमांथी सर्व देखी शके नही तेथी प्रतिहारिणीये सर्व राजाउंने वर्णवी देखाड्या पण कुलदेवीना वचनने हृदयमां धरीने जे मृदंग वगाडनारा कूबडाने रूपें वसुदेव आव्यो ले ते एज वसुदेव एज वसुदेव एवो मृदंगशब्द वजावे ले तेने जोइने तेना गलामां वरमाला पहेरावी तेवारे कूबडो नाचवा लाग्यो अने मुखथी आ रीतें शब्दोच्चार करतो हवो के अहो आ सर्व राजाउ करतां हुं अधिक नाग्यशाली बुं जेमाटें ए सर्व राजाउ बेग रह्या अने मुजने वरमाला मली गइ एवुं जोइ ते मंमपमां आवेला सर्व राजाउ ते कन्या उ पर क्रोध करीने, केटलाएकतो कन्याने निंदवा लाग्या, केटलाएक कन्याना पितानी निंदा क रवा लाग्या अने केटलाएक बोल्या अरे आ कूबडाने मारीने एनी पासेंथी वरमाला खोंसी ल्यो फोकट बीजा उपर रीश करवाथी शुं थाय एवुं मांहोमांहे कहीने बोल्या के जेना सुनट कूबडा पासे उनेला ले तें कूबडा पासेंथी वरमाला खोंसी लीये अने तेनीज ए वरमाला पण जाणवी एवुं सांनली सर्व राजाउंना सेवक ते कूबडा पासें आव्या तेने कूबडे सोनाना मृदंगथी मारीने जमीन उपर नाखी दीधा तेदेखी सर्व राजा शस्त्र लइने मारवा दोड्या तेवारे वसुदेवें सर्व राजाउंने विरूप करी नाख्या कोइनी मूबो दाढी कापी नाखी, कोइने रुंम मुंम करी

नाख्यो ते जोइ जरासंध राजायें समुद्रविजयना साहामुं जोयुं तेवारें समुद्रविजय राजा बकतर, टोप पहेरी धनुष बाण लइने युद्ध करवा उठ्या तेने देखी वसुदेवें जाण्युं जे नाइनी साथें ल डवुं नही तो हवे हुं महारूं स्वरूप प्रगट करी देखाडुं नहीतों संग्राम थाशे एवो विचारी कूबडानुं रूप त्यागी मृदंग नाखी देइने समुद्रविजय पासे एक बाण नाख्यो तेमां वसुदेवनो तमोने नमस्कार छे एवुं सुवर्णमयी अक्षरोथी लखेलुं हतुं ते वांचीने समुद्रविजय विस्मय थयो अने विचार्युं जे वसुदेव मरण पाम्याने केइक वरस थइ गयां तो आहीं वसुदेव किहांथी आव्यो आतो कोइ इंद्रजालीयो मने नोलवतोतो नथी एवुं विचारे छे एटलामां तो वसुदेव पण आवी पगें लागो तेवारें तो समुद्रविजयजीयें सारीपेठें उलख्यो अने सर्व यादव खुशी थया जरासंध प्रमुख राजाउ पण खुशी थया, महोत्सव करीने वसुदेवने रो हिणी परणावी तथा आगल पण जेटली स्त्री परण्या हता ते सहुनी हकीगत सर्वे समुद्रविज यजीने कही पाछलथी बहोतेर हजार कन्याउने नेली करी विमानमां बेसाडी लावीने वसुदेव घेर आव्या ॥ हवे स्नेहने लीधे वसुदेवजीने मथुरा नगरीमां कंस लइ आव्यो त्यां कंस तथा वसु देवजी बेहु मथुरामां रहे छे एकदा देवकराजानी पुत्री देवकीजी, वसुदेवने परणवा आवी छे ते देवकीजी अने जीवयशा ए बे साथे रमत करे पण जीवयशा पोताना बापना बलना गर्वेकरी उन्मत्त छे हवे जेवारे देवकीजीनो विवाह मंमाणो तेवारें जीवयशा मदिरापान करी देवकी जीने पोतानी खांध उपर बेसाडी नाचे छे एवा अवसरमां कंसनो न्हानो नाइ अइमुत्तो नामा साधु थयो छे ते गोचरी सारु फरतो थको कंसने घरे आव्यो तेने जीवयशायें दीठो तेवारे म दोन्मत्त थइ थकी मुनिने कंठे वलगीने बोली जे हे देवरजी ! तमे नला अवसरमां आव्या छो

तो हवे एक राजकन्या तमोने पण परणावीश एवुं बोलती थकी तेने मूके नही तेवारे तेने बीवरावता माटे साधु बोल्या के अरे मूरखणी तुं शुं नाचे कूदे छे जेने तें ताहारा खांध उपर बेसाडी छे तेनो सातमो गर्भ जे थाशे ते ताहारा भरतारने तथा ताहारा पिताने मारवा वालो थाशे एवां साधुनां वचन सांभली साधुने कंठे वलगेली हती ते मूकी दीधो त्यांथी साधुतो विहार करी गयो अने जीवयशाने मद उतरी गयो मनमां शंका पडी जे साधुनुं वचन खोटुं थाय नही पछी ते वात एकांते जइ पोताना भरतार कंसने कही कंसें पण ते वात सत्य करी मानी तोपण ते वचन जुठुं करवाने अर्थे विचार्युं जे आ वात कोइने जाणवामां नही आवे तेवीरीतें एनो उपाय करवो एवुं चिंतवन करी एक दिवस वसुदेवजीने कंसें राजी कर्यो तेवारें वसुदेवजी बोल्या हे कंस ! ताहारा उपर हुं तुष्टमान थयो छुं माटे माग माग जे मागीश ते हुं आपीश एवुं सांभली कंस बोल्यो जे हे मित्र! तुं तुष्टमान थयो तो देवकीजीना पहेलवेलां साते गर्भ मने आपजे ते वात वसुदेवजीयें सरल चित्तथी मान्य करी अने कंसने कह्युं के हुं तमोने साते गर्भ आपीश एवीरीतें वसुदेवजी वचनथी बंधाइ गया, पछी ते वात देवकीजी आगल कही तेवारें देवकीजीयें अइमत्ता मुनिनां कहेलां वचन वसुदेवजीनें संभलाव्यां अने कह्युं के आ कंस आपणा पुत्रोने लइ मारी नाखशे ते सांभली वसुदेवजीने पश्चात्ताप थयो पण वचने बंधाइ गयो त्यां शो उपाय ? सत्पुरुषनुं बोलवुं फरे नही माटे सत्पुरुषें जे बोलवुं ते विचारीने बोलवुं हवें एवा अवसरमां भद्दिलपुर नगरनो रेवासी नाग नामे शेठ छे तेनी सुलसा नामा स्त्रीने मृतवच्छा दोष छे तेथी ते बधा मुवेला पुत्रने जन्म आपे छे माटे ते स्त्रीयें अठम तपकरी हरणीगमेषी देवनुं आराधन कर्युं ते देव त्रीजा उप


चित्र ५९
दासी
सुलसाजीने
मुवेली छोकरी आपीछे
हरणीगमेषीदेव
छ पुत्र देवकीजी
ना लई आव्या
छे.
दास

वासमां प्रगट थइने बोल्यो जे मने शावास्ते बोलाव्यो तेवारें सुलसा बोली के हे देव मुजने मृतक पुत्र आवे छे ते जीवता करी आप तेवारे देवता बोल्यो कोइनुं कर्म दूर करवाने हुं समर्थ नथी माटे ताहारा पुत्रतो जीवता रहेशे नही ए वात निश्चयात्मक छे तथापि तारी पुत्रसंबंधि इछा हुं पूरण करी आपीश एवुं कहीने देवता जतो रह्यो पछी कर्मयोगें देवकीजी अने सुलसा ए बेहुने साथेंज गर्भ रह्यो अने साथेंज जन्म्यो तेवारें हरणीगमेषीयें देवकीजीना जीवता पुत्रो लावीने सुलसानी पासें मूक्या अने मूवेला सुलसाना पुत्र ते देवकीजीनी पासे लावी मूक्या ते मूवेला बालकोने कंसना चोकीदारोये लइजइने कंसने स्वाधीन कर्या कंसें तेमने सिला उपर पछाडी मारी नाख्या एवीरीतें देवकीजीना छ पुत्र सुलसानी पासे वृद्धि पाम्या अने सुलसानां मृतक पुत्र देवकी पासेथी लइने कंसें मार्या ते देवकीजीयें पूर्वला भवमां पोतानी शोकनां सात रत्न चोरी लीधां हतां तेथी शोक दिलगीर थइने जेवारें घणुं रुदन करवा लागी तेवारें एक रत्न तेने पाछुं दीधुं हतुं ते कर्मना योगें अनिकयशा, अनंतसेन, विजयसेन, निहतारि, देवयशा अने शत्रुसेन ए छ पुत्र देवकीजीना लइने हरणीगमेषी देवें सुलसाने आप्या हवे देवकीजीनो सातमो गर्भ सात सुपने सूचित पांचमा देवलोकथी चवीने देवकीजीनी कूखें आवी उपन्यो ते गर्भ जन्मतांज लइ जवाने माटे कंसनां माणसो चोकीदार बेठेला हता तेथी देवकीजीयें वसुदेवजीने कह्युंके आ सातमो गर्भ उत्तम छे माटे कोइपण उपाय करीने कदापि एने माटे जुठुं बोलवुं पडेतो जुठुं बोलीने पण आपणें, ए गर्भ राखवो ए वात वसुदेवजीयें सांभलीने पछी वसुदेवजी जे वखत देवकीजीने परण्या हता ते वखत जे देवकराजायें दायजो आप्यो हतो तेमां गोकुलगाम पण साथे आप्युं

हतुं ते गोकुलगाममां नंदनामें गोप तथा तेनी यशोदा नामें स्त्री ए बे रहे छे तेपण ते दाय जामां आवी गया हतां एटलामां देवकीजीने गर्भ थयो ते वर्णे कालो हतो तेने देखी कृष्ण कृष्ण एवुं कहीने वसुदेवजी तेने तिहांथी छानो लइने निकली गयो ने वखत कंसें बेसाडेला चोकीदारोने निद्रा आवीगइ हती आगल जतां दरवाजो खोलीने निकल्यो तेवारे उग्रसेन बोल्यो आ कोण छे वसुदेवजी बोल्या आ ताहारुं काष्ठनुं पांजरुं भांगीने तेमांथी तुजने मुक्त करनार छे एवुं कही आगल चाल्यो मार्गमां यमुनानदीयें पण मार्ग आप्यो ते नदी उल्लंघीने गोकुलमां जइ यशोदाजीने ते बालक सोंप्यो अने ते वखत यशोदाजीने पुत्री आवी छे ते लइ आवीने देवकीजीने सोंपी पाछलथी कंसना पोरायत निद्रामांथी जाग्या ते बोल्या शुं पुत्र आव्यो के पुत्री आवी तेवारे वसुदेवजीयें पुत्री आपी ते कंसे लईने तेनुं नाक कापीने पाछी वसुदेवजीने आपी आ ठेकाणे अन्यदर्शनीउ कहे छे के कन्याने पण शिला उपर पछाडी ते वीजली थइगइ ए वात मिथ्या छे हवे कंस निश्चिंत थयो आणीगम गोकुलमां यशोदाजी वसुदेवना कहेवाथी कृष्णनुं पुत्रनी पेरे पालन पोषण करे छे कृष्ण पण सुखें सुखें वृद्धि पामे छे हवे देवकीजीने कृष्णजीने देखवानी घणी घणी चाहना रहे पण कंसनी बीकने लीधे पन्नर पन्नर दिवसें अथवा महीने महीने आज वछ बारश छे आज गोत्राट छे आज काजली त्रीज छे एवा नवा नवा उत्तर करी करीने गोकुलमां जाय तेने लीधे ते दिवसो सर्व मिथ्यात्वीउना पर्व थया पछी तिहां जइ देवकीजी श्रीकृष्णने रमत करावे, दूध धवरावे, अने यशोदाजीने कहे के ताहारो पुत्र मने घणो वल्लभ लागे ने एवां वचन कही पाछी घेर आवे एरीतें कृष्णजी बाल लीला करता थका यशोदाजीनां दधि दही प्रमुखनां वासण ढोली नाखे फोडी नाखे इत्यादिक

चित्र ६०







वसुदेवजी श्रीकृष्णनेलई गंगानदी ऊतरेछे

अनेक प्रकारनी रमत करतो विचरेछे एकदा वसुदेवजीयें देवकीने कह्युंके तमारे घणी वखत तिहां जावुं नही कारणके जो कंसने ए वातनी खबर पडशे तो वली कांइक उत्पात करशे हवे जेवारे कृष्ण सात आठ वर्षना थया तेवारे तेने कलाउ शीखववा सारुं रोहिणीना पुत्र बलदेवजीने कंसथी छानो मोकल्यो अने ते छानो रहेवानी हेतुभूत कंससंबंधि सर्व हकीगत बलदेवजीने निवेदन करी एम बलदेवजी अने कृष्ण बेहु जण गोकुलमां नंदने घेर रहे छे अने बलदेवजी श्रीकृष्णने विद्याउ जणावे छे सर्व कलाउ शीखावे छे एम करतां श्रीकृष्ण चौदवर्षना थया हवे राम कृष्ण बन्ने नाइउ तिहां गोवालीआउनी साथे नाचे कूदे गाय वजावे नीला पीला वस्त्र पहेरे, कृष्ण पोताने मस्तके मोरपीछ राखे, मुरली वजावे, गोपीयोनी साथे गाय, आखो दिवस रमत करे, सांजना घेर आवे एवा अवसरमां वली एक दिवसें कंसना मनमां एवी वात आवीके साधुनुं वचन जूठुं थयुं के नथी थयुं तेनी चोकसी करवा माटे निमित्तियाने पूछ्युं के मने कोइ मारनार छे किंवा नथी? ते सांभली निमित्तियो बोल्यो के साधुनुं वचन जूठुं नथी ताहारो शत्रु कोइक जगायें महोटो थइ रह्यो छे पण ताहारो शत्रु मरण पाम्यो नथी तेवारे कंसें पूछ्युं ते केवीरीतें महारा जाणवामां आवे, निमित्तियो बोल्यो जे अरिष्ट नामा बलदने दमन करशे, जे कालीनागने वश करशे, जे ताहारा केशी नामना घोडाने दमशे, जे खर अने मेष नामा खरोने मारशे, जे चंपोत्तर अने पद्मोत्तर नामा हाथीउने मारशें, जे सारंग धनुष्य चढावशे, जे चाणूरमल्ल अने मुष्टिकमल्ल ए बेने मारशे ते ताहारो मारनार जाणजे ए वात सांभली कंसें तेनी निगाह करवाने माटे पडह वजाडाव्यो के जे कोइ सारंग धनुष्यने चढावे तेने महारी बहेन सत्यभामा हुं परणावुं ए वात सांभली घणा

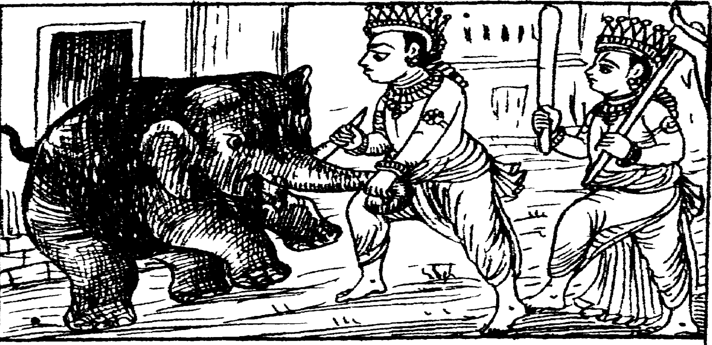
राजा तिहां नेला थया एवा अवसरमां वसुदेवजीनो एक अनादृष्ट नामा महाबलवंत पुत्र छे ते पण धनुष्य चडाववाने जाय छे मार्गमां सांज पडी तेथी रात्रे श्रीगोकुलमां रह्यो तेने बलजद्र उलखतो हतो तेथी तेनी घणी सेवा करी प्रजात थयुं तेवारे अनादृष्ट बलजद्रने कहेवा लाग्यो के एक बलावो आपो तो मने मथुरानो मार्ग देखाडी आवे ते सांजली बलजद्रें श्रीकृष्णने अनादृष्ट साथे मार्ग देखाडवा मोकल्यो मार्गें जतां अनादृष्टनो रथ वृक्षोमां अटकी रह्यो ते अनादृष्टथी निकल्यो नही तेवारे कृष्णजीयें ते बेहु वृक्षोने लात मारी उखेडी नाख्यां अने मार्ग करी रथ बाहेर रस्ते चडावी दीधो तेजोइ अनादृष्टीये तेने बलवान जाणी रथमां बेसाडी मथुरामां लइ गयो त्यां जइ अनादृष्टी धनुष्यने हाथ फरसवा लाग्यो दैवयोगथी पाछो पड्यो तेवारे तेना उपर लोक हस्या श्रीकृष्णें अनादृष्टीनुं हास्य थतुं देखी ते धनुष्यने सहेज उपाडीने चडावी लीधुं सत्यजामा पासे उजी हती तेणे श्रीकृष्णने वरमाला पेरावी तेवारे वसुदेवजी अनादृष्टी उपर क्रोधकरी कहेवा लाग्यो के एने शा वास्ते आंही लइ आव्यो जा हमणाज पाछो मूकी आव ते सांजली अनादृष्टी छानोमानो कृष्णने गोकुलमां लइ आव्यो एटला दिवससुधी आ बलजद्र महारो जाइ छे एवुं श्रीकृष्णना जाणवामां न हतुं. हवे अनुक्रमें श्रीकृष्ण सोल वर्षनो थयो एवा अवसरमां कंसें केशी घोडो अने मेष घोडो तथा अरिष्टनामा बलद ए सर्वेने गोकुलमां मोकल्या ते जइ गोकुलमां उपद्रव करवा लाग्या तेमने श्रीकृष्णें मारी नाख्या एवा अवसरमां वली मथुरामां कंसें मल्लनो अखाडो मांड्यो तिहां घणा मल्ल एकठा थया छे तेमां एक चाणूरमल्ल अने बीजो मुष्टिकमल्ल ए बे मल्ल घणा बलवान छे ते वखत कंसें जाण्युं जे धनुष्य चढाववावालाने में सारीपेठे उलख्यो नही माटे हवे कोइरीतें

ते आंही आवे तो हुं तेने मारी नाखुं एवुं विचारी एक बाजु कंस बेठो रह्यो छे एवामां श्री कृष्णें सांभल्युं जे आज मल्लयुद्ध छे ते हुं देखवा जाउं एवुं चिंतवी बलभद्रने गुरु जाणी पगें लागी बोल्यो स्वामी आज आज्ञा आपोतो मथुरामां मल्लयुद्ध जोवा जाउं.तेवारे बलभद्रें जाण्युं जे तिहां जवाथी कदाच कंसनी साथे युद्धथइ जाय माटे कृष्णने भाइपणानी वात जणावी आपुं एम विचारी बलभद्र बोल्यो हे यशोदा! अमोने स्नान करवा माटे उन्हुं पाणी आप अमे आज मल्लयुद्ध देखवा जइशुं ते वखत यशोदा बीजा कोइ काममां पडी हती तेथी बल भद्रनुं वचन सांभल्युं अण सांभल्या जेवुं करी दीधुं तेवारे बलभद्र बोल्यो केम यशोदा तुं म्हारा भाइनुं पालण पोषण करवाथी शुं राणी बनी बेठी? दासपणुं भूली गइ जे थकी म्हारी वातने गणकारी नही एवुं कहीने श्रीकृष्णने साथे लइ बलभद्र बोल्यो के चालो आपणे यमुनामांहेज स्नान करीशुं पछी मथुरामां जइशुं एम यशोदाने कडवां वचन बल भद्रें कह्यां तेथी श्रीकृष्ण नाराजी थयो तेवारे मार्गमां बलभद्रें छ भाइने मारवा आदिक कंस संबंधि सर्व वृत्तांत कह्युं तथा आपणे बे भाइनी माताउ जुदी जुदी छे परंतु बाप एकज छे तने कंसना भयने लीधे इहां श्रीगोकुलमां राख्यो छे ते वात सांभलीने श्रीकृष्ण बोल्यो के जो आजने आज हुं म्हारा छ भाइने मारवानुं वैर कंस पासेथी लेउं तोज हुं खरेखरो कृष्ण? एम कही मार्गें यमुना नदीमां स्नान करवा प्रवेश कर्यो तेवारे कालियह्रदनो काली नाग आव्यो तेने श्रीकृष्णें पकडीने नाक वींधी नाकमां कमलवेलथी नाथी तेना उपर चडी असवार थइने घोडानी पेठे दोडाव्यो आ वात लोकोये जइ मथुरामां एक बीजानी पासे करी कंसें पण लोकोना मुखथी सांभली जे आजे नंद गोवालीयाना पुत्रें कालिनागने दम्यो

एटलामांतो राम कृष्ण बेहु जाइ घणा गोवालीयाना वृंदे परवस्या थका नगरने बारणे आव्या तिहां चंपोत्तर अने पद्मोत्तर ए बे हाथीये तेमने रोक्या तेथी बधा गोवालीया मरवा लाग्या पछी बलजद्रें अने कृष्णें मली हाथीउना दंतोसल उखेडी नाखी हाथीउने उपाडी दूर फेकी दीधा तेथी हाथीउ मरण पाम्या पछी कृष्ण बलजद्र बेहु जण मल्लने अखाडे आव्या तिहां एक राजाने मंच उपरथी नीचे पटकीने ते मंच उपर बेठा त्यां बलजद्रें श्री कृष्णने पोतानुं सर्व कुटुंब बताव्युं वली कंस पण देखाड्यो अने कह्युं के ए कंस आपणोज छे परंतु दुष्ट छे एटलामां कंसें पण चाणूरमल्ल अने मुष्टिकमल्ल ए बे ने युद्ध करवा तयार कस्या अनुक्रमें कृष्णजीयें चाणूर मल्लने मास्यो अने बलजद्रें मुष्टिक मल्लने मारी नाख्यो ए रीते बेहु मल्लने मरण पामेला जोइ कंस क्रोध करीने बोल्यो अरे सुजटो जेणे ए बन्ने सर्पने पालण पोषण करी मह्योटा कस्या छे ते नंद अने यशोदाजी बेहुने बांधी पकडीने इहां लइ आवो एटले घाणीमां पीली नखावीये एवुं कंसनुं बोलवुं सांजली श्रीकृष्ण रोषारुण थया थका कूदको मारीने कंसने कहेवा लाग्या अरे दुष्ट मह्यारा छ जाइने तें मास्या छे तेनुं हुं वेर लेउं छुं एम कही कंसनी चोटली पकडी, नीचो नाखी देइ, मूकी मारी तेथी कंस मरण पामी नरके गयो यादवोये मली उग्रसेन राजाने पांजरामांथी बाहेर काहाडी छूटो करी सजामां लइ आवी बेसाड्यो, तेवारे लोकोये जाण्युं जे आ राम अने कृष्ण बेहु वसुदेवना पुत्र छे पछी उग्रसेन राजाये सोल वर्षनी उमरवाला श्रीकृष्णजीने त्रणसे वर्षनी उमरवाली सत्य जामाने परणावी दीधी हवे यादवोये जरासंधथी बीक पामीने जीवयशाने पूछ्युं के कंसने अग्निसंस्कार करीये ? तेवारे जीवयशा बोली राम कृष्ण तथा बीजा पण घणा यादवोनी

चित्र ६१









साथे कंसनें दाह देवाशे तमे जुउतो खरा शुं थाय छे? ते सांजली कृष्णजी बोल्या के अरे जारे शुं ताराथी थवानुं छे एवुं सांजली जीवयशा तिहांथी निकली परवारी राजगृहमां पोताना पिता पासे जइ उघाडे माथे रोवा लागी अने कह्युंके ताहारा जीवतां यादवोये ताहारा जमाइने मारी नाख्यो यादव घणा उन्मत्त थया छे ते सांजली जरासंध बोल्यो हे पुत्रि! तुं धीरज धर जे थवानुं हतुं ते थयुं हवे ए राम कृष्ण बेहु महारा अपराधी छे ते बेहुने आवी महारे स्वाधीन करी जाशे तोज यादवो महारा राजमां रही शकशे नहीकांतो हुं ए सर्व यादवोने मारी नाखीश एवी रीते जीवयशाने दिलासो आपी संतोषी पछी एक सोमनामा सामंतने यादवोनी पासे जरासंधें मोकल्यो ते यादवो पासे आवीने समुद्रविजय प्रमुख राजाउने कहेवा लाग्यो के हे यादवो! तमे महारी वात सांजलो के, जे थवावालुं हतुं ते थइ गयुं हवे मात्र एक राम अने बीजो कृष्ण ए बे गोवालीयाना छोकरा छे तेने बांधीने महारी साथे आपी जरासंध पासे मोकली आपो ए दासोने लीधे तमारा सर्व यादवकुलनो क्षय करावो नही, ते सांजली समुद्रविजय बोल्या अरे सोम! तुं समजतो नथी जे एवा गुणवान अने बलवंत पुत्रोने मरावबाने अर्थे अमे तुजने आपी दइये तो हवे अमे वृद्ध थया ते केटला एक काल पर्यंत जीवता रहीशुं माटे जे थवानुं हशे ते थशे अमे कांइ अमारा पुत्र आपीशुं नही वली बलजद्र बोल्या के अरे सोम तुं पिताउनी पासेथी पुत्रनें मागता लजातो नथी शुं? अरे हजीतो अमे अमारा एक जाइ मारवानुं कंस पासेथी वैर लीधुं छे परंतु पांच जाइ बीजा माखा छे तेनुं वैर लेवुं बाकी रह्युं छे माटे तुं जीववानी चाहना राखतो होयतो इहांथी चाल्यो जा नहीकां तने तो हमणाज फल देखाडीश एवुं सांजली सो

मनामा सामंत बीक पामीनें जरासंध पासे गयो पाछलथी यादवो जय पाम्या थका कोष्ठिक
निमित्तियाने पूछ्युं के अमारो जय क्यां थशे ते दिशा अमने बताव तेवारे निमित्तियो बोल्यो
तमारा कुलमां राम अने कृष्ण महापुरुषो छे वली नेमीश्वर जगवान तीर्थंकर छे माटे त
मारो कोइ रीते बिगाड थवानो नथी परंतु हाल तमे कृष्णनें राजा करीने पछी पश्चिमदिशायें
जाउ ते मार्गमां जतां जतां जे स्थानके सत्यजामा, पुत्रनुं जोडलुं प्रसवे ते स्थानके तमारे
रही जावुं तिहां तमारी वृद्धि थवावाली छे पण आही तमारे रहेवुं नही एवुं सांजलीनें
शौरीपुरथी समुद्रविजय प्रमुख अगीआर कुलकोटी यादव नीकल्या अनें मथुराथी उग्रसेन
प्रमुख सात कुलकोटी यादवो एकठा थइने सर्व कुटुंबसहित सोरठ देश तरफ चाल्या हवे
तिहां सोम नामा सामंतें राजगृह नगरे जइ राजा जरासंधने समाचार विदित कर्या जरा
संध पण सैन्य सज्ज करी यादवो उपर चडाइ करवा तयार थयो, ते वखत जरासंधनो पुत्र
कालकुमर बोल्यो के जो महारुं नाम काल छे तो हुं सर्व यादवोने कालरूप थइ मारी ना
खीश जो यादवो आकाशमां उंचा गया हशे तो नीसरणी मांडीने उपर आकाशमां जइ
यादवोनो नाश करीश अने जो यादवोयें जमीनमां प्रवेश कर्यो हशे तो जमीन खोदीने हुं
पण प्रवेश करी तेमने मारीश जो पाणीमां यादवोयें प्रवेश कर्यो हशे तो हुं पण पाणीमां
प्रवेश करी तेमने मारीश तथा जो अग्निमां यादवोयें प्रवेश कर्यो हशे तो हुं पण अग्निमां
प्रवेश करीने यादवोनो नाश करीश एवुं पण लइ पांचशे जाइयो सहित पिताने नमस्कार
करीने कालकुमरे यादवोनी पछवाडे चडाइ करी अने जीवयशाने पण जती वखते कहेवा
लाग्यो के महारा बनेवीजीनुं वैर यादवो पासेथी लउं तो महारुं नाम काल करी जाणजे

चित्र ६२



तेवारे जीवयशायें आशीर्वाद आप्यो अने कह्युं के भाइ ताहारुं मृत्यु थाय तो भले थाउ पण यादवोनो क्षय करजे ए रीतें जेम थवानुं छे तेम जीवयशाना मुखमांथी वचन पण नीकल्युं हवे पांचसो भाइउंसहित घणी ताकीदथी कालकुमर चल्यो ते चालतां चालतां जेवारे यादवोथी एक दिवसना मुकाम जेटले अंतरे आवी रह्यो एटलामां श्रीनेमीश्वर तीर्थंकर, कृष्ण वासुदेव, राम बलदेव बीजा पण वली तद्भव मोक्षगामी एवा घणा जनो यादवोंना परिवारमां छे तेमना पुण्यना योगें खेंची थकी यादवोनी कुलदेवी आवीने यादवोनुं मुकाम तथा कालकुमरनुं मुकाम जे जे स्थानके हतुं तेना वचला मध्यभागमां एक पर्वतनी रचना करी ते पर्वतना मार्गमां एक चिता सलगावी ते चितानी पासे वली एक डोशीनुं रूप करीने कुलदेवी रुदन करती थकी बेठी तेने कालकुमरें आवीने पूछ्युं के आ चितामां कोण बल्या छे अने तुं शावास्ते रुदन करे छे तेवारे कुलदेवी छल करी रोती थकी बोली के हे पुत्र! कालकुमरना भयने लीधे सर्व यादवोनुं कुंटुंब आ चितामां बली भस्म थइ गयुं छे कोइ पण यादव रह्यो नही माटे हुं तेमनी कुलदेवी छुं तो हवे मने कोण पूजशे ए कारण माटे मुजने बहु दुःख लाग्युं तेथी रुदन करुं छुं ते वात सांभली कालकुमर पोताना मुखें करेली प्रतिज्ञा राखवा माटें घणा सामंत तथा केटलाएक भाइयोसहित तरवार काहाडीने यादवोने मारवा सारुं अग्निमां पड्यो अने बली भस्म थइ गयो पछी प्रभाते बाकी रहेला जरासंधना लश्करमांहेला लोको देवमाया जाणीने पाछा फरी राजगृहे जइ जरासंधने सर्व वृत्तांत कह्युं हवे आंही सर्व यादवो मोज मजामां खुशी थया थका पश्चिम समुद्रना तट उपर आव्या तिहां सत्यभामायें भ्रमरनामा पुत्रनुं जोडुं जण्युं तेवारे नैमित्तिकना कहेवा प्रमाणे

यादवो सर्व तिहांज रह्या पछी कृष्ण महाराजें अठ्ठम तप करी सुस्थित नामा लवणाधिप देवनुं आराधन कर्युं तेथी देवता प्रत्यक्ष आवी ऊभो रह्यो तेनी पासेथी श्रीकृष्णे रहेवाने सारु जगा मागी तेवारे देवतायें कह्युं इंद्रमहाराजने पूछीने तमोने जगा आपीश एवुं कहीने सुस्थित देवता इंद्र महाराज पासे जइ सर्व वात कही इंद्रे धनद नामे भंडारीने मोकल्यो तेणे आवीने बार योजन लांबी अने नव योजन पोहोली एवी एक द्वारिका नगरी बनावी तेने फरतो अढार हाथ उंचो अने बार हाथ जाडो तथा नव हाथ पृथ्वीमां ऊंडो एवो सो नानो कोट बनाव्यो ते कोटने रत्नना कांगरायें करी शोभित कर्यो वली ते कोटनी चारे बाजु फरती खाइ करी तथा वाडी बाग बगीचाउ सहित एवो ते सुंदर कोट बनावी पछी धनदें ते द्वारिका नगरीमां श्रीकृष्णने वसवानी आज्ञा आपी ते नगरीमां एक सातभूमिवालुं कल्प वृक्षोनी वाडीसहित, एवुं घर श्रीकृष्णजीनें रहेवा सारु बनाव्युं वली ते घरनी एक बाजु समुद्रविजयादिक दश भाइउने माटे घरो बनाव्यां तथा ते श्रीकृष्णना घरनी बीजी बाजुमां वली उग्रसेननुं घर बनाव्युं तेनी बाजुमां वली बीजा सर्व भाइउना घर बनाव्यां ते सर्व घरो त्रण दिवस पर्यंत धन, धान्य, वस्त्र, घरेणा प्रमुख उत्तम वस्तुउथी भरीने श्रीकृष्णने स्वाधीन करी धनद देवता स्वर्गमां पोताने स्थानके गयो हवे सर्व यादवोये मली द्वारिका नगरीमां वास कर्यो तिहां यादवोना कुटुंबोनी वृद्धि थवा लागी ते अनुक्रमे पच्चाश वर्षनी मुदतमां अढार कुलकोडी यादवोमांथी वधीने छपन्न कुलकोडी यादवोनी वस्ती थइ एवा अवसरमां राजगृही नगरीमां कोइ रत्नकंबलना व्यापारीउयें आवीने एवी वात करी के आ नगरीमां कांइ माल नथी सत्वविनानी निर्धन लोकोये करी भरेली छे कारण के अमारा रत्न कंबलना



श्रीकृष्ण अने जरासंधनुं युद्ध

लेवावाला पण कोइ आवा शहेरमां निकल्या नही अनें द्वारिकामां यादवो वसें छे ते महा सुखी छे एवीरीतें द्वारिका नगरीनी प्रशंसा जरासंधें सांभलीने विचार्युं के महारा वैरी हजी लगण जीवता छे माटे हवे एनो नाश करु, एम चिंतवी सेना लइ युद्ध करवा चाल्यो एवामां नारद रूषीयें जइ श्रीकृष्णने कह्युं के तमारे चेतवुं होय तो चेतजो जरासंध तमारा उपर चडी आवें छे ते सांभली श्रीकृष्ण पण सेना तयार करी लडवाने तेनी सामे चाल्या तेणे पंचासरा गामनी पासे आवी पडाव दीधो मुकाम कर्युं अने जरासंधनुं लश्कर पण पंचा सरा गामथी चार योजन दूर आवी पोहोच्युं तेमां जरासंधनुं लश्कर चक्रव्यूहना न्यायथी अने श्रीकृष्णनुं लश्कर गरुडव्यूहना न्यायथी एवा आकारे आवी पडाव दीधो ते बेहु ल श्करने मांहोमांहे महोटुं युद्ध थयुं लाखो गमे सुभटो मरण पाम्या छे इत्यादि विशेष अधि कार श्रीनेमिनाथचरित्रादि अनेक ग्रंथोथी जाणी लेवो, आंही ग्रंथगौरवना भयथी लखता नथी हवे ते बेहु तरफवाला सुभटोनी लडाइ चालतां श्रीकृष्णने जीतवो आपणने कठण थइ पडशे एवुं जरासंधें विचारीने कोइ उपाय न सूजतां जरा नामें एक बाण हतो ते श्री कृष्णनी सेना उपर नाख्यो तेथी श्रीकृष्णनी सर्व सेना मुखें लोही वमती मूर्छा पामी गइ, तेवारे श्रीनेमिनाथजीना कहेवाथी श्रीकृष्णें अठ्ठम तप करी धरणेंद्रने आराध्यो धरणेंद्रें आ वीने आगामिक तीर्थंकर श्रीपार्श्वनाथजीनी प्रतिमा श्रीकृष्णने आपी तिहां मंगल निमित्तें श्री कृष्णजीयें सुस्थित देवें आपेलो शंख वजाव्यो अने धरणेंद्रें आपेला बिंबनुं स्थापन कर्युं तिहां श्रीशंखेश्वर एवे नामें तीर्थ थयुं ते आज लगण मोजुद छे कोइक आचार्य वली एम पण कहे छे के श्रीकृष्णजी त्रण दिवस उपवास करी बेठा ते त्रण दिवस पर्यंत श्रीनेमि

नाथ स्वामीयें संग्राम कर्यो वली इंद्र महाराजें मातली नामा सारथी सहित रथ मोकल्यो तेना उपर चढीने नेमिनाथजीयें शंख वजाव्यो तेथी जरासंधनी सेना शिथिल थइ गइ, अने त्रण दिवस श्रीशंखेश्वर पार्श्वनाथनी मूर्तिनो न्हवण पोतानी सेनामां श्रीकृष्णें छांट्युं तेथी श्रीकृष्णजीनी सेना सज्ज थइ छेवट कोइ पण रीतें श्रीकृष्णने जीतवानो उपाय जरासंधने सूज्यो नही तेवारे श्रीकृष्णने मारवा सारु जरासंधें पोतानुं चक्र तेना उपर चलाव्युं तेथी कांइ श्रीकृष्णनुं बगडयुं नही पण उलटुं ते चक्र श्रीकृष्णने त्रण प्रदक्षिणा आपीने तेमना हाथमां आवी बेठुं पछी तेज० चक्र लइ श्रीकृष्णें जरासंध उपर चलाव्युं तेणे जरासंधनुं मस्तक छेदी नाख्युं ते वखत देवताउ आकाशमां देवदुंदुभी वगाडीने बोल्या जे श्रीकृष्ण नवमो वासुदेव थयो, ते वात सांजली समस्त जरासंधनी सेना आवीने श्रीकृष्णजीनी सेवामां हाजर थइ पछी श्रीकृष्ण द्वारिकामां आव्या सुख समाधिमा त्रण खंडनुं राज्य जोगवता तिहां रह्या छे बहोतेर कुलकोडी यादव द्वारिकामां रहे छे अने साठ कुलकोडी यादवो द्वारिकानी बाहेर रहे छे तथा महापुरुष समुद्रविजयादिक दशे दसार तथा बलदेवादिक पांच महावीर एटले महोटा योधा, तेमज उग्रसेनादिक सोल हजार राजाउ तथा प्रद्युम्नादिक साडा त्रणक्रोड कुमर तथा सांबादिक सोल हजार दुर्दांत कुमर अने वीरसेन प्रमुख एकवीश हजार वीर तथा महासेनप्रमुख छपन्न हजार बलवंत राजाउ ए सर्व द्वारिकामां वसे छे. वली रुक्मिणीप्रमुख बत्रीश हजार राणीउ तथा अनंगसेना प्रमुख अनेक गणिकाउ एवा परिवार सहित परवर्यो थको महोटुं राज्य श्रीकृष्णजी करे छे. एवा अवसरमां इंद्रमहाराजें श्रीनेमिनाथजीना बलनी प्रशंसा करी तेवारें ते सजामां कोइ मिथ्यात्वी देव इंद्रमहाराजना वचनने

नही मानतो थको गिरनार पर्वत उपर आव्यो तेणें त्यां सुरंधरा नामें नवीन नगर वसाव्युं तेमां तें देवता पोते आवीने मनुष्यनुं रूप धारण करीने रह्यो अने द्वारिका नगरीना रहे नारा लोकोने नित्यप्रत्यें घणुंज दुःख देवा लाग्यो, उपद्रव करवा लाग्यो, ए वात सांजली ने महा अजिमाननो धरनार एवो अनाद्दष्टि ते देवने पकडवा सारुं गिरनारनी उपर ते देवें वसावेला नगरनी उपर चडी आव्यो, तेने देवतायें देव मायायें करी जीती लीधो अने बांधीने पोताना नगरमां लइ गयो, ए वात सांजलीने समुद्रविजयजी तेनी साथे लडवाने माटे जवाने तयार थया तेवारें राम कृष्ण बे जाइउए समुद्रविजयने वर्ज्यो, अने पोते लडाइ करवा सारु गया तेने पण देवतायें हरावीने पोतानां नगरमां लइ जइ बंदीखानामां नाखी दीधा, तेवारें द्वारिकामां हालकल्लोल थइ रह्यो अने लोको कहेवा लाग्या के राम कृष्ण बे जाइउ हारी गया तो हवे आपणी रक्षा कोण करी शकशे? त्यार पछी सत्यजामाजी प्रमुख स्त्रीउये जइ श्रीनेमनाथजीने कह्युं के तमे अनंत बली छतां तमारा जाइउने शत्रु दुःख आपे छे तो एथी तमारी लाज जाय छे तेवारे नेमीश्वर जगवान एकला रथमां बेशीने शत्रुना नगरने चारे बाजु रथ फेरव्यो तेथी कांगरासहित सर्वे कोट पडी गयो तेवारे देवें सिंह विकुर्व्या ते जोइ नेमिनाथें धनुष्यनो टंकारव करीने सर्व सिंहोने जगावी दीधा तेवारे देवतायें अंधकार करी मूक्यो, जगवाने उद्योतवालो बाण मूकीने अंधकारनो नाश कर्यो, तेवारें देवतायें मेघ वरसाव्यो, जगवाने वायरो चलावीने मेघने दूर कर्यो, तेवारे देवतायें अंगरानो वर्षाद वरसाव्यो, तेने जगवाने पाणीथी बूजावी नाख्यो, पछी जगवाने मोह बाण मूक्युं तेथी सर्व शत्रु मूर्छा खाइने पडी गया, महादुःखी थया, तेवारें इंद्रमहाराज तिहां आवीने विनं

ति करवा लाग्यो, के महाराज! ए अज्ञानी देव छे ते आपना अनंत बलने शुं जाणे? ते वारे भगवाने कृपा करीने देवताने छोडी मूक्यो पछी ते देवतायें महोटा महोत्सव सहित श्री कृष्णादिकने द्वारिकामां मोकली दीधा पोते भगवानने नमीने पोताने स्थानकें गयो. हवे अनुक्रमें श्रीनेमीश्वर भगवान त्रणसे वर्षना थया पण परणवानी इच्छा राखे नही तेवारे शिवादेवीजीये कह्युं के हे पुत्र! तुं एक विवाह करीने महारा मनोरथ पूरण कर तेवारे भगवान बोल्या हे माताजी! कोइ महारा योग्य कन्या हशे तो हुं परणीश ते वात सांभली माताजी मौन धारण करी रह्यां हवे श्रीसमुद्रविजयकुलसणगार, शिवादेवी मात मल्हार, एक दंमनेमि, बीजा दृढनेमि, त्रीजा अतिनेमि, चोथा अरिष्टनेमि अने पांचमा रहनेमि ए पांच कुमर मांहेला श्रीअरिष्टनेमि कुमर ते लघुवय सरखा सरखी जोडि, मनतणे कोडि, घणा कुमरे परवर्या लीलायें रमता भमता श्रीकृष्णनी आयुध शालायें आव्या, आयुध जोवा लाग्या, तेवारे रक्षपाल बोल्यो तमे लघु बालक छो, माटे अलगा रहो, एनो स्पर्श करवो पण दोहिलो छे, छोकरडे छाश न पीवाय, महोटुं कार्य ते महोटाथीज थाय, ते न सांभलतां श्रीअरिष्टनेमि कुमारें श्रीकृष्णना चक्रने उपाडी कुंभारना चक्रनी पेरे भमाव्युं तथा सारंग धनुष्य उपाडीने तेने कमलना नालनी पेरे नमाव्युं तथा कौमोदकी नामें गदाने लाकडीनी पेठे उपाडीने पोताना खांधा उपर राखी हवे जेवारे पांचजन्य शंख पूर्यो तेवारे तेनो शब्द सांभलीनें त्रण भुवन कंप्या, पर्वतना शृंग तूटी तूटीनें पडवा लाग्या, समुद्रजल उछलता हवा, हस्ती तुरंगमादिकना बंधन तूटी पड्या तेथी सर्व भागी गया, लोक सर्व बहेरा थइ गया, धरती धूजवा लागी, नगरनो कोट पण धूज्यो, समुद्र उछल्यो, दिग्गजत्रास पाम्या, यादव

चित्र ६४





सर्वे मूर्छागत जेवा थइ गया, सर्वे बीक पामवा लाग्या, श्रीकृष्ण, बलनद्र, कंपता हवा अने नयाकुल थया थका चिंतववा लाग्या जे आ ते कोण बलवंत छे? के जेणें सर्वे पृथ्वी क्षोन पमाडी एवी रीतें तेमने कांइ पण जंप न आव्यो, तेथी तरत तिहां आव्या अने पूछा करी, ते वारे सर्वे बोल्या जे श्रीअरिष्टनेमि कुमारनो ए बल छे, ते सांनली चमत्कार पाम्या पछी श्री कृष्णें कह्युं के हे नाइ! आपणे बलपरीक्षा करीयें, तो वंछित शीजे तेवारे नेमिकुमर बोल्या के जे नूमि लुंठनादिक बाह्य खेल करवुं, ते उत्तम नरने योग्य नही, माटे माहोमाहे एकेकनी नूजावालीने बलपरीक्षा करियें, ते वचन श्रीकृष्णे प्रमाण करी पोतानी नूजा लंबावीने कह्युं के, आ महारी बाहु नमाडो तेवारे नेमिकुमारें कमलनालनी पेरे एक आंगुलीयें श्रीकृष्णनी बाहु नमावी दीधी पछी श्रीनेमिकुमारें पोतानी बाहु लंबावी तिहां कृष्ण घणुं बल करी वान रनी पेरे वलगीने हिंच्या तेवारे श्रीनेमिकुमर बोल्या के हे कृष्णजी! तमोने माता देवकीयें पालणे पोढाडीने रमाड्या नही, ते माटे हवे हुं तमने हिंचोलुं, एम कहीने श्रीकृष्णने हिं मोलानी माफक हिंचोल्या एरीतें जेम जुगारी दाव हारे, तेम कृष्ण हारी गया एवुं जोइने बलनद्रजी बोल्या के हे नाइ नमरने नारे तरुशाखा नमे नही, पछी कृष्ण तथा बलनद्रजी चिंतातुर थका चिंतवे छे के ए पितराइ नाइ आपणाथी अधिक बलवान् छे माटे आपणुं सर्वे राज्य लइ मूकशे कीडी तीतर न्याय करशे एटलामां आकाशे देव वाणी थइ के अहो कृष्ण वासुदेव तमे चिंता म करशो एतो नेमीश्वर नगवान, बाल ब्रह्मचारी, बावीशमां तीर्थं कर एनुं अतुली बल छे तथापि तमारो राज्य लेवानी एने गरज नथी अने स्त्री परणवानी पण गरज नथी ए तो परण्या विनाज संसारनो त्याग करी दिक्षा लेशे. ए वचन सांनली

कृष्णजी हर्ष पामी पोताने घरे पोहोता हवे एक दिवस शिवादेवीजीये नेमिकुमरने निरागी
जाणीने गोपीयोने नलामण करी के तमे वसंत रमवाने माटे नेमीश्वरने तेडी जाउ अने एने
जेम तेम सरागी करी विवाह करवानो मनावो तेवारे सत्यभामाप्रमुख सोल हजार गो
पीयो मलीने श्रीनेमीश्वरने सहस्राम्र वनमां लइ जइ विचित्र प्रकारना वचनो कहेवा
लागी तिहां एक बोली तमे शामाटे परणता नथी तमारो भाइ श्रीकृष्ण सोल हजार स्त्रीयो
परण्यो छे अने तमे एक पण परणता नथी तेनुं कारण शुं? तेवारे बीजी बोली हे भला
पुरुष! आवी रीतें युवानपणुं कां फोकट गमावो छो, परणवामां घणी मजा छे, त्रीजी
बोली परण्याविना मोक्ष पण जइ शकशो नही, केमके ऋषभादिक तीर्थंकर पण सर्व परणीने
मोक्ष गया छे तो वली तमे ते कांइ नवा मोक्ष जवावाला थया छो, एक बोली एतो मोल्यो
थाशे परणीने शुं करशे, सत्यभामा बोली जो नही माने तो एनो पल्लो पकडो, तेवारे लक्ष्मणा
बोली ए पूज्य छे माटे एनी साथे जबराइ करवी नही, पण परणवुं तो अवश्य जोइयेज, वली
सत्यभामाजी बोली एनी पासे कांइ सामर्थ्य नथी कारणके जो स्त्री परणे तो तेने पालवानुं काम
मुश्केल छे ते एनाथी बनी शके नही तथापि जो परणी लेशे तो सोल हजारने एनो भाइ पाले
छे तेनी साथें एक एनी पण पालशे एवी वातो सांभलीने नेमिनाथजी कांइक हस्या तेवारे सर्व
गोपीयो तालोटा आपीने बोलवा लागी जे एणे विवाह मान्यो, मातापितायें पण जाण्युं
जे विवाह मान्य कर्यो एवुं समजीनें शिवादेवीना कहेवाथी श्रीकृष्ण तथा समुद्रविजयजी
प्रमुख राजायें उग्रसेन राजाने घरें जइने राजीमती कन्यानी मागणी करी तेणे पण खुसीथी
कह्युं के सुखेथी परणावो पछी बेहु जणाये विवाहनो महोत्सव थवा मांड्यो परणवा माटें



नेमीश्वर भगवान् वसंतक्रीडा करवा गया तेनुं चित्र.

शणगार कराववा लागा पण नेमजी विनयवान छे माटे मातापितानो हर्षभंग करवाना न यथी जो पण निस्पृही छे तोपण मौन धारण करी रह्या हवे जान निकली ते वखत अनेक यादवोना क्रोडो गमे मनुष्य साथे चाल्या, सर्व राजाउ साथे चाल्या, अनेक वाजां वाजतां, हाथी उपर बेठा, चमर ढलता, देवदेवी आकाशमां चालतां, स्त्रीयो पृथ्वी उपर गीत गाते थके चालता चालता उग्रसेनना महेल पासे जान आवी तेवारे नेमजी सारथीने पूछवा लाग्या के आ महेल कोनो छे, सारथी बोल्यो तमारा श्वसुरानो महेल छे, आंही विवाह मनाववा तथा जान संबंधि युक्ति बीजी प्रत उपरथी लखीयें छैयें. जेवारें वसंत मास आव्यो,तेवारे बत्रीश हजार राणी सहित श्रीकृष्ण वासुदेव श्रीनेमिकुमरने साथें लइ वसंतक्रीडा करवा वनमां आव्या तिहां स त्यभामादिक राणीयोनें नेमिकुमरने विवाह मनाववानो सन्कारी कृष्ण स्थानांतरे रह्या, हवे ते अनेक स्त्रीउ मली थकी श्रीनेमिकुमरने केसर, गुलाब प्रमुख सुगंध नीर छांटे, फूलनो दडो हृदयभणी नाखें, कटाक्ष बाणे वींधे, कामचेष्टापूर्वक जल छांटे, एम घणा प्रकारे हास्य करीने कहेवा लागी के हे देवर! बिवाह मानो अने एक स्त्रीतो परणो, जो स्त्रीनुं भरण पोषण तमाराथी न थाय तो तमारो भाइ बत्रीश हजार स्त्रीयोनो भरण पोषण करे छे, तेम तमारी एक स्त्रीनुं पण पोषण करशे ? तेनी चिंता करशों नही, पण स्त्री जरुर परणो, स्त्री विना पुरुष शोभे नही, कोइ विश्वास न करे, कोइ माने नही, वली अंगनी शुश्रूषा कोण करे, प्राहुणा प्रहीने कोण साचवे, ते माटे पाणिग्रहण अंगीकार करो, मन मानती कन्या वरो, ए विनंति मानो, वधे जेम वानो, नही तर पण नही छूटो, जोर करी जूगे, अमने वश आव्या आज, करवी हवे केही लाज. एवा वचन सांभली नेमीश्वर नीचुं जोइ रह्या, जे

ए स्त्रीउं साथे ते वली श्यो वचनविचार करवो एम चिंति हा ना कांइ न कही, तेंवारे स्त्रीउं कहेवालागी के मान्यो मान्यो विवाह, सहुने थयो उछाह, श्रीसमुद्रविजय शिवादेवी राणीने तिणीताल, आपें वधामणी उजमाल ॥ हवे श्रीकृष्ण नरिंद, मनने आणंद, उग्रसेन राजान, पासे बहुमान, मागे राजीमती कन्या, सतीशिरोमणि धन्या, उग्रसेन पत्नणे सघले साज, इहां आणो ते वरराज, तो देउं कन्या तास, जग विस्तरे जश वास ॥ हवे समुद्रविजय राजा, शिवादेवी राणी ज्योतषी कोष्टुकना मुखथी श्रावण सुदि बहनुं लगन जाणी, वांटे वधामणी, तेडावे सगासणीना जणी, मांमे मोहोटो आमंबर, धवल मंगल गाये घर घर, पोषे जल जले पकवान, जुगते चलावे जान ॥ तद्यथा ॥ शोल हजार मुकुटबद्ध छत्राधिपति राजान, बेतालीश लाख हस्ती ऐरावतसमान ॥ बेतालीश लाख घोडा, सुवर्ण साजतेने स जोडा ॥ बेतालीश लाख रथ, शोजा पामना·पथ, अडतालीश कोडी पायक, शत्रुदल घा यक, नव कोडी सामान्य तुरंगम, एक एकथी अनोपम ॥ बनु कोडी चिराकदार, नव कोडी बागलियादार ॥ बार कोडी वाजित्र वाजे, अंबर गाजे, सांबकुमरप्रमुख शाठ सहस्र दुर्दांत कुमर ते पारसीक जातिने घोडे चढया, प्रद्युम्नप्रमुख पंचोतेर सहस्र कुमर महाधीर ते हयरेवा जातिने अश्वे आरूढ थया, अरिमर्दनप्रमुख पांच लाख कुमर ते बहोली जा तिने अश्वे चढया, वीरप्रमुख सात लाख कुमर ते पाणी पंथा जातिने तुरंगे चढया, साग रचंद्रप्रमुख एक लाख कुमर ते कंबोजा जातिने अश्वे चढया, अनाहष्टिप्रमुख तेर लाख कुमर रेवाधिरूढ थया, पालकप्रमुख सात लाख कुमर अष्टमंगल जातिने अश्वे चढया, दं मनेमिप्रमुख बार लाख कुमर रेमंगर्ल। जातिने अश्वे चढया, रहनेमिप्रमुख नव लाख कु


चित्र ६६

नेमीश्वर भगवाननी जान

मर चंद्रप्रभा जातिने अश्वे चढ्या, महानेमिप्रमुख पन्नर लाख कुमर अग्नि पंथा जातिने अश्वे चढ्या, एवा यादव कुमर, भोगी भमर, जेह्ना जाणीता कुल, नालानुं बल, आगलथी चाले, थोडुं बोले, थोडुं ठाकुरने नमे, दर्शनीने नमे, परनारी सहोदर, वाचा अविचल, शरणागत साधार, सूर वीर दातार, फूंझार रणांगण धीर, रिपुकुदय [illegible] सीर, कसबोइ गरकाव, केशरीए पागे, लीधीए वागे, कांधाल, मूगाल, भलभला भूपाल. आवे उमह्यां, पंथे वह्यां, वली बे कोडी सेजवाला, चोराशी कोडी स्त्री गीत गान करे, छपन्न कोडी अलंब.धजा, बार कोडी भाट बिरुदावली बोले, बार कोडी सुखासन पालखी, पन्नर लाख खचर द्रव्ये भर्या, त्रण लाख श्रीछत्र, बेतालीश लाख रथ, त्रण कोडि चामर ढले, एंसी लाख नीसान वाजे, सत्तर लाख ढोल वाजे, छन्नु कोडी भेरी वाजे, नव लाख मादल वाजे, पीस्तालीश कोडी छडीदार, आठ कोडी सुरह्हीया, वडवडा वह्हीया, मंत्रीश्वर प्रधान, कहियें केता अभिधान, नवाणु कोडी सामान्य वहिल, थइ इम जाननी चहिल पहिल, हवे वर राजाने सवौंषधिनीरे कराव्युं स्नान, उजुआल्युं विशेषे वान, मातायें भालस्थले कीधो तिलक, अक्षतनो प्रतिष्ठयो उपर पदक, नव कोडीनो मुकुट, पञ्चाश कोडीनो नवग्रहो, बार कोडीना बे कुंडल, अडतालीश कोडीनुं रत्ने जडित तिलक, पच्चीश कोडीनी मुद्रिका, पच्चीश कोडीना अनेक रत्न जडित हार, बे लाख कोडीनी रत्नजडीत शांकली, जनोइनी पेरे पहेरे, पन्नर कोडीनी चंपकलि, देवदत्त अमुलिक पागडी, पच्चीश लाख कोडीनी कबाइ, एकाणुं कोडीना बे बहिरखां, पीस्तालीश कोडीना बे बाजुबंध, सत्तावीश लाखनो कणदोरो, पच्चीश कोडीनो रत्नजडित कणो, त्रीश कोडीनी वाणही पगरखां, छन्नु कोडीनो अनेकरत्नजडित श्रीफल रूप फूलदडो,

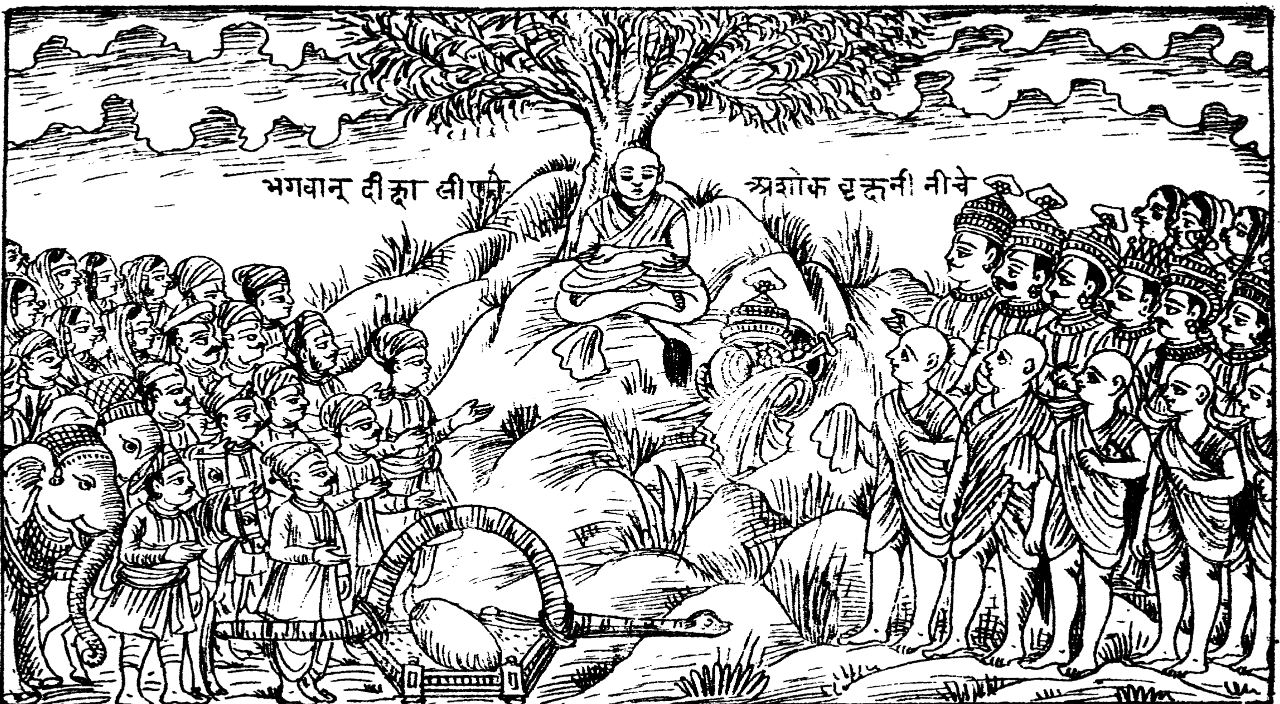
अमूलक वस्त्र पहेरावी, सकल सणगार करावी, आंख आंजी, मुख मांजी, सिर धाख्यो खूंप, शोने सुरूप, आव्यो गजराज, सुवर्णमय साज, मेघाडंबर छत्र, प्रतिष्ठ्यो पवित्र, चढ्यो वर राज, जाणे इंद्रमहाराज, के मूर्त्तिवंतो कामराज, शोना समाज, पसख्यो तूर्यमंगलनिनाद, गह गह्यो स्त्रीजनसाद, आकाशें अनेक देव देवांगना इंद्र इंद्राणी रंजा अपत्सरा आवे, मनने नावें, किन्नरी गीत गाये, सरस्वती वीणा वाये, तूंबर गंधर्व नाचे, सहु मन साचे, कृष्ण बल नद्र दशे दशार उमावे, जीर्ण दुर्ग नणी जान आवे, जेम ज्येष्ठमास उद्यान, साजन जनने अधिको मान, याचक जनने देतां दान, हुउ धवल मंगल उच्चार, आवीउ वर तोरण बार, जोये जोवणहार, धन्य धन्य राजीमती नार, जेणीयें वर लाधो श्रीनेमिकुमार, हवे राजीमती गवाक्षमां बेठी थकी सखीयोने कहे छे के महारो नर्त्तार कहेवो छे तेवारे सखीयो बोली आ हाथी उ पर बेठा थका महाऋद्धिसहित चाल्या आवे.छे ते नेमजी छे तेवारे प्रज्ञुनुं रूप देखी मोह पामीने विचारवा लागी के महारो महोटो नाग्योदय थयुं जे नेमजी जेवो वर आवीने मुने परणशे एम विचारती चंद्रानना, मृगलोचना सखीसहित वार्त्ता करतां सखीयें कह्युं के, ए वर सर्वगुणसंपूर्ण छे पण एक अवगुण ए छे जे एनुं श्यामवर्ण छे, वरतो गौरो जोइयें, राजीमती बोली एतो दूधमांहेथी पूरा काढवा मांड्या श्यामवस्तु मांहे तो घणो गुण छे, नमि, चित्रा वेली, अगर, कस्तूरी, मेघ. कीकी, केश, कशोटीनुं पाषाण, मसी, रात्रि, इत्यादिक वस्तु श्याम होय छे ते जगतमां नली कहेवाय छे तथा धोली वस्तु कपूर छे, तेने झरी अंगाराशुं मेल छे, चित्रा ने रोहिणी श्याम होय तो शोने, निःकेवल गौर तो लुण, अस्थि, हिम, स्वेत कुष्ठ, एमां हे शुं वखाणवा योग्य छे? श्यामले वर्णे वरप्रशंस्य देखी लोचन अमीय नराणी, हृदय



भोजन आपवा माटे एकठा करेला चतुष्पद जीवो तथा पांजरामां रहेला पक्षीओ तेमने भगवान् छूटा करी मूके छे.

कमल उल्लस्यां, मनना मनोरथ रूप वेली प्रसरति हवी ॥ ॥ एवामां राजीमतीनी ज मणी आंख फूरकी तेवारें शोच करवा लागी अने जाण्युं जे सर्वथा प्रज्ञुनो संयोग न मले, पछी सखी प्रत्ये कहेवा लागी के महारो जमणो अंग फूरके छे ते सांजली सखी बोली तुं मंगलमां अपमंगल कां बोले छे एवामां प्रज्ञुयें पण तोरणें आवतां थकां मार्गमां चतुष्पदा दिक जीवें जर्यां वाडा दीठां तथा पंखीयें जरेला पांजरा दीठां तथा घणा जलचर जीव पाणीविना उंचा उंचा कुदी रह्या छे तथा थलचरमां हरिण, सांबर, रोज, गेटा, मेंढा, ससला, प्रमुख अनेक जातिना जीव तथा खेचरमां कूर्कुट, तीतर, मोर, सारसना जोडला, राजहंस, कोयल, बगलां, सूडा, इत्यादिक जीवो एकठा कर्यां छे, तेनी पोकार सांजली तथा एवामां एक हरिण अने हरिणली कोटें कोट जरावी विलाप करतां प्रज्ञुने विनति करे छे के हे प्रज्ञु ! अमने आ कष्टमांहेथी उगार, अमे कांइ अपराध कीधो नथी, तृणखला मुखे दीये छैयें, हे अनाथ नाथ ! प्रज्ञु, राख राख. ते जोइ श्रीनेमिकुमरे हस्ति मावतकने पूछ्युं के ए जीवोने शे कारणे रों की राख्या छे, तेवारें मावत बोल्यो तुमारा विवाह गोरव जोजनार्थें राख्या छे ते सांजली प्रज्ञु बोल्या धिक् धिक् ए विवाहें सर्युं मने आ नरकना मूलरूप विवाह जोतो नथी प्रज्ञु दीनदयाल सर्व जीवायोनीने छोडावी हस्तिथकी उतरी रथें बेसी पाछा वल्या, तेवारें श्रीसमुद्रविजय राजा, शिवा देवी राणी, कृष्णवासुदेव, अने बलजद्रप्रमुख छप्पन्नकुलकोडि यादव रथ अटकाववाने आडा फर्या परंतु प्रज्ञु कोइना वार्या वल्या नहीं अने एवुं बोल्या के आ सर्व जीवो बंधनमां बांध्यां थका महाडुःख देखे छे तेम हुं बंधाउं नही अने संसारमां पण रहुं नही. हाथीउ वाघे जाल्या न जाय, तिहां जायरे जाय यादव राय ॥ एवी वार्त्ता सांजली रा

जीमती धरणी ढली पडी क्षण एकें सचेतन थइ तेवारें मुखथकी बोली के है है हे प्रज्जु तमें हर्षस्थानकें ए श्यो विषवाद उपजाव्यो? एम कहेती हार त्रोडती, वलय मोडती आज्ज रण जांजती, वस्त्र मांजती, किंकणीकलाप छोडती, मस्तक फोडती, कुंतलकलाप रोलती, जूमि लोटती, सांजन बाष्पजलें जूमि सींचती, सखीजन अपमानती, जेम थोडा पाणी मांहे माछली टलवले तेम विकल थाती, विरह्माती, क्षणे रोवे, क्षणे जोवे, क्षणे आक्रंद करे, क्षणे नीसास जरे, क्षणे मूंफे, क्षणे बूजे, क्षणे फूंजे, क्षणे न सूजे, वली अनेक उलंजा पूर्वक वचन कहे छे के हा यादवकुलदिनकर, हा करुणासागर, हे शरणागतवत्सल, हुं अबलाने एम एकली मूकवी तुमने न घटे, जो सर्वजग जीवनी दया पालो छो तो मुज उपर कां दया न आणी, माटे अरे निष्ठुर निर्लज्ज हैडा तने प्रज्जु मूकी गया तो हवे तुं शतखंम कां नथी थातो? हवे तुं श्यो लाहो लइश एवा राजीमतीना विलाप सांजली सखीवर्ग, सज्जनवर्ग, मातापितादिक कहेवा लाग्या के ए निस्पृहि शुं श्यो राग करवो तुं एटला विलाप शावास्ते करे छे तहारो कांइ विवाह थयो नथी माटे ए कालो कुरूपो वर गयो तो शुं थयुं ताहारे वली बीजो रूपवान वर मलशे माटे हवे अन्य उत्तम वर वरो तेवारें राजीमती बोली ए वचन सांजलवा योग्य नहिं, तमे एवा वचन मुजने म कहो, महारे तो श्रीनेमिनाथना चरणनुं शरण छे, काली तो कस्तुरी पण थाय छे ते गुणवान छे माटे तेनुं मूल्य घणुं थाय छे अने जे सपेत लसण थाय छे ते निरगुणी छे माटे तेनो कोइ जाव पण पूछतो नथी तो ए प्रज्जुजीयें मारो हाथ न साह्यो पण हुं एनो हाथ महारे माथे मूकावीश ए प्रज्जुने नामे हुं सौजाग्यवती छुं माटे जो एणे मुजने नही परणी तो हुं एनी चेली थइने एनी पछवाडे फरीश पण बीजो वर प



चित्र ६८

रणीश नही एम कही वली गिरनारजीने कहेवा लागी के हे गिरनार मुजने त्यागीने नेमजी जो ताहारी पासे आवे तो तुं एने पेसवा आपीश नही वली एवो उलंनो आपजे के तुं अबलाने दुःखणी करीने कां आव्यो अथवा राजलक्ष्मी छोडी दीधी तो जाण्युं जे एतो त्यागवावालानी रीती छे इत्यादिक विकल्प करती, शील पालती थकी पोताना पिताना घरमां रहे छे एवामां रथनेमि राजीमतीने कहेवा लाग्यो के नेमजीयें तुजने परणी नही अने हुं नेमजीनो नाइ छुं माटे हवे तुं मनेज परण तेवारे राजीमती बोली अरे वमेला आहारने खावानी तुं शुं चाहना राखे छे? हुं तो एक श्रीनेमीश्वर विना बीजानी चाहना करती नथी एवुं सांजली रथनेमि विलखो थइ बेशी रह्यो ॥ हवे अरिहंत श्रीअरिष्टनेमि तोरणथी पाछा फरी घरे आव्या बधा मली त्रणशे वर्ष कुमारावस्थायें घरमां रह्या पछी लोकांतिक देवो आवी बोल्या हे प्रजु! धर्म प्रवर्त्तावो नेमिनाथ स्वामीयें अवधि ज्ञानथी पोताने दीक्षानो अवसर जाणी वरसी दान देवा मांड्युं ॥ १७२ ॥ ॥ हवे आ वर्षाकालनो पहेलो महीनो, बीजुं पखवाडियुं, श्रावणशुदि छठने दिवसे पहेला पहोरथी पूर्वदिनमां अर्थात् मध्यान्ह पहेलां, उत्तर कुरानामा पालखीमां बेशी ते पालखी देव तथा मनुष्ये उपाडी यावत् द्वारिका नगरीनी वचमांथी थइने जिहां रेवत नामा उद्यान छे तिहां आवीने अशोक वृक्षनी नीचे पालखीमांथी उतरीने, पोताना हाथथी सर्व घरेणा अलंकार उतारीने, पांच मुष्टि लोच करीने, छठ नक्त पाणीरहित एटले चउविहारा बे उपवासे, चित्रा नक्षत्रे चंद्रमानो योग होते छते, एक देवदुष्य वस्त्र लइने एक हजार पुरुषोनी साथे दीक्षा लीधी, घर त्यागीने साधुपणुं अंगीकार कीधुं ॥१७३॥ ॥ अरिहंत अरिष्टनेमि चोपन रात्री सुधी काया वोसरावी यावत्

पंचावन्नमे दिन रात अंतरे वर्त्तमान जे वर्षाकालनो त्रीजो महिनो, पांचमुं पखवाडियुं, आशोजवदिनी अमावासने दिवसें पाछला पहोरमां, गिरनार पर्वत उपर, वेतस नामा वृक्षनी नीचे पाणी रहित अठमना तपमां चित्रा नक्षत्रें चंद्रमानो योग आवे छते शुक्लध्यान ध्यावता थका अनंतुं केवलज्ञान अने केवलदर्शन उत्पन्न थयुं, सर्वभाव जाणता देखता थका विचरे ॥ १७४ ॥ ॥ श्रीनेमिनाथ स्वामीने गिरनार पर्वतना सहस्राम्र वनमां केवलज्ञान उपनुं, देवे समवसरण रच्यो, वनपालकें आवी श्रीकृष्णनें वधामणी आपी, श्रीकृष्ण महोटी ऋद्धिसहित वांदवा आव्यो, राजीमतीपण वांदवा आवी, बीजापण घणा लोक वांदवा आव्या, भगवाननी देशना सुणीने वरदत्तनामा राजायें बे हजार पुरुषोनी साथे दीक्षा लीधी. हवे कृष्णजीयें पूछ्युं के हे स्वामी आपनी उपर राजीमती एटलो मोह केम राखे छे तेनुं कारण मने संभलावो, भगवान् बोल्या हे कृष्ण म्हारे एनी साथे पूर्वें आठ भवनो संबंध छे तेमां पहेले भवें हुं धननामे राजा हतो तेवारे ए म्हारी धनवती नामे राणी हती, बीजा भवमां बेहु जण पहेले देवलोके देवपणे उपन्यां, त्रीजे भवे देवलोकथी चवीने हुं चित्रगतिनामा विद्याधरराजा थयो तेवारे ए रत्नवती नामे म्हारी स्त्री थइ, चोथा भवमां बन्ने जण चोथे देवलोके गया, पांचमे भवें देवलोकथी चवी हुं अपराजित नामे राजा थयो तेवारे ए प्रियमती नामे म्हारी राणी थइ, छठे भवे बेहु जण अगीआरमे देवलोके देवता थयां, सातमा भवमां हुं शंखनामे राजा थयो तेवारे ए सोमवती एवे नामे, म्हारी राणी थइ, आठमे भवे अमे बेहु अपराजित नामा अनुत्तर विमाने देवतां पणे जइ उपन्यां तिहांथी चवीने नवमां भवमां हुं नेमि थयो अने ए राजीमती थइ ए रीते नव भव संबंधि वार्त्ता कही संभलावीने भगवाने ति



गिरनार पर्वतउपर एक गुफामां रहनेमी साधु काउस्सग करेछे. अने तेज गुफामां राजीमतीजी नग्न थईने पोताना वस्त्र सूकावेछे.

हांथी विहार कस्यो अने श्रीकृष्णादिक तथा राजीमतीप्रमुख वृत्तांत सांभली द्वारिकांयें गयां, पछी वली एकदा श्रीनेमिनाथजी गिरनारें आवी समोसस्या तेवारें राजीमतीयें बीजी घणी राजकन्याउनी सांथें दीक्षा लीधी अने रथनेमीयें पण दीक्षा लीधी, हवे एक दिवस राजीमती जीने गिरनार पर्वत उपर भगवानने वांदवा जतां मार्गमां वर्षाद वर्ष्यो तेथी राजीमतीना वस्त्र भीजाइ गयां तेने सूकाववा सारुं एक गुफामां प्रवेश कस्यो तेज गुफामां आगलथी रथनेमि काउसग्ग ध्याने रहेलो छे तेनी कांइ राजीमतीने खबर हती नही तेथी राजीमतीयें ते गुफा मांहे पोताना भीजेला सर्व वस्त्र उतारी नाखीने सूकववा मूक्यां तिहां राजीमतीने नंग्न देखीने रथनेमीनुं मन चलायमान थयुं अने कामे पीड्यो थको लज्जानो त्याग करी बोलवा लाग्यो के हे राजीमती ! तमे शा वास्ते तपश्या करीने नकामां शरीरने शोषवो छो आवोनी म्हारी पासें आपणे बेहु जण विषयसुख भोगवीयें हमणा युवान अवस्थामां तप करवानो अवसर नथी फरी वृद्धावस्थायें दीक्षा लइशुं अकस्मात् ए वचन सांभली, अंगोपांग संवरी, धैर्य धरी, दृढता धारण करीने, राजीमती बोली के अरे तने धिक्कार पडो जे तुं दीक्षा ग्रहण करीने एवी वात करे छे ? अरे समुद्रविजयराजाना पुत्रें सर्व सावद्य व्यापार त्यागी साधुपणुं आदस्युं तेणे मुजने वमी छे माटे जे अगंधकूलना सर्प छे ते जो पण तिर्यंच जातीना छे तो पण ते वमेला वस्तुने वांछता नथी तो तुं शुं ते तिर्यंचथी पण नीच थाय छे जेमाटे वमेली वस्तुने भोगववा वांछे छे वमेली वस्तुने तो श्वानादिक वांछे छे माटे तुं तहारुं मन ठेकाणे राख हुं कोइ रीते तहारे हाथ आववानी नथी अरे तुं भोग त्यागीने फरी नरकें जवानी अभिलाषा शामाटे करे छे तो हे महानुभाव ए पापनी आलोवणा लइ फरी संयमनो उच्चार कर

नहींकां डुर्गतिमां पडीश इत्यादिक वचन रूप अंकुशे करी हस्तिनी पेरे रथनेमीने स्थिर कीधो पडी रथनेमी पण पापनी आलोचना लइ खमावी संयमने विषे स्थिर थइ केवलज्ञान पामी अनुक्रमें मोक्ष पोहोतो ॥ ॥ हवे श्रीनेमीश्वर जगवानथी राजीमतीजी आठ वर्ष उमरमां न्हाना हतां एवुं कोइक आचार्य कहे डे तथा राजीमतीजी चारसें वर्ष पर्यंत घरवासें रह्यां वली एक वर्ष पर्यंत बद्मस्थपणे रह्यां अने पांचशो वर्ष केवल पर्याय पाली सर्व मली (ए०१) वर्षनुं आयुष्य जोगवीने श्रीनेमिनाथजीनी पहेलां मोक्ष गया इहां कवि उत्प्रेक्षा करे डे के राजीमतीजीयें एवुं जाणुं जे शिवनारी जे मोक्षरूपिणी स्त्री डे तेने महाराथी अधिक रूपवती जाणीने तेना उपर नेमीश्वरजी मोहित थया डे तो हुं पहेलाथीज ते स्त्रीने देखी तो लेउं एटले मुक्तिरूप स्त्रीयें राजीमतीना जर्त्तारनुं मन वश कीधुं माटे ते पोतानी शोकने जोवा सारुं राजीमतीजी पण क्षपकश्रेणी साधि, कर्म खपावी पोताना जर्त्तारनी पहेलांज मुक्तियें गइ इति ॥ ॥ श्रीअरिष्टनेमि जगवानने अढार गड अने अढार गणधर थया ॥ १७५ ॥ वली वरदत्त आदे देइने अढार हजार साधुउनी संपदा थइ ॥ १७६ ॥ ॥ तथा गुणरूप मणिरत्नना जंमार जेवी यक्षणीप्रमुख चालीश हजार साध्वीउनी संपदा थइ ॥ १७७ ॥ वली नंदीषेण आदे देइने एक लाख उगणोतेर हजार श्रमणोपासक व्रतना धरनार श्रावकोनी संपदा थइ ॥ १७८ ॥ ॥ तथा महासुव्रताप्रमुख त्रण लाखने बत्रीश हजार श्राविकाउनी संपदा थइ ॥ १७९ ॥ ॥ वली चारशे साधु चौद पूर्वधर ते जिन नहीं पण जिन सरखा एवा सर्व अक्षरानुयोगना जाणनी संपदा थइ ॥ १८० ॥ ॥ तथा पन्नरशे साधु अवधि ज्ञानीनी संपदा थइ तथा पन्नरशे साधु वैक्रिय लब्धिना धरनारनी संपदा

थइ तथा पन्नरशे केवलज्ञानी केवलीनी संपदा थइ तथा एक हजार साधु विपुलमतीना धणी मनःपर्यव ज्ञानीनी संपदा थइ तथा आठशे वादी साधुउनी संपदा थइ तथा शोलशे साधु पांच अनुत्तर विमाने पोहोता, पंदरशे साधु नगवंत थका सिद्धि पाम्या तथा त्रण हजार आर्यिका एटले साध्वीउ नगवंत थका मोक्षे गइ सिद्धि पामी ॥ १७१ ॥ ॥ ए रीते श्रीनेमीश्वर नगवाननो परिवार जाणवो, अने राजीमती पण प्रनुने हाथे संयम ग्रहण करी प्रधान मोक्षप्रत्यें पामी ॥ अरिहंत श्रीअरिष्टनेमिने बे प्रकारनी अंतगड नूमि थइ तेमां आठ पाट पर्यंत मोक्षमार्गे चाल्यो ते युगंतकृतनूमि जाणवी तथा नगवानने केवलज्ञान उपना पछी बे वर्षे कोइक साधु सिद्ध थयो ते पर्याय अंतकृत नूमि जाणवी ॥ १७२ ॥ ॥ ते कालने विषे ते समयने विषे श्रीअरिष्टनेमि नगवान त्रणशे वर्ष गृहस्थावासे कुमारावस्थायें रह्या, चोपन्न दिवस छद्मस्थ पर्यायें दिक्षा पाली अने चोपन्न दिवसे ऊणा सातशे वर्ष केवल पर्याय पाल्युं एटले सातसे वर्ष साधुपणे रह्या एम सर्व मली एक हजार वर्षनुं पूर्ण आयु नोगवीने शेष रहेलां चार कर्म खपावीने आ अवसर्प्पिणीनो डुसम सुसमा नामे चोथो आरो ते घणो वीत्यो अने थोडो रह्यो ते वखतमां गिरनार पर्वतने विषे, उनालानो चोथो, मास आठमो पक्ष, आषाढ शुदि अष्टमीने दिवसे गिरनार पर्वत उपरे मध्यरात्रियें, चित्रा नक्षत्रें चंद्रमानो योग आवे थके, पांचशे ने छत्रीश साधुउनी साथे, एक मासनुं चउविहारो पाणी रहित अनशन कीधे छते, पद्मासने बेठा थका कालधर्म पाम्या ॥ ग्रंथाग्रंथ ॥ ८०७ ॥ यावत् सर्व डुःख थकी रहित थया ॥ १७३ ॥ ॥ श्रीपार्श्वनाथ नगवानथी त्र्याशी हजार सातशेने पच्चाश वर्ष पूर्वे ए श्रीनेमिनाथ नगवान थया एटले श्रीअरिष्टनेमि नगवान मोक्ष पोहोता

पढी चोराशी हजार नवशे नेएंसी वर्षें पुस्तक लखाणुं वांचना थइ ॥ १७४ ॥ ॥ इति श्रीनेमिनाथ अधिकार ॥ ॥ हवे सर्व तीर्थंकरोना वखाण कहेतां ग्रंथ वधे माटे आंही एकवीशमा तीर्थंकरथी आंतरानो अधिकारज कहियें ठेयें. एकवीशमा श्रीनमिनाथ जगवान निरवाण थया पढी पांच लाख वर्ष गये थके बावीशमा श्रीनेमिनाथजी निर्वाण थया अने नेमिनाथजीथी ८४९८० वर्षें पुस्तक लखाणुं ॥१७५॥ ॥ वीशमा श्रीमुनिसुव्रत स्वामी मोक्ष गया पढी ढ लाख वर्षें एकवीशमा श्रीनमिनाथजी मोक्ष गया ते पढी ५८४९८० वर्षें पुस्तक लखाणुं ॥ १७६ ॥ ॥ उंगणीशमा श्रीमल्लिनाथ मोक्ष गया पढी चोपन्न लाख वर्षें वीशमा श्रीमुनिसुव्रत स्वामी मोक्ष गया ते पढी ११८४९८० वर्षें पुस्तक लख्युं ॥१७७॥ ॥ अढारमा श्रीअरनाथ मोक्ष गया पढी एक हजार कोडी वर्षें उंगणीशमां श्रीमल्लिनाथ स्वामी मोक्ष गया ते पढी ६५८४९८० वर्षें पुस्तक लखाणुं ॥१७८॥ ॥ सत्तरमा श्रीकुंथुनाथ मोक्ष गया पढी एक हजार कोडी वर्षें न्यून एक पल्योपमनो चोथो जाग एटला वर्षें अढारमा श्री अरनाथ मोक्ष गया ते पढी एक हजारक्रोड उपर पांशठ लाख चोरासी हजार नवशेने एंसी वर्षें पुस्तक लखाणुं ॥ १७९ ॥ ॥ शोलमा श्रीशांतिनाथजी मोक्ष गया पढी अर्द्धा पल्योपमें श्री कुंथुनाथ मोक्ष गया ते पढी एक पल्योपमना चोथा जागनी उपर पांसठ लाख चोरासी हजार नवसेने एंसी वर्षें पुस्तक लख्युं ॥ १८० ॥ ॥ पन्नरमा श्रीधर्मनाथ मोक्ष गया पढी पोणा पल्योपमे उंठा त्रण सागरोपम गये श्रीशांतिनाथजी मोक्ष गया ते पढी पोणा पल्योपम उपर ६५८४९८० वर्षें पुस्तक लख्युं ॥ १८१ ॥ ॥ चौदमा श्रीअनंतनाथजी मोक्ष गया पढी चार सागरोपम गये थके श्रीधर्मनाथजी मोक्ष गया ते पढी त्रण सागरोपम ६५८४९८०

वर्षे पुस्तक लखाणुं ॥ १९२ ॥ ॥ तेरमा श्रीविमलनाथजी मोक्ष गया पछी नव सागरोपम गये थके श्रीअनंत नाथजी मोक्ष गया ते पछी सात सागरोपम उपर ९५८४९८० वर्षे पुस्तक लखाणुं ॥ १९३ ॥ ॥ बारमा श्रीवासुपूज्य स्वामी मोक्ष गया पछी त्रीश सागरोपम गये थके श्रीविमलनाथ मोक्ष गया ते पछी शोल सोगरोपम उपर ९५८४९८० वर्षे पुस्तक लख्युं ॥ १९४ ॥ ॥ अगीयारमा श्रीश्रेयांसनाथ निरवाण थया पछी चोपन सागरोपम गये थके श्रीवासुपूज्य स्वामी मोक्ष गया ते पछी छेतालीश सागरोपम उपर ९५८४९८० वर्षे पुस्तक लख्युं ॥ १९५ ॥ ॥ दशमा श्रीशीतलनाथजी मोक्ष गया पछी एकसो सागरोपम तथा छासठ लाख छवीस हजार वर्ष उपर एटला वर्ष एक क्रोड सागरोपममांथी उंछा करीयें तेटला वर्षे एटले एक क्रोड सागरोपममांथी एकशो सागरोपम उंछा करीयें तथा वली छासठ लाखने छवीश हजार वर्ष बीजा पण उंछा करीयें बाकी जेटला वर्ष रहे तेटले वर्षे श्रीश्रेयांसजी निरवाण पाम्या अने ते पछी बेतालीश हजार त्रण वर्षने साडा आठ महिने न्यून एवा छाशठ लाख छवीश हजार वर्षे अधिक एकशो सागरोपम गये थके श्रीमहावीर स्वामी मोक्ष गया, तेवार पछी नवशोने एंसी वर्षे पुस्तक लख्युं ॥ १९६ ॥ ॥ नवमा श्रीसुविधिनाथ मोक्ष गया पछी नवकोडी सागरोपम गया थका श्रीशीतलनाथ मोक्ष गया छे तेवार पछी बेतालीश हजारने त्रण वर्ष तथा उपर साडा आठ महिना एटले वर्षे न्यून एक कोडी सागरोपम गये थके श्रीवीर निरवाण थया तेवार पछी नवशोनें एंशी वर्षे पुस्तकारूढ थयो ॥ १९७ ॥ ॥ आठमा श्रीचंद्रप्रभ स्वामी मोक्ष गया पछी नेवु कोडी सागरोपम गये थके श्रीसुविधिनाथजी मोक्ष पाम्या ते पछी बेंतालीश हजार त्रण वर्षने साडा आठ महिने

न्यून दश कोडी सागरोपम गये थके श्रीवीर निरवाण पाम्या ते पछी नवसेंने एंशी वर्षे पुस्तकारूढ थयो ॥ १९८ ॥ सातमा श्रीसुपार्श्वनाथ मोक्ष गया पछी नवमें क्रोड सागरोपम गये थके श्रीचंद्रप्रभ स्वामी मोक्ष गया ते पछी बेंतालीश हजार उपर त्रण वर्षने साडा आठ महीना एटले वर्षे न्यून एकसो क्रोड सागरोपमे श्रीवीरप्रभु निरवाण पाम्या ते पछी नवसेंने एंशी वर्षे पुस्तक लिख्युं ॥ १९९ ॥ छठा श्रीपद्मप्रभजी मोक्ष गया पछी नव हजार क्रोड सागरोपमें श्रीसुपार्श्वनाथ मोक्ष गया ते पछी बेतालीश हजार त्रण वर्ष उपर साडा आठ महीना एटले वर्षे उणा एक हजार क्रोड सागरोपम गये थके श्रीवीरप्रभु मोक्ष गया ते पछी नवसेंने एंशी वर्षे पुस्तकारूढ थयो ॥ २०० ॥ पांचमा श्रीसुमतिनाथजी निरवाण पाम्या पछी नेवु हजार क्रोड सागरोपम गये थके श्रीपद्मप्रभ स्वामी निरवाण पाम्या ते पछी बेंतालीश हजार त्रण वर्षने उपर साडा आठ महीना एटले वर्षे उणा दस हजार क्रोड सागरोपम काल गये थके श्रीमहावीर स्वामी मोक्ष गया ते पछी नवसेने एंसी वर्षे पुस्तक लिख्युं ॥ २०१ ॥ चोथा श्रीअभिनंदनजिन मोक्ष गया पछी नवलाख क्रोड सागरोपम काल गये थके श्रीसुमतिजिन निरवाण थया ते पछी बेंतालीश हजार त्रण वर्षने साडा आठ महीना उपर एटला वर्षे न्यून एक लाख क्रोड सागरोपम काल गये थके श्रीमहावीरजीनुं निर्वाण थयुं ते पछी नवसेंने एंसी वर्षे पुस्तकारूढ थयो ॥ २०२ ॥ त्रीजा श्रीसंभवनाथजी निर्वाण पाम्या पछी दश लाख क्रोड सागरोपम गये थके श्रीअभिनंदनजिन निर्वाण थया ते पछी बेंतालीश हजार त्रण वर्ष उपर साडा आठ महिना एटले वर्षे न्यून दश लाख क्रोड सागरोपम गये श्रीवीर निरवाण पाम्या ते पछी नवसेंने एंसी वर्षे पुस्तक लख्युं ॥ २०३ ॥ बीजा श्री

अजितनाथ जिन मोक्ष गया पछी त्रीश लाख क्रोड सागरोपम गये थके श्रीसंभवनाथजी मोक्ष गया ते पछी बेंतालीश हजार त्रण वर्षने साडा आठ महीने न्यून वीश लाख क्रोड सागरोपम गये थके श्रीवीरजिन मोक्ष गया ते पछी नवसेंने एंशी वर्षे पुस्तकारूढ थयो ॥ ॥ २०४ ॥ पहेला श्रीऋषभदेव भगवान मोक्ष पाम्या पछी पचास लाख कोडी सागरोपम गये थके श्रीअजितनाथ भगवान निरवाण पाम्या ते पछी बेतालीश हजार त्रण वर्ष उपर साडा आठ महीना एटला वर्षे न्यून पच्चाश लाख क्रोड सागरोपम गये थके श्रीवीरप्रभु निर्वाण पाम्या ते पछी नवसेंने एंसी वर्षे पुस्तकारूढ थयो ॥ ॥ ए श्रीमहावीर प्रभुना निरवाणथी लइने पश्चानुपूर्वीयें आंतरा कह्या हवे चोथो, पांचमो अने छठो ए त्रणे आरानुं प्रमाण एक कोडाकोडी सागरोपमनुं छे तेमां बेंतालीश हजार पचोतेर वर्षनी उपर साडा आठ महीना एटला वर्ष उणां करीयें तेवारे चोवीशमां तीर्थंकर श्रीमहावीरजिननो जन्म थयो तेमां बहोंत्तर वर्ष श्रीमहावीर स्वामीनुं आयुष्य हतुं अने चोथा आरानां त्रण वर्षने साढा आठ महीना शेष रह्या तेवारें श्रीवीर निरवाण थया तथा एकवीश हजार वर्षनुं कालमान पांचमा आरानुं जाणवुं अने एकवीश हजार वर्षनुं कालमान छठा आरानुं जाणवुं ए सर्वनो सरवालो करीयें तेवारें एक कोडाकोडी सागरोपम पूर्ण थाय ॥ ॥ इति श्रीकल्पव्याख्यानाधिकारे सप्तमं व्याख्यानं संपूर्णं ॥ ॥ अथ अष्टम व्याख्यान प्रारंभः ॥ एमां श्रीआदिनाथ भगवाननुं चरित्र कहेवाय छे ॥ ते कालनेविषे ते समयनेविषे श्रीऋषभनाथ अरिहंत अयोध्या नगरीमां थया तेने लीधे एमने कौशलिक कहियें तेमना चार कल्याणक तो उत्तराषाढा नक्षत्रमां थया अने पांचमो कल्याणक अभिच नक्षत्रमां थयो छे ॥ २०५ ॥ ॥ उत्तराषाढा नक्

त्रमां देवलोकथी चवीने गर्नमां आवी उपन्या छे, उत्तराषाढामां जन्म थयो छे, उत्तराषाढामां दीक्षा लीधी छे अने उत्तराषाढामां केवल ज्ञान उपन्युं छे तथा अनिच नक्षत्रमां मोक्ष गया छे ॥ २०६ ॥ ॥ हवे प्रथम श्रीरूषननदेवजीना तेर नव कहेवाने अर्थें गाथा कहे छे ॥ धण मिहुण सुर महब्बल, ललियंगो वयरजंघ मिहुणेय ॥ सोहम्म विद्य अच्चु, चक्की सव्वठ उसनेय ॥ १ ॥ ॥ अर्थः—पहेले नवें आ जंबूद्वीपने विषे महाविदेह क्षेत्रमां सुप्रतिष्ठित नामा नगरें प्रियंकर नामा राजा राज्य करे छे ते नगरमां महोटो धनाढ्य धन्नो एवे नामें एक सार्थवाह रहे छे एकदा ते धन्नो सार्थवाह वसंतपुर नगरे जवाने तयार थयो तेवारें नगरमां पडहो वजडाव्यो के जो कोइने वसंतपुर नगरे जावुं होय तो तेणे महारी साथे आववुं तेनो हुं निरवाह करीश एवो पडह सांनली घणा लोक तेनी साथे जवाने एकगं थयां, महोटो सथवारो थयो. हवे ते नगरमां श्रीधर्मघोष सूरि पांचसें साधु साथे रहेला हता तेमने पण यात्राने अर्थें वसंतपुर जवानी इछा थइ तेथी धन्ना सार्थवाहनी पासें आवीने धर्मलान आपी बोल्या के हे सार्थवाह जो तमारी आज्ञा होय तो अमे पण वसंतपुर जवाने अर्थें साथे आवीयें तेवारें धन्नो बोल्यो के हे स्वामी सुखेथी महारी साथे पधारो तेवारें आचार्य पण तेनी साथे चाल्या, हवे मार्गें जतां एकदिवसें शेठने आंबानुं नेटणुं आव्युं ते साधुने आपवा मांड्युं पण साधुयें सचेत जाणी लीधुं नही. हवे सथवारो हलवे हलवे धीमे धीमे थोडा थोडा कोश दररोज चाल्यो जाय छे तेथी मार्गमांज चोमासुं आवी गयुं वर्षाद घणो वर्ष्यो, नदीउ आवीगइ तेने लीधे पंथिजनोने चालवानो मार्ग रोकाइ गयो हरिप्रमुख जीवोनी उत्पत्ति थइ, कादव पण घणो थयो तेथी लोक चाली शके नही तेवारे सथवारो एकगो थइ तंबुडेरा आपीने जंगलमांज

रह्यो अने धर्मघोष आचार्य पण एक पर्वतनी गुफामां निरवद्य स्थानक देखीने पांचसें साधु सहित मासखमणनी तपस्या करी चोमासुं रह्या थका धर्मध्यान करवा प्रवर्त्त थया, एम करतां सथवाराना लोको पासे संबल खुटी पड्युं माटे सर्वलोक कंदमूलफलादिक नो आहार करीने दिवस निर्गमन करवा लाग्या तेथी साधुउने पण पारणें शुद्धमान आ हार मले नही एम करतां केटलाक दिवस पछी तिहां एक जाट आव्यो ते शेठने खुशी क रवा माटे सुजाषित कहीने बोल्यो के हे शेठ ! महोटा पुरुष जे वात अंगीकार करे ते पार पाडे पण अधवच मूकी आपे नही ए वात सांजलीने शेठे धर्मघोष सूरीने याद कर्युं अने मनमां विचारवा लाग्यो के अरे महारा कहेवा उपरथी साधुउ महारी साथें आव्या अने में तो एक दिवस पण तेमनी सारसंजाल कीधी नथी माटे तेउनो विश्वासघाती हुं थयो तो हवे प्रजातें एमनी पासें जइने खमत खामणा करुं एम चिंतवी प्रजातें आचार्य पासे जइ वंदना करीने लज्जाथी पोतानुं मुख नीचुं करी बेठो अने विनंति करवा लागो जे हे स्वामी ! म हारो अपराध तमे खमजो में आपनी कोइ वखते पण निगाह करी नथी हे महाराज ! लोकनुं सर्व संबल क्षीण थयुं छे आपमुजने कांइ आज्ञा करो, हुकुम फरमावो. तेवारें आचार्य बोल्या हे सार्थेश ! अमारा माटे तमे कांइ पण चिंता करशो नही, अमारे तो सुखे धर्मध्यान थाय छे, तमारा साथना योगे अमे घणी अटवी उलंघन करी तेमां तमे अमारी महोटी वात्सल्यता करी एवुं सांजली धनो शेठ खुशी थयो अने सर्व साधुउने आहारनी निमंत्रणा करी सथवारामां लइ आव्यो पछी पोतानी पासे शुद्ध आहार घृतना कूंपा हता ते साधु उने घणाज उलटथी वहोरावतां थका अत्यंत जावनी वृद्धि थवा मांडी तेथी समकेत पाम्यो

अहीं घणा आचार्यो कहे छे के पांचशे कूंपा घृतना वहोरावी दीधा पछी वळी जाएयुं जे हवे तो घणुं देवाणुं एवी रीतें शेठना परिणाम घटता देखीने मुनिउंये कह्युं के हे महानुनाव ! हवे अमारे खप नथी, परंतु जो थोडीक वार हजीपण शेठनो नाव वधतो रह्यो हत तो केवळ ज्ञान उपजी जात पण पाछा परिणाम घटवाने योगे केवळ उपन्युं नही परंतु समकेतथी पोतानो आत्मा निर्मळ कर्यो पछी वर्षाकाळ वीत्याबाद वसंतपुरें आव्या, धर्मघोष आचार्य पण सार्थवाहने धर्मलान देइने तीर्थयात्रा करवा गया धनो पण घणा दिवस समकेत पाळी अंते शुनध्याने मरण पाम्यो ए पहेलो नव ॥१॥ ॥ हवे बीजा नवमां उत्तरकुरुक्षेत्रें जइ युगलीयामां उपन्यो तिहां त्रएय पल्योपमनुं आयुष्य नोगवी मरण पाम्यो ए बीजो नव ॥२॥ त्रीजे नवें सौधर्म देवलोके देवता थयो ए त्रीजो नव ॥३॥ ॥ चोथे नवें देवलोकथी चवीने पश्चिम महाविदेहें गंधिलावति विजयें शीतबल राजानी चंद्रकांता राणीना महाबलनामा पुत्र थया, परंतु महा विषयलोलुपी नोगपुरंदर थया विनयवती प्रमुख घणी राणीयो छे, तेमनी साथें विषयसुख नोगववामां मग्न रहे छे, धर्मनी वात न जाणे, सर्वदा गीत, गान, तान, मान, अने नाटकने प्रियकारी जाणे छे एम महामोहनी निद्रामां काळ गमावतां एक दिवस नाटकादिक थाय छे ते देखे छे, गीतमां एक चित्त लागी रह्युं छे, ते वखतें सुबुद्धिनामा प्रधानें राजाने प्रतिबोधवा सारुं एक गाथा कही ते आवी रीतें "सव्वं विलवियं गीअं, सव्वं नट्टं विडंबणा॥ सव्वे आनरणा नारा, सव्वे कामा डुहावहा ॥ १ ॥ ॥ अर्थः—ए सर्व गीत जे छे ते विलोपात करवा जेवा छे, सर्व नाटक जे छे ते विटंबना सरखां छे, सर्व आनरण जे छे ते नार समान छे, अने ए सर्व कामनोग जे छे ते डुखावहा एटले दुःखदायी छे ॥ १ ॥ ॥ ए गाथा सां

नजी राजा बोल्यो के हे प्रधान! तमें विना प्रस्तावें आ वैराग्य उत्पन्न करनारी गाथा केम कही " यत्र सरागस्तत्र विरागः कथं? यत्र विरागस्तत्र सरागः कथं? यत्र श्रीरर्थः तत्र अश्रीरर्थः कथं॥ माटे हे मंत्री! विना प्रस्तावें आ वात शा कामनी तेवारें प्रधान बोल्यो में आ वात प्रस्तावेंज कही छे, ते आवी रीतें के आज मुजने केवली मल्या तेमणें कह्युं के तमारा राजानुं आयुष्य एक मासनुं शेष रह्युं छे माटे हुं आपने चेतवणी आपुं छुं एवी वात सांजली राजा चमक्यो, मरण समान कोइ जय नथी, पछी मंत्रिने कहेवा लागो के हुं तो मोहनिद्रामां सुतो हतो, तें सुताने जगाड्यो तो खरो, परंतु आग लागीने कूवो केम खणाय? तेम हवे एक मासनुं आयु रह्युं, तेमां शुं धर्मसाधन थाय! तेवारें प्रधाने कह्युं तमे विषाद म करो, एकदिवसनुं चारित्र पण मोक्षने देवावालुं थाय छे अने जो मोक्षप्राप्ति न थाय तोपण देवताना सुखनें तो आपे छे एवुं सांजली पुत्रने राज्य आपी सात क्षेत्रें धन वावरी अठाइ महोत्सव करी सुगुरु पासें चारित्र लई चोत्रीश दिवस चारित्र पाली अंते अनशन करी काल कर्यो॥ ए चोथो जव॥ ४॥ ॥ पांचमे जवें ईशान देवलोकें प्रजवनामा विमानने विषे ललितांगनामा सामानिक देवता थयो तिहां स्वयंप्रज नामा देवी घणीज वल्लज छे तेनी साथें विषयसुख जोगवतो विचरे छे, पछी एक दिवसें स्वयंप्रजा नामा देवी तिहांथी चवी तेना विरह थकी मूर्छा पाम्यो, घणो दुःखी थई शोक करतो थको रुदन करवा लागो, तेवारें पूर्वजवनो सुबुद्धि मंत्री पण तिहांज देवता थयो छे, तेणें प्रतिबोध्यो, तथापि तेनो शोक मट्यो नही तेवारें मंत्री देवतायें कह्युं तमारी स्त्रीने हुं जाणुं छुं तेने मेलवी आपवानो हुं उपाय बतावुं तमे शोक करशो नही, हवे ते स्त्रीनो संबंध कहे छे धातकी खंमना महाविदेह क्षेत्रें नंदनामा

ग्रामने विषे नागिल नामे एक गृहस्थ महादरिद्री छे, तेनी नागश्री स्त्रीयें पूर्वे छ पुत्री तो जणेली छे, कह्युं छे के दारिद्रीने छोडीयो घणी थाय, पछी तेणे विचार्युं जे हवे जो महारी स्त्रीने सातमी पण पुत्री आवशे तो हुं देश त्यागीने चाल्यो जइश दैवयोगे स्वयंप्रजा देवीनो जीव पण तेने घेर आवी अवतर्यो तेथी वली पण ए सातमी पुत्री नागिलने थइ तेवारें शेठ शेठाणी बेहु दुःख धरवा लाग्यां अने नागिल दुःखे पीडातो परदेश गयो, पछवाडे कुटुंबी जए ते पुत्रीनुं नाम पाड्युं नही अनामिका कही बोलावे, अजागणी माटे कोइ परणे पण नही तेथी काष्ठना जारा वेचीने पेट जरे तथा लोकने घेर काम करीने पेट जराइ करे. एक दिवसें कोइ धनवंतना बालकने मोदक खातां देखी अनामिकायें पण पोतानी माता पासेथी मोदक माग्या, तेवारें मातायें कह्युं ताहारो पिता मोदक लेवा गयो छे ते आवशे त्यारे आपीश, त्यां सुधी ए अंतरतिलक नामा पर्वत थकी काष्ठनो जारो लाव पछी रुदन करती जारो लेवा गइ तिहां युगंधर मुनिने केवलज्ञान उपन्युं छे, तेनो इंद्र महाराज महोत्सव करे छे, तिहां अनामिका पण नमस्कार करी बेठी धर्म देशना सांजली केवलीने पूछ्युं के हुं एवी दुःखनी अवस्था केम पामी? तथा म्हारे जर्तार प्रमुखनुं सुख कांइ पण थयो नही तेनुं कारण शुं? प्रजुयें कह्युं तें पूर्वे धर्म आराध्यो नथी माटे रे जोली धर्म विना सुख होय नही तो हवे जो सुखनी इछा होय तो धर्म कर. धर्मना प्रजावे देवना सुख पामीयें पछी अनामिकायें श्रावकनां व्रत आदर्यां उपाश्रयें बेठी श्रावकनो धर्म करे तेथी लोकोयें धर्मिणी एवुं नाम दीधुं. साधर्मि श्रावको तेने पारणा प्रमुखनो सहाय आपे छे एम धर्मना प्रजावथी ते सुखी थइ छे पछी छेवटे अनशन करी सुती छे, ते समयें ललितांगने स्वयंबुद्ध

मंत्रियें कह्युं के तमे त्यां जइ तमारुं रूप एनें देखाडो के जेम ए नियाणो करे ते सांभली ललितांगे आवी पोतानुं अत्यंत उत्कृष्ट रूप देखाडयुं ते रूप देखी अनामिकायें व्यामोह पामी नियाणुं कर्युं के म्हारे तपस्यानुं फल होय तो एनी स्त्री हुं थाउं, पछी अनामिका मरण पामी स्वयंप्रभा देवी थइ तेनी साथे ललितांग देव सुख भोगववा लागो ए पांचमो भव ॥ ५ ॥ तिहांथी चवीने छठे भवे जंबूद्वीपें पूर्व महाविदेहे पुष्कलावती विजये लोहार्गल नगरे सुवर्णजंघ राजानी लक्ष्मीवती राणीनो वज्रजंघनामा पुत्र थयो अने स्वयंप्रभा देवी पण तेहिज विजयें पुंडरीक नगरीयें वज्रसेन नामा चक्रवर्त्तिनी श्रीमती नामा पुत्री थइ, ते यौवन पामी थकी एक दिवसें चंद्रोदय सभामां बेठी छे तें समयें कोइ साधुने केवल ज्ञान उपन्युं छे तेने देवता वांदवा आवे छे, ते देवोने देखी एने पण जातिस्मरण ज्ञान उपन्युं तेवारें विचार्युं जे म्हारो पूर्वभवनो भर्तार ललितांग नामा देवतानो जीव किहां उपन्यो हशे? ते मले, अने हुं तेने परणुं तो सारुं थाय, एम विचारी मौनपणे रही, मातापितायें अनेक उपचार कर्या पण बोले नही, पछी धाई मातायें एकांते वात पूछी तेवारें कुमरीयें तेने एक कागल उपर चित्राम करी कुंवर आलेखी आप्यो, धाइयें ते चित्रपट राजाने दीधो पछी एना पिता वज्रसेन चक्रवर्त्तीना वर्षमहोत्सवें अनेक राजपुत्रो आव्या अने ते धाई पण दिवसें चित्रपट लइ राजमार्गें बेठी, ते राजकुमर पण जति वखतें चित्रपटने अणुहार देखतां जाय छे, तेवारें वज्रजंघ ते चित्रपटने देखी जातिस्मरण पाम्यो अने कहेवा लागो के आ चित्र तो म्हारी पूर्वभवनी स्त्री स्वयंप्रभा नामें देवीनुं चितरेलुं छे, ए वात धाइ मातायें श्रीमतीने कही. पछी श्रीमती ते वात सांभलीने वज्रजंघ कुंवरने परणी सुखे समाधे रहे छे, घणी प्र

तोमां आम लख्युं छे के ते पुत्री तीर्थंकरनी सनामां देवोने देखी जातिस्मरण पामी तेणे पूर्वनव जाण्यो तिहां अनामिका अने स्वयंप्रनानो नव देखी विचार्युं जे मह्वारो पूर्वनवनो नर्तार ललितांग केवी रीते मले पछी पिताये पूछ्युं तेवारें सर्व पूर्वनवसंबंधि वात कही चक्रवर्तीयें केवलीने पूछ्युं के एनो पूर्वनव नर्तार किहां उपन्यो छे केवलीये वज्रजंघ नाम कह्युं पछी चक्रवर्त्तियें वज्रजंघने परणावी तथा कोइक कहे छे चित्रपट बनावीने कह्युं के एना स्वरूपने जे कहे तेने हुं परणुं पछी बीजा राजाउए अनेक प्रकारनी वातो बनावीने कही पण ललितांगनी वात मले नही परंतु जेवारे वज्रजंघें कह्युं के आ मह्वारी स्वयंप्रना देवीनुं रूप छे तेवारें चक्रवर्त्तियें तेने श्रीमती परणावी एवो लेख छे तत्व केवलिगम्य. एकदा सुवर्णजंघे पोताना वज्रजंघ पुत्रने राज्य आपी पोते दीक्षा लीधी, पछी वज्रजंघे पण श्रीमती राणीसहित गोखमां बेठां थकां संध्या फूली देखीने वली विलय थइ जोइ तेवारें विचार्युं जे सर्व विलय थवानी वस्तुउ आ संसारमां छे माटे चिंतव्युं जे प्रनातें पुत्रने राज्य आपी दीक्षा लेशुं ते समयें पुत्रें पण राज्यनें लोने ऊेरनो धूमाडो करी मातापिताने एटले श्रीमतीसमेत राजाने विषप्रयोगे मार्यो. ए छठो नव ॥ ६ ॥ ॥ तिहांथी मरण पामी सातमे नवे राजा राणी बेहु उत्तर कुरु क्षेत्रने विषे युगलीयां थयां ए सातमो नव ॥ ७ ॥ ॥ आठमे नवें सौधर्म देवलोके मित्रपणे देवता थया ए आठमो नव ॥ ८ ॥ ॥ तिहांथी चवी नवमे नवें जंबूद्वीपे महाविदेह क्षेत्रें क्षितिप्रतिष्ठितनगरे सुविधिनामा वैद्यनो जीवानंद नामा पुत्र थयो ते दिवसें ते नगरीयें बीजा पण चार जीव पुत्रपणे अवतर्या, एक प्रसन्नचंद्र राजानो पुत्र महीधर जन्म्यो. बीजो सुनासीरनामा प्रधाननो पुत्र सुबुद्धि थयो, त्रीजो ध

नाशेठनो पुत्र गुणाकर थयो, चोथो सागरनामा शेठनो पुत्र पूर्णचन्द्र थयो, हवे श्रीमतीनो जीव सौधर्म देवलोकथी चवीने ईश्वरदत्तनो पुत्र केशव थयो, ए पांचे जीवानंदना परम मित्र छे ए छए मित्र साथें मळी जमे, रमे, सुखें काळ निर्गमन करे छे, एक दिवसें जीवानंदने घेर ते छए जणा बेठा छे एटलामां एक कोढीउ साधु गोचरी करवा आव्यो, तेने देखीने ते पांचे मित्र एकठा थइने वैद्य पुत्रने कहेवा लाग्या के अरे वैद्यतो मतलबीया थाय छे, जो पुण्यने अर्थें वैदुं करता हो तो आ साधुनो कोढरोग मटावी आपो तेवारें तो अमे पण जाणीयें जे तमे धर्मात्मा छो ते सांभळी जीवानंद वैद्य बोल्यो हे मित्रो ! तमे म्हारी वात सांभळो आ साधुनो रोग मटाववा माटे लक्षपाक तेल जोशे तेतो म्हारा घरमां तयार छे पण बीजो रत्नकंबल तथा गोशीर्ष चंदन खपशे ते म्हारी पासें नथी माटे जो ए बे चीजो क्यांथी पेदा करो तो साधुनी वैयावच्च करीयें ए वात सांभळी ते छए जणे मळी अढीलाख सोनैया भेला कीधा पछी ते छए मित्र मळी नगर शेठने घेर जइ सोनैया आपीने बोल्या के एक रत्नकंबल अने बीजो गोशीर्ष चंदन ए बे चीज अमने आपो शेठें पूछ्युं जे तमे एने शुं करशो तेणे कह्युं के अमे साधुनी वैयावच्च करीशुं ते सांभळी शेठे विचार्युं जे ए बाळको छे तोपण जुओ कहेवा धर्मबुद्धि वाळा छे अने हुं आटलो म्होटो वृद्ध थयो छुं तोपण हजी लगण कांइ धर्ममां समजतो नथी एम चिंतवी ते शेठे सोनैया तो धर्मदा वापरी नाख्या अने रत्नकंबल तथा गोशीर्ष चंदन तेमने आपीने पोते दीक्षा लइ साधुपणुं पडिवजी अंतगड केवळी थइने मोक्ष गयो हवे ते छए जणा औषध लइ वनमां गया तिहां मुनि काउसग्गमां उभा रह्या छे तेने "अनुजानीध्वं" एवुं कही चामडा उपर मुनिने सुवारीने लक्षपाक तेल मसळ्युं पछी चंदननो लेप करी रत्न

कांबलमां लपेटी दीधो तिहां पहेलीवारमां तो ते सर्व चामडीमां जे कांइ कीडा हता ते सर्व कांबलमां आवी लागा तेने गायना मृत कलेवरमां मुक्या फरी बीजीवार तेल मसल्युं तेनी उपर चंदन लगावी रत्नकांबलथी वींट्यो तेवारें मांसमांहेला कीडा निकली पड्या तेमज त्रीजीवार एमज पूर्वोक्त रीते कर्युं ते वखत हाड मींजीना कीडा निकली पड्या पछी रोहिणी औषध साधुने शरीरें लगाडी तेनुं शरीर कंचन सरखुं करी मूक्युं पछी ते छए जणे रत्नकंबलनुं द्रव्य सात क्षेत्रमां खरचीने दीक्षा लीधी निरतिचार चारित्र पालीने काल कर्यो ए नवमो भव ॥ ९ ॥ ॥ दशमे भवें ते छए जणा बारमे देवलोकें देवपणे जइ उपन्या छए देव मित्र थया ए दशमो भव ॥ १० ॥ ॥ अगीआरमें भवे बारमां देवलोकथी चवीने जंबूद्वीपना महा विदेहक्षेत्रें पुष्कलावती विजयें पुंडरीकिणी नगरीयें वज्रसेन नामे राजा तेनी धारणी नामे राणीनी कूखमां ते छ मांथी पांच जण अनुक्रमे पुत्रपणे आवी उपन्या तेमां जीवानंद वैद्य जे धन्ना सार्थवाहनो जीव छे ते चौद सुपन सूचित मातानी कूखमां उपन्यो जन्म्या पछी माता पिताये तेनुं वज्रनाभ नाम आप्युं ए जीव ऋषभदेवजी थावावालो छे हमणा चक्रवर्त्ति पणे उपन्यो छे हवे बीजो राजानो पुत्र महीधरनो जीव ते बाहु नामे थयो त्रीजो मंत्रीनो पुत्र सुबाहु नामे थयो, चोथो शेठनो पुत्र गुणाकरनो जीव, पीठ नामे थयो अने पांचमो सार्थ वाहनो पुत्र पूर्णभद्रनो जीव महापीठ नामे थयो ए पांच तो भाइ पणे आवी उपन्या अने छठो केशवनो जीव जे पूर्वे निर्नामिकानो जीव छे ते वली बीजा एक रांजाने घरे पुत्र पणे उपन्यो ते वज्रनाभ नामा चक्रवर्त्तिने घणोज वल्लभ छे तेथी ए एनो सार्थि थाशे एरीते छए मित्र सुखे रहे छे हवे वज्रसेन राजा तीर्थंकर थवाना छे माटे लोकांतिक देवोना वचनथी

उदास थइ वज्रनाज नामा पुत्रने राज्य आपी संवत्सरीदान देइ दीक्षा लइ घनघातीकर्म क्ष यकरी केवलज्ञान पाम्या तीर्थंकर थया ते पुंमरीकिणी नगरीयें आव्या वनपालके वज्रनाजने वधामणी आपी तेवा अवसरमां चक्ररत्न प्रगटवानी पण वधामणी आवी. तेवारें विचार्युं जे पहेलां केनी पूजा करुं ? एम विचारतां निरधार कर्यो जे तीर्थंकरने पूज्या तो सर्वने पूज्या ए त्रण लोकना नाथथी वली बीजो कोण वधारे गणाय एम चिंतवी केवल महोत्सव कर्यो, जगवानने वांदवा आव्यो पठी चक्रने पूज्यो अनुक्रमे ठ खंम साधी, सुखे राज्य जोगवे. ठे एक दिवस वली वज्रसेन तीर्थंकर समोसर्या तेमने वज्रनाज प्रमुख वांदवा गया तिहां प्रजुनी देशना सांजली ठए जणायें दीक्षा लीधी तेमां पहेलो वज्रनाज चक्रवर्त्ति साधु थयो ते चौदे पूर्व जण्यो अने बीजा पांचे अगीआर अंग जण्या, वली बाहुनामा जे साधु ठे ते पांचसें साधुने आहार लावी आपे अने सुबाहु पांचसें साधुउना पग चांपे तथा पीठ अने महापीठ ए बे एकांतें तप करे तथा सद्याय ध्यान करे, हवे बाहु अने सुबाहुनी गुरुप्रमुख सर्वे प्रशंसा करे तेथी पीठ अने महापीठ एवुं जाणे के जुउ काम सर्वने वह्लज ठे जो साधु थया तोपण मतलबी देखाय ठे केमके अमे सद्याय ध्यान करीयें ठैयें तो अमोने कोइ प्रशंसता नथी अने बाहु सुबाहु एमनी चाकरी करे ठे तो तेमनी प्रशंसा सर्व करे ठे माटे जगत् सर्व स्वार्थी ठे पठी वज्रनाजे वीश थानक तप करीनें तीर्थंकर नामकर्म उपार्जन कर्युं तथा बाहु साधुये आहारना दानथी जोगफल उपार्जन कर्युं तथा सुबाहु साधुयें पगचं पीना प्रजावथी बाहुबल नाम कर्म उपार्जन कर्युं तथा पीठ अने महापीठें इर्ष्या करवाथी स्त्रीवेद बांध्यो अने ठठो निर्नामिकानो जीव ते श्रेयांस कुमर थाशे अंते सर्वे अनशन करी

मरण पाम्या ए अगीआरमो जव ॥ ११ ॥ ॥ बारमे जवे बए जण सर्वार्थसिद्ध विमाने जइ देवपणे उपन्या ए बारमो जव ॥ १२ ॥ ॥ पबी सर्वार्थसिद्ध विमानथी तेत्रीश सागरोपमनु आयुपूरण करीने तिहांथी चवी तेरमें जवे वज्रनाजनो जीव ते श्रीरुषजदेवजी थया तथा बाहुनो जीव जरतचक्रवर्त्ती थयो अने सुबाहुनो जीव बाहुबल थयो वली पीठ अने महापीठनो जीव ब्राह्मी अने सुंदरी थया ए पांचे जीव अनुक्रमे मोक्ष जाशे ए तेरमो जव ॥ ॥१३॥ ॥ इति रुषज जव ॥ ते कालने विषे, ते समयने विषे श्रीरुषजदेव अरिहंत ते उनालानो चोथो महिनो, सातमुं ·पखवाडियुं, आषाढवदि चोथने दिवसें, सर्वार्थसिद्ध विमानथी, देवतानुं आयुष्य पूरण करीने चव्या ते आ जंबूद्वीपना जरतक्षेत्रने विषे इक्ष्वाकुजूमीमां नाजि कुलधरनी मरुदेवी जार्या तेमनी कूखें मध्यरात्रिने विषे देव सबंधी आहार, देव संबंधि जव, देव संबंधि शरीर त्यागीने गर्जमां पुत्रपणे आवी उपन्या ॥ २०६ ॥ ॥ इक्ष्वाकु वंशमां उपन्या तेथी इक्ष्वाकु जूमि थइ ते केवी रीतें थइ ते कहे बे जे पूर्वें सर्वे युगलिया हता परंतु नगर कोइ हतुं नही तिहां युगलीयामां तो कल्पवृक्ष मनोरथ पूरण करतां हतां तेमां पहेला सात कुलघर थया तेनी उत्पत्ति आ प्रमाणे बे ॥ ॥ आ अवसर्प्पिणीना त्रीजा आराना अंतमां पल्योपमनो आठमो जाग बाकी रहे बते आ दक्षिण तरफनो अर्द्ध जरत तेने दक्षिणार्द्ध जरत कहीयें तेना त्रण जाग करवा ते त्रण जाग मांहेला मध्य जागमां एटले विचला जागमां पहेला त्रण कुलघर थया तेमां प्रथम कुलघर एवीरीतें थयो के 'पश्चिममहाविदेहमां बे वाणीया हता ते बेहु वाणीया मांहोमांहे मित्र हता परंतु तेमां एक कपटी हतो अने एक सरलमनवालो हतो ते जेवारें मांहोमांहे द्रव्य वांटे तेवारें जे कपटी बे ते सरल स्वजाव

वालाने ठगीने तेनाथी ठानुं धन पोते राखे अने सरल तो कपटरहितपणे व्यापार करे एक दिवसें सरलचित्तवालानी स्त्रीनें देखीने कपटी मित्रें जोग जोगववानुं कह्युं तेवारें ते सरलनी स्त्री पतिव्रता छे ते बोली के अरे मर्यादाहीन ! मित्रनी स्त्रीने वांछे छे ? एवुं कहीने निर्भछना करी बाहेर काहाडी मूक्यो पछी ते कपटीयें जइने सरलचित्तवालाने कह्युं के ताहारी स्त्री मने वांछती हती परंतु में तेने नाकारो कर्यो एवी कपटाइ करी पछी ते सरल चित्तवालो वैराग्य पामी मरीने इक्ष्वाकुभूमिमां मनुष्यरूपें युगलीयो थयो अने कपटी मित्र मरण पामीने इक्ष्वाकु भूमिमां हाथीरूपें युगलीयो थयो केमके जीव कपटाइथी बहुलतायेंकरी तिर्यंच पणाने पामे, एकदा समयने विषे हाथी युगलीये सरलयुगलीयाने दीठो तेथी बेहु मांहोमांहे जातिस्मरण ज्ञान पाम्या पछी परमस्नेहथी हाथी तेमने पोताना स्कंध उपर बेसाडीने रात्रदिवस फर्यां करे तेमने सपेत हाथी उपर बेठो जोइने बीजा युगलीया बोलवा लाग्या के ए विमलवाहन छे एवुं तेनुं नाम पाडी दीधुं केटलोएक काल गयो तेवारें कालनां माहात्म्यथी जेवा कल्पवृक्ष प्रथम हता तेवा रह्या नही तेवारें युगलीया लडवा लाग्या अने सहु पोत पोताना कल्पवृक्ष थापी बेठा सहु कोइ पोताना कल्पवृक्षमां रहे बीजाने आववा दीये नही अने कदापि कोइ आवे तो तेनी विमलवाहननी पासे राव आपवा आवे तेवारें विमलवाहन तेने हकार एवो दंड आपें तेथी युगलीयो मनमां जाणे जे सर्व महारी वात गइ एवो जाणी लडे करे नही ए प्रथम हकार नीति थइ ते विमलवाहनने चंद्रयशा नार्या हती. नवशो धनुष्य प्रमाण शरीर हतुं ए प्रथम कुलघर ॥ १ ॥ ॥ पछी ते विमलवाहनना पुत्र चक्षुष्मान् थया तेनी चंद्र कांता नार्या अने आठशो धनुष्य शरीरनुं प्रमाण, एनी पण हकार दंडनीति थइ ए बीजो

कुलधर ॥ २ ॥ ॥ त्रीजो यशोमान् कुलधर थयो तेनी सुरूपा नामें नार्या एनुं सातसों धनुष्य प्रमाण शरीर जाणवुं एनी वखतमां मकार दंडनीति जाणवी ॥ ३ ॥ ॥ चोथो अनिचंद नामा कुलधर थयो तेनी प्रतिरूपा नामे नार्या एनुं साडा छसें धनुष्य प्रमाण शरीर जाणवुं एनी वखतमां म एटलो कहेवाथी मरी जाय माटे मकार दंडनीति जाणवी ॥ ४ ॥ पांचमुं प्रसेनजित् नामा कुलगर थयो तेनी चक्षुष्मती नामें नार्या एनुं छशें धनुष्य प्रमाण शरीर जाणवुं एमां धिक्कार एटलुं कहेवाथी ते एवुं समजी जाय के मने महोटो दंड थयो माटे धिक्कार दंडनीति जाणवी ॥ ५ ॥ ॥ छठो मरुदेव नामा कुलधर थयो तेनी श्रीकांता नामें नार्या एनुं साडा पांचसें धनुष्य प्रमाण शरीरनुं मान जाणवुं एना वखतमां धिक्कार दंडनीति जाणवी ॥ ६ ॥ ॥ सातमो नाभिनामें कुलधर थयो तेनी मेरुदेवी नामें नार्या एनुं सवा पांचशे धनुष्य प्रमाण देहमान जाणवुं एनी वखतमां धिक्कार एटलो कहे तेवारें ते समजे के मुजने महादंड थयो फरीथी जनम पर्यंत ते अन्याय करे नही एरीतें पहेला तथा बीजा कुलधरना वारामां हकार दंडनीति हती अने त्रीजा तथा चोथा कुलधरना वारामां जघन्यथी हकार अने उत्कृष्टथी मकार दंडनीति चाली एटले घणो अन्याय करे तेवारे तेने (म) एटलो कहे तेथी ते एवुं समजे के मने महोटो दंड थयो फरीथी कोइवारे ते अन्याय करे नही तथा पांचमा, छठा अने सातमा कुलधरनी वखतमां जघन्यथी तो हकार तथा मध्यमथी मकार अने उत्कृष्टथी धिक्कार एवी त्रण प्रकारनी दंडनीति चालु थइ ॥ श्री ऋषभनाथ अरिहंत त्रण ज्ञानें सहित मेरुदेवी मातानी कूखे आवी उपन्या यावत् मेरुदेवीये चौद सुपना दीठा इत्यादिक सर्व अधिकार महावीर स्वामीनी पेरे अहीं पण जाणी लेवुं

परंतु एटलो विशेष जे मेरुदेवीजीये पहेला सुपनामां वृषभ मुखमांहे पेसतो दीठो अने बीजा बावीश तीर्थंकरनी मातायें पहेले सुपने हाथी मुखमांहे पेसतो दीठो तथा श्रीमहा वीरस्वामीनी मातायें पहेले सुपने सिंह मुखमां प्रवेस करतो दीठो वली. इहां सुपनानुं फल नाभीराजायें पोतेज कह्युं परंतु सुपन पाठक ते वखते हता नही ॥ २०७ ॥ ते कालनेविषे ते समयनेविषे ऋषभनाथ अरिहंत उनालानो पहेलो महिनो, पहेलो पखवाडियुं, चैत्रवदि आठ मना दिवसे नवमास उपर साढासात दिवस रात्री गर्भमां प्रतिपूर्ण होते छते उत्तराषाढा नक्षत्रें चंद्रमानो योग आवे थके निराबाध पणे जन्म्या ॥ २०८ ॥ ॥ इहां जन्ममहोत्सव इंद्रादि कोये आवी कर्युं इत्यादिक सर्व अधिकार श्रीमहावीरजीनी पेठे कहेवुं परंतु बंदीखानामांथी केदीउने छोडी मूकवा तथा तोल वधारवा तथा कुलमर्यादा करवी तथा पूजादिकने अर्थें द्रव्य रखाववो ए कृत्य ते युगलीयाना वखतमां गाम शहेरादिकना अभावने लीधे हता नही माटे ते कह्या नथी बाकी सर्व श्रीमहावीर स्वामीना पाठनी पेठे आंही पण कहेवुं ॥२०९॥ तथा ते वखत सर्व युगलीया हता तेथी प्रभुनुं नाम स्थापन करवानुं महोत्सव संबंधी व्यव हार पण चाल्यो नही तेवारें भगवाननी जंघामां रोमनु वृषभ सरिखो लंछन दीठो तथा प्रभुनी मातायें पहेला सुपनामां पण वृषभ दीठो तेथी ऋषभ एवुं नाम दीधुं ॥ ते भग वान महा स्वरूपवान थका देव तथा देवीउ साथे रमत करे, इंद्राणी पोते खोलामां लइने रमाडे, हवे सुनंदा युगलीयाणी तो भगवाननी साथेज युगलपणे जनमी हती तथा एक युग लीयाना मस्तक उपर ताल वृक्षनुं फल पड्युं तेथी ते बालपणामांज मरण पाम्यो अने तेनी साथे जन्मेली युगलणी जीवती रही हती तेने बीजा कोइ युगलीयायें दीठी तेणे ति

हांथी उपाडीने नाभि कुलघरने जइ आपी नाभिकुलघरे कह्युं के आ महारा पुत्र ऋषभ देवनी सुनंदानी साथे ए पण स्त्री करीशुं एम कही तेनुं सुमंगला एवुं नाम आप्युं ते पण भगवाननी साथे वधे छे, भगवाननो सुवर्णमय शरीर छे हवे ऋषभ देवजी मुणमुण बोले, थाकता थाकता चाले, हशे, तेवारें माता कहेके हे पुत्र तुं इंद्राणीने वल्लभ छो. अने देवताये दीधेला अमृतनुं पान करे छे, महारी पासे तो रहेतो नथी, महारा स्तन पण चूसतो नथी, तो हुं ताहारी माता छुं एवो जगतमां कोण जाणशे? इत्यादिक वातो करी रमाडे ॥ हवे जेवारें भगवान देशेऊणा एक वर्षना थया तेवा अवसरमां इंद्रमहाराज भगवाननुं वंस स्थापन करवा सारुं हाथमां सेलडी लइने आव्यो तेवारें भगवान नाभि कुलगरना खोलामांहे बेठा हता ते खोलामांहेथी सेलडी लेवा सारुं हाथ लांबो कर्यो तेथी इंद्रे जाण्युं जे प्रभुने सेलडी खावानुं मन थयुं ते माटे इंद्रे तिहां भगवाननो वंश इक्ष्वाकुकुल स्थापन कर्यो. श्रीऋषभदेवने देवकुरु अने उत्तरकुरु क्षेत्र संबंधि कल्पवृक्षोना फलनो आहार देवताउये आणी आप्यो ते आहार गृहस्थ पणामां थयो अने बालपणामां तो अंगुठामां देवोए संचारेला अमृतनो आहार सर्व तीर्थंकरोने होय छे अने एक श्रीऋषभदेव विना बीजा तीर्थंकरोने तो बालपणुं टल्या पछी महोटा थाय तेवारें पक्व थयेलो आहार होय अने संयम लीधा पछी तो सर्व तीर्थंकरोने फासु आहार होय हवे भगवान जेवारें भोग भोगववाने समर्थ थया तेवारें सर्व इंद्र अने इंद्राणीयो चारे निकायना देव अने देवीयो विवाह करवा आव्या तेमां इंद्रादिक देवो तो वर राजानी तरफ रह्या थका श्रीऋषभदेवने वींद बनाव्यो अने इंद्राणीउ प्रमुख सर्व देवीउ ए मलीने कन्यानी तरफ रही थकी सुनंदा तथा सुमंगलाने वींदणीयो बनावी, सणगार कराव्या, माफवा मांड्या इत्या



ऋषभदेवजीने इंद्र महाराज शेलडी आपे छे. मुकुट कुंडल आपे छे.

नाभिराजा सभामां बेठा छे.

दिक सर्वप्रकारनी विवाह संबंधी जे रीतीउ ले ते रीतीउ करीने वर कन्याने परणाव्या ति
हांथी युगलीयामां विवाह करवानी रीती प्रवर्त्तमान थइ ते आजदिवस पर्यंत चाली आवे ले
हवे श्रीऊषजदेवजीने, सुनंदा तथा सुमंगला ए बे राणीयो साथे जोग जोगवतां ल लाख पूर्व
व्यतिक्रम्या तेवारें सुमंगलाने जरत अने ब्राह्मी ए बे पुत्र पुत्रीनो जोडलो थयो, अने सुनंदाने
एकतो बाहुबली तथा सुंदरी ए बे पुत्र पुत्रीनो जोडलो थयो तथा उगणपचास तो निकेवल पुत्रो
नाज जोडला थया एरीते ऊषजदेव स्वामीने शो पुत्र तथा बे पुत्रीनो परिकर थयो हवे काल
ना महात्म्यथी अनुक्रमें दिवसें दिवसें युगलीयाउमां कषायनी वृद्धि थवा मांमी तेवारें हकार,
मकार अने धिक्कार ए त्रण जातनी जे दंमनीतिउ चालती हती तेने पण लोक उल्लंघन क
रवा लाग्या तेने मान्य न करता पोतपोतामां क्लेश उत्पन्न थवाथी श्रीऊषजदेवनी पासे आवी
कहेवा लाग्या के अमारो न्याय करी आपो तेवारें जगवान बोल्या हुं राजा नथी महारा पिता
नाजिकुलघर राजा ले तेनी पासे तमे जाउ ते सांजली युगलीया नाजीराजा पासे गया ना
जीराजायें तेमने कह्युं के तमारो राजा ऊषजदेव होवो ते तमारो न्याय करशे ए अवसरमां
इंद्रमहाराजनुं आसन चलायमान थयुं तेवारें अवधिज्ञानथी जगवानने राज्यपाटें स्थापना क
रवानुं अवसर जाणी इंद्रमाहाराजें तिहां आवी जगवानने मुकुट,कुंमल, हार प्रमुख पहेरावी
सिंहासन उपर बेसाडी राज्य अजिषेक कर्यो तिहां युगलीया इंद्रमहाराजना कहेवाथी जल
लेवा गया हता परंतु ते राज्याजिषेक थइ गया पली जल लेइने आव्या तेवारें जगवानने स
णगार सहित सिंहासन उपर बेठेला जोइने युगलीयाने विवेक आव्यो जे बीजा तो सर्व श
रीर उपर शोजा थइ रही ले परंतु एक जगवानना पग खाली देखाय ले एवुं जाणी पग उ

पर पाणी ढोल्युं केटली प्रतोमां तो युगलीया मांहोमांहे वढवाड करीने नाभि कुलघर पासें न्याय कराववा गया नाभिराजाये तेमने कह्युं के अमे गरढा थया माटे तमे ऋषभने जइ कहो ते तमारो न्याय करशे युगलीयायें जइ ऋषभजीने कह्यो ऋषभजी बोल्या मने राज्य अभिषेक करी राजा स्थापो तेवारें युगलीयाये धूलनो एक महोटो उंटलो बनावी तेना उपर प्रभुने बेसाडी पोते अभिषेक करवा पाणी लेवा गया एवामां इंद्रनुं आसन कंप्युं तेणे आवीने मुकुटादिक अलंकार पहेरावी सिंहासने बेसाडी, वस्त्रविभूषित करी राज्याभिषेक विधि साचव्यो प्रभु उपर छत्र धारण कर्युं, चामर वींजतो थको इंद्रमहाराज पोते प्रभुनी सेवा करे छे एटलामां युगलीया पण कमलपत्रना डुनामां पाणी भरी लइ आव्या तिहां भगवाननुं स्वरूप सर्वालंकारविभूषित देखीने चिंतववा लाग्या के प्रथम भगवानना केहवा प्रमाणे जो पाणी एमना मस्तक उपर नाखियें तो सर्व वस्त्र, अलंकार भीजाइ जाय माटे स्वामीनो डावो पग छूटो छे तेना उपर न्हवण करीये एम विचारी डाबा पग उपर अभिषेक कीधो तेवारें इंद्र महाराज बोल्या ए युगलीया भला विनीत पुरुषो छे तेमाटे इहां विनीता नामें नगरी वसाववी एवुं कहीने वैश्रवण नामें देवने इंद्रें नगरी वसावी आपवानी आज्ञा आपी तेवारें वैश्रवणें विनीता नगरी बनावी ते केवी रीतनी बनावी तोके बार योजन लांबी, नव योजन पोली, आठ दरवाजा कर्या, फरतो महोटो कोट कर्यो, ईशान कोंणमां सात भूमिउ चोखूणो एवो एक महोटो नाभिराजाने रहेवा माटे घर बनाव्युं, अने पूर्व दिशांयें भरतने रहेवा सारुं सात भूमीनुं घर बनाव्युं, अग्निकोणमां बाहुबलीने रहेवा माटे महोटुं घर बनाव्युं तेनी वचमां श्रीऋषभदेवजीने रहेवा सारु एकवीश भूमिनो घर बनाव्युं, एकसो आठ जिनमंदिर

बनाव्या, वली राज्यने अर्थे हाथी, घोडा, गाय, ऊंट, वेसर, बलद प्रमुख चतुष्पदोनो संग्रह कर्यो. आगल तो ए हाथी प्रमुख सर्व जीवो जंगलमां फरतां रहेता हता. वली केटलाएक जुगलीया अपराधमां आवे तेमने दंड देवामाटे उग्रा एवा नामथी माणसो स्थापन कर्या, केटलाएक गुरुस्थानीया करी तेमने भोगा एवा नामथी स्थापन कर्या, केटलाएक मंत्राधिप करीने तेमने राजन्य एवा नामथी थाप्या, बीजा पायदल क्षत्रियो एवा नामेंकरी थाप्या एम चार प्रकारना पुरुषोनी व्यवस्था थइ ॥ तथा वली जे ब्रह्मचर्य पाले ते ब्राह्मण, जे शस्त्र राखे ते क्षत्री, खेती करावे ते वैश्य, चाकरी करे ते शूद्र, एवा नाम स्थापन कर्या वली ए विनीता नगरीमां चोरासी चौटा कर्या तेमां सोगंधिक, गांधी, तंबोली, कंदोइ, सोनार, मणियार, सोनुं वेचनार, माणिक वेचनार, नाणावटी, भाडभुंजा, धान्यबजार, दोसी, चमार, कंसारा, माली, घृत बजार, तथा तेल, सूत्र, कपास, भांभा, भाडा इत्यादिक बजारो करी अनेक जातना उद्यमीउ वगेरे थया ॥ ॥ श्रीऋषभनाथ स्वामीना पांच नाम थया एक ऋषभनाथ, बीजुं प्रथम राजा, त्रीजुं पहेलां भिक्षाचर, चोथुं पहेला केवली अने पांचमुं पहेला तीर्थंकर ए पांच नाम थया ॥ २११ ॥ ॥ श्री ऋषभनाथ अरिहंत महाचतुर, भली प्रतिज्ञाना पालनार, भला रूपवंत, सर्वगुणसहित, सरल, विनीत, वीश लाख पूर्व पर्यंत कुमर पदे रह्या, त्रेशठ लाख पूर्व लगें राज्य भोगव्यो, तिहां राज्य करतां लखवानी कला, गणवानी कला, बहोंतेर कला पुरुषोनी तथा चोशठ कला स्त्रीयोनी, कारीगरोना सो भेद, खेतीकर्मादिक त्रण कर्म इत्यादिक वातोनो लोकोना हित करवाने सारुं उपदेश दइने, सो पुत्रोने सो देशनो जूदोजूदो राज्य आपीने वली लोकांतिक देवोना प्रतिबोधथी वरसीदान देइने, गोत्रीयाने धन वांटो आपीने,

उनालानो पहेलो महिनो, पहेलुं पखवाडियुं, चैत्र वदि आठमना दिवसें, पाछले पहोरे, सुदंसणा नामा पालखीमां बेसीने, देवमनुष्यसहित, यावत् विनीतानी राज्यधानीमांथी थइने, जिहां सिद्धवण उद्यान छे तिहां अशोक वृक्षनी नीचें पालखी राखीने, ते पालखीमांथी नीचे उत रीने, सर्व घरेणा पोताना हाथथी उतारीने, चार मुष्टि लोच करे, बेलानो एटले छठ्ठुं तप पाणी रहित चउविहारो करे छते, उत्तराषाढा नक्षत्रें चंद्रमानो योग आवे थके उग्रकुलना, जोगकुलना, राज्यकुलना, क्षत्रियकुलना एवा कछ महाकछ प्रमुख चार हजार पुरुषोनी साथें इंद्रदत्त एक देवदुष्य वस्त्र लइने, दीक्षा लीधी, गृहस्थपणो त्यागीनें साधुपणो अंगीकार कर्यो ॥ २१२ ॥ ॥ हवे वली जगवाने दीक्षा लीधी तेथी पहेलानी वात बनेली ते लखियें छेयें ॥ जरतनी साथें ब्राह्मी जन्मी हती ते बाहुबलीने परणावी। अनें जे बाहुबलीनी साथे सुंद रीनो जन्म थयो हतो ते जरतने स्त्रीरत्न करवा माटे राखी एटले युगलधर्म मटाड्यो ॥ हवे युगलीयाने आहार पचे नही ते आश्चर्यी कहे छे. प्रथमतो युगलीया कल्पवृक्षना पत्रादिकनो आहार करतां हता ते अयोग्य थया, खावा योग्य रह्या नही तेवारें लोक मूल, पत्र, कंद, फल अने फूलनो आहार करवा लाग्या अपक्वशालिप्रमुख काचुं धान्य खावा लाग्या, ते खातांखातां पचे नही, पेटमां डुखी आवे तेवारें जगवान् पासे आवी कहेवा लाग्या के आहार कर्याथी अमारुं पेट चडी आवे छे जगवान बोल्या लगारेक हाथमां मसलीने हाथनी बाफ आपीने खाउतो पची जासे केटलाएक दिवस पछी ते पण पच्यो नही पछी कांखमां अने हृदयमां राखी बाफ आपीने आहार करवा कह्युं केटला काल पछी ते पण पचवा लाग्यो नही एवा अ वसरे वनमांहे वंश घासते घासते अग्नि उपन्यो ते देखीने युगलीयायें जाण्युं ए कोइ अपूर्व



ऋषभदेवजी हाथी उपर बेसीने माटीना वासण बनावीने युगलीयाने आपेछे तथा युगलीया माटीना पिंड लई आवी भगवानने आपेछे

रत्न उत्पन्न थयुं छे एवुं जाणी तेने हाथमां लेवा लाग्या तेथी हाथ बलवा मांम्या तेवारें तेनाथी बीहीता थका रूषजदेवजीने जइ कहेवा लाग्या के हे स्वामि एक अपूर्व रत्न उपन्युं छे परंतु तेमां क्रोध घणो छे तेथी हाथ लगाडीयें तो बालवाने दोडे छे· एविषे क्यांएक एवुं पण लखेलुं छे के युगलीआउए जइ जगवानने कह्युं के कोइ राक्षस उठ्यो छे पछी जगवाने अवधिज्ञाने जोयुं तो अग्नी उपन्यो दीठो तेवारें युगलीयाने कह्युं के तमे एमां तृण लगावीने अग्नि ग्रहण करो तेमां शालिप्रमुख धान्य पचावीने खाउ तेवारें युगलीयाउए पसवाडाना तिरणा तोडीने अग्नि जूदो सलगावी, तेमां धान्य नाख्युं ते सर्व बली गयुं कांइपण पाछुं हाथमां आव्युं नही ते जोइ फरी जगवान् पासें आवीने कहेवा लाग्या के ते पोतेंज जुख्यो छे माटे सर्व धान्य खाइ जाय छे अमने कांइ पण· आपतो नथी ते सांजली जगवान् बोल्या हुं हाथी उपर चढीने आवुं तेवारें मने एक माटीनो पिंम आपजो पछी युगलीयायें तेमज कह्युं माटीनो पिंम लइ आव्या ते माटीमांथी जगवाने हांमी, कुंमी प्रमुख वासण बनावी आप्या अने सर्वे रीत पण कही समजावी जे आवीआवी रीते बनावीने, वासदीमां पचावी एमां धान्य पाणी नाखीने अग्नि उपर चढावी पाकुं धान्य करीने खाउ एवा जगवानें बतावेला विधिथी युगलीया अन्नने पचावीने खावा लाग्या तेवारें अन्न पचवा लाग्युं ए जोजनविधि कह्यो ॥ ॥

हवे जगवाने अढार जातिनी लीपी ब्राह्मीने जिमणा हाथथी लखवाने बतावी तेना नाम कहे छे १ हंसलिपी, २ जूतलिपी, ३ यक्षलिपी, ४ राक्षसलिपी, ५ उड्डी लिपी, ६ यावनी लिपी, ७ तुरकीलिपी, ८ कीरीलिपी, ए द्राविडीलिपी, १० सैंधवीलिपी, ११ मालवीलिपी, १२ नडीलिपी, १३ नागरीलिपी, १४ लाटीलिपी, १५ पारसीलिपी, १६ अनिमित्तिलिपी, १७

चाणाकीलिपी, १८ मूलदेवीलिपी ए अढार लिपीना नाम तथा बीजी पण देशना नामें लिपी जेमके लाटी, चोटी, माहाली इत्यादिक लिपी जाणवी ॥ तथा गणित जे आंकनो विधान ते सुंदरीने जणवाने मावे हाथे करवाने बताव्युं ते श्या जणी तोके " अंकानां वामतो गतिः ॥ अक्षराणां दक्षिणतो गतिः" वली जरत महाराजने रूप करवानुं कर्म बताव्युं तथा बाहुबलीने पुरुषादिलक्षण बताव्या तथा पुरुषनी बहोंतेर कलाउ बतावी तेना नाम कहे छे. १ लेखनकला, २ पठनकला ३ गणितकला, ४ गीत गावानी कला, ५ नाटकनी कला, ६ तालमाननी कला, ७ ढोल वजाववानी कला, ८ मृदंग बजाववानी कला, ९ वीणा वजाववानी कला, १० वांसली वजाववानी कला, ११ जेरी वजाववानी कला, १२ हाथी परखवानी कला, १३ घोडा परखवानी कला, १४ धातुवादनी कला, १५ दृष्टिवादनी कला, १६ मंत्रवादनी कला, १७ पलितविणासनी कला, १८ रत्नलक्षण, १९ नारीलक्षण, २० नरलक्षण, २१ छंदकरण, २२ तर्कवाद, २३ न्याय, २४ तत्त्वविचार, २५ काव्यकरण, २६ ज्योतिष, २७ चारवेदनी कला, २८ वैद्यकला, २९ षट्जाषाज्ञान, ३० वशीकरण, ३१ अंजन, ३२ लिपी, ३३ कृषिकर्म, ३४ सुपन, ३५ वाणिज्य, ३६ राजसेवा, ३७ शकुन, ३८ इंद्रजाल, ३९ वायुस्तंजन, ४० अग्निस्तंजन, ४१ मेघ वर्षाववानी कला, ४२ लेपनकला, ४३ मर्दनकला, ४४ उर्ध्व जावानी कला, ४५ घट बंधननी कला, ४६ घणो फेरवो, ४७ पत्र छेदवो, ४८ मर्मजेदन, ४९ फल खेचवो, ५० पाणीवृष्टि, ५१ लोकाचार शीखवानी कला, ५२ लोकोनी मरजी राखवानी कला, ५३ फल जरवानी कला, ५४ खड्ग धारवानी कला, ५५ छुरीबंधन, ५६ मुद्राकरण, ५७ लोहघटन, ५८ दंतसमारण, ५९ काष्ठछेदन, ६० चित्रकरण, ६१ बाहुयुद्ध, ६२ दृष्टियुद्ध, ६३ मुष्टियुद्ध,

६४ दंमयुद्ध, ६५ खड्गयुद्ध, ६६ वाग्युद्ध, ६७ गरुडमर्दन, ६८ सर्पदमन, ६९ नूतदमन, ७० योगध्यान, ७१ वर्षज्ञान ७२ नामावली ए पुरुषनी बह्योतेर कला नगवानें बतावी ॥ हवे स्त्रीयोनी चोशठ कला बतावी तेना नाम कहे छे. १ नाचवानी कला, २ आदर देवानी कला, ३ चित्रकला, ४ वादकला, ५ मंत्रकला, ६ तंत्रकला, ७ ज्ञानकला, ८ विज्ञानकला, ९ दंमकला, १० जलस्तंननकला, ११ गीत गावानी कला, १२ तालमाननी कला, १३ मेघवृष्टीनी कला, १४ फलाकृष्टीनी कला, १५ वाग्गोपन, १६ आकारगोपन, १७ धर्मविचार, १८ शकुन जोवुं, १९ क्रियाकल्प, २० संस्कतनाषा बोलवी, २१ प्रसादनीति, २२ धर्मनीति, २३ वर्णिकावृष्टी, २४ सुवर्णसिद्धि, २५ सुगंधितेल करवुं, २६ लीलासहित चालवुं, २७ हाथी घोडानी परीक्षा करवी, २८ पुरुषस्त्रीलक्षण जाणवुं, २९ सुवर्णरत्ननेदनुं ज्ञान, ३० अढार जातिनी लीपी, ३१ तात्कालिक बुद्धि, ३२ वास्तुसिद्धि, ३३ वैद्यक्रिया, ३४ कामक्रिया, ३५ घटभ्रमण, ३६ सारिपरिश्रम, ३७ अंजनयोग, ३८ चूर्णयोग, ३९ हस्तलाघव, ४० वचनचतुरता, ४१ नोजनविधि, ४२ वाणिज्यविधि, ४३ मुखमंजन, ४४ शालिखंमन, ४५ कथा केहवी, ४६ फूलगुंथन, ४७ वांकुं बोलवुं, ४८ काव्यशक्ति, ४९ वेस बनाववो, ५० सर्वप्रकारनी नाषाउ बोलवी, ५१ अनिधानज्ञान, ५२ घरेणा पहेरवा, ५३ राजानी नक्ति करवी, ५४ घरनो आचार शीखवो, ५५ काव्यकरण, ५६ परने हराववो, ५७ धान्य रांधवुं, ५८ केश बांधवा गुंथवा, ५९ वीणा वजाववी, ६० वितंमावाद, ६१ अंकविचार, ६२ लोकव्यवहार, ६३ अंत्याक्षरिका, ६४ प्रश्नप्रहेलिका ए चोशठ स्त्रीयोनी कला नगवाने बतावी तथा श्रीऋषनदेवजीना सो पुत्रना नाम आवी रीतें छे. १ नरत २ बाहुबली, ३ मस्तक, ४ पुत्रां

गारक, ५ मल्लिदेव, ६ अंगज्योति, ७ मलयदेव, ८ जार्गवनाथ, ९ अंगदेव, १० वसुदेव, ११ मगधनायक इत्यादिक सो पुत्र जाणवा तेमांथी जरतने तो अयोध्यानुं राज्य आप्युं तथा बाहुबलीने तिक्षशिला नगरीनुं राज्य आप्युं अने बीजा अठाणु पुत्रोने अंग वंग प्रमुख देशोना राज्य आप्या पछी पोतें चार हजार पुरुषोनी साथे दीक्षा लइने विहार कस्यो हतो ते वखत चार मुष्टी लोच कस्यो हतो अने बीजा तीर्थंकर सर्व पांच मुष्टी लोच करे छे तेनुं कारण कही देखाडे छे जगवाने जेवारें चार मुष्टी लोच करी लीधो तेवारें पांचमी मुठीयें उखेडी नाखीये एटला केस पाछंल चोटलीमां रह्या एटलामां पवन वाह्यो तेने लीधे ते केसनी शिखा फरकीने पोहोली थइ तेथी घणीज सोजवा लागी ते जोइने इंद्रमहाराजे प्रजुने विनंति करी के महाराज केशनी शिखा घणीज सारी रमणिक देखाय छे माटे एमज रहे तो सारुं प्रजुयें पण ते शिखा एमज राखी ते जेम पद्मद्रहमांथी सिंधूनदी निकलती वखते सवा छ योजननी पोहोली छे अने पछी अनुक्रमे वधती वधती समुद्रमां मलतां साडी बाशठ योजननी पोहोलपणे थयली छे तेम ए चोटली पण मस्तकना थडमांथी नीकलेली ते आगल आगल पोहोलाइमां विस्तारने पामती दीठामां आवी तेथी पद्मद्रह सिंधुनदीना प्रवाहनी पेरें शोजाकारी देखवा लागी तेने लोक जाषायें अद्धा चोटली पण कहे छे हवे जगवान घोर अजिग्रहधारी थया थका ग्रामानुग्रामे विहार करतां आकरा परिसह सहन करता थका विचरे छे तिहां जगवानने यद्यपि छठ तपनुं पारणुं करवुं हतुं तथापि ते वखतमां सुपात्र साधुने दान देवानो विधि कोइ जाणतो न हतो जिक्षानो व्यवहार कोइ जाणतो नथी साधु ते शुं अने जिक्षा ते वली शुं? एवो कोइ समजे नही ते वखत कोइ जिक्षानो मागनार पण डुनीयामां

हतो नही तेणेकरी जिहां जाय तिहां कोइ अन्न आपे नही तेथी चार हजार साधुओ भूख तृषायें पीड्या थका प्रभुने आहारनो उपाय पूछवा लाग्या पण प्रभु कांइ बोल्या नही मौन पणे रह्या तेवारें · कच्छ अने महाकच्छने पूछ्युं तेणे पण कह्युं के अमे पण कांइ जाणता नथी तेवारें सर्वे विचार करवा लाग्या के आपणे प्रथमथीज भगवानने कांइ पूछ्युं नही अने हवे पाछा घेर जइने बेसवुं पण योग्य नथी तेम आहार कर्या विना पण रह्युं जाय नही तो हवे आपणने ए वनवासमां रहेवुंज भलुं छे एम चिंतवीने गंगानदीना दक्षिण तटना वनमां जटिल तापस थइने रह्या अने वृक्षमांथी नीचे तूटी पडेलां पत्र, फल, फूल आदिकनो आहार करवा लाग्या तथा वृक्षनी छालना वस्त्र पेहरे अने श्रीऋषभदेवजीनुं ध्यान करता थका विचरवा लाग्या ॥ हवे जेवारें प्रभुयें दीक्षा लीधी हती तेवारें सर्व पुत्रोने जुदा जुदा देशोना राज्य वहेंची आप्या हता ते अवसरमां कच्छ अने महाकच्छना पुत्र एक नमि अने बीजो विनमी ए बेहुने भगवानें पुत्रनी पेरे पाल्या हता ते बन्ने जण ते वखतें क्यांएक देशांतरें जता रह्या हता पण हाजर हता नही ते जेवारें पाछा फरी आव्या तेवारें तेणे भरतने आवी कह्युं के अमने राज्य केम न आप्यो भरतें कह्युं के हुं तमने थोडोक भाग आपुं तेणे कह्युं के ताहारा पासेथी न लहीयें तेवारें भरतें कह्युं भगवान जाणे ने तमे जाणो तेवारें बेहु भाइ भरतनी अवगणना करीने भगवाननी पासें आवी तेमना चरणकमलनी सेवा करीने कहेवा लाग्या के हे प्रभु तमे सर्वने राज्य दीधुं माटे अमोने राज्य आपो भगवाने तो संसारत्याग कर्यो छे माटे मौनपणे रह्या कांइ उत्तर दीधुं नही तेवारें ते बन्ने जण राज्यने अर्थें भगवाननी पाछल रह्या जिहां भगवान उभा

रहे तिहां जगा साफ करे, कांटो, कांकरो काहाडी नाखे, पाणी छटकावे, फूल विछावे, डांस मशकादिक उमाडे, त्रिकाल खड्ग धरे एम प्रजुनी सेवा जक्ति करता थका विचरे छे एकदा धरणींद्र जगवानने वांदवा आव्यो तेणे नमि विनमिने कह्युं के जगवान तो त्यागी छे माटे तमे जरतनी पासे जाउ ते तमोने राज्य आपशे तेवारें ते बोल्या जगवान विना अमे बीजा कोइ पासेथी राज्य मागीयें नही एवुं सांजली धरणींद्र तेमनी जक्तिथी संतुष्ट थइने कहेवा लागो के तमे एकमना थइने प्रजुनी सेवा करो छो तो महोटाना चरणनी सेवा केवारें पण निष्फल थाय नही तेथी हुं तमारा उपर निवाज्यो छुं माटे जे मागो ते हुं आपुं तो पण तेणे कांइ माग्युं नही तेवारें धरणींद्रे जगवंतना शरीर अदृष्टि अदृष्टि एटले जगवानना मुखें अवतरीने अडतालीश हजार विद्याउ पाठ गुणतांज सिद्ध थइ जाय एवी शीखावी अने गौरी, गांधारी, रोहिणी तथा प्रज्ञप्ति प्रमुख शोल देवीयो ते विद्याउनी अधिष्ठायकाउ छे ते आपी अने वैताढ्य पर्वतनी दक्षिण उत्तर श्रेणीनुं राज्य आप्युं पछी विद्याउ साधी बन्ने जाइउ विद्याधरनी ऋद्धि पाम्या त्यारे पोतानो सर्व स्वजनवर्ग लइने रथनुपुर चक्रवालादि पच्चास नगर उत्तर श्रेणिना तथा गगनवल्लन प्रमुख शाठ नगर दक्षिण श्रेणीना वसावीने विद्याना बलथी सर्व परिवार सहित तिहां रहेता हवा पछी ते बे जाइउने धरणींद्रे कह्युं के हे विद्याधरो तमे सांजलो जे एक तो केवली जगवाननी, बीजी जिनप्रतिमानी, त्रीजी चरम शरीरीनी अने चोथी प्रतिमाधर साधुनी ए चारनी जो तमे आशातना करशो अने वली एनुं उल्लंघन करशो एटले ए चारने रस्तामा मूकी नेना दर्शन सेवा कर्या विना एमज चाल्या जासो तथा परस्त्रीनी साथे जोरावरीथी जोग जोगवशो तो तमारी विद्याउ निःफल

थइ जाशे एवी रीते शिखामण आपीने ते शिखामण रत्नजीत उपर लखीने धरणेंद्र पोताने स्थानके गयो पछी भगवाननी सेवानुं फल भरतने कहीने शोलजाति विद्याधरोनी थापी दक्षिण श्रेणीनुं राज्य नमि करवा लाग्यो अने उत्तर श्रेणीनुं राज्य विनमि करवा लाग्यो ॥ इति नमि विनमि प्रबंध ॥ हवे भगवान पूर्वकृत अंतराय कर्मना उदय थकी एक वर्ष पर्यंत आहार विना रह्या क्यांय शुद्ध भिक्षा न पामता हवा जिहां गोचरीयें जाय तिहां महोटो माणस जोइने कोइ वस्त्र आपे, कोइ आभरण आपे, कोइ मणी, माणिक अने मुक्ताफलना थाल भरी आपे, कोइक तो घणी स्वरूपवान् एवी कन्याने शोल शणगारे शणगारीने आंपवा तयार थाय, कोइक तो हाथी, घोडा, रथ इत्यादिक वाहन आपवा आवे, कोइ एक धनभृत सुवर्णस्थालप्रमुख उचित वस्तु आपवा आवे एम घणा घणा पदार्थ लावीने लोको स्वामिनी आगल धरे ते सर्व अणखपता भणी स्वामी लीये नही पण अन्न कोइ आपवा आवे नही एवी रीते एक वर्ष पर्यंत स्वामी निराहारी रह्या पण आहार विना लगार मात्र मुग्या नही दीनपणुं आव्युं नही एवी रीतें भगवान विचरता थका एकदा गजपुर नगरे पधार्या तिहां बाहुबलीनो पुत्र सोमप्रभ नामे राजा राज्य करे छे तेनो पुत्र श्रेयांस कुमर युवराजा छे तेणे ते रात्रीये सुपनुं दीठुं हतुं जे मेरुपर्वत मलिन थइ गयो हतो तेने में अमृतना घडा थी धोइने उज्ज्वल शोभायमान कीधो तथा श्रेयांसना पिता सोमप्रभ राजाने एवुं सुपनुं आव्युं जे कोइ एक पुरुषने शत्रुयें घेरी लीधो ते श्रेयांस कुमरना सहाय थकी जय पामी छूटो थयो तथा ते नगरना सुबुद्धि शेठने सुपनुं आव्युं जे सूर्यना सहस्त्र किरणो पडता हता तेने श्रेयांस कुमरे पाछा सूर्यमां थाप्या ए त्रणे जण प्रभाते राजसभामां भेला थया तिहां स

हुयें पोतपोताने आवेला सुपनानी वात कही तेवारें सर्वेना मनमां एवो विचार आव्यो के आ सुपनानुं सर्वे फल श्रेयांसकुमरने थाशे अने श्रेयांसने कोइ महोटो लाभ थाशे एम कही सहु पोतपोताने घेर गया. पछी मध्यान्ह समये गोचरी करवाने माटें श्रीऋषभदेवजी घरघरने विषे फरवा लाग्या तेने लोको पूर्वोक्त रीते वस्त्राभरणादिक वस्तु आपवा लाग्या पण प्रभु लेता नथी तेथी लोकोमां कोलाहल थइ रह्यो छे जे भगवानतो कांइ पण लेता नथी एटलामां श्रेयांस कुमर गोखमां बेठा हता तेणे श्रीऋषभदेवजीने दीठा पछी इहापो करता जातिस्मरण ज्ञान पाम्या तेणेकरी पूर्वलो भव दीठो तेवारें जाण्युं जे अहो! हुंतो ए प्रभुनो पूर्वभवने विषे सारथी हतो तिहां में पण दीक्षा लीधी हती तिहां वज्रसेन तीर्थंकरें एवुं कह्युं हतुं जे ए वज्रनाभ राजर्षि भरतक्षेत्रमां पहेला तीर्थंकर थाशे तेज ए प्रभु तीर्थंकर, देवोना देव गोचरीयें भमता देखाय छे एम जाणी गोखथकी हेठा उतरीने कह्युं के हे प्रभु लोको साधुने दान देवानी रीतीमां वाकेब नथी एम कही पांच अभिगमन साचवी त्रण प्रदक्षिणा देइ॥ इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसिहिआए मत्थएण वंदामि ॥ १ ॥ ॥ एम खमासमण आपी पछी इच्छाकारि सुहराइ सुहदेवसि सुख तप शरीर निराबाध सुख संजम जात्रा निर्वहोछोजी हे भगवन् भातपाणीनो लाभ देवा पधारो म्हारुं गृहांगण पावन करो, म्हारे घरे पधारो, शुद्ध बेंतालीश दोष रहित आहार वहोरीने म्हारो निस्तार करो एम इहां श्रेयांस कुमर पहेला श्रावक प्रगट थया ते समयें शेलडीना रसे भरला एकशोनें आठ घडा श्रेयांस कुमरने कोइक भेट आपी गयेलो छे ते शुद्धमान घडा लइने श्रेयांस कुमरे भगवंतने भिक्षा लेवानी विनंती करी इहां कवी घटना करे छे के दान लेती वखतें प्रभुना बेहु हाथनो

मांहोमांहे विवाद थयो ते आवी रीते के प्रथम जमणो हाथ गद्गद्स्वरे करीने श्रेयांस कुमर प्रत्यें कहेतो हवो के अहो श्रेयांस तुं सांजल हुं श्रीरुषजदेवनो आजन्मनो सेवक छुं, में श्री रुषजदेवजीना प्रसादेंकरीने घणा महोटा महोटा उत्तम काम कस्या छे तेणेकरी हुं घणो प्रतिष्ठा पामेलो छुं ते महारा कर्त्तव्य तुं निरपेक्ष पणे सांजल प्रथम तो में इंडादिक देवोने देखता थकां जमणे अंगुठेकरीने प्रजुने अमृतपान कराव्युं एटले तीर्थंकरनी एवी रीतिज छे के पोतानी मातानुं तथा अन्य स्त्रीयोनुं स्तनपान नकरे पण जेवारें जुख लागे तेवारें पोताना जमणा हाथनो अंगुठो चूसवा मांके के तरतज तेमां अमृतमयी पुजल प्रणमी जाय तेथी क्षुधावेदनी उपशमी जाय ॥ १ ॥ वली वंसस्थापनाने अवसरें में इंडना हाथथी सेलडीनो सांठो ग्रहण करीने स्वामीनी वांछा पूरण करी माटें वंसस्थापवामां पण हुं आगेवान थयो ॥ २ ॥ वली में जरतराजाने तिलक करीने विनीता नगरीनुं राज्य आपी छ खंडनो जोक्ता कस्यो एटले राज्यस्थापनमां पण जमणे हाथेज मंगलिक कामे टीलुं कराय छे ॥ ३ ॥ वली जरतनी पेरेज में बाहुबलीने तिक्षशिला नगरीनुं राज्य आप्युं ॥ ४ ॥ तथा शेष अठाणु पुत्रने पण एज रीते में राज्य आप्युं ॥ ५ ॥ तथा सुनंदा अने सुमंगला ए बे कन्याउने पण हाथ मलाववाने अवसरे जमणे हाथे जालीने स्वामीने परणावी दीधी ॥ ६ ॥ वली में एक वर्ष पर्यंत स्वइच्छित वरसी दान आपीने त्रण जगतना मनोवांछित पूरण कस्या केमके दान पण जमणा हाथेज देवाय छे ॥ ७ ॥ ॥ वली हुं छत्र, चामर, चक्र, गदा खड्ग, धनुष्य, अंकुश. वज्र अने शंखादिक शुज लक्षणेंकरी बिराजमान थको शोजी रह्यो छुं एवा सर्व लक्षण हुं (जमणो हाथ) धारण करुं छुं अने लक्षण जोवावाला लोक पण महा

रीज रेखाउं आदिक सर्व लक्षणने जुए ले ॥ ७ ॥ वली तीर्थयात्रा, पुत्रप्राप्ति, सौनाग्य, यश कीर्त्तिनी सूचक रेखाउंनो धारक पण हुंज बुं एटले ए सर्व नावोने सूचववा वाली रेखाउं जो जमणा हाथमां होय तोज तद्रूप फलनी प्राप्ति थाय ले ॥ ए ॥ वली हुं चोखा देखवामां सोधवामा चतुर व्यापारवान बुं एटले चोखा गोधूमादिकमांथी कांकरा प्रमुख सोधी काहाडवा ते जमणा हाथथीज बनी शके ले ॥ १० ॥ वली दानने विषे, नोजनने विषे, देवपूजाने विषे, परमेश्वरना स्मरणने विषे, प्रीति बांधवाने विषे, बोल तथा कबुलात आपवाने विषे, दानने विषे, इत्यादिक शुन शुन कार्योमां महारोज अधिकार ले ॥ ११ ॥ एवी रीते हुं सर्वनी उपर बुं अने महोटा महोटा कामोमां महारो अधिकार ले तो कहो आ स्वल्प सेलडीना तुब रसनी हेंगल केवी रीतें थाउं वली में त्यासी लाख पूर्व लगें नगवाननी साथें राज्य साम्राज्य पाल्युं तो हवे हुं हमणा नगवंतनी आगल थइने केवी रीतें याचना करावुं तेज कारणथी में खावुं, पीवुं, पहेरवुं, उढवुं, नाटक देखवुं, इत्यादिक क्रीडाविना मौन धरावीने वन गहन अटवीउंमां प्रजुने नमाव्या तो हवे आ सेलडीना रसने हुं ग्रहण न करुं माटे तमे डावा हाथने कहो तो ते मागी लेशे एवा जमणा हाथना वचन सांनलीने डावो हाथ बोल्यो के हे निर्लज्ज तुं वृथा पोतानी मेले पोताना आत्मानी महोटाइ करीने शुं प्रशंसा करे ले पोताना मुखथी जे पोतानी महोटाइ करे तेमां कोइ गुण होय तोपण ते लघुताने पामी जाय अने परनी प्रशंसा करवाथी जो निर्गुणी होय तो पण गुणवान् थाय गुणवंत होय तेना गुण तो पोतानी मेलेज प्रगंट थाय जेम कपूरनो सुगंध, रत्ननुं तेज अने मणिनुं निर्विषपणुं इत्यादिक जे गुणो ले ते पोतानी मेलेज प्रगट देखाइ आवे ले पण ते कोइ कोइने आगल कहेवा जाता नथी वली एकठाज रहेनारा बे जण होय तेमां

थी एक जण उठीने पोताना गुण बीजानी आगळ वर्णवी देखाडे ते युक्त नथी जेम माताना मुख आगळ मामानुं वर्णन करी देखाडवुं युक्त कहेवाय नही तेनी पेठे ए पण जाणी लेवुं॥ माटे अहो श्रीश्रेयांस श्रीऋषभ देवना परपोत्रा महारुं पण कर्तव्य जे छे ते तुं सांभळ परमेश्वरे जे बे कन्याने परणवानुं स्वीकार्युं तेमने सूवा बेसवानुं ठेकाणुं तो मेंज आप्युं कारण के स्त्रीयो जे छे ते पतिना डावापासा तरफ सूवे बेशे छे एटले जमणे हाथे तो मात्र स्त्रीनुं हाथ झालीने उगाडी मूकी पण तेमने बेसवा माटे स्थानक तो में आप्युं ॥ १ ॥ वळी हुं ढाल आगळ राखीने संग्रामनेविषे स्वामीनुं रक्षण करुं छुं अने जमणो हाथ तो खड्ग उपाडीने पाछो नासी जाय छे ॥ २ ॥ वळी हुं संग्राममां धनुष्यने आगळ धारण करीने उभो रहुं छुं अने आ जमणो हाथ तो तीर लइने कानने विषे चुगलनी पेरे पेशे छे ॥ ३ ॥ वळी आंक गणवानो व्यापार पण महारी पासे थाय छे एटले आंकनी वामगति होय छे ॥ ४ ॥ वळी ग्रामांतरें प्रयाण करतां गधेडो पण जो महारी दिशा तरफ आवीने बोले तो सिद्धिदायक छे ॥ ५ ॥ तेमज देव चकली पण डावे पासे आवी बोले तेवारें शुभ फलनी सूचवनारी थाय छे ॥ ६ ॥ वळी प्रथम प्रयाणने विषे प्रथम रात्रीना पहोरमां सीयाळीया पण महारी दिशायें रह्या थका बोले तो सिद्धिना करवावाळा थाय ॥ ७ ॥ वळी जे प्राणी रोगादिकें पीडाणो होय ते पण घणुं करीने डावे पासे सूवे तो तेने समाधिकारक थाय ॥ ८ ॥ वळी महारी तरफनी चंद्रनाडी वहेतां जे शुभकामनो प्रारंभ कर्यो होय ते सिद्धिदायक थाय ॥ ९ ॥ वळी हे श्रेयांस तुं सांभळ के आ पापी जमणा हाथे प्रभुने परणवाने अवसरे कन्याउनो हाथ ग्रहण कर्यो तेवारें पण मने बोलाव्युं नही ॥ १० ॥

वली कंसार पण एणे एकलेज खाधुं पण एम न जाण्युं जे आ म्हारो जाइ नूख्यो छे माटे थोडोक एने पण बोलावीने खवाडुं एवो विचार कर्या विना म्हाराथी कपट करोने ए एकलोज खाइ गयो तेथी ए निःकेवल पेट जरो देखाय छे, फोकट पोताना मुखथी पोताना गुणनुं वर्णन करे छे ॥ ११ ॥ वली हे श्रेयांस तुं सांजल बीजी पण एनी निष्ठुरता कही देखाडुं छुं के जे वखत मिष्टान्नपान जोजन करे तेवारें जोजन तो पोते करे अने मक्षिकाउ म्हारा पासे उडावे तो पण हुं ते वखत म्हारी दाक्षिणताथी म्हारो म्होटो जाइ जाणीने एने कांइ कहुं नही ॥ १२ ॥ वली ए जमणा हाथमां चतुराइ किंवा बीजो कोइ गुण पण कांइ नथी कारण के जे वखत मस्तकें पागडी वींटे छे ते वखत एतो जेम तेम वींटी नाखे छे पण पाछलथी बरोबर आंटा प्रमुख सुधारवा करवानुं काम, बराबर रचना करवी, सुंदर आकार करवो तेतो सर्व हुंज करुं छुं ॥ १४ ॥ वली आ जमणो हाथ जे छे ते जूवटानो रमवावालो छे ॥ १५ ॥ ॥ इत्यादिक हे श्रेयांस हुं केटलुं तमोने कहुं अमारा बे जणना सारा माठा लक्षण तथा गुण अने अवगुणने सर्व जगत्र जाणे छे अथवा आ श्री ऋषजदेव स्वामी पोतेंज त्रण लोकना नाथ छे माटे सर्व जाणे छे एवी रीते अमो बेहु जणने विवाद करता थका एक वर्ष व्यतीत थइ गयुं तेथी जगवान् वर्षी तपना करनार थया एम कुंटुंबनो विरोध केवारें पण कल्याणकारी न थाय ते माटे हे श्रेयांस ए घणोज हठीलो छे तथापि हुं तहारी दाक्षिणताथी एने समजावुं छुं केमके कोइ प्रकारे जेवारें कुंटुंबमां विरोध उत्पन्न थाय छे तेवारे संबंधीने संबंधीउज पोतपोतामां प्रतिबोध आपी समजावे छे एम कही मावो हाथ जमणा हाथने कहेवा लाग्यो के हेजाइ आ अवसरे आपणने विवाद



श्रेयांसकुमर भगवानने सेलडीनो रस वहोरावेछे.

करवुं घटतुं नथी हमणा स्वामीने केवल ज्ञाननी उत्पत्तिनेविषे तथा तीर्थ प्रवर्तननेविषे अने संघस्थापनाने विषे तमारुंज काम छे एमां बीजा कोइनुं काम नथी महोटाउने पोतानुं काम ते पारके अर्थेज थाय छे जेम मातायें पीधेलुं दूध ते बालकने अर्थेज थाय छे ते कारणे आ वखतें आपणने विरोध करवुं योग्य नथी एवी रीते जावो हाथ बोली रह्यो तेवारें श्रेयांस कुमर बेहु हाथने समजाववा लाग्यो जे अरे जावा जमणा हाथो तमे बन्ने जण पोतपोताना काममां कल्याणकारी छो परंतु हमणा तमे म्हारी प्रार्थना सफल करो ते आवी रीते के तमे बेहु एकठा थाउ के जे थकी जगवानने बार मासना तपनुं पारणुं थाय अने म्हारे पण उत्तम दान आपवाथी संसारसमुद्र थकी तरवुं थाय माटे तमे जला थइ म्हारा उपर कृपा करीने बेहु जण जगडो मटावीने जेला थइ जाउ एवी श्रेयांसनी विनंति सांजलीने बन्ने हाथ पसलीने आकारे एकठा मली गया तेवारें श्रेयांस कुमरे शुद्ध जावे करीने सेलडीनो रस वहोरावी दीधो तेनी शिखा उंची चडी तथापि एक बिंदुमात्र पण नीचे पड्यो नही जो हजारो घडा हाथमां उंधावाली आपो अथवा सर्व समुद्रोना पाणी नाखो तो पण एक टीपुं हाथथी बाहेर पडी जाय नही मात्र शिखा उंची चढती आवे एवी लब्धि जेवारें प्राप्त थयेली होय तेवारें करपात्री थाय. यदुक्तं ॥ माइज्ज घडसहस्सा, अहवा माइज्ज सागरा सवे॥ जस्से आरिस्स लद्धि, सो पाणिपडग्गहा होइ ॥ १ ॥ ॥ ए जगवानने लब्धिनो प्रजाव जाणवो पछी स्वामीयें तिहांज पारणुं कर्युं ते वखत पांच दिव्य प्रगट थया एकतो गंधोदक फूलनी वृष्टि थइ, बीजुं वसुधारानी वृष्टि थइ, त्रीजुं वस्त्रनी वृष्टि थइ, चोथुं आकाशें देव दुंदुभि वागी, पांचमुं "अहोदानमहोदान" एवी उद्घोषणा देवोयें करी आ पात्रदानथी श्रेयांस

कुमरे मोक्ष फल उपार्जन कर्युं, जिहां जगवाने पारणुं कर्युं तिहां रत्नमय पीठ कराव्युं, ए जगवानना पारणानो दिवस वैशाख शुदि त्रीजनो हतो तेथी अक्षय त्रीज एवे नामे ते पर्व जगतमां मान्य थातो हवो, लोकोयें प्रशंसा करी के श्रीऋषजदेव सरखो पात्र अने सेलडीना रस सरखो शुद्ध आहार तथा श्रेयांस कुमरना जेवो जाव ए कोइ महोटा पुण्यना योगवडे थाय छे॥ यतः॥ रिसहेससमं पत्तं, निरवद्य इक्कुरससमं दाणं॥ सिद्यंससमो जावो, हविद्य जइ मग्गिश्चं हुज्जा॥ १॥ श्रीआदिनाथनुं पारणुं सेलडीना रसनुं थयुं अने बीजा तीर्थंकरोनुं प्रथम पारणुं खीर जोजननुं थयुं हवे ते वखत श्रेयांस कुमरने लोकोए पूछ्युं जे अमे तो जगवान आहार लेशे एवुं जाणता न हता अने तमे शी रीते जाण्युं जे जगवान आहार लेशे तेवारें श्रेयांस बोल्यो के हुं जगवानना जीवनी साथे आठ जव पर्यंत रहेलो छुं तेथी दान देवानो विधि सर्व जाणुं छुं तेवारें लोकोयें पूछ्युं के ते आठ जव केवी रीते छे तेवारें श्रेयांसे कह्युं के पहेला जवमां जगवाननो जीव ललितांग देव हतो तिहां हुं एमनी स्वयंप्रजा नामें देवी हती, बीजा जवमां स्वामी वज्रंधर राजा थयो हुं तेमनी श्रीमती नामें राणी थइ, त्रीजा जवमां अमें बेहु युगलीया थया, चोथा जवमां बेहु जण सौधर्म देवलोकमां जइ मित्रपणे देवता थया, पांचमा जवमां प्रजु वैद्यपुत्र जीवानंद नामे थया अने हुं एमनो मित्र थयो, छठा जवमां अच्युत देवलोके जइ बेहु जण देवतामां मित्रपणे उपना, सातमा जवमां प्रजुतो वज्रनाज नामे चक्रवर्ती थया तिहां हुं एमनो सारथी थयो हतो, तिहां तीर्थंकरनी पासेंथी अमें सहुयें दीक्षा लीधी, आठमा जवमां सर्वार्थसिद्ध विमानें देवता पणे थया तिहांथी चवी ए जगवान थया अने हुं एमनो पोतरो श्रेयांस छुं थयो ते वात

एटला दिवस पर्यंत हुं कांइ पण जाणतो नहतो परंतु आजे में नगवानने दीठो तेथी मुजने जातिस्मरण ज्ञान उपनुं तेथी में जे सातमा नवमां दीक्षा पाली हती तेनी सर्व रीत मने जाण वामां आवी तेवारें में साधुनी मर्यादायें आहार वहोराव्यो, ए महोटा पुरुष छे, एमने कांइ धनादिकनी गरज नथी, ए वात सांजलीने सर्व लोकोए साधुने आहार आपवानो विधि जाणी लीधो हवे नगवानने एक वर्ष पर्यंत जुख्यो रहेवुं पड्युं अने आहार मल्यो नही ए कया अंतराय कर्मना उदयथी थयुं ते कही देखाडे छे नगवान पूर्वें कोइक नवमां शेठनो जीव हता ते शेठ एक दिवस करसणीयोनी पासें उगराणी करवा गया तिहां ते करसणीयें खलो कर्यो हतो तेनो धान काहाडवा सारुं ते करसणी पोताना बलदोने धानमां फेरवे छे ते बलद फरता फरता जे वखत नीचें नमीने धानमां मोहोडुं घाले तेवारें करसणी बलदोना मोहोडाने उपर चाबका मारे ते जोइ शेठने दया आवी तेथी शेठें कणबीने कह्युं के अरे एने तुं फोकट शावास्ते मारे छे एमना मोहोडा उपर छीकुं बांधी मूक तो धान खाशे नही पछी बधा करसणीउंये तेमज छीका बांध्या ते छीका बार पोर सुधी बांध्या रह्या ए अंतराय कर्म नगवाने बांध्यो हतो ते आ नवमां उदय आव्युं तथा कोइक आचार्य कहे छे के नगवाने जेवारें महाविदेह क्षेत्रमां छ मित्रनी साथें चारित्र लीधुं हतुं ते छएमां श्रीऋषननो जीव महोटो हतो ते सपरिवार विहार करता करता कोइक कणबीना खेत्रनी वाडे जाय छे तेवामां ते कणबी पण धान काहाडवा माटें बलदोने फेरवे छे हालरुं खेडतां वचमां वचमां ते बलदो नीचा थइ थइने धान खाये तेवारें ते कणबी तेने परोणे करी मार आपे ते देखी गुरु चिंतववा लाग्या जे ए कणबी बिचारा बलदोने परोणानो मार आपे छे ते करतां जो ए बलदोना मुखे

शीकुं बांधी मूके तो कांइपण धान खाइ शके नही अने हींमथांज करे एवी रीतें मुखथी तो बोल्या नही पण मनमां चिंतव्युं हतुं पछी ते अणआलोयुं कर्म आ नवमां उदय आव्युं तेना प्रनावथी प्रनु एक वर्ष सुधी आहार पाणी पाम्या नही ए पागंतर छे, माटे कोइने पण अंतराय पाडवो नही. एम आ अवसर्प्पिणी कालमां श्रेयांसकुमरथी पहेल वहेलुं सुपात्रदान प्रवर्त्युं ॥ यतः ॥ मिथ्यादृष्टिसहस्रेन्यो, वरमेको जिनाश्रयी ॥ जिनाश्रयिसहस्रेन्यो, वरमेकोह्यणुव्रती ॥ १ ॥ ॥ अणुव्रतिसहस्रेन्यो, वरमेको महाव्रती ॥ महाव्रतिसहस्रेन्यो, वरमेको जिनेश्वरः ॥ २ ॥ ॥ जिनेश्वरसमं पात्रं, न नूतं न नविष्यति ॥ यतः पात्रविशेषेण, देयं दानं शुनात्मन्निः ॥३॥ ॥ इति नगवंत पारणाधिकार ॥ ॥ हवे नगवान विहार करता थकां बहुलीदेशमां तिक्षशिला नगरीने उद्याने संध्या समयें काउसग्गें रह्या तिहां वनपालकें जइने बाहुबलिराजाने वधामणी दीधी तेवारें वनपालकने दान आपी संतोषीने पछी मनमां विचार्युं के हमणा सांज पडी अवारुं थयुं छे तेथी थोडा वखतमां सर्व परिवार नेलो थइ शके नही केमके त्रण लाख तो महारा पुत्र छे वली पौत्रादिक अनेक छे. ते सर्व एकठा थइ शके नही, माटे प्रनातें महामहोत्सवसहित प्रनुने वांदवा जइशुं एम चिंतवी बेशी रह्यो पछी प्रनातें नगरी शणगारी घणा आमंबरसहित प्रनुने वांदवा गयो एटलामां नगवानतो अप्रतिबंध विहारी छे माटे बाहुबली आव्यानी अगाउ विहार करी दूरदेशे चाल्या गया तेथी बाहुबलीये नगवानने दीठा नही माटे घणो खेद करवा लाग्यो कानमां आंगलीउ नाखीने उच्चस्वरें रुदन कर्युं अने प्रनुना बे पग पासें उनो रही बोल्यो हे बाबा आदम हे बाबा आदम एवी बांग मारी तिहांथी बांग चाली हमणा पण ते समुदायवाला कहे छे ॥ पछी नगवाननी नक्ति करवाने अर्थे जिहां

प्रभु काउस्सग्गमां ऊभा हता ते स्थानकें धर्मचक्र एवे नामे आठ योजनना विस्तार वाळो एक योजन ऊंचो, हजार खूणानो हजार पगथीआवाळो एवो रत्नमय पीठ बांध्यो थून कराव्यो तेनी ऊपर भगवानंना पगला थाप्या अने जाण्युं जे एज भगवान छे. एवी बुद्धिथी नमस्कार कर्यो बीजा लोकोये पण तेवोज महिमा कर्यो पछी पण तिहां आवीने परणामादि विधि साचवतो हतो तिहांथी बाहुबलीकृतपीठनो महिमा चाल्यो. एम प्रभु पृथ्वीतले विहार करे छे ॥ हवे जे दिवसथी भगवान दीक्षा लइने विहार करी गया ते दिवसथी मरुदेवीमाता भरत महाराजने ओलंभा आप्यां करे छे अने कहे छे के हे भरत जेम कमलना फूलोनी माळाने नाखी आपीयें तेवी रीतें ए ऋषभनो मुजने छोडीने चाल्यो गयो अने एकाकी वनवासी थयो छे, भुख तृषायें पीडातो हशे, क्यांएक मसाण अथवा गुफाओमां तपस्या करतो हशे, टाढ ताप सहन करतो हशे, वर्षाकालमां भीजातो हशे, मांस मत्सर मंक मारता हशे, अरे हुं पापणी छुं जे पुत्रने आटलुं दुःख थयुं छे ते सांभळुं छुं तेम छतां मरती केम नथी माटे महारा जेवी दुःखणी क्यांय पण कोइ हसे नही, अरे भरत तुंतो राज्यना सुखमां लोभाणो छो, महारा छोकरानी खबर पण काहाडतो नथी, तुंतो सर्व प्रकारनी सुंदर रसोयो करीने खाय छे अने महारो पुत्रतो भिक्षा मागी शुका टूकडा खाय छे, तुंतो सारा मजाना घरेणा गांगां पहेरे छे अने महारो पुत्रतो नग्न फरे छे, तुंतो सुख सय्यायें सूवे छे अने महारो पुत्र कठण कांकरा कांटावाळी जमीन ऊपर सुइ रहे छे, अरे जे मधुर गीत गानें करी जागतो हतो ते शृगाळादिकना दुष्टस्वरें जागतो हशे वळी तेनी भूख तृषा अने शरीरनी शुश्रूषानी खबर कोण लेतो हशे तथा अणवाणे पगें चालतो हशे इत्यादिक अनेक ओलंभा आपती रहे छे, पुत्रनी चिंताथी

मरुदेवी माताने आंखें पम्ल आवी गया तेने वली जरतराजा समजावे के माताजी तमे कांइ दुःख करो नही तमारो पुत्र घणो सुखी छे तेवारें फरी माता कहे के मने देखाड तेने जरत कहे के हवे थोडा दिवसोमां अहींआं आवशे तेवारें हुं तमोने देखाडीश एम मरुदेवी माता जरतने उलंजा देता थका रह्या छे ॥ हवे श्रीऋषजदेव अरिहंते एक हजार वर्ष पर्यंत कायाने वोसरावी दीधी शरीरनी शुश्रूषा त्यागी आपी, एमने कांइ उपसर्ग थया नही परंतु एक वर्ष आहार मल्यो नही एटलुं कष्ट दीठुं ते कष्टने सहन करता थका, आत्माने जावता थका, एक हजार वर्ष वीत्या त्यारे सीयालानो चोथो महिनो, सातमुं पखवाडियुं, फाल्गुनवदि अगीआरसने दिवसें पूर्वान्ह कालना समयनेविषे पुरिमताल नगरना शकटमुख नामा उद्यानमां न्यग्रोध वडवृक्षनी नीचे, पाणीयें रहित अठम तप कीधे थके, उत्तराषाढा नक्षत्रें चंद्रमानो योग आवे थके, शुक्लध्यानने विचाले वर्त्ततां थका, जेनी समान बीजो कोइ जगतमां पदार्थ नथी एवुं अनोपम अनंतुं केवलज्ञान अने केवलदर्शन उपनुं तेनायोगें यावत् सर्व जावने जाणता देखता थका विचरे ॥ २१२ ॥ हवे एवा अवसरमां जरतमहाराजनी आयुधशालामां चक्ररत्न पण प्रगट थयुं तेवारें ऋषजदेवना केवलज्ञाननी अने आयुधशालाये चक्ररत्न उपनानी ए बेहु वधामणी जरतजीने साथे आवी ते बेहु वधामणीयांने हर्षदान आपीने विदाय कस्या पछी जरतजी विचारमां पड्या के ए बे वधामणी साथे आवी एमांथी कोनो महोत्सव पहेलो करुं एम क्षणेकवार विचारीने निश्चय कस्यो के चक्ररत्नतो संसारिक छे अने श्रीतीर्थंकरनो केवल महोत्सव करवो ते लोकोत्तर छे वली पिताने पूज्या तो सर्वने पूज्या माटे प्रथम इहलोक अने परलोकनो सुखदाइ जे केवलज्ञान तेनो महोत्सव करुं पछी चक्ररत्ननी


चित्र ७३
भरतमहाराज हाथीना
स्कंध उपर बेठा
थका मरु देवी
माताने भगवान-
नुं समवशरण
देखाडे छे.

पूजा करीश एम निरधारी श्रीमरुदेवीमाता पासें आवीने कहेवा लाग्या के हे माताजी तमे मुजने उलंजा देता हता ते तमारा पुत्र आजे अहींआं पधार्या छे माटे चालो महारी साथें हुं तमारा पुत्रनो महिमा तमोने देखाडुं एम कही मरुदेवीजीने हाथी उपर बेशाडीने पछी पोते पण बेग बेशीने घणा आडंबरसहित तिहांथी चाल्या ते चालतां चालतां जेवारें समो सरणने ढुकडा आव्या तेवारें माताजी बोल्या हे जरत आ देवसंबंधि वाजा किहां बाजे छे, जरतजीयें कह्युं ए वाजा तमारा पुत्रनी आगल वाजे छे तोपण माताजीयें मान्युं नही वली आगल चालतां घणा देव अने देवीउ समवसरणनी रचना करवा अने केवलज्ञाननो महो त्सव करवा आव्या छे ते पोतपोतामां एक बीजाने हांकोहांक करी रह्या छे ते सांजली वली पण मरुदेवीजीयें जरतने पूछ्युं के आ कोलाहल शानो थइ रह्यो छे तेवारें जरतराजा बोल्या हे माताजी आ तमारा पुत्रनी पूजा करवाने माटे देव देवीउ आवे जाय छे तेमनो कोलाहल थाय छे तोपण मतायें मान्युं नही वली आगल जातां जरतमहाराजायें कह्युं के हे माताजी आ रूपां, सोना अने रत्नमयी एवा त्रण गढवालुं तमारा पुत्रनुं घर तो जूउ! एनी शोजानुं हुं शुं वर्णन करुं एनुं वर्णनतो क्रोडो गमे ब्रह्माउ पण करी शके नही ए वातने माताजी सत्य करी मानती थकी पोतानी आंखोने हाथथी मसलवा लागी तेथी पटल दूर थइ गया तेवारें खरे खरो समोसरण दीठो तिहां अनेक देव देवीयोने देखी मनमां विचार कर्यो के जुउतो खरा आ मोहनी विकलता कहेवी छे हुंतो जाणती हती के महारो पुत्र डुःखी छे अने आतो घ णोज सुखमा बेठो छे हुंतो रडीरडीने आंधली थइ गइ आंखे पटल वली गया अने एणेतो मने संजारी पण नही, महारी तो रुषजरुषज करतां जीज पण सुकाइ गइ हती वली जरतने

उलंना देती हती जे महारो पुत्र नूख, तृषा, टाहाड, तडका तथा वर्षाद आदिकनी पीडा खमे ने अने उपान्ह तथा वाहाने रहित थको एकाकी डुंगर, वन तथा अटवीउमां भ्रमण करे ने तेने मनावी लइ आवो अने एतो महारा डुःखने कांइ पण जाणतो नथी, सुखवार्त्ता पण पूछतो नथी, आंहीं आव्यो तो पण मने संदेसो मोकल्यो नही माटे धिक्कार ने ए मोहने तो हवे माहारे पण पुत्रनी साथे शुं काम ने, हुं कोण अने आ पुत्र ते वली कोण, जगतमां कोइ कोइनुं नथी, सर्व कोइ आपस्वार्थि ने, अरे महारा पुत्रें मने एटलुं पण कह्युं नहीं जे हुं सुखीयो बुं, महारी चिंता करशो नही, परंतु ए शावास्ते एम कहे केमके एतो निरागी ने एने कोइनी उपर राग रह्यो नथी अने हुंतो सरागी बुं तेथी मनेतो एवा विकल्प थाय एमां कांइ संसय नथी तो हवे महारे पण ए निरागी साथे श्यो प्रतिबंध करवो ए एकपरका स्नेहने धिक्कार हो इत्यादिक चिंतवना करी सर्व वस्तु उपर ममत्वरहित थइ थकी मरुदेवीजी माता शुनध्यानें अव्यक्त नावना नावता थका केवलज्ञान पामी तेज वेलायें अंतगड केवली थइने मोक्ष पोहोता. इहां कवीश्वर कहे ने ॥ यतः ॥ पुत्रो युगादीशसमो न विश्वे, भ्रांत्वा क्षितौ येन शरत्ससहस्रम् ॥ यदर्जितं केवलरत्नमग्र्यं, स्नेहात्तदेवार्पित मातुराङ्कः ॥ १ ॥ मरुदेवीसमा नास्ति, याऽगात्पूर्वं किलेक्षितुं ॥ मुक्तिकन्यां तनूजार्थं, शिवमार्गमपि स्फुटम् ॥ २॥ अर्थः– ए श्रीयुगादिदेव सरखो पुत्र बीजो कोइ विश्वमां थयो नथी अने थाशे पण नही के जेणे पृथ्वीनेविषे एक हजार वर्ष सुधी भ्रमण करी कष्ट सहन करीने उपार्ज्युं कमाव्युं एवुं जे केवलज्ञान रूप रत्न ते प्रधान स्नेह थकी प्रथम पोतानी माताने आप्युं तेमज मरुदेवी समान कोइ माता पण थइ नथी अने थाशे पण नही केमके जे पुत्रने परणाववाने अर्थे

मुक्तिकन्या जोवाने माटे आगलथी त्यां गइ के कन्या जोइने म्हारा पुत्रने परणावुं एम आ अ
वसर्पिणीनां पहेलवेला श्रीमरुदेवीजी मोक्ष गया ॥ इंद्रादिकें तेना शरीरनुं संस्कार करी
खीरसमुद्रमां परठव्युं वली इंद्रना वचनथी शोक निवर्त्तावी, वावीमांहे स्नान करी, जरत म
हाराजें हर्ष शोकाकुल थकां जइ जगवंतने वांद्या इहांथी पहेलवेलुं केवली नाम प्रवर्त्त थयुं
॥ हवे प्रथम तीर्थंकर नाम थयुं ते कहे वे ॥ जरत महाराज श्रीरुषजदेवस्वामीने नमस्कार
करीने परषदामां बेठा, तेवारें जगवाने धर्मोपदेश दीधो तिहां पहेली देशनामां रुषजसेन प्रमुख
पांचसो जरतना पुत्र तथा सातसें जरतराजाना पोतरा सर्व मली बारसें कुमरोयें दीक्षा लीधी
ए बारसो कुमरोमां मरिचि पण जेलो जाणवो तिहां पुंमरीकादिक चोरासी गणधरोनी थापना
करी तथा ब्राह्मीयें बाहुबलने पूबीने दीक्षा लीधी ए प्रथम साध्वी थइ अने जरत महाराज
श्रावक थयो तथा सुंदरी दीक्षा लेती हती तेने घणी स्वरूपवाली जाणीने स्त्रीरत्न स्थापवा
सारुं जरतें दीक्षा लेवानी आज्ञा आपी नही तेवारें ते श्राविका थइ एम साधु, साध्वी, श्रावक
अने श्राविका ए चतुर्विध संघने थापीने धर्मनी प्ररूपणा करी एटले तीर्थंकर नाम थयुं ॥ जे
वृक्षनी नीचे प्रजुने केवलज्ञान उपनुं तेनुं नाम प्रयागवड थयुं ते वृक्षनी लोकोमां पूजा चा
ली हमणा पण प्रयागवड नामें करीने ते पूजाय वे तथा कब अने महाकब ए बे तो तापसज
रह्या माटे ते बे टालीने बीजा सर्व जद्रक परिणामना धणी जे तापसो थइ गया हता तेमणे
आवी फरीथी दीक्षा लीधी, जरतमहाराज वांदीने पाबा अयोध्यामां आव्या अने श्रीरुषज
देवे अनेक जीव तारवाने माटे तिहांथी अन्यत्र विहार कर्यो ॥ ॥ हवे जरतराजायें घरे
आवीने चक्ररत्ननो अठाइ महोत्सव कर्यो पबी ब खंम पृथ्वी साधवाने अर्थें जरत महा

राज सैन्य लइ चाल्यो तेनी आगल हजार देवतायें अधिष्ठित चक्ररत्न चाल्युं ते जेटले दूर चक्ररत्न जइ रहे तेटला योजन सैन्य पण चाले, अनुक्रमें गंगादेवीना घरने विषे तेणे कह्युं माटे रह्या तिहां नवी नवी जांते नवा नवा वेशें गंगादेवीनी साथे विषयसुख जोगव्या पछी गंगादेवीयें मार्गे आप्यो तेवारें तामस गुफा जांगी म्लेछोना देश साध्या एम षट् खंड साधीने शाठ हजार वर्षे जरत पाछा अयोध्यायें आव्या वली नमी विद्याधरने घरे पुत्री स्त्रीरत्न नवुं उपन्युं ते जरतजी परण्या छे अने सुंदरीयें पण शाठ हजार वर्ष सुधी आयंबिल तप कर्युं तेथी डुर्बल थइ गइ पछी जरत जेवारें आव्या तेवारें सुंदरीयें जरतने मोतीयें वधाव्या, सुंदरीने डुर्बल देखीने लोको उपर जरत खीज्यो अने कहेवा लाग्यो के तमे एनी सार संजाल कांइ करी नही तेवारें लोक बोल्या एणे आयंबिल तप कर्युं तेथी डुर्बल थइ छे पछी जरतजीयें तेने संयम लेवानी आज्ञा आपी सुंदरी पण दीक्षा लइने साध्वी थइ हवे जरतराजा अयोध्यामां सुख जोगववा लाग्यो एवामां आयुधशालानो अधिष्ठायिक पुरुष आवीने जरतने कहेवा लाग्यो के स्वामी चक्र आयुधशालामां आवतुं नथी तेने जरते पूछ्युं के केम नथी आवतुं? तेवारें अधिकारीयें कह्युं तमारा जाइयो तमारी आज्ञा मानता नथी तेथी नथी आवतुं. तेवारें जरतें सर्व जाइउनी उपर दूत मोकलीने कहेवराव्युं के जो तमो राज्य करवानी चाहना राखता हो तो सर्वे जाइउ महारी आज्ञा मानो, सेवा करो नहीतो राजनो त्याग करो ते .सांजली अठाणु जाइयें विचार्युं जे आपणने राज्यतो पिताजीयें दीधुं छे तो जरतनी चाकरी शामाटे करीयें एम चिंतवी जगवान पासें गया तेने जगवाने अंगारा करवा वालानो दृष्टांत आप्यो, सूयगडांग सूत्रनो वेतालिक अध्ययन संजलाव्युं तेवारें

प्रतिबोध पामीने सर्व नाइये दीक्षा लीधी, नगवानना शिष्य थया, ए वात दूतें आवीने नरतने कही तो पण चक्ररत्न आयुधशालामां आवे नही तेवारें नरतनो मुख्य मंत्रीश्वर बोल्यो हे स्वामी? बीजा तो सर्व आपनी आज्ञा माने छे पण बाहुबली महा अहंकारनो धरनार छे ते तमारी आज्ञा मानतो नथी, पोतानी नुजाना बलनुं पराक्रम घणुं जाणे छे माटे एने मूलथी उगाडी देवो जोइयें, ए महोटो रोग छे ते तमोने व्याधि उत्पन्न करे छे एवुं सांनली नरतराजायें सुवेग नामे दूतने सर्व वात समजावीने बाहुबलीनी पासें मोकल्यो ते दूतने जतां थकां पुंठे छींक थइ, वस्त्रें कांटो वलग्यो, रथनी पींजणी नांगी, जमणो रासन बोल्यो इत्यादिक अनेक अपशकुन मार्गमां थयां तोपण ते वन, अटवी अने पाहाड प्रमुख उल्लंघन करीने बाहुबलीना देशे पोहोच्यो तेने मार्गनी धूले नयो देखीने गोवालणीयो तथा पाणीहारीयोए पुछयुं के तमे कोण छो? क्यांथी आव्या अने कोण तमारो मालेक छे तेवारें दूतें कह्युं हुं नरतराजानो दूत छुं ते सांनली स्त्रियो बोली के नरत ते शुं जे अमारा पहेरवानी कांचलीउमां नरत काढीयें छैयें ते नरत अथवा वासणमां नरत, किंवा रोग संबंधि नरत ए त्रण नरततो अमे जाणीयें छैयें परंतु ए त्रण विना बीजो कोइ नरत राजा छे एवुंतो अमे सांनल्युं पण नथी तेवारें दूत आश्चर्य पाम्यो अने विचारवा लाग्यो के आ बाहुबलीनुं राज्य पण बेपरवाइ अने जबरजस्त छे. एम वातो सांनलतो विचारतो विचारतो तिक्षशिला नगरीयें गयो तिहां दरवाजा उपर पोलीये रोंकी राख्यो जेवारें बाहुबलीनी आज्ञा आवी तेवारें गाममांहे प्रवेश करी राज्यसनामां गयो तेने बाहुबलें आंखोनी संज्ञा करी आसन उपर बेसाड्यो अने पुछयुं के अरे दूत, नरतने पोताना सवाक्रोड पुत्रादिको सहित कुशल छे? दूत बोल्यो हे राजन्

लाखो गमे देवताउ जेनी चाकरीमां तत्पर रहेला छे तेने कुशल केम न होय; तेने तो कुश
लज छे परंतु आप तेनी चाकरीमां आव्या नही तेथी ते सर्व वात निष्फल गणे छे माटे
तमे नरत राजानी पासे पधारो अने एटला दिवस नही आव्या तेनो अपराध खमावो ते
पण तमारो महोटो नाइ छे ते तमारा पितानी जगाये छे माटे तमारो गुनाह सर्व माफ करशे
वली अनेक राजाउ तेनी सेवा चाकरी करे छे अने तमोने तो वली अवश्य पूजवा योग्य
छेज माटे चालो. एवा दूतना वचन सांजली बाहुबली ते वचनोनो परमार्थ जाणी गयो
अने नृकुटी चडावी, राता लोचन करी बोलवा लाग्यो के अरे दूत तुं मारवा योग्य नथी
माटे तुने मारतो नथी पण न्हाना अठाणु नाइउना राज्य लइ लीधा अने वली म्हारुं
पण राज्य लेवा वांछे छे तेथी नाइनो स्नेह तो जाणी लीधो हवे तुं तेने कहेजे के बालपणामां
जेवारें आपणे बेहु रमत करता हता तेवारें हुं तुजने दडानी पेठे महारा हाथमां धरतो
हतो ते दिवस नूली गयो छो के शुं? हुंतो तेनो तेज छुं जे माटे हमणा चाकरी करवानुं कहे छे
ते शुं तारा राजाने कांइ विचार छे के नथी तेवारें दूत बोल्यो हे राजन् जो बे दिवस सुखे
जीववानी तमोने वांछा होय अने कुटुंबनी साथे प्रयोजन होय तो तमे एनी सेवा नक्ति
करो हुं तमोने सत्य कहुं छुं ते सांजली क्रोध करीने बाहुबले दूतने धक्का अपावी काहाडी
मूक्यो दूत पण पाछलना बारणाथी निकली पोतानो जीव लइ नाशी गयो ते चालतो चा
लतो अयोध्यायें आवीने नरत राजानी आगल बनावी बनावीने बमणी वात कही संजलावी.
तेवारें नरत पण रणनंना वजडावी चतुरंगणी सेना लइने पोते श्रीऋषन्न देवजीनी पूजा
करी, वज्रसन्नाह पहेरी, हस्तिरत्न उपर बेशी चाल्यो. तेनी पछवाडे तेना सवा क्रोड पुत्र तथा

पुत्रना पुत्र जे पोतरा ते पण घणा छे वळी चोराशी लाख हाथी, चोराशी लाख अश्व, चोराशी लाख रथ, छन्नु क्रोड पायक, शोळ लाख रणतूर वजाडनार, दश क्रोड ध्वजा, चौद हजार महोटा मंत्रीश्वर, अढार क्रोड महोटा घोडा, पच्चाश क्रोड दीवटीआ, चोराशी लाख महोटा नीशाण, नव निधान, चौद रत्न, शोळ हजार यक्ष. बत्रीश हजार मुकुटबद्ध राजा, तथा वारांगनासहित रमणी करीयें तेवारें चोशठ हजार राजकन्याउ, बत्रीश हजार नाटक, वळी बीजा पण घणा विद्याधर, यक्ष. किन्नरादिक अनेक प्रकारनो परिवार चाल्यो, नरते रणपट्ट मस्तके बंधावीने सुखेणनामा सेनाधिपतिने आगळ कर्यो, एवी रीते सेना लइने चढयो, अनुक्रमे बहुली देशनी सीमायें आवीने लस्करनो पडाव दीधो तेवारें बाहुबलेपण जाइ आव्यो सांजलीने श्रीऋषजदेवजीनी पूजा करी वज्रनो सन्नाह पहेरीने, सर्व जगतने तृणसमान मानतो थको जद्रनामा हस्ती उपर बेशीने, नरतनी साहमो लडवा निकल्यो तेनी पछवाडे त्रण लाख पुत्र तथा पोतरापण घणा छे तेमज बार हजार राजा तथा घणा विद्याधरो, अनेक सुजट, हाथी, घोडा, रथ, पायक प्रमुख चाल्या. वळी पोतानो पुत्र सिंहरथने सेनापति करीने आगळ चलाव्यो ते पण जइ नरतनी सेनाने मळ्यो तिहां बेहु सैन्य एकठा मळवाथी धरती ध्रूजवा लागी, समुद्र चलायमान थयो, पर्वतना टूक पडी गयां, नरतनी सेनामां शोळ लाख रणतूर वाजते तेम बाहुबळनी सेनामां पण लाखां गमे रणतूर वाजते बंदीजनो बिरुदावळी बोलते बेहु तरफना सैन्यनुं मांहोमांहे युद्ध थवा लाग्युं. तिहां हाथीयें हाथी, घोडे घोडा, रथें रथ, विद्याधरे विद्याधर, पाळे पाळा एम न्याययुद्ध थवा लाग्युं एटलामां सुखेणनामे सेनापतियें पोतानी सन्मुख सिंहरथने आवतो दीठो ने

वारें सुखेणे कह्युं हुंतो जरतनो चाकर छुं अने तुं तो बाहुबलनो पुत्र छो तेथी तुं महारो स्वामी छो माटे तुं पहेला महारा उपर शस्त्र चलाव ते सांजली सिंहरथे तेना उपर शस्त्र चलाव्युं तेवारें सुखेण सेनानीये खड्ग चलाव्युं मारगमां सिंहरथना जाइ सिंहकेतुयें ते खड्गने पाडी नाख्युं तेथी सुखेणने घणो क्रोध चड्यो तेवारें ते सुखेण बाहुबलनी सेनाने विलोवीने बाहुबलनी पासें गयो एवामां अनिलवेग विद्याधर आवी बाहुबलने नमस्कार करीने सुखेणनी सन्मुख लडवा आव्यो ते बेहु जण मल्लनी पेठे जीड्या अरस्परस मूठीउनुं युद्ध कर्युं, लागीयो मारवानुं युद्ध कर्युं ते वखत सुखेण खड्ग लइने सिंहरथने मारवा जाय छे एवामां तो सूर्य अस्त थयो तो एमना संग्राममां एवी मर्यादा छे जे कोइ पण श्रीऋषजदेवजीनी आण आपे तो लडवुं नही, बीजी सूर्य अस्त थयो पछी लडवुं नही, त्रीजी मेघ वरसतो होय तेवारें लडवुं नही, तेमाटे जे सांज पड्यानी अगाउ मरीगया तेनो तो कोइ उपाय नही परंतु जे अर्द्ध मरेला होय तेमने कांगणीरत्नना जलेकरी जरत पोतानी सेन्याना माणसोने साजा करे अने बाहुबली तो सोमयशना रुदयना आजरणोना जलथी साजा करे एवी मर्यादा करी छे. हवे फरी बीजा दिवसनी प्रजाते युद्ध थवा मांड्युं. तेवारें सुखेण सेनानी अनिलवेगने देखीने अग्निनी पेरे बलवा लाग्यो अने अनिलवेगने मारवा आव्यो. एटलामां सिंहरथ वचमां आवी आडो पड्यो अने सुखेणने साहामो लडवा उजो रह्यो तेवारें अनिलवेग जरत राजानी सर्व सेन्याने उल्लंघन करी जिहां हाथीउना त्रण कोट बनावीने जरतराजा सूतो छे तिहां आवीने हाथीउने कांकरानी पेठें उछाली महाविकराल रूप करीने सैन्यनुं मथन करतो करतो जरतनी पासें आव्यो जरते जाण्युं जे आ दुर्द्धर विद्याधर छे ते महारी सुरत



चित्र ७४

चूकावी आपशे माटे ए न होय तो सारुं एम चिंतवी तेना उपर चक्र मूक्युं ते चक्रने देखी अनिलवेग नाठो परंतु जिहां जाय तिहां चक्र पाछलनुं पाछल चाल्युं आवे तेवारें अनिलवेग वज्रपिंजर करीने छ महिना सुधी लवण समुद्रमां बेशी रह्यो पण चक्र माथे भमतुंज रह्युं छ महीना पछी समुद्रमांथी गाबडी बाहेर काहाडी तेवारें चक्रें ते गाबडीने कापी नाखी हवे सूर्ययश बाहुबलीनुं कटक उलंघीने बाहुबल पासें आव्यो अने कहेवा लाग्यो के मने शस्त्र मारो तेवारें बाहुबली हसीने बोल्यो अरे तुं इक्ष्वाकुवंशमां भलो सूर वीर छो पण हुं जो तुजने एक मुठी मात्र मारीश तोपण तुं चूर्ण थइ जइश माटे जा दूर उभो रहे. पछी तेनें देवतायें कह्युं के अरे मूर्ख बाहुबली साथे तुं शुं लडवा आव्यो छो नाहकनो मार्यो जइश माटे अमे तने वर्जीये छैयें के तुं चाल्यो जा तेवारें ते.जतो रह्यो एवीरीते बारवर्ष पर्यंत युद्ध चाल्युं, क्रोडो गमे माणसो मरी गया, लोहीनी नदीउ वहेवा लागी पण कोइ हार्यो नही तेवारें घणो अनर्थ थतो देखी सौधर्मेंद्र अने चमरेंद्र ए बे इंद्र भरतनी पासे आवी कहेवा लाग्या के भगवान तो लोकोनुं पालण पोषण करी गया अने तमे माणसोनो नाश करावो छो ए शुं? भरत कहेवा लाग्यो जे बाहुबली म्हारी आज्ञा मानतो नथी तिहां सुधी चक्र आयुधशालामां आवतुं नथी तो हवे कहो हुं शुं करुं? ते सांभली इंद्र बोल्या तमे बे भाइउ पोतपोतामां युद्ध करो पण बीजा माणसोनो नाश म करावो ए वात भरते कबुल करी पछी ते बेहु इंद्र बाहुबली पासें आव्या अनें कहेवा लाग्या के आ प्रमाणे युद्धमां लोकोनो नाश थइ जाय छे ते करावो नही अने तमे बे भाइउज पोत पोतामां युद्ध करो बाहुबलीयें पण ते वात मान्य करी पछी इंद्रे मलीने एक दृष्टियुद्ध, बीजुं वाक्युद्ध, त्रीजुं बाहुयुद्ध, चोथुं मुष्टियुद्ध,

अने पांचमुं दंडयुद्ध ए पांच युद्ध करवानो ठेराव कस्यो अने बेहु इंद्रे बन्ने लस्करोने श्रीआ दिनाथजीनी डुवा आपीने दूर कस्या पछी पाणी छटकावी, फूल बिछावी, भूमि शुद्ध करीने मुकुट, टोप, सन्नाह पहेरी करी बेहु भाइ सामासामा लडवाने आव्या ते युद्धने देवता आ काशमां साक्षीधर रह्या थका देखे छे हवे प्रथम भरत अने बाहुबली बे भाइ आंखो काढी डीने एक बीजानी सन्मुख जोव्या, आंख मिटावे नही, मांहोमांहे एक बीजाने देखताज रहे, महासूर वीर छे तो पण क्षणमात्र रह्या तेवारें जेम सूर्यनी सांमों देखवाथी आंखमां पाणी आवी जाय तेम भरत राजानी आंखोमां पाणी आवी गयुं ते जोइ देवता फूलोनो वरसाद वरसावीने बोल्या के बाहुबली जीत्यो अने भरत हास्यो ए प्रथम युद्ध ॥ पछी भरतें सिंहनाद कस्यो तेथी पर्वत कंपायमान थया अने बाहुबलीयें हाक मारी तेवारें ब्रह्मांड फू टवा जेवो शब्द थयो तेथी भरतें पोताना कान ढांकी लीधा ते जोइ देवता बोल्या के बाहुबल जीत्यो अने भरत हास्यो ए बीजुं युद्ध ॥ तेवार पछी बाहुयुद्धमां प्रथम भरत राजायें हाथ लांबो कस्यो तेने बाहुबलीयें कमलनालनी पेरे वाल्यो अने बाहुबलीयें पोतानो बाह लांबो कस्यो तेने भरत वालवा गयो पण लगार मात्र चसक्यो नही हिंमोलानी पेरे भरत लटकी रह्यो ते देखी देवो बोल्या एमां पण बाहुबली जीत्यो अने भरत हास्यो ए त्रीजुं युद्ध ॥ ते पछी मुष्टीयुद्ध करवा लाग्या तेवारें प्रथम तो बन्ने भाइ मल्लोनी पेठे भुजास्फोट करता मल्या पछी भरते बाहुबलीनें मुष्टी मारी तेथी बाहुबली थोडीशी वार आंखो मीची रह्यो पछी भरतने दडानी पेरे उपाडीने आकाशमां उछाली दीधो परंतु फरी अनुकंपा आणीने पाछो पोताना हाथमां पकडी करीने एक मुठी माग्ी तेथी भरत जमीनमां पेसी गयो ते

जोइ देवता बोल्या के एमां पण बाहुबली जीत्यो अने नरत हारी गयो ए चोथुं युद्ध ॥ पछी पांचमुं दंमयुद्ध करवा मांम्यो तिहां प्रथम तो नरत महाराजे लोहदंम लइने बाहुबलने मार्यो तेथी बाहुबलीनो मुकुट माटीनां घटनी पेरे चूरण थइ गयो अने बाहुबली गूमा सुधी जमीनमां पेसी गयो पछी जमीनमांथी बाहेर नीकलीने बाहुबलीयें लोहदंम मार्यो तेथी नरतनो मुकुट चूर्ण थइ गयो अने नरत महाराजनुं संपूर्ण सर्व शरीर धरतीमां पेसी गयुं ते जोइने देवता बोल्या जे आ युद्धमां पण बाहुबली जीत्यो अने नरत हारी गयो ए पांचमुं युद्ध ॥ एम पांचे युद्ध नरत हारी गयो तेवारें चिंतातुर थयो थको विचार करवा लाग्यो जे महारुं राज्य ए लइ लेशे आ ते वली कोइ बीजो चक्रवर्ति थयो छे के शुं? एवुं चिंतवीने पछी चक्रने पोताना हाथमां लइ नमाडीने पोतानी करेली प्रतिज्ञानो नंग करी बाहुबली उपर ते चक्र मूक्युं पण पोताना गोत्रमां चक्र चाले नही तेथी ते चक्र आवी बाहुबलीने त्रण प्रदक्षिणा आपीने पाछो जइ नरतना हाथमां आवी बेठो एवी रीते नरतें जेवारें प्रतिज्ञानो नंग कर्यो तेवारें बाहुबलने अत्यंत क्रोध चडी गयो तेणे करी नरतनी उपर मुष्टी उपाडीने मारवा चाल्यो तेवारें देवता बोल्या विचार करो ते सांनली बाहुबलीयें जाण्युं जे धिक्कार छे आ राजने के जेना लीधे महोटा नाइने पण मारवानो विचार थयो एवी रीते वैराग्य पामीने बाहुबले पोते नरतने मारवा माटे जे मुठी वाली हती ते महोटा पुरुषनी मुठी पाछी फरे नही माटे संवेग आव्यो तेवारें ते मुठीयें नरतने मारवुं मूकी दइने पोताना मस्तके लोच करी दीक्षा लइने विचरवा लाग्यो तेवारें देवतायें फूलनो वर्षाद वरसाव्यो, नरतराजा विलाप करवा लाग्यो के महारा सर्व नाइउ दीक्षा लइने जता रह्या पछी बाहुब

जीना पुत्र सोमयशने तिक्षशिला नगरीनुं राज्य आपी भरत राजा अयोध्या नगरीमां आव्या हवे आगल जतां बाहुबली साधुयें विचार्युं जे महारा न्हाना अढाणु भाइउए प्रथम श्री रूषभ देवजीनी पासेथी दीक्षा लीधेली छे ते केवली थया छे माटे हमणा हुं भगवानना समवसरणमां जईश तो न्हाना भाइउने वंदना करवी पडशे माटे हुं अहींआंज काउसग्गें रही केवलज्ञान प्राप्त करीने पछी प्रभुपासें जइश एवुं चिंतवी मनमां अभिमान धारण करीने तिहांज काउसग्गें रह्या थका एक वर्ष वीती गयुं मस्तक उपर वेलीउ वींटाइ गइ तेने प्रतिबोधवा माटे श्रीरूषभदेव स्वामीयें ब्राह्मी अने सुंदरी ए बे साध्वीउने मोकली ते तिहां आवीने बाहुबलीजीने कहेवा लागीउ के हे वीरा हे भाइ तमे गज उपरथी नीचे उतरो हस्ती उपर आरुढ थयाथी केवलज्ञान उपजे नही एटलुं तेमनुं बोलवुं सांभलतांज जाणी गयो के आ साध्वीयो केवारें जुठुं बोले नही माटे हाथीतो महारी पासे नथी परंतु अहंकार रूप हाथीनी उपर हुं चडेलो छुं एम विचारी माननो त्याग करी तिहांथी पग उपाड्युं के तरतज केवलज्ञान पण उपन्युं अने प्रभुना समवसरणमां जइ केवलीनी परषदामां बिराज्यो ए भरत बाहुबलनो संबंध कह्यो ॥ ॥ हवे एक दिवसें भगवान अष्टापद पर्वत उपर समोसर्या तेवारें भरतमहाराजायें विचार्युं जे बीजुं तो महाराथी कांइ थतुं नथी पण आ सर्व साधुउने आहार वहोरावुं तो लाभ पामुं एवुं जाणी पांचमें गाडा सुखडीना भरी लाव्यो अने भगवानने कहेवा लाग्यो स्वामीजी आजना दिवसे आ सर्व साधुउने आहार कराववानुं हुकुम महारे घेर थइ जाय तो घणोज रुडुं थाय तेवारें भगवानें कह्युं आधाकर्मिक राज्यपिंड साधुउने लेवुं कल्पे नही, वली सन्मुख आहार लइ आव्यो ते माटे साधुउए लीधो नही एवुं जोई



चित्र ७५

जरत राजायें जाएयुं जे हुंतो सर्व प्रकारे जक्तिरहित थयो एम शोच करवा लाग्यो ते जोइ इंड्महाराजे जगवानने पुछ्युं के हे प्रजु! अवग्रह केटला प्रकारना छे? जगवान बोल्या पांच अवग्रह छे तेमां एक इंड्नो अवग्रह, बीजो राजेंड्नो अवग्रह, त्रीजो ग्रहपतिनो अवग्रह, चोथो सागारिकनो अवग्रह अने पांचमो साधर्मिकनो अवग्रह. ए पांच अवग्रह जाणवा. ते सांजली इंड् बोल्या हुं तो आपना सर्व साधुउने महारा सर्व क्षेत्रमां सुखें विचरवानी आज्ञा आपुं बुं तेवारें जरत महाराज बोल्यो के महारा छ खंम पृथ्वीमां हुं पण आपना सर्व साधु उने विचरवानी आज्ञा आपुं बुं एम कहेवाथी जरतने घणो संतोष थयो वली जरतें इंड्ने पुछ्युं के आ आहारनुं हवे शुं करवुं तेवारें इंडे कह्युं ताहाराथी अधिक गुणवान होय तेने ए आहार जमाडो पछी जरतें पण ते आहार श्रावकोने जमाड्यो इहांथी ब्रह्मजोजन चालुं थयुं ॥ हवे जरतराजा सदा सर्वदा श्रावकोने जमाडे छे. केटला एक काल पछी जेवारें घणा जमनारा थया तेवारें परीक्षा करीने सर्वने सेलाणीनां कांगणी रत्ननी जनोइ आपी तथा देव, गुरु अने धर्म रूप त्रण तत्वसंबंधी त्रण रेखा प्रत्येक श्रावकने करी. तिहांथी जनोइ आपवानी चाल पडी इहां श्रीरूषजदेवस्तुतिना चार वेद थया ॥ एकदा जरत राजायें इंड्महा राजने पुछ्युं के तमारुं खरेखरुं रूप कहेवुं छे? तेवारें इंडें एक अंगुली बतावी ते महाज्वाला मालाकुल देखीने जरत चमत्कार पाम्यो. तिहांथी वर्षोवर्ष इंड्महोत्सव चालु थयो ॥ हवे एक दिवसें जगवंत विहार करतां विनीतायें आव्या. जरत वांदवा आव्यो, प्रजुयें देशना आपी संसारनुं अनित्यपणुं देखाड्युं, जीव कर्मने जारे करी तुंबडाने दृष्टांते संसारमां बूडे छे, जेम तुंबडाने माटी चोपडी पाणीमां मूकीयें तो हेठुं बेसे, तेम आठ कर्मे करी जीव

नारी थयो थको हेठो बेसे छे, एवी नगवाननी वाणी सांनळी नरत मनमां वैराग्य पाम्यो, ज्ञान दशामां लय लीन थयो. एम अनुक्रमे एकदा नरतराजा आरीशा नवनमां बेठा थका अनित्य नावना नावतां केवल ज्ञान पामी, मोक्षे पहोता छे. पछी तेमने पाटे आदित्ययशा राजा थया तेणे सोनानी जनोइउं करीने एमज श्रावक जमाड्या, तेने पाटे महायशा राजा थया तेणे रूपानी जनोइउं करीने श्रावक जमाड्या. एम आठ पाट लगें श्रावक जमाड्या छे. तेमां केटलाएक राजायें सूत्रनी जनोइ करी जमाड्या छे, पछी ते जनोइना पहेरनार सर्व ब्राह्मण कहेवाणा. नरतने पाटे आदित्ययशा, तेने पाटे महायशा, तेने पाटे अनिबल, तेने पाटे बलनड़, तेने पाटे बलवीर्य, तेने पाटे कीर्तिवीर्य, तेने पाटे जलवीर्य, तेने पाटे दंमवीर्य, ए आठे राजायें नगवंतनो मुकुट पहेर्यो अने ए आठे राजा आरीशा नुवनमां केवली थइ मोक्षे गया छे. नगवान श्रीरूषन देवजी एक लाख पूर्व पर्यंत विचरीने घणा जीवोने प्रतिबोध्या ॥ हवे श्रीरूषनदेव स्वामीना परिवारनुं वर्णन सूत्रकार करे छे ॥ श्रीरूषननाथजीने रूषनसेन आदे देइने चोराशी गणधर थया, चोराशी गछ थया ॥ २१४ ॥ ॥ तथा रूषनसेन प्रमुख चोराशी हजार साधुउनी उत्कृष्टी संपदा थइ ॥ २१५ ॥ ॥ तथा ब्राह्मी अने सुंदरी आदे देइने त्रण लाख साधवीउनी उत्कृष्टी संपदा थइ ॥ २१६ ॥ ॥ तथा श्रेयांस आदे देइने त्रण लाखने पांच हजार श्रावकोनी उत्कृष्टी संपदा थइ ॥ २१७ ॥ ॥ तथा सुनद्रा आदे देइने पांच लाखने चोपन हजार श्राविकाउनी उत्कृष्टी संपदा थइ ॥ २१८ ॥ तथा चार हजार सातशेने पच्चास चौद पूर्वधर ते केवली नही पण केवली सरखा साधुउनी उत्कृष्टी संपदा थइ ॥ २१९ ॥ ॥ तथा श्रीरूषननाथ अरिहंतने नव हजार अवधिज्ञानीनी

संपदा थइ तथा वीश हजार केवल ज्ञानीनी उत्कृष्टी संपदा थइ ॥ २२० ॥ ॥ तथा वीश हजारने उशे वैक्रिय लब्धिवंत साधुउंनी उत्कृष्टी संपदा थइ ॥ २२१ ॥ ॥ तथा बार हजार उशेने पच्चाश अर्धद्वीपमां संज्ञी पंचेंद्रिय पर्याप्ताजीवोना मनना परिणामने जाणे एवा विपुल मति, मनःपर्यवज्ञानना धरनार साधुउंनी उत्कृष्टी संपदा थइ ॥ २२२ ॥ ॥ तथा तेट लाज वादी जाणवा. एटले बार हजार उशेने पच्चाश वादी साधुउंनी संपदा थइ ॥ २२३ ॥ तथा वीश हजार साधु सिद्ध थया. चालीश हजार साध्वी सिद्ध थइ ॥ २२४ ॥ ॥ श्रीरुष जनाथ अरिहंत कौशलिकने बावीश हजारने नवशे साधुउ अनुत्तर विमाने गया, एकाव तारी थया ॥ २२५ ॥ ॥ श्रीरुषनदेव अरिहंतने बे प्रकारे अंतगड नूमि थइ तिहां यावत् असंख्याता पाटलगे केवलज्ञान चाल्यो, मोक्षमार्ग वह्यो; ते युगंतकृत नूमि कहेवाय अने नग वानने केवलज्ञान उपन्या पछी अंतर मुहूर्त काल वीते कोइ मोक्ष गयो एटले अंतर मुहूर्त पछी मरुदेवी माता मोक्ष गया ते पर्यायांतकृत नूमि कहेवाय ॥२२६॥ ॥ ते कालनेविषे, ते समयनेविषे, श्रीरुषननाथ अरिहंत वीश लाख पूर्व सुधी कुमार पणे रह्या अने त्रेशठ लाख पूर्व राज्यावस्थामां रह्या एवी रीतें त्र्यासी लाख पूर्व घरवासे रह्या, सीतेर लाख क्रोडवर्षनी उपर वली बीजा उपन्न हजार क्रोड वर्ष वीते तेवारें एक पूर्व थाय. एवा त्र्यासी लाख पूर्व घर वासें रहीने पछी एक हजार वर्ष छद्मस्थपणे रह्या तथा एक हजार वर्ष उणा एक लाख पूर्व केवल पर्याय पालीने संपूर्ण एक लाख पूर्व साधुपणुं पालीने नवोपग्राही चार कर्मनो क्षय करी आ अवसर्पिणीनो सुखमदुखमा नामा त्रीजो आरो ते घणो वीती गयो बाकी त्रणवर्ष ने साडा आठ महिना शेष रह्या तेवारें सीतकालनो त्रीजो महिनो, पांचमुं पखवाडियुं, माघवदि ॥

॥ ग्रंथाग्रंथ ॥ ए०० ॥ तेरसने दिवसें अष्टापद पर्वतनी उपर दशहजार साधुउनी साथें चौद नक्त
एटले छ उपवास पाणी रहित कीधे थके, अनीचनक्त्रें चंद्रमानो योग आवे थके, प्रथम पहो
रनी पछी बपोरनी वखते, पालखी वालेला आसने बेठा थकां, कालगत थया यावत् सर्व
दुःख थकी रहित थया ॥ २२७ ॥ ॥ ते अवसरमां शक्रेंद्रनुं आसन चलायमान थयुं तेवारें
आंखोमां आंसुं नराणा एवो थको इहां आव्यो, आवीने नगवानने त्रण प्रदक्षिणा आपी,
नमस्कार करी, योग्यस्थानके बेठो, बीजा पण सर्व इंद्रो आवीने बेठा पछी शक्रेंद्रें देवोने
मोकली नंदनवनमांथी चंदन मगाव्युं तेनी त्रण चय बनावी तेमां एक नगवानना शरीरने
माटे, बीजी गणधरोना शरीरने माटे अने त्रीजी सर्व साधुउना शरीरने माटे बनावी. वली
आनियोगिक देवोनी पासे खीरसमुद्रनुं पाणी मगावी शक्रेंद्रें नगवानना शरीरने स्नान करा
व्युं, सर्व वस्त्र घरेणा प्रमुख पहेराव्यां. पछी त्रण पालखी करी. तिहां एक पालखीमां नगवा
ननुं शरीर, एकमां गणधरोनुं शरीर अने एकमां मुनिउनां शरीरने मूकी शुद्ध नूमियें लइ
जइने चितानी पासे पालखीउ राखी. तेमां शक्रेंद्रें नगवानना शरीरने पालखीमांथी ल
इने चितामां मूक्युं. तथा अन्य देवोये बीजा गणधरादिकना शरीरने पालखीमांथी उता
रीनें चितामां मूक्या. तथा शक्रेंद्रना हुकमथी अग्निकुमार देवो मनमांहे उदास थया थका
चितामां अग्नि सलगाववा लाग्या, तथा वायुकुमार देवोपण उदास थया थका वायु चला
ववा लाग्या, वली बीजा देवो चितामां घृत प्रमुखने सींचवा लाग्या. पछी जेवारें मात्र हाडकाज
शेष रहे अने बीजो शरीरनो नाग सर्व बलीने नस्म थइ जाय तेवारें मेघकुमार देवो वर्षाद
वरसावीने चिताने बूजावी नाखे, पछी शक्रेंद्र नगवाननी उपरली जमणी बाजुनी दाढा



चित्र ७६
पर्वतने फरती खाईमां वहाणोछे
देवता निर्वाण महोत्सव करेछे.
साधुजनी साथे प्रभुनिर्वाण पाम्या
अष्टपद पर्वत.

लीये अने ईशानेंद्र उपरली डाबा बाजुनी डाढा लीये तथा चमरेंद्र नीचली जमणी बाजुनी डाढा लीये अने बलेंद्र नीचेनी डाबी बाजुनी डाढा लीये तथा बीजा देवता जे छे तेमांथी केटलाएकतो जिनभक्तिना वश थकी, केटलाएकतो आपणु आचार छे एवुं मानीने, केटलाएक तो धर्ममानीने परमेश्वरना अंगोपांगना सर्व हाडका लइ लीये. पछी शक्रेंद्र जे स्थानके डाग देवाणो होय ते स्थानके रत्नोनां त्रण पीठ बनावे एटलुं करीने सर्व देवो नंदीश्वरद्वीपने विषे जइ अठाइ महोत्सव करीने पोतपोताने स्थानकें जाय. तिहां जइने दाढा प्रमुख जे लइ आव्या होय ते पोतपोतानी सभानेविषे वज्रमयी डाबलामां जइ राखे, तेने गंधमाला दिकथी पूजे, धूप दीये, ए प्रकारनो निर्वाण महोत्सव सर्व तीर्थंकरोनो जाणी लेवो ॥ इति श्रीऋषभनिर्वाणमहोत्सव ॥ ॥ श्रीऋषभदेव स्वामी मोक्ष गया पछी पचाश लाख क्रोड सागरोपम गये थके श्रीअजितनाथ मोक्ष गया, श्रीऋषभदेव अरिहंत मोक्ष गया पछी त्रण वर्षने साडा आठ महिना त्रीजो आरो शेष रह्यो हतो ते पण वीती गयो. पछी त्रणवर्ष ने साडाआठ महिना तथा उपर बेतालीश हजार वर्ष एटले वर्षे ऊणा एक कोडाकोडी सागरोपम गया नंतर श्रीमहावीर स्वामी मोक्ष गया एटले ते वखतें त्रणवर्षने साडाआठ महिना तो चोथा आराना बाकी रह्या हता अने पांचमां आराना एकवीश हजार वर्ष तथा छठा आराना एकवीश हजार वर्ष एम बे आराना मली बेंतालीश हजार वर्ष ते एक कोडाकोडी सागरोपममां उछा थयां तेमाटे बेतालीश हजारने त्रणवर्ष उपर साडाआठ महिने न्यून एवो एक कोडाकोडी सागरोपम काल चोथा आरानुं गये थके महावीर मोक्ष पोहोता अने ते पछी नवसेंने एंसी वर्ष गया तेवारें आ पुस्तक देवर्द्धीगणिक्षमाश्रमणे लख्यो अने नवसेंने त्र्याणु वर्षें संघमां वंचाणुं

एवुं क्यांएक लखे बे ॥२१८॥ ॥ इहां ॥ पुरिमचरिमाणकप्पो० ॥ ए गाथा मंगलिकने अर्थे कहेवी. इति श्रीकल्पसूत्रे बालसुबोधिन्यां अष्टमं व्याख्यानम् कृतं राजेंद्रसूरिणा ॥ ८ ॥ ॥ अथ श्रीस्थविरावली·प्रारंभ ॥ ते कालमां ते समयमां भगवान श्रीमहावीरस्वामीना नवगछ अने अगीआर गणधर थया ॥ २४ ॥ ॥ इहां शिष्य प्रश्न करे बे के हे गुरु महाराज! मर्यादातो एवी बे के जेटला गणधर होय तेटलाज गछ पण होवा जोइयें परंतु आपतो नव गछ अने अगीआर गणधर फरमावो गे तेनुं कारण शुं एवो शिष्यनो प्रश्न सांभलीने ॥२५॥ गुरु कहे बे के श्रीमहावीरस्वामीना महोटा शिष्य इंद्रभूति नामा अणगार थया ते गौतमगोत्रीया हता अने पांचसे साधुउने वाचना आपता माटे तेनो एक गछ ॥ एटले जेनी वाचना एक होय तेने गछ कहीयें इहां कोइ शंका करे के वाचनामां फेर होय तो शुं केवलीना कहेवामां फेर फार बे? तेने उत्तर कहीये बैयें. जे केवलीना कहेवामां फेर नथी परंतु केवलीना वचन सांभलीने ते वचनोनां गणधरो सूत्रो बांधे बे गुंथे बे तेनी रचनाना शब्दोमां फेर बे पण वातोमां फेर नथी मात्र शब्द अनेक प्रकारना बे तेमां रचना करती वखते एक गणधर एक जातिना शब्दथी गुंथे बे तो वली बीजो गणधर बीजी जातना शब्दोथी गुंथे बे. तेने लीधे रचनाना शब्दोमां फेर फार होय बे. इति प्रथम गछ ॥ १ ॥ ॥ हवे बीजो वचलो भाइ शिष्य अग्निभूति अणगार बे तेनुं गौतम गोत्र बे अने पांचसे साधुउने वाचना आपे बे ते बीजो गछ ॥२॥. ॥ त्रीजो न्हानो भाइ वायुभूति नामे शिष्य बे तेपण गौतम गोत्रनो बे ते पांचसे साधुउने वाचना आपे बे ए त्रीजो गछ ॥ ३ ॥ ॥ ए त्रणे गृहस्थपणामां सगा भाइउ बे. चोथा थविर आर्यव्यक्त नामा भारद्वायण गोत्रीया ते पांचसे साधुउने वाचना

आपे ते ए चोथो गच्छ ॥ ४ ॥ ॥ पांचमा थविर आर्यसुधर्म नामा अग्निवेसायन गोत्रीया छे ते पांचसे साधुउंने वाचना आपे छे ए पांचमो गच्छ ॥ ५ ॥ ॥ छठा थविर मंडित पुत्र वासिष्ठ गोत्रीया छे ते साडा त्रणसें साधुउंने वाचना आपे छे ए छठो गच्छ ॥ ६ ॥ ॥ सातमा थविर मोर्यपुत्र काश्यप गोत्रीया छे ते साडा त्रणसें साधुउंने वाचना आपे छे ए सातमो गच्छ ॥ ७ ॥ ॥ आठमा थविर अकंपित गौतम गोत्रीया छे तथा नवमा थविर अचलभ्राता हारितायन गोत्रीया छे ए बेहु थविर त्रण त्रणसो शिष्योने वाचना आपे छे ए बेहु गणधरोनी वाचना एक छे तेमाटे एनो एक गच्छ गणीयें. ए बन्ने गणधर भाइउं छे परंतु तेनी माता एक छे अने पिता बे छे तेथी एमनां गोत्र जुदां जुदां कह्यां छे. आगल ब्राह्मणोमां बीजो भरतार करवानी चाल हती माटे बे भरतार कर्या कह्या छे. ए आठमो गच्छ ॥ ८ ॥ दशमा थविर मेतार्य अने अगीआरमा थविर प्रभास. ए बन्ने कौंडिन्य गोत्रीया भाइ छे ते त्रण त्रणसे साधुउंने वाचना आपे छे. ए बेहुनी वाचना एकज छे माटें एकज गच्छ कहेवाय ए नवमो गच्छ. ए रीते हे शिष्य! अमे श्रीमहावीरना अगीआर गणधरना नव गच्छ कहीयें छैयें ए अगीआरे गणधर द्वादशांगीना धरवावाला, चौद पूर्वधारी, संपूर्ण आचार्य रत्नकरंडीयाना धारक एटले द्वादश अंगरूप रत्ननो करंडीयो तेना धरवावाला, ए अगीआरे गणधर राजग्रही नगरीमां एक मासी अनशन पाणी रहित करीने कालगत थया, मोक्ष पाम्या, सर्व दुःखथी रहित थया तेमां नव गणधर तो श्रीमहावीर स्वामी विद्यमान छतांज मोक्ष गया अने थविर इंद्रभूति तथा थविर आर्यसुधर्म ए बे गणधरोये नो श्रीमहावीर भगवान मोक्ष गया पछी काल कर्यो छे, मोक्षे गया छे तथा बीजा सर्व गणधरोना तो शिष्योपण

काल करी गया हता कोइ पण शेष रह्यो हतो नही माटे जे कांइ हमणा वर्तमान समये साधुउ विचरे छे ते सर्व सुधर्म गछना छे बाकी कोइ गछना नथी बीजा सर्व गणधरोना शिष्यो जे हता ते विछेद गया छे. तेथी एक सुधर्म गछज रह्यो ॥ २६ ॥ ॥ हवे पट्टावली लखीयें छैयें. श्रीमहावीर स्वामी काश्यप गोत्री हता तेमना पाटे श्रीसुधर्म स्वामी पांचमा गणधर बेठा तेमनुं अग्निवेश्यायन गोत्र हतुं तेनो संबंध आ प्रमाणे ने कुल्लाग सन्निवेस नामा नगरमां धम्मिल्ल नामा ब्राह्मण रहेतो हतो तेनी नद्दिला नामे नार्याना पुत्र सुधर्म नामे थया ते चौद विद्याना निधान, चार वेदना पारंगामी, पच्चाश वर्ष घरवासे रह्या पछी महावीरनी पासेथी दीक्षा लीधी, पांचमा गणधर थया, त्रीश वर्ष पर्यंत तो महावीरस्वामीना चरणकमल सेवता रह्या, अने श्रीमहावीर निर्वाण पाम्या पछी बार वर्ष पर्यंत छद्मस्थपणे विचर्या तथा आठ वर्ष केवली पणे विचर्या. सर्व मली एकशो वर्षनुं आयुष्य पालीने मोक्ष गया ॥ १ ॥ ॥ तेवार पछी श्रीसुधर्म स्वामीना पाट उपर श्रीजंबुस्वामी बेठा तेमनुं काश्यपगोत्र हतुं तेनो संबंध आ रीते छे. के एकदा श्रीमहावीरस्वामी राजगृही नगरीयें समोसर्या तिहां एक महोटो तेजवंत देवता पोतानी चार अग्रमहीषीयो सहित तथा बीजा पण घणा देव अने देवीयोना परिवारे परवर्यो थको नगवानने वांदवा आव्यो तेवारें श्रेणिक राजायें नगवानने पुछयुं जे हे स्वामी महाराज आ देवतानी बीजा घणा देवोथी अधिक कांति केम थयेली छे तेवारें.नगवाने कह्युं के आ देवतायें पूर्व नवने विषे दश वर्ष पर्यंत नित्य तप कर्युं छे तेना प्रनावथी ए पांचमा ब्रह्मदेव लोकनेविषे तिर्यक् जृंनकनी जातिमां महर्द्धिक देवता थयो छे वली पण ए देवता आजथी सातमे दिवसे देवलोकथी चवीने राजगृही नगरीमां

रुषनदत्त शेठनी धारणी नामे नार्यानी कूखमां पुत्रपणे आवीने उपजशे पछी एनो जन्मम होत्सव करीने एनी माता स्वप्नमां जंबुवृक्ष देखशे तेथी एनुं जंबु एवुं नाम आपशे. अनुक्रमे युवान अवस्था पांमशे तेवारें सुधर्म गणधरनी पासेथी धर्मदेशना सांजलीने वैराग्य पामशे. तेवारें कहेशे के हुं चारित्र लइश पण म्हारा मातापिताने पूछी आवुं एम कही पाछो घर तरफ जाय छे एटले मार्गमां आवतां जंत्रथी उपडेलो पच्छर, पोतानी पासेथी निकल्यो देखीने विचारवा लागशे के हमणा जो मनें आ तोपनो गोलो लागी जात तो हुं अव्रतिपणामां म रण पामत, एवुं जाणी सुधर्मनी पासे पाछो आवीने एकवारतो समकेत मूल जे बार व्रत छे ते बारे व्रत लेशे तेमां चोथा व्रतमां एटली मर्यादा राखशें के, कदापि मातापिताना कहेवाथी स्त्रीयो परणवी पडे तो तेनें परणुं पण ते स्त्रीयोनी साथें जोग जोगवुं नही एवो त्याग करी फरी घरें आवी माता पिताने कहेशे के मने आज्ञा आपो हुं श्रीसुधर्म स्वामी पासेथी दीक्षा लेउं? माता पिता कहेशे के हे पुत्र! दीक्षा पालवी घणी दुक्कर छे. एवी रीते घणो घणो समजावशे तोपण ए मानशे नही. तेवारें मातापिता कहेशे के हे पुत्र! आठ पुत्रीयो साथे ताहारुं सगपण करेलुं छें माटे तेने परणीने पछी दीक्षा लेजे ते सांजली जंबुकुमर मौनपणुं धारण करी रहेशे मातापिता आठ शेठीयाने कहेशे के अमारो पुत्र वैराग्यवान् थयो छे माटें तमारें दीकरीयो परणाववानी मरजी होय तो जले परणावो पण ते कन्याउनो त्याग करीने जो दीक्षा लेशे तो अमारो दोष कहाडशो नही ते सांजली सर्व शेठीया कहेवा लागशे के अमे नही परणावीशुं. पण ते शेठि[illegible] दीक रीयो कहेशे जे अमेतो जंबुकुमरनेंज परणीशुं बीजाने परणवानो त्याग छे. तेवारें शेठिया

पोतानी पुत्रीयोने कहेशे के एतो दीक्षा लेशे. तोपण दीकरीयो कहेशे के ए दीक्षा लीये तो
नले ल्यो पण अमेतो एनेज परणीशुं. पछी ते एक रात्रीमां आठे कन्या परणशे अने
रात्रियें शय्या उपर बेसीने सर्व कन्याउने कहेशे के हुंतो दीक्षा लश केमके आ संसार सर्व
अनित्य छे, कोइ कोइनें सांथें आवनार नथी, तेवारें स्त्रीयो कहेशे के हे स्वामी ! तमे ह
मणा दीक्षा लियो नही, हमणातो जे संसारनुं सुख मल्युं छे ते सारी रीतें जोगवीने पछी दीक्षा
लेजो, नहीतो करसणीना न्यायें पश्चात्ताप करशो. जेम कोइ मारवाड देशनो करसणी पोताने
घेर गहुं वावीने पछी मेवाडमां पोतानें सासरे गयो तिहां तेनी सासुयें सारा रोटला करीने
थालमां मूक्या. उपरथी काकब मूकी ते काकब करसणीने घणी सारी स्वादिष्ट लागी. पछी
जेवारें शालाने पुछ्युं के आ काकब तमोने किहांथी आवी? तेवारें शालायें कह्युं के ए अमारा
घरमां नीपजे छे बनेवीयें पुछ्युं केवी रीते नीपजे छे! तेवारें शालाये शेलडी वाववानो विधि
देखाड्यो. पछी करसणीयें जाण्युं जे महारे घेर पण ए हुं वावीश एम निर्धार करी घेर आ
वीने प्रथम जे गहुंनुं खेत्र वाव्युं हतुं तेने उखेडी नाखवा लाग्यो. तेवारें लोकोये कह्युं के आ
तुं शुं करे छे? तेणे कह्युं के हुं एमां शेलडी वावीश. लोको कहेवा लाग्या के आ देशमां
पाणी नथी तेमाटे शेलडी थशे नही, तेम छतां जो तने शेलडीज वाववानी इछा होय तो
एकवार आ गहुंनी करेली खेती छे ते कपावी ले पछी शेलडी बनावजे. एवुं लोकोनुं वचन
तेणे मान्युं नही अने शेलडी वावी. ते थोडी उगी एटलामां कूवानुं पाणी खुटी पड्युं तेथी जे
उगेली शेलडी हती तेपण शुकाइ गइ. तेवारें पश्चात्ताप करवा लाग्यो तेम तमे पण छतुं सुख
मूकीने बीजा नवा सुखनी चाहना करो छो तो पछी पस्तावशो. एवी स्त्रीयोनी वाणी सांजली

जंबू कुमर कहेशे के हुं पूर्वोक्त दृष्टांते पश्चात्ताप नही करीश परंतु जो नही समजशो तो त
मेज पसतावो करशो हुंतो ललितांगकुमरनी पेरे तमारा फंदमां नही पडुं. तेनी कथा कहुंछुं
ते सांभलो. एक नगरमां एक शेठनो पुत्र ललितांगकुमर एवे नामे महारूपवंत हतो तेने
एक दिवसें ते नगरना राजानी रूपवती नामा राणी छे तेणे दीठो. तेवारें एकांतें बोलावीने
तेनी साथे संसारसंबंधि भोग विलास करवा लागी एटलामां राजा पण तिहां आव्यो. तेवारें
भयभ्रांत थइने राणीयें ते ललितांगकुमरने खालमां नाखी दीधो अने विचार्युंजे पछी का
हाडी लइश हवे राणीतो राजानी साथे रमवा लागी गइ. अने ललितांग खालमां भूखे मरतो
कोइ अन्य आवीने एठवाडो नाखे ते खाय अने एठनुं पाणी पडे ते पीये एवी रीतें चार म
हिना पर्यंत ते खालमां पडी रह्यो अने ललितांगना मा बापे घणोये जोयो पण लाधो नही.
तेथी शोक करवा बेठां एटलामां वर्षाद आव्यो तेथी खालमां पाणी भराणुं ते पाणी काढा
डवा सारुं खाल खोली ते खालना पाणीनी साथे ललितांग पण तणातो तणातो नगरनी म
होटी खालमां जइ पड्यो. तेने लोकोये देखीने तेना मातापिताने जइ कह्युं. मातापिता जइ खाल
मांथी काहाडी घेर लइ आव्या. तिहां मुर्छा खाइने पडी रह्यो, शरीर पीलुं पडी गयुं, हाडका
नीकली आव्या, माता पिताये घणा प्रकारना तैलादिक मसली जागतो कर्यो. तेवारें कांइक
सावचेत थयो पछी औषधोपचार करतां करतां घणा दिवसे तेनुं शरीर सारुं थयुं. तेवारें
वली कपडा प्रमुख पहेरीनें बजारमां फरवा निकल्यो तेने राणीयें देखीने बोलाव्यो. ते बोल्यो
हवे हुं तमारा फंदमां पडुं नही. इति ललितांग कथा ॥ एवी रीते आठे स्त्रीयां जुदी जुदी
आठ कथाउं संसारना सुखनो त्याग न करवो ते आश्रयी जंबु कुमरने कहशे अने जंबु कुमर

फरी संसारनी असारता बतावनारी जुदी जुदी आठ कथाउ आठे स्त्रीयोने कहेशे. तेवारें स्त्रीयो प्रतिबोध पामशे एवामां एक प्रभवो चोर पांचशे चोरने साथे लइने जंबु कुमरना घरमां आवशे. ते सर्वेने विद्याना बलथी अवस्वापिनी निद्रा आपशे तेथी सर्वेने निद्रा आवी जशे परंतु जंबुकुमरने निद्रा आवशे नही. पछी तालां उघाडवानी विद्याथी जंमार खोलीने नवाणु क्रोड सोनामोरोनी गांठडीयो बांधी तेने लइने चालवा मांडशे. एटलामां जंबु कुमरने यद्यपि द्रव्य उपर मूर्छा तो बिलकुल नथी तथापि एवो विचार आवशे के मद्दारे तो प्रभाते दीक्षा लेवी छे अने आजे चोर लोको द्रव्य लइ जशे तो लोक कहेशे के जूउ नाठउ! एनुं धन सर्व चोर लोको लइ गया तेथी ए माथुं मुंडावे छे. एवी रीते धर्मनी निंदा थाशे. ते वात सारी नही. एवुं चिंतवीने नवकार गुणवा लागशे तेथी पांचशे चोरोना पग थंभाइ जाशे तेवारें प्रभवाने विचार थाशे के आ ते शुं थयुं! जो.जोवा लागशे तो जंबुकुमरने जागतो देखशे तेवारें प्रभवो जाणशे के एनी पासे कोइ महा जोरावर विद्या छे. एवुं जाणी जंबुकुमरने कहेशे के मद्दारी विद्या तमे ल्यो अने तमारी विद्या मने आपो. जंबुकुमर कहेशे के मद्दारी पासें कांइ पण विद्या नथी वली बीजी विद्या मने खपती पण नथी मने तो मात्र नवकार मंत्रनो आधार छे. एवो धर्मोपदेश देशे तेवारें प्रभवो कहेशे के आ नवी परणेली स्त्रीयोनो त्याग करीने तुं दीक्षा शा वास्ते लीये छे? संसारना सुख जोगवी पछी दीक्षा लेजे. तेने जंबु कहेशे के हे प्रभवा संसारमां सुख छेज किहां के जेने हुं जोगवुं. संसारनुं सुख तो मधुबिंदुआ समान छे तेनी लालचें जीव संसारमां रफले छे. जेम कोइ एक पुरुष जूलथी उजाडमां जइ पड्यो; तेनी पछवाडे एक हाथी दोड्यो; तेवारें ते हाथीना जयथी नासतो जागतो एक वडनी

शाखामां जइ लटकी रह्यो. हवे ते शाखानी नीचे एक कूप छे तेमां चार सर्प्प पोतानुं महोडुं फाडीनें बेठेला छे; तथा बे अजगर पण महोडुं फाडी बेठा छे; तथा वडना थडने हाथी धूणावी रह्यो छे, तथा जे शाखामां ते पुरुष लटके छे ते शाखाने एक कालो अने बीजो धोलो एवा बे उंदरो कापी रह्या छे, वली तेनी उपर एक मधुमाखीनुं मधपुडुं छे तेनी मक्षिकाउ उडी उडीने ते पुरुषना शरीरने चटका मारी रहेली छे, एटलामां ते मधुआलमांथी एक मधनुं टीपुं टबक्युं ते पहेला पुरुषनी जीभनें जइ लाग्युं, तेवारें ते पुरुषे ऊंचुं जोवा मांड्युं तो तेणे दीठुं जे मधुआल मांहेथी ए मधुबिंदु पडे छे; एवुं जाणीने ते टीपानी नीचे महोडुं उघाडुं राखीने लटक्यो अने टीपाना स्वादमां मग्न थयो थको पोतानी उपर पूर्वोक्त अनेक जातना दुःख पड्या छे ते सर्वे भूली गयो. एटलामां एक विद्याधर आवीने कहेवा लाग्यो के हे पुरुष! ताहारुं दुःख देखीने मने दया आवे छे माटे आव महारा विमानमां बेशी जा, हुं तुजने दुःखमांथी काहाडवा वांछु छुं. तेवारें ते पुरुष बोल्यो हे विद्याधर! आ एक टीपुं मधनुं महारा मुखमां आववा द्यो पछी हुं आपनी साथे विमानमां बेसी चालुं. एम एक टीपुं आव्युं पछी वली पण कह्युं के आ बीजुं टीपुं आवे तो चालुं. ए रीतें एकेक टीपाना स्वादमां लोभाणो थको तें बिकट स्थानने छोडे नही, तेवारें विद्याधरे जाण्युं जे एतो एवोज मुर्ख छे लोभी छे ए कांइ दुःखमांथी निकलशे नही एवुं जाणी तेने तिहांज मूकी विद्याधर चाल्यो गयो. तेम हे भव्यो! आ जीव संसाररूप अटवीमां आयुष्यरूप वृक्ष छे तिहां कुटुंबरूप मधुबिंदुने खातो खातो आयुष्य खूटावे छे मोहें माच्यो थको रहे छे; तेने सद्गुरु आवीने चारित्ररूप विमानमां बेसवानुं कहे तेवारें सं

सारी जीव स्त्रीना जोग रूप मधुबिंदुमां लोनायो थको संसारमांथी निकलवा वांछे नही. माटे हे प्रजवा आ अवसर चूक्या तो फरी संसारमां पछ्याने मनुष्य अवतार मलवो महादुर्लन छे. एवां वचन सांजलीने प्रजवो चोर पण प्रतिबोध पाम्यो अने बोल्यो के हे जंबु ! हुं पण ताहारी साथें दीक्षा लइश. पछी वली जंबुकुमर पोताना मातापिताने प्रतिबोध देशे तथा आठ कन्याउं वली पोतपोताना मातापिताने प्रतिबोध आपशे तथा प्रजवो पण पांचशें चोरोने प्रतिबोध आपशे. एम सर्वे मली प्रजातें पांचशेने सत्तावीश जनोनी साथे श्रीजंबुकुमर दीक्षा लेशे. एवुं श्रेणिकराजाने श्रीमहावीरस्वामीयें कह्युं हतुं ते प्रमाणे नवाणु क्रोड सोनैया धर्मखेत्रोमां खरची नाखीने उत्तम उत्सवसहित पांचशेने सत्तावीश जनोनी साथें श्रीजंबुस्वामीयें सुधर्मस्वामी पासेथी दीक्षा लीधी. पछी द्वादशांगी जणी श्रीसुधर्मस्वामीनी पाटें बेठा; केवलज्ञान पाम्या; पोतानी पाटें प्रजवाजीने बेसाडीने पोतें.मोक्ष गया. ए श्रीजंबुस्वामी छहेला केवली थया. इहां कवीश्वर कहे छे के जंबुजातना वाणिया घणा लोजी थाय छे एवुं लोक एटला माटे कहे छे के जंबुस्वामीना हाथमां केवलज्ञान रूप धन आव्युं ते बीजा कोइने आप्युं नही. छेहेलुं केवलज्ञान एज पाम्या छे, मोक्ष नगरनो दरवाजो बंध करी बेठा माटे लोजी कहेवाणा. ते उपरथी ए जातना वाणीयाने लोजी कहे छे तथा ए श्रीजंबुकुमर सरखो सोजागी कोइ थयो नही अने थाशे नही; शामाटे जे मोक्षरूपणी स्त्रीपण एने परण्या पछी बीजाने परणी नथी तथा एना जेवो कोइ कोटवाल पण नही थाय केमके एणे पांचसो चोरोने साधु बनावी दीधा ए कवीनी घटना कही. हवें श्रीजंबुस्वामी मोक्ष गया पछी दश वस्तु विछेद थइ गइ तेना नाम कहे छे. एक मनःपर्यवज्ञान, बीजो परमावधि, त्रीजी पुलाकलब्धि, चोथुं आहारक शरीर, पांचमी

चित्र ७७





पांचसौं चोर सोना मोरोना पोटला बांधी माथ लई उभाछे


चित्र ७८
यज्ञ करनार ब्राह्मणो
सय्यंभव भट्ट
बे साधु

क्षपक श्रेणि, छठी उपशम श्रेणि; सातमो जिनकल्प मार्ग, आठमुं परिहारविशुद्धि चारित्र तथा सूक्ष्मसंपराय चारित्र अने यथाख्यात चारित्र ए त्रण चारित्र विच्छेद थया ते आठमो बोल तथा नवमुं केवलज्ञान अने दशमुं मोक्षे जवुं. ए दश वानां विच्छेद गयां. श्रीमहावीरस्वामीथी चोशठ वर्षें श्रीजंबुस्वामी मोक्ष गया. एमनुं सर्व मली एंसी वर्षनुं आयुष्य हतुं ॥ ए बीजो पाट ॥२॥ हवे त्रीजे पाटे श्रीप्रभवस्वामी कात्यायन गोत्री हता; तेमणे एक दिवस पोताना गच्छमां तथा श्रीसंघमां उपयोग दीधो जे हुं कोने आचार्य करुं! ते उपयोग देतां गच्छमां तथा संघमां कोइ पोतानी पाटे बेसवा योग्य पुरुष दीठामां न आव्यो तेवारें अन्य मतोमां उपयोग दीधो. तेमां सय्यंभवभट्टने दीठो तेवारें श्रीप्रभवसूरियें बे साधुयोने सीखावीने सय्यंभवने घेर मोकल्या ते सय्यंभवने घरे जइने बोल्या "अहोकष्टमहोकष्टं तत्त्वं न ज्ञायते पुनः" जूओ आ कष्ट करे छे वली तत्वने जाणता नथी, एवुं सांभली तत्काल खड्ग लेइने सय्यंभव गुरुनी पासे आव्यो अने खड्ग काहाडीने बोल्यो के अरे मने देखाड; तत्त्व केवुं छे? तेवारें गुरुयें विचार्युं जे माथो कपातां तत्त्व कहेवामां दोष नथी एम चिंतवी गुरु बोल्या, अरे तुं यज्ञ करे छे ते यज्ञकीलकनी नीचे श्रीशांतिनाथजीनी प्रतिमा छे ते शांतिकारी छे. तेनाथी शांति थाय छे परंतु यज्ञथी कांइ पण थतुं नथी ते सांभली तेणे प्रतिमा काहाडी प्रतिबोध पाम्यो अने पोतानी स्त्री गर्भवती हती तेने छोडीने दीक्षा लीधी. श्रीप्रभवस्वामी त्रीश वर्ष गृहस्थ पणे रह्या तथा पच्चावन्न वर्ष पर्यंत चारित्र पाल्युं सर्व मली पच्चासी वर्षनुं आयुष्य भोगवी श्रीसय्यंभवने पोतानी पाटे बेशाडीने देवलोक गया ए त्रीजो पाट ॥३॥ ॥ हवे चोथे पाटे श्रीसय्यंभवसूरि वच्छगोत्रीया गर्भवती स्त्री छोडीने आव्या हता तेने पाछलथी पुत्र थयो तेनुं नाम मनक दीधुं. ते छो

करो एक दिवस पाठशालायें गयो तिहां छोकराउनी साथें रम्यो तेवारें बीजे छोकरे मेणुं मार्युं के हे निःपितृक! घणो तने जाणीये छैयें तहारो बापतो छेज नही. आ वात सांभलीने छोकरो दुःखी थयो थको पोतानी माता पासें आव्यो. माताने पुछ्युं हे माता! महारो पिता नथी? त्यारें मातायें कह्युं. हे पुत्र! ताहारो बाप नही ते वली होय! ताहारो बाप सय्यंभवभट्ट छे. छोकरायें पुछ्युं. ते किहां छे? तेवारें मातायें कह्युं हे पुत्र ताहारा बापने जैनना साधुउ भो लवीने लइ गया तेथी तेणे दीक्षा लीधी छे एवुं सांभली जे गाममां सय्यंभव सूरि हता ते गामनी बाहेर ते मनक पण आव्यो तेने साहामा ठंमिलें जाता गुरु मल्या तेमने मनके पुछ्युं के महाराज इहां सय्यंभवसूरि छे एवुं सांभलीयें छैयें ते कयी जगायें रहे छे? गुरु बोल्या ताहारे शुं काम छे तेवारें मनके पोतानी सर्व हकीगत कही अने कह्युं के हुं तेमनो पुत्र छुं. तेने गुरुयें पण कोइक उत्तर आपीने उपासरे मोकली आप्यो अने ठंमिलथी पाछा फरी आव्या तेवारें गुरुयें तेंने प्रतिबोध दीधो मनके कह्युं के मने दीक्षा आपो ते सांभली गुरु बोल्या महारुं तथा ताहारुं पितापुत्रपणुं जे छे ते तुं बीजा साधुउने नही कहे तो हुं तुजने दीक्षा आपुं त्यारें मनक बोल्यो हे महाराज हुं न कहुं ते सांभली गुरुयें दीक्षा आपी पण मनकनुं आयुष्य स्वल्प जाण्युं तेवारें गुरुयें सिद्धांतोमांथी सार लहीने दशवैकालिक सूत्र मनकने माटें बनाव्युं ते सूत्र छ महिनामां मनक भणी रह्यो सर्व आचार भणी गयो, छ महिना फाजेरा चारित्र पालीने देवलोक गयो पछी श्रावको मनकना शरीरने दाग आपी गुरुनी पासें आव्या ते वखत यशोभद्रप्रमुख बीजा घणा शिष्यो हता ते पण सर्व गुरुनी पासें बेठेला हता तिहां गुरुयें श्रावकोने धर्मोपदेश आप्यो पण गुरुनी आंखोमां आंसु आव्या ते देखीने

यशोभद्रसहित संघना माणसो बोल्या हे पूज्य आपना अनेक साधुउ परलोक जाय छे परंतु आपनी आंखमांथी आंसु पडतां केवारें पण दीठां नथी अने आज आंसु केम पड्यां? तेवारें गुरु बोल्या मोहथी आंसु पड्यां संघे पुछ्युं. कयो मोह हतो! त्यारें गुरु बोल्या ए अमारे संसारी पणानो पुत्र हतो परंतु स्वल्प काल चारित्र पाल्युं तेथी मोह आवी गयो तेवारें साधूउ बोल्या महाराज तमे अमने क्यारें पण कह्युं नही जे ए अमारो पुत्र छे! तेवारें गुरु बोल्या हुं जो तमने एवुं कहेत के ए म्हारो संसारीपणानो पुत्र छे तो पछी तमे एनी पासे वैयावच्च करावत नही तेथी एने शो लाभ थात? माटे एना अल्प आउखामां एटलो लाभ जाणीने तमोने में कह्युं नही ए तात्पर्यार्थ छे पछी गुरु, दशवैकालिकने पाछुं सिद्धांतोमां नाखवा लाग्या तेवारें संघे विनंति करी के हे स्वामी ए अल्प ग्रंथ छे ते आगल जतां अल्पबुद्धि अने अल्पायुषवाला लोकोने घणोज उपकारी थाशे माटे एमज रहेवा आपो. ते सांभली दशवैकालिक एमज राख्यो पछी सय्यंभवसूरि पोताना पाटे श्रीयशोभद्र सूरिने बेशाडीने श्रीमहावीर स्वामीथी अठाणुमे वर्षे स्वर्गे गया. ए चोथो पाट ॥ ४ ॥ हवे पांचमे पाटे श्रीयशोभद्रसूरि तुंगीयायणगोत्रीया बेठा तेना पाटे बे शिष्य बेठा तेमां एकतो आर्यसंभूतिविजयजी माढरगोत्रीया अने बीजा आर्य श्रीभद्रबाहुस्वामी पाईण गोत्रीया तेमांथी भद्रबाहुजीनो संबंध आवीरीतें छे के प्रतिष्ठान पुरना रेहेवासी एक वराहमिहिर अने बीजा भद्रबाहु ए बे नामे बे ब्राह्मण भाइउ हता तेमणे श्रीयशोभद्रसूरिनी पासे धर्मदेशना सांभलीने दीक्षा लीधी, चौद पूर्व भण्या पछी गुरुये विनीत पणानो गुण जोइने भद्रबाहुने आचार्यपद आप्युं अने वराहमिहिरने अविनीतपणाने लीधे आचार्यपद आप्युं नही कारणके जे आचार्यपद गणधरोये धारण कर्युं ते आचार्यपद जो

अविनीत अयोग्यने आपे तो ते गुरु जे आचार्य पदनो आपनार होय ते पण अनंत संसारी थाय. हवे भद्रबाहुने आचार्य पद मल्युं जोइने वराहमिहिर कोपानल थयो थको गच्छथी बाहेर नीकलीने गुरुनी उपर द्वेष धरवा लाग्यो चौदे पूर्व भणेलो हतो तेथी नवीन ज्योतिषना वाराहीसहिंता प्रमुख ग्रंथो बनावी साधुनो वेष मूकीने ब्राह्मणनो वेष धारण करी लोकोनी आगल निमित्त कहीने तेनाथी आजीविका चलाववा लाग्यो तेने लोक पूछे के एटलुं तमे क्यांथी भण्या, तेवारें लोकोनी आगल एवुं कहे के में एक दिवस नगरनी बारणे लग्न कुंमली मांमी ते कुंमलीने भांग्याविना एमज पाछो चाली निकल्यो पछी जेवारें याद आव्यो तेवारें भूसाडी नाखवा गयो अने तिहां जइने जोउं तो कुंमलीमां सिंहलग्ननो स्वामी सिंह ते पूछडुं वधारीने उपर उभो छे पछी में लग्ननी भक्तिने लीधे महारी छाती कठण करीने सिंहनी नीचे घुंसीने लग्न भुसाडी• नाख्युं महारी भक्ति जोइने सिंहनो अधिपति जे सूर्य ते आव्यो अने महारा उपर तुष्टमान थइने बोल्यो के माग माग तेवारें में कह्युं मने नक्षत्रादिकनो चार खरेखरो जेवो छे तेवो बतावो पछी सूर्य पोताना ज्योतिषना मंमल चारमां मुजने लइ गयो तिहां मने सर्व चार बताव्या, उदयास्तचक्र बताव्युं ते ज्योतिषना बलथी हुं त्रण कालनी वात जाणुं छुं एवी कल्पित वातो कहीने लोकोमां पूजाय, राजा प्रमुखने निमित्त कहीने खुशी करे अने चमत्कार पमाडे एम घणा लोकोने मिथ्यात्वी कर्या एवा अवसरमां श्रीभद्रबाहु स्वामी पण ते नगरमां आव्या तेमने श्रावकोयें महोटा महोत्सवसहित गाममां प्रवेश कराव्यो पण वराहमिहिरथी ते सहन थयुं नही तेवारें विचार्युं जे एनुं मान खंमित करुं तो सारी वात थाय एवुं चिंतवी एक दिवस राजसभामां जइने

राजाने कहेवा लाग्यो के आजथी पांचमे दिवसे पूर्व दिशाथी वर्षाद आवशे ते त्रीजे पहोरे वरसशे आ हुं कुंमालुं करुं छुं तेना वच्चमां बावन पलनो माछलुं पडशे एवुं निमित्त कह्युं ते वात श्रावकोयें आवीने भद्रबाहु स्वामी आगल कही के हे स्वामी आ वराहमिहिरे कहेली वात सत्य छे किंवा असत्य छे तेवारें भद्रबाहु बोल्या कांइक सत्य छे अने कांइक असत्य छे केमके पूर्व दिशाथी नही पण इशान कोणेथी आवशे ते छ घडी दिवस पाछलो रहेशे तेवारें पडशे पण त्रीजो पहोर कह्यो ते जूठो कह्यो छे वली बावन पलनो नही परंतु वायुथी सुकाइ जासे माटे साडी एकावन पलनो मत्स्य रहेशे तथा कुंमालानां मध्यभागमां नही पडे पण कुंमालानी कोर उपर एक बाजुयें पडशे माटे ते वराहमिहिर मिथ्यात्वना योगथी आटलुं जुठुं बोले छे ए वात पण श्रावकोये राजाने कही राजा बोल्यो साच जूठनी खबर हवे तरत पांच दिवसमां जणाइ आवशे एटलामां पांचमो दिवस आव्यो तेवारें वर्षाद वरस्यो अने श्रीभद्रबाहु स्वामीना कहेवा प्रमाणे सर्व वात सत्य थइ तेवारें राजा प्रमुख सर्व लोकोये श्रीभद्रबाहु स्वामीनुं ज्ञान वखाण्युं अने वराहमिहिरनी कांइ साची कांइ जुठी वात पडी गइ तेथी तेनी मानता कमती थवा लागी. वली एक दिवस राजाने घेर पुत्रजन्म थयो तेनी वराहमिहिरे जन्मपत्रिका बनावीने एकशो वर्षनुं आयुष्य वर्त्ति काहाड्युं. त्यारें सर्व लोक अद्भुत लइने राजाने वधाववा आव्या. अन्यदर्शनी योगी संन्यासी प्रमुख सर्व आशीर्वाद आपवाने आव्या, परंतु एक श्रीभद्रबाहु गया नही तेवारें वराहमिहिर राजाने कहेवा लाग्यो के हे राजन् ! तमारे घेर पुत्रजन्म थयो ते भद्रबाहुने रुच्यो नही तेथी आंही आशीर्वाद आपवा आव्यो नही ए वात पण श्रावकोये जइ श्रीभद्रबाहु स्वामीने कही

तेवारें नद्रबाहु बोल्या वारंवार केम जवाय एकवार जइशुं श्रावक बोल्या केम जाशो गुरु बोल्या आठमे दिवसे रात्रीनें वखते बिल्लाडीना योगथी पुत्र मरण पामशे तेवारें देखाडी आवशुं ए वात श्रावकोये जइ राजाने कही, राजायें सर्व बिल्लाडीयोने आखा गाममांथी बाहेर काहाडी मूकावी तथा बिल्लाडी कोइना घरमां अथवा गाममां न आवी शके तेना शेकडो गमे जाबता कख्या परंतु आठमे दिवसे दैवयोगें दासीना हाथथी कमाडनी गांसणी बालकना माथा उपर आवी पडी तेथी बालक मरण पाम्यो तेवारें वराहमिहिर बोल्यो बिल्लाडीथी तो मरण पाम्यो नही? पछी गुरुयें गांसणीनी उपर बिल्लाडीना मुखनो आकार लाकडामां करेलो हतो ते देखाड्यो तेथी वराहमिहिर लज्जा पाम्यो माटे तिहांथी निकली अन्यत्र स्थानके जइ अज्ञानकष्टथी मरण पामीने व्यंतर देवता थयो तेणे आवी श्रीसंघमां मरकीना रोगनो उपद्रव कख्यो तेथी घणा लोक मरवा लाग्या तेवारें श्रावकोनो उपद्रव टालवाने माटे महा महिमावंत एवुं "उवसग्गहर" नामे स्तोत्र गुरुयें बनाव्युं तेनो घरघरने विषे गणणो सरु थयो तेथी सर्व उपद्रव दूर थइ गयो. पछी सर्व श्रावकोना घेरमां जो थोडुं शो काम होय तो पण ते उवसग्गहरनो पाठ करे के ते काम पार पडी जाय, एम करतां करतां छेवट लोकोमां एवी चाल पडी गइ के जो गाय दूध न आपे तो पण उवसग्गहर स्तोत्र गुणे तेवारें गाय पण दूध आपती थाय एमज वली कोइक छाणा वीणवा गइ ते एकली हती तेनी छाणानी पोटली उपाडी आपवाने कोइ बीजो माणस ते वखत तिहां हाजर हतो नही तेवारें तेणे पण उवसग्गहरनो पाठ कख्यो तेवारें नागें पोते आवीने भारी उपाडी तेना माथा उपर राखी दीधी एमज एक स्त्री रोटला करवा बेठी हती तेनो छोकरो झाडे गयो ते रोवा लाग्यो

तेणे जाण्युं जे रोटलो वली जाशे त्यारें उवसग्गहरनो पाठ कख्यो के तरत नागराजा आवीने कहेवा लाग्यो के शुं काम छे ? स्त्रीये कह्युं छोकरो रडे छे तेने राखो तेवारें ते छोकराने शौच करावी रोतो रखाव्यो एवुं प्रायें सांजलीये छैयें एवीरीतें नीच कामो लोको करावता लाग्या तेवारें नागराज खीजीयो अने गुरुपासें आवी विनंति करी के हे महाराज संघथी हुं एक क्षणमात्र पण अलगो रही शकतो नथी लोकोतो पूर्वोक्त हलका हलका काम ते पण माहरी पासें करावे छे तेवारें गुरुयें जाण्युं जे ए निर्जाग्य लोको देवने खीजावशे तो उलटो अनर्थ थइ पडशे माटे आ स्तोत्र जंमारी मूकवुं युक्त छे तेमने नागेंद्रें कह्युं हे स्वामी नाथ आप छठी गाथा जंमारी मूको अने शेष पांच गाथाथीज हुं महारे स्थानके बेठो थको सर्व उपद्रव टालीश एवुं सांजलीने गुरुयें छठी गाथा जंमारी मूकी. वली श्रीजद्रबाहु स्वामीना करेला आवश्यकनिर्युक्ति प्रमुख अनेक ग्रंथ हालमां विद्यमान छे ए श्रीजद्रबाहुस्वामी श्रीमहावीर स्वामीथी एकसो सितेर वर्षें देवलोक गया तथा बीजा श्रीसंजूतिविजयजी जाणवा ए छठो पाट ॥ ६ ॥ हवे श्रीसंजूतिविजयजी माढरगोत्रीया हता तेमना पाटें आर्य थूलिजद्रजी गौतम गोत्रीया थया तेमनो संबंध आवीरीतें छे के पाडलीपुर नगरमां नवमो नंदराजा राज्य करे छे तेनो शकडाल नामे प्रधान छे तेनी लाछलदे नामा जार्याना बे पुंत्र थया एक थुलिजद्र अने बीजो सिरियो. एक दिवस वररुची नामा ब्राह्मण राजा पासें आव्यो तेणे एकशोने आठ काव्य नवा बनावीने संजलाव्या एम ते ब्राह्मण नित्य आवीने एकशोने आठ काव्य नवा नवा बनावीने राजा आगल कहे पण जेवारें प्रधान तेनी प्रशंसा करे तेवारें राजा दान आपे नहींकां दान आपे नही अने प्रधान तो वररुचीने मिथ्यात्वी जाणी तेनी प्रशंसा करे नही तेवारें

वररुचीजट्टे प्रधाननी स्त्री लाछलदेने कह्युं स्त्रीयें प्रधानने कह्युं के तें बिचारा जट्टने कांइक अ
पावजो तेवारें प्रधानना मनमांतो अपाववानो विचार न हतो पण स्त्रीना कहेवा उपरथी राज
सजामां कह्युं के ए काव्य सारा छे त्यारे राजायें संतुष्ट थइने नित्य तेने एकशोने आठ सोनैया
आपवा मांम्या एम घणादिवस देतां थया तेवारें प्रधाने जाण्युं के आवी रीतें तो सर्व धन नाश
थइ जाशे एवुं चिंतवीने पोतानी सात पुत्रीयो छे ते एवी बुद्धिमान् छे के पहेली पुत्रीतो एक
वार कांइ काव्यप्रमुख सांजले तो ते काव्य तेने मुखपाठ थइ जाय अने फरी तेनो पाठ कही
आपे एमज बीजी पुत्री बे वार सांजले तो तेने मुखपाठ थइ जाय, त्रीजी त्रणवार, चोथी
चारवार, एम यावत् सातमी सातवखत सांजलीने पाछो कही संजलावे. एम साते पुत्रीयो
महा चतुरछे तेने सीखावी मूक्युं के तमे राजसजामां एवुं कहेजो जे ए काव्य जुना छे अमोने
आवडे छे एम कही मुखपाठे संजलावजो. प्रजातें वररुची पण नवा एकशो आठ काव्य ब
नावीने सजामां आवी कहेवा लाग्यो तें वखत प्रधान बोल्यो हे महाराज, आगलना आपणा
वडेरा नंदराजानी पासे कहेला काव्य छे ते नित्य आवी कहे छे ए काव्य तो सर्व महारी
पुत्रीयोने पण आवे छे तेवारें राजायें पुत्रीयोने बोलावी सर्व काव्य कहेवराव्या ते साते ज
णीयें अनुक्रमे एक बीजानी पाछल मुख पाठें कही देखाड्या तेवारें राजायें जट्टने निर्जछना
करी काहाडी मूक्यो पछी ते वररुचीयें वली गंगानदीमां एक यंत्र नाखीने तेनी उपर छानो
पांचशो सोनोमोरोनो दडो नित्य मूकी आवे अने प्रजाते लोक नेला करी तिहां जइ गंगानी
स्तुतिना काव्य कही कल खटकावे के पांचशो सोनामोरोनो दडो हाथमां आवी पडे ते कौ
तुक जोइने लोको बोलवा लाग्या के जुउ राजायें आपवानुं बंध कर्युं तो पण आ पंमितने

गंगादेवीज इव्य आपे छे ए वात राजायें सांजली त्यारें प्रधानने कह्युं के आपणे पण जोवा चालीये, प्रधाने कह्युं आवती काले चालीशुं. पछी प्रधाने तिहां छाना रूपा माणसो बे साख्या ते जेवारें सांजनी वखते जट्ट सोनामोरोनी पोटकी यंत्रमां राखी आव्यो तेवारें ते छाना बेठेला माणसोये पोटकी काहाडी लइने प्रधानने आवी सोंपी दीधी. प्रजाते तो राजा प्रमुख सर्व लोको जोवा गया तेवारें ते वररुची पण गंगादेवीनी स्तुति करी घणा जोरथी कल दाबे छे तो पण हाथमां कांइ आवे नही तेवारें राजा बोल्यो आम केम थयुं ते वखत प्रधाने सर्व प्रपंच प्रगट करी आप्यो ने पोटली पण बतावी आपीने पाछी जट्टने सोंपी दीधी तेथी लोकोमां जट्टनी घणी निंदा थइ. हवे जट्ट मंत्री उपर द्वेष करवा लाग्यो एवा अवसरमां प्रधानना छोकरा सिरियानो विवाह मंमाणो छे तेवारें प्रधानना घरमां शस्त्रप्रमुख अनेक तरेनी तयारीयो देखीने जट्टें एक दुहो बनावी पोतानी पासे जणवा आवनार छोकराने शिखाव्यो ते दोहो कहे छे ॥ नंदराय जाणे नही, जे सिकमाल करेसि ॥ नंदराय मारी करी, सिरियो रज्ज ठवेसि ॥ १ ॥ ॥ ए दुहो छोकरा राजाना महेल पासे आवीने कहेता थका निकल्या, राजायें जट्टने पूछ्युं आ वात केम छे जट्टे कह्युं तमे चोकशी करावो सर्व जातिना शस्त्र तयार थाय छे. राजायें चोकसी करावी युद्धसामग्री जाणीने कोपानल थयो अने निर धार कस्यो जे सकमालना सर्व कुंटुबने मरावी नाखुं आ वात सकमाले जाणी तेवारें राजा पासें आव्यो, राजायें सकमालने जोइ महोडुं फेरवी नाख्युं तेवारें प्रधान घरे आवीने सि रियाने कहेवा लाग्यो के महारी वात सांजल जेवारें हुं जइ राजाने नमस्कार करुं ते वखत तुं महारुं मस्तक तरवारथी कापी नाखजे ए वात घणीज महेनतथी सिरियें मान्य

करी पछी सकमाले राजाने प्रणाम कर्यो राजायें महोडुं फेरवी नाख्युं प्रधाने पोताना मु
खमां तालपुट विष नाखी लीधो हतो तिहां सिरियो बोल्यो के जे कोइ राजानो द्वेषी होय
तेने तो मारवुंज जोइयें एवुं कहीने तरवार मारी तेथी मस्तक कपाइ गयुं राजा घणो खेद
करीने पछी संतुष्ट थइ सिरियाने कहेवा लाग्यो के ताहारा पितानो अधिकार तुं ले, सिरियो
बोल्यो महारो महोटो भाइ थुलिभद्र छे तेने अधिकार आपवो जोइयें, राजायें पूछ्युं ते किहां
छे त्यारे सिरियें कह्युं ए महारो भाइ न्हानपणमां पोथी वांचवा उपर कालनिर्गम करतो
हतो ते परण्यो हतो पण पोतानी स्त्रीपासें जतो नही तेवारें माहारा मातपितायें जाण्यु
ए संसारनी कला शीखशे नही एवुं विचारीने कोश्या वेश्याने कला शीखाववा माटे
सोंप्यो छे तेने बार वर्ष थया वेश्याने तिहांहीज लोभाइ गयो छे बार क्रोड सोनैया
खाइ गयो छे माटे तेने बोलावीने अधिकारी करो. राजायें थूलिभद्रने तेडवा माटे छ
डीदार मोकल्यो, तेवारें वेश्या बोली राजा पासें म जाउ केम के जासो तो फरी राजा
तमोने महारी पासें आववा देशे नही अने महारे पण तमारा विना केवी रीते रह्युं जाशे ते
विचार करो जे एक क्षणवार पण तमारा वगर मने चेन पडतुं नथी ते तमे जाणोज छो
माटे तमारे जावुं नही तेवारें थूलिभद्र बोल्यो एकतो महारा पितानुं मरण थयुं छे अने बीजो
वली राजानो हुकुम आव्यो छे ते फरी शके नही तो पण एकवार तने मलवा माटे तो जरुर
आवीश एवुं कहीने पोताने घेर आव्यो तिहां सर्व घटना प्रपंचनी वात तथा पिताना मर
णनी वात सांभलीने पछी राजापासें आव्यो राजायें तेने कह्युं के तुं प्रधानपद ग्रहण कर.
थूलिभद्र बोल्यो विचारीने ग्रहण करीश, तेवारें राजायें कह्युं तुरत विचारी ले. पछी अशोक


चित्र ७८
थूलिभद्रजी साधु.
कोश्या वेश्या नाटक
करेछे.

वाडीमां जइने विचार कर्यो के जुर्र आ संसारतो मतलबी छे, मह्हारा पितानी एवी अवस्था थइ माटे राज्यना काममां, आ लोकनुं पण सुख नथी अनें परलोकमां तो नरकनी प्राप्ति थाय एवो संसार असार जाणी रत्नकंबलनो र्रघो बनावी, लोच करी, साधु थइने राजाने जइ धर्मलाज आप्यो अने तिहांथी निकल्यो राजायें जाएयुं जे आ व्यसनी छे माटे वेश्याने घेर जशे एवुं विचारीने जोवा लाग्यो तेवारें ते तो कोइ महाडुर्गंधित गलीमांथी थइने गाम बाहेर निकली गयो पण डुर्गंधथी नाक ढांक्युं नही तेथी राजायें जाएयुं जे ए खरेखरो वैराग्यवान् छे पछी थुलिजइें जइने श्रीसंजूति विजयजीनी पासे दीक्षा लीधी अने राजायें सिरियाने मंत्रीपद आप्युं, मह्होर सोंपी. हवे चोमासुं आवे श्रीथुलिजइजी गुरुना आदेशथी वैश्याने घेर चोमासुं रह्या अने एक साधु सिंहनी गुफायें चोमासुं रह्या तथा त्रीजो शिष्य सर्पबिलें चोमासुं रह्या, चोथो साधु कूआना वचला काष्ठ रपरे चोमासुं रह्या ए चारेमांथी थुलिजइजी वैश्याने घेर चोमासुं रह्या छे तिहां चोमासुं काहाडवुं घणुं कठण छे कारण के एकतो वर्षाकृतु छे ते कामनी जगाववा वाली छे केम के जे कालमां मेघ गर्जारव करे, वी जली चमके, मोर बोले, पपइया पिउ पिउ करे, एवा कालमां जोगनी वांछा घणी थाय वली रहेवाने चित्रामणवाली जगा, अने खावाने षड्रस जोजन नित्य मले, ए सर्व जो गना अंग मले अने जो स्त्री रागवाली न मले तो सर्व निष्फल थाय परंतु अहीं थुलिजइ जीने तो कोश्या वेश्या सरखी सर्वमां अग्रेसर रागवाली मली छे तेणे मह्होटा रमेदथी चित्र शालिमां रताख्या, अनेक प्रकारना जोजन कराव्या, अनेक तरेना हाव जाव कर्या, फूल र पर नाटक कीधुं, जोग विलासना वचन बोली, तथापि ए महापुरुषनुं एक रोम पण

भग्युं नही सेवट वेश्या बोली जे हुं आटला विलाप करुं छुं तेनुं कांइ प्रत्युत्तर तो आपो तेवारें मुनियें उपदेश दीधो के हे भोली धर्मविना सर्व अवतार निष्फल छे इत्यादिक उपदेश सांभलीने कोश्या श्राविका थइ, एक राजाना हुकुमदार पुरुष विना बीजा कोइ पण पुरुषने घरमां पेसवा देवो नही एवी श्राविका करी चोमासुं पूरण थये मुनि गुरु पासे आव्या अने बीजा त्रण साधु पण आव्या तेमने तो गुरुयें किंचित् उठीने कह्युं के भले आव्या हे डुक्करकारक ! अने थुलिभद्रने तो आवतो देखतांज तत्काल गुरु उठी उभा थइने बोल्या भले आव्या अहो डुक्करडुक्करकारक एवुं सांभली सिंहगुफावासी साधुयें अमर्ष आणीने विचार्युं के जुओ आ गुरु पण धनवंतना गरजु देखाय छे केमके जे खूब माल खाइने मातो थइ आव्यो तेने तो अहो डुक्करडुक्करकारक एवुं कह्युं अने में एवुं कठण तप कर्युं तेने तो डुक्करकारक एटलुंज कह्युं एवुं जाणीने आवते चोमासे सिंहगुफावासी साधुयें गुरुने कह्युं के हुं वेश्याने घेर चोमासुं करवा जइश तेने गुरुयें कह्युं हे वत्स, कामदेवनी राजधानी सरखा घरमां जइ चोमासुं करवानुं काम अत्यंत कठण छे तुं भ्रष्ट थइ जइश माटे ताहारे जावुं नही. तो पण तेणे मान्युं नही अने कोश्याने घेर चोमासुं रहेवा गयो तिहां एक सामान्य जगा वेश्यायें तेने रहेवा माटे आपी अने तेनी पासे सामान्य वेष करीने बेठी तो पण तेनुं रूप देखीने मुनि भगी गयो अने भोग करवानुं कह्युं तेवारें वेश्या बोली धनविना अमारे कामना नथी, साधुयें कह्युं के धन किहांथी लइ आवुं ? वेश्या बोली नेपाल देशनो राजा रत्नकंबल आपे छे ते लइ आवो. साधु भोग करवानो मतलबी थयो माटे चोमासाना दिवसोमां कीचड घूंटतो घूंटतो नेपाल देशे गयो तिहांना राजा पासेथी रत्नकंबल लइने पाछो वल्यो तेवारें रस्तामां चोरोनो सूडो

बोल्यो " लक्षं याति " चोरोयें सूडानी वाणी सांजलीने साधुनी पासेथी रत्नकंबल खोंची लीधो फरी पाछो राजा पासें जइ कहेवा लाग्यो के कंबल चोरोयें लुंटी लीधो तेवारें राजायें वांसनी लाकडीमां कंबल नाखीने दीधो पाछो फरतां वली पण रस्तामां सूडो बोल्यो " लक्षं याति " ते चोरोयें सांजल्युं परंतु कंबल दीठामां न आव्यो तो पण चोरोयें जाण्युं जे अ मारो सूडो जुठुं बोले नही तेथी मुनिने कह्युं हवे तमारो कंबल अमे लइशुं नही पण सत्य कहो जे तमारी पासें कंबल छे के नथी मुनियें सत्य कह्युं, चोरोयें छोडी दीधो, मुनियें रत्नकं बल लावीने वेश्याने दीधो, वेश्यायें स्नान करी कांबलथी शरीर लुछीने खालमां पटकी दीधो ते जोइ साधु बोल्यो हे नोली एवा अमूल्य रत्नकंबलने खालमां केम नाखी दीये छे? त्यारें वेश्या बोली अरे मूर्खा तुं पण शुं करे छे! जे आ महाउज्ज्वल इहलोकमां अने परलोकमां सु खकारी रत्नकंबलथी पण अत्यंत अधिक मूल्यवान् एवुं चारित्र रूप रत्न छे तेने मलमूत्रे करी नरेलुं एवुं जे महारुं शरीर रूप दुर्गंधित खाल तेमां केम नाखी आपे छे? माटे तुं महाराथी अधिक मूर्ख देखाय छे एवुं सांजली प्रतिबोध पामी पाछो गुरुनी पासे आवीने साधुयें फ रीथी चारित्र लीधुं ॥ हवे एक दिवस राजाना रथकारें कोश्या वेश्यानें घणीज स्वरूपवाली सांजली तेथी तेनी पासे जवानी इच्छा थइ पण राजाना हुकुम विना बीजाने वेश्या राखे नही एवो तेनो नियम जाणीने रथकारे राजाने कोइ पोतानी कला बतावीने राजी कर्यो तेवारें राजा प्रसन्न थइने बोल्यो के माग जे तुं मागे ते हुं आपुं. रथकारें कोश्यानी मागणी करी राजायें हुकुम आप्यो अने कोश्याने रथकार सोंप्यो. हवे कोश्या नित्य प्रत्ये रथका रनी पासें श्रीथुलिभद्रजीना गुणगान करे ते जोइ रथकारें जाण्युं जे हुं एने कोइ कला ब

तावुं तो ए मह्वारा गुण जाणशे ने मह्वारी स्तुति पण करशे एवुं चिंतवीने गोखमां बेशी एक बाणथी सात केरीनो जुमखो वींध्यो तथा तेनी पढवाडे वळी बीजुं बाण साध्युं एम एकेकनी पढवाडे बाणो साधीने गोखमां बेठा थकांज आंबानी लुंब तोडीने वेश्याने आपी दीधी अने कहेवा लाग्यो के जो आ मह्वारी कळा केहेवी छे! तेवारें कोश्यायें एक राइना दाणानो ढिगलो करी तेना उपर फूल राख्युं तेमां एक दोरो शीववानी सूइ उन्नी राखीने तेनी उपर नाटक कर्युं ते नृत्य जोइने रथकार अत्यंत खुशी थइ गयो अने कहेवा लाग्यो जे माग माग हुं ताह्वारी उपर संतुष्ट थयो छुं कोश्यायें कह्युं तें कहेवोक तमासो जोयो के जे थकी खुशी थइने मह्वारा उपर प्रसन्न थयो? आ में जे सूइनी अणी उपर नृत्य करी बताव्युं एवी कलाउ जो शीखवा बेसीयें तो ह्जारो शीखी शकाय छे तेमज तें जे आम्रनी लुंब तोडी आपी ए पण शीखवुं सहेज छे. एमां कांइ कठण नथी अभ्यास करवाथी बधी कळा शीखी शकाय तेवी छें. परंतु मह्वारा जेवी स्वरूपवाळी स्त्री पासेनी पासे उन्नी रहेली हती, अने वळी चोमासाना दिवस हता तेमज कामने जागृत करनारी एवी आ चित्रशाळा हती तथा शरीरने पुष्टीना करनारा मन्मथने उत्तेजन आपनारा एवा घणा श्रेयमां श्रेय नोजन मळता हता ते आरोगी ने वळी रात्रदिवस मह्वारी पासे रहेता तेम हुं पण तेमना उपर अत्यंत मोहित थई थकी सराग दृष्टीयें बहुप्रीतिपूर्वक विषयसेवन करवानी याचना करी रही हती आटलुं छता एक क्षणमात्र पण जेनुं मन चळायमान थयुं नही एवी कळा श्रीथुलिभद्रजीनी पासें हती ते शीखवी घणीज कठण छे. महा दुर्लभ छे. जेनी आगळ में घणा प्रकारना चाळा कर्या तथापि ते महापुरुष किंचिन्मात्र



थूलिभद्रजीयें सिंहनुं रूप कर्युं छे.

भण्यो नही धन्य छे एमना मातपिताने के जेना कुलमां एवो पुरुष उत्पन्न थयो एवो उपदेश आपी रथकारनुं मन फेरवीने श्रीथुलिभद्रजी पासें मोकल्यो तेणे जइ दीक्षा लीधी ॥ हवे को इक समये बारवर्ष पर्यंत काल पड्यो तेवारें त्यां सर्व मुनिराजो अग्यार अंगना जाणनारा रह्या पण द्वादशांगीना जाणनारा कोइ न हता तेवारें सर्व संघे बे मनुष्य मूकीने श्रीभद्र बाहु स्वामीने बोलाव्यो, भद्रबाहु स्वामीयें कह्युं में प्राणायाम ध्यान चालुं कर्युं छे तेमाटे म हाराथी आवी शकाशे नही. तेमने श्रीसंघे फरीथी कहेवराव्युं के हे महाराज जे श्रीसंघनी आज्ञा न माने तेने केवा प्रकारनो दंड करवो? श्रीभद्रबाहुजी बोल्या तेने गछ बाहेर करवो एवी चाल छे पण मने ध्यानना अंतराय थाय छे माटे श्रीसंघने एम करवुं योग्य छे के भ णवावाला साधुउने इहां महारी पासें मोकली आपवा जोइयें तो तेमने भणवानुं बनी श कशे तेवारें श्रीसंघे मली श्रीथुलिभद्र प्रमुख पांचशो साधुउने श्रीभद्रबाहुस्वामी पासें मो कल्या तिहां गुरुयें सर्व साधुउने सात वाचना दीधी तेमां बीजा सर्व साधुउतो भणवाथी हारी गया परंतु एक श्रीथुलिभद्रजी बे वस्तुयें उणा दश पूर्व भणी गया एवामां श्रीथुलि भद्रजीनी सात बहेनो यक्षा, यक्षदिन्ना, भूता, भूतदिन्ना, सेणा, वेणा अने रेणा ए साते साध्वीउ श्रीसंभूतिविजयजीनी शिष्यणीउ थयेली छे ते श्रीथुलिभद्रजीने वांदवा सारु आवी तेणे प्रथम श्रीभद्रबाहु स्वामीने वांदीने पुछ्युं के थुलिभद्रजी किहां छे? गुरु बोल्या पर्वतनी गुफामांहे भणेला पूर्वनुं गुणणु करे छे तेवारें साते जणी तिहां गइ तेमने आवती जोइ ज्ञा नना बलेकरी चमत्कार देखाडवामाटे श्रीथुलिभद्र सिंहनुं रूप करी बेठो तिहां सिंहने देखी साध्वीउ भय पामी थकी फरी गुरु पासें आवीने केहेवा लागी के महाराज तिहां तो सिंह

बेठो छे तेवारें गुरुयें जाण्युं एणे विद्या प्रगट करी जणाय छे एम विचारीने वली कह्युं के हवे तमे जाउ थुलिभद्रजी तिहांज छे तेवारें ते फरी तिहां गइ जाइने देखी हर्षसहित वंदना करी वली गुरु पासें आवीने पूछवा लागी के महाराज अमारी सार्थे सिरिये दीक्षा लीधी तेने अमारामांथी यक्षणीयें उपवास कराव्यो ते देवलोक गयो पछी यक्षणीने प्रायश्चित्त लेवा माटे श्रीसंघने कह्युं तेवारें श्रीसंघे काउसग्ग करीने शासन देवीने सीमंधरस्वामी पासें मोकली सीमंधरस्वामीना मुखथी बे चूलिका लइने शासनदेवी इहां आवी. एवुं कही गुरुने वांदीने पोताने स्थानके गइ. हवे एक दिवस श्रीथुलिभद्रजी पोतानो एक ब्राह्मण मित्र हतो तेने घेर गया तिहां ते ब्राह्मणनी स्त्रीने पुछ्युं महारो मित्र किहां छे ? स्त्रीयें कह्युं अमने दारिद्रीपणुं प्राप्त थयुं छे माटे भीख मागवा गयो छे तेवारें श्रीथुलिभद्रें ज्ञानबलथी जोयुं तो एना घरमां वडिलोपार्जित घणुं धन भरेलुं दीठुं पण ब्राह्मणने तेनी खबर नथी माटे भीख मागे छे पछी श्रीथुलिभद्रजीयें पोतानी दृष्टीथी दाटेला धननुं ठेकाणुं तेनी स्त्रीने बताव्युं अने पोतें चाल्या गया ब्राह्मणे आवीने पोतानी स्त्रीना कहेवा उपरथी दाटेला धननुं स्थानक जाण्युं अने विचार्युं जे पक्का मुद्दा विना मुनिराज दृष्टी आपे नही. माटे तेणे धरती खोदी जोइ तो तेमांथी घणुं धन निकल्युं तेना योगें ब्राह्मण सुखी थयो. एवी रीते एक सिंहनी विकुर्वणा करी अने बीजुं ब्राह्मणने धन देखाड्युं ए बे वातो अयोग्य करीने वली श्रीथुलिभद्रजी गुरुनी पासे वाचना लेवा आव्या तेवारें गुरुयें कह्युं के पूर्वोक्त बे काम करवा थकी तमे वाचना लेवाने अयोग्य थया छो, फूटेला भाजनमां दूध नाखीयें तो ठेरे नही, तेम तमोने पण वाचना हवे देवाय नही. एवुं सांभली श्रीथुलिभद्रजी उदास थया. [illegible] श्रीसंघने

विनंति करी जे महारामां चूक पडी माटे गुरु वाचना आपता नथी श्रीसंघे मली थुलिभ
द्रने वाचना आपवा माटे श्रीगुरुने अरजी करी ते उपरथी गुरुयें चार पूर्व मूल पाठे वं
चाव्या पण अर्थ शीखव्यो नही वली एवुं पण कह्युं के ए चार पूर्व तमारे बीजा कोइने हवे
जणाववा नही तिहांथी पाछला चार पूर्वनो ज्ञान विच्छेद थयो अने दश पूर्वनुं ज्ञान रह्युं ए
श्रीथुलिभद्र आचार्य श्रीमहावीर स्वामीना निर्वाण पछी बशेंने पन्नर वर्षे देवलोक गया ए
सातमो पाट कह्यो ॥ ७ ॥ ॥ आंही सुधी एक श्रीजंबुस्वामी केवली थया अने बीजा पाट
सर्वश्रुत केवली थया. हवे श्रीथुलिभद्रना पाटे बे शिष्य थया एक तो श्रीआर्य महागिरि ए
लावच्छ गोत्री अने बीजा श्रीआर्य सुहस्ति वाशिष्ट गोत्री ए बे आचार्य बेउ तेमां आर्य सु
हस्तिसूरिनो संबंध कहे छे. ते वखत जिनकल्प विच्छेद गयो हतो तो पण श्रीआर्य महागिरि
जीयें जिनकल्पनी तुलना करी एटले जिनकल्पनी पेठे चाल्या. एक दिवस श्रीआर्य सुहस्ति
सूरि कोइ शेठने घेर उपदेश आपे छे एटलामां श्रीआर्य महागिरिजी गोचरीयें आव्या तेमने
देखीने श्रीआर्य सुहस्ति तरत उठीने ऊभा थया तेवारें शेठे पुछ्युं के ए महात्मा कोण छे?
त्यारें आर्यसुहस्ति सूरियें शेठनी आगल आर्य महागिरिजीनी स्तवना करी सर्व वृत्तांत कह्युं ॥
एक समये दुकाल पड्यो धान खावाने मलवुं मुसकिल थयुं तेथी लोक सर्व दुःखी थया छे, जे
राजा जेवा हता तें पण रांक जेवा थइ गया छे तो पण श्रावक लोको साधुउने दान आपे
छे. साधुउनें घणी भिक्षा मलती देखीने एक भिखारी साधुनी पछवाडे चालवा लाग्यो अने
बोल्यो के मने खावाने आपो तमारे घणुं खावानुं मले छे साधुयें कह्युं के अमारा गुरुने पूछी
तेनी आज्ञा लइ आव. तेवारें भीखारी गुरुनी पासें आव्यो गुरुये कह्युं के जे अमारा जेवो

होय तेने अमे आपीयें. भिखारीयें कह्युं के भले तमारा जेवो मने पण करी ल्यो. ते सांभली गुरुयें पण लाभ जाणी तेने दीक्षा आपीने तेनी इच्छा मुजब भोजन कराव्युं अने सुहस्ति सूरियें कह्युं के शुद्ध भाव राखजो एटलामां तेने उलटी थइ तेवारें सर्व साधु तेनो वैयावच्च करवा लाग्या तेथी भिक्षुयें चारित्रनी अनुमोदना कीधी अने मरण पाम्यो तिहांथी मरीने उज्जयणी नगरीमां श्रेणिक राजाने पाटे कोणिक राजा, तेना पाटे उदायिन राजा, तेना पाटे नंद नामे नव राजानां नव पाट थया अहींसुधी श्रेणिकथी मांमी बार पाट थया तेरमे पाटे चंद्रगुप्त, चौदमे पाटे बिंदुसार, पन्नरमे पाटे अशोकश्री अने शोलमे पाटे अशोकश्रीनो पुत्र कुणाल थयो ते कुणालनो पुत्र संप्रतिनामे राजा थयो, जनमतांज तेना दादायें तेने राज्य आप्युं ते अनुक्रमे त्रण खंड पृथ्वीनुं राज्य भोगवनारो थयो. हवे एक दिवस ते संप्रतिराजा गोखमां बेठो छे तेणे रथयात्रामां आर्य सुहस्तिसूरि जाय छे तेने दीठा तेना योगें जातिस्मरण ज्ञान उपंन्युं तेथी पूर्वे भिक्षुना भवमां पोते साधु थयो हतो ते सर्व दीठामां आव्युं तेवारें गोखथी नीचे उतरी गुरुने पगे लागीने पुछ्युं के हे स्वामी अव्यक्त सामायिकनुं शुं फल? गुरुयें कह्युं राज्यादिप्राप्ति थाय ते सांभली संप्रति राजा वली विशेष दृढ थइने गुरुने पूछवा लाग्यो के हे स्वामी मने आप उलखो छो? तेवारें गुरु उपयोग आपीने बोल्या के तुं भिक्षुना भवमां अमारो शिष्य हतो तो हवे तने राज्य मल्युं माटे धर्मवृद्धि कर एवुं गुरुनुं वचन सांभलीने राजायें श्रावकपणुं लीधुं अनें सवालाख जिनमंदिर नवा कराव्या, सवाकोटी जिनबिंब प्रतिष्ठाव्या, तेर हजार जीर्णोद्धार कराव्या, पंचाणु हजार पीतलनी प्रतिमाउ भरावी, सातसे दानशालाउ करावी, देवालयोथी सर्व पृथ्वी शोभायमान करी, कर



संप्रति राजा आर्यरक्षितजीने नमस्कार करेछे.

छोडाव्या, साधुउना वेश पहेरावीने पोताना सुनटोने अनार्य जेवा देशोमां मोकली तिहांना लोकोने समजावीने साधुउने अनार्य देशोमां विचराव्या तथा बीजा घृत, गोड, वस्त्र प्रमुखना सर्व व्यापारीउने तेमज कंदोइ लोकोने कहेवरावी मूक्युं के तमे शुद्ध आहारादिक मुनिउने वहोरावजो तेना पैशा जे थाय ते राजानी पासेथी लइ जाजो पण ए वातनी साधुउने खबर पडवा देशो नही लोको पण तेमज साधुउने देवा लाग्या, साधुउ पण अशुद्ध न जाणता थका आहारादि लेवा लाग्या, जाणे शुद्धज छे एम समजवा लाग्या, एटलामां आर्यमहागिरिजी बोल्या हे शिष्यो आ एवो स्निग्ध आहार नित्य केम लइ आवो छो? तेवारें शिष्यो बोल्या अमे चोकसी तो नित्य करीयें छैयें पण एनी मालम पडती नथी वली गुरुयें कह्युं हवे सारी रीते चोकशी करो पछी शिष्यो ए गोचरी करतां छोकराउने पुछ्युं अरे तमने नित्य लाडु प्रमुख किहांथी आवे छे? तेवारें छोकरा बोल्या महाराज सर्व आपणो प्रताप छे अमे पण तमारे प्रतापे लाडु प्रमुख खाइयें छैयें अने आपने पण वहोरावीयें छैयें राजानो भंडार अखूट छे ते सांजली शिष्यो ए आवीने आर्यमहागिरिजीने कह्युं आर्यमहागिरियें जाण्युं आ राजद्रव्य छे पछी आर्यसुहस्तिने कह्युं हे देवाणुप्रिया तमे आहारनी चोकशी करो छो के नथी करता? आपणने राजद्रव्य आवे छे ते केम? तेवारें आर्यसुहस्ति विना उपयोगथी बोल्या के राजद्रव्य तो सर्वत्र छे, कहो राजद्रव्य क्यां नथी? आर्यमहागिरिजी बोल्या आवी शिथिलपणानी वात तमे कैम करो छो? आजे तमे पोतेंज एवुं बोलो छो तेवारें तो प्रसिद्धपणे दोष लागवानुं थाशे माटे हवे तमारे ने अमारे सांभोगिकपणुं नथी एवुं कहीने अन्यत्र स्थानके विहार करी गया इहां सुधी तो एकज समाचारी हती अने एकज गच्छ हतो तथा

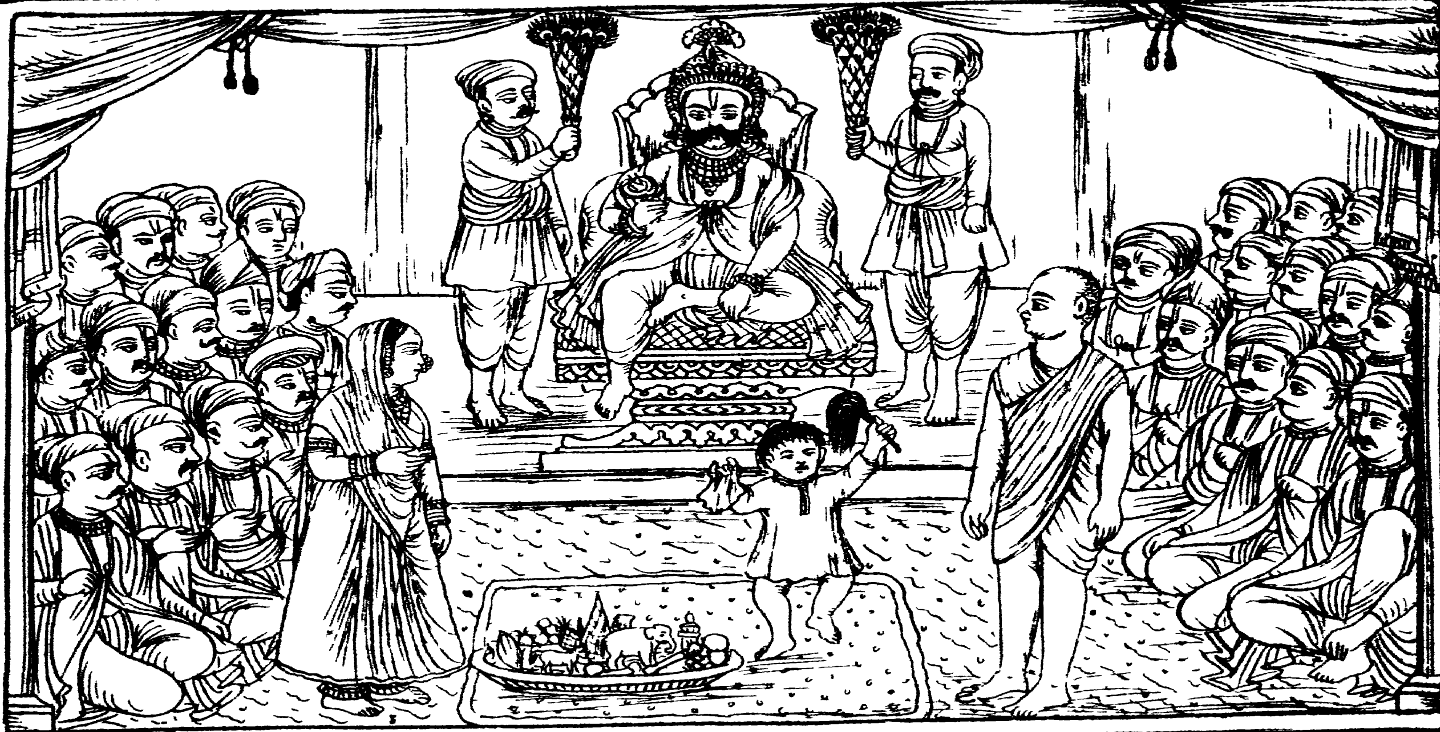
एक सांजोगिपणो आचार्योनो चाल्यो. परंतु आंही श्रीआर्य सुहस्ति सूरियी सांजोग निन्न थयो आर्यसुहस्ति चारित्र पाजी देवलोक गया ए आठमो पाट जाणवो ॥ ८ ॥ ॥ हवे श्री आर्यसुहस्तिना वे शिष्य थया तेमां एकतो सुस्थित अने वीजो सुप्रतिबद्धक एमणे कोटी वार सूरिमंत्र जप्यो काकंदी नगरीमां जन्म्या तेमनो व्याघ्रापत्य गोत्र हतुं ए नवमो पाट ॥ ॥ ए ॥ ॥ एमने पाटे श्रीआर्य इंद्रदिन्नसूरि कौशिक गोत्रीया थया ए दशमो पाट ॥ १० ॥ श्रीआर्य इंद्रदिन्न सूरिने पाटे श्रीआर्य दिन्नसूरि गौतम गोत्रीया थया ए अगीआरमो पाट ॥ ॥ ११ ॥ ॥ श्रीआर्यदिन्नने पाटे श्रीआर्य सिंहगिरि कौशिक गोत्रीया थया जे जातिस्मरण ज्ञान पाम्या हता ए बारमो पाट ॥ १२ ॥ ॥ आर्य सिंहगिरिने पाटे आर्यवज्रसूरि गौतम गोत्रीया थया ए तेरमो पाट ॥ १३ ॥ ॥ आर्यवज्र सूरिने पाटे आर्यवज्रसेन सूरि उत्कौशिक गोत्री थया ए चौदमो पाट ॥ १४ ॥ ॥ एमना चार शिष्य थया एक नाइल, बीजो पोमिल, त्रीजो जयंत अने चोथो तापस ए चारने नामे एमनी चार शाखा निकली ए पन्नरमो पाट ॥ १५ ॥ ॥ हवे तेरमा आर्यसिंहगिरियी मांमीने त्रण पाटनुं वर्णन कही देखाडीयें बैयें ते आवी रीते बे के श्रीसिंहगिरिनी पासेथी सुनंदानो नाइ आर्यसमित तथा बीजो सुनंदानो नरतार धनगिरि ए बे जणे दीक्षा लीधी अने सुनंदा पोते गर्नवती हती तेने तुंबवन गाममां मूकी दीधी पछी सुनंदाने पुत्र थयो ते वखतमां बीजी पडोसीनी स्त्री बोली के बाइ जो आज एना बाप धनगिरियें दीक्षा न लीधी हती तो आ पुत्रना जन्मनो महोटो महोत्सव थात पण हमणा तो पिता विना बीजो कोण आवीने महोत्सव करे. एवी वात सांजलीने ते बालकने जातिस्मरण ज्ञान उपन्युं तेवारें बालके जाण्युं जे हुं जो महारी मा



सुनंदा पोताना भरतार धनगिरिजीने छोकरो वहोरावेछे. झोलीमां नाखी साधु लई जायछे.

ताने राजी राखीश तो ए म्हारी माता मुजने छोडशे नही माटे कोइ रीते एने कंटालो उ
पजे तेवो उपाय करुं तो ए मने त्यागी देशे, तेवारें हुं दीक्षा लइश एवुं जाणी माताने उद्वेग
कराववाने माटे नित्य रुदन करवानुं चालुं कर्युं केमके एने तो चारित्र लेवानो नाव वर्त्ते छे
तेवारें बालकना रुदनथी माता घणी उद्वेग करवा लागी अने विचार्युं जे हुं आ पुत्रने शुं
करुं! कोइने आपी देउं तो ठीक एवा अवसरमां सिंहगिरि आचार्य तिहां पधार्या तेवारें धन
गिरि गोचरीयें जवा लाग्या तेने गुरुयें ज्ञान दृष्टीयें विचारीने कह्युं के आज तमोने गोच
रीमां सचित्त अचित्त वस्तु जे मले ते लइ लेवी, हवे धनगिरि गोचरी फरतां फरतां सुनंदाने
घरे गया सुनंदा बोली आ तमारा पुत्रें तो मने उलटो संताप करी दीधो छे माटे एने लइ
जाउ. साधुयें कह्युं हमणा तो तुं आपे छे पण पाछलथी दुःख करीश, सुनंदा बोली हुं दुःख
नही करुं तमे सुखे लइ जाउ. तेवारें धनगिरिजी घणी स्त्रीयोने तथा बीजा लोकोने साक्षी
करी पुत्रने लइ झोलीमां नाखी उपासरे आव्या गुरुयें झोली उपाडी तेमां नार घणो जाण्यो
तेवारें बोल्या के आ शुं वज्र छे के? एवुं कहीने झोली उघाडी तो मांहे बालकने दीठो
तेनुं वज्र एवुं नाम दीधुं हवे. उपासरामां आव्या पछी बालकें रुदन करवुं बंध कर्युं गुरुयें
सय्यातरनी देवावाली श्राविकाने ते बालक सोंप्यो. तेणे पारणामां राख्युं ते जेवारें छ
महीनानो थयो तेवारें तिहां शालामां साध्वीउ नण्या करे छे तेमना वचन सांनली पार
णामां सुतां सुतां अगीआर अंग नणी गयो. अनुक्रमें जेवारें त्रण वर्षनो थयो तेवारें सुनंदा
बोली जे हुं म्हारो पुत्र पाछो लइश. तेने संघे कह्युं के ए गुरुनो माल छे ते गुरु जाणे पण
अमाराथी अपाय नही पछी राज दरबारमां गइ तिहां संघनी विनंतिथी गुरु पण दरबारमां

आव्या राजायें एवी रीते न्याय थाप्यो के जेना उपकरण ए बालक लइ लीये तेनो ए पुत्र जाणवो. तेवारें मातायें लाडु तथा घुघरा प्रमुख बालकने देखाड्या परंतु बालके तेनी सा ह्यामुं पण जोयुं नही पछी गुरुयें बालकने कह्युं के आ उंघो ताहारे लेवो होय तो लइ ले तेवारें बालकें उंघो ग्रहण कर्यो अने नाचवा कूदवा लाग्यो राजायें कह्युं न्याय थइ चुक्यो. एम कही बालक गुरुने आपी दीधो ते जेवारें आठ वर्षनो थयो तेवारें दीक्षा लीधी ते वखत सुनंदायें कह्युं के म्हारो पुत्र पण तमे लइ लीधो तो हवे मने पण दीक्षा आपो, गुरुयें सुनं दाने पण दीक्षा दीधी ॥ एकं दिवस उज्जयणीना मार्गमां वज्र रुषीना पूर्वभवनो मित्र कोइ देव हतो ते मनुष्यनुं रूप करीने वज्र रुषीनी परीक्षा करवाने अर्थें कोलानी भीक्षा देवा लाग्यो वज्र रुषीयें जाण्युं जे कोलानी रुतु तो हमणा नथी तो आ वखतमां ए कोला क्यांथी लाव्यो, ए तो कोइ देवतायें छल कर्यो होय. एम जणाय छे माटे देवपिंड न लेवो एवुं जाणी भिक्षा लीधी नही तेवारें देवें संतुष्ट थइने वैक्रिय लब्धि आपी फरी वली उ नालाना दिवसोमां गेवरनी परीक्षामां देव चलाववा आव्यो तेमां पण वज्रमुनि चलायमान थया नही तेवारें देवतायें आकाश गामिनी विद्या आपी हवे एक दिवस गुरु थंडिल भूमियें गया अने केटलाएक साधुउ गोचरीयें गया तेवारें वज्रमुनि बालक्रीडाथी साधुउना संथारा दिक चारे बाजु मूकी पोते वचमां बेशीने जेवी रीते गुरु वाचना आपे तेवी रीते जूदी जूदी अगीआरे अंगनी वाचना देवा लाग्यो गुरुयें पण बारणे छाना उभा रहीने सर्व वाचना सांभली पछी बालकने कांइ पण शंका पडे नही तेवी रीते म्होटा स्वरथी निसिहि कहीने गुरु उपास रामां आव्या तेवारें वज्ररुषीयें पण पोतानुं करेलुं सर्व कृत्य समेटी लीधुं. हवे गुरुयें ते बाल



त्रणवर्ष थया पछी सुनंदायें राजसभामां फरीयाद करी परंतु राजायें न्याय करी ते छोकरो अपाव्युं नही.

कना गुण प्रगट करवाने माटे कह्युं के हे साधुउ तमे इहां रहेजो हुं एक गामे जइने आवुं छुं तेवारें साधुउ .बोल्या अमोने वाचना कोण आपशे? गुरुयें कह्युं वज्रऋषी आपशे. एवुं कहीने गुरु बीजे गाम गया. हवे ते साधुउ गुरुनुं वचन प्रमाण करवावाला, विनयवंत छे माटे वज्रमुनिनो विनय करीने वज्रनी पासे वाचना लेवा लाग्या तेमने वज्रें पण एवी वाचना आपी के गुरु घणी वाचनाउथी जेटलुं जणावे तेटलुं वज्रमुनियें एक वाचनामां जणावी दीधुं तेवारें साधुउए विचार्युं के गुरु गामे गया छे तेने जो चार दिवस वधारे लागे तो ठीक तेटलामां अमारो आ अमुक श्रुतस्कंध पूरण थइ जाय पछी केटलाक दिवस वीत्या केडे गुरु आव्या तेमणे पुछ्युं जो साधुउ तमारे वाचना सुखे थइ? साधु बोल्या हा महाराज हवे अमारे वाचनाचार्य ए वज्रज होजो तेवारें गुरुयें अगीआरे अंग वज्रने आपीने वाचनाचार्य कर्यो. हवे गुरुनी आज्ञाथी वज्रमुनि श्री उज्जयणी नगरीमां जइगुप्ताचार्य पासेथी दश पूर्व जण्या पछी आचार्य पद पाम्या एक दिवस पाटली पुरमां धनशेठने घरे साध्वीउ उतरी छे तेणे वज्रस्वामीना गुण अने रूपनुं वर्णन कर्युं तिहां शेठनी पुत्री रुक्मिणीयें एवी प्रतिज्ञा करी के वज्रस्वामी विना बीजाने म्हारे परणवुं नही एटलामां वज्रस्वामी पण पाटली पुरमां आव्या अने विचार्युं के म्हारा रूपथी लोको क्षोभ पामे छे ते नही पामे एटला माटे विद्याना बलथी रूप संक्षेप करी सामान्य रूपथी धर्मदेशना आपवा मांडी. तेवारें साधुउयें लोकोना मुखथी सांभल्युं जे गुरुनी देशनातो अमृत सरखी छे पण रूप तो सामान्य छे ए वात साधुयें वज्राचार्यने कही तेवारें बीजे दिवसे हजार दलनुं सुवर्ण कमल करीने तेनी उपर बेठा अने पोतानुं जेवुं मूलरूप हतुं तेवाज रूपथी देशना दीधी

ते जोइ सर्वे लोक विस्मय पाम्या, धनशेठ पण पोतानी महारूपवाली रुक्मिणी नामा पुत्री अने एक क्रोड सोनामोरो लइ गुरुनी पासे आवी नेट करवा लाग्यो गुरुयें कन्याने प्रतिबोध आपी धर्म पमाडीने पोतानी शिष्यणी करी ॥ हवे एकदा वज्रस्वामीयें पदानुसारिणी लब्धियें करीने श्रीआचारांग सूत्रना महापरिज्ञा नामा अध्ययनमांथी मानुष्योत्तर पर्वत पर्यंत जइ शकाय एवी आकाशगामिनी विद्या काहाडी वली एक समय उत्तर दिशामां दुकाल पडतो जाणी श्रीसंघने पट कपडा उपर बेशाडीने अन्यस्थानके लइ जवा तयार थया एवामां तिहां सय्यात्तर बोल्यो महाराज हुं पण एमनो सार्धर्मि छुं तेवारें तेने पण पट उपर बेशाडीने आकाशमां रह्या थकाज स्थानक स्थानके श्रीजिनचैत्य वंदावता थका महानिशि नामा नगरीयें गया. तिहां यद्यपि सुगाल तो छे तथापि राजा बौधमतवालो छे माटे तेणे बौधदर्शनीना नक्त लोकोना कहेवा उपरथी पुंजोसणना दिवसोमां जैनमंदिरमां फूल लइ जवा देवा नही एवो बंदोबस्त कर्यो ते जोइने संघे श्रीवज्रस्वामीने विनंति करी महाराज फूलनो अटकाव थाय छे? वज्रस्वामीयें कह्युं तमे चिंता करशो नही हुं एनो उपाय करुं छुं एम कही आकाशमां उडीने माहेश्वरी पुरीमां हुताशन नामा देव तेना वनमां पोताना पितानो मित्र वनमाली हतो तेने जइ कह्युं के तमे फूल तयार राखजो एवुं कहीने पछी हिमवंत पर्वत उपर गया तिहां पद्मद्रहना कमलनिवासिनी लक्ष्मीदेवीयें श्रीवज्रस्वामीने वांद्या अने कहेवा लागी हे स्वामी! आपनी दासीने कांइ हुकुम फरमावो. तेवारें आचार्यें कह्युं पूजाने अर्थे फूल जोइयें छैयें तिहां लक्ष्मीदेवी देव पूजाने अर्थे लक्षदल कमल लइ आवी हती ते हाजर कर्यां तेने लइने फरी पाछा वलतां हुताशन वनथी वीश लाख फूल लइ

विमानमां बेशीने पूर्वभवनो मित्र तिर्यक् जृंभक जातिनो देव छे ते पण आचार्यनी साथे गीत, नृत्य, वाजित्र प्रमुख महोत्सव करतो थको रह्यो छे तेना सहित आवीने पुष्पो श्राव कोने आप्या अने जैनना चैत्यनो महिमा वधार्यो, श्रीसंघ पण घणोज आनंद पाम्यो, ते नगरनो राजा पण बौद्धधर्म मूकी जिनधर्मी थयो ॥ तथा वली एक दिवस दक्षिण मार्गमां जाता थका श्रीवज्रस्वामीने श्लेष्म थइ आव्युं तेवारें साधुउनी पासेथी गोचरीमां सुंठ म गावी ते साधुउ लइ आव्या तेने पोते कानमां धरी राखीने विचार्युं जे पछी खाइशुं पण भू लमां एमज रही गइ, खवाणी नही ते पडिक्कमणो करती वखते पडिलेहणां करतां नीचे पडी गइ तेवारें गुरुयें विचार्युं जे हुं दश पूर्वधर छुं तेने आवी भूल ते वली केम पडी? एथी जाण्युं जे हवे महारुं आयुष्य स्वल्प रह्युं जणाय छे माटे अनशन करवानो विचार कर्यो अने पोताना शिष्य वज्रसेनने कह्युं के बार डुकाली पडशे तेवारें तुं सोपारापुर पाटण जाजे, कोइ तने पूछे के सुभिक्ष क्यारे थशे तेवारें ताहारे एम ध्यानमां राखवुं के जे दिवसें लाख मौ ल्यनी एक हांफी चडे ते दिवसथी त्रीजे दिवसे सुगाल थाशे एवुं थतो देखीने जवाब आपजे अमे तो हवे अनशन करीशुं एम कहीने वज्रसेनने सोपारा पाटण जवाने विदाय कर्यो, पोतानी पासे रहेला साधुउने जेवारें भिक्षा नही मले तेवारें विद्यापिंड करीने केटला एकने जमाड्या, पछी पांचशे साधुउने लइने अनशन करवाने माटे चाल्या तेमां एक न्हानो चेलो हतो तेने भोलव्यो के तुं इहां बेश हुं आवुं छुं पण ते चेलायें मोहथी कह्युं जे हुं तो तमारी पछवाडे आवीश तो पण गुरुयें समजावीने राख्यो तेवारें चेलायें जाण्युं जे गुरु महाराजने अप्रीति न थाय तेम करुं तो ठीक एवुं चिंतवीने फरी पर्वतना मूलमां आवी तपेली शिला

उपर ते चेलायें अनशन करी दीधो, ते बालक हतो माटे सुकुमार पणाथी तत्काल शुभ ध्याने मरण पामी देवलोक गयो, देवतायें नेला थइने तेनो महिमा कस्यो, तेवारें बीजा साधुउयें पण विशेष दृढ थइने अनशन कस्यां परंतु मिथ्यात्वी देवो आवीने साधुउने अनशनमां मोदकनी निमंत्रणा करवा लाग्या अने बोल्या के हे महाराज आ शुद्ध निर्दोष आहार ले ते ल्यो तेवारें साधुउयें जाएयुं जे एने अप्रीति ले एवुं जाणी नजीकना बीजा पर्वत उपर जइने अनशन कर्युं शुभ ध्यानथी काल करीने वज्रस्वामी प्रमुख देवलोक गया, तेवारें इंद्र महाराजे रथ उपर बेशी पर्वतने प्रदक्षिणा देइ सर्व साधुउने वांद्या तिहां ते इंद्र महाराजना रथनी रेखा मंडाणी तेथी ते पर्वतनुं रथावर्त एवुं नाम थयुं तथा तिहांना वृक्ष पण साधुउने नमवाथी नमेला थकाज आज पर्यंत देखाय ले श्रीवज्रस्वामी देवलोक गया पली दशमो पूर्व तथा चोथो अर्द्धनाराच संघयण विछेद गया तेवार पली वज्रसेनाचार्य सोपारा नगरमां जिनदत्त श्रावक तथा तेनी भार्या ईश्वरी नामे ले ए बेहुने प्रथम श्री वज्रस्वामीनो प्रतिबोध थयो हतो तेमने घेर गोचरी गया तिहां देखे तो धान मले नही तेवारें शेठ अने शेठाणीयें पोताना चार पुत्रो सहित लाख मूल्य धान्यनी हांडी चडावीने विचार कस्यो के सर्व आपणे ल जणायें आ रांधेला अनाजमां जहेर मेलवी खाइने पली अनशन करी लेवुं एवुं चिंतवी हांडीमां जहेर नाखवाने तयार थया ले एटलामां वज्रसेन आव्या तेमणे ते कृत्य देखीने पुछ्युं के, शुं? मरवानो उपाय करो लो!! तेवारें शेठाणी बोली धन तो अमारा पासे घणुं ले परंतु धान्य मलतुं नथी तेवारें वज्रसेन बोल्या. गुरुयें कह्युं ले के लाख द्रव्यनी हांडी चडशे तेने बीजे दिवशे सुगाल थाशे ते सांभली शेठाणीने पण [illegible]ना वचननी प्रतीति ले

माटे बोली के जो सुगाल थइ जशे तो आ महारा चारे पुत्र हुं आपने आपीश ने तमे चा
रेने दीक्षा आपजो एवी प्रतिज्ञा करी हांमीमां जहेर नाखवुं बंध कर्युं तेवार पछी बार प
होर गया केडे केटलाक वाहाणो उनड वायराना योगथी छेटे निकली गया हता ते सारो
वायरो वाह्याथी पाछां आव्या तेमां जुवार नरेली हती ते लोकोयें लीधी, सुगाल थयो, ते
धान्यथी जुगउद्धार थयो तेथी जुगंधरी एवुं नाम धाननुं थयुं एने लोक नाषामां जुवार कहे
छे पछी शेठ अने शेठाणीयें एक नागेंद्र, बीजो चंद्र, त्रीजो निर्वृत्ति अने चोथो विद्याधर ए
चारे पुत्रोने दीक्षा अपावी अने पोते पण दीक्षा लीधी. ते चारे साधुउ बहुश्रुत आचार्य
थया तेनी चार शाखा निकली. हवे विस्तार वाचनामां केटलाएक कुल, केटलाएक गण,
केटलिएक शाखाउ कहेली छे ते सूत्रथी सुगम छे माटे लखता नथी सूत्र उपरथीज जाणी
लेवुं अने अर्थ पण सूत्र बोले ते प्रमाणे करी देवो ॥ पुणोअज्जजसनद्दाउपुरउ ॥ वली आर्य
यशोनद्रनी आगल थविरावली आ प्रमाणे जोवी ते कहे छे ॥ थेरस्सणंअज्जजसनद्दस्सतुंगिया
यणगुत्तस्स ॥ थविर आर्य जसनद्र तुंगीयायण गोत्रीयाना ए बे शिष्य एवो अर्थ सूत्रनो
समजी लेवो बाकी अमे तों मात्र कोइक शाखानो संबंध लखिशुं ॥ थविर छलुए रोहगुत्ते
कोसियगुत्ते ॥ एनाथी त्रैराशिक मत निकल्युं तेनी कथा कहीयें छैयें श्रीमहावीरथी पांचशे
चुमालीश वर्ष गया पछी श्रीरोहगुप्ताचार्यनो गुप्त नामा शिष्य हतो ते अंतरंजिका नामे नग
रीमां आव्यो ते वखत एक महोटो वादी पोट्टशाला नामे तापस छे ते पण ते नगरीमां आव्यो
ते कहेवो छे तो के वींछी, साप, उंदर, हरिण, सूअर, काग, अने पंखी ए सात चीजो
बनावी आपवानी सात विद्याउनो धरनारो छे तेना मदथी ते, सर्व लोकोने एम कहेके

महारो पेट फाटीने कदाच विद्या बाहेर चाली जाय तेना जयथी में महारा पेट उपर पाटा बांधी राख्या छे एवा अभिमाननी वातो करे वली एक जांबूनी डाली हाथमां राखे अने लोको आगल एवुं कहे के आ जंबूद्वीपमां महारी साथे जीतवावालो कोइ नथी एवी रीते ते तापसे आवीने नगरीना राजाने पण कह्युं वली कह्युं के तमारा नगरमां कोइ वाद करवा वालो होय तो सुखेथी तेने तेडावीने महारी साथे वाद करावो नहीकां मने जीतपताका आपो. तेवारें राजायें पडह वंजडाव्यो के जे वाद करवाने इछा राखतो होय ते आ पडह रोकी राखे एटलामां ते गुप्तनामा रोहगुप्ताचार्यनो शिष्य गाममां गोचरीयें आव्यो छे ते पडह सांजलीने बोल्यो हुं वाद करीश एवुं कही गुरुनी पासे आवी पडहनी हकीगत कही गुरु बोल्या ए वात तें ठीक करी नही केमके ते योगी क्रोधी छे माटे तहारा उपर विद्या चलावशे तेवारें शिष्यें कह्युं आप जेनी बेठा थकां ते जितपताका लइ जाय तो पछी आपणी शी विशेषता कहेवाय! एवो शिष्यनो निश्चय जाणीने गुरुयें तेने सात विद्याउ आपी वली पण कह्युं जो कदापि तने कोइ अधिक उपद्रव थाय तो आ उघो मंत्री आपुं छुं तेने तुं फेरवजे तेथी सर्व उपद्रव निवर्त थइ जाशे एवी रीते गुरु पासेथी आज्ञा लइने बलश्रीनामा राजानी सजामां आवी योगीने कहेवा लाग्यो जे तहारो वाद शुं छे ते सांजलाव योगी छल करीने बोल्यो अमारा मतमां एक जीवराशि बीजो अजीवराशि ए बे राशि कही छे एवुं योगीनुं बोलवुं सांजलीने शिष्यें विचार्युं जे आ वातनो जो हुं हाकारो करीश तो ए कहेशे के में महारी वात एने मंजुर करावी, महारुं मत एणे मान्युं, तेथी लोको जाणशे के शिष्य हारीगयो. एम चिंतवीने शिष्यें पण कुतर्क करी कह्युं के बे राशि तुं कहे छे ते खोटुं कहे छे परंतु जीव,

अजीव अने त्रीजो नोजीव एवी त्रण राशि छे. तेवारें योगी बोल्यो तुं नोजीव राशि केवी रीते कहे छे? शिष्यें तरत एक दोरो वाटीने भूमि उपर नाख्यो ते हालवा लाग्यो त्यारें कह्युं के जो आ नो जीव छे, एवी घणी युक्तियो लगाडीने संसारमां सर्व मली जीव, अजीव अने नोजीव ए त्रण वातो स्थापन करी आपी तेथी योगी हारी गयो पछी योगीयें विद्याउ चलाववा मांडी तिहां प्रथमतो महोटा डंकने मारवावाला एवा वींछीउ बनाव्या तेवारें चेलायें गुरुयें बतावेली वि द्याना बलथी मोर बनाव्या ते आवीने सर्व वींछीयोने खाइ गया, तेवारें योगीयें सर्प बनाव्या तिहां चेलाये नोलीयां बनाव्यां, योगीयें उंदर बनाव्या तेवारें चेलाये बिल्लाडी बनावी, यो गीयें तीखा सींगडावाला हरिण बनाव्या तेवारें चेलायें चितरा बनाव्या तेणे आवीने सर्व हरिणोने मारी नाख्या, योगीयें सूअर बनाव्या तेवारें चेलायें सिंह बनाव्या, योगीयें काक बनाव्या, चेलायें घूड बनाव्या, योगीयें पंखी बनाव्या, चेलायें बाज बनाव्या, एमां पण योगी हार खाइ बेठो तेवारें गर्दजी विद्या चलावी तेवखत चेलाये उंघो फेरव्यो तेथी तेनी विद्या नाशि गइ, एरीतें योगी हारीगयो अने चेलो जीत करीने घणा लोकोनी साथें परिवर्यो थको गुरुनी पासें आव्यो गुरुयें पुछ्युं केवीरीतें जीती आव्यो तेवारें त्रण राशि थापी तेथी जीत्यो एवुं कह्युं त्यारें गुरु बोल्या हे वत्स तें आ सारी वात नही करी, जगवानना मतथी तुं विपरीत बोल्यो, माटे राजसजामां जइने मिछामि डुक्कडं दइ आव अने वादीने जीतवाने माटे जे कु युक्ति लगाडी तेनो संघमां मिछामि डुक्कडं दइ आव, जो मिछामि डुक्कडं नही देश तो जैनम तनो उछापक थइश ते सांजली शिष्य बोल्यो हवे महारा मुखथी हुं केम जुठो पडुं, महाराथी तो मिछामि डुक्कडं देवाय नही, में खोटुं थोडुंज थापन कर्युं छे! राशितो त्रणज छे, गुरुयें

कह्युं के तुं महारी साथें पण जो वाद करवा इछतो होय तो चाल राजसन्नामां जइ आ
पणे बे वाद करीयें एम कही गुरु पोताना शिष्यने लेइने राजानी पासें आव्या अने कहेवा
लाग्या के हे राजन् आ महारा शिष्यें वादीने जीतवा माटे जे त्रण राशि स्थापन करी ते वात
जूठी छे, ए अमारुं कह्युं मानतो नथी ने महारी साथे वाद करशे तेनी वचमां आप साक्षी
धर रहो तो अमे वाद करीयें. राजायें कह्युं सुखे वाद करो पछी ते बेहु गुरु शिष्य वाद क
रवा लाग्या तिहां छ महीना सुधी वाद कस्यो १४४४ प्रश्न कुतर्कना शिष्ये थापन करी पूछ्या
ते सर्व प्रश्न गुरुयें त्रोडी नाख्या तो पण समज्यो नही राजाने घणो वखत खोवो पड्यो ते
वारें राजायें जाण्युं जे हुं केटला दिवस एउना ऊगडामां खोटी थाउं! एम विचारी गुरुने कह्युं
हे स्वामी आपनुं बोलवुं सर्व साचुं छे पण महारा राज्यसंबंधि कामकाजमां बिगाड थाय छे
माटे हवे मने साक्षीथी मुक्त करो. गुरुयें कह्युं आवती काले सर्व रगडो मटाडी आपीश एम
कही बीजे दिवसें वाद ठहेरावीने कुत्रिकापणमां जे वस्तु त्रण लोकमां होय ते मले छे माटे
जो तुं साचो होइश तो नोजीव ए चीज पण मलशे; ते लइ आवीश? ते वात चेलायें पण मान्य
करी अने राजा लोकोये पण कह्युं के ठीक छे पछी चेलायें कुत्रिकापण जइने जीव, अजीव
अने नोजीव माग्या तेवारें देवें जीवने बदले तो उंदर लावीने आप्यो तथा अजीव माग्युं
तेवारें पछर लावीने आप्यो पछी चेलायें जेवारें कह्युं के नोजीव लाव तेवारें बे त्रण वार
तेहिज पूर्वली चीज लावीने आपे पण नोजीव आपे नही एवामां आकांश वाणी थइ के
जगतमां जीवने अजीव ए बेज राशि छे पण त्रीजी कोइ राशि नथी तेवारें सर्व लोक बोल्या
गुरु साचा छे गुरुयें शिष्यने कह्युं केम हवे समज्यो के नथी समज्यो? जो समज्यो होय तो

मिछामि डुक्कडं आप ते सांजली शिष्य बोल्यो एम कांइ हुं मानुं नही तेवारें गुरुने रीश चडी तेथी जस्मनुं कुंमो तेना माथा उपर नाखीने गछथी बाहेर काहाडी मूक्यो तेणे जइ वैशे षिक मत थापन कर्युं तेमां नव द्रव्य, सत्तर गुण, पांच कर्म, त्रण सामांन्य, एक विशेष, एक समवाय, ए छ पदार्थ प्ररूप्या एना प्ररूपवाथी चौदशें चुमालीश नेद थया तिहां षट्गोत्रथी उलूका षट्चालीउलूकश्चषडुलूकः ॥ एवा नाम अने गोत्रना मिलापथी नाम स्थापन थयुं, इहांथी त्रैराशिक शाखा थइ इति रोहगुप्त कथा संपूर्ण ॥ ॥ हवे थविर प्रियग्रंथथी मछिमशाखा निकली तेनो अधिकार आ प्रमाणे छे ते कहे छे श्रीहर्षपुरनामा नगर जेने हमणा अजमेर कहे छे तेमां त्रणशें जैनमंदिर अने चारशें अन्यदर्शनीउना देरा हता तथा आठ हजार घर ब्राह्मणोना अने छत्रीश हजार घर वाणीयाउना हता वली नवसें बाग, सातसें वावडी, सा तसें दानशाला हती तिहां सुजटपाल नामे राजा राज्य करतो हतो एक दिवसें ब्राह्मणोये यज्ञ मांड्यो एवामां तिहां प्रियग्रंथसूरि पधार्या तेणे वासक्षेप मंत्रीने श्रावकोना हाथमां आप्यो श्रावकोये जइने, यज्ञमां जिहां ब्राह्मणो होम करवाने सारु बकरो लाव्या हता ते बकरानी उपर वासक्षेप नाख्यो तेना योगें ते बकराना शरीरमां अंबिका देवीयें प्रवेश कर्यो तेवारें ते बकरो तिहांथी उडी आकाशमां उनो रहीने मनुष्य वाणीयें बोलवा लाग्यो के अरे निर्दयी ब्राह्मणो तमे सांजलो के तमे जेम निरपराधि जीवोने निर्दयी थइने मारी नाखो छो तेम जो हुं पण हमणां निर्दय थइ जाउं तो तमो सर्वेने मारी नाखुं, जेवी रीतें हनुमाने रा क्षसोमां करी देखाड्युं तेम हुं पण तमोने करी देखाडुं परंतु महाराथी दयानो गुण दूर थइ शकतो नथी माटे हुं तमारी पेठें राक्षसो जेवो निर्दयी थतो नथी तथापि हे पापीयो तमे म

हारी वात सांभळो जे तमे विचारो आवा कोमळा कोमळा पशुउने हणो छो, ते पशुउने हणवानुं पाप सांभळ्युं छे? जो नही सांभळ्युं होय तो हुं तमोने कही संभळावुं छुं ते सांभळो. जे पशुने मारीयें ते पशुना जेटला रोम होय तेटला हजार वर्ष पर्यंत ते पशुनो मारनारो प्राणी नरकमां पडी दुःख भोगवे छे. वळी जे कोइ सोनानो मेरुपर्वत बनावीने दानमां आपी दीये अथवा पृथ्वीनुं दान आपे तेटला दानथी पण अधिक फळ जे एक प्राणी मरतो होय तेने बचावे ते जीवने मळे छे माटे मरता प्राणीने बचाववा जेटलुं फळ सोनाना दानथी तथा पृथ्वीना दानथी होय नही केमके बीजा सर्व प्रकारना दान जे छे तेनुं फळ तो काळांतरमां खूटी जाय छे, भोगवाइ जाय छे, परंतु अभयदाननुं फळ केवारें पण खूटे नही, सर्वथी श्रेष्ठ फळ ते अभयदाननुंज छे. एवा तेना वचन सांभळी यज्ञ करनारा निर्दयी ब्राह्मण लोको बोल्या तुं कोण छो? बकरो बोल्यो हुं अग्नि देव छुं, बकरो म्हारो वाहन छे, तमे पशुउने मारो छो तेना योगे महादुःख तमने वेठवा पडशे, माटे तमारा उपर मने दया आवी तेथी उपदेश करवा आव्यो छुं. ब्राह्मणो बोल्या अमे धर्म थवाने माटे मारीये छैयें, बकरो बोल्यो अरे दुष्टो पशुवध करवाथी वळी धर्म ते क्यांथी थवानो छे? एतो महोटुं जबरजस्त पापनुं स्थानक छे जो एनो मुद्दो तमारे पूछवो होय तो, जैनाचार्य श्रीप्रियग्रंथसूरिने पूछो, ते महाकृपापात्र छे माटे तमोने समजावी तमारो निस्तार करशे. तेवारें ब्राह्मणो सर्व प्रियग्रंथसूरि पासें पूछवा आव्या, तेमणे दया रूप शुद्ध धर्म बताव्यो ते वखत ब्राह्मणप्रमुख घणा लोको जैनी थया, एवा श्रीप्रियग्रंथसूरि हता एमनाथी मध्यमशाखा निकळी ॥ तथा थविर आर्य समित गौतम गोत्रीयाथी ब्रह्मद्वीपिका शाखा निकळी तेनो

संबंध आ प्रमाणे ले ते कहे ले. आन्नीर देशमां, अचलपुर नगरनी नजीक एक कन्ना बीजी बेन्ना ए बे नदीयो हती, तेनी वचमा ब्रह्म नामा द्वीप हतो तिहां पांचशें तापस वसता हता तेमां एक तापस पोताना पगमां लेप लगाडी पावडीयो पहेरी हरहमेस बेन्ना नदीना पाणीमांथी उतरतो हतो पण पाणीमां मूबे नही जेवी रीतें थल उपर सुका मार्गमां चाल्या जइयें तेवी रीते पाणीमांथी चालीने गाममां पारणुं करवा आवे तेवारें लोक तेनी प्रशंसा करतां थका बोले जे आ तापसनी जूउ केवी अथाग तपनी शक्ति ले, एवा नर्ममां घणा लोको मिथ्यात्वी थइ गया अने तापसनी नक्ति करवा लाग्या वली श्रावकोने कहे के जूउ अमारा गुरुनो केवो प्रनाव ले? एना प्रनावमां कांइ न्यूनता नथी. एवा उपदेशथी घणा लोको मिथ्यात्वी थता देखीने श्रावकोये श्रीवज्रस्वामीना मामा श्रीआर्यसमितसूरिने बो लाव्या, सूरि आव्या, तेवारें श्रावकोयें पुछ्युं स्वामीजी आ तापसनी केवा प्रकारनी तपशक्ति ले? आचार्यें कह्युं के तपशक्ति कांइ पण नथी परंतु पादलेपशक्ति ले तेवारें श्रावक लोक सर्व समजी गया, पली तापसनुं लिइ उघाडुं पाडवा माटे ते तापसने श्रावकोयें पोताने घेर नोजनने अर्थें निमंत्रणा करी तेवारें मिथ्यात्वी लोक घणा खुशी थया अने जाणवा लाग्या जे श्रावको पण हवे आंपणा धर्ममां आवी जाशे एवुं जाणीने श्रावकोने घेर योगीने लइ गया तिहां श्रावकोयें नक्तिना मिसे करीने पावडी उपर तापसना पग धोइ नखाव्या तेवारें योगीना मनमांतो महोटुं दुःख थयुं पण शरमनो मार्यो शुं करे! नाकारो कहेवाय नही पली कांइ नोजन कर्युं कांइ नहीं कर्युं अने तरत तापस तिहांथी उठ्यो तेने श्रावको आदर देइने पाला तेना स्थानक उपर पोहोचाडवाने साथें चाल्या, मनमांतो एवुं समजता हता जे जो

श्यें केवी मजा थाय छे पण बाहारथी तेने स्थानकें पोहोचाडवानुं भोज शालीने तेनी साथे वलावा गया सर्व नदीकिनारे आवी ऊजा तेवारें तापसें विचार्युं जे थोडोसो लेप हशे तो पण नदी उतरी जइश एम विचारी नदीमां पग दीधो के तरत डुबवा लाग्यो तेवारें लोकोमां निंदा थइ पछी दया लावीने श्रावकोये नदीमांथी खेंची पाछो बाहेर काहाड्यो, नहींकां तणाइ जतो हतो, एटलामां लोकोने प्रतिबोध आपवाने माटे श्रीआर्यसमित सूरि पण तिहां आव्या अने चिपटी वजाडी बोल्या के हे बेन्नाद नदी! महारे पहेले पार जावुं छे माटे मार्ग आप एटलुं आचार्यना मुखमांथी वचन निकलतांज नदीना बेहु कांठ भेला मली गया तेवारें लोक विस्मय पाम्या. पछी आचार्य तथा बीजा नगरना लोको सर्व मली ब्रह्मद्वीप गया तिहां तापसोने धर्मोपदेश आपी प्रतिबोध पमाड्यो तेवारें पांचसें तापसोये दीक्षा लीधी अने चूर्णना प्रयोगथी तापस नदी उपरथी चालतो हतो परंतु तपस्यानो प्रभाव न हतो एवी वात सर्व लोकोमां प्रसिद्ध थइ, जैनधर्मनो महिमा वृद्धि पाम्यो पछी संघसहित गुरु पोताने स्थानकें आव्या, तिहां तापस साधुउथी ब्रह्मद्वीपिका नामे शाखा थइ ॥ ॥ हवे थविर आर्यस्थंभिलनी पछी चौद गाथाउनो अर्थ कहीये छैयें ॥ गौतमगोत्रीया फल्गु मित्रने वांडुं छुं, बीजा वशिष्टगोत्रीया धनगिरिने वांडुं छुं, कांइक शिवभूति कौशिक गोत्रीया डर्जंत अने कृष्णने वांडुं ॥ १ ॥ ॥ एमने मस्तकें करी वांदीने वली भद्र, नक्षत्र अने रक्षित ए त्रणे काश्यप गोत्रीयाने वांडुं ॥ २ ॥ ॥ तथा एक आर्य नाग गौतमगोत्रीया, बीजा आर्य जेहिल वासिष्ठगोत्रीया, त्रीजा आर्य विष्णु माढरगोत्रीया अनें चोथा आर्य कालक गौतमगोत्रीया ए चारने वांडुं ॥ ३ ॥ ॥ गौतमगोत्रीया कुमरसंपलिअंक तथा भद्रक तथा स्थविर आर्यवृद्धि गौतमगोत्रीयाने हुं वांडुं छुं ॥ ४ ॥ ॥ ते

मने मस्तकें करी वांदीने वली चारित्र ज्ञान सहित एवा स्थविर संघपालक गौतमगोत्रीयाने वांडुं हुं ॥ ५ ॥ ॥ वली आर्य हस्ति काश्यपगोत्रीया, क्षमावंत समुद्र सरखा धैर्यवंत; जे उनालाना पहेला मंहीनामां एटले चैत्रमहिनाना शुक्लपक्षमां कालगत थया तेमने वांडुं ॥ ६॥ वली नला व्रत शील लब्धिसहित जेमना दीक्षामहोत्सवमां देवतायें आवीने मस्तक उपर छत्र राख्युं एवा स्थविर आर्यधर्म ते प्रत्यें वांडुं ॥ ७ ॥ ॥ तथा एक हस्ति, बीजा धर्म अने त्रीजा सिंह ए त्रण काश्यपगोत्रीया मोक्षमार्गना साधक तेमनें वांडुं ॥ ८ ॥ ॥ तेमने मस्तकें करी वांदीने पछी स्थिर छे चारित्र अने ज्ञान जेमना एवा थविर आर्य जंबु गौतमगोत्रीयाने वांडुं ॥ ९ ॥ ॥ तथा जे कोमल रुदयवाला अने मानरहित तेमज घणुंज उंचुं उत्तम छे ज्ञान, दर्शन अने चारित्र जेमनुं एवा नंदिक पिता काश्यपगोत्रीयाने वांडुं ॥ १० ॥ तथा स्थिर छे चारित्र जेमनुं वली उत्तम सम्यक्त्व अने सत्व तेणे करी सहित एवा देसि गणि क्षमाश्रमण माढरगोत्रीयाने वांडुं ॥ ११॥ ॥ तेवार पछी वली जे अनुयोगना धारक, सागर जेवा धैर्यवान् गंजीर, महा सत्ववंत एवा थविर उत्तम क्षमाश्रमण वत्सगोत्रीयाने वांडुं ॥ १२ ॥ ॥ पछी वली जे ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने तप तेमां थिर थयेला, महागुणवान् एवा थविर कुमार धर्मगणी गुणवानने वांडुं ॥१३॥ ॥ वली सूत्र अने अर्थ रूप रत्नेकरी जरेला अने क्षमामार्दवादिगुणसंपन्न; जेणे सर्व सूत्र पुस्तकारूढ कर्या एवा देवर्द्धिगणिक्षमाश्रमण काश्यपगोत्रीयानें वांडुं ॥ १४ ॥ ॥ इति स्थविरावली सूत्रार्थः ॥ ॥ हवे यद्यपि इहां आ स्थविरावलीमां श्रीआर्यरक्षित प्रमुखना नाम कह्या नथी तथापि ए पण स्थविर सरखाज थया छे तेमनो संबंध लखीयें छैयें. ॥ ॥ दशपुर नाम नगरमां, सोमदेव पुरोहित

तेनी रुद्रा नामे जार्या तेमना पुत्र आर्यरक्षितजी परदेश गया; तिहांथी चौदे विद्या जणीने आव्या तेमने राजायें हाथी ऊपर बेसाडी, महोत्सवसहित नगरमां प्रवेश कराव्यो. इहां सर्व सज्जन कुटुंब मित्रादिक आवीने मल्या परंतु एमनी माता मली नही माताने पगें लाग्या तो पण माता खुसी थइ नही तेवारें आर्यरक्षितजीयें पूछ्युं माताजी तमे आमणा डुमणा देखाओ छो पण कांइ हर्ष आनंद दर्शावता नथी तेनुं कारण म्हारा ऊपर कृपा करीने प्रकाश करो! ते सांजली माताजी बोल्या हे पुत्र तुं जे विद्या शीखी आव्यो छो ते सर्व नरकपतननी विद्याओ छे. कारण के तुं घणा होमादिक लौकिक कृत्य करवानां शास्त्र जणी आव्यो छो. ते हुं जैनी छुं माटे ए दुर्गतिना देवावालाने केवी रीते रुडा करी मानुं! हुंतो जेथकी ताहारा आत्मानुं कल्याण थाय एवां शास्त्र तुं जण्यो होय तो सुबुद्धिमान् करी मानुं. ते सांजलीने पुत्र बोल्यो हे माताजी आत्माने तारनार कयां शास्त्र छे? ते मने कहो तो हुं तेनो पण अन्यास करुं. मातायें कह्युं के दृष्टिवाद जणो. तेवारें आर्यरक्षितजीयें जाण्युं जे सर्व मतनां शास्त्र जणवा योग्य छे माटे म्हारे ए शास्त्र पण जणवुं पछी रात्रीयें माताजीने पूछ्युं. हुं दृष्टिवाद क्यां जणवा जाउं मातायें कह्युं. तोसलीपुत्राचार्यनी पासे जइ ए शास्त्र जणो. हवे आर्य रक्षितजीयें म्होटे परोढीयें उठीने जणवा माटे प्रयाण कर्युं केटलुंक दूर गयो के पोताना पितानो मित्र एक ब्राह्मण शेलडीना सांठा हाथमां लइने आवतो हतो ते साहामो मल्यो. तेणे पूछ्युं तुं कोण छो? एणे कह्युं हुं आर्यरक्षित छुं. तेवारें तेणे कह्युं के हुंतो तने परदेशथी आव्यो सांजलीने मलवा सारु आव्यो छुं. अने आ शेलडीना सांठा पण ताहारे वास्ते लाव्यो छुं ते सांजली आर्यरक्षितें सेलडीना सांठा गणी जोया तो

साडा नव संख्यायें थया तेवारें विचार्युं जे हुं दृष्टिवादना साडा नव नाग नणीश एवुं चिंतवी ते ब्राह्मणने कह्युं के तमे म्हारी माता पासें जाउं हुं आवुं छुं वली तमे माताजीने कहेजो के आर्यरक्षित मने मल्या हता. एवुं कहीने आगल चाल्यो अने प्हेला ब्राह्मणे पण एमनी माता पासें जइ शेलडी आपीने कह्युं के तमारो पुत्र आर्यरक्षित मने रस्तामां मल्यो. ते सांनली मातायें जाण्युं जे म्हारा पुत्रने शुकन तो सारा थया. ए साडा नव पूर्व नणशे. एवुं मनमां जाणी लीधुं. हवे आर्यरक्षित जिहां शिष्य पाठ करे छे तिहां गया अने विचारवा लाग्या जे एमने केवी रीते वंदना करुं एवुं चिंतवीने उपासरानी बाहेर बेठा एटलामां ढढ्ढर नामे कोइ श्रावकें; निसिहि कही उपासरामां जइने उंचे स्वरे वांदणा देवानी जे इरियावहि प्रमुख किरिया छे ते कही वंदना करी ते विधि सर्व आर्यरक्षित सीखी गया. पछी गुरु पासें आवी तेवाज विधियी गुरुने वांदीने विनयपूर्वक आगल बेठा. गुरुयें जाण्युं जे आ कोइ नवो श्रावक छे पण वांदवानो विधि तो बराबर जाणे छे पछी ढढ्ढर श्रावकने गुरुयें पुछ्युं तेवारें ढढ्ढरें उ लख्यो जे आ गुरुनो नाणेज छे. पछी गुरुने कह्युं आ तो आर्यरक्षित आपनो नाणेज छे. तेनें गुरुयें धर्मोपदेश आप्यो तेवारें आर्यरक्षितें कह्युं मने दीक्षा आपो. म्हारी मातायें तो दृष्टिवाद नणवानी आज्ञा आपी छे. तेवारें गुरुयें लोकोना नयथी अन्यस्थानके जइने दीक्षा दीधी. पछी पोतानी पासे जेटली विद्याउ हती ते तो सर्वे गुरुयें नणावी. वली अधिक पूर्व नणाववाने माटें श्रीवज्रस्वामीनी पासे मोकल्यो. तिहां जातां रस्तामां उज्जयणी नगरी आवी तिहां श्रीनद्रगुप्तसूरि मल्या ते खुशी थया. अने बोल्या के तें सारु काम कर्युं पण हवे मने हाल अनशन करवुं छे माटे तुं अनशनने सहाय आपीने पछी जाजे. एवां

गुरुनां वचन सांजली तिहां अनशनमां सहायी थयो, जड्गुप्त सूरियें कह्युं के तुं वज्रस्वामीनी पासें जणजे पण तेमनी संघाते रात्रें जेलो रहीश नही. जुदा उपासरामां रात्रें रहेजे, केमके जे श्रीवज्रस्वामीनी साथे एक रात्रीज रहे ते जो सोपक्रमी आउखावालो होय तो पण वज्रस्वामीनी साथेज मरण पामे. ए वात सांजलीने तहत्ति करी संथारो करावीने श्रीवज्रस्वामीना पासे आव्यो. रात्रें नगरने बाहेर रह्यो. अने तेज रात्रीयें. श्रीवज्रस्वामीने सुपनुं आव्युं जे महारी पासें पात्रमां दूध जरेलुं हतुं ते कोइ प्राहुणो आवीने पी गयो स्वल्पमात्र शेष रह्युं एवामां प्रजातना श्रीआर्यरक्षितजी पण तेमनी पासे आव्या. तेमने वज्रस्वामीयें पुछ्युं. तुं किहांथी आव्यो? तेवारें सर्व हकीगत कहीने कह्युं के हुं बीजा उपासरामां रहीने आपनी पासें जणीश. वज्रस्वामीयें पूछ्युं महारी पासे जणवुं ने बीजा उपासरामां रहेवुं एम तने शामाटे करवुं पडे छे? तेवारें जड्गुप्ताचार्यें कहेलुं वृत्तांत तेमने संजलाव्युं ते सांजली वज्रस्वामीयें उपयोग आपीने जाण्युं जे आ वात सत्य छे; महापुरुषनां वचन प्रमाण छे. हवे श्रीआर्यरक्षितजीयें नवपूर्व शास्त्र तो संपूर्ण मुख पाठे करी लीधो अने दशमो पूर्व जणे छे, एटलामां माता पिताउने घणा दिवस पर्यंत श्रीआर्यरक्षितनुं कोइ पण समाचार न मलवाथी मातापितायें आर्यरक्षितनो न्हानो जाइ फल्गुरक्षित छे तेने बोलावीने आर्यरक्षितनी पासें मोकल्यो. तेणे आवी कह्युं के तमे माता पितानी पासे चालो. आर्यरक्षितें कह्युं के चालीने शुं करुं? तेणे कह्युं धर्मोपदेश आपो, केमके तेमने दीक्षा लेवानी इछा थइ छे. तेने आर्यरक्षितें कह्युं. तुंतो दीक्षा लइ ले. फल्गुरक्षितें कह्युं हुं दीक्षा लेइ लेउं छुं अने तमे तिहां चालो. तेवारें फल्गुने दीक्षा आपीने गुरुने पूछ्युं हवे दशमो पूर्व केटलो शेष महारे जण

वानो रह्यो ठे? गुरुयें कह्युं हजी घणो ठे तुं उद्यम कर. तेवारें तिहांज रही जणवानो उद्यम कस्यो. वली केटलाएक दिवस पठी मातापितानी पासें जवानुं मनमां घणुं उमंग थयो तेवारें फरीथी गुरुने पुठ्युं. महाराज दशमो पूर्व हजी केटलों शेष रह्यो ठे! गुरुयें कह्युं दशमा पूर्वनुं बिंदुमात्र तो तुं शीख्यो अने समुद्र जेटलो शेष जणवो रह्यो ठे पण उद्यम कर तेवारें वली पण जणवानो उद्यम करवा मांड्यो पण चित्त बराबर लागे नही, तेवारें कह्युं हवे तो हुं जइश त्यारें वज्रस्वामीयें जाण्युं जे एटलो पूर्वलो पूर्वनो जाग हवे शेष रहेशे; बाकी विछेद थइ जाशे; कारणके हमणा बीजो कोइ एटला पूर्वनो जणनार ठे नही, एवो मनमां विचार करीने श्री आर्यरक्षितने मावित्रो पासें जवानी रजा आपी तेवारें बेहु जाइउ दशपुर नगरें आव्या; तेमने राजायें महोटा महोत्सवसहित गाममां प्रवेश कराव्यो पठी मातापिता प्रमुख सर्व कुटुंबने धर्मोपदेश देइ सर्वने दीक्षा आपी, एक पितायें दीक्षा लीधी नही. ते कुटुंबना मोहने लीधे तेमनी पासेंज रहे पण दीक्षा लीए नही तेवारें आर्यरक्षितजीयें कह्युं तमें दीक्षा शामाटे लेता नथी? पितायें कह्युं के मने एकतो म होटुं धोतीयुं, बीजी जनोइ, त्रीजुं ठत्र, चोथा पगरखा अने पांचमुं कमंडल ए पांच वस्तु विना चाले नही जो एं पांच वाना विना चालुं तो मने लज्जा थाय तेवारें गुरुयें पांच वाना वापरवानी बूट आपीने पण दीक्षा दीधी. पठी गुरुयें जाण्युं जे आ वृद्धने तो जरूर तारवो ज जोइयें एवो निश्चय करी ठोकराउने शीखावी मुक्युं जे, अमे जेवारें चैत्यना दर्शन करवा जइयें तेवारें तमे सर्वे साधुउने वंदना करजो, पण एक ए वृद्ध साधुनें वांदशो नही, जेवारें तमोने कहे के अमने कां वांदता नथी? तेवारें तमे कहेजो के तमे साधु केम कहेवाउ?

तमे तो छत्र राखो छो पछी छोकराउए तेमज कह्युं तेवारे वृद्धे कह्युं के हे वत्सो! साधु छत्र नही राखे तो म्हारे पण नही राखवुं एम कही छत्र नाखी दीधुं एमज जनोइ, पावडी अने कमंडल सर्वनो त्याग करी दीधो पण कह्युं के धोतीयुं तो म्हाराथी मूकाशे नही. तेवारें आर्यरक्षितजी बोल्या एमज रहेवा आपो भले धोत्युं पहेरेलुं छे एटलामां एकदिवस एक साधुयें अनशन करीने काल कर्यो तेवारें आर्यरक्षितजीयें बीजा साधुउने शीखावी मुक्युं के तमे मांहोमांहे विवाद करजो पण साधुने परठवा माटे उपाडशो नही. एवुं शीखवीने पछी बोल्या के आ साधुना शरीरने जे परठवी आवे तेने महालाभ थाय तेवारें साधुउ मांहोमांहे बोलवा लाग्या तेमां एकें कह्युं हुं लइजाउं, बीजाये कह्युं हुं लइजाउं. तेमने देखीने सोमदेव वृद्धसाधु बोल्या जे शुं ए कार्य करवामां घणी निर्जरा थाय छे? गुरु बोल्या हा घणी निर्जरा थाय छे तेवारें वृद्ध साधु बोल्या के ए काम हुंज करीश गुरुयें कह्युं इहां उपसर्ग घणा छे माटे उपसर्ग सहन करवानी शक्ति होय तो ए काम करवुं नहींकां अरिष्ट थइ जाय तेवारें वृद्ध साधु बोल्या हा, हुं सर्व उपसर्ग सहन करीश, एम कही ते अनशनी साधुना शरीरने उपाडीने लइ चाल्यो, तिहां आचार्यें श्रावकोना छोकराउने शीखवी मुक्युं; तेथी छोकरायें हाको करी पाछल पडीने वृद्धनुं धोतीयुं खोंसी लीधुं तेवारें वृद्धें जाण्युं जे उपसर्ग तो छे. पछी आचार्य सर्व परिवार लइने वृद्धनी पाछल गया, तेने देखीने वृद्ध लज्जा पाम्यो गुरु बोल्या म्होटो उपसर्ग थयो, हवे बीजो चोलपट्टो लावो तिहां साधुउ बोल्या; म्होटो चोलपट्ट तो जइने लइ आवो तो थाय; वृद्धें कह्युं चोलपट्टोज आपो. लाजतो गइ हवे शुं छे!! एम करी चोलपट्टो पहेराव्यो. हवे ते वृद्ध गोचरी करवा जाय नही तेवारें गुरुयें साधुउने

कही मुक्युं कें तमे गोचरी लावी आपशो नही; ए वृद्ध पोतें जइ लइ आवशे. एवुं कहीने गुरु अन्य गामे चाल्या गया. पाछलथी साधुउए पोतपोतानो आहार लइ आवीने जमी लीधो अने वृद्ध तो नूख्यो बेगे रह्यो. बीजे दिवसें गुरु आव्या तेमणे साधुउने कह्युं. केम रे वृद्ध साधुने आहार शा वास्ते नही लइ आप्युं ? एवीरीतें कृत्रिम कोप कर्यो. तेवारें साधुउ बोल्या. ए वृद्ध पोतें गोचरी केम जाता नथी! पछी गुरु पोतें गोचरी जवा लाग्या. वृद्धें जाण्युं जे आतो गुरुनो अविनय थाय छे. एवुं चिंतवीने वृद्ध पोतेंज गोचरी गयो तिहां एक शेठने घेर खरा दरवाजाने तो जाण्युं नही अने पाछलना बारणाथी तेना घेरमां घुसवा लाग्यो, तेवारें घरना माणसो बोल्यां, साहामा बारणामांथी आवो. एवुं सांजली वृद्ध साधु बोल्या अरे लक्ष्मी छे ते तो मरजीमां आवे ते तरफथी आवे.जे तरफथी आवे ते तरफथी सारी जाणवी, एनो कांइ विचार राखवो नही. तेवारें शेठें खुशी थइने बत्रीश लाडु वहोराव्या. ते लइने वृद्ध साधुयें आवी गुरुने देखाड्या. ते जोइ गुरुयें विचार कर्यो जे बत्रीश शिष्य महारा थाशे, वृद्ध बोल्यो पहेलो लाज थयो ते सर्व साधुउने देवो जोइयें, एम विचारी सर्व मोदक साधुउने आपी दीधा. फरी गोचरीयें जइने खीरनुं जोजन लइ आवी पोते पारणुं कर्युं. एम ए वृद्धसाधु जिह्वामां लब्धिवंत थयो, ज्यां जाय त्यां जो ते दातार महालोजी होय तोपण उत्तम जोजन एने वहोरावे एम अनुक्रमे ते वृद्धसाधु गछनो आधारजूत थयो ए श्री आर्यरक्षितजीना गछमां त्रण साधुं लब्धिवंत थया .तेना नाम कहे छे. एक डुर्बलिका पुष्पमित्र, बीजो घृतपुष्प मित्र अने त्रीजो वस्त्रपुष्पमित्र तथा चार साधुउ महापंमित थया तेना नाम कहे छे. एक डुर्बलिका पुष्पमित्र, बीजो वृद्ध, त्रीजो फल्गुरक्षित अने चोथो गोष्टामाहिल ए चार

जाणवा हवे एक दिवसें इंद्रमहाराजें सीमंधरस्वामीने निगोद विचार पूछ्यो जगवाने वर्णन करी संजलाव्युं तेवारें इंद्रें पूछ्युं. जरतक्षेत्रमां कोइ एवो विचार कहेवावालो हालमां छे ? जगवाने कह्युं आर्यरक्षित सूरि छे पछी इंद्रमहाराज वृद्धरूप करी आर्यरक्षितजी पासें आवीने पूछवा लाग्यो के हे महाराज ? महारुं आयुष्य हजी केटलुं छे ? तेवारें गुरुयें श्रुतउपयोगथी कह्युं के तुं पहेला देवलोकनो इंद्र छो पछी निगोदना सूक्ष्म विचार पूछ्या गुरुयें ते सर्व खुलासापूर्वक कह्या तेवारें इंद्रमहाराज गुरुनी स्तवना करी उपासरानुं द्वार फेरवीने चाल्या गया, शिष्यने खबर पडी जे इंद्र आव्यो हतो. हवे वली आर्यरक्षित सूरियें बुद्धिनी हानी थती देखीनें सूत्रोना जूदा जूदा चार अनुयोगद्वार, कह्या एवा ए आर्यरक्षित स्थविर थया॥ हवे ए प्रमाणे विद्याधरगच्छीय वृद्धवादीना शिष्य सिद्धसेन दिवाकर थया तेनो संबंध आ प्रमाणे छे के एक साधु वृद्धपणामां महोटा स्वरथी जणतो हतो तेने देखीने राजायें कह्युं के तुं शुं मूसलो फुलावीश ? जे एटलो उतावलो गोखे छे ! तेवारें तेणे सरस्वतीने बोलावी विद्या पामीने चोवटा मांहे मूसलो उनो करी राजासहित सर्वलोकोने देखतां फुल्लवित काव्य कह्युं तेथी मूसलो फूल्यो ते जोइ सर्व राजा प्रमुख चमत्कार पाम्या एवो वृद्धवादि थयो. तेमणे सिद्धसेन ब्राह्मणने प्रतिबोध्यो अने ते सिद्धसेने वली विक्रमादित्यराजाने प्रतिबोध आप्यो, श्रीशत्रुंजयनो संघ चलाव्यो, तेना संघमां एकशोने सीतेर शोनाना देवल चालता वली शत्रुंजानो उद्धार कराव्यो तथा श्रीसिद्धसेन सूरिना सहायथी विक्रमादित्य राजायें संवत् चलाव्यो,आगल श्रीवीरजगवाननो संवत् हतो,ए वृद्धवादी अने सिद्धसेन ए पण बेहु थविर थया॥ ॥तथा वली त्रण कालिकाचार्य थया छे तेमां एकतो श्रीवीरजगवानथी त्रणशोने बहोंतेर वर्षे थया.तेमणे श्रीपन्नवणा सूत्र बनाव्युं

जेणे सौधर्मेंइने निगोदनो विचार कह्यो, कोइक आचार्य कहे ले के गाथा देखवाथी ए कालिकाचार्य वीर संवत्थी त्रणशेंने वीश वर्षे थया ले, कोइ कहे ले त्रणशें पचीश वर्षे थया ले, कोइ कहे ले के चोथनी संवत्सरी थापवावाला पण एज कालिकाचार्य ले. एमां खरुं खोटुं केवली जगवान् जाणे. ग्रंथोमां तो संवत्नो फेर ले. वली बीजा कालिकाचार्य तो पूर्वे कालिकाचार्य कह्या तेमना मांमां थाय अने त्रीजा कालिकाचार्य तो श्रीवीरजगवान् मोक्ष गया पली ९९३ में वर्षे अने विक्रमादित्यना संवत् ५२३ में वर्षे जेणे चोथनी संवत्सरी करी ते ले तेमां वली कोइकोइ चूर्णिकार; एवीरीतें लखे ले के केटलाएक कालिकाचार्यना शिष्योयें चोथनी संवत्सरी मान्य करी, अने केटलाएक श्रीसुधर्मस्वामीना शिष्योए पांचमनी संवत्सरी मानी. तत्त्व केवली जाणे. ए विवादमां तंत नथी खबर विना जोर लगाववुं मुनासेब नथी इति रहस्यं ॥ ॥ वली हरिजइ सूरि पण त्रण थया ले. तेमां एकतो हरिजइ नामा ब्राह्मण हतो ते व्याकरणादि जण्या पली प्रतिज्ञा करीके जेनो अर्थ हुं समजी शकुं नही ते पदनो अर्थ जे कही आपे तेनो हुं शिष्य थाउं. पली एक दिवस साध्वीउ गाथा जणे ले ते आवीरीतें ॥ चक्किडुग हरि पणगं, पणगं चक्कीण केसवो चक्की ॥ इत्यादि ए गाथानो अर्थ ए ब्राह्मणथी थइ शक्यो नही. तेवारें जाण्युं जे हुं हार्यो पली साध्वीने अर्थ पुठ्यो तेवारें साध्वीयें कह्युं गुरुने पुलो. गुरु पासेथी गाथानो अर्थ सांजली प्रतिज्ञा पालवा सारु दीक्षा लीधी, आचार्यपद पाम्यो ते आचार्यें विक्रमसंवत्ना ५७५ में वर्षे आवश्यकनिर्युक्ति प्रमुख ग्रंथोनी टीकाउ करी तथा एमना एक हंस अने बीजा परमहंस एवा नामे बे शिष्य बौधलोकोनुं मत जाणवा माटे बौधोनी पासें जणवा गया हता तिहां बौधोयें जाण्युं के ए बे जैनी जेवा देखाय ले. तेवारें परीक्षा करवा माटे दादराना पग

थीयाउ उपर जैनप्रतिमा मूकी दीधी, तेनी उपर पग आपीने बौधनां शिष्यो तो सर्व उतरी गया परंतु हंस अने परमहंस जैनप्रतिमा देखीने प्रतिमाना हृदयमां खडीनी जनोइ करी उतर्या. तेवारें बौधोयें जाएयुं जे आ निश्चयें जैनीउ छे अने शिष्योने पण खबर पडी के ए आपणने जाणी गया छे. तेंवारें मरणना जयथी ते बे जण पोतपोतानी जणवानी पोथीयो हाथमां लइने पोताने देश चालता थया. बौधोयें राजाना सीपाइयो ते बे शिष्योने मारवा माटे मोकल्या. तेणे जइ प्रथम तो हंसने मारी नाख्यो अने परमहंस जागी गयो परंतु चितोडगढना कोट पासें तेने पण मारी नाख्यो. पछी राजाना सुजटो राजापासे गया हरिजद्रसूरिए वात सांजलीने महा कोपायमान थया थका. मंत्रना बलेकरी एक तेलनी कढाइ उकालीने पछी मंत्र जपता जाय अने एकेक कांकरी कढाइमां नाखता जाय. जे वखत कांकरी नाखे ते वखत मंत्रना प्रजावथी बौधनो एक तपस्वी ते कढाइमां पडी जस्म थइ जाय. एम करी १४४४ बौधोने हण्या. तेवारें एक श्रावक गाथा बोल्यो ॥ जइजलइजलउलोए ॥ एटलुं सांजलतांज क्रोध उतरी गयो. वली केटलाएक ग्रंथोमां एम लख्युं छे के याकनी महत्तरा साध्वीयें एक श्राविकाने लावीने गुरुने कह्युं के एणे पंचेंडी जीवनो वध कर्यो छे. तेनो दंम शुं आपो छो? तेवारें गुरु बोल्या पंच कल्याणानो दंम आपीयें छेये ते वखत साध्वी बोली. महाराज! एक पंचेंडीना वधनो एटलो महोटो दंम अपाय छे? एवुं आप जाणो छो तो आ बौधोने केम मारो छो? तेवारें गुरुनो क्रोध उतरी गयो पछी प्रायश्चित्त शोधवाने माटें चौदशें ने चुंमालीश पंचाशक प्रमुख प्रकरण बनाव्यां. ए प्रथम हरिजद्र सूरिनी संक्षेप कथा कही ॥ ॥ १ ॥ ॥ वली बीजा हरिजद्रसूरि विक्रमसंवतना ७६२ मां वर्षमां थया. तेमना शिष्य

सिद्धर्षिगणी हता ते बौधोनी पासे एकवीश वार गया अने आव्या. तेमणे बौधोने प्रतिबोधवा माटे ललितविस्तरा शक्रस्तवनी वृत्ति बनावी. ए बीजा हरिभद्र सूरिनी सामान्य कथा कही ॥ हवे त्रीजा हरिभद्रसूरि विक्रम संवत्‌ना बारसेना सैकामां थया तेमणे बनावेला मुनिपति चरित्र आदिक ग्रंथो आजे प्रसिद्ध छे ए त्रीजा हरिभद्रसूरि थया. तथा वळी श्रीजिनभद्र गणिक्षमाश्रमणप्रमुख घणा आचार्यो स्थविर थइ गया छे, तेमणे विशेषावश्यकनुं भाष्य बनाव्युं छे. तेमज बीजा वळी श्रीशीलंगाचार्य, अभय देवसूरि अने मलयगिरिप्रमुख टीका उना करवावाला थया छे. ए सर्व स्थविरो जाणवा. इति स्थविरावली शेषसंबंध संपूर्ण ॥ हवे अठावीश प्रकारनी साधु समाचारी लखीयें छैयें ॥ ते काळने विषे, ते समयने विषे, श्रमण भगवंत श्रीमहावीर स्वामी आषाढ शुदि पूर्णिमाथी लइने एक महीनो अने वीश दिवस वरसादना गये थके पंजोसण करे एवो नियम छे. इहां शिष्य पुछे छे के चोमासाना पचाश दिवस गया पछी पंजोसण केम करे ॥ १ ॥ तेने गुरु कहे छे हे शिष्य! गृहस्थ श्रावको पोताना घरने खडी प्रमुखथी. धोइ उपर छाया करी, घगारे, मगारे, धूप आपे, परनाळ प्रमुख पाणीना मार्ग काहाडे. इत्यादिक सर्व काम गृहस्थें पोताने माटे कर्या होय. अने पोते वापरी फासु करी मूक्या होय, ते कारण माटे हे शिष्य! वर्षादना पचाश दिवस गया थकां पंजो सण करे. अने कदाचित् जो साधु पहेलाथीज कहे के हुं चोमासुं रहीश, तो ते गृहस्थ साधुनुं निमित्त करीने घर प्रमुखनो आरंभ करे. ते माटे पचाश दिन गया पछी साधु कहे के अमे चोमासुं आंही करीशुं. एम कहे ॥ २ ॥ ॥ एवी रीतें जो भगवान् पोते पचाश दिन गये थके पंजोसण करे तो तेमना गणधर पण पचाश दिन गये थके पंजोसण करे ॥

॥ ३ ॥ ॥ अने जो गणधर पण पचाश दिन गया केडे पंजोसण करे तो गणधरोना शिष्यो पण वर्षादना पचाश दिवस गये थके पंजोसण करे ॥ ४ ॥ ॥ जो गणधरोना शिष्यो पचाश दिन गये पंजोसण करे तो थविर पण वर्षादना पचाश दिवस गये पंजोसण करे ॥ ॥५॥ ॥ जो थविरो, वर्षादना पचाश दिवस गये पंजोसण करे तो जे आजना समयमां श्रमण निर्ग्रंथ विचरे ते पण पचाश दिन गये पंजोसण करे ॥ ६ ॥ ॥ जो आज वर्त्तमान श्रमण निर्ग्रंथ वर्षादना पचाश दिवस गये थके पंजोसण करे तो अमारा आचार्य उपाध्याय पण पचाश दिवस गये पंजोसण करे ॥ ७ ॥ ॥ जो अमारा आचार्य उपाध्याय पचाश दिवस गये पंजोसण करे तो अमे पण वर्षादना पचाश दिवस गये पंजोसण करीयें छैयें. इहां अपवाद कहे छे के जादरवा शुदि पांचमना एक दिवस आगल अर्थात् जादरवा शुदि चोथने दिवसे पंजोसण करवुं कल्पे परंतु जादरवा शुदि पांचमीने उलंघवी कल्पे नही एटले एकावन्नमे दिवसे संवछरी करवी कल्पे नही परंतु उगण पचाशमे दिवसे कारणे करवी कल्पे माटे कारणे चोथनी संवत्सरी करवी कल्पे पण छठनी संवत्सरी तो अपवादे पण करवी न कल्पे ॥ ८ ॥ ए आठ आलावे करी पंजोसण करवा आश्रयी प्रथम समाचारी जाणवी ॥ ॥ १ ॥ ॥ हवे वर्षाकालमां चोमासुं रहेला साधु अने साध्वी तेमने पांच कोशनो चोफेरे अवग्रह राखवो पण अवग्रहथी बारणे हाथ मूके तिहां सुधी पण उत्तुं रहेवुं नही ॥ ९ ॥ साधु साध्वीने वर्षादे चोमासामां गोचरीने माटे पांच कोश जावुं आववुं कल्पे ॥ १० ॥ ए जावा आववानी बीजी समाचारी जाणवी ॥२॥ जिहां विचाले नित्य नदी वहेती रहेती होय तिहां नदी उतरीने पांचकोश लगण पण जावुं आववु कल्पे नही ॥ ११ ॥ अने कुणाला नग

रीनी पासें ऐरावती नदी छे ते नित्य वहेती रहे छे पण तेनो पाट घणो पहोळो छे, पाणी स्वल्प छे, माटे एक पग जळमां अने एक पग उंचो आकासें थळमां राखतो उतरे तो चोफेर पांच कोश जावुं आववुं कल्पे ॥ १२ ॥ एवी नदी न होय तो न कल्पे ॥ १३ ॥ ए नदी उतरवानी त्रीजी समाचारी जाणवी ॥३॥ ॥ हवे वर्षादमां रहेला साधु अने साध्वीने गुरुयें कह्युं होय के जो साधुउ तमे गिलाणने आहार आणी आपजो. तो तेने माटे आहार लावी देवो कल्पे. परंतु पोतानी मतियें गिलानने माटे आहार लावी देवुं कल्पे नही ॥ १४ ॥ ॥ अने जो गुरुयें कह्युं होय के तुं तहारे माटेज लइ आव, तो पोताने माटेज लइ आववुं कल्पे पण बीजाने आपवुं न कल्पे ॥ १५ ॥ ॥ वळी गुरुयें कह्युं होय के तुं गिलाणने आहार लावी आपजे अने तुं पण खाजे, तो लाववुं अने देवुं बेहु कल्पे ॥ १६ ॥ ॥ ए साधुउने परस्पर देवा लेवानी चोथी समाचारी जाणवी ॥ ४ ॥ ॥ हवे चोमासे पंजोसण करी रहेला साधु साध्वीने नव विगय लेवी कल्पे नही तेना नाम कहे छे. १ दूध, २ दहि, ३ माखण, ४ घृत, ५ तेल, ६ गोळ, ७ सहत, ८ मदिरा अने ए मांस ए नव विगय छे तेमां मदिरा, मांस, माखण अने सहत ए चार विगय तो सर्व साधुउने प्रथमथीज सर्वप्रकारे वर्ज्जेली होय छे. माटे ते मूकीने बाकीनी पांच विगय जे छे ते बलवान् रोगरहित शरीरवाळाने, लेवी कल्पे नही अने कारणे लेवी पडे तो लेवाय पण पंजोसणमां लेवी नही ॥ १७ ॥ ए विगय निषेध नामे पांचमी समाचारी जाणवी ॥ ५ ॥ ॥ चोमासुं रहेला साधु साध्वी जे होय तेने कोइ गिलाण कहे के माहारा माटे अमुक चीज गृहस्थना घरथी लइ आवजो तेवारें ते लाववावाळो साधु गुरुने पुछे हे स्वामी गिलाण साधु अमुक चीज मगावे छे ते

लइ आवुं? गुरु कहे केटलीक मगावे छे? तेवारें गिलाणने पूछे अने गिलाण कहे के आटली चीज जोइयें छैयें. पछी वली गुरुने कहे स्वामी! अमुक चीज आटली गिलान मगावे छे. त्यारें गुरु कहे एटली चीज एटला प्रमाणनी लावजे. पछी ते साधु जेवारें गोचरी जाय तेवारें गिलाणने खपती चीजथी वधारें श्रावक देवा लागे, तेने साधु कहे के एटलीज गिलाणने खपे छे. तेम छतां वली श्रावक कहेके वधारे लइ जाउ आपपण खाजो, पीजो, वापरजो, महारा घरमां घणी छे माटे सुखे ल्यो. तो लेवी. पण गिलाणना नामथी पोते लइने वापरवी नही॥ ॥ १७ ॥ ॥ ए गिलाणने खपती वस्तु लावी आपवा संबंधि छठी समाचारी जाणवी ॥ ॥ ६ ॥ ॥ हवे वर्षादमां रहेला थविर कल्पी साधुउने श्रावकोना घरमां जे नवा श्रावक थयेला होय तेमने घेर हरकोइ न्हाना अथवा महोटा साधु जाय अने ते जे कांइ मागे ते आपे, पण नाकारो करे नही, न्हाना महोटा साधु साहामुं जुए नही पण चोरासी गछना साधुउने दान देवानीज इछा राखे ते अने ज्यां साधुउने पण एवो विश्वास होय के जे चीज क्यांय पण नही मलशे ते एमना घरमां तो जरुर मलशे. एवा श्रावको जे होय तेमना घरमां साधुउयें विना देखती चीज मागवी नही कारण के ते श्रावक तो हरेक चीजनुं दान आपवुं एवी वांछा वालो छे तेथी ते श्रावक एवुं जाणे जे ए चीज एमने क्यांय पण नही मली हशे माटे मागवा आव्या छे. तेथी ते बजारमांथी वेचाती लइने अथवा अणसमजु नवो थयेलो श्रावक होय तो ते बाहेरथी चोरी लावीने पण साधुने आपें ते माटे एवा घरोमां अणदीठी वस्तु साधुयें मागवी नही ॥ १९ ॥ ॥ ए अदृष्टयाचनावर्जनसंबंधि सातमी समाचारी जाणवी ॥ ७ ॥ ॥ हवे वर्षादमां चोमासुं रहेला साधुउयें नित्य एकवार जमवुं अने गृ

हस्थोने घेर गोचरीयें जावुं ते पण एकवारज कल्पे पण आचार्य,उपाध्याय, तपसी,गिलान, न्हानी वयना शिष्य अने शिष्यणीउ एटले जेने दाढी मूछ आव्या न होय एवा लघु वयना शिष्य तथा जेने स्तंन न होय एवी लघुवयनी शिष्यणीउ प्रमुख जे होय तेमनी वैयावृत्त्य करवाने सारु जो एक दिवसमां बे त्रण वखत गृहस्थने घेर जवुं पडे तो पण तेनी मनाइ नथी परंतु पोताने माटे तो एक वारज जवुं कल्पे उपरांत जवुं कल्पे नही ॥ २० ॥ ॥ तथा एक उपवास करवावालाने, जो एकवार गोचरी गया थका खाइ पीने तृप्त थइ रह्या, पातरां प्रमुख पुंछी राख्या, तो फरी बीजी वखत गोचरी न जावुं अने जो नही धाया होय तो बीजी वार गोचरीयें जावुं ॥ २१ ॥ ॥ तथा बेलानी तपस्यावालाने एटले छठ्ठनुं तप जेणे करेलुं होय तेने तो बे वखत गोचरी जावुं कल्पे ॥ २२ ॥ ॥ अने तेलानी तपस्यावालाने एटले अठ्ठम तप करनारने त्रण वार गोचरीयें जावुं कल्पे ॥ २३ ॥ ॥ वली त्रण उपवासथी उपरांत तपस्याना करनारा जे होय तेमने तो मरजीमां आवे तेटला वखत गोचरीयें जावुं कल्पे ॥ २४ ॥ए गोचरीयें जवानी आठमी समाचारी जाणवी ॥ ८ ॥ ॥ वर्षादमां रहेला साधु साध्वी जे नित्य जमवावाला होय तेमने श्रीआचारांगे कहेला सर्व एकवीशे प्रकारना पाणी लेवा कल्पे ॥ २५ ॥ तथा एक उपवासवाला साधुने एक आटानुं धोवण, बीजुं पाननुं धोवण अने त्रीजुं चावलनुं धोवण ए त्रण प्रकारनुं पाणी लेवुं कल्पे ॥ तथा छठ्ठना तपवाला साधुने तूसनुं कूकसानुं धोवण,जवनुं धोवण,अने तिलनुं धोवण,ए त्रण जातनुं पाणी लेवुं कल्पे ॥ तथा अठ्ठम तपवाला साधुने एक उसामण, बीजुं कांजी, अने त्रीजुं वर्ण पालटेलुं उन्हु पाणी ए त्रण प्रकारनां पाणी लेवां कल्पे ॥ तथा त्रण उपवासथी उपरांत प

चरकाण जे साधुयें करेखुं होय तेमने गाणेखुं उष्ण पाणी लेवुं कल्पे ॥ तथा अनशनवाला साधुने एक उष्ण पाणीज कल्पे तेपण वली गाणेखुं होय ते कल्पे ते पण थाडुं थोडुं पीवुं परंतु घणुं पीवुं नही, परिमाणसहित पीवुं. ए पाणी पीवा संबंधि नवमी समाचारी जाणवी ॥ ए ॥ ॥ वर्षादमां रहेला साधु जे होय तेणे मर्याद करी छे के पांच दात पाणीनी अने पांच दात जोजननी लेवी पण जो पाणीनी चार दात मली अने जोजननी पांच दात मली पण ते पांच दातमां जोजन स्वल्प आव्युं छे तेनाथी पूरण पेट जराय नही तेवारें विचार करे जे पाणीनी चार दात मली छे पण पांच मली नथी तो हवे एक दात जो जनमां मेलवी आपुं एम करवुं कल्पे नही जे जेटलुं मल्युं ते तेटलुंज खाइने संतोष करवो पण दात आगी पाछी अदल बदल करवी नही तेम वली बीजी वखत गोचरीयें पण जावुं नही. हवे दात केने कहेछे जे वोहोरती वेलायें पात्रामां जो मात्र एकज चावलनो दाणो आवी पड्यो तो ते एक दात जाणवी तेमज सर्व अन्न साथेंज पात्रामां पडी जाय तो पण ते एकज दात जाणी लेवी. एमज पाणीनुं पण वहोरती वखतें जो एकज टीपुं आवी पात्रामां पडे तो ते एकज दात जाणवी अने पाणीनी धारा खंभाइ न होय, अस्खलित धार वहेतां संपूर्ण पात्र जराइ जाय तोपण एक दात समजवी परंतु धार खंभाया पछी वली बीजी धारायें जे पाणी पात्रामां पडे ते बीजी दात कहेवाय ॥ २६ ॥ ॥ ए दात आश्रयी दशमी समाचारी जाणवी ॥ १० ॥ ॥ तथा वर्षाकालें जे उपासरामां साधु चोमासुं रह्या होय ते जगाथी मांडीने सात घर पर्यंत गोचरीयें जवुं नही. गाममां जमण होय तो केटला एक आचार्य कहे छे के उपासरा सहित सात घर अने केटला एक आचार्य कहे छे के उपा

सरा सहित आठ घर लगण वोहोरवुं नही ॥ २७ ॥ ॥ ए सांखडी संबंधि अगीआरमी समाचारी जाणवी ॥ ११ ॥ ॥ वर्षाकालमां जिनकल्पी साधुने तो फुसार एटले धुंअरी मात्र पाणी वर्षे तो गोचरीयें जावुं नही ॥ २८ ॥ तथा अगायो घर एटले अणढांकेलुं घर होय तिहां वहोरवा जावुं नही केमके जो वहोरतां वहोरतां तत्काल अकस्मात् वर्षाद आवी जाय तो प्रथम लीधेलो आहार जे कांइक खवाणो होय कांइक रहेलो होय ते बन्ने हाथमां ढांकीने छाती नीचे लइने जिहां ढांकेली जगा होय तिहां अथवा झाडनी नीचें लइ जावो. पडे तिहां जो आहारमां पाणी नही लाग्युं होय तो आरोगी जावुं अने जो पाणी लाग्युं होय तो खावुं नही ॥ ३० ॥ ए जिनकल्पी साधुउनी गोचरी आश्रयी बारमी समाचारी जाणवी ॥ १२ ॥ ॥ वर्षादमां चोमासुं रहेला पात्रानां धारवावाला. साधु अर्थात् स्थविरकल्पी साधुउने तो, जेनी धारा रोकाय नही एवो अखंड धारायें मेघ वर्षे तो गोचरीयें जावुं नही ॥ ३१ ॥ जो कदाच कोइक साधु गिलान होय अथवा अशक्त होय एक बे दिवसनो भुख्यो होय अने अधिक भूख खमवानी तेमां शक्ति न होय तो ॥ ग्रंथाग्रंथ ॥ ११०० ॥ ॥ एक सूतरनो कपडो तेनी उपर ऊननुं वस्त्र उढीने थोडा छांटा पडता होय तो गोचरीयें जावुं कल्पे ए अपवाद सूत्र छे. तथा गृहस्थने घरें गोचरी गया केडे रहीरहीने थोडो थोडो वर्षाद वरशे तो आराममां, उपासरामां, मंडपनी नीचें तथा रूखनी नीचें आववुं कल्पे ॥ ३२ ॥ तथा गृहस्थने घरें गोचरी गयेला साधुने वर्षाद आव्यो तो तेना घरें जे वखत साधु आव्यो ते वखतथी पहेला जो भात उतर्या होय अने पछी दाल उतरी होय तो साधुयें भात वहोरवा अने दाल वहोरवी नही ॥ ३३ ॥ अने जो दाल पहेली उतरी होय अने चावल पछी उतर्या होय तो दाल वहो

रवी अने चावल वहोरवा नही ॥३४॥ अने जो चावल तथा दाल बेहु पहेला उतस्या होय तो बेहु लेवा कल्पे अने जो बेहु पछी उतस्या तो बेहु चीज लेवी कल्पे नही ॥ ३५ ॥ तथा गोचरी गयेला साधुने आहार मल्यो छे अने वर्षाद रहीरहीने वर्षतो होयतो बागमां, उपासरामां, ढांकेली जगामां, झाडनी नीचें-एटली जगायें आवीने आहार खाइ जवुं पण आहारने घणो वखत राखी मूकवो नही तरत आरोगी पातरा पुंछी एकठा बांधीने वर्षाद पडतो होय तोपण दिवस छतेंज उपासरामां आववुं पण रात्रियें बाहेर रहेतां घणा दोष उपजे छे माटे रात्रें तो उपासराथी अलगुं रहेवुंज नही ॥३६ ॥ एम वर्षादमां रह्या साधु गृहस्थने घेर गोचरी गया थकांने रहीरही वर्षाद वर्षवा लाग्यो तो बागादिकमां अथवा उपासरे आववुं कल्पे ॥ ३७ ॥ परंतु बागादिकस्थानके एक साधु अने एक साध्वीने एक स्थानके रहेवुं तथा एक साधु अने बे साध्वी तथा बे साधु अने एक साध्वी तथा बे साध्वी अने बे साधुउ ए चारे जांगायें एकठुं रहेवुं नही कल्पे तथा पांचमें जांगे बे साधु अने बे साध्वी होय तेमां एक वृद्ध साधु साध्वी होय तथा एक लघु साधु साध्वी होय अने जगा घणी मोकली होय जिहां सर्वलोक देखता होय एवी जगामां रहेवुं कल्पे. एवाज चार जांगा साधुने श्राविकानी साथें कहेवा तेमज वली एवाज चार जांगा साध्वीने श्रावकनी साथें कहेवा ॥ ३८ ॥ अने पूर्वोक्त पांचमें जांगें एकठा रहेवुं कल्पे ॥३९॥ आ थविरकल्पी साधु साध्वीउने गोचरी तथा साधु साध्वीउने एकत्र रहेवा संबंधिनी तेरमी समाचारी जाणवी ॥ १३ ॥ वर्षादमां चोमासुं रहेला साधु अथवा साध्वीयें कोइ साधुना कह्या विना तेमना माटे अशनादिक चार आहार लाववा नही ॥ ४० ॥ ते शामाटे के तेनी इछा होय तो ते आहार खाय अने इछा न होय तो न खाय ते माटे कह्या विना

आहार लाववो नही ॥ ४१ ॥ ए पूछ्या विना बीजा साधुउने माटे आहार नही लाववो ते संबंधी चौदमी समाचारी जाणवी ॥१४॥ ॥ वर्षादमां रहेला साधु साध्वीने जिहां सुधी शरीर नीजेलुं होय तिहां सुधी अशनादिक चार आहार करवा नही ॥ ४२ ॥ एम शावास्ते कह्युं छे, के घणु करी सात ठेकाणा नीजेला रहे छे, तेमां एक हाथ, बीजी हाथनी रेखा, त्रीजा नख, चोथी नखनी अणीउ, पांचमां जुंहारा, छठा नीचला होठ अने नीचली दाढीनी जगा, सातमा उपरला होठ अने उपरनी मूछो, ए सात स्थानक आला रहे छे तिहां सुधी अशनादि चार आहार न करवा अने जेवारें जाणवामां आवे के ए साते ठेकाणा आला रह्या नथी तदन सुकी गया छे तेवारें चार आहार करवा ॥ ४३ ॥ आ शरीर आलुं होय तेवारें आहार नही करवा संबंधी पन्नरमी समाचारी जाणवी ॥ १५ ॥ ॥ वर्षाद वरश्या थका; साधु साध्वीयोने सूक्ष्म आठ वस्तुउने वारंवार सूत्र ज्ञानेकरी जाणवी अने चक्षुयें करी देखवी, पडिलेहण करवी जोइयें; तेना नाम कहे छे. एक प्राण सूक्ष्म, बीजुं पणक सूक्ष्म, त्रीजुं बीज सूक्ष्म, चोथुं हरितसूक्ष्म, पांचमुं फूलसूक्ष्म, छठुं कीडी प्रमुखना अंडसूक्ष्म, सातमुं कोली आवडा प्रमुखना घर सूक्ष्म अने आठमुं स्नेह सूक्ष्म, ए आठनां नाम कह्या. हवे एने उल खवा माटे विशेष खोलासो गुरु शिष्यना प्रश्नोत्तररूपें लखीयें छैयें. तिहां प्रथम प्राण एटले सूक्ष्म जीणा जीणा जंतुउ.काला, नीला, राता, पीला अने धोला एवा पांच प्रकारना रंग वाला कुंथुआ जीव थांय छे, अणुद्धरी एवुं एनुं नाम छे ए जीव एकस्थानके अणचालता रहे, ज्ञानरहित छद्मस्थ साधु साध्वीउने नजरथी देखाय नही माटे ते जीवोने साधु साध्वीयें वारंवार सूत्र सांभलवे करी जाणतां रहेवुं, चक्षुयें करी देखतां रहेवुं. ए प्राण सूक्ष्म कह्या

॥ ४४ ॥ हवे शिष्य पूछे छे, हे भगवन् पणग एटले फूलण सूक्ष्म ते कोने कहीयें? गुरु कहे छे. काली, लीली, राती, पीली अने धोली एवा पांच प्रकारनी फूलण थाय छे; ते जीवो जे वस्तुमां पडे ते वस्तुनां रंग जेवा दीठामां आवी जाय. छद्मस्थने नजरे नही आवे माटे तेने पण वारंवार देखतां तपासतां रहेवुं, ए बीजी नील फूल सूक्ष्म कही ॥ २ ॥ हवे त्रीजा बीज सूक्ष्म कोने कहीयें? गुरु कहे छे ते पण काला, नीला, धोला, पीला अने राता एरीतें पांच प्रकारना छे. शाल-प्रमुखना जेवा वर्णवाला थाय छे. तेपण छद्मस्थने जाणवामां नही आवे माटे तेनी पण वारंवार पडिलेहणा करवी ए बीज सूक्ष्म कह्या ॥ ३ ॥ हवे चोथा हरित सूक्ष्म कोने कहीयें? गुरु कहे छे के हरित एटले नीलोत्री सूक्ष्म थाय छे! ते पण पूर्वोक्त पांच रंगवाली थाय छे ते पृथ्वीना रंग सदृश होय अने घणी झीणी बारीक होय; तेने पण साधु साध्वीये घणीज रूडीरीतें दृष्टी वडे जोइने पडिलेहण करवी; ए हरित सूक्ष्म कही ॥ ॥ ४ ॥ पांचमां फूल सूक्ष्म कोने कहीयें? गुरु कहे छे ए पण झीणा फूल ते पूर्वोक्त कालाथी मांडीने यावत् धोला पर्यंत पांच प्रकारना थाय छे ते रूखना जेवा एटले रूखनो जेवो रंग थाय तेवा रंगवाला थाय छे ते पण जाणवामां नही आवे, तेनी पण पडिलेहण करवी. ए फूल सूक्ष्म कह्या ॥ ५ ॥ हवे छठा अंड सूक्ष्म ते कोने कहीयें? गुरु कहे छे तिहां प्रथम मधुमाखीनां इंडां, बीजां कुलातरानां इंडां, त्रीजां कीडीनां इंडां, चोथां गिरोलीनां इंडां अने पांचमां काकिंडानां इंडां ए सर्व जीवोनां इंडां पण सूक्ष्म थाय छे; माटे एने वारंवार जोवा अने पडिलेहण करवी ए अंड सूक्ष्म कह्या ॥ ६ ॥ हवे सातमां घर सूक्ष्म पण पांच प्रकारना छे; ते शिष्यना पूछवाथी गुरु कहे छे के एकतो भूमीमां गदइया स

रखा घर करेला होय ते, बीजा पाणी सुकाइ गया पछी पापडी भूमि उपर पडे ते, त्रीजा बिल घर, चोथा ताड प्रमुख वृक्षोना मूलमां न्हाना न्हाना घर थाय छे ते घर, अने पांचमां भमरानां घर ए पांचें प्रकारनां घरोनी पडिलेहणा करवी. ए घर सूक्ष्म कह्या ॥ ७ ॥ ॥ हवे आठमो स्नेहसूक्ष्म ते कोने कहीये? गुरु कहे छे ए पाणी सूक्ष्म पण पांच प्रकारनो छे; एकतो उसनुं पाणी, बीजुं हेमारानुं पाणी, त्रीजुं धुंहरि थाय छे ते, चोथुं करानुं पाणी अने पांचमुं भाज प्रमुखनी अणी उपर जे पाणीनां बिंदु रहे छे ते, ए पांच प्रकारनुं पाणी छे तेने पण छद्मस्थे जाणीने पडिलेहवुं जोइयें. ए स्नेह सूक्ष्म कह्यो ॥ ८ ॥ ॥ ४५ ॥ ए आठ सूक्ष्म चीज आश्री शोलमी समाचारी जाणवी ॥ १६ ॥ ॥ हवे वर्षादमां चोमासुं रहेला साधु साध्वीउने जेवारें गृहस्थोने घेर गोचरी करवा आहार प्रमुख लेवाने माटे जावुं होय तेवारें आचार्य, उपाध्याय, थविर, प्रवर्त्तक, गणि, गणधर, गणावछेदक, तथा जेनी आज्ञामां चालता होइये तेमने पूछीने पछी भात पाणी प्रमुख लेवाने माटें जावुं तेमने एम कहेवुं के हे भगवन् आपनी आज्ञा होय तो गृहस्थोने घेर भात पाणी लेवाने वास्ते जाउं तेवारें ते पूर्वोक्त आचार्यादिक जो जवानी आज्ञा आपे तो जवुं नहींकां जावुं कल्पे नही. इहां शिष्य पूछे छे के शा वास्ते? गुरु कहे छे के आचार्यादिक जे छे ते उपद्रव टालवानां उपाय जाणे छे जे ते साधु अमुक दिशा गया तेंने घणो वखत केम लाग्यो! एटला माटे॥ ४६॥ एवीज रीतें जो श्रीजिनचैत्यें दर्शन करवा जवुं होय तथा थंडेल भूमियें जवुं होय अथवा बीजा कोइ पण कामने माटे जवुं होय, गामोगाम विचरवुं होय तोपण पूछ्या विना जवुं नही ॥ ४७ ॥ ॥ तथा चोमासुं रहेला साधु साध्वीउने जो विगयनो आहार करवानी इछा होय

तो आचार्यादिकोने पूछ्या विना विगय लेवी कल्पे नही माटे आचार्यादिकोने पूछवुं के हे महाराज आपनी आज्ञा होय तो हुं दूध प्रमुख विगय गृहस्थना घरेथी लइ आवीने आहार करुं? तेवारें आचार्यादिक कहे के अमुक प्रमाणवाली विगय लावीने आहार करजे इहां शिष्य आशंका करे छे के एमां आज्ञा लेवानुं शुं प्रयोजन छे! तेवारें गुरु उत्तर आपे छे के विगयादिक खावा के नही खावा, तेथी थता गुण तथा अवगुण ए सर्व आचार्यादिक जाणे छे माटे पूछवुं जोइयें ॥ ४८ ॥ ॥ तथा चोमासामां कोइ साधु पोतानी आरोग्यता माटे औषध करवानी चाहना राखता होय तो पण आचार्यादिकनें पूछीने औषध करवुं ॥ ४९ ॥ ॥ तथा चोमासामां कोइ साधु; सारुं, कल्याणकारि, उपद्रवरहित, धन्यकारि मंगलिकनुं करनार, सोभावंत तथा महाप्रभाविक एवुं तप करवानी चाहना राखतो होय, तेणे पण आचार्यादिकने पूछीने पछी तें तप करवुं ॥ ५० ॥ ॥ तथा कोइ साधु अनशन करवानी चाहना राखतो होय, आत्माने जूषे भात पाणीनो त्याग करी पादोपगमन संथारो प्रमुख करे, कालने वांछे नही,तेणे पण आचार्यादिकने पूछ्या विना करवुं नही. एमज आहार करवो, छले जावुं, मात्री परठववी, सझाय ध्यान करवुं, धर्मजागरणा करवी, काउस्सग्ग प्रमुख करवुं ते सर्व आचार्यादिकने पूछीने करवुं परंतु आचार्यादिकने पूछ्या विना पूर्वोक्त कोइ पण काम करवुं कल्पे नही. ॥ ५१ ॥ ॥ ए वोहोरवा प्रमुख जे कार्य करवां ते सर्व आचार्यादिकने पूछीने करवा, ते संबंधिनी सत्तरमी समाचारी जाणवी ॥ १७ ॥ ॥ वर्षाकालमां पंजोसण करीने रहेला साधुउने कोइ उपधी तपाववी होय, तावडामां नाखवी होय तो पोते तिहां खबर राखवी, पासें बेसवुं. परंतु उपधिने तावडे नाखीने गोचरीयें

जावुं नही, आहार करवो नही, चैत्यें जावुं नही, ठल्ले जावुं नही, सद्याय करवी नही, काउस्सग्ग करवो नही, जो एटला काम करवां होय तो बीजा कोइ साधुने कहेवुं के हे आर्य ! मने गोचरीप्रमुख अमुक कार्य करवुं ठे, माटे तमे अमारी उपधीनी निगा राखो तो हुं गोचरी प्रमुखनुं काम करुं तेवारें ते साधु कहे के हुं निगा राखीश तो गोचरीप्रमुख कार्य करवुं कल्पे पण कदापि ते कहे के मह्यारे बीजां काम ठे तेथी बेशी नही शकुं तो पूर्वोक्त गोचरीप्रमुख करवी कल्पे नही ॥ ५२ ॥ ए उपधि तावडे तपाववा संबंधि अढारमी समाचारी जाणवी ॥ १८ ॥ ॥ वर्षादमां रहेला साधु साध्वीउने, एक हाथ उंची अने बोले नही एटले शब्द नकरे एवी वली. मगे नही, फरती काठी बांधेली एवा शय्या विना रहेवुं कल्पे नही जो एवा शय्यासन विना रहे तो कर्मबंधनुं कारण थाय. वली ते शय्यासनने वारंवार पडिलेहण करवुं, तावडे नाखवो, पूंजवो प्रमुख जो नकरे तो तेने चारित्र पालवुं डुर्लभ थाशे ॥ ५३ ॥ अने ते शय्यासनने जे साधु तावडो प्रमुख आपे, पूंजे ते साधु चारित्र सुखें पालशे ॥ ५४ ॥ ए शय्या प्रमुख ग्रहण करवानी उंगणीशमी समाचारी जाणवी ॥ १९ ॥ ॥ चोमासामां रहेला साधु साध्वीउने ठला मात्रानी त्रण जगाउ राखवी अने ते जगाउने पडिलेहवी परंतु सीयाला अने उनालानी पेठे चोमासामां न रहेवुं जोइयें. इहां शिष्य पुठे ठे के शीयाला अने उनालाना दिवसोनी पेठे चोमासामां शा वास्ते न करवुं? गुरु उत्तर कहे ठे के प्रायः चोमासामां नीली वनस्पतिप्रमुख जीवो घणा उत्पन्न थयेला होय ते माटे ते नाथी चोमासानो जुदो प्रकार कह्यो ॥ ५५ ॥ ए ठला अने मात्रानी जगा पडिलेहण करवा संबंधि वीशमी समाचारी जाणवी ॥ २० ॥ ॥ चोमासामां साधु साध्वीउने त्रण

मात्रा राखवा कल्पे. तेमां एक तो ल्लानुं, बीजो मात्रानो, त्रीजो खेल प्रमुखनो एवं त्रण जाणवा ॥ ५६ ॥ ए त्रण मात्रा राखवा संबंधि एकवीशमी समाचारी जाणवी ॥ २१ ॥ पंजोसण करीने रहेला एवा साधु साध्वीउने, गायना केस जेवडा सूक्ष्म केस पण पोताना मस्तके राखवा नही. केमके पांचमिनी रात्रे जो मस्तके केस रही जाय तो दंम आवे. ते माटे जो कोइ अशक्त गिलान टाटियो होय तो तेणे ठरीथी मुंमी नाखवा, कतरणीथी कतरवा अने उत्सर्गमां तो लोच करवो तथा जो कतरवा होय तो पाठा पंदर पंदर दिवसें कतरवा, गुरु मासी दंम आपवो, महीने महीने खुर मुंम करवो, लघु मासी प्रायश्चित्त देवो, युवान साधुने चार मासे लोच करवो, स्थविरने अने जर्जर थयेला साधुने चक्षुनो तेज राखवा माटे ठ महीने लोच करवो, अथवा थविर वर्षे वर्षे लोच अवश्य करे ॥ ५७ ॥ ए लोच करवा आश्री बावीशमी समाचारी जाणवी ॥ २२ ॥. ॥ वर्षादमां चोमासुं रहेला साधु साध्वीउने संवत्सरी थया पठी पहेला थयेलो कलह खमाववो पण क्रोध राखवो नही, जे कोइ निर्ग्रंथ अने निर्ग्रंथणी पंजोसण वीत्या पठी क्रोध करे, क्रोध राखे, ते अनाचारी ठे एम जाणवुं. तेमने बीजा साधुउए कहेवुं के हे आर्य? तमे अयोग्य काम करो ठो एवुं कहेवाथी नही समजे अने पंजोसण वीत्या पठी कषाय खमावे नही तो जेम तंबोली सडी गयेला पानने बाहेर काहाडी फेंकी आपे ठे तेनी पेरें ते क्रोधी साधु साध्वीने पण संघमांहेथी बाहेर काहाडी मूकवो ॥ ५८ ॥ ए अधिकरणने नेंही उदिरवा संबंधि त्रेवीशमी समाचारी जाणवी ॥ २३ ॥ ॥ वर्षाकालमां रहेला साधु साध्वीउने, जो पंजोसणना दिवसोमां कलह थयो होय, कटुक बोलवुं पडयुं होय, उद्वेग कर्यो होय तेवारें शिष्यें जइ रत्नाधिक

आचार्य प्रमुखने खमाववुं अने आचार्य प्रमुखें शिष्यने खमाववुं ॥ ग्रंथाग्रंथ ॥ १२०० ॥ ए रीते पोते खमवुं, बीजाने खमाववुं, पोते उपशम करवो, बीजाने उपशम करावबो, घणा प्रकारे करी रागद्वेषरहित थावुं, जे क्रोधादिकने उपशमावशे ते ज्ञानादिकनो आराधक थशे अने जे क्रोधादिकने नही उपशमावशे ते ज्ञानादिकनो विराधक थशे, एवुं जाणीने निश्चयें पोते उपशम करवो, जगवान् ए उपशमनेज सार पदार्थ कहे ले माटे हे शिष्य उपशम अवश्य अंगीकार करवो ॥ ५ए ॥ ॥ ए परस्पर खमत खामणा करवा संबंधिनी चोवीशमी समाचारी जाणवी ॥ २४ ॥ ॥ इहां पांच समिति, त्रण गुप्ति अने चार कषायोना दृष्टांत कहेवा ॥ साधु 'साध्वीयें चोमासामां वली विशेषें करीने पांच समिति आदिक पालवी. तिहां प्रथम इरिया समिति पालवा आश्री वरदत्त मुनिनो दृष्टांत कहे ले. एक दिवस इंद्रमहाराजे पोतानी सजामां कह्युं के आज जरत क्षेत्रमां वरदत्त मुनि समान कोइ इरिया समितिनो पालवावालो नथी. एवी इंद्रना मुखथी वरदत्त मुनिनी प्रशंसा थयेली सांजलीने कोइक देव परीक्षा करवा सारु आव्यो तेणे हाथीनुं रूप करी सुंढमां पकडीने मुनिने आकाशमां उबाल्यो अने देवमायाथी जमीन उपर न्हानी न्हानी घणी मेडकीउ विकुर्वी. तेवारें मुनि आकाशथी नीचे पडतां विचार करवा लाग्या के मने तो मरवानुं जय नथी पण आ जीणी जीणी मेडकीउ महारा शरीरना पडवाथी मरण पामशे, तेनी विराधना थाशे, एवुं जाणीने आकाशथी पडतां थकां पण उघाथी जमीन पूंजवा लाग्या ते देखी देवताए जाण्युं के धन्य ले एने जे एरी रीते जीव विराधनाथी बीये ले. पली ते देवता प्रगट थइने साधुनी साथे अपराध खमावी नमस्कार करीने पोताने स्थानके गयो. इति इरिया समितौ

वरदत्तदृष्टांतः ॥ १ ॥ ॥ हवे जाषासमिति उपर संगत साधुनो दृष्टांत कहे छे. जे नगरमां संगत साधु हता ते नगरनी बाहेर कोइ वैरीराजायें सेन्या लइ आवीने नगरने वींटी लीधो, तेवारें संगत साधु नगरमांथी निकलीने बाहेर आव्या, तेने शत्रुनी फोजवालायें पुछ्युं के हे साधु नगरनी मांहेली कोरे केटलिक फोज छे? तेवारें साधु बोल्या के घणो सांजल्यो काने, घणो जोयो आंख्योथी (चक्षुथी), नही देख्यो सर्वे सांजल्यो, नही सुण्यो सर्वे दीठो, एवी रीते बोल्यो वली पण ज्यारें ज्यारें ते पूछे त्यारें वारंवार एमज बोलवा लाग्यो, तेवारें सेन्याना लोकें जाण्युं जे आ जणी जणीने घहेलो थइ गयो छे, एम विचारी मूकी दीधो. ए बीजी जाषा समिति उपर दृष्टांत कह्यो ॥ २ ॥ ॥ हवे त्रीजी एषणासमितिमां नंदीषेणनो दृष्टांत कहे छे. वसुदेवजीनो जीव पूर्वला जवमां नंदीषेण हतो, तेणे ग्लाननी वैयावच्च करवानो अजिग्रह कर्यो हतो. पोते छठ्ठ छठ्ठ पारणुं करे तेनी इंद्रें प्रशंसा करी, तेवारें कोइक देवे आवी अतिसारना रोगवालो साधु बनावीने नंदीषेण पासे मोकल्यो. नंदीषेण तेना सारु पाणी लेवा गयो ते देवतायें अशुद्ध करी आप्युं, नंदीषेणे लीधुं नही, एवी रीते एषणा सोधी छे. ग्लानने खांधे बेसाड्युं, ग्लाने तेने अशुचीये खरड्युं, देवे स्तुति करी ए कथा आगल श्रीनेमिसर जगवानना चरित्रमां लखाइ गइ छे. इति एषणा समिति दृष्टांत ॥ ३ ॥ हवे आदानादि पडिलेहण करवानी चोथी समितिमां सोमिल साधुनो दृष्टांत कहेछे. एक दिवस साधु विहार करीने कोइ गामें आव्या तिहां दिवस केटलो छे एवी बराबर खबर न पडवाथी वहेली पडिलेहण करी लीधी. एटलामां पाछलथी वखतनी खबर पडी तेवारें गुरुयें कह्युं पडिलेहण करवानो वखत तो हमणा छे; माटे पडिलेहण करो. ते सांजली सर्वे साधु

उए पडिलेहण करी; गुरुयें सोमिलसाधुने कह्युं के! तुं पण पडिलेहण कर. सोमिल बोल्यो हजी हमणातो पडिलेहण करी ठे तो हवे एटलामां शुं कांइ सर्प घुंसीगयो ठे? एवुं उलंठ वचन बोल्यो पठी जेवारें प्रजातें पडिलेहण करी तेवारें गुब्बामांहे पातरा बांधेला हता तेमांथी कोइ देवप्रयोगथी सर्प निकल्यो दीठो. तेथी बीक पामीने गुरुपासें आवी कहेवा लाग्यो महाराज सर्प निकल्यो; तेवारें गुरु बोल्या तुं उलंठ वचन शामाटे बोल्यो? हे वत्स एवां वचन ताहारे आज पठी बोलवा नही. पडिलेहण करवामां तो घणीज निर्जरा ठे. पठी ते साधुयें एवो अनिग्रह लीधो जे आजथी सर्व साधुउना दंम हुं पडिलेहीश, सर्वने हुं हाथ आ पीश; एवो अनिग्रह पालतां ते साधुयें घणा कर्म क्षय कस्या. इति आदानजंमनिक्षेपणसमिति दृष्टांत ॥ ४ ॥ ॥ हवे उच्चार प्रश्रवण समितिमां सुव्रताचार्यनो दृष्टांत कहे ठे. सुव्रताचार्यनो एक लघु शिष्य हतो तेने गुरुयें कह्युं; अरे मांमला कर; तोपण तेणे मांमला कीधा नही अने कहेवा लाग्यो शुं बाहारे उंटडा बेगठे के? पठी रात्रियें बाहेर मात्रुं परठववा गयो. तेने तिहां कोइक देवे आवी उंटनुं रूप करीने बीवराव्यो अने बोल्यो; अरे आ गब्बमां एक साधु पण मंमल कस्या विना मात्रा प्रमुख करे नही. पठी वली एक दिवस मंमल दीठो नही अने रात्रें मात्रानी घणी बाधा थइ पण परठे नही. तेवारें देवतायें उद्योत कस्यो. पठी ते शिष्यें जगा जोइने मात्रा परठवी. तेमाटे जे कोइ मंमल देखी परठवणा करशे तेने देवता स हाय आपशे. एवो निश्चयकरी क्षुल्लक पण पारिठावणिया समितिमां सावधान थयो. ए पारिठा वणिया समितिनो दृष्टांत कह्यो ॥ ५ ॥ ए पांच समिति साधुयें चोमासामां विशेष पालवी ॥ हवे मनगुप्ति उपर कौंकुण साधुने काउस्सग्गमां घणी देर लागी तेने गुरुयें पुठ्युं. घणो वखत

केम लाग्यो ? साधु बोल्यो; जीवदया ध्यायी; गुरु बोल्या केवी जीवदया ध्यायी ? साधु बोल्यो म्हारा घरमां छोकरा आलसुं छे ते खूड निदानादिक करशे नही तो धान थोडो नीपजशे; तेथी दुःखी थशे,गुरुयें कह्युं तमे सावद्य चिंतव्युं माटे मिछामि दुक्कडं द्यो. साधु पण मिछामि दुक्कडं देतो हवो ॥ इति मनगुप्ति दृष्टांत ॥ १ ॥ ॥ हवे वचनगुप्ति उपर गुणदत्त साधुनो दृष्टांत कहे छे. गुणदत्त साधु; एक दिवस पोतानी संसारसंबंधि धनवती नामे माताने वंदाववा जातो हतो; रस्तामां चोर मल्या; तेणे साधुने पकड्यो अने कहेवा लाग्या अरे साधु ! आ रस्ताथी जान आवशे तेनी आगल तुं अमारुं नाम लइश नही जे आ ठेकाणें चोरो रहे छे. साधुयें कह्युं हुंतो बोलीश नही. तेवारें चोरोये तेने छोडी मूक्यो; ते पोताने स्थानके जइ पोताना कुटुंबने वंदावीने फरी तेवोज जाननी साथे तेहज मार्गें आव्यो. तेवारें चोरोये जान लूंटी लीधी अने वली बोलवा लाग्या के जूउ आ साधु कहेवो सत्यवादी छे के पोताना घरना माणसो आगल पण चोर रस्तामां बेठा छे एवुं कह्युं नही.ते वचन साधुनी मातायें सांभल्युं; तेवारें महादुःख करती थकी साधुने कहेवा लागी के अरे दुष्ट! तें ताहारे हाथे चोरोने माल लुंटावी दीधो;तुं केम प्रथमथी बोल्यो नही!! पछी साधुने घणो कष्ट थतो देखीने चोरोयें लुंटेलुं धन सर्व पाछुं आपी दीधुं; तेवारें जानवाला सर्व खुशी थया पण साधु बोल्यो नही; ए वचनगुप्ति उपर कथा कही ॥२॥ त्रीजी कायगुप्ति उपर अर्हन्नक साधुनी कथा कहे छे.अर्हन्नक साधु, विहार करतां कोइ स्थानके पालो वहेतो देखीने विचारवा लाग्यो के जो हुं आ खालमां पग देइश तो जीवविराधना थाशे माटे फूदको मारीने आंहीथी निकली जाउं. एवुं चिंतवी बलांग मारीने पेली तरफ गयो एथी आज्ञा भंग करी माटे कोइक देवे ते साधुना पग छेदी नाख्या.तेथी

दुःखी थयो तेवारें देवतायें आवी कह्युं के आगल हवे तमारे एम कोइवारें पण करवुं नही, जो
कदापि जीव मरे तो पण ए केवलीनी आज्ञा छे माटे उतरीने जावुं पण कूदको मारीने जावुं
नही. इति कायगुप्तिदृष्टांत ॥ ३ ॥ ॥ हवे वली आ पुंजोसण आव्या थकां सर्वनी साथे ख
मत खामणा करवा, कारणके खमतखामणा करवा विना पडिक्कमणादिक क्रिया करवी सूजे
नही माटे जो कोइनी साथें महोटो वैर होय तो पण उदाइराजानी पेरे खमाववुं. जेम चंपान
गरीमां कुमारनंदी नामा एक सोनार रहे छे ते जन्मथी स्त्रीनो लोलुपी छे, धन आपीने महा
स्वरूपवाली पांचशे स्त्रीउं परण्यो छे. एक दिवस ते, हासा अने प्रहासा ए बे देवीयोने देखी
तेनुं स्वरूप जोइ मोहित थयो, तेथी देवीयोने कह्युं के तमे महारीसाथें भोग करो. देवीयो बोली
तुं पंचशेल पर्वत द्वीपे आवजे तो अमारे भोगयोग्य होइश एवुं कहीने देवीयो पोताने स्था
नके गइ सोनारे गाममां आवी पडह वजडाव्यो के जे कोइ मुजने पंचशेलद्वीपे लइ जाय तेने
हुं क्रोड सोनामोरो आपुं. ते सांभली एक वृद्ध खलासी (नावनो खेडनार) द्रव्यनो लोभी
छे तेणे जाण्युं घरना माणसो द्रव्यतो खाशे एवुं विचारी बोल्यो के हुं लइ जइश पछी बेहु ज
हाजमां बेठा जहाज चाल्युं आगल जतां एक वडवृक्ष आव्यो तेवारें नावड्यो बोल्यो आ
वडनी उपर तुं चडी जाजे अने हुंतो आंहीआं जहाज पाणीना चक्रमां बूडशे तेनी साथे डू
बीने मरीश पण तुं वड उपर बेशी रहेजे, रात्रना भारंड पंखी आवशे तेना पगोमां तहारा
शरीरने बांधी मूकजे, ते पंचशेल द्वीपमां चूगवा जाशे तिहां तने मूकी देशे पछी तुं तिहां
बंधनमुक्त थइ हासा प्रहासा देवीउंनी पासें जाजे एवुं कह्युं एटलामां ते वाहण वडनी पासें
आव्युं, सोनार वड उपर चड्यो अने जहाज भांगी पड्युं,नावड्यो मरण पाम्यो, सोनार ति

हांथी जारंग पंखीना पगमां बंधाइने हासा प्रहासानी पासें गयो, तेनी आगल जोग जोगववा माटे याचना करी, देवीउ बोली आ तहारी अशुद्ध देह छे ते देहथी अमे जोग करीयें नही. तेवारें ते देवीयोयें फरी तेने चंपानगरीमां मूक्यो अने कह्युं के जे हमणा अमारो देवपति छे ते चवसे तिहां तुं मरण पामीवे ते देवनी शय्यामां उपजजे तो तहारुं काम थशे तेवारें सोनार पण काष्ठ बालीने अज्ञानकष्ट करी मरवा लाग्यो ते अवसरमां ते सोनारनो मित्र नागिलनामा श्रावक हतो ते बोल्यो, अरे तुं आवीरीते मरवानुं मकर आ प्रकारें देवीउने माटे मरवुं योग्य नथी तो पण तेणे मान्युं नही काष्ठमां बली मरण पामीने हासा प्रहासाना ध्यानथी तेम नो पति देव थयो. अने तेउनी सार्थे जोग जोगवतो रहे छे एकदिवस इंद्रमहाराज, सर्व देव देवी सहित नंदीश्वरद्वीपें देवयात्रायें जवाने माटे तयार थया, तेवारें हासा प्रहासानो पति जे देव छे तेनी उपर एवो हुकुम आव्यो के तुं सर्व देवोनी आगल मृदंग बजावतो चालजे ते वारें, हासा प्रहासायें ते देवना गलामां मृदंग नाख्यो, देवें ते मृदंग पोताना गलामांथी काढी डीने फेंकी दीधो अने कह्युं के हुं मृदंग वजावीश नही. एटलामां तो फरी ते मृदंग तेना ग लामां आवी बाजी गयुं, फरी देवे फेंकी दीधो, एम बे त्रणवार कर्युं त्यारें हासा प्रहासा बोली अमारा जरतारनी एज मर्यादा छे के मृदंग बजाव्या विना ते छूटेज नही " हासा प्रहा सानो मृदंग गलामां पड्यो ते वजावे छूटको " एवी लोकमां पण कहेवत छे. हवे ए विद्यु न्माली देव हासाप्रहासासहित मृदंग वजावतो आगल चाले छे तिहां महर्द्धिक देवोने देखीने पोताना जवनी निंदा करे छे. एटलामां नागिल श्रावकनो जीव बारमां देवलोकमां उपन्यो छे, ते पण तिहां आव्यो अने विद्युन्मालीने कहेवा लाग्यो के अरे तुं मने उलखे छे के नथी उल

खतो ? तेवारें देवे उपयोग आपीने कह्युं के हा मह्वारा मित्र नागिल तें घणो ए मने वर्ज्यो पण हुं तुछ्र जोगने माटे व्यर्थ मनुष्य जन्म गमावीने आवा पुण्यहीन देवोमां आवी उपन्यो छुं तो हवे मह्वारे शुं करवुं ! तेवारें नागिल बोल्यो तुं गोशीर्षचंदननी श्रीमहावीरस्वामीनी प्रतिमा बनावीने तेनी पूजा कर के जेथकी तने समकेतनी प्राप्ति थाय. पछी ते विद्युन्मालीयें पण तेमज श्रीमहावीरजीनी प्रतिमा बनावीने केटलाएक काल पर्यंत पूजी. छेवट पोतानुं अल्पायुष्य रह्युं जाण्युं; तेवारें प्रतिमाने पेटीमां नाखीने जहाजोवाला लोकोनी जहाजो अटकी रही हती ते देवतायें देव प्रयोगथी काहाडी आपी. अने तेमने पेटी सोंपीने कह्युं के आ पेटीमां श्रीदेवाधिदेवनी प्रतिमा छे ते तमे वीतजय पाटणमां जइने उदाइ राजाने आपजो. तेवारें जहाजना लोकोये ते पेटी लावीने उदाइराजानी सज्ञामां मूकीने कह्युं के आ श्रीदेवाधिदेवनी प्रतिमा छे तमोने कोइ देवतायें मोकली छे ते ल्यो. तेवारें राजायें जाण्युं जे देवाधिदेव तो ब्रह्मानुं नाम छे माटे ब्रह्मानुं नाम लइने उघाडवा लाग्या तो पण उघडी नही. एमज वली विष्णुना नामथी पण उघडी नही, महेश्वरना नामथी पण उघडी नही, राजाने जोजननी वेला वीती गइ पण पेटी उघडी नही. तेवारें राजानी राणी प्रजावती बोली जे " देवाधिदेव श्रीअरिहंत वीतराग देव होय तो पेटी उघडजो " एवुं कहेवाथी पेटी उघडी पडी तेमांथी प्रतिमा निकली ते लइ देरासरमां थापन करी तेने प्रजावती राणी श्राविका छे ते नित्य पूजे छे एक दिवस प्रजावती राणीयें पूजाना श्वेतवस्त्र दासीना हाथे मगाव्या दासीए लावी आप्या पण राणीयें पोतानी दृष्टीनी भ्रमताथी लाल वस्त्र जाण्या, तेथी दासी साथे लडवा लागी पण थोडी वार पछी वली तेज वस्त्रने श्वेत दीठा तेवारें जाण्युं जे हवे महारुं आ

युष्य शेष ठ महीनानुं रह्युं छे ते माटे राजानें जइ कह्युं के मने आज्ञा आपो तो हुं दीक्षा लेउं राजा बोल्यो तुं देवलोक जाय तेवारें अने महारे कष्टनी वेला आवे तेवारें आवी सांनिध्य करवानुं कबुल करे तो आज्ञा आपुं. ते वात प्रजावतीयें मानी पछी राजायें आज्ञा आपी. प्रजावतीयें दीक्षा लीधी,संयम पाली आयुष्य पूरण करी देवलोक गइ. तिहांथी आवी योगीनुं रूप करीने राजाने अमृतफल देखाडी जंगलमां लइगइ तिहां घणा योगीयो बेठा हता ते राजाने मारवा उठ्या राजायें बीक पामीने देवताने याद कर्यो तेवारें देवे आवी राजाने तिहांथी उपाडी साधुउ पासे मूक्यो,राजायें जाण्युं जगतमां खरा आधारजूततो एज छे.पछी तेमनी पासेथी श्रावकना व्रत लइ श्रावक थयो. हवे पूर्वली श्रीवर्द्धमान स्वामीनी प्रतिमाने प्रजावती राणी दीक्षा लेती वखते देवदत्ता दासीने पूजवालुं कही गइ हती. ते प्रमाणे ते दासी नित्य प्रत्यें पूजा करे छे. एक दिवस कोइ गंधार नामे श्रावक सर्व गामोना देरासर वांदवाने निकल्यो छे ते वीतजय पाटण आव्यो, तेणे ते प्रतिमाने पूजी, तिहां ते गंधार श्रावक अजारी थयो तेनी देवदत्ता दासीयें चाकरी करी तेथी श्रावकने रोग मटी गयो अने निरोगी थयो तेणे उपकार करवावाली देवदत्ता दासीने बे गोलीउ आपीने कह्युं के आ बे गोलीमांथी एक गोली खावाथी महास्वरूपवाली थइश अने बीजी गोली खावाथी जे मनमां चाहीश ते पुरुष वश थइ जाशे, एवुं कहीने गंधार श्रावक जतो रह्यो पछी देवदत्तायें पहेली गोली खाधी तेथी दिव्य रूप थयुं तेणे करी सुवर्णगुलिका एवुं नाम दासीनुं पडी गयुं.वली बीजी गोली खाधी अने चंद्रप्रद्योतन राजा स्त्रीयोनो लोलुपी छे तेने मनमां चाहीने धार्यो जे मारो चंद्रप्रद्योतन राजा जरतार होजो तेवारें गुटिकाना अधिष्ठायिक देवे उज्जयणीमां आवी चंद्रप्रद्योतन राजानी आगल

दासीनुं रूप वर्णन करी राजाने दासीउपर रागी करी गयो,पछी राजा अनलगिरि हाथीनी ऊ पर स्वारी करीने तिहां गयो, तिहां दासीने बोलावी, तेवारें दासी बोली, हुंतो प्रतिमा विना आवुं नही तेवारें चंद्रप्रद्योतन राजा फरी पाछो उज्जयणीयें आवीने ते प्रतिमा सरखी बीजी प्रतिमा करावी तेने लइने वली वीतजय पाटण जइने ते नवी प्रतिमा तिहां राखीने देवें दीधेली प्रतिमाने दासीसहित लइने उज्जयणीयें चाल्यो आव्यो. हवे प्रजातें उदायी राजायें पोताना हाथीउंना मद उतरी गया देखीने जाण्युं जे अनलगिरि हाथीनी उपर चडीने चंद्र प्रद्योतन राजा आव्यो हतो; ते वली सुवर्णगुलिका दासी अने प्रतिमा लइने जतो रह्यो. एवुं जाणीने क्रोधसहित दश मुगुटबद्ध राजाउंने साथें लइने उज्जयणी नगरी सहामुं चाल्यो मार्गमां जेसलमेर ब्रह्मसर पासें आव्यो, पण मार्गमां पाणी पीवाने मले नही तेथी विलखो थयो थको राजायें चिंतापूर्वक प्रभावती देवीने याद कर्यो. तेवारें तेणें आवीने तिहां अखूट पाणी करी दीधुं ते स्थानकें पुष्करज प्रमुख घणा तलावो अखूट पाणी वाला थयां. एवीरीतें उदायिराजए सेना लइने उज्जयणीनी सीमामां आवीने डेरा दीधा अने चंद्रप्रद्योतन उपर दूत मोकली कहेवराव्युं के दासी पछी नही आपे तो भले तुं राखजे परंतु अमारी प्रतिमाजी अमोने पाछी आप. एवी मागणी करी; पण चंद्रप्रद्योतन राजायें प्रतिमाजी दीधी नही. अने चौद बीजा मुगुटबद्ध राजा साथे लइने उदायी राजाने सामुं लडवा आव्यो; तेवारें तिहां अनलगिरि हाथी विना लडाइ करवानो ठेराव कर्यो, तोपण चंद्रप्रद्योतन प्रतिज्ञा तोडीने अनलगिरि हाथी उपर चडीने संग्राममां आव्यो; पछी मांहोमांहे युद्ध करता चंद्रप्रद्योतन हारी गयो. तेने अनलगिरि हाथी उपरथी उतारी नीचे नाखी महारी दासीनो भरतार चंद्रप्र

घोतन छे एवीरीतनो मांज तेनी ललाटमां देइने उदायीराजा प्रतिमा लेवा लाग्यो तो प्रतिमा तिहांथी उठे नही. एटलामां आकाशवाणी थइ जे, प्रतिमा लइ जासो नही, कारणके वीत जय नगरमां धूलनो कोट पडवावालो छे. तेवारें प्रतिमाने तिहांज राखी पोतें चंद्रप्रद्योतनने बांधी लइने चालतो थयो. मार्गमां पंजुसण पर्व आव्या. उदायीराजायें तिहां पडाव कर्यो, पंजुसण कर्या, अठाइ महोत्सव कर्या, पोते उपवास कर्यो रसोइ करनाराउने कह्युं के चंद्रप्र द्योतनने जे रुचे ते रसोइ करी जमाडजो. एवुं कहीने उदायिराजा पोतानी जिनपूजादिक करणीमां प्रवर्त्त थइ गयो; रसोइ करनारें चंद्रप्रद्योतनने पूछ्युं के आपना सारु केवी रसोइ बनावुं? चंद्रप्रद्योतन बोल्यो जे उदायि कहे ते बनावो, रसोइयें कह्युं तेमणे तो आज पंजु सण पर्व छे माटे उपवास कर्यो छे तें सांजली चंद्रप्रद्योतने विचार्युं जे आज एणे मने जहेर आपवानो विचार राख्यो छे तेमाटे जूदी जूदी रसोइ करावे छे. एवा जयथी बोल्यो जे हुं पण आज उपवास करीश; उदायी राजा अमारो साधर्मी जाइ छे, अमेपण एज धर्म पालीये छैयें. एवुं रसोइ करनारे जइ उदायी राजाने कह्युं तेवारें उदायीयें जाण्युं जे ए धूर्त्ततायी बोल्यो छे खरो तो पण महारोतो साधर्मी थयो. माटे एने खमाव्या विना पडिक्कमणुं करवुं सूजे नही. एवुं जाणी चंद्रप्रद्योतनने बंदीखानामांथी कहाडावी पोतानी पासें बोलावी तेना ललाटे सोनानो पट्ट बंधावी खमतखामणा करी सत्कार आपीने पाछो अयवंती नगरीयें मोकली दीधो. एवी रीतें बीजा जव्यजीवोयें पण उदायी राजानी पेरें खमाववुं; क्रोधनो त्याग करवो के जे थकी आराधकपणुं थाय ॥ वली जो अपराध करीने खमावे नही तो अनर्थनी वृद्धि थाय. तेनी उपर दृष्टांत कहे छे. एक गाममां कोइक कुंजार जांमानुं गाडुं जरीनें वेचवा आव्यो तेवारें तेनो

एक बलद लेवा सारु गामना धूर्त्त लोक बोल्या. जूउ आ एक बलदनी गाडी चाले छे. एवुं बीजा लोकोये पण सांजल्युं अने गाडावाले जाण्युं जे आ दुष्ट लोको मह्वारो एक बलद खोंसी लेवानो उपाय करे छे माटे ए प्रत्यक्ष चोर छे केमके मह्वारा तो बे बलद छे तेने छुपा वीने ए लोको एक बलद कहे छे; माटे कपटी छे. एमचिंतवीते कुंनार पोताना ठामडा वेचवामां एकचित्ते तत्पर थइ गयो तेवारें बलदीयाने धूर्त्त लइ गया पछी कुंनार जेवारें वासण वेची तयार थयो तेवारें जोवा मांम्युं तो एक बलद दीठो नही पछी घणी हांको मारी कें अरे मह्वारो बलद कोण लइ गयो ! ! तेने लोको कहेवा लाग्या के अमेतो एकज बलदनी गाडी सांजली हती. ते सांजली कुंन्मर घणुं डुःख करवा लाग्यो छेवट निराश थइने पोताने स्थानके जतो रह्यो पण क्रोध करीने सात वर्ष लगण खेत्रखलां बाल्यां, एकदा कोइ यक्षनी यात्रामां गामना लोको एकठा थया छे; ते वखत गामना लोकोये पडह वजाव्यो के जे अमारा धानना खेत्र बाले छे ते प्रगट थाउ. ते सांजली कुंनार पोतानो वेष बदलावीने बोल्यो के जेनी एक बलदनी गाडी तमे दीठी हती ते तमारो धान बाले छे. तेवारें लोकोयें जाण्युं जे एनी गाडीनो बलदीउ आपणा लोकोये लीधेलो छे ते वेष बदलावीने बोले छे; माटे हवे एनो बलदीउ आपी द्यो नही तो फरी धान बालशे; पछी कुंनारने बलदीयो आपीने सर्व लोकोयें अपराध खमाव्यो तेमाटे प्रथम बनता सुधी अपराधतो करवोज नही. एवीज टेव राखवी परंतु कदापि थइ जाय तो तरत खमतखामणा करी अपराधनी क्षमा मागी लेवी; के जेथी कोइ अनर्थ थाय नही. ए क्रोध उपर कुंनारनो दृष्टांत. ॥ १ ॥ ॥ हवे जे पंजुसणमां क्रोधनो त्याग नही करे तेने जेम सडेला पानने बाहेर कहाडीने फेंकी आपीयें छैयें तेनी पेठें

संघथी बाहेर कहाडी मूकवो, तेना उपर दृष्टांत कहे छे. एक खेडा गामनो रहेवासी कोइ ब्राह्मण हतो; ते खेतीनो धंधो करे; तेनो हल खेडवामां बलद हांकतां हांकतां गलीयो थइ बेशी गयो, तेने उगाडवानां घणा प्रयत्न कर्यां पराणानी मार आपी, पाटुयें मार्यो तो पण उठीने चाले नही; तेवारें ब्राह्मण रीसें धमधमतो ते बलदनी उपर खेत्रना ढेंफा नाखवा लाग्यो ते ढेंफा नाखतां नाखतां बलद आखो ढंकाइ गयो, कदर्थनाथी ते बलदनुं श्वास रुंधाणुं तेथी मरण पाम्यो ब्राह्मणने गोहत्यानुं पाप लाग्युं, ब्राह्मणे महापुरुषोनी पासेथी प्रायश्चित्त लेवा माग्युं कह्युं के गोहत्यानो दंम आपो, महापुरुषोयें कह्युं ताहारो क्रोध उतर्यो के नथी उतर्यो? ब्राह्मण बोल्यो हमणा बलदने देखुं तो मारी नाखुं. तेवारें महापुरुषोए कह्युं के आ पापीनें शो दंम आपीयें के जेथी ए शुद्ध थाय. एतो अशुद्ध छे. एवुं कही न्यात बाहार कहाडी मूक्यो. एवीरीतें साधुपण जे क्रोधने त्यागे नही तो तेनें संघ बाहार करी मूकवो ॥ हवे पोताथी अपराध थयो होय तो मृगावतीनी पेरें खमाववो. पोतानुं मन शुद्ध करीने मिच्छामिदुक्कडं देवो. ते कथा कहे छे. एक दिवस श्रीमहावीरस्वामी कोसंबी नगरी समोसर्या, तिहां चंद्र ने सूर्य बे मूल विमाने वांदवा आव्या, चंदनबाला, मृगावती प्रमुख तिहां बेठी हती; तेमां चंदनबाला तो सूर्य अस्त थतो जाणी तिहांथी उठी पोताने उपासरे आवी अने मृगावती तो जगवाननी देशनामां मोहित थइ थकी तिहांज बेशी रही, पछी सूर्य ने चंद्र जेवारें पोताने स्थानकें गया तेवारें अंधकार थइ रह्यो तिहां मृगावतीयें चंदनाने दीठी नही तेथी एकलीज जय पामती उपासरे आवी. तिहां इरियावहि पडिकमि चंदनबालाने नमती थकी, पगचंपी करती थकी कहेवा लागी के हे स्वामिनी? हुं रात्रनी एकली

इहां आवी एथी हुं अपराधणी थइ माटे आप महारो ए आपराध खमजो, तेने चंदनायें कह्युं हे नडे ? तूं उत्तम कुलनी उपनी छो माटे तारे एम न करवुं. मृगावतीयें कह्युं. हवे हुं एम केवारें पण करुं नही. एवुं कहेती वारंवार चंदनबालाने पगे लागती शुद्ध मनथी खमा वती थकी तत्पर रहेलीने केवलज्ञान उपजी गयुं अने चंदनाने तो चंपी करावतां निद्रा आवी गइ. एवामां अंधकारने विषे सर्प आवतो जाणीने मृगावतीयें चंदनानो हाथ उपाडीने संथारा उपर मूक्यो; तेवारें चंदना जागृत थइने पूछवा लागी के महारो हाथ कोणे उपाड्यो; तेने मृगावतीयें कह्युं सर्पनो संघटो थवाने लीधे में तमारो हाथ उंचो राख्यो; चंदनायें पूछ्युं. एवां अंधकारमां सर्प आवतो तमारा जाणवामां केवीरीतें आव्यो ? मृगावतीयें कह्युं आपना प्रतापथी ! चंदनायें कह्युं, शुं ! तमोने केवलज्ञान उपन्युं छे ? मृगावती बोली आपनी कृपाथी. तेवारें चंदनायें जाण्युं जे, अरे में केवलीनी आशातना करी. एवुं चिंतवीने वारंवार खमा वती खमावती मिछामिदुक्कडं देती देती; तेपण केवलज्ञान पामी ॥ एवीरीतें नव्यजीवोयें मिछामिदुक्कडं देवो. परंतु कुंनार अने चेलानी पेरे नही करवुं. ते कथा कहे छे. जेम एक लघु शिष्य हतो ते कुंनारनां नांमा तावडे सूके तेने कांकरा मारे; ते जोइ कुंनारें कह्युं हांमा म फोडो; तेवारें शिष्य बोल्यो " मिछामिदुक्कडं " ते सांनली कुंनारें जाण्युं जे हवे नांमा फोडशे नही. पण शिष्यतो फरीने तेवीज रीतें कांकराथी कुंनारनां नांमा फोडवा लाग्यो अने कुंनार नाकारो करे तेंने शिष्य वारंवार मिछामिदुक्कडं देवा लाग्यो; ते जोइ कुंनारें पण एक कांकरो लइ शिष्यना कानमां नाखीने कान मसल्यो, तेवारें शिष्य बोल्यो. अरे कान दुखे छे ते सांनली कुंनार बोल्यो. मिछामिदुक्कडं एवीरीतें वारंवार चेलो कहे; अने कुंनार मिछामि

डुक्कडं आपे माटे ए प्रकारें मिछामिडुक्कडं देवाथी कार्यसिद्धि न थाय, वारंवार पाप करवा. अने वारंवार मिछामिडुक्कडं देवो ते काममां न आवे. तो शुं करवुं? तोके सासु जमाइनी पेरें सर्व अलिया गलिया करवा; ते कथा कहे छे. एक वृद्ध स्त्री हती तेनी पासें घणुं द्रव्य हतुं परंतु पुत्र न हतो अने पोतें विधवा घणी लोजी अने कंजुस हती. धननो संग्रह करे पण पेटमां खाय नही तेने एक दीकरी हती तें कोइ कुलवान् छोकराने परणावी पण पोतें लोजी हती माटे जमाइने दायज़ो प्रमुख कांइ दीधुं नही. तेथी जमाइ कचवाणो,नाखुश थयो. होली दीवाली प्रमुख कोइ पर्व्व जमवा आव्यो नही; तेवारें लोको वृद्ध स्त्रीने कहेवा लाग्यां के अरे पापणी! आ तहारो एकज जमाइ छे तेनें पण जमाडती नथी! छोकरोतो ताहारे छे नही. तो तहारुं आ धन ते कोण खाशे! अने कोनें काम आवशे! तेवारें लौकिक रीती साचववा माटे जमाइने घणी मनवार करीने बोलाव्यो, अने कहेवराव्युं के हे जमाईजी आज तमे एकलाज पधारजो. ते सांजली जमाइना मित्रो कहेवा लाग्या के आज तुजने सासु बधुं द्रव्य आपीदेशे. पछी जमाइ सासुने घेर एकलो जमवा गयो, तेने सासुयें खीर पीरसी वली वाटकीमां रुनो पुंजडो नाखीने घृत पीरसवा आवी, वाटकी मांहेथी घृतनुं टीपुं टीपुं था लीमां पडे पण वधारे पडे नही. तेथी घणी देर लागी. सासुयें विचार्युं जे जमाइ हमणा नाकारो करशे; अने जमाइयें जाण्युं जे आ तो मने छगवा आवी छे. तेथी सासुनो हाथ प कडी वाटकीनुं महोडुं थालीमां उंधुं करी लीधुं अने सासुने कहेवा लाग्यो के जीजी घणुं थयुं हवे म नाखो; सासुयें जाण्युं जे, अरे वाटकीतो खाली थइ गइ, घीतो बधुं जमाइजी खाइ जाशे एतो ठीक थयुं नही माटे कांइ युक्ति करवी एम विचारीने जमाइने कहेवा लागी

के हे जमाइजी आजे तमारे अमारे रुसणुं ढे ते सर्व नांगो. माटे आपणे बे नेला बेसी जमीयें. एम कही जमाइनी नेली साथें जमवा बेठी पण जमाइनी तरफ थालीनुं नीचाण बाजु आवेलुं हतुं तेथी घी सर्वे जमाइ तरफ थइ गयुं हतुं. एवुं जाणीने सासु उलंनानुं मिस करीने आंगुली सुंघी पोतानी तरफ खेंचती जाय ने जमाइजीने कहेती जाय के तहारामां एटला वांक ढे के प्रथमतो तुं होली उपर नही आव्यो,बीजो दीवाली उपर नही आव्यो, त्रीजो अक्ष्यत्रीज उपर नही आव्यो, एवुं बोलती बोलती सर्व घृत पोतानी तरफ खेंची लीधुं तेवारें जमाइयें जाण्युं जे सासूतो घणी समजणवाली देखाय ढे. घीतो सर्व पोतानी तरफ खेंची लीधुं एवुं जाणी थालीमां हाथ फेरवीने बोल्यो, सासुजी ! जे थवानुं हतुं ते थयुं पण हवे तमारुं अने म्हारुं बेहुनुं मन एक करी ल्यो. अलिया गलिया आज पढी सर्व अपराध ॥ एवुं कही थाली उपाडीने घी खांम सहित सर्व खीर जमाइ पीगयो अने बोल्यो हवे आपणुं सर्व रुसणुं मटी गयुं माटे तमें खुशीमां रहेजो ॥ ॥ एवी रीतें धर्मार्थि जीवनें पण कोइ राग द्वेष उपज्यो होय ते सर्व खमाववो पण पंजुसणमां राग द्वेष राखवो नही मिच्छामिडुक्कडं देवो ॥ १ ॥ ॥ वली आ पंजुसण पर्वमां क्रोध, मान, माया अने लोन करवो नही एनी उपर अनेक दृष्टांत ढे पण पंजुसण पर्वने विषे गोचरीमां क्रोध, मान, माया अने लोन ए चार वाना सर्वथा न करवा तेनी उपर दृष्टांत कहेतो थको प्रथम क्रोधथी आहारादिक लेवा आश्रयी दृष्टांत कहे ढे. हस्तिकल्पनामा नगरमां एक साधु मासितपने पारणे गोचरी करवा माटे ब्राह्मणोमां कोइ मरण पामेलानुं जमण थयुं ढे तिहां गयो, तिहां ब्राह्मणो घेवर खाय ढे साधु घणो वखत उनो रह्यो पण कोइयें साधुने दीधुं नही. तेवारें साधु क्रोध करीने

बोल्यो जे आ आजना जमणमां नही आपो तो फरी जमण थाशे तेवारें आपजो. एवुं कही चालतो थयो, साधुनुं बोलवुं जुठुं थाय नही. एटलामां बीजा महीनाने पारणे फरी पण कोइक ब्राह्मण मरण पाम्यो. तेना जमणमां वली साधु पण पारणुं करवा माटे गोचरीयें आव्यो. परंतु कोइयें वहोराव्युं नही, तेवारें वली क्रोधथी बोल्यो, त्रीजाना जमणमां वहोरावजो, एवुं कही जतो रह्यो. एम वली पण त्रीजा महीनामां कोइ मरण पाम्यो तेना जमणमां पण वहोराव्युं नही. तेवारें साधु क्रोधथी चोथाना जमणमां वहोरववानुं बोल्यो. ते शब्द कोइ मोकरो पाल उपर बेठो हतो तेना काने पड्यो. तेवारें मोशायें घरना धणीने कह्युं के आ साधुने घेवर आपीने खुसी करो नही तो वली पण कोइ मरशे. एवुं समजी साधुने बोलावी घेवर वहोराव्यो जेम ए साधुयें क्रोधथी घेवर वहोर्यो तेवीरीतें कोइ पण साधुयें वहोरवुं नही ॥ ए क्रोधपिंड उपर गेवरीया साधुनो दृष्टांत ॥ १ ॥ ॥ हवे मानपिंड उपर सेवैया साधुनो दृष्टांत कहे छे. कोशलदेशमां गिरिपुष्पनामा नगरने विषे एक सेवोनुं पर्व आव्युं तेवारें युवान साधु एकठा मिल्या तेमां एक साधु बोल्यो आजतो सेवैया पर्व छे माटे सेवो लावीशुं तेमां शुं वधाइ छे! परंतु काले प्रजातें खांड घी सहित जे सेवुं लावीने सर्वे साधुउने जमाडे ते लब्धिवान् जाणवो. तेवारें वली एक शिष्य अभिमान करीने बोल्यो जे हुं काले सेवो लइ आवीने सर्व साधुउने जमाडुं. तो महारुं नाम फलाणुं ते खरे खरुं करी जाणजो एवो अभिमान करी बीजे दिवसें महोटा महोटा पात्रा जोलीमां नाखीने गोचरी गयो. तिहां एक शेठने घेर सेवो देखीने मागवा लाग्यो. के शेठाणीजी अमने सेवो वहोराव. पण ते शेठाणी लोभणी हती माटे बोली, अरे जा जा, दूर जा, तुने सेवो नही मले, ए प्रमाणे ललकारीने का

हाडी मूक्यो. तेवारें चेलो बोल्यो तुं जोतो खरी के हुं जरुर ताहारी पासेंथीज सेवो लइ जाउं तो म्हारुं नाम साधु जाणजे. कोइ पण रीतें अवश्य लइ जइश. तेवारें शेठाणी बोली. जो तुं सेवो लइ जाय तो म्हारुं नाक गयुं एम जाणजे परंतु म्हारुं नाक होयतो तुने सेवो लइ जवा देइश नही, ते सांभली साधु तिहांथी निकली आगल जइ कोइने पूछ्युं के आ घर कोनुं छे? एना घरनो मालक किहां छे? तेवारें कोइए कह्युं, ए देवदत्तनुं घर छे, ते हमणा पंचाय तीमां बेठो छे, तेवारें ते साधु तिहां गयो अने कहेवा लाग्यो अरे पंचातीयो तमारामां देव दत्त कोण छे? ते बोल्या शुं काम छे? साधुयें कह्युं तेनी पासेथी कांइ मागवुं छे, पंचातीयो बोल्या अरे ए कृपण पासेथी शुं मागवा चाहे छे? ताहारें मागवुं होयतो अमारी पासेथी माग के जेथी ताहारुं कार्य सरे. तेवारें देवदत्त बोल्यो हे साधुजी जे तमे मागशो ते हुं आपीश. तेने चेलायें कह्युं. हे देवदत्त जेवीरीतें छ जणा स्त्रीयोने वश हता, तेवीरीतें जो तुं स्त्रीने वश न होय तो हुं कहुं छुं के तहारी पासेथी कांइ मागुं. ते सांभली पंच बोल्या; ते छ जणा कोण हता? जे स्त्रीयोने वश थया हता तेनी कथा कहो. तेवारें चेलो बोल्यो. एक कुलपुत्र हतो ते परणीने पछी स्त्रीने वश थयो, प्रभाते भूख लागी स्त्रीनी पासेथी खावा माग्युं, स्त्री ढोलीया उपर बेठी थकीज कहेवा लागी के जो तुं भुख्यो होय तो चूला मांथी राख काहाडी बाहेर नाख, इंधण लाव, चूलामां अग्नी बाल, माथे हांडी चडाव, तेमां पाणी नाख, कोठमांथी चावल लावी तेने सोधी साफ करीने हांडीमां नांखी पचावीने त यार कर; तयार थया पछी मने हांक मारजे तो हुं उठीने पीरसी आपीश. ए वात सांभली कुलपुत्र बोल्यो तुं कहे छे ते सत्य छे. एम कही तहत्ति करीने पूर्वोक्त सर्व काम करवा ला

ल्यो. एम नित्य करतो जाय. प्रजातना नित्य चूलानी राख काहाडवी पडे तेने लीधे आंगु
लीउं धोली पडी गइ; लोकोये तेनुं श्वेतांगुली एवुं नाम आप्युं. तेम हे देवदत्त तुं पण स्त्रीने
वश न होय तो हुं याचना करुं.तेवारें देवदत्त बोल्यो हुं स्त्रीने वश नथी ॥ वली बीजा युवान
पुरुषें पूछ्युं. आ तो.तें छमांथी एक वार्त्ता कही पण बीजी पांच वार्त्ता संजलाव. साधु बो
ल्यो एक कुलपुत्र हतो ते स्त्रीने वश थयो तेने स्त्री ढोलीया उपर बेठी बेठी कहेवा लागी के हुं
पाणी नही लावीश माटे तुं जइ तलाव उपरथी पाणी जरी लाव तो रोटला हुं बनावी आ
पीश. तेपण स्त्रीने वश थयो थको लोकोनी लाजथी, जेवारें पाछली एक पहोर रात्री रहे तेवारें
नित्य माथे घडो लइ पाणी जरी लइ आववा लाग्यो. रात्रीना बगला प्रमुख जनावर बीक
पामीने तलाव उपरथी उडवा लागे तेनो गडबडाट थाय तेथी लोकोये जाण्युं; आ शुं नित्य
उपद्रव थाय छे! बगला केम उडे छे! पछी शोध कराव्यो तेवारें जाणवामां आव्युं जे कुल
पुत्र पाणी जरवा जाय छे तेथी बगलाप्रमुख उडे छे. पछी लोकोए बगोड्डो एवुं नाम पाडी
दीधुं माटे साधुये कह्युं जो तुं पण एवो न होय तो हुं जाचूं. देवदत्तें कह्युं हुं एवो नथी ॥ ते
वारें वली बीजा युवाने पूछ्युं त्रीजानी कथा कहे. साधु बोल्यो एक कुलपुत्र स्त्री परणीने तेने
वश थयो; पछी नित्य प्रजातें उठी हाथ जोडी स्त्रीने कहे के हे स्त्री हुं शुं काम करुं? स्त्री
बोली सर्व रसोइ कर; तेवारें तेणे रसोइ तयार करी वली स्त्रीने कहेवा लाग्यो; हवे शुं करुं?
स्त्री बोली गादी बिछावीने पाटलो मूक; ते पण कर्युं; वली पूछ्युं हवे शुं करुं? स्त्री बोली म
हारी बाह पकडीने मने गादी उपर बेसाड, तेणे बाह पकडीने गादी उपर बेसाडी वली
पूछ्युं हवे शुं करुं? स्त्रीयें कह्युं रसोइ पीरस; रसोइ पीरसीने वली पूछ्युं हवे शुं करुं? स्त्री

बोली माखीओ उमाड, माखीयो उडाडीने वली पूछ्युं हवे शुं करुं? स्त्री बोली मलमूत्र परठी आव, ते परठी आवीने फरी बोल्यो हवे शुं करुं? स्त्री बोली हुं सुइ रहुं छुं तुं म्हारा पग दाब चंपी कर, तेवारें पग दाबवा लाग्यो ते जोइ लोक बोल्या; ए स्त्रीकिंकर छे. तेम हे देवदत्त? तुं पण तेना जेवो होय तो हुं याचना करुं नही देवदत्तें कह्युं हुं एवो नथी ॥ फरी चोथी कथा पूछवाथी साधु कहेवा लाग्यो. एक कुलपुत्र स्त्रीने वश थइने तेना वस्त्रप्रमुख धोवानुं कार्य नित्य करे तेनुं लोकोये तीर्थस्नाता एवुं नाम दीधुं एमज पांचमानुं नाम गद्धापरखी जाणवुं ॥ हवे छ ठ्ठानी कथा कहे छे. एक कुलपुत्र स्त्रीने वश थयो, तेने पुत्र थयो. स्त्री कहे छोकराने हंगावी लाव ते नित्य छोकरानें हंगावे, स्नान करावे, ते देखी लोकोये हदनीयो एवुं नाम आप्युं. माटे एनी पेरें तुं जो स्त्रीने वश न होय तो तहारी पासें याचना करुं. देवदत्त बोल्यो हुं तेवो नथी तमे सुखे मागो ॥ तेवारें बीजा सर्व पंचायती लोक बोल्या. हे चेलाजी, स्त्रीने वश थयेलाना सर्व दोष एमां छे. एवुं हास्यपूर्वक बोल्यां. तेवारें देवदत्त बोल्यो हे भगवान्! एतो म्हारी हासी करे छे. आपने जे चाहना होय ते सुखे मागो. तेवारें चेलो बोल्यो घृत अने खांड सहित सेवो वहोरावो. देवदत्तें कह्युं चालो हुं आपने वहोरावुं. एवुं कही तिहांथी चाल्यो. अने साधुनें साथें लइ घेर आव्यो. तेने रस्तामां साधुयें कह्युं के तहारी स्त्रीतो म्हारी साथें लडी छे. तेने देवदत्तें कह्युं तमे घरनी बाहेर उभा रहेजो हुं बोलावुं तेवारें आवजो. पछी साधु बाहेर उभो रह्यो; देवदत्त घरमां जइने स्त्रीने कहेवा लाग्यो; आज ब्राह्मणोने जमवानुं कह्युं छे, ते जमवा आवशे कांइ घरमां रांधेलुं अन्न छे? ते बोली सेवो तयार छे. देवदत्तें जाण्युं ए स्त्री छतां तो देवाय नही. एवुं चिंतवीने स्त्रीने कह्युं के नीसरणी चढीने उपरथी घृत गोल लइ

आवो. ते स्त्री घृत गोळ लेवा सारु नीसरणी उपर चडी ते वेलायें साधुने बोलाव्यो. साधु बोल्यो देवदत्त आ नीसरणी जरा अलगी लइ ल्यो तो सारीरीतें वहोरीश, देवदत्ते नीसरणी दूर करी साधुयें रुडी रीतथी सेवों अने घृत गोळना पात्रा नरी लीधां; स्त्री उपर उनी उनी हांको करवा लागी, के अरे एने कां वहोरावे छे; आ मुंमो छे एवीरीतें बकवाद करवा लागी पण जोर चाल्युं नही साधु पण पात्रा नरीने निकळतो थको नाक उपर आंगुली फेरवीने स्त्रीने जणाव्युं के तहारुं नाक कपाइ गयुं. एवी संज्ञा करी उपासरे आवीने सर्व साधुयोने जमा ड्या एम जे रीतें ए साधुयें अनिमान करीने आहार लीधो ते रीतें बीजा साधुयें आहार लेवो नही. ए कथाउ जो विस्तारें जोवी होयतो पिंमनिर्युक्तिनी टीकाथी जोइ लेवी आहीं संक्षेप मात्र लखेली छे. ए मानपिंम उपर दृष्टांत कह्यो ॥ हवे मायापिंम उपर आषाढनूतिनो दृष्टांत कहे छे; जेणे राजगृही नगरीमां नटवाना घेरथी रूपपरावर्त्तन करीने पांच लाडु वहोर्‍या छे ए कथा प्रसिद्ध छे माटे लखी नथी तेवीरीतें पण साधुयें नही वोहोरवुं. ए मायापिंम उपर दृष्टांत कह्यो ॥ ३ ॥ ॥ हवे लोनपिंम उपर सिंहकेसरीया साधुनो दृष्टांत कहे छे. चंपानगरीमां उत्सवना दिवसें एक साधुयें मासखमणने पारणे अनिग्रह लीधो के महारे आज सिंहकेसरीया मोदक वहोरवा. पछी घरघर नम्यो पण लाडवा कोइ आपे नही. अने बीजुं अन्न तो साधु पण ले नही. पछी लाडु नही मळवाथी मुनिनुं मन संक्लिष्ट थइ गयुं. ते अर्द्ध रात्री लगण घरघर धर्मलान देतो फर्‍यो. लोनना वशथी रात्रनी खबर पण रही नही. रात्रीयें कोइएक श्रावकने घेर जइ धर्मलान दीधो. ते श्रावक महागंनीर छे. मातापितासमान छे तेणे रात्रनो धर्मलान सांनळीने विचार्युं जे कोइ कर्मना वशथी साधुनुं मन मगमग थइ गयुं छे.

एवुं जाणीने तिहांथी उठयो जइने मुनिने वंदना करी जोयुं. तो साधु महातपस्वी देखाय छे. तेने श्रावकें पूछयुं महाराज आपने शुं जोइयें छैयें ? मुनियें कह्युं सिंहकेसरीया मोदक खपे छे ! श्रावकें कह्युं सुखे ल्यो, अमारे घेर घणा छे निर्दोष छे. एवुं कहीने सिंहकेसरीया मोदकनो थाल नरी लाव्यो. अने मुनिने वहोराव्या. तेवारें मुनिनुं मन ठेकाणे आव्युं श्रावक बोल्यो स्वामी पुरिमार्द्धना पच्चख्खाणनो वखत आव्यो के नही ? मुनियें उपदेश आपी आकाशमां जोयुं तो निर्मल तारा, नक्षत्रनी श्रेणिसहित चंद्रमाने जोइ चित्त ठेकाणे आवी गयुं तेवारें विचार्युं जे धिक्कार छे ! में आ शुं कर्युं ! जे हुं रात्रीनो गोचरी करवा निकल्यो ! महारो साधुनो आचार किहां गयो ! एम पश्चात्ताप करतो थको नगरनी बाहेर आवीने सूत्रोक्तविधिसहित मोदक परठवतो थको विचारे छे के अरे कर्मने जीतवुं घणुं मुसकील छे ! अरे में आ खोटुं काम कर्युं धर्मनी निंदा करावी, एवीरीतें पश्चात्ताप करतो करतो शुक्लध्यान ध्यावतो थको क्षपकश्रेणी चडीने केवलज्ञान पाम्यो. इहां परमार्थ ए छे के जेम एणे लोजना वशथी सिंहकेसरीया मोदक वहोर्या तेम बीजा साधुयें लेवा नही. एवां इहां घणा दृष्टांतो छे पण अमे केटला ल खीयें. ए लोजपिंड उपर दृष्टांत कह्यो ॥ ४ ॥ ए पर्वमां सर्व प्रकारें क्रोधादिक नही करवा ॥ हवे वर्षादमां पंजुसण करीने रहेला साधु साध्वीउयें जीवादिकनी उत्पत्तिने लीधे त्रण उपा सरा राखवा तेमां जे उपासरांमां पोतें रहे ते उपासरानें तो प्रतिदिवस त्रणवार पडिलेहण क रवुं पूंजवो अने बीजा बे उपासराने एकवार पूंजवा पडिलेहण करवां ए पूंजवा पडिलेहवानी पच्चीसमी समाचारी जाणवी ॥२५॥ ॥ वर्षादमां रहेला साधु साध्वीउने पोतानी मरजीमां आवे तिहां जवुं होयतो गुरुने पूछीने जावुं. दिशि बतावीने जावुं. शिष्य पूछे छे के शा वास्ते

पूछवानुं प्रयोजन कह्युं छे? गुरु कहे छे, साधु जे छे ते चोमासा विना शेषकालमां तो सामान्य प्रकारना तप करे छे परंतु चोमासाना कालमां घणा प्रकारना विशेष तप करे छे माटे कोइ तपस्वी दुर्बल होय अने किहां मुर्छा खाइ पडीजाय तो; जे दिशायें गयो होय ते दिशायें आचार्य याद राखीने निगाह करावे, खबर काढावे, शोध करावे जे एटलो वखत केम लाग्यो तेमाटे खबर करावे ते सारु आचार्यने पूछीने बाहार जवुं जोइयें ॥ ६१ ॥ ए प्रतिजागरण करवानी छवीसमी समाचारी जाणवी ॥ २६ ॥ ॥ वर्षाकालमां चोमासुं रहेला साधु साध्वीउने औषध प्रमुख कामने लीधे वैद्यनी पासें जवुं पडे तो चार योजन तथा पांच योजनपर्यंत पोताना गामथी जे गाम दूर होय ते गामे जवुं एटले सोल तथा वीस कोश दूर जइने ते गाममांथी औषध लइ पाछो फरी आवीने जो पोते रहेला गामनी मांहे उपासरामां दिवस छतां आवी न शकाय तो तेज गामनी बाहेर आवी रहेवुं पण जे गाममां औषधादिक लेवा गया ते गाममां रात्रे रहेवुं नही. अथवा दिवस छतां गामनी बाहेर न पोहोची शकाय तो मार्गमां रहेवुं ॥ ६२ ॥ ए औषधादिक लेवा माटे चारथी पांच योजन लगें जवानी सत्तावीसमी समाचारी जाणवी ॥ २७ ॥ ॥ इत्यादिक संवत्सरीनो थविरकल्प जेवीरीतें कल्पसूत्रमां कह्यो छे तेवी विधिथी करे, ज्ञान, दर्शन अने चारित्रनो मार्ग जेरीतें जगवाने कह्यो छे तेम करे, जला प्रकारथी मन, वचन अने कायायें करी फरशे, अतिचाररहित पाले, विधिसहित शोजा करी दीपावे, जाव जीव सुधी आराधे, कांठे पहोचाडे, लोकोमां कीर्त्ति करे, आराधीने आज्ञासहित पालीने केटलाएक निर्ग्रंथ तो तिहिज जवमां सीजे, तत्त्वने जाणी, कर्मोथी रहित थइ, सर्वसंतापरहित थइने सर्व दुःखथी छूटे, मोक्ष जाय, केटलाएक त्रीजे

नवें सीजे, यावत् मोक्ष जाय परंतु सात आठ नवतो उलंघे नही तेमज केटलाएक सातमे तथा आठमे नवें. तो अवश्य मोक्ष जाय ॥ ६३ ॥ ए चोमासानी मर्यादा पाले ते साधुने जे फल थाय तेनी अठावीसमी समाचारी जाणवी ॥ २७ ॥ ॥ ते कालने विषे, ते समयने विषे श्रमणजगवंत श्रीमहावीर स्वामी राजगृही नगरीयें गुणशील नामे चैत्यने विषे इहां जे बागमां यक्षनुं देहरुं होय ते बागने चैत्य कहीयें ते चैत्यने विषे घणा साधुउमां, घणी साध्वीउमां, घणा श्रावकोमां, घणी श्राविकाउमां, घणा देवोमां, घणी देवीउमां बेठा थका अर्थात् जगवान् बार परषदामां बेठा थका एवां वचने करीने कहे ए कल्पने पालवानुं फल बतावे एवो प्ररूपे, ए पंजुसणकल्पनामा अध्ययन दशाश्रुतस्कंधनो आठमो अध्ययन, ते अर्थसहित, हेतुसहित, कारणसहित, सूत्रसहित, अर्थसहित, सूत्रार्थसहित, दृष्टांतसहित, वारंवार उपदेश करीने देखाडे एवो छे. जंबू (मे के०) हुं आ सूत्र जद्रबाहु स्वामीयें रच्युं छे दशाश्रुतस्कंधमां आठमो अध्ययन करीने रच्यो छे पण वाचना सर्व सुधर्मस्वामी अने जंबुस्वामीनी जाणवी ॥ ६४ ॥ ग्रंथाग्रंथ ॥ १२१६॥ इति नवमं व्याख्यानम् ॥९॥ ॥ इति श्रीकल्पसूत्रस्य बालावबोधिनी जाषा समाप्ता ॥ एं कल्पसूत्र दशाश्रुतस्कंधसूत्रनो आठमो अध्ययन छे, तिहां पण एनुं सहिनाण छे ॥ सर्वेषु सूत्रेषु वरप्रशस्ति, र्यस्यास्ति सर्वेष्वतिमुख्यता च ॥ तत्कल्पसूत्रं मम कल्पतुल्यं, चारित्रकार्ये शुनशुकृत्सदास्तु ॥१॥ सौधर्मपट्टे सुपरंपरायां, सूरीश्वरा ये च बना बजूवुः ॥ वंदे सदा तान् वरसूत्रदान्वा, श्रीरत्नसूरीन्सुमुनींस्तथापि ॥ २ ॥ श्रीमत्क्षमादिगुणवान् यशवाञ्शमीशो, जातः क्षमागणधरः प्रवराम्नकर्त्ता ॥ चित्रा लता चरणसेवनतत्पराजूत् तस्यापि तां हृदि गुरुः स च नो दधार ॥३॥ देवेंद्रविजयो वंद्यः, तच्छिष्यो बहुकीर्त्तिनाक् ॥ कल्याणवि

जयस्तस्य, प्रमोदश्च प्रमोदयुक् ॥ ४ ॥ सौधर्मस्वामिनो गछे, संति राजेंद्रसूरयः ॥ तेनेयं कल्पसूत्रस्य, वार्त्ता बालावबोधिनी ॥ ५ ॥ कृता सूत्रपदैर्युक्ता, सर्वसारांशसंयुता ॥ सायोगोघहनं येन, न कृतं तस्य हेतवे ॥६॥ अब्दे खवेदनंदैके, (१९४०) माधवे च सितेतरे ॥ पक्षे दिने द्वितीयायां, मंगले लिखिता. त्वियम् ॥७॥ इति श्रीराजेंद्रसूरिविरचितायां प्राकृतभाषायां बालावबोधिनी टीका कल्पसूत्रस्य समाप्ता ॥ श्रीरस्तु, कल्याणमस्तु ॥ संवत् १९४० ना वैशाखवदि बीजना दिवसें बालावबोधिनी टीका संपूर्ण थई ॥ जांबुवा नगरे ॥

॥ भट्टारक श्रीराजेंद्रसूरिकृता श्रीकल्पसूत्रस्य बालावबोधिनी वार्त्ता समाप्ता ॥

आगलथी आश्रय आपनार साहेबोनां स्मरण करवा योग्य नामो नीचे लखीयें छैयें.

गामश्री वागरानां श्रावकोनां नाम

लेनारनुं नाम. प्रत. संख्या.

शा. मोतीजी गजाजी ओसवाल एमनी दुकान कोंकणदेसना गामश्री पेनमां शा. गजाजी केसवजीना नामथी चाले छे. १२१

शा. नूताजी, केशाजी, कुशनाजी, पेराजजी, धूमाजी, ए पांचे भाइ शेठ खुसालजीना सुपुत्र छे एमनी दुकान करणाटक देसमां गामश्री निडगुंदीमां छे. १११

शा. वन्नाजी कस्तूरचंद ते शेठ चिमनाजी हुकुमाजीना सुपुत्र छे एमनी कोलापुरमां दुकान छे. १००

शा. खुमाजी, देवराजजी, कुशनाजी, नथाजी, नरसिंघजी, ए पांचे भाइ शेठ मनरूपजीना सुपुत्र छे एमनी गामश्री बिद्दाडीमां दुकान छे. १००

शा. दानाजी, खुमाजी, हुकमाजी, वन्नाजी, ए चारे भाइ शेठ सवाजीना सुपुत्र छे एमनी दुकान गामश्री बालाजीना देवल गाममां छे. १००

शा. मनाजी, जेठाजी, सदाजी, ए त्रणे भाइ शेठ मोटाजीना सुपुत्र छे एमनी दुकान तालिकोटमां छे. ७५

शा. राजाजी, मोतीजी, कुशनाजी, धन्नाजी, लखमाजी, ए पांचे भाइ शेठ दरगाजीना सुपुत्र एमनी दुकान तालिकोटमां छे. ५१

शा. नरसिंहजी ते शेठ मोटाजीनासुपुत्रछे ४१

शा. चुनीलालजी ते शेठ देवराजजीना सुपुत्र छे जे गामश्री सीरोइवालाने नामे ओलखाय छे एमनी दुकान पेनबंदरमां छे. ४१

कस्तुरजी, गेनाजी, चिमनाजी, लखमाजी ए चारे भाइ ते शेठ चेलाजीना सुपुत्र छे एमनी दुकान गामश्री तालिकोटमां छे. ३५

शा. राजाजी, प्रतापजी, सरूपजी, ए त्र

ऐ नाइ ते शेठ सदाजीना सुपुत्र छे एमनी डुकान बिल्लाडीमां छे. ३५

शा. मनाजी, जुघाजी, नरसिंघजी, ए त्रणे नाइ ते शेठ नगवानजीना सुपुत्र छे तथा शा. धूलाजी ते शेठ पन्नाजीना सुपुत्र छे ए बे काकाइ नाइ छे एमनी डुकान गामश्री तालिकोटमां छे. ५०

शा. रतनाजी, मथुराजी, चेनाजी, हंसाजी ए चार नाइ ते शेठ अमरिंगजीना सुपुत्र छे एमनी डुकान गामश्री बिल्लाडीमां छे. १५

शा. जिवाजी ते शेठ धूलाजीना सुपुत्र छे एमनी डुकान चितोरडुर्गमां छे. २५

शा. खुशालजी, जेसाजी, ए बे नाइ ते शेठ पेथाजीना सुपुत्र थाय एमनी डुकान दक्षणदेशनां गामश्री विजयपुरमां छे. ७

शा. खुमाजी, नरसिंघजी, लालाजी मेनाजी, मोतीजी ए पांच नाइ ते शेठ पन्नाजीना सुपुत्र छे एमनी डुकान धारवाडमां छे. ५

शा. मथुराजी, प्रेमाजी ए बे नाइ ते शेठ गुलाबजीना सुपुत्र थाय एमनी डुकान चितोरडुर्गमां छे. ५

शा. मगाजी ते शेठ चेलाजीना सुपुत्र ५

खुमाजी ते शेठ नूताजीना सुपुत्र थाय. २

शा. हंसाजी ते शेठ लुंबाजीना सुपुत्र. २

शा. मोतीजी ते शेठ डुलाजीना सुपुत्र. १

शा. फुशाजी ते शेठ धूमाजीना सुपुत्र. २

बाइ नाजु शा. मोतीजीनी घरवाली. १

शा. गोमाजी ते शेठ जिवाजीना सुपुत्र. १

गामश्री सीयांणाना श्रावकोनी तरफथी.

शा. केशरीमल्ल, हेमराज, ए बे नाइ ते शेठ कस्तूरजीना सुपुत्र थाय, एमनी. डुकान देवल गाममां छे. ५०

शा. लुंबाजी ते शेठ प्रेमाजीना सुपुत्र. १०

शा. कस्तूरजी, कुशनाजी. ५

शा. सेराजी, देवाजी, लखमाजी. ५

शा. जेसाजी, खुशालजी. ५

शा. खुमाजी, जेताजी.	४
शा. दीपाजी, खुमाजी.	३
संघवी. नरसिंघजी, लालाजी.	२
शा. मोतीजी, नूताजी.	२
शा. लुंबाजी, परागजी.	१
शा. रासा, मन्नाजी.	१
शा.ताराजी, वालाजी.	१
शा. पन्नाजी, केशार्जा.	१
शा. कुशनाजी, सदाजी.	१
शा. मोतीजी, गजाजी.	१
शा. गुलबा, सूराजी.	१
संघवी. सूरतिंगजी. दोलाजी.	१
शा. मोती, नगाजी.	१
शा. फुशा, डुरगाजी.	१
शा. खुमा, सदाजी.	१
शा. वीगजी, मनाजी, ए बे नाइ शेठ देवाजीना सुपुत्र छे जे गाम श्रीकानदरवालाने नामे लखवाय छे ते.	१५

शा. लखमाजी, सदाजी	१०
शा. पन्नाजी, सूरतिंगजी.	७
शा. फत्ताजी, लखमाजी.	५
शा. नथाजीनी, घरवाली.	३
शा. वगतजी, सदाजी.	३
शा. नथाजी, खुशालजी.	२
शा. राजाजी, मनाजी.	२
शा. पदमाजी, माह्याजी.	१
शा. कपूरजी, अदाजी.	१
शा. मनाजी, वजाजी.	१
मुतां. फुशा, नथाजी.	१
शा. दीपाजी, जुगजी.	१
शा. हकमा, खुशालजी.	१
शा. अबा, गोमाजी.	१
शा. अमरिंग, डुरगाजी.	१
मुंता. वरदा, गोमाजी.	१
शा. नूता, पदमाजी.	१
शा. फोजु, लखमाजी.	१

गामश्री आहोरना श्रावको तरफथी.

शा. वनेचंद, केशरमल, ए बे जाइ ते शेठ जूताजीना सुपुत्र डुकान श्री मुंबइमां छे. २५

मुंता. कस्तूरचंद, वाल्लाजी, ए बे जाइ ते शेठ उंमाजीना सुपुत्र छे, एमनी डुकान गामश्री कल्याणीमां छे. १५

संघवी. लखमाजी, थानाजी, ते शेठ रूपाजीना सुपुत्र छे. ५

शेठ. गोडीदाशजी, वागमलजी. ५

शा. पन्नाजी, जुवारमल्लजी, ते शेठ फुसाजीना सुपुत्र. ५

जंमारी. जूताजी, हेमाजी, जीमाजी, ए त्रणे जाइ ते शेठ अचलाजीना सुपुत्र छे. ५

शा. हंसराज ते शेठ नाथाजीना सुपुत्र एमनी डुकान गंटूलमां छे. ५

मुंता जवानजी, केशरमल्ल, ए बे जाइ ते शेठ अचलाजीना सुपुत्र. ५

मुंता सूरजमल्लजी, चंदनमलजी, ए बे ते शेठ हुकुमचंदजीना सुपुत्र. ५

शा. प्रेमचंदजी, मनजी, मोतीजी, ए त्रणे जाइ शेठ मकनाजीना सुपुत्र एमनी डुकान गामश्री पिंजरतमां छे. ५

शेठ प्रतापजी, लालचंदजी, पुनमचंदजी, ते शेठ जेठमल्लजीना सुपुत्र. ५

शा. राइचंद, शोजाजी. १

शा. गुलाबचंद ते गेनाजीना बेटा. २

शा. धन्ना, पनाजी. १

शा. सेरा, रूपाजी. १

गामश्री जालोरना श्रावको तरफथी.

मुंता. धनराजजी, जसवंतराजजी, मुनिलालजी, ए त्रणे जाइ ते मुंता लालचंदजी माफां वालाना छोकरा. २५

मुंता. सुलतानमल्लजी, ते मुंता उत्तमचंदजीना सुपुत्र. ५

जट्टारक जैरचंदजी दयालचंदजीनां चेला ५

नार. सीतारामजी जवानमल्लजी एम

नी डुकान आबुरोड खराडीमां.	५
गामश्री भिन्नमालना श्रावको तरफथी.	
शा. हीराजी, लखमाजी, नावाजी,	
माफावाला.	५
शा. केराजी, कानाजी.	५
शा. जुवारमल्ल, शिरदारमल्लजी.	२
शा. गुलाबचंद, खूपचंद.	२
शा. लखमाजी, कस्तूरचंद.	२
मुंता. केवलचंदजी, नगवानचंद ए बे	
नाइ ते मुंता तोलाजीना सुपुत्र.	२
गामश्री थरादना श्रावको तरफथी.	
वोरा. जीवा, बालु.	५
दोसी. लध्धा, लालजी.	२
वोरा. मोतीचंद, चंदाणा.	५
दोसी. हीरा, वीसल्ल.	२
गामश्री धानेराना श्रावकोनी मदत.	
मेता. तलकचंद, नोजराज.	५
शा. मूलजी, दानसिंघ.	१

गामश्री शिवगंजनी तरफथी.	
शा. मोतीजी, तुलसाजी, वन्नाजी, पो	
माजी, हीराचंदजी अने रामाजी ए ठ	
नाइत्र शेठ मेगाजीना सुपुत्र डुकान मुं	
बइमां मेगा मोतीजीना नामनी छे.	२५
शा. लुंबाजी, जेठाजी.	२
शा. रतनाजी, हट्टाजी.	१
शा. पन्नाजी, कलाजी. गामकोसीलाव.	२
गाम जेंसावडाना श्रावकोना तरफथी.	
शा. नथाजी, मनरूपजी पोरवाड.	१००
शा. जीफाजी, जोधाजी.	२
शा. महोनदासजी.	१
शा. सूराजी, वदाजी.	२
शा. वन्ना, कल्लाजी.	२
गामश्री हरजीना श्रावको तरफथी.	
शा. सूरतिंगजी, मनाजी.	५
शा. नबला, उंमाजी.	२
शा. चेला, गजाजी.	२

शा. वन्ना, खुशालजी. २
गामश्री खीमेलना पंचोनी तरफथी. ५
गामश्री. कोसीलावनां पंच. समस्त. ५
गामश्री. गुमो बालोतरानो तेना पंच
समस्तनी तरफथी. ५
शा. जीखाजी, कुशनाजी पाडीवना. ५
दोसी. कृष्णाजी, वनेचंदजी गामश्री
कच्छ मुंदरांबंदरना रेवासी. ५
शा. गोकलजाइ, लहेरा गोधावी. १
शा. जेगाजी, जवेरचंदजी. अलीराजपुर. ४
शा. हीराचंद, कुंवरजी. अलीराजपुर. १
शा. जीखाजाइ, रतनजी. घोगा २
शा. केशवजी, लेहेरा जाइ. गाम श्रीक
राचीबंदर वाला. १
शा. मोटाजी, वध्दाजी. कालीआवाडी. २
शा. नगाजी, कुशनाजी. रेवतरा वाला. ५
शा. लध्धाजी, कुपांजी. धानपुर वाला. २
शा. रूपाजी, प्रेमाजी. २

शा. लध्धा, हीरजी. अमदानगर वाला. २
गामश्री. अमदावादमां अमदावादनी
पांजरापोल वाली जैनसजानी तरफथी. ५
शा. पुनमचंद, ताराचंद. १
शा. पन्नाजी, धनाजी. १
शा. बालाजाइ, कक्कल. १
शा. लखमीचंद, जेगा. १
शा. मयारामजी ते शेठजी धूमाजीना
सुपुत्र गामश्री मांमवडा. १
मुंता., उमेद मह्लजी, चंदरजाणजी. गा
मश्री एनेगनें गुडे. ५
शा. रिखजाजी ते शेठ खुमाजी लखा
जीना बेटा गामश्री नूतिना. २
शा. मोतीजी, जगाजी. गामश्री कवला. १
शा. जगवान, लवजी कोलीआकवाला. १
गांमश्री मुंबइना श्रावको तरफथी.
बाइ प्रेमाबाइ ते शा. नागसी शिवजी
नेणसीनी घरवाली. २५

शेठ. घेलाभाइ, पदमसी. ५
शा. कस्तूरचंद, नानचंद त्रांबा कांटे. १
शा. ओधवजी देवजी जामनगर वाला. १०
शेठ. गणेसमल्ल, सोनागमल्ल. १
जैनविद्याशाला तरफथी हा. शा. वृद्धि
चंद पुनमचंद. ५
शा. कशतुर, वालाजी. २
शा. कशतुरचंद, तलकचंद बशनाजी पेठ. १
शा. जीवाजी, खीमाजी. १
शा. गुलाबचंद, केशवजी. १
शा. फुसाजी, नगाजी. १
मुंता. नथा, रुपाजी. १
गाम नीमडीना पंचो तरफथी.. २
शा. हिंडु, जेगाजी. १
शा. केशा, जोदाजी.. बूडतराना. १
मुंता. शवाजी, लखमाजी. बूडतराना. १
शा. नूताजी, फताजी. १
शा. उंमाजी, खाशाजी, राजाजीना पुत्र. १

शा. नथांजी, नोपाजी. १
शा. नीमा, मोताजी. १
शा. जेशाजी, गोमाजी. १
शा. पन्नाजी, नावाजी. १
शा. वन्नाजी, शेनाजी. १
शा. केवदांजी, खुशालजी. १
शा. मोतीजी, गुलाबचंदजी. १
शा. खुमाजी, हंसराजजी. १
शा. हुक्कमाजी, सांकलचंद. १
शा. हंसाजी, जेराजी. १
शा. गुलाबचंद, खुमाजी. १
शा. पानाचंद, जगन्नाथजी. १
शा. जेताजी, कस्तूरचंदजी. १
शा. भटाजी, विजिंगजी. १
शा. लालचंद, गुमनाजी. १
शा. जवानमल्ल, नथाजी. १
शा. माणकजी, खुमाजी. १
शा. सूराजी, जेताजी. १

शा. दोलाजी, नेराजी.	१	शा. मनाजी, मासिंघजी.	१
शां. मनछाजी, अनेचंद.	१	शा. चेनाजी, गजाजी.	१
शा. मनछाजी, वनेचंद.	१	शा. धुरा, मासाजी.	१
शा. लालचंद, कपूरचंद दालाखंमी.	१	शा. जुवारमल्ल, चेनाजी.	१
शा. न्यालचंद, आलमचंदजी गाम सादरी.	१	शा. मोटाजी, वीराजी.	१
शा. दीपाजी, केशाजी.	१	शा. जेरूप, सज्जाजी.	१
शा. गेना, ओखाजी.	१	शा. जिवाजी, आणंदाजी.	५
शा. गेनाजी, तेजाजी.	१	शा. जमनादास, लालजी.	५
शा. जेताजी, लखाजी.	२	शा. डुंगरसी, धरमसी.	५
शा. छुताजी, तेजीजी.	१	शा. उपाजी, कपुरचंद कुन्ही.	१५
शा. वरसिंघ, देवसी.	१	शा. आशाजी, राइचंद कुन्ही.	५
शा. खुमाजी, हिंडुजी.	१	शा. गोमाजी, जवेरचंद कुन्ही.	५
शा. हिंडुजी, अमरिंगजी.	१	शा. दोलतराम, चुनीलाल. राजगढ.	५
शा. नाना, ओखाजी.	१	शा. जसुजी, चतुरभुज राजगढ.	१०
शा. मोती, पुरुषाजी.	१	श्री. जावडाना संघ समस्त.	१०
शा. इदाजी, सुजाजी.	१	श्री. जाँबुआना संघ समस्त.	१०
शा. जेगा, गरनारजी.	१	श्री. वडनगरना संघ समस्त.	५
शा. खुशालजी, खुमाजी.	१	शा. दोलतराम, हरखचंद राजगढ.	५

॥ [illegible]र्यानिनेन्दुभिर्विरचितः ॥

॥ [illegible] शब्दार्णवः समाप्तः ॥